सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी
जनतंत्र

व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक १ | २० जनवरी, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : २८ दिसम्बर, १९६३ के दिन, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, सन् १९६४ के लिये माल-विनिमय की नई संधि पर हस्ताक्षर हुये। इसके अनुसार, इस वर्ष, दोनों देशों में ३५, ३५ करोड़ रुपये की रकमों के मूल्य का व्यापार होगा।... ज. ज. ग. की ओर से वहां के विदेश व्यापार मंत्रालय के श्री ई. रेनाइज़न; और भारत की ओर से भारत सरकार के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्रालय के श्री एस. वोहरा संधि पर हस्ताक्षर कर रहे

अंतिम पृष्ठ : बर्फीले सौन्दर्य की गरिमा

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के नये क्षेत्रीय प्रतिनिधि, श्री हाइस् साखसे ने हाल ही में अपना नया कार्यभार संभाला, बम्बई में। इस अवसर पर, भारत में ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्टबोट्टकर ने एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया जिसमें बम्बई के २५० प्रतिष्ठित नागरिक, राज्य मंत्री, अधिकारी तथा राजनयिक सम्मिलित हुये।

लाइपज़िक के कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय के रेक्टर, डा. मायर अब अवकाश प्राप्त करने जा रहे हैं। चित्र में वे, विश्वविद्यालय के चुने गये नये रेक्टर, डा. म्यूल्लर का स्वागत कर रहे हैं, जो डा. मायर के अवकाश प्राप्त करने के बाद उनका स्थान संभाल लेंगे।

सचित्र समाचार

ज. ज. ग. की राजधानी, जनवादी बर्लिन में, भवन निर्माण का क्रम जारी है। नित नये मकान तैयार होकर बर्लिन का सौन्दर्य बढ़ाते जा रहे हैं।

अखबारी-कागज तैयार करने की विराटाकार मशीन, जो प्रति मिनट में २००० फुट अखबारी कागज तैयार करती है। (पूरे ब्यौरे के लिये, इस पत्रिका का 'तथ्य और आंकड़े' नामक स्तम्भ देखिये)।
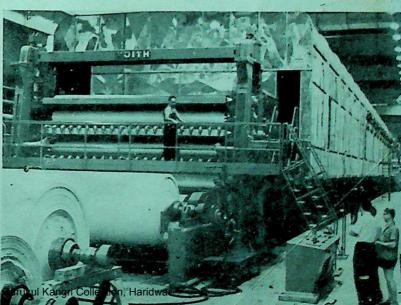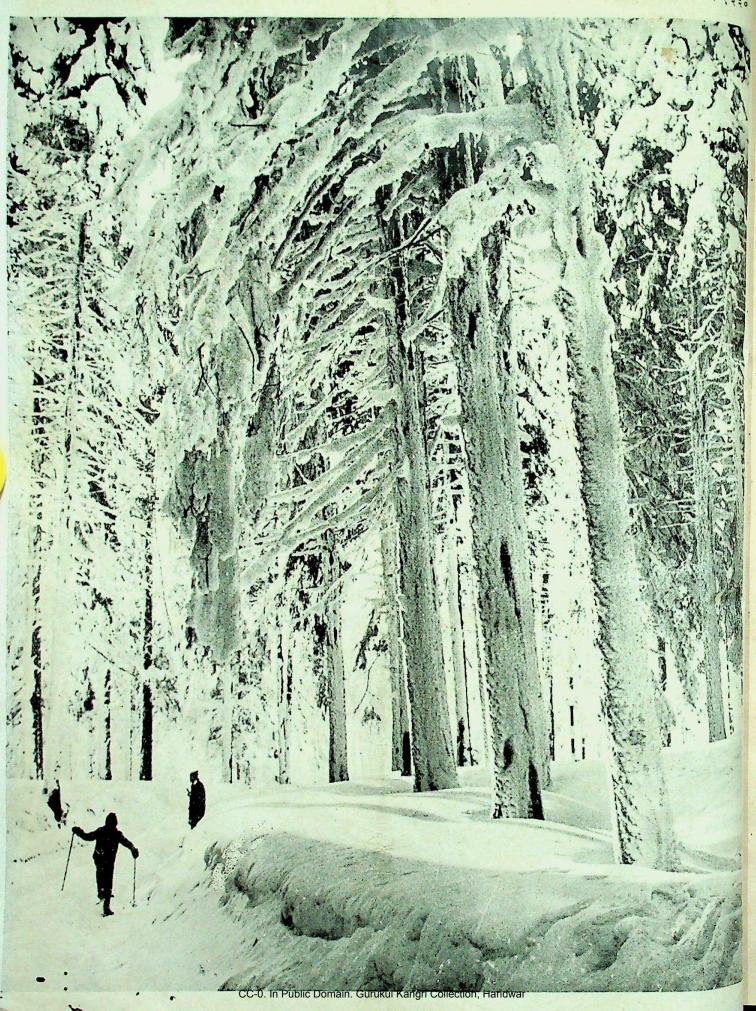
शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के द्वारा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, १५ से २१ जनवरी तक 'जर्मन सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' की जो छठी कांग्रेस हुई, वह राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भी थी। इस कांग्रेस में, ज. ज. ग. के अतिरिक्त, अन्य देशों की ७० बन्धु-पार्टियों के ४००० प्रतिनिधियों तथा अतिथियों ने भाग लिया। बाहर के प्रतिनिधियों में, सोवियत यूनियन की कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रथम सचिव, एन. एस. ख्रुश्चोव, तथा पोलेंड की 'संयुक्त पार्टी' के प्रथम सचिव, श्री डब्ल्यू. गोमुल्का विशेष उल्लेखनीय हैं।

कांग्रेस के सन्मुख अपने मुख्य भाषण में, 'सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' के प्रथम सचिव, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में समाजवाद की स्थापना तथा निर्माण कार्य पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। यह स्वभाविक बात है कि औद्योगिक विकास, कृषि, शिक्षा, तरुण पीढ़ी, सांस्कृतिक उत्थान तथा सैद्धान्तिक प्रश्नों से संबंधित समस्यायें ही उनके भाषण का मुख्य विषय रहीं। भूतकाल की उपलब्धियों का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करने के बाद, श्री उल्ब्रिख्त ने आगामी, दूसरी सप्तवर्षीय योजना — सन् १९६४ से ७० तक— की रुपरेखा भी कांग्रेस के सामने रखी।

संसार के लगभग सभी देशों के अखबारों में इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कांग्रेस की चर्चा रही। ऐसा कौन सा कारण है जिससे कि ज. ज. ग. की प्रमुख राजनीतिक पार्टी की उक्त कांग्रेस, अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बनी?

यह एक विश्वविदित बात है कि विभाजित जर्मनी एक ऐसा देश है जिसकी दो सर्वप्रमुख तथा उत्कृष्ट समस्याओं को, अर्थात् एकीकरण तथा पश्चिमी बर्लिन की समस्या को, अभी तक हल नहीं किया जा सका है। इसलिये, उक्त कांग्रेस में इन समस्याओं से संबंधित चर्चा अप्रत्याशित नहीं थी। यह एक प्रमुख कारण है कि विश्व की नजरें इस कांग्रेस की ओर उत्सुकता से देख रही थीं। वैसे, ज.ज.ग. की सरकार तथा राजनीतिक नेताओं ने भूतकाल में, उल्लिखित दोनों समस्याओं पर अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किये हैं। लेकिन 'यूनिटी पार्टी' की छठी कांग्रेस के गंभीर अवसर पर, अपने छः घण्टे के भाषण में, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, एक बार फिर, जर्मनी तथा प. बर्लिन के संबंध में ज.ज.ग. के विचार दुनिया के सामने रखे।

दो जर्मन राज्यों—पश्चिमी जर्मनी का फेडरल गणराज्य तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र—के आपसी रिश्तों का उल्लेख करते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने कहा कि पूरी जर्मनी में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, एक अनिवार्य आवश्यकता है। जहां तक ज.ज.ग. का संबंध है, वह हमेशा से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का प्रबल समर्थक रहा है। लेकिन इसके विपरीत, पश्चिमी जर्मनी के सत्तारूढ़ इजारेदार-पूंजीपति तथा साम्राज्यवादी, युद्ध-नीति का समर्थन और पुष्टि करते हैं। उनके उद्देश्य ऐसे हैं जिनका अवश्यम्भावी परिणाम होगा, युद्ध। सम्पूर्ण जर्मन जनता के अस्तित्व का आधार है शांति। इसलिये शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पश्चिमी जर्मनी के लिये भी आवश्यक है। अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन तथा तटस्थ राज्यों की जनता से अपील करते हुये श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा: "...आज, दूसरे महा युद्ध के लगभग १८ वर्ष बाद भी अमरीका, ब्रिटेन तथा फ्रांस की सेनायें पश्चिम बर्लिन में जमी हुई हैं। क्यों? उनको किसने अधिकार दिया है वहां की अधिकृत शासनसत्ता को संभालने, और वहां नाटो सैनिक गुट के जंगी अड्डे बनाने के लिये। निश्चित रूप से, पश्चिमी देशों का यह रवैया, शांतिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के अनुकूल नहीं।... आप लोग कैसा महसूस करेंगे यदि आपके देशों के ठीक बीच में, विदेशी सेनायें बिठा दी जायें और वह भी अवैध रूप से? ... आप लोग क्या करेंगे या कहेंगे यदि आपके देशों के रेल, वायु तथा परिवहन के अन्य मार्ग विदेशी सेनायें इस्तेमाल करें, बिना किसी अन्तर्राष्ट्रीय संधि या बिना कोई कर दिये हुये? ..."

"आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी यदि दूसरे देशों की जासूसी करने वाली संस्थायें आपके देशों में, तोड़-फोड़ तथा जासूसी करने वाले अड्डे क़ायम करें? इसी प्रकार, आप लोग क्या करेंगे यदि आपके देशों में विदेशी हकूमतें ऐसे रेडियो स्टेशन क़ायम करें जो जासूसों और तोड़-फोड़ करने वाले तत्त्वों को दिन रात आदेश दिया करें? ... हर समझदार आदमी का इस स्थिति के बारे में एक ही उत्तर होगा, वह यह कि समानता तथा अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के आधार पर, दोनों पक्षों के हितों को ध्यान में रखकर, बातचीत के द्वारा सभी समस्याओं और प्रश्नों का हल ढूंढ़ लेना चाहिये। हम ऐसी बात चीत के लिये सदा प्रस्तुत हैं। लेकिन वर्तमान अवैध स्थिति को एक अनिश्चित

श्री ख्रुश्चेव तथा ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री, श्री ओट्टो ग्रोटवोल हाथ मिलाते हुये
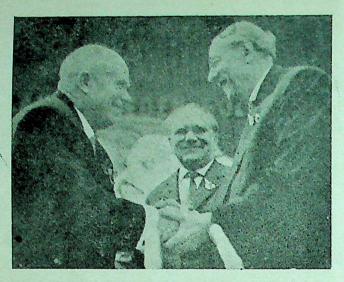
अवधि तक सहन करना हमारे लिये (या किसी भी राज्य के लिये) असंभव है।..."

अपने भाषण को जारी रखते हुये, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने क्यूबा के संघर्ष का भी उल्लेख किया। इस संबंध में उन्होंने कहा : "हाल ही में कारिबियन में जो संकटकालीन स्थिति पैदा हुई जर्मन शांति-संधि तथा प. बर्लिन समस्या के हल पर उसके पड़ने वाले प्रभावों के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है। कारिबियन के उक्त संघर्ष का जो परिणाम निकला वह इस बात को सिद्ध करता है कि घोर संकटकालीन स्थिति में भी, बात-चीत के द्वारा किसी समझौते पर पहुंचा जा सकता है। यदि यह लातीनी अमरीका में संभव है तो मध्य यूरोप में ऐसे समझौते की कहीं अधिक संभावना है। जर्मन समस्या का शांति-पूर्ण निपटारा न केवल जर्मन जनता के ही हितानुकूल है बल्कि विश्व शांति के लिये भी यह आवश्यक है। इसलिये, अणु परीक्षणों तथा निःशस्त्रीकरण के समर्थकों को दृढ़तापूर्वक, सोवियत यूनियन द्वारा प्रस्तावित जर्मन शांति-संधि तथा पश्चिमी बर्लिन समस्या से संबंधित प्रस्तावों का समर्थन करना चाहिये।

"बहुत समय से सोवियत-संघ तथा अमरीका के बीच बातचीत चल रही है। इस बात-चीत के कुछ नतीजे निकले हैं।... इस कठिन काम के लिये ज. ज. ग. और पश्चिमी जर्मनी में काम करने वाले शांति तत्त्वों ने भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।..." इस संदर्भ में श्री उल्ब्रिख्त ने १३ अगस्त, सन् १९६१ के दिन ज. ज. ग. की सीमा-सुरक्षा के लिये निर्मित विश्व-प्रसिद्ध बर्लिन-दीवार का उल्लेख किया। इस दीवार ने ज. ज. ग. के प्रभुत्व को काफी सुदृढ़ कर दिया। इस दीवार का उद्देश्य, दो जर्मन राज्यों की जनता को एक-दूसरे से अलग करना नहीं है, बल्कि इसका मात्र उद्देश्य है पश्चिमी जर्मनी की घोर उत्तेजनाओं को रोकना। "आज की वस्तुस्थिति यह

भारत चीन सीमा-विवाद के संबंध में

कई महत्त्वपूर्ण समस्याओं की चर्चा करने के बाद सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी के प्रथम सचिव, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, विश्व महत्त्व के एक अत्यन्त गंभीर प्रश्न, अर्थात साम्यवाद के विश्व-व्यापी अन्दोलन की एकता का उल्लेख किया। इसी संदर्भ में उन्होंने 'भारत-चीन सीमा विवाद' पर ये महत्त्वपूर्ण शब्द कहे :

"हमारे कई साथियों की समझ में यह बात नहीं आई कि भारत और चीन के सीमा-विवाद पर, हमारी पार्टी के अखबार इतने मितभाषी क्यों रहे। ऐसे साथियों को हमारे इस रवैये का कारण समझने का प्रयत्न करना चाहिये।

"इस दुःखद सीमा-विवाद पर हमारे अखबारों ने इसलिये संयम से काम लिया क्योंकि हम कोई भी ऐसा क़दम उठाना नहीं चाहते थे जिससे कि विवाद की यह अग्नि और भड़क उठे या फैल जाये।

"हमारी पहले भी यही कामना थी और आज भी हमारी यही कामना है कि दो देशों के बीच छिड़ा यह दुःखद संघर्ष, जल्द से जल्द समाप्त हो, ताकि दोनों देश पूर्ववत, मैत्री के परंपरागत सूत्र में जल्द जुड़ सकें। समाजवादी दुनिया में चीनी जनवादी गणतंत्र हमारा एक साथी है, और हम चीनी जनता की उन महान उपलब्धियों की सराहना भी करते हैं जो उसने, साम्राज्यवादी दासता से मुक्त होने तथा समाजवाद बनाने में उपलब्ध की। लेकिन हमें इस बात का दुख है कि चीन ने, भारत के साथ सीमा-विवाद के संबंध में किसी भी समाजवादी देश की सरकार से पूर्व-परामर्श लेना तो दूर रहा, उसने हमें इसकी सूचना तक नहीं दी। हमारी राय में, भारत के साथ सीमा-विवाद के मसले पर, चीनी साथियों को, सर्व-सम्मति से स्वीकृत सह-अस्तित्व की नीति पर अमल करना चाहिये था।

"भारत के साथ हमारे बहुत अच्छे संबंध हैं। भारत एक महान देश है जो लम्बे साम्राज्यवादी शासन के दुष्परिणामों से अभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। भारत के साथ हम अपने संबंधों को अधिक से अधिक अच्छा रखना चाहते हैं। हम भारत चीन सीमा-विवाद को न केवल एकदम व्यर्थ ही समझते हैं, बल्कि यह विश्व-शांति तथा सह-अस्तित्व के लिये भी उतना ही हानिकारक है जितना हमारी विश्व समाजवादी व्यवस्था के लिये। साम्राज्यवादियों के लिये यह दुःखद विवाद एक ईश्वरीय वरदान से कम नहीं। वे इसको अपने हितों के लिये इस्तेमाल करते हैं और दोनों देशों की जनता को एक दूसरे के खिलाफ उकसाते हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता की ओर से मैं दोनों देशों की सरकारों से अपील करता हूं कि वे, विश्व-शांति के हित के लिये, अपने सीमा-विवाद को जल्द से जल्द समाप्त करें। इन दो महान तथा महत्त्वपूर्ण राज्यों के प्रतिनिधियों के लिये यह संभव है कि वे एक ऐसी सीमा-रेखा स्वीकार करें जो दोनों राष्ट्रों की परिस्थितियों तथा हितों के अनुकूल हो।

कांग्रेस में भाग लेने वाले कतिपय प्रतिनिधि

है कि जर्मन भूमि पर दो ऐसे जर्मन राज्य वर्तमान हैं जिनकी सामाजिक व्यवस्था एक दूसरे से बुनियादी तौर पर भिन्न है, और इनके बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित सामान्य संबंध कायम हो जाना चाहिये। इसके लिये यदि इन दो जर्मन राज्यों के बीच समझौते की बातचीत शुरू हो जाये तो जर्मनी में मौजूदा तनाव बहुत हद तक घट जायेगा।..."

पश्चिम बर्लिन के प्रश्न पर, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त बोले: "हम इस बात के लिये भी तैयार हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ, प. बर्लिन में वहां के कुछ अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों तथा अधिकारों को स्वयं संभाले, नाटो सैनिक गुट के अधिकृत शासन को हटाकर। इस प्रकार का फैसला हमको इस शर्त के साथ सर्वथा मान्य होगा कि समझौते में शरीक होने वाले सभी पक्ष जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रभुसत्ता का सम्मान करें — विशेषकर उस समय जबकि वे ज. ज. ग. के जल, थल तथा वायु वाले यातायात मार्ग इस्तेमाल करें प. बर्लिन तक आने जाने के लिये। कोई भी शांतिकामी व्यक्ति या देश ऐसे समझौते पर दस्तखत करने से नहीं झिझकेगा।..."

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न का भी अपने भाषण में उल्लेख किया। यह प्रश्न था दो जर्मन-राज्यों के बीच के व्यापारिक रिश्तों का। उनका यह निश्चित मत था कि व्यापार में राजनीति को घसीटना नहीं चाहिये। ये दो अलग चीजें हैं। इस संदर्भ में उन्होंने कहा: "हाल ही में बोन हकूमत (प. जर्मनी) के एक ऊच्चाधिकारी ने दो जर्मन राज्यों के बीच व्यापार को बढ़ाने का सुझाव दिया है। लेकिन इसके लिये बोन सरकार यह मांग करती है कि ज. ज. ग. यह बात मान ले कि प. बर्लिन, प. जर्मनी में सम्मिलित हो जाये। स्वभाविक बात है कि ज. ज. ग. की सरकार ऐसा अनैतिक सौदा नहीं कर सकती। यह एक सर्वविदित बात है कि प. बर्लिन किसी तरह भी प. जर्मनी का हिस्सा नहीं है और न बन सकता है। हां, ज. ज. ग. और प. जर्मनी के सेनेट के बीच सामान्य संबंध स्थापित करने के लिये हम बातचीत करने के लिये हमेशा तैयार हैं। ...इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर, ज. ज. ग. के विदेश मंत्रालय ने, प. बर्लिन के महापौर को ऐसे प्रश्नों पर बातचीत शुरू करने का सुझाव दिया है जो दोनों पक्षों के हितानुकूल हों। लेकिन बोन सरकार के, महापौर पर दबाव डालने के कारण यह बातचीत शुरू नहीं हो सकी है। जो लोग बातचीत करने में रोड़ा ड़ालते हैं वे शांतिपूर्ण निपटारे के भी विरोधी हैं। हम समझौता करने के लिये तैयार हैं, इसीलिये हम बातचीत शुरू करने के पक्ष में हैं।...."

इसके बाद, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, जर्मनी की एक अन्य समस्या का उल्लेख किया। यह समस्या है विभाजित जर्मनी का पुनः एकीकरण। इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर, 'सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' का मत प्रकट करते हुये उन्होंने कहा: "निःशस्त्रीकरण और शांति की सुरक्षा के बिना विभाजित जर्मनी को पुनः एक करना असंभव है। तात्पर्य यह है कि शांति और राष्ट्रीय एकता अन्योन्याश्रित हैं। इन दो को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। एक शांति-प्रिय जर्मनी को आणविक शस्त्रास्त्रों और जबरी शस्त्रीकरण की आवश्यकता नहीं। दूसरे शब्दों में, शस्त्रास्त्र जुटाना, विशेषकर अणुशस्त्र जुटाना, जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल और राष्ट्रीय एकता के एकदम विरोधी है।..."

"दो जर्मन राज्यों के बीच अच्छे रिश्ते कायम करते हुये हम अपने दो राज्यों का एक राज्य-मंडल (कानफेडेरेशन) बनाना चाहते हैं। इस राज्यमंडल की स्थापना जर्मन एकता की दिशा की ओर पहला सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम होगा।... ज. ज. ग. की सीमाओं की सुरक्षा में पूरी जर्मन जनता तथा विश्व-शांति की सुरक्षा निहित है। अपने राज्य की सीमा रक्षा करके ज. ज. ग. ने, पश्चिमी देशों को घोर निराशकारी अणुयुद्ध में कूदने से बचाया, जिसमें, पश्चिमी जर्मनी के युद्ध-लोलुप राजनीतिज्ञ उनको धकेलना चाहते हैं।..."

पश्चिमी जर्मनी की स्थिति पर, श्री उल्ब्रिख्त ने सविस्तार प्रकाश डाला। अन्त में दो जर्मन राज्यों की ठोस हक़ीक़त और उनके बीच शांतिपूर्ण रिश्तों की स्थापना के बारे में एक बार फिर उन्होंने कहा: "हम एक ऐसे शांतिपूर्ण समझौते का सुझाव देते हैं जो वास्तविकता और एक दूसरे के प्रति मैत्री-भाव पर आधारित है। इस सुझाव में निम्न बातें सम्मिलित हैं:

१. दोनों जर्मन राज्य एक दूसरे की प्रभुसत्ता समाज-व्यवस्था को सम्मान की दृष्टि से देखें, और इस बात की प्रतिज्ञा करें कि एक दूसरे के खिलाफ वे कभी भी किसी प्रकार का बल प्रयोग नहीं करेंगे।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जर्मन जनवादी गणतंत्र और तटस्थ राष्ट्र

डा० योहानेस डीकमन्न
(ज. ज. ग. की लोकसभा के अध्यक्ष)

पिछले वर्ष में, जर्मन जनवादी गणतंत्र और नवजात राष्ट्रों के आपसी संबंध और भी दृढ़ हो गये। लगभग इन सभी राज्यों में, हमारी इस राष्ट्रीय मांग को सहराया गया कि जर्मन शांति संधि पर दस्तखत होना चाहिये और पश्चिम-बर्लिन की संकटपूर्ण स्थिति में सुधार होना चाहिये। इस विषय पर, तटस्थ राज्यों के कई प्रख्यात राजनीतिज्ञों तथा उच्चतम अधिकारियों ने विभिन्न अवसरों पर, अपना स्पष्ट मत प्रकट किया। उदाहरण के लिये, संयुक्त राष्ट्र संघ में, कम्बोडिया के प्रतिनिधि ने मांग की कि दोनों जर्मन राज्यों को सं. रा. सं. का सदस्य बना लेना चाहिये। इसी प्रकार, भारतीय गणराज्य के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने सितम्बर, सन् १९६२ में लोकसभा में कहा कि दो जर्मन राज्यों की वास्तविकता के तथ्य को स्वीकार किया जाना चाहिये। ऐसे ही विचार सोमाली लैंड के 'राष्ट्रीय यूनियन' के महा मंत्री, श्री मुहम्मद अली फाराह; घाना के राष्ट्रपति, डा. क्वामे एनक्रूमा; माली की लोक-सभा के अध्यक्ष, श्री हैदर; मैडगास्कर की लोकसभा के मुख्य अध्यक्ष, डा. जांसुफ रासेता इत्यादि ने भी प्रकट किये। यह तथ्य इस बात को सिद्ध करता है कि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और उपनिवेशवादी दमन को जड़मूल से उखाड़ने की हमारी नीति ने हमको तटस्थ राष्ट्रों की जनता का विश्वासपात्र तथा उनमें लोकप्रिय बनाया है।

पिछले वर्ष में, कई तटस्थ राज्यों के साथ हमने कौंसली-संबंध स्थापित किये। उदाहरण के लिये कम्बोडिया राज्य तथा इराक गणराज्य और ज. ज. ग. ने आपस में कौंसल जनरलों का आदान प्रदान किया। इसी प्रकार मोरक्को में, ज.ज.ग. का एक व्यापार दूतावास संस्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त कई देशों के साथ ज. ज. ग. ने निम्न व्यापार सन्धियों पर दस्तखत किये: संयुक्त अरब गणराज्य के साथ एक नई व्यापार तथा भुगतान सन्धि हुई, तूनिस गणराज्य के साथ वस्तुओं के आयात-निर्यात की एक सन्धि हुई, भारत गणराज्य के साथ नया व्यापार समझौता हुआ, और डाहोमी राज्य के साथ व्यापारिक तथा तकनीकी सहयोग की संधि पर दस्तखत हुये।

तटस्थ राष्ट्रों के वर्तमान वाणिज्य संबंधों को विस्तार दिया गया और उनके साथ अनेक नई सन्धियां हुई। आपसी व्यापार के विस्तार को, व्यापारिक मेलों में शामिल होने से, और भी बल मिला। उदाहरण के लिये, ज. ज. ग. ने, तूनिस में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले, और सीरिया की राजधानी, दमिश्क में आयोजित, ९वें अन्तर्राष्ट्रीय मेले में भाग लिया। लाऊस राज्य ने सन् १९६२ के लइपजिक वाले वसन्तकालीन व्यापार मेले में, पहली बार हिस्सा लिया। इसी प्रकार माली, घाना तथा श्री लंका जैसे गणराज्य भी पहलीबार इस मेले में सम्मिलित हुये।

व्यापारिक सम्बन्धों के अतिरिक्त, उक्त तटस्थ-राज्यों के साथ तकनीकी, सांस्कृतिक, विज्ञानिक तथा खेलकूद संबंधी रिश्ते भी जोड़े गये। प्रसिद्ध अरब दार्शनिक, अल-कन्दी के स्मृति समारोह के आयोजन में ज. ज. ग. के विद्वानों का एक बड़ा दल शामिल हुआ। संयुक्त अरब गणराज्य तथा ज. ज. ग. के बीच प्रसारण तथा टेलीविजन में, सहयोग के बारे में, एक संधि हुई। इसी प्रकार ज. ज. ग. की टेलिविजन कम्पनी ने, अलजीरिया जनवादी गणराज्य में, दो दस्तावेज़ी फिल्में बनाई। हिन्देशिया में, ज. ज. ग. के कई अनुभवी खेलकूद विशेषज्ञ वहां के खिलाड़ियों को ट्रेनिंग दे रहे हैं। ज. ज. ग. के खिलाड़ियों के दो प्रतिनिधि-मण्डल, माली तथा गिनी में प्रतियोगिता मैच खेलने गये।

ज. ज. ग. की 'फ्री जर्मन युवक संघ' नामक संस्था ने, तटस्थ राष्ट्रों के युवक दलों तथा संस्थाओं के साथ संपर्क तथा सहयोग स्थापित किया है। पिछले वर्ष युवक संघ के शिष्टमण्डल हिन्देशिया में, भारत, बर्मा माली तथा श्री लंका का दौरा कर आये। नवजात राष्ट्रों के कई विद्यार्थी, सन् १९६२ में यहां के तकनीकी स्कूलों तथा संस्थाओं में पढ़ने आये।

नवजात राष्ट्रों की संसदों तथा लोक सभाओं के साथ भी, ज. ज. ग. के संसद सदस्यों ने निकट संबंध स्थापित किये। मैडगास्कर, नाइजीरिया, टांगानीका, भारत, डाहोमे आदि देशों के संसद सदस्य व्यक्तिगत रूप में, और माली, कीनिया तथा सोमाली लैंड के संसद सदस्यों के प्रतिनिधि-मण्डल, सरकारी तौर पर, ज. ज. ग. में पधारे।

इस प्रकार, गत वर्ष में नवजात, तटस्थ राष्ट्रों के कई लोग ज. ज. ग. आये, कुछ व्यक्तिगत रूप में, और कुछ सरकारी तौर पर। यहां आकर उन्होंने हमारे कारखाने, उद्योग धन्धे, स्कूल, संसद तथा नव-निर्माण के कई और क्षेत्र देखे। सभी जगह वे हमारी जनता से मिले और उन्होंने हमारी जनता को शांतिपूर्ण निर्माण में संलग्न देखा।

ज. ज. ग. के प्रतिरक्षा मंत्री के निमन्त्रण पर, लाओस का एक सैनिक-प्रतिनिधि मण्डल गत मई मास में ज. ज. ग.

डा० टीकमत्र, भारतीय राज्य सभा के सदस्य श्री मणी के साथ बातचीत कर रहे हैं

के दौरे पर आया। इससे पहले अप्रैल, १९६२ में, लाओस के वर्तमान विदेश मंत्री, श्री कुइनिम फोलसेना ने बर्लिन के प्रख्यात चौक 'कार्ल मार्क्स स्टाड्ट' में 'लाओस दर्शन' नाम से एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। ....हिन्देशिया तथा भारत में, ज. ज. ग. के प्रख्यात चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनी हुई। इसी प्रकार बर्लिन नगर निगम के सदस्यों का एक शिष्टमण्डल श्रीलंका, भारत और हिन्देशिया गया। ज. ज. ग. के उप-प्रधान मन्त्री, श्री सेफरिन ने, बर्मा की यात्रा की।

ज. ज. ग. के कई ट्रेडयूनियन प्रतिनिधि-मण्डलों ने भी कई तटस्थ राष्ट्रों की यात्रा की। इराक के राष्ट्रीय दिवस पर, यहां के उप-प्रधान मंत्री, श्री पाल शोल्ज, इराक के निमंत्रण पर वहां गये। इसी प्रकार अलजीरिया के राष्ट्रीय दिवस पर, ज. ज. ग. का एक सरकारी शिष्ट-मण्डल, उप-विदेश मंत्री, श्री जार्ज स्टेबी के नेतृत्व में वहां गया। ...... हिन्देशिया की तीन प्रमुख कृषक संस्थाओं के प्रतिनिधि ज. ज. ग. पधारे।

ऊपर का यह विवरण अपूर्ण किन्तु दिशा-सूचक है। इस विवरण से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि गत वर्ष (१९६२) में, जर्मन जनवादी गणतंत्र और नवजात, तटस्थ राष्ट्रों के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग और मैत्री न केवल बढ़ ही गयी बल्कि वह और भी पुष्ट तथा दृढ़ हुई। ज. ज. ग., भविष्य में भी इन राष्ट्रों के साथ अपनी सद्भावना तथा सहयोग प्रदान करता तथा बढ़ाता रहेगा। हमारे गणतंत्र तथा तटस्थ राष्ट्रों की वैदेशिक तथा अन्य नीतियों में बहुत समानता है, विशेषकर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा जर्मनी से संबंधित समस्याओं और सिद्धांतों पर। ......

भारत में, बृहत्त-बर्लिन नगर निगम के शिष्ट-मण्डल का हार्दिक स्वागत हुआ

डाहोमे के उपराष्ट्रपति का बर्लिन में स्वागत किया ज.ज.ग. की राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष श्री गेराल्ड गोइटिंग ने

ज.ज.ग. के उप-प्रधान मंत्री, बर्मा में

कीनिया के संसद-सदस्य बर्लिन में

ओट्टो नागेल

पिछली शताब्दी के अन्त में, बर्लिन का उत्तरी भाग मैले, सीलन चढ़े तथा कुरूप मकानों की एक गन्दी बस्ती थी, मज़दूरों की। यहीं, सन् १८९४ में, ओट्टो नागेल का जन्म हुआ एक तंग और तारीक कमरे में, जहां उसके माता पिता, चार अन्य बच्चों के साथ अपना जीवन बिता रहे थे।

इस मजदूर परिवार के प्रत्येक सदस्य को, सुबह से शाम तक, अपना पेट पालने की ही चिन्ता घेरे रहती थी। इसलिये, सबसे छोटे बच्चे, ओट्टो की प्रतिभा की ओर उनका ध्यान ही न जाता था। लेकिन नन्हे ओट्टो का कोमल हृदय अपने चारों ओर के वातावरण से—संकरी गलियों, गीले तारीक मकानों, धूल भरे पार्क में आवारा फिरते बेरोज़गारों और पालनों को झुलाती हुई माओं दादियों के चित्रों से—प्रभावित होने लगा था। ये दृश्य, नन्हे ओट्टो के प्रथम चित्रों के प्रथम प्रेरणा स्रोत बने।

विधवा'— चित्रकार द्वारा बनाया गया एक चित्र (१९२८)

ओट्टो यह नहीं जानता था कि 'कला' किस चिड़िया का नाम है। चित्रकला के नाम पर, उन दिनों उसने बहुत घटिया क़िस्म के कुछ रंगीन चित्र देखे थे—अर्द्ध नग्न परियों आदि के। इन चित्रों के प्रति ओट्टो का दिल घृणा से भर गया था। वे उसके लिये अर्थहीन थे। इसके विपरीत वह जिस वातावरण में पल कर जवान हो रहा था, उससे उसको ममता थी, अपनाव था। अपनी इस दुनिया के कण-कण से वह परिचित था: यहाँ के गन्दे, गीले मकानों से, यहां के लोगों से, देशी-शराब की बदबूदार दुकानों से—अर्थात् यहाँ के अभाव ग्रस्त, दम घोटने वाले जनजीवन से वह पूर्ण रूप से परिचित था।... और इसी जानी पहचानी दुनिया को वह अपनी तूलिका और रंगों से कनवैस पर उतारा करता था, चित्रों के रूप में। ये चित्र, ओट्टो नागेल के, शोषण के प्रति उसके उत्कट असन्तोष का माध्यम थे। जागृत चित्रकार महसूस करने लगा कि शोषण पर आधारित समाज व्यवस्था, अन्याय तथा अत्याचार पर ही टिक सकती है।

ऐसे प्रतिभाशाली लड़के को, कला की ट्रेनिंग देना असंभव था उसके मां-बाप के लिये। बल्कि वे उस दिन की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे जिस दिन ओट्टो ज़रा बड़ा होकर कमाने लगेगा। लेकिन मुहल्ले के एक भूतपूर्व सुनार की पारखी आंखों ने ओट्टो की प्रखर प्रतिभा को समझ लिया था। उसने ओट्टो को किसी तरह से एक कला स्कूल में, निःशुल्क दाखिला दिला दिया। लेकिन मई दिवस के समारोह में भाग लेने के लिये जब उसके एक शिक्षक ने, उसके कान मरोड़े तो उसने दाखिले पर लात मारी और मज़दूरी करने लगा। मज़दूरों का पेशा अपनाकर, बाद में कभी भी ओट्टो नागेल पछताया नहीं, क्योंकि मज़दूर-वृत्ति में ही उसने वास्तविक जन-जीवन को देखा। यहीं वह साधारण, किन्तु कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के सम्पर्क में आया। इसी वास्तविक जीवन ने उसको, बार-बार, कलात्मक रचना के लिये प्रेरित किया।
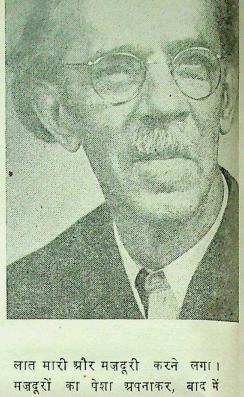
अपने जीवन के इसी समय में ओट्टो नागेल की ज्ञान पिपासा जागृत हुई। राजनीति के प्रश्न उसको आकर्षित, आन्दोलित करने लगे। उसने एक रात्रि-स्कूल में पढ़ना शुरू किया। साहित्य ने तो जवान ओट्टो पर जादू कर दिया। एक दिन दोस्तोयेव्स्की का एक प्रसिद्ध उपन्यास 'अपराध और दंड' उसके हाथ लगा। आद्योपान्त पढ़कर ही छोड़ा उसने उस उपन्यास को। ओट्टो के दिमाग़ पर इस रचना ने निराशावादी रंग चढ़ा दिया। कई वर्ष बाद ओट्टो नागेल ने लिखा: "काश 'अपराध और दण्ड' की बजाय गोर्की की 'मां' ही पहले मेरे हाथों में आई होती! मेरे और मेरी कला के लिये यह बहुत अच्छा होता। तब, संघर्षशील मनुष्य शायद मेरे चित्रों में,

अधिक महत्व का स्थान प्राप्त कर लेता।..."

प्रथम महायुद्ध ने, चित्रकार ओट्टो नागेल के मानसिक विकास पर बहुत प्रभाव डाला। कई बार उसको सेना में भरती होने के लिये बुलाया और वापस भेजा गया। युद्ध की समाप्ति पर वह एक 'श्रम कैम्प' में क़ैद था।...लेकिन तब एक नया युग आया जर्मनी में। सन् १९१९ में वहां क्रान्ति हुई। श्रमिकों की कौंसिलें स्थापित हुईं। 'श्रमिक कला कौंसिल' का जन्म हुआ, और इस कौंसिल के निर्देशक, प्रसिद्ध कला समीक्षक श्री अडोल्फ बेने ने, पहली बार, ओट्टो नागेल के कतिपय चित्रों की प्रदर्शनी की। इसके बाद सन् १९२१ में, चित्रकार के चित्रों की, एक वृहत प्रदर्शनी आयोजित हुई। अखबारों में ओट्टो की चर्चा हुई। इस प्रदर्शनी में चित्रकार कई प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आया, जिनमें से एक था विश्व प्रसिद्ध चित्रकार —हेनरिख़ सिल्ले।

सन् १९२६ में, ओट्टो नागेल की कृतियों की दूसरी वृहत्त प्रदर्शनी आयोजित हुई। चित्रों पर टीका करते हुये एक अखबार 'रोटे फाने' ने लिखा: "चित्रों के विषय इतने हृदय विदारक हैं कि उनमें अभिव्यक्त पीड़ा मनुष्य को रुलाये बिना नहीं रह सकती। समस्त रचनायें एक अभियोग हैं, एक घोषणा-पत्र!.." एक अन्य अखबार ने लिखा: "प्रदर्शित चित्र, चित्रकार की महान् तथा अडिग आस्था को अभिव्यक्त करते हैं।" ओट्टो नागेल के एक चित्र 'वेडिंग – जीवन प्रतीक' ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसमें केवल पीड़ा और दैन्य का चित्रण ही नहीं हुआ था, बल्कि इसमें उस विषैले सत्य की अभिव्यक्ती भी हुई थी जो संवेदनशील दर्शकों को झंझोड़ कर विद्रोह करने के लिये बाध्य करता है।

ओट्टो नागेल के जीवन की दो मुख्य घटनायें थीं, विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य, अर्थात् सोवियत यूनियन की दो यात्रायें। सन् १९२४ में वह, समकालीन चित्रकारों की ५०० कलाकृतियों की प्रदर्शनी के साथ सोवियत संघ गया। सन् १९३३ में, ओट्टो फिर वहां गया, अपने एक सह-कर्मी चित्रकार, काइटे कोल्लविट्ज़ के चित्रों की प्रदर्शनी लेकर। इन दो यात्राओं ने चित्रकार के मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव डाला।
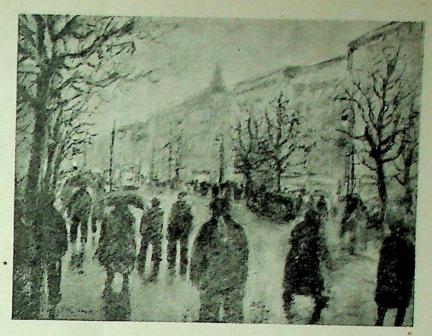
''वर्षा स्नात बर्लिन''—१९४० का चित्र

जर्मनी में नाज़ीवाद के उदय ने, अन्य महान् कलाकारों, लेखकों, संगीतकारों आदि की तरह, ओट्टो नागेल का जीवन भी क्षत-विक्षत कर दिया। उसके घर की रोज तलाशियां होने लगीं। नाज़ियों ने उस पर कई तरह के अत्याचार किये और कारागार में डाल दिया। लेकिन मानव मूल्यों तथा आदर्शों का चितेरा चित्रकार, फासिस्टों के पाशविक आतंक के सामने झुका नहीं। जेल से छूटने पर, बर्लिन की गलियों में चक्कर काटता हुआ तूलिका, रंग और काग़ज़ लेकर वह अपने प्रिय बर्लिन के मूक आतंक को चित्रों द्वारा वाणी दे रहा था। चित्रकार यह कल्पना भी नहीं कर सकता था उन दिनों, कि एक दिन उसके वे चित्र, पुराने बर्लिन का सजीव इतिहास बन जायेंगे!.. बर्लिन की गलियों, बाजारों और मकानों को मुश्किल से आट्टो नागेल, काग़ज़ पर उतार सका था कि बर्लिन पर बम-वर्षा होने लगी। बर्लिन ध्वस्त हुआ!... लेकिन यह विनाशकारी बम वर्षा, चित्रकार के, बर्लिन के अमर चित्र, नष्ट न कर सकी।......

जर्मनी का पुनर्निर्माण करके, उसको एक शांतिपूर्ण तथा उज्जवल पथ पर ले जाने के लिये, आट्टो नागेल जैसा महान् चित्रकार जर्मन जनवादी गणतंत्र में ही रह सकता था, पश्चिम जर्मनी में नहीं जहां हिटलर के वंशज पुनः शासन-सत्ता संभालने लगे हैं। चित्रकार ओटट्टो, आज एक नई जर्मनी— ज. ज. ग. के नवनिर्माण में संलग्न है। वह यहां की लोकसभा का सदस्य है। इसके अतिरिक्त वह 'जर्मन चित्रकार संघ' 'जर्मन प्रजातांत्रिक पुनरुत्थान की सांस्कृतिक लीग' तथा 'जर्मन ललितकला अकादमी' जैसी संस्थाओं के काम में सक्रिय भाग लेता है। चित्रकला के प्रति उसकी सेवाओं को ध्यान में रखकर, आट्टो नागेल को सरकार की ओर से, सन् १९५० में 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

नई जर्मनी का नया साहित्य

बर्नर इलबर्ग

(गतांक से आगे)

'जर्मनी का फासिस्ट विरोधी साहित्य' नामक लेख में (देखिये 'पत्रिका' का जनवरी अंक) जिन रचनाओं का उल्लेख हुआ है, उनका मुख्य विषय था, फासिस्ट विरोधी संघर्ष। युद्धोत्तर-काल में जो महान परिवर्तन हुये, साहित्य में उनकी अभिव्यक्ती कुछ वर्षों के बाद ही होने लगी।... अन्ना सेगर्स ने, एक बार फिर, अपनी कहानी 'मनुष्य और उसका नाम' में एक महत्वपूर्ण समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का साहसपूर्ण कार्य किया। इस रचना के मुख्य पात्र के भावपूर्ण चित्रण के द्वारा, लेखिका ने हमको यह शिक्षा दी है कि पूरी-पूरी ईमानदारी तथा स्पष्टवादिता के बिना जीवन के प्रति एक आशावादी दृष्टिकोण अपना लेना एकदम असंभव है। लगभग दस वर्ष बाद, एक तरुण लेखिका, मार्टा नावराट ने भी, अपनी कृति 'दूसरा चेहरा' में इसी विषय पर क़लम उठाई। भले ही उनमें अन्ना सेर्गस जैसी साहित्यिक कुशलता न हो, लेकिन, कुत्सित-आदर्शवाद के कारण 'हिटलर युवक दल' के नौजवानों को, अपने क्रूर 'नेताओं' के प्रति जो अनुराग था उसको अभिव्यक्त करने में लेखिका को पूर्ण सफलता मिली है।

अपने भूतकाल में झांकने की उक्त चेष्टाओं का परिणाम कई युद्धसंस्मरणों के रूप में सामने आया। इस कोटि की साहित्यिक कृतियों में एक महत्वपूर्ण देन है हर्बर्ट ओट्टो का आत्मकथा संबंधी उपन्यास 'असत्य'। यह सन् १९५६ में प्रकाशित हुआ। इसमें, सोवियत यूनियन में स्थित युद्धबन्दी कैम्पों के बारे में फैलाये गये झूठे तथा निराधार अभियोगों को निरावर्ण किया गया है। साथ ही साथ, और मुख्यतः यह उपन्यास एक आदर्श स्थापित करता है असत्य को त्याग कर सत्य की ओर बढ़ने का। यह तथा इसी प्रकार की अन्य अनेक युद्ध तथा क़ैद संबंधी कृतियां, उन लाखों करोड़ों जर्मनों की उस कठिन, अन्तर्विरोधी मनःस्थिति को अभिव्यक्त करती हैं जो अनजाने ही हिटलर के अनुयायी बन गये थे।

वर्तमान जर्मन जनवादी गणतंत्र में, एक क्रांतिकारी घटना ने यहां के साहित्य को एक नई दिशा की ओर मोड़ दिया। सन् १९४६ में जर्मनी के इस भाग में, (अर्थात जो अब ज. ज. ग. राज्य कहलाता है), भूमि सुधार लागू कर दिया गया। बड़े-बड़े जागीरदारों से भूमि छीन ली गई और वह भूमिहीन, छोटे तथा मध्यम कोटि के किसानों में बांट दी गई। ऐतिहासिक महत्व की यह घटना, साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक मुख्य प्रेरणा स्रोत बन गई। इस संदर्भ में यह बात काफी दिलचस्प है कि इस विषय को लेकर उन लोगों ने साहित्य-रचना की, जो पूंजीवादी समाज-व्यवस्था में साहित्यिक क्षेत्र में आने की कल्पना भी न कर सकते थे। उदाहरण के लिये लेखिका इरमा हार्डर को लीजिये। वह पहले एक कृषि-मज़दूर थी, बहुत कम शिक्षित और नौकरानी का काम करने वाली। भूमि सुधार के बाद (और समाजवादी जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद) उन्होंने एक उपन्यास लिखा: 'चरागाह पथ वाले घर में'। इस रचना पर लेखिका को 'फोंटने पुरस्कार' प्रदान किया गया। इसी प्रकार, लेखक बनने से पहले, मार्गरेट नाइमन्न एक साधारण किसान औरत थी। 'खेत की पगडंडी' नामक उपन्यास लिखकर वह लेखकों की कोटि में आ गई। यह उपन्यास, ग्रामीण जीवन की समस्याओं का, सीधे-सादे किंतु प्रभावशाली ढंग से, प्रतिनिधित्व करता है। संघर्षों की अग्नि में तपकर, स्वयं-शिक्षित होने वाले लेखकों में अद्वितीय प्रतिभाशाली और राज्य द्वारा सम्मानित, एर्विन स्ट्रिट्टमाट्टर ने 'गाड़ीबान' नामक आत्मकथा-संबंधी उपन्यास से अपना साहित्यक जीवन आरंभ किया। 'टिको' नामक एक उपन्यास में लेखक ने एक बूढ़े किसान और उसके प्रगतिशील विचारों वाले पुत्र का द्वन्द्व चित्रित किया है। श्री स्ट्रिट्टमाट्टर के एक नाटक को ब्रेख्त ने अपने विश्वप्रसिद्ध 'बर्लिनेर एनसेम्बल'

नित नई पुस्तकें

के रंगमंच पर पेश किया। इस नाटक में भी 'गाड़ीवान' में वर्णित समस्याओं को ही उठाया गया है। अन्त में, प्रौढ़ पीढ़ी के दो महत्वपूर्ण लेखकों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। ये हैं: श्री वर्नेर राइनोव्स्की तथा श्री बेन्नो फ्योल्कनर। इन्होंने ग्राम-जीवन संबंधी अपने उपन्यासों में सजीव पात्रों का चित्रण किया। गांवों के अनेक छोटे बड़े पुस्तकालयों में इन रचनाओं की बहुत मांग है।

इस बीच में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी किसानों ने सहकारी खेती को अपना लिया है। इस व्यवस्था तक पहुंचने की प्रक्रिया भी कई कहानियों, लेखों तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं का प्रेरणास्रोत बन गई। ग्राम संबंधी इस नई व्यवस्था पर लिखी गई सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है श्री बर्नहार्ड जेगर्स का उपन्यास 'शरद् का धुंआ'। इसमें, गांव और शहर के आपसी सहयोग पर प्रकाश डाला गया है।

युद्ध समाप्ति के बाद बड़े-बड़े एकाधिकारी पूंजीपतियों और युद्ध-अपराधियों की सम्पत्ति छीन ली गई और वह राष्ट्रीय-सम्पत्ति घोषित की गई। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना से उत्पन्न समस्याओं को हमारे साहित्य में अपेक्षाकृत कुछ देर के बाद ही उचित स्थान मिला। इस विषय पर लिखी गयी सर्वप्रथम रचना है एडुआर्ड क्लाउडियस का उपन्यास 'जनता हमारे साथ है'। इसमें एक राज के साहस-पूर्ण कृत्य को चित्रित किया गया है जो इस बात को सबसे पहले समझ गया कि राष्ट्रीयकृत-उद्यम में और पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा नियन्त्रित पहले के उद्यमों में, काम करने के ढंग में बुनियादी अन्तर आ गया है। इस उपन्यास के बाद ही, इस विषय को लेकर कई उपन्यास सामने आये। इन रचनाओं के लेखकों ने, घटनास्थलों (उद्यमों) पर स्वयं जाकर, समस्याओं का अध्ययन किया। ऐसी रचनाओं में सबसे प्रसिद्ध रचना है, मजदूर वर्ग के लेखकों में सर्वश्रेष्ट लेखक हांस मार्शविट्ज़ा का उपन्यास 'कच्चा लोहा'। इस रचना में पुनर्निर्माण के प्रथम कठिन वर्षों में उत्पादन की प्रक्रियाओं का चित्रण हुआ है।

इस बीच में समाजवादी नैतिकता, आचार तथा ऐसी ही अन्य नई समस्यायें सामने आ चुकी थीं (जिनका सीधा संबंध साहित्य से था)। पहले पहल तो हमारा साहित्य अपने इस अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व को निभाने में असमर्थ रहा। इसलिये सन् १९५९ के बसन्त में, मिट्टेलडोइशेर फेरलाग नामक प्रकाशन गृह द्वारा आयोजित एक लेखक-सम्मेलन में (जर्मन जनवादी गणतंत्र के) लेखकों के नाम एक अपील जारी की गई। इसमें उनसे यह प्रार्थना की गई कि वे, जन-जीवन में होने वाले नैतिक तथा आचार-विचार-गत परिवर्तनों का, अधिक गहराई से अध्ययन करें। इसके लिये उनको, कारखानों, सहकारी खेतों, कृषि उत्पादन समितियों तथा ऐसे ही अन्य राष्ट्रीय उद्यमों में स्वयं जाने, और वहां से प्राप्त अनुभवों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करने के लिये कहा गया। यह नई लेखन-विधि 'बिट्टेरफेल्ड-विधि' के नाम से प्रख्यात हुई, और यह असाधारण रूप से सफल रही। इस विधि का एक सबसे अच्छा परिणाम सामने आया, 'एक समूह-नेता की दैनिकी' नामक रचना के रूप में। इसका संपादन, य्यूनटर ग्लाण्टे नामक एक मजदूर ने वोल्फगांग न्यूहाउस नामक एक लेखक के साथ मिलकर किया था।

हमारे गणतंत्र के अनेक निर्माणस्थलों पर, ज. ज. ग. के कई लेखक पर्याप्त समय तक काम करते रहे। लेखक कार्ल-हाइंज याकोब ने, उत्तम पुरुष की शैली अपनाकर, अपने उपन्यास 'ग्रीष्म ऋतु का वर्णन' में एक इंजीनियर के अनुभवों को चित्रित किया है। मजदूर, लेखक के ज्ञान तथा उत्साह को सम्मान की नज़र से देखते हैं, लेकिन नैतिकता

(शेष पृष्ठ २२ पर)

लइपज़िक

इस वर्ष, लइपज़िक का परंपरागत बसन्तकालीन व्यापार मेला ३ मार्च को शुरू होकर १३ मार्च को समाप्त होगा। जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्यकीय, अर्द्ध-राज्यकीय, निजी और हस्तकला संबंधी उद्योगों ने इस मेले में भाग लेने के लिये पूरी पूरी तैयारी की है। मेले में अपनी वस्तुओं के प्रदर्शन के द्वारा, अपने उत्पादनों के गुण तथा कौशल, न केवल वे एक बार फिर सिद्ध करेंगे, बल्कि उनकी वस्तुएं यह भी दिखा देंगी कि वे क्रांतिकारी तकनीकी विकास में भी विश्व-स्तर से पीछे नहीं हैं।

मेले के रक़बे में बनाये गये कई हालों और मण्डपों में घूमने से, दर्शक को विज्ञान तथा तकनीक की नवीनतम उपलब्धियों के दर्शन होते हैं। इन उपलब्धियों को निरंतर विकसित करने के लिये, मेले के प्रबन्धकर्ताओं ने इस मेले में, दुनिया भर से आने वाले टेकनीशियनों तथा वैज्ञानिकों की एक बैठक तथा गोष्ठी का आयोजन किया है।

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी उक्त मेले में दुनिया के अनेक देश हिस्सा लेंगे। समाजवादी देशों द्वारा प्रदर्शित वस्तुएं एक बार फिर समाजवादी व्यवस्था की उत्पादन क्षमता और स्तर की धाक बिठा देंगी, यहां। पूंजीवादी देश भी पीछे नहीं रहेंगे। पिछले कतिपय वर्षों से ये देश लइपज़िक के व्यापार मेलों में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। इस प्रकार, लइपज़िक वास्तव में पूर्व और पश्चिम का व्यापार संगम है। इसलिये अधिक से अधिक व्यापार संस्थायें तथा फर्में इस मेले में भाग लेने के लिये आ रही हैं।

निम्न तालिका, लइपज़िक व्यापार मेलों की अपूर्व सफलता तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को सिद्ध करेगी। इसमें पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन की व्यापार फर्मों का उल्लेख नहीं है :

समाजवादी तथा पूंजीवादी देशों के इतर अन्य देशों में, भारतवर्ष इन मेलों में बहुत बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता है। सन १९६३ के बसन्तकालीन मेले में भी भारत की सरकारी तथा गैर सरकारी व्यापार फर्में १००० वर्ग मीटर क्षेत्रफल पर अपनी वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगी। पहले पहल भारत अपने मण्डपों में अपनी पारंपारिक वस्तुएँ --- काफी, तंबाकू, चाय, गर्म मसाले तथा हस्तकला आदि की वस्तुएं ही प्रदर्शित करता था। लेकिन अब इन वस्तुओं के साथ साथ भारत अपने औद्योगिक उत्पादन भी पर्याप्त मात्रा में प्रदर्शित करने लगा है। जर्मन जनवादी गणतंत्र तो भारतवर्ष से इसकी पारंपरिक वस्तुएं — चाय, कहवा, कपड़ा, तंबाकू, गर्म मसाला, काजू आदि तो आयात करता ही है। लेकिन अब इन वस्तुओं के अलावा भारत, ज. ज. ग. को कई औद्योगिक उत्पादन, जैसे इंजीनियरी की वस्तुएं, जूते, रिफ्रिजिरेटर, बिजली तथा प्लास्टिक का सामान, साइकलों तथा मोटरों के पुर्जे, मशीनी औज़ार, वैज्ञानिक यन्त्र, बैटरियां, इस्पात आदि भी निर्यात करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि लइपज़िक व्यापार मेलों में भाग लेने से (वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय के निर्देशन में) भारतवर्ष न केवल व्यापार ही करता है,

वर्ष	समाजवादी देशों का प्रदर्शन-क्षेत्र	पूंजीवादी देशों का प्रदर्शन-क्षेत्र
१९५८	२७,९१६ वर्ग मीटर	१६,५९८ वर्ग मीटर
१९५९	३३,१३३ ,, ,,	१९,०६२ ,, ,,
१९६०	३८,३०७ ,, ,,	२२,६२९ ,, ,,
१९६१	३६,८२९ ,, ,,	३३,९१९ ,, ,,
१९६२	४६,५२१ ,, ,,	३५,३४२ ,, ,,

यापार का संगमस्थल

० एण्डरलाइन

सन् १९६२ में व्यापार संधि पर दस्तखत करने के बाद, भारत के श्री वोहरा और ज. ज. ग. के श्री मेयर, हाथ मिला रहे हैं

बल्कि उसके आर्थिक विकास में अन्य देश भी दिलचस्पी लेते हैं। यहां वह अपनी औद्योगिक तथा आर्थिक उपलब्धियों से दुनिया के अन्य देशों के सम्मान का पात्र भी बन जाता है।

लइपजिक के मेलों में भाग लेने के फलस्वरूप भारतवर्ष और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच व्यापार, वर्ष प्रतिवर्ष बढ़ता रहा है। इस संदर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि पहले तीन वर्षों में, हमारे दो देशों के व्यापार में दुगुनी वृद्धि हुई है।

यहां यह बताना भी अनुचित न होगा कि लइपजिक के व्यापार मेलों में न केवल व्यापार संस्थायें तथा फर्में ही भाग लेने जाती हैं, बल्कि व्यापार में रुचि रखने वाले दर्शक तथा पर्यटक भी वहां जाते हैं, नवीनतम वस्तुओं को देखने परखने के लिये। यहां वे, ज. ज. ग. की विदेशी व्यापार संस्थाओं के साथ सौदा भी तय कर सकते हैं बहुत अच्छी और अनुकूल शर्तों पर। अदायगी विदेशी मुद्रा में नहीं वरन् भारतीय मुद्रा, अर्थात रुपयों में की जा सकती है।

भारतीय प्रदर्शनी के निदेशक श्री रघुवीर दयाल, ज. ज. ग. के उप विदेश-व्यापार मंत्री, श्री वाइस के साथ

पूर्व पश्चिम का यह अनुपम संगम, लइपजिक तथा सम्पूर्ण ज. ज. ग., अपने भारतीय अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन करता है और यहां उसके सफल व्यापार तथा आनन्दमय दिनों की कामना करता है।

एक और व्यापार सन्धि पर हस्ताक्षर हुये

व्यापार मेले का एक दृश्य

लइपज़िक

एक बृहत्त विद्या-मन्दिर

हिन्देशिया के विद्यार्थी

जर्मन जनवादी गणतंत्र का ८०० वर्ष पुराना लइपज़िक नगर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों तथा पुस्तक-पुरी होने के लिये ही विख्यात नहीं, बल्कि इस शहर को एक प्रसिद्ध विज्ञानपुरी होने का गौरव भी प्राप्त है। लइपज़िक की वैज्ञानिक परंपरा के साथ लाइबनिज़, क्लोपस्टोक, लेस्सिंग तथा फिख़्ते जैसे विश्व-प्रसिद्ध मनीषियों तथा वैज्ञानिकों का नाम जुड़ा हुआ है।

इस समय, लइपज़िक के प्राचीन विश्वविद्यालय (जो अब कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय कहलाता है) तथा यहां के आठ कालेजों तथा तक्नीकी स्कूलों में ४० हज़ार से अधिक विद्यार्थी अध्ययन तथा शोध कार्य में लगे हुये हैं। यह जर्मनी का दूसरा सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है। २ हज़ार से अधिक प्रोफेसर, अध्यापक, शोध-सहायक आदि इन विद्यार्थियों को पढ़ाते तथा शोध-कार्य में निर्देशन करते हैं। विश्वविद्यालय के १० निकायों तथा १२० संस्थानों से, हर साल, लगभग १५०० उपाधि प्राप्त स्नातक बाहर आते हैं। पिछले एक दशक के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण संस्थानों में से एक, 'अफ्रीका संस्थान' की यहां स्थापना हुई। यह संस्थान अफ्रीका के नवजात राष्ट्रों के इतिहास का सही ज्ञान देने में अध्येताओं का पथ-प्रदर्शन करता है। इतना ही महत्वपूर्ण है 'हर्डेर संस्थान'। इन संस्थानों से, हर साल, लगभग १५०० उपाधि प्राप्त स्नातक बाहर आते हैं। विदेशी विद्यार्थियों को जर्मन भाषा पढ़ाकर, ज. ज. ग. के विभिन्न कालेजों तथा संस्थानों में प्रशिक्षण पाने के लिये तैयार किया जाता है। पिछले वर्ष इस संस्थान में, ६० देशों के ५०० से अधिक छात्र अपना अध्ययन समाप्त करके निकले।
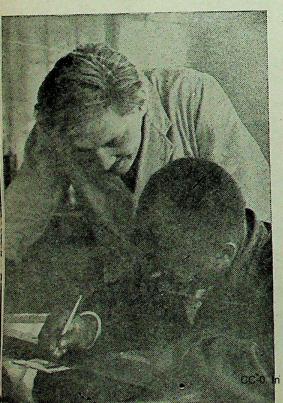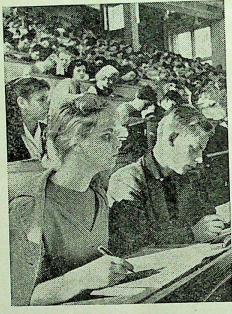
गिनी का विद्यार्थी एम० कामरा, और उसका हमदर्द प्रोफेसर

लाइपज़िक में ४० हज़ार छात्र और २ हज़ार अध्यापक हैं

इसी प्रकार, लइपज़िक का 'शरीर विज्ञान का जर्मन कालेज' तथा 'योहानेस बेखर साहित्यिक संस्थान' अपने ढंग के अनोखे विद्याध्ययन केन्द्र हैं। 'शरीर विज्ञान का जर्मन कालेज' की स्थापना सन् १९५० में हुई। उस समय इस कालेज में ५० छात्रों ने दाखिला लिया। इस समय इस कालेज के १५ संस्थानों में २,४०० विद्यार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं।

पिछले कतिपय वर्षों में विभिन्न विद्या संस्थानों के लिये कई नई इमारतें तामीर की गयीं। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान विज्ञान के प्रसार तथा विकास के लिये ज. ज. ग. की सरकार दिल खोल कर धन खर्च करती है। इन इमारतों में बहुप्रसिद्ध और उल्लेखनीय ये हैं: शरीर रचना संस्थान जहां यूरोप का सब से बड़ा प्रकाशकीय मैक्रास्कोप है, भौतिक-रासायनिक संस्थान, शरीर-क्रिया संस्थान तथा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिये एक छात्रावास।

पिछले वर्ष, 'कालेज फार बिल्डिंग' के अहाते में एक छः मंज़िला इमारत तामीर की गई ४३ लाख मार्क की लागत से। इस भवन में दो लेक्चर-हाल हैं और दोनों में २०५ छात्र बैठ सकते हैं। दो

(शेष पृष्ठ २२ पर)

निस्शास्त्रीकरण : एक वरदान

प्रो० यूरगेन कुजिन्स्की

> प्रोफेसर यूरगेन कुज़िन्स्की, बर्लिन के हम्बोल्ट विश्वविद्यालय के आर्थिक इतिहास संस्थान के निदेशक हैं। गत वर्ष, जुलाई में, निःशस्त्रीकरण तथा शांति के सम्बन्ध में जो विश्व सम्मेलन हुआ, उसमें जर्मन जनवादी गणतन्त्र के प्रतिनिधि-मण्डल के वह एक सदस्य थे। सम्मेलन में दिये गये उनके दिलचस्प भाषण के कुछ अंश हम नीचे दे रहे हैं।
>
> —संपादक

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि निःशस्त्रीकरण प्रत्येक छोटे या बड़े देश के लिये, जिस पर शस्त्रीकरण का भारी बोझ हो, एक बहुत बड़े वरदान से कम नहीं है। ऐसे देश भी, जो कम शस्त्र रखते हैं, आर्थिक दृष्टि से, काफी लाभान्वित होंगे निशस्त्रीकरण द्वारा। उदाहरण के लिये मैं अपने देश जर्मन जनवादी गणतंत्र को ही लूंगा, औद्योगिक दृष्टि से जिसका यूरोप में पांचवां स्थान है। यहां की आबादी, अमरीका की आबादी के ९ प्रतिशत के बराबर है। लेकिन उसकी सैनिक शक्ति, अमरीका की तुलना में केवल ३ प्रतिशत है। अमरीका शस्त्रास्त्रों पर जितना धन खर्च करता है, उसकी तुलना में ज. ज. ग. का सैनिक बजट केवल १.५ प्रतिशत है।

ज. ज. ग. का वार्षिक सैनिक बजट केवल २ अरब, ७० करोड़ मार्क है। फिर भी यह धनराशि लगभग, यहां की इंजीनियरी, सैलूलोज़ तथा कागज़ उद्योग-धन्धों के कुल उत्पादन के मूल्य के बराबर। अब आप स्वयं ही इस बात का अन्दाज़ा लगाइये कि यूरोप का पांचवां बड़ा औद्योगिक देश, अपनी सैनिक सुरक्षा पर, तुलनात्मक दृष्टि से, बहुत कम धन खर्च करता है। फिर भी यह, इसकी तीन आवश्यक औद्योगिक शाखाओं के कुल उत्पादन के मूल्य के बराबर है।

सैनिक शस्त्रास्त्रों पर ज. ज. ग. को आजकल जो धनराशि खर्च करनी पड़ती है—अर्थात् २ अरब, ७० करोड़ मार्क वार्षिक, यदि हम वह बचा पाते तो इस धनराशि में से हम १ अरब मार्क, सीधे-सीधे, उपभोज्य वस्तुओं का उत्पादन करने वाले उद्योग धन्धों में लगाते। शेष १ अरब, ७० करोड़ मार्क की रकम, हर साल, हमारी बचत में जमा हो जाती। दूसरे शब्दों में, हम इस तरह, कृषि उत्पादन में लगे कुल धन को एक वर्ष में दुगुना कर सकते। इस प्रकार बहुत कम समय में, खाद्य सामग्री के उत्पादन में हमारा देश आत्मनिर्भर हो जाता। हमको इन वस्तुओं का आयात नहीं करना पड़ता। इस तरह हमारा देश बहुत धन बचा पाता, जो अफ्रो-एशिया तथा दक्षिणी अमरीका के नवजात राष्ट्रों के निर्माण के कामों के लिये दिया जा सकता।

अब निःशस्त्रीकरण के दूसरे पहलू, अर्थात सेना को घटाने पर विचार कीजिये। यहां भी मैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र को ही उदाहरण के लिये लूंगा। ...हमारी सेना में ९० हज़ार सैनिक हैं। हमारे देश के आर्थिक विकास में अर्थात उत्पादन क्षेत्र में, सीधे सीधे, इनका कोई योगदान नहीं। यदि इनमें से, ४/५ वां भाग अर्थात ७२ हज़ार को कम करके, उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में भेजा जाता, और इनमें से प्रत्येक व्यक्ति एक साल में, कुल ३० हज़ार मार्क का ही उत्पादन करता, तो हमारे देश की राष्ट्रीय आय में २ अरब २० करोड़ मार्क की वृद्धि हो जाती।

कुल मिलाकर, संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि यदि पूर्ण और सर्वसाधारण निःशस्त्रीकरण हो जाये तो, जर्मन जनवादी गणतंत्र जैसा अपेक्षाकृत छोटा देश भी इतना धन बचा सकता है कि वह अपने उद्योग धन्धों के उत्पादन को दुगुना कर सकेगा, बहुत कम समय में कृषि को विकास की पराकाष्ठा तक ले जा सकेगा, और इसके अतिरिक्त, कम विकसित, नवजात राष्ट्रों के आर्थिक तथा औद्योगिक विकास के लिये भी काफी धनराशि बचा सकेगा।

मैट्रिक और व्यवसाय की एक साथ शिक्षा

पीटर नीके

जर्मन जनवादी गणतंत्र में शिक्षा के दो प्रमुख अंग हैं दसवीं तथा बारहवीं श्रेणी तक के स्कूल। चार साल पहले ऐसे कुछ स्कूलों में पोलितकनीकी शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। छोटे क्लासों से ही छात्रों को किसी दस्तकारी या अन्य किसी व्यवसाय में शिक्षा दी जाती है। बड़े क्लासों के छात्रों को हफ्ते में एक दिन विभिन्न कारखानों में जाना पड़ता है, व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये। बारह वर्ष की आयु से ही प्रत्येक विद्यार्थी को, श्रम तथा श्रमिकों के प्रति सम्मान की दृष्टि अपनाना सिखाया जाता है। राष्ट्रीय सम्पत्ति वाले बड़े बड़े कारखानों में, बहुत कुशल मजदूर, स्कूल के लड़कों को, उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों का बुनियादी ज्ञान देते हैं। इस शिक्षा व्यवस्था का परिणाम यह निकला है कि उच्चतर माध्यमिक स्कूल छोड़ते समय विद्यार्थी, विज्ञान तथा टेकनालोजी की आधुनिक पेचीदगियों का सम्यक ज्ञान प्राप्त किये होते हैं।

पिछले चार वर्षों में ही उक्त व्यवस्था को आशा से अधिक सफलता मिली है। इस सफलता से उत्साहित होकर ज. ज. ग. के तमाम उच्चतर माध्यमिक स्कूलों, अर्थात बारह श्रेणियों वाले स्कूलों में, व्यावसायिक प्रशिक्षण शुरू हो चुका है। सन् १९६९ तक और उसके बाद, इस नई व्यवस्था में, माध्यमिक स्कूलों के छात्र, मैट्रिक तथा किसी एक व्यवसाय की परीक्षायें एक साथ दे पायेंगे।

बर्लिन के एक बिजली-घर के फोरमैन, श्री हाइम ने मुझसे कहा: "हमारे और हमारे बच्चों के सामने समस्या काफी कठिन थी। मेरा मतलब है व्यवसाय को चुन लेने की समस्या। मेरी १४ वर्षीय बेटी क्रिस्टीन काफी जहीन है और अच्छे नम्बर लेकर पास होती रही है। एक दिन व्यवसाय चयन की समस्या उसके, हमारे और उसके शिक्षकों के सामने आई। आंख बन्द करके उसको किसी व्यवसाय में धकेला नहीं जा सकता था। उसकी रुचि तथा योग्यता और देश की आवश्यकताओं — इन सब तत्वों को देखकर ही, इस कठिन समस्या का समाधान ढूंढ लेना था। बहुत सोच विचार के बाद क्रिस्टीन और हम एक निश्चित फैसले पर पहुंचे: वह उच्चावृति (हाइ फ्रीक्वइनसी) टेकनीशियन बनेगी। यही उसका बुनियादी व्यवसाय होगा। अब क्रिस्टीन, स्कूल छोड़ने के बाद, अपने व्यवसाय का प्रशिक्षण लेगी किसी विशेष तकनीकी स्कूल में, अथवा किसी विश्वविद्यालय में।..."

इस वर्ष, बर्लिन के 'हम्बोल्ट माध्यमिक स्कूल' से ९८ छात्र-छात्रायें, मैट्रिक और अपने-अपने निर्वाचित व्यवसायों की परीक्षायें एक साथ देंगे। इस स्कूल के निदेशक, श्री फोके ने हम से कहा: "हमारे विद्यार्थियों को ग्यारह व्यवसायों में से कोई सा एक व्यवसाय चुन लेने की सुविधा थी। इन व्यवसायों का पूर्ण ज्ञान उनको, यहां के दस राजकीय कारखानों में उपलब्ध हुआ था कुशल टेकनीशियनों, फोरमैनों तथा श्रमिकों के द्वारा। इनमें से अधिकांश विद्यार्थियों ने विद्युत-तकनीकी व्यवसाय को ही चुन लिया। लड़कों ने मशीन निर्माण, निर्माण उद्योग तथा कृषि जैसे क्षेत्रों से संबंधित व्यवसाय अपना लिये। कुछ लड़कियों ने प्रशासन तथा आरोग्य संबंधी व्यवसायों में ट्रेनिंग लेने का फैसला किया।..."

बर्लिन के ही एक अन्य स्कूल 'हाइनरिख हर्ट्ज़ माध्यमिक स्कूल' के निदेशक, श्री हाइरिख ने भी हमें कुछ दिलचस्प बातें बता दीं। उन्होंने कहा: 'नवीं श्रेणी में हमने बर्लिन के सभी 'गणितज्ञों' को एकत्रित किया है। 'जर्मन विज्ञान अकादमी' का अनुसन्धान केन्द्र उनको तकनीकी गणकों, विद्युत गणना-यंत्र के ओपरेटरों और भौतिक-शास्त्रियों के सहायकों के रूप में प्रशिक्षण दे रहा है। चार वर्ष के शिक्षण के बाद (इस अवधि में उनकी सामान्य पढ़ाई भी साथ-साथ चलेगी) ये 'गणितज्ञ' नवीनतम संगणकों का परिचालन करने में समर्थ होंगे।'

कई विद्यार्थियों के माता-पिताओं के दिल में यह डर था कि उनके बच्चों पर चार वर्ष की अतिरिक्त ट्रेनिंग एक भारी बोझ बन जायेगी, और वे अपनी सामान्य पढ़ाई में पिछड़ जायेंगे। ये और अन्य तरह की ऐसी ही कठिनाइयां इस नई शिक्षा व्यवस्था के प्रयोगकाल में प्रायोगिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के सामने आयीं। एक १९ वर्षीय विद्यार्थी नारबर्ट ट्रुश ने हमको सुनाया: 'हमको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि नये प्रयोग के लिये हम एक प्रकार से बलि के बकरे जैसे थे। स्कूल की साधारण पढ़ाई और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिये समय का विभाजन, अनुपात के अनुसार और एक दूसरे के पूरक के रूप में निर्धारित करना ज़रूरी था। नहीं तो दो में से एक में हम पिछड़ जाते।.. पढ़ाई और प्रशिक्षण के लिये हमें, हफ्ते में ५५ घण्टे देने पड़ते थे। इन घण्टों में, खेलकूद तथा फैक्ट्रियों में प्रैक्टिकल ट्रेनिंग का समय भी सम्मिलित है। बहरहाल, किसी तरह से एक नौजवान यह सब कर ही सकता है।..'

आजकल किसी भी देश के आर्थिक तथा अन्य विकास का आधार स्तम्भ है, टेकनीलोजी सम्बन्धी उसकी प्रगति। इस प्रगति के लिये यह अनिवार्य है कि देश के नवयुवक—छात्र-छात्रायें, नवीनतम वैज्ञानिक ज्ञान तथा तकनीकी पेचीदगियों से परिचित हों। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य, स्कूल स्तर से ही प्रारम्भ होना चाहिये, एक वैज्ञानिक ढंग से। जर्मन जनवादी गणतन्त्र की नयी शिक्षा व्यवस्था यही कर रही है।

चिट्ठी पत्री

संपादक जी,

जयहिन्द

अभी आपकी 'पत्रिका' डाकिया हमारे कार्यालय में दे गया है। इसी प्रकार आज लगभग दो वर्षों से मिल रही है आपकी 'पत्रिका'। यह 'पत्रिका' जहां भारत और ज.ज.ग. के बीच की मैत्री और सद्भाव का प्रतीक रही है, वहीं यह हमें और हमारे देश के लोगों के समक्ष आपकी वैज्ञानिक और प्राविधिक, सामाजिक और व्यक्तिगत, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती रही है। सच तो यह है कि हमें आपसे अधिकाधिक सूचना-सामग्री की अपेक्षा है जो हमारी जिज्ञासा को शान्त कर सके।

आपने हमें और हमारे साथियों के जर्मन-भाषा को सीखने के लिए बढ़ते हुए चाव को तत्सम्बधी कालम (स्तभं) बन्द करके, गहरा धक्का पहुंचाया है। इस बात का हमें दुख है। फिर भी इसकी सामग्री बिना किसी अगर-मगर के प्रसंशनीय है।

सम्प्रति, भारत की संकटकालीन स्थिति में हम आपके और अपने बीच के मैत्री और सांस्कृतिक सामंजस्य के सूत्र को अधिकाधिक सुदृढ़ करना चाहते हैं। हम आपकी अधिकाधिक उन्नति की कामना करते हैं।

मणिकान्त ठाकुर (मंत्री),
रविकान्त झा (पुस्तकाध्यक्ष)
श्री जयप्रकाश युवक पुस्तकालय,
दरभंगा (बिहार)

सम्मादक महोदय,

मैं आपके व्यापार दूतावास से प्रकाशित 'सूचना-पत्रिका' को लगभग एक वर्ष से पढ़ता चला आ रहा हूं। आशा है भविष्य में भी पढ़ता रहूंगा। मैंने आपके देश से सम्बन्धित 'सूचना-पत्रिका' से काफी ज्ञान प्राप्त किया है। मुझे यह देख एवं पढ़कर खुशी होती है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र भारतवर्ष के आर्थिक विकास में तेजी से सहयोग प्रदान कर रहा है। आशा है आपका देश भविष्य में भी हमारे देश के आर्थिक विकास में सहयोग प्रदान करता रहेगा। धन्यवाद।

कैलाशचन्द सेठी
अलवर (राजस्थान)

महोदय,

आपकी सम्मानित 'पत्रिका' का एक अंक हमारे पुस्तकालय के पाठकों के सम्मुख एक सदस्य ने उपस्थित किया। इसे पाठकगण ने बहुत ही दिलचस्पी से पढ़ा तथा सर्वसम्मति से इसका एक अंक नियमित रूप से पुस्तकालय में मंगाने की इच्छा भी प्रकट की। यदि आप अपनी सम्मानित 'पत्रिका' का एक अंक कृपापूर्वक भेजें, तो वह नित्य लगभग १०० पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकेगा। यहां की ग्रामीण जनता भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र के बारे में पूर्ण रूप से परिचित हो सकेगी।

आशा है आप मेरे अनुरोध पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

मंत्री
जनता पुस्कालय
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रिय महोदय,

मैंने आपके यहां की प्रकाशित—'सूचना पत्रिका' (जर्मन जनवादी गणतंत्र की पत्रिका) 'प्रेम धाम' में पढ़ी। पढ़कर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। पत्रिका के लेख आदि पढ़ने से ऐसा प्रतीत हुआ कि हम आपके देश की बात बहुत ही सहज एवं सरल रूप से जान सकते हैं। मेरे अन्दर अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना एकदम जागरूप हो गई। इसलिये मैं अपनेको रोक न सका और आपकी 'पत्रिका' शीघ्र मंगाने की प्रबल इच्छा ने मेरी लेखिनी को बाध्य कर दिया कि मैं अपनी संस्था में अपने सहयोगियों के लिये 'सूचना-पत्रिका' मंगाऊं और लाभ प्राप्त करूं। मैं वृन्दावन में कई मन्दिरों का मंत्री एवं महन्त हूं। अतः आप अपने यहां की प्रकाशित 'सूचना-पत्रिका' जर्मन जनवादी गणतंत्र को शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करें।

महन्त प्राणगोपालाचार्य
वृन्दावन (उ. प्र.)

प्रियवर,

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की संस्कृति, आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रीय परिस्थितियों पर प्रकाश डालने वाला 'समाचार-पत्र' प्रकाशित हो चुका है। हम, इस होस्टल के तीन-सौ विद्यार्थी (खासकर बी.ए. और एम. ए. क्लास के विद्यार्थी) आपके आभारी होंगे अगर आप अपना मासिक पत्र जल्दी ही हमें भेज देंगे। संसार में शांति जारी रखने में जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक बड़ी देन है। आपके राष्ट्र की परिस्थियियां जानने के लिए हम लोग बहुत उत्सुक हैं। आशा है कि आप जल्दी ही भेज देंगे।

पी. कृष्णन,
एरनाकुलम,
केरल

तथ्य और आंकड़े

१०२ वर्ष का कार्यकर्ता

* हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के 'देशभक्त पदक' के विजेता श्री आनटन रिशकोव्स्की ने रोस्टोक में अपना १०२वां जन्मदिन मनाया। आप ७६ वर्षों से विभिन्न श्रमिक पार्टियों में काम करते आये हैं, और इस नाते आप संसार के सबसे पुराने पार्टी कार्यकर्ताओं में से एक हैं।

१,३०३ व्यक्तियों का पुनर्वास

* बड़े दिनों यानी क्रिसमस में, पश्चिमी जर्मनी के लगभग ६ हजार नागरिक ज.ज.ग. की राजधानी, बर्लिन देखने आये। इनमें से १ हज़ार, ३०३ व्यक्तियों ने यहीं बसने की अनुमति मांगी जो उनको दी गई।

क्यूबा के साथ समुद्री संबंध

* १० हज़ार टन वज़न वाले 'कार्ल मार्क्स स्टाड्ट' नामक जलपोत के द्वारा, यूरोप के समाजवादी देशों तथा क्यूबा गणराज्य के दरमियान समुद्री संबंध स्थापित किये गये। यह जहाज, इस वर्ष के आरम्भ में रोस्टोक (ज.ज.ग. की बन्दरगाह) से क्यूबा की ओर पहली बार रवाना हुआ।

कवि शिल्लर का क्लैण्डर

* ज. ज. ग. के पर्लेबर्ग नामक क़स्बे के एक निवासी के हाथ अकस्मात, प्रसिद्ध जर्मन कवि, फ्रेडरिक शिल्लर द्वारा बनाया गया एक क्लैण्डर लगा। यह क्लैण्डर सन १७९२ का है और इसका नाम है "महिलाओं का क्लैण्डर"।

५५ लाख दर्शक

* सात वर्ष पुराने, बर्लिन चिड़ियाघर को आज तक ५५ लाख व्यक्तियों ने देखा है। इसमें ६५० प्रकार के, ३ हज़ार २ सौ पशु-पक्षी हैं।

७५ हजार नई पुस्तकें

* सन् १९६२ में, बर्लिन के राजकीय पुस्तकालयों में ७२ हजार नई पुस्तकें आयीं। इस पुस्तकालय ने पिछले साल, ४ लाख पुस्तकें पाठकों को उधार दीं, और इसके २० हज़ार नियमित सदस्य थे। इसके फोटो-विभाग को पाण्डु-लिपियों के चित्रों तथा मायक्रोफ़िल्मों के लिये २६ हज़ार आर्डर मिले। विभिन्न देशों के ६५० पुस्तकायों, शिक्षा संस्थाओं तथा अन्य संस्थाओं के साथ, उक्त पुस्तकालय, पाठ्य सामाग्री का आदान प्रदान करता है।

समाज कल्याण पर व्यय

* सन् १९६२ में, ज.ज.ग. ने, समाज कल्याण के कार्यों पर ८५ अरब मार्क (१ मार्क = १.१२ न. पै.) की धन-राशि खर्च की, अर्थात सन् १९५८ से १ अरब, ६० करोड़ मार्क अधिक खर्च किये। इसी प्रकार, पिछले पांच वर्षों में यहां, समाज बीमे के रूप में अर्थात वृद्धों के पेनशनों, बीमारी-भत्ता, मातृ तथा शिशु भत्ता, इलाज और औषधियों पर ४५ अरब मार्क खर्च किये गये।

'ट्रापिकल' वस्त्र

* ज. ज. ग. ने, उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में पहना जाने योग्य एक नया तथा विशेष कपड़ा तैयार किया है। इस 'ट्रापिकल कपड़े के एक वर्ग गज़ कपड़े का वज़न केवल ४३/४ औन्स है।

भूरे कोयले का उत्पादन

* जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिग्नाइट (भूरा कोयला) उद्योग ने, सन् ६२ के लिये निर्धारित लक्ष्य, निश्चित समय से पहले ही पूरा किया। सन् १९६२ के प्रारंभ में ही इस उद्योग की खानों से २४ करोड़, ३० लाख टन भूरा कोयला निकाला जा चुका था, अर्थात सन् १९६० की तुलना में, १ करोड़, ८० लाख टन अधिक।

निर्माण . . . . और पहरेदार
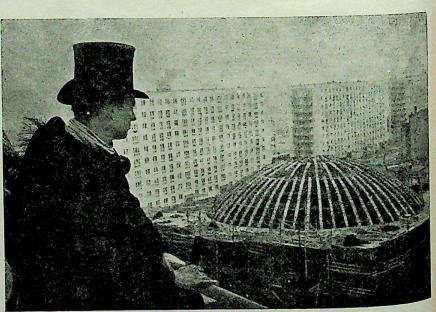
जर्मनी की खबरें

अन्तर्राष्ट्रीय मेलों में भेदभाव का विरोध :

नाइस में स्थित 'अन्तर्राष्ट्रीय मेला संघ' के निदेशालय ने हाल ही में एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में किसी भी प्रकार का भेदभाव बरतने की सख्त निन्दा और विरोध प्रकट किया गया। उक्त संस्था में यह प्रस्ताव लइपज़िक व्यापार मेलों की आयोजक समिति ने रखा था।

यह प्रस्ताव इसलिये पास करवाना पड़ा क्योंकि कुछ देशों ने, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की 'लइपज़िक व्यापार मेला संस्था' के प्रतिनिधियों को अपने देशों में दाखिल होने में प्रवेश-पत्र (विसा) देने से इन्कार किया था। प्रस्ताव पास करने का परिणाम यह निकला है कि भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले ऐसे देशों में ही आयोजित होंगे जो ज. ज. ग. या अन्य देशों के प्रतिनिधियों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगायेंगे। यही कारण है कि 'अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला संघ' के निदेशालय की दूसरी बैठक स्टाकहाल्म में होगी।

'संघ' की 'नाइस' बैठक में, 'लइपज़िक व्यापार मेला संस्था' के उप-महा-निदेशक, श्री रुडोल्फ डेमसर, 'अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला संघ' के फिर से उपाध्यक्ष चुने गये।

ऑपेरा भवन की पन्द्रहवीं वर्षगांठ :

हाल ही में, बर्लिन के प्रहसन खेलने वाले 'फेल्सेनस्टाइन' नामक ऑपेरा भवन ने अपनी पन्द्रहवीं वर्षगांठ मनाई। इस अवसर पर, बर्लिन के इस कनिष्ठतम ऑपेरा भवन ने मोज़ार्ट का विश्व प्रसिद्ध ऑपेरा 'जादुई बांसुरी' खेला।

इस ऑपेरा भवन का उद्घाटन हुआ २३ दिसम्बर, १९६० के रोज़। तब से लेकर आज तक इसकी प्रसिद्धि देश-देशान्तर में फैल चुकी है। इस प्रसिद्धि का मुख्य श्रेय, प्रोफेसर वाल्टर फेलसेन्स्टाइन को है जो इस भवन के प्रमुखतम निर्माता हैं। पन्द्रह वर्षों के अपने जीवन में उक्त ऑपेरा-भवन ने ४२ ऑपेरा, ६ लघु-ऑपेरा, १३ बैले तथा ८५ कनसर्ट दिखाये हैं। संगीत के लगभग ४० लाख शैदाइयों ने इन कृतियों से मनोरंजन प्राप्त किया है।

ज. ज. ग. के नाटकीय अभिनयों ने पेरिस, मास्को, प्राग, बुडापेस्ट आदि विभिन्न देशों के मुख्य नगरों में धूम मचाई है। फेलसेन्स्टाइन ऑपेरा भवन द्वारा अभिनीत मोज़ार्ट की "फिगारो का विवाह" तथा "जादुई बांसुरी", ओफेनबाख की "होफमन्न की कथायें" और यानासेक की "छोटी धूर्त लोमड़ी" आदि जैसी रचनाओं ने आजकल, यूरोप के सभी नाट्य-क्षेत्रों में उथल-पुथल मचाई है। प्रो० फेलसेन्स्टाइन तथा उनका नाट्य-दल आज तक, तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुआ है।

इस समय प्रो० फेलसेन्स्टाइन, बेन्जामिन ब्रिटेन के प्रसिद्ध ऑपेरा "ग्रीष्म की एक रात का सपना" को रंगमंच पर पुनः अभिनीत करने के लिये रिहर्सल कर रहे हैं। इसके अलावा प्रोफ़ेसर महोदय, ओफेनबाख के लघु-ऑपेरा "नीली दाढ़ी" की भी तैयारी कर रहे हैं।

ब्रिटेन के सम्मानित व्यक्तियों की शुभ-कामनायें :

ब्रिटेन के जन-जीवन के हर क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले ६० सम्मानित व्यक्तियों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, डा० योहानेस डीकमन्न को नव-वर्ष की शुभकामनायें भेजी हैं। इनमें उक्त महानुभावों ने अपनी इस आशा को व्यक्त किया है कि सन् १९६३ में, संसार को विभक्त करने वाली समस्याओं को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने की ओर कदम उठाये जायेंगे।

सम्मानित ब्रिटिश निवासियों ने, पश्चिम बर्लिन समस्या तथा जर्मन शांति-सन्धि के प्रश्नों को भी सुलझाने का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपना यह दृढ़ मत भी प्रकट किया है कि जर्मन जनता के हितों की सुरक्षा तभी होगी जब दोनों जर्मन राज्यों को पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान की जायेगी और वे दोनों संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य बना दिये जायें।...

नव वर्ष के उक्त शुभ संदेश पर जिन महानुभावों के हस्ताक्षर थे उनमें से कतिपय ये हैं :

कामन सभा के सदस्य : रिचर्ड कैली, विल्ल ग्रीव्न, तथा सिडनी सिलवरमेन; कैंटरबरी के डीन, हेवलेट्ट जानसन; कावेन्ट्री के महापौर, आर्थर वाग तथा उनके पूर्ववर्ती महापौर, विलियम कैलो; विश्वशांति परिषद के अध्यक्ष

यातर्राले सेफ़र्टः जर्मनी की नई स्केटिंग चैम्पियन

प्रो. जे. डी. बर्नाल; ब्रिटिश शांति समिति के अध्यक्ष, गोर्डन शेफ फर और प्रसिद्ध ट्रेड यूनियन अधिकारी, वैज्ञानिक तथा विश्वविद्यालय के आचार्य आदि।

राज्य प्रकाशन-गृह की स्थापना :

नव वर्ष की पहली जनवरी से, जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक नये राज्य प्रकाशन-गृह ने अपना काम आरम्भ किया। इस प्रकाशन-गृह को संस्थापित करने का निर्णय, ज.ज.ग. की मंत्रि-परिषद ने किया और यह सीधे इसी परिषद के आधीन है। इस प्रकाशन-गृह का मुख्य कार्य है यहां की लोकसभा, राज्य परिषद, मंत्रि-परिषद तथा राज्य के अन्य अंगों उपांगों के मसौदे छापना। इसके अतिरिक्त, राजनीति तथा कानून सम्बंधी दस्तावेज तथा अन्य सामग्री भी यह प्रकाशन-गृह प्रकाशित करेगा। समाजवादी लोकतंत्र को विकसित तथा दृढ़ करने वाले साहित्य का प्रकाशन भी इसी प्रकाशन-गृह में होगा।

यह प्रकाशन गृह ज. ज. ग. के निवासियों को, अन्य समाजवादी देशों का राजनीतिक तथा कानून संबंधी साहित्य भी उपलब्ध करेगा।

बग़दाद में प्रदर्शनी उद्घाटन :

ज. ज. ग. की विद्युत-तकनीकी विदेश व्यापार संस्था द्वारा बग़दाद में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर इराक़ के सम्मानित महानुभाव उपस्थित थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए इराक़ के व्यापार मंत्री, श्री नादिम अल-जाहवी ने कहा : "ज. ज. ग. हमारे देश के साथ व्यापार करने वाले सबसे अधिक विश्वासनीय तथा सबसे अच्छे मित्र देशों में से एक है। दो देशों के मैत्रीपूर्ण संबंधों का आधार है, शांति तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के संबंध में उनका समान दृष्टिकोण।" आगे श्री अल-जाहवी ने कहा : "प्रधान मंत्री कासिम के नेतृत्व में इराक़ की सरकार की यह हार्दिक इच्छा है कि ज. ज. ग. के साथ वह अपने आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य संबंधों को निरन्तर बढ़ाये और उनको दृढ़ करे।"

ज.ज.ग. के भावी फुटबाल खिलाड़ियों को बर्लिन-ओबरशोनवाइडे के खिलाड़ी क्लब के अनुभवी फुटबाल खिलाड़ी ट्रेनिंग देते हैं।
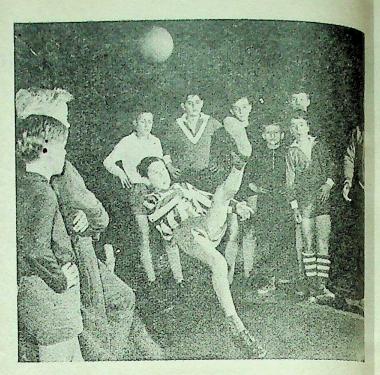
पोलैंड द्वारा कृत्रिम-हृदय प्रदर्शन

पोलैंड का "वारिमेक्स" नामक वाणिज्य चैम्बर, मार्च के वसन्त-कालीन लइपज़िक व्यापार मेले में एक कृत्रिम-हृदय का प्रदर्शन करेगा। मानव शरीर में इस हृदय को कैसे लगाया जायेगा, इसका प्रदर्शन पोलैंड के डाक्टर तथा इंजीनियर करेंगे। पोलैंड के विशेषज्ञों द्वारा निर्मित उक्त कृत्रिम-हृदय, अन्य देशों के बनाये हुए ऐसे ही हृदयों से इस दृष्टि से भिन्न है कि इसकी बनावट उलझी हुई नहीं बल्कि बहुत सीधी सादी है। इस कृत्रिम-हृदय की एक और विशेषता यह है कि इसको तहा कर मोटर द्वारा लाया ले जाया जा सकता है।

बेलजियम के विदेश मंत्री का मत :

बेलजियम की विदेश वार्ता कमेटी ने पश्चिम बर्लिन की समस्या को बात-चीत द्वारा सुलझाने की राय दी है। यहां के संसद में विदेश वार्ता संबंधी बहस के दौरान, विदेश मंत्री, श्री स्पाक ने कहा "मेरा यह निश्चित मत है कि वर्तमान स्थिति, प. बर्लिन के सवाल को हल करने के लिये बिलकुल अनुकूल है। मेरा यह भी मत है कि कई समस्यायें आजकल के अनुकूल वातावरण में हल हो सकती हैं।..."

अलबर्ट श्वाइटज़ेर को बधाई :

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लेखक संघ ने, ८८वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर विश्वप्रसिद्ध लेखक और नोबल पुरस्कार विजेता, श्री अलबर्ट श्वाइटज़ेर को अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजी हैं। विद्वान् लेखक लम्बारेने (अफ्रीका) में निवास करते हैं और वह मानव कल्याण तथा विश्वशांति संबंधी कार्यों में लगे हुये हैं। अपने उक्त शुभ सन्देश में लेखक संघ ने लिखा : "हम बहुत उत्सुकता तथा सहानुभूति से शांति तथा विभिन्न देशों की आपसी मैत्री से संबंधित आपके अनथक प्रयत्नों को देखते और सराहते हैं। इन सत्-प्रयत्नों के लिये हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। कृपया हमारी शुभकामनायें तथा बधाइयां स्वीकार कीजिये।..."

क्यूबा द्वारा राजनयक मान्यता :

जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा क्यूबा गणराज्य की सरकारों ने यह निर्णय

किया है कि वे आपस में पूर्ण राजनयक संबंध संस्थापित करेंगे। आज तक इन दो राज्यों के आपसी रिश्ते केवल व्यापार दूतावासों तक ही सीमित थे। अब दूतावास क़ायम किये जायेंगे। यह फ़ैसला इन दो देशों की बढ़ती हुई दृढ़ मैत्री के नितान्त अनुकूल है। पूर्ण राजनयक संबंध इन दोनों देशों की मैत्री को अधिक विस्तृत और सुदृढ़ बना देंगे।

गिनी के राष्ट्रपति से मुलाकात :

कोनाक्री : हाल ही में गिनी गण-राज्य के राष्ट्रपति श्री सेकूतूर ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार के उपमंत्री, श्री गेरहाई वाइस का स्वागत किया। श्री वाइस, आजकल गिनी की राजधानी कोनाक्री में ज. ज. ग. के एक सरकारी प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व कर रहे हैं जो वहां व्यापार संबंधी बात चीत करने गया हैं। दोनों देशों के हित की इस बात चीत में व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री हेलमूट गुइरके तथा गिनी के व्यापार मंत्री, कीता नफामारा ने भी हिस्सा लिया।

भारतीय फर्म के साथ संधि :

बम्बई की एक इंजीनियरी फर्म 'ब्लू स्टार' और ज. ज. ग. की विदेश व्यापार संस्था 'लिमेक्स' में बातचीत के बाद एक संधि पर दस्तखत हुये। संधि के अनुसार 'लिमेक्स', विभिन्न प्रकार के सामग्री-परीक्षण यंत्रों के उत्पादन में, भारतीय फर्म को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक सहयोग प्रदान करेगी। इन यंत्रों का उत्पादन क्रमबद्ध होगा।

ब्रिटिश गुआना का मंत्री ज.ज.ग. में :

बर्लिन : ब्रिटिश गुआना के गृहमंत्री, श्री क्लाइड क्रिस्चियन, जर्मन जनवादी गणतंत्र का छः दिन का दौरा समाप्त करके, गत मंगलवार को स्वदेश लौट गये। ज. ज. ग. में पधारने पर ज. ज. ग. के उप प्रधानमंत्री, श्री स्टोप ने उनका स्वागत किया। मंत्री महोदय ने, यहां के विदेश मंत्रालय तथा विदेश-व्यापार मंत्रालय के कई उच्च अधिकारियों से, और यहां के विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी कालिजों के विद्वानों, इंजीनियरों आदि से, बात चीत की।

५० करोड़ पुस्तकें प्रकाशित :

बर्लिन : जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रकाशन-गृहों ने सन् १९५८ से ६२ तक, लगभग ५० करोड़ पुस्तकों तथा पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। दूसरे शब्दों में, ज. ज. ग. में प्रति वर्ष, प्रति व्यक्ति के लिये छः पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इस संख्या में से २ करोड़, ६० लाख पुस्तकें आधुनिक जर्मन साहित्य से संबंधित हैं। शेष पुस्तकें तकनीकी, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा अन्य विषयों से संबंध रखती हैं।

क़यामत की ठण्ड और उत्पादन :

यूरोप में आजकल क़यामत की सर्दी पड़ रही है। इस प्राकृतिक प्रकोप को देखते हुये, अपनी जनता के कष्टों को कम करने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने कुछ कारखानों और फैक्ट्रियों को २ फरवरी तक बन्द कर दिया है। भोजन, बिजली, ईंधन, परिवहन तथा निर्यात संबंधी उत्पादन को हर कीमत पर चालू रखा जायेगा। बन्द हुए कारखानों तथा फैक्ट्रियों का अतिरिक्त कोयला, बिजली, परिवहन तथा पीने का पानी उत्पादन करने वाले कारखानों में लगा दिया जायेगा। बर्लिन में संग्राहलय, कई क्लब तथा आमोद प्रमोद-गृह और कई सिनेमा, कुछ समय के लिये बन्द किये गये हैं।

'बर्लिन मजलिस' ने गणतंत्र दिवस मनाया :

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, यहां के भारतीय निवासियों की संस्था 'बर्लिन मजलिस' ने अपने गणराज्य का तेरहवां 'गणतंत्र दिवस' हमबोल्ट विश्वविद्यालय में मनाया।

'बर्लिन मजलिस' के अध्यक्ष, डा. एम. ए. अनसारी ने भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र की मैत्री तथा सहयोग के उल्लेख का जोरदार तालियों से स्वागत हुआ। डा. अनसारी, हमबोल्ट विश्वविद्यालय में, जर्मन छात्रों को हिन्दीपढ़ाते हैं... इस शुभ अवसर पर 'बर्लिन मजलिस' को, ज.ज.ग. के 'दक्षिण-पूर्वी एशियाई संघ', 'फ्री जर्मन यूथ' तथा हमबोल्ट विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों और ज.ज.ग. में पढ़ने वाले अनेक अफ्रो-एशियाई तथा यूरोपियन विद्यार्थियों की ओर से बधाइयों के सन्देश मिले।

लइपज़िक व्यापार मेले में भारत

लइपज़िक: सदा की तरह इस वर्ष भी, भारत, लइपज़िक के वसन्तकालीन व्यापार मेले में, हिस्सा लेगा। यह मेला ३ मार्च से १२ मार्च तक चलेगा। ४६ भारतीय व्यापार संस्थायें, भारत के मण्डप में अपने अपने उत्पादनों का प्रदर्शन करेंगी। इनके अतिरिक्त ६ अन्य फर्में अव्यवसायिक रूप में इस मेले में भाग लेंगी। भारत निर्यात करने वाली अपनी पारंपरिक वस्तुएं, जैसे काफी, चाय, मसाले, तम्बाकू, कपड़े, और पटसन की वस्तुएं प्रदर्शित करेगा। इन वस्तुओं के अतिरिक्त भारत, पटसन तथा सूती कपड़े के कारखानों के उपकरण, विद्युत-तकनीकी और धातु-विज्ञान के उत्पादन जैसे रिफ्रिजिरेटर आदि भी प्रदर्शित करेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का कागज़ बनाने का उद्योग भी इस वर्ष उक्त मेले में बढ़-चढ़ कर भाग लेगा। इस उद्योग की ५५० फैक्ट्रियां हैं, जिनमें ६२ हज़ार मज़दूर काम करते हैं। इस उद्योग के उत्पादनों के अतिरिक्त, ज. ज. ग. के मण्डप में भूरा कोयला खोद निकालने के नव विकसित यन्त्र भी दिखाए जायेंगे।

शांति . . . सह-अस्तित्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

२. एक दूसरे की राज्य-सीमाओं के प्रति सम्मान हो। इन सीमाओं का उल्लंघन अथवा परिवर्तन करने के सभी प्रयत्नों को त्याग दिया जाये। दूसरे देशों से भी इन सीमाओं का अनुमोदन प्राप्त कराया जाये।

३. अणु शस्त्रास्त्रों का परीक्षण, एकत्रीकरण, उत्पादन तथा उनकी प्राप्ति का सर्वथा परित्याग हो।

४. दोनों जर्मन राज्य शस्त्रीकरण रोक दें और सैनिक व्यय को कम करें। दोनों राज्यों में निःशस्त्रीकरण पर समझौता हो।

५. यात्रा करने के लिये, दोनों जर्मन राज्य एक दूसरे की नागरिकता तथा प्रवेश-पत्रों को मान्यता प्रदान करें। इस विषय में दोनों राज्यों के नागरिकों के प्रति, जर्मन तथा अन्य देशों में, किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो।

६. खेलकूद तथा सांस्कृतिक क्षेत्र के मामले में दोनों जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबंध स्थापित हों। इस संबंध में पश्चिमी जर्मनी का फेडरल गणराज्य अन्य देशों में इसके दूतावास और इसकी सामाजिक तथा खेल-कूद संस्थायें, कोई गड़बड़ न करें जब दोनों राज्यों के खिलाड़ी अथवा अन्य प्रतिनिधि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग ले रहे हों। ज. ज. ग. भी ऐसा करने के लिये तैयार है।

७. दोनों जर्मन राज्यों या एक में व्यापार संधि पर दस्तखत हों ताकि इनका आपसी व्यापार फले-फूले।

ये हैं हमारे सुझाव। यदि प. जर्मनी की सरकार भी इन सुझावों से मिलते जुलते अपने सुझाव पेश करे तो हम उन पर भी बातचीत करने के लिये तैयार हैं। हम समझते हैं कि जर्मन शांति संधि पर दस्तखत होने के पश्चात, कालान्तर में, दोनों जर्मन राज्यों का आपसी सहयोग अवश्य बढ़ जायेगा।

नया साहित्य....

(पृष्ठ ७ का शेष)

के क्षेत्र में, मजदूर ही लेखक के शिक्षक बन जाते हैं। अमली काम में नवयुवकों की योग्यता की जांच को कई लेखकों ने अपना वर्णय-विषय बनाया है। इस कोटि की कृतियों में, ब्रिगेट्टे राइमन्न का उपन्यास 'दैनिक जीवन में आगमन' काफी प्रभावशाली रचना है। ऐसी रचनाओं में, एरिक नोइट्श की कृति 'बिट्टरफेल्ड की कथायें' संभवतः सर्वोत्तम रचना है। इनमें समाजवादी सम्पत्ति, काम करने के उचित ढंग, अनुशासन, उत्तरदायित्व तथा परिश्रम का निराधार प्रचार आदि जैसे प्रश्नों का कलापूर्ण चित्रण मिलता है।

हाल ही में दो सफल उपन्यास प्रकाशित हुये हैं। इनका वर्णय विषय है जर्मनी की तरुण पीढ़ी के युद्धकालीन अनुभव। ये उपन्यास हैं: डीटर नोल का 'वर्नर होल्ट की महत्वाकाक्षायें' और, वाल्टर शूल्ज का 'हम, पवन में धूल नहीं'। इन दोनों उपन्यासों में, जर्मन-निवासियों की अच्छी और बुरी परम्पराओं का चित्रण हुआ है। केवल एक ऐसा राष्ट्रीय दृष्टिकोण ही, जो विश्व-व्यापी बनता जा रहा है—विशेषकर जर्मन शांति सन्धि संघर्ष के कारण—हमारी साहित्यक रचनाओं को, स्थानीय परिधि से उठा कर, अन्तर्राष्ट्रीय-महत्व की सीमा में, ले जाने में समर्थ हो सकता है। इस तथ्य का एक स्पष्ट प्रमाण है, समाजवादी जर्मनी की सर्वश्रेष्ठ लेखिका, अन्ना सेगर्स की नवीनतमकृति 'निर्णय'। इसकी कथा-वस्तु, ज. ज. ग. की प्रगति और पश्चिमी जर्मनी की प्रतिक्रियावादी नीतियों की तुलना पर आधारित है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उक्त नवीन साहित्य में, विभिन्न देशों की मैत्री तथा शांति की भावनायें अभिव्यक्त हुई हैं तथा हो रही हैं। इसके ठीक विपरीत है पश्चिमी जर्मनी का अधुनिक साहित्य, जो प्रतिहिंसा तथा संकुचित राष्ट्रवाद की, अस्वस्थ भावनाओं से भरा हुआ है। वही साहित्य श्रेष्ठ तथा उत्तम है जो पावन मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त तथा पुष्ट करे। निकृष्ट तथा पाशविक भावनाओं का प्रचार करने वाला साहित्य अस्वस्थ है, इसलिए त्याज्य है।

वृहत विद्या-मंदिर

(पृष्ठ १४ का शेष)

प्रयोगशालायें हैं, और तेजस्क्रिय पदार्थों पर प्रयोग करने के लिये दो विशेष प्रयोगशालायें हैं। इसके अतिरिक्त एक भव्य पुस्तकालय और व्यवस्था विभाग भी है।

विज्ञान सम्बंधी कई संस्थाओं तथा कई संस्थानों ने भी, ज. ज. ग. के इस दू[illegible] सबसे बड़े नगर, [illegible]जिक को अपना स्थाई आवास बनाया है। लइपजिक सन् १८४६ से 'सैक्सन विज्ञान अकादमी' का घर रहा है। इसके अतिरिक्त, आजकल इस नगर में 'जर्मन विज्ञान अकादमी' के पांच संस्थानों का आवास भी है। जर्मनी के सबसे बड़े पुस्तकालयों में से एक 'जर्मन पुस्तकालय' भी यहां है। इसमें प्रत्येक विषय से सम्बंधित ३० लाख किताबें हैं। ७३ देशों से इस पुस्कालय ने अपना संपर्क बना रखा है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस वृहत मन्दिर में, हर साल शिक्षा विज्ञान तथा संस्कृति से सम्बंधित कई सम्मेलन आयोजित होते हैं। गत वर्ष में यहां १०६ ऐसे सम्मेलन हुये जिनमें ३३ हज़ार व्यक्तियों ने भाग लिया।

'सूचना पत्रिका'

जो भी पाठक, 'सूचना पत्रिका' को प्राप्त करना चाहते हों, वे दो रुपये का वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद 'पत्रिका' नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक : २)
अर्ध-वार्षिक : १)
एक प्रति : २० न. पै.
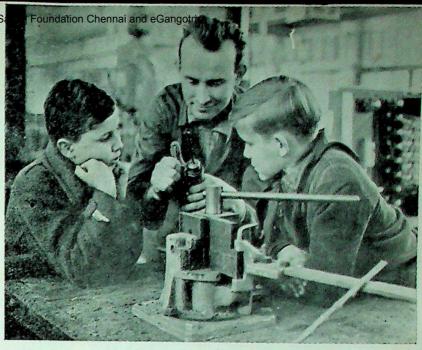
भारत, कई वर्षों से 'लइपज़िक व्यापार मेलों' में, भाग ले रहा है। व्यापार के क्षेत्र में, ज. ज. ग. तथा भारत का सहयोग, दोनों देशों के आर्थिक विकास के लिये हितकर है। लइपज़िक में, भारतीय मंडप बहुत लोकप्रिय है (बायें कोने में)।

...ज. ज. ग. की नई शिक्षा व्यवस्था में साधारण शिक्षा के साथ ही, तीसरी, चौथी श्रेणी से, किसी एक व्यवसाय का प्रशिक्षण भी दिया जाता है (दायें कोने में)।

सचित्र समाचार

बर्फ़ का शीतल सौन्दर्य

Regd. No. D 1330

वर्ष ८, अंक २ २० फरवरी, १९६३

संकेत

मुख पृष्ठ : निकिता ख्रुश्चोव और वाल्टर उल्ब्रिख्त 'जर्मन सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी' की छठी कांग्रेस में

अंतिम पृष्ठ : पाले और बर्फ ने, वृक्षों को विलक्षण आकार प्रदान किया है, ज.ज.ग. में

सूचना-पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३६ कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

सूचना-पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र

के व्यापार-दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ८
फरवरी
१९६२

सूचना पत्रिका

जर्मन
जनवादी
जनतंत्र
के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

२

वर्ष ६
फरवरी
१९६४

अध्य ... के चांसलर ... के नाम

सेवा में
फेडरल चान्सलर, प्रोफेसर एल. एरहार्ड,
शाउमबुर्ग महल, फेडरल जर्मन रिपब्लिक,
बोन. १६.जनवरी, १९६४

माननीय चान्सलर,

परमाणु युद्ध को रोकना, हमारे जर्मन राष्ट्र के लिये एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न बन गया है। इस युद्ध की नारकीय ज्वालाओं से कितने प्राणी जीवित रह पायेंगे, कोई भी जर्मन सरकार इस परिहास पूर्ण गणना में अपना समय बरबाद नहीं कर सकेगी। इतना तो निश्चित है कि परमाणु युद्ध से पूरे जर्मन राष्ट्र का भौतिक अस्तित्व ही फौरन खतरे में पड़ जायेगा।

शस्त्रीकरण की दौड़ जारी है। अणु शस्त्रास्त्रों के भण्डार दिन-प्रति-दिन बढ़ते जा रहे हैं। ज्यों-ज्यों अणुशस्त्रों से लैस और देशों की संख्या बढ़ती जायेगी, त्यों-त्यों अणुयुद्ध छिड़ने का ज़बरदस्त खतरा भी बढ़ता जायेगा। इसके अतिरिक्त, ऐसी स्थिति में, निहित-स्वार्थों वाले शक्ति लोलुप राजनीतिक तत्व, अथवा एक आकस्मिक घटना भी अणुयुद्ध के कारण बन सकते हैं। इसलिये, अपने राष्ट्र के सामने इस भयंकर खतरे को देखते हुये और समय की आवश्यकता को महसूस करते हुये, श्रीमान् मैं आपसे यह फौरी अपील करता हूं कि आप और मैं फिलहाल अपने राजनीतिक तथा अन्य मतभेदों को एक तरफ रखकर, मिलजुल कर ऐसे क़दम उठायें जिनसे अणुयुद्ध का भयंकर खतरा टल जाये। पूर्व और पश्चिम (जर्मनी) में रहने वाले जर्मन-वासियों की सुरक्षा के लिये, उनकी भावी पीढ़ियों के जीवन तथा आरोग्य के लिये, उनके भूत तथा वर्तमानकालीन अमूल्य कलात्मक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिये—अर्थात जर्मन राष्ट्र के कल्याण और सर्वतोमुखी प्रगति के लिए, श्रीमान् चान्सलर, यह बहुत ज़रूरी है कि हम, कम से कम, अणु-शस्त्रास्त्रों के परित्याग के बारे में, अधिक समय नष्ट किये बिना एक समझौता करें आपस में।...आज-कल की वस्तु-स्थिति में, अणु-शस्त्रों से लैस कोई भी देश, युद्ध छिड़ने पर, फौरन ही दूसरी ओर के अणु-शस्त्रों के प्रहार का शिकार हो जायेगा। यही कारण है कि कुछ नाटो देश भी, अपने यहां, अणु शस्त्रों को रखने का डट कर विरोध करते हैं। जर्मन भूमि को भी यदि हम अणु शस्त्रों की विपत्ति से दूर रखें, और नाटो एवं वारसा संधियों के सदस्य-देशों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ से हम यदि यह गारण्टी प्राप्त कर सकें कि अन्य देशों के अणु शस्त्र जर्मन-भूमि के खिलाफ कदापि इस्तेमाल न हों, तो यह बात जर्मनी की सुरक्षा की सब से अच्छी जमानत होगी।

मानव कल्याण का यह महान उद्देश्य, राजनीतिक तथा कानूनी झमेलों के कारण असफल और अप्राप्य नहीं रहना चाहिये। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर और इसकी उपलब्धि के लिये मैं, जर्मन फेडरल गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र के संबंधों को अच्छा बनाने के लिये सदा प्रस्तुत हूं। युद्ध और शांति का मसला (जो जीवन-मरण का मसला है) सुलझाते समय, मान-प्रतिष्ठा और आपसी राजनयिक मान्यता के सवालों को हमें बीच में नहीं लाना चाहिये, बल्कि ऐसे समय पर जर्मन राष्ट्र का कल्याण तथा इसके हितों की सुरक्षा हमारे अमल और फैसलों का एकमात्र आधार होना चाहिये। इस संदर्भ में किसी मान्यता को मानने की अनिवार्य आवश्यकता तो यह है कि हम अणुयुद्ध द्वारा अपने राष्ट्र को समूल नाश के खतरे से बचायें।

इसी उद्देश्य से प्रेरणा पाकर, चान्सलर महोदय, मैं आपकी सेवा में, अणु शस्त्रों के परित्याग सम्बन्धी संधि का एक मसविदा भेज रहा हूं। यह संधि जर्मन जनवादी गणतन्त्र और जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकारों के बीच होगी। मेरी आपसे यह विनम्र प्रार्थना है कि जर्मन जनता को अणु नाश के त्रास से मुक्त करने में आप सहयोग प्रदान करें, और जर्मन फेडरल गणराज्य के अणु शस्त्रीकरण द्वारा, दो जर्मन राज्यों के बीच की वर्तमान खाई को और गहरा न कीजिये।

शांति तथा जर्मन राष्ट्र की एकता के हित के लिये, हम दोनों को, दो जर्मन राज्यों की आपसी तनातनी को समाप्त करने की दिशा में काम करना चाहिये। इसके लिए हमारे सामने एक ही रास्ता है और वह है आज-कल की महत्वपूर्ण समस्याओं को ईमानदारी से समझने का प्रयास करके किसी समझौते पर पहुंचना। इस प्रयास को शुरू करने के लिये और विचारों के आदान-प्रदान के लिये, श्रीमान्, मेरा यह विनम्र सुझाव है कि आप और मैं ऐसे प्रतिनिधि मनोनीत करें जो जल्द ही, बात चीत के लिये, प्रथम संपर्क स्थापित कर सकें।

आपके प्रति उच्चतम सम्मान के साथ,

हस्ताक्षर :
वाल्टर उल्ब्रिख्त
अध्यक्ष, राज्य परिषद
जर्मन जनवादी गणतन्त्र

वर्ष ९
अंक २ | २० फरवरी, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : लाइपज़िक वसन्तकालीन व्यापार मेले की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं । एक नवजवान इंजीनियर, पीटर हरमन्न, एक दुरंगी छापकल को तैयार करने में लगा हुआ है । मेले में इसका प्रदर्शन होगा

अंतिम पृष्ठ : कार्ल-मार्क्स स्तादत में शिशिर ऋतु

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं । प्रेस-कटिंग पाकर हम आभारी होंगे ।
जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इन्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड़, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव

अध्यक्ष, वाल्टर उल्ब्रिख्त | पश्चिमी जर्मनी के चांसलर ... के नाम

सेवा में
फेडरल चान्सलर,
शाउमबुर्ग महल, फे...

माननीय चान्सलर,

परमाणु युद्ध को ... अत्यन्त महत्व... ज्वालाओं से कितने ... इस परिहास पूर्ण ग... इतना तो निश्चित ... भौतिक अस्तित्व ही फौरन खतरे में पड़ जायेगा।

शस्त्रीकरण की दौड़ जारी है। अणु शस्त्रास्त्रों के भण्डार दिन-प्रति-दिन बढ़ते जा रहे हैं। ज्यों-ज्यों अणुशस्त्रों से लैस और देशों की संख्या बढ़ती जायेगी, त्यों-त्यों अणुयुद्ध छिड़ने का ज़बरदस्त खतरा भी बढ़ता जायेगा। इसके अतिरिक्त, ऐसी स्थिति में, निहित-स्वार्थों वाले शक्ति लोलुप राजनीतिक तत्व, अथवा एक आकस्मिक घटना भी अणुयुद्ध के कारण बन सकते हैं। इसलिये, अपने राष्ट्र के सामने इस भयंकर खतरे को देखते हुये और समय की आवश्यकता को महसूस करते हुये, श्रीमान् मैं आपसे यह फौरी अपील करता हूं कि आप और मैं फिलहाल अपने राजनीतिक तथा अन्य मतभेदों को एक तरफ रखकर, मिलजुल कर ऐसे क़दम उठायें जिनसे अणुयुद्ध का भयंकर खतरा टल जाये। पूर्व और पश्चिम (जर्मनी) में रहने वाले जर्मन-वासियों की सुरक्षा के लिये, उनकी भावी पीढ़ियों के जीवन तथा आरोग्य के लिये, उनके भूत तथा वर्तमानकालीन अमूल्य कलात्मक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिये—अर्थात जर्मन राष्ट्र के कल्याण और सर्वतोमुखी प्रगति के लिए, श्रीमान् चान्सलर, यह बहुत ज़रूरी है कि हम, कम से कम, अणु-शस्त्रास्त्रों के परित्याग के बारे में, अधिक समय नष्ट किये बिना एक समझौता करें आपस में।...आज-कल की वस्तु-स्थिति में, अणु-शस्त्रों से लैस कोई भी देश, युद्ध छिड़ने पर, फौरन ही दूसरी ओर के अणु-शस्त्रों के प्रहार का शिकार हो जायेगा। यही कारण है कि कुछ नाटो देश भी, अपने यहां, अणु शस्त्रों को रखने का डट कर विरोध करते हैं। जर्मन भूमि को भी यदि हम अणु शस्त्रों की विपत्ति से दूर रखें, और नाटो एवं वारसा संधियों के सदस्य-देशों तथा संयुक्त राष्ट्र संघ से हम यदि यह गारण्टी प्राप्त कर सकें कि अन्य देशों के अणु शस्त्र जर्मन-भूमि के खिलाफ ... यह बात जर्मनी की सुरक्षा की सब से ... हान उद्देश्य, राजनीतिक तथा कानूनी ... र अप्राप्य नहीं रहना चाहिये। इसी ... र इसकी उपलब्धि के लिये मैं, जर्मन ... नवादी गणतंत्र के संबंधों को अच्छा ... हूं। युद्ध और शांति का मसला ...) सुलझाते समय, मान-प्रतिष्ठा ... ता के सवालों को हमें बीच में ... समय पर जर्मन राष्ट्र का कल्याण तथा इसके हित की सुरक्षा हमारे अमल और फैसलों का एकमात्र आधार होना चाहिये। इस संदर्भ में किसी मान्यता को मानने की अनिवार्य आवश्यकता तो यह है कि हम अणुयुद्ध द्वारा अपने राष्ट्र को समूल नाश के खतरे से बचायें।

इसी उद्देश्य से प्रेरणा पाकर, चान्सलर महोदय, मैं आपकी सेवा में, अणु शस्त्रों के परित्याग सम्बन्धी संधि का एक मसविदा भेज रहा हूं। यह संधि जर्मन जनवादी गणतन्त्र और जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकारों के बीच होगी। मेरी आपसे यह विनम्र प्रार्थना है कि जर्मन जनता को अणु नाश के त्रास से मुक्त करने में आप सहयोग प्रदान करें, और जर्मन फेडरल गणराज्य के अणु शस्त्रीकरण द्वारा, दो जर्मन राज्यों के बीच की वर्तमान खाई को और गहरा न कीजिये।

शांति तथा जर्मन राष्ट्र की एकता के हित के लिये, हम दोनों को, दो जर्मन राज्यों की आपसी तनातनी को समाप्त करने की दिशा में काम करना चाहिये। इसके लिए हमारे सामने एक ही रास्ता है और वह है आज-कल की महत्वपूर्ण समस्याओं को ईमानदारी से समझने का प्रयास करके किसी समझौते पर पहुंचना। इस प्रयास को शुरू करने के लिये और विचारों के आदान-प्रदान के लिये, श्रीमान्, मेरा यह विनम्र सुझाव है कि आप और मैं ऐसे प्रतिनिधि मनोनीत करें जो जल्द ही, बात चीत के लिये, प्रथम संपर्क स्थापित कर सकें।

आपके प्रति उच्चतम सम्मान के साथ,

हस्ताक्षर :
वाल्टर उल्ब्रिख्त
अध्यक्ष, राज्य परिषद
जर्मन जनवादी गणतन्त्र

प्रस्तावित सन्धि का मसविदा

नीचे हम उस संधि का मसविदा प्रस्तुत कर रहे हैं जो जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी—सं०) के चांसलर डा० एरहार्ड को भेज दिया है अपने खत के साथ। अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया है कि दोनों जर्मन राज्यों की सरकारें इस संधि पर दस्तखत करें।
—संपादक

दो महायुद्धों के बाद, जर्मन जनता के निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र में एक आदर्श प्रस्तुत करने के विशेष दायित्व को ध्यान में रखते हुये,

संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के अणु-शस्त्रों को अन्य देशों में न फैलने देने से संबंधित प्रस्तावों को अमली जामा पहनाने की अभिलाषा से प्रेरित होकर,

दुनियां के दो सबसे बड़े तथा जबरदस्त सैनिक संश्रयों के सब से खतरनाक संपर्क-स्थल पर तनातनी को समाप्त करने की इच्छा के परिणामस्वरूप,

जर्मन जनवादी गणतंत्र और जर्मन फेडरल गणराज्य की सरकारों ने, जो यहां से आगे (मसविदे में) "संधि के पक्षकार" नाम से संबोधित होंगे, इस फौरी धारणा के आधीन कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और जर्मन फेडरल गणराज्य के राज्यकीय संबंध पूर्वग्रहों से दूषित न हों अपने निम्न पूर्णाधिकारी प्रतिनिधि नियुक्त किये हैं,

....

अपने सरकारी पत्रों आदि के आदान-प्रदान के बाद—जो हर दृष्टि से सही पाये गये—उन्होंने निम्न (अनुच्छेदों) पर एकमत होना स्वीकार किया है :

अनुच्छेद १

संधि के पक्षकार :

(क) स्वयं अथवा अन्य देशों की सहायता से अपनी राज्य सीमा में अथवा अन्य राज्यों की सीमाओं के अन्तर्गत अणु-शस्त्रों का उत्पादन नहीं करेंगे,

(ख) अणु-शस्त्र अथवा उनके उत्पादन संबंधी शोध सामग्री दस्तावेज़ आदि न तो प्राप्त करेंगे और न ही स्वीकार करेंगे,

(ग) प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, अन्य राज्यों अथवा शक्ति-समूहों के माध्यम से, अकेले अथवा अन्य राज्यों के सहयोग द्वारा, किसी भी रूप में, अणुशस्त्रों पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास नहीं करेंगे,

(न) अणु-शस्त्रों के प्रयोगों में किसी भी रूप में सम्मिलित नहीं होंगे,

(च) अपने इलाकों में किसी भी प्रकार के अणु-शस्त्र नहीं रखेंगे, न ही अन्य राज्यों अथवा शक्ति-समूहों को ऐसा करने की अनुमति देंगे,

(छ) अणु-शस्त्रों का इस्तेमाल स्वयं, अथवा अन्य राज्यों या शक्ति-समूहों के माध्यम से कभी नहीं करेंगे।

अनुच्छेद २

१. संधि के पक्षकार, सभी राज्यों से अपील करते हैं कि वे इस संधि के अनुच्छेद १ में स्वीकृत बातों का सम्मान करें, और उनमें से यदि किसी (राज्य) ने जर्मन-भूमि पर अणु-शस्त्र लाकर रखे हों तो उनको वहां से हटा लें।

२. संधि के पक्षकार, नाटो तथा वारसा संधि के राज्यों और संयुक्त राष्ट्र संघ से, जर्मन जनवादी गणतंत्र और जर्मन फेडरल गणराज्य को, स्थाई रूप में, नाभिकीय-विहीन क्षेत्र मानने और इस क्षेत्र के खिलाफ किसी भी स्थिति में अणु-शस्त्रों का प्रयोग न करने की गारण्टी हासिल करने का प्रयास करेंगे।

अनुछेद ३

संधि के पक्षकार, इस बात के लिये तैयार हैं कि संधि, पक्के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण, अर्थात् एक ऐसे आयोग की देख-रेख में लागू हो, नाटो तथा वारसा संधि के राज्यों के प्रतिनिधियों की समान संख्या जिसके सदस्य हों।

अनुच्छेद ४

१. यह संधि तब तक के लिये वैध होगी जब तक अणु शस्त्रों पर पूर्ण प्रतिबन्ध के बारे में एक सामान्य समझौता वजूद में आयेगा।

२. संधि, पक्षकारों के आन्तरिक राज्य नियमों के अनुसमर्थन प्राप्त करने के आधीन होगी। उक्त अनुसमर्थन के दस्तावेज़ों के विनिमय के साथ ही संधि अमल में आयेगी।

संधि की दो प्रतिलिपियां तैयार की जायेंगी और ये दोनों ही मौलिक होंगी।

३. इस संधि में, पश्चिम बर्लिन भी शामिल हो सकता है।

तिथि १९६४

ब्रूनो लोइश्नर

ज. ज. ग. की मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष

इनके नेतृत्व में ४ फर्वरी को एक बड़ा शिष्टमंडल, भारत के दौरे पर एक हफ्ते के लिये आया
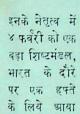
श्री ब्रूनो लोइश्नर ५३ वर्ष की आयु के हैं। . . . उनका जन्म बर्लिन के एक मज़दूर परिवार में हुआ। हुम्बोल्ट तथा लेस्सिंग विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाई और वाणिज्य के व्यवसाय को अपना लिया।

जवानी में कदम रखते ही श्री लोइश्नर, जर्मनी की उन प्रगतिशील शक्तियों के क्रांतिकारी आन्दोलन तथा संघर्ष के संपर्क में आ गये जिसका ध्येय था (और आज भी है) जर्मन राष्ट्र के लिये एक मैत्रीपूर्ण तथा शांतिपूर्ण जीवन उपलब्ध करना।

सन् १९३३ से पहले, जब जर्मनी पर फासिज्म की काली घटा मंड़राने लगी, श्री ब्रूनो लोइश्नर ने फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। सन् १९३३ में, हिटलर की नाज़ी पार्टी ने जब जर्मनी की शासन-सत्ता हथिया ली और वहां आतंक तथा दमन का चक्र चलाया, श्री लोइश्नर तब भी फासिज़्म-विरोधी गुप्त लड़ाई में बराबर जमे रहे। सन् १९३६ में, तीन वर्षों के गुप्त संघर्ष में हिस्सा लेने के बाद, आखिर फासिस्ट, उनको गिरफ्तार करने में सफल हुये। राज्य के प्रति विद्रोह का जाली अभियोग लगा कर उनको १० साल की सज़ा दी गई। इस सज़ा की अधिकतर अवधि, श्री लोइश्नर ने, साखज़ेनहाउज़ेन तथा माउटहाउज़ेन नामक (फासिस्ट) सैनिक तथा हत्या-शिविरों में गुजारे। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होने के कारण (इस पार्टी में वे २१ वर्ष की आयु में शामिल हुए) फासिस्ट दरिन्दों ने उनको पाश्विक यातनाओं तथा अत्याचारों का खासतौर से शिकार बनाया।

सन् १९४५ में जब हिटलर की कमर तोड़ दी गई उसकी तथाकथित अजेय जर्मन सेनाओं को पराजित करके, तो सभी जर्मन देशभक्तों के साथ मिलकर श्री लोइश्नर भी, जर्मनी को युद्धकालीन तबाही से निकाल कर, उसको शांति के पथ पर ले जाने के लिये नवनिर्माण कार्य में जुट गये।

सन् १९४९ में, जर्मनी के विभाजन तथा दो जर्मन राज्यों के आविर्भाव के बाद, श्री ब्रूनो लोइश्नर, जर्मनी के पूर्वी भाग—अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र में अपने सपनों को साकार करने लगे। उन्होंने यहां कई जिम्मेदार राजनीतिक तथा सार्वजनिक पदों पर काम किया, और इस तरह उन्होंने इस प्रथम शांति प्रिय जर्मन राज्य (ज. ज. ग.) के निर्माण में सक्रिय भाग लिया। जर्मन जनवादी गणतंत्र के भव्य समाजवादी निर्माण में और दुनिया के अन्य देशों के साथ ज. ज. ग. के व्यापक सम्बन्ध तथा संपर्क स्थापित करने में श्री लोइश्नर की काफी देन है।

सन् १९५२ से १९६१ तक, श्री लोइश्नर, ज. ज. ग. के राष्ट्रीय आर्थिक विकास की प्रमुख संस्था 'राज्य योजना आयोग' के अध्यक्ष थे। सन् १९५५ में उनको मंत्रि-परिषद का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। १० वर्षों से वे समाजवादी देशों की 'आपसी आर्थिक सहायता परिषद्' में, ज. ज. ग. के प्रतिनिधि भी रहे हैं।

श्री ब्रूनो लोइश्नर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सब से प्रमुख राजनीतिक पार्टी, 'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी और उसके पोलिटब्यूरो के सदस्य भी हैं। यह पार्टी ज. ज. ग. के जन-जीवन और इसकी गतिविधि की प्राण है।

श्री लोइश्नर विवाहित हैं और दो बच्चों के पिता भी। शास्त्रीय संगीत उनको बहुत पसन्द है। जर्मनी के महान संगीतकार बीतोव्न का संगीत उनको सबसे अधिक प्रिय है। नाटक, सिनेमा देखने का भी उनको काफी शौक है। अवकाश में वे मछली के शिकार पर भी जाते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के निर्माण तथा विकास में श्री ब्रूनो लोइश्नर ने जो सेवायें अर्पित की हैं उनके उपलक्ष्य में उनको कई पदकों तथा पारितोषकों से सम्मानित किया गया है। इनमें से उल्लेखनीय ये हैं :

'श्रम नायक', "देशभक्ति का स्वर्ण पदक', 'श्रम ध्वज पदक', 'एर्नस्ट मोरित्स आरंत पदक' और 'फासिज्म विरोधी योद्धा पदक"।

नई दिल्ली में

प्राच्य-शास्त्रियों का २६ वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

डा० हांस क्रूहगर

(ज. ज. ग. के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता)

संसार भर के प्राच्य-शास्त्रियों का महान अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन समाप्त हुआ। इस सम्मेलन के कार्यक्रम में भाग लेने के लिये जो सैंकड़ों विदेशी प्रतिनिधि आये थे, वे अपने-अपने देशों को, विश्वविश्रुत भारतीय आतिथ्य की पावनतम भावनायें लेकर अपने देशों को लौट गये हैं। इतने बड़े सम्मेलन का, बहुत अच्छा संगठन तथा संचालन स्वयं में एक अनुकरणीय आदर्श है। यह सुव्यस्थित संगठन, प्राच्य-विद्या सम्मेलन की सफलता का एक प्रमुख कारण था।

प्राच्य-विद्याविदों के उपर्युक्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की विशेषता तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व, इस तथ्य में निहित है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य-विद्या सम्मेलनों के लम्बे इतिहास में इसका २६वाँ सम्मेलन पहली बार, अफ्रो-एशिया के एक ऐसे नवोदित राज्य में सम्पन्न हुआ जो कुछ ही वर्ष पहले उपनिवेशवादी सत्ता से मुक्त होकर स्वतन्त्र हुआ है। इस सम्मेलन के आयोजन के लिए भारत का चयन एक घटना मात्र नहीं था। यह सम्मान स्वयं इसका अर्जित अधिकार था। प्राच्य-शास्त्रियों के सम्मेलन का मूलाधार और अत्यन्त सक्रिय भाग था प्राच्य-विद्या विभाग तथा इसके पांच अनुभाग। विदेशी प्राच्य-विद्याविदों को इस बात से काफी सन्तोष हुआ कि इन सभी अनुभागों में अनेक भारतीय विद्वान-प्रतिनिधियों की अच्छी खासी संख्या थी।

यह तथ्य इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि एशिया तथा अफ्रीका के लोग अब, प्राच्य-विद्या के क्षेत्र में भी, अनुसंधान के विषय मात्र नहीं रह गये हैं, वरन् वे स्वयं अनुसन्धित्सु बन गये हैं।

प्राच्य-विद्यावदों के इस २६वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के ११ प्राच्य-शास्त्रियों पर आधारित एक प्रतिनिधि-मण्डल सम्मिलित हुआ था। ११ में से १० विद्वानों ने सम्मेलन के विभिन्न अनुभागों में अपने विद्वत्तापूर्ण लेख पढ़े। इन लेखों में आलोच्य विषयों को देखकर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ज.ज.ग. में, प्राच्य-विद्या की सभी शाखाओं के अध्ययन की ओर समुचित ध्यान दिया जाता है। यह एक सर्वविदित बात है कि जर्मन विद्वान, १६ वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही प्राच्य-विद्या के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोधकार्य करते रहे हैं। सम्मेलन में, ज. ज. ग. के कई प्राच्य-शास्त्री प्रतिनिधियों ने, अपने लेखों तथा व्याख्यानों में इस महत्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डाला। उदाहरण के लिए डा० वोल्फगांग मार्गेनरोत "संस्कृत की भाषा वैज्ञानिक समस्यायें" शीर्षक पर बोले। प्रोफेसर बर्नहात ने "प्राक्-इज़राइली फिलिस्तीन में राजनीतिक स्थिति" पर प्रकाश डाला। इसी प्रकार डा० होजर्त क्लेनगेल ने "अमुह का अज़ीरू और अरमारना के इतिहास में उसकी भूमिका" पर भाषण दिया।... तुलनात्मक भाषा विज्ञान में डा० मानफ्रेड लोरेनत्स ने "क्रुदन्तात्मक रचना : ताजिक तथा फारसी भाषाओं की एक विशिष्ट

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ज. ज. ग. के प्राच्य-शास्त्री, श्रीमती अरुणा आसफ अली के साथ। उनके बाईं ओर, इस लेख के लेखक तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि-मण्डल के नेता डा. क्रूइगर खड़े हैं

भारत और ज. ज. ग. के बढ़ते हुये सांस्कृतिक सम्बन्ध

लेखक :
डब्ल्यू मुइन्ज़ेर
(भारत में, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के सांस्कृतिक सलाहकार)

भारतवर्ष और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच प्रथम सांस्कृतिक संपर्क सन् १९५६ में स्थापित हुये। उसके बाद ये संबंध उत्तरोत्तर बढ़ते तथा पुष्ट होते गये, और आजकल इन दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंध बहुत आगे बढ़ चुके हैं। एक दूसरे के शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में दोनों देशों की रुचि बढ़ती जा रही है। इस रुचि का मुख्य कारण यह है कि दोनों देश विश्वशांति, सह-अस्तित्व और निःशस्त्रीकरण के दृढ़ समर्थक हैं।.... अपनी पंचवर्षीय योजनाओं के लक्ष्यों को अच्छी तरह से पूरा करने के लिये, भारत को, तकनीकी तथा वैज्ञानिक विषयों में निपुण एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों की बहुत आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये हमारे दोनों देश यह महसूस कर रहे हैं कि विज्ञान, तकनालोजी तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में काफी सहयोग की गुंजायश है। भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार, सन् १९५७ में, भारत के ५० स्नातकोत्तर विद्यार्थी जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न विश्व-विद्यालयों तथा संस्थानों में शोध कार्य करने और डाक्टरेट की उपाधियां प्राप्त करने के लिये गये।

विज्ञान तथा उच्चतर शिक्षा

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, उच्चतर अध्ययन के लिये, भारत सरकार को आजतक १४९ वज़ीफे पेश किये हैं विज्ञान तथा इंजीनियरी की विभिन्न शाखाओं में। इन वज़ीफ़ों पर जो भारतीय विद्यार्थी ज. ज. ग. गये उनमें से अधिकांश तीन वर्षों की ट्रेनिंग लेकर भारत लौटे हैं, और वे यहां के सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों में जिम्मेदार पदों पर काम कर रहे हैं। भारत की 'विज्ञान तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद' और बर्लिन स्थित, ज. ज. ग. की 'विज्ञान अकादमी' के बीच भी संपर्क स्थापित हो चुके हैं। भारत के २० शोधार्थी, जर्मन विज्ञान अकादमी द्वारा संचालित सुप्रसिद्ध संस्थानों में एक वर्ष तक विशिष्ट शोध कर चुके हैं।

तकनीकी विषयों में शोध करने के अतिरिक्त ज.ज.ग., भारतीय विद्यार्थियों को अमली ट्रेनिंग करने के लिये भी वज़ीफ़े देता है। ये वज़ीफ़े जिम्मेदार पदों पर काम करने वाले टेकनोलोजिस्टों को अपने-अपने विषयों में अमली अनुभव प्राप्त करने के लिये दिये जाते हैं। भारत के विकासशील औद्योगीकरण के साथ-साथ, वज़ीफ़ों की उक्त योजना भी निरन्तर बढ़ा दी जायेगी। इस संदर्भ में एक दो उदाहरण पर्याप्त होंगे। लाइपज़िक के हमारे सुप्रसिद्ध मुद्रण कला संस्थान में, पांच भारतवासी मुद्रण-टेकनालोजी में ट्रेनिंग ले रहे हैं आज कल।.... इसी प्रकार ज.ज.ग. के विश्व प्रसिद्ध हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, (बर्लिन) के हिन्दी विभाग में एक भारतीय विद्वान, रीडर नियुक्त हुये हैं, दो साल के लिये।

भारत सरकार के वज़ीफे :

पिछले तीन वर्षों में, ज. ज. ग. के विद्यार्थियों को भारत सरकार की ओर से १२ वज़ीफे मिले हैं विभिन्न क्षेत्रों में अनुसन्धान तथा अध्ययन करने के लिये। इस समय भारत में ज.ज.ग. के छः स्कालर अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्र में अध्ययन कर रहे हैं। इस वर्ष, अर्थात् सन् १९६४ में वहां के ५ अन्य विद्यार्थी अपने-अपने विशिष्ट अध्ययन के लिये भारत आयेंगे।

भारत में समय-समय पर आयोजित, विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, ज.ज.ग. के अनेक विद्वानों, वैज्ञानिकों तथा प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। इनमें से कतिपय उल्लेखनीय नाम हैं : प्रोफेसर रुबेन, डा. हाइडरिख तथा डा. क्रूइगर (प्राच्य-विद्या शास्त्री), प्रोफेसर म्यूलेल तथा डा. यूवर्ट (वनस्पति-विज्ञानी), प्रो. ज़ेगाल (जीव-शास्त्री), प्रो. मेलान (औषध-शास्त्री), प्रो. रीनायकर (जर्मन विज्ञान अकादमी के महामंत्री), प्रो. गिरनूस (प्रसिद्ध जर्मन भाषा-शास्त्री), प्रो. बुडज़िलावस्की (लाइपज़िक विश्वविद्यालय के पत्रकार संकाय के डीन) और प्रो. किर्प (एक प्रसिद्ध शल्य-शास्त्री) इत्यादि। भारत में अपने समान-कर्मियों के साथ इन विद्वानों ने विचारों का आदान-प्रदान किया, यहां के विभिन्न संस्थानों में भाषण दिये और नये तथा बहुमूल्य संपर्क स्थापित किये। ये संपर्क, भारत और ज.ज.ग. के सांस्कृतिक संबंधों को अधिक पुष्ट तथा विकसित करने में बहुत मदद देंगे।

सामान्य शिक्षा : पिछले दो वर्षों में, सामान्य शिक्षा के क्षेत्र में, भारतीय तथा ज.ज.ग. के शिक्षा-संस्थानों के आपसी संबंध काफी अच्छे हो गये हैं।.... ज.ज.ग. की शिक्षा व्यवस्था से संबंधित प्रदर्शनी ने यहां के शिक्षा-क्षेत्रों को काफी प्रभावित किया है। आजकल यह प्रदर्शनी भारत के विभिन्न स्थानों में दिखाई जा रही है। हमारे दो देशों के विभिन्न स्कूलों तथा शिक्षा संस्थानों ने आपसी संपर्क स्थापित किये हैं। ज.ज.ग. के केन्द्रीय शिक्षा-शास्त्र संस्थान ने हाल ही में जो, 'अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्रकला प्रतियोगिता' आयोजित की, उसमें अनेक भारतीय बच्चों ने भाग लिया। इसी प्रकार, ज.ज ग. के बच्चे 'शंकर अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्रकला प्रतियोगिता' में हर साल हिस्सा लेते हैं

और इनाम पाते हैं। हमारा पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में हमारे दो देशों के ये शैक्षिक संबंध उत्तरोत्तर बढ़ते जायेंगे।

कला और साहित्य : गत दो वर्षों में ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के सांस्कृतिक विभाग ने, भारत के विभिन्न स्थानों में कुल ८२ प्रदर्शनियां आयोजित कीं। इनमें से सन् १९६२ में ३६ तथा सन् ६३ में ४६ प्रदर्शनियां हुईं। प्राचीन तथा आधुनिक जर्मन चित्रकारों के चित्रों तथा ग्राफ-चित्रों के साथ-साथ ज.ज.ग. के विश्वप्रसिद्ध नाटककार, बर्तोल्त ब्रेख्त की नाट्य शिल्प संबंधी कुछ नवीन देनों का भी प्रदर्शन हुआ।

भारतीय कलाकारों को, ज.ज.ग. के कई सांस्कृतिक समारोहों में निमन्त्रित किया जाता है। इसी प्रकार हमारे देश के कलाकार भारत के सांस्कृतिक उत्सवों में भाग लेते रहते हैं। ज.ज.ग. लोक कला एनसाम्बल और बर्लिन वाद्य संगीत दल के कार्यक्रमों की, भारत में, मुक्तकण्ठ से प्रशंसा हुई। सन् १९६३ में ज.ज.ग का प्रसिद्ध चित्रकार, विल्ली नोइबर्ट, आल इण्डिया फाइन आर्ट्स तथा क्राफ्टस सोसाइटी के अतिथि बन कर आये और भारत के चार बड़े नगरों में उन्होंने अपने चित्रों की प्रदर्शनी की। इसी प्रकार, भारतीय रंगमंच के कई कलाकार, ज.ज.ग. के विभिन्न नाट्य-संस्थानों में अध्ययन के लिये गये हैं।....केवल सन् १९६३ में ही, ज.ज.ग. की १०३ फिल्में भारत के विभिन्न स्थानों में दिखाई गईं जिनको लगभग ५ लाख भारतवासियों ने देखा। इसके अलावा, ज.ज ग. नियमित रूप से कलकत्ता के बाल-फिलम समारोह में हर साल भाग लेता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य : सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में ज ज ग. ने, भारत सरकार को पांच भारतीय डाक्टरों को औषधि-शास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट ट्रेनिंग देने की पेशकश की है। ये डाक्टर संभवत मार्च या अप्रैल में ट्रेनिंग के लिये ज. ज. ग. जायेंगे।....कलकत्ता में, स्वास्थ्य विज्ञान संबंधी एक वृहत प्रदर्शनी का आयोजन किया ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के क्षेत्रीय कार्यालय ने। एक लाख से अधिक दर्शक इस प्रदर्शनी को देखने के लिये आये। विश्वप्रसिद्ध 'कांच की नारी' बहुत लोकप्रिय रही। बाद में यह प्रदर्शनी, नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग मेले में लाई गई। प्रदर्शनी के अन्त पर, 'कांच की नारी' को छोड़कर बाकी सभी चीजें, मौलाना आज़ाद मेडिकल कालेज, नई दिल्ली को उपहार स्वरूप भेंट की गई।....भारत के स्वास्थ्य-मंत्रालय को, ज.ज ग. ने, चेचक तथा कालेरा की बीमारियों के कारणों का अध्ययन करने के लिये जर्मन डाक्टरों का एक दल यहां भेजने का सुझाव भी दिया है।

खेलकूद के क्षेत्र में भी, भारत और ज.ज.ग. के संबंध बढ़ने लगे हैं। भारतीय हाकी खिलाड़ियों की एक टीम हमारे देश का दौरा कर चुकी है। इस क्षेत्र में भी, हमारे दो देशों के रिश्ते निरन्तर बढ़ते जायेंगे, ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

ऊपर दिया गया ब्यौरा, हमारे दो देशों के व्यापक सांस्कृतिक रिश्तों का केवल एक अंश है। हमारा यह विश्वास है कि इस विशाल क्षेत्र में भारत तथा ज.ज.ग. के संबंध और अधिक बढ़ाने तथा पुष्ट करने की अभी बहुत गुंजायश है। कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारे दो देशों के ये संबंध एक ओर हमारी मैत्री को सुदृढ़ करेंगे और दूसरी ओर ये विश्वशांति की शक्तियों को अधिक बलशाली बनायेंगे।

प्राच्य-शास्त्रियों का . . .

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रवृत्ति" पर एक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया। डा० कूर्ट ह्यूबर ने 'इन्दोनीशियाई भाषा के युग - विभाजन की समस्या" पर प्रकाश डाला, और डा० हारी सुपित्-सबाद्र्त ने भाषा-वैज्ञानिक तिथियों के विश्लेषण की समस्या पर विचार करते हुए "इन्दोनीशियाई भाषा की पद-रचना का स्वाभाविक संश्लेषण" को स्पष्ट किया।

इन व्याख्यानों में एक बहुत ही रोचक व्याख्यान था प्रोफेसर हाइंज़ मादे का, और इस व्याख्यान का विषय था : "भारतीय परी-कथाओं के ऐतिहासिक स्रोत"।

प्राच्य-विद्या का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसका एक छोर जहां प्राचीनता को छूता है वहां इसका दूसरा छोर आधुनिकता को भी छू लेता है। प्राच्य-विद्या के इस पूरे विस्तार को जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्राच्य-शास्त्रियों ने अपने व्यापक अध्ययन का विषय बनाया है। ऊपर मैंने ज. ज. ग. के उन विद्वानों तथा उनके ऐसे व्याख्यानों का उल्लेख किया है जिनका सम्बन्ध प्राचीनता तथा भाषा-विज्ञान से है। ऐसे विद्वानों का भी संकेत रूप में उल्लेख करना अनिवार्य है यहां, जिन्होंने आधुनिक युग को अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

डा० योआखिम हाइडरिख ने उक्त प्राच्य-शास्त्री सम्मेलन में, १८वीं शताब्दी के अन्त और १९ शती के प्रारम्भ में भारत में, राज्य और ग्राम-समुदायों के परस्पर सम्बन्धों पर, विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया। इसी प्रकार, ज. ज. ग. के अन्य विद्वानों ने अपने व्याख्यानों में, एशिया तथा अफ्रीका के देशों के राष्ट्र-मुक्ति आन्दोलन के ऐतिहासिक महत्व पर सविस्तार प्रकाश डाला। इन में, निम्न विद्वानों के व्याख्यान विशेष उल्लेखनीय हैं : प्रोफेसर लौतार रातमन्न का "सन १९०० से १९[illegible] तक, जर्मनी में मिस्र राष्ट्रमुक्ति आन्दोलन के निर्वासित राष्ट्रवादी" और डा० हो[illegible] कुइगर का "प्रथम महायुद्ध के दौरान जर्मनी में भारतीय देशभक्त लाला हरदयाल की सरगर्मियां, भारत के स्वाधीनता संग्राम के परिवेश में"।

प्राच्य-विदों के २६वें अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में जर्मन जनवादी गणतंत्र के विद्वानों के उक्त व्याख्यानों तथा लेखों का बहुत अच्छा स्वागत हुआ। इन पर काफी वाद-विवाद चला, क्योंकि इन में विचारोत्तेजक बातें समाविष्ट थीं। सम्मेलन के सत्रों में और उनके बाद विचारों का जो आदान-प्रदान हुआ हम प्राच्य-विद्याविद् उनसे बहुत लाभान्वित होंगे। कई नये अमूल्य संपर्क भी हमने स्थापित किये अन्य देशों के विद्वानों के साथ— विशेष कर भारतीय प्राच्य-विदों के साथ। हमें पूर्ण विश्वास है कि उक्त सम्मेलन तथा यहां स्थापित किये गये संपर्क विचार-विमर्श मैत्री की स्थापना में एक बड़ा योगदान होगा।

कार्ल मार्क्स-स्तादृत :

टेक्सटाइल मशीन - निर्माण केन्द्र

जर्मन जनवादी गणतंत्र में टेक्सटाइल मशीन निर्माण का उद्योग यहां के सैक्सन - थूरिनजिया नामक क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र का हृदय (केन्द्र) है कार्लमार्क्स-स्ताद्त, अर्थात् भूतपूर्व खेमनित्ज विभिन्न प्रकार के उद्योगों तथा कल-कारखानों की वजह से यह भूतपूर्व खेमनित्ज १९ वीं शताब्दी में, जर्मनी का मानचेस्टर कहलाता था। आज, एक औद्योगिक केन्द्र की हैसियत से ज.ज.ग. में इसका महत्व और भी बढ़ गया है।

४०० साल से भी पहले, यहां के एक स्थानीय भू-शास्त्री, जो डाक्टर भी थे—श्री जार्ज आगरिकोला (१४९४—१५५५) ने सैक्सन की खनिज संपदा को सबसे बड़ी दौलत कहा था। सन् १८३० के आस पास, सुप्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक तथा अर्थशास्त्री, श्री जॉन स्टुअर्ट मिल्ल ने कहा था कि दुनिया में, स्विटज़रलैण्ड के अतिरिक्त सैक्सनी के मजदूर सब से अच्छे हैं। उनकी दृष्टि में सैक्सनी के श्रमिक, देश की सबसे बड़ी संपदा थी।...

सैक्सन प्रदेश के मजदूरों के परिश्रम तथा प्रतिभा का ही यह नतीजा है कि दुनिया के टेक्स्टाइल उद्योग की सभी शाखाओं की तकनीकी प्रगति के साथ, यहां के रिचार्ड हार्तमन्न, शोइनहेर तथा हामेल भाई, ऐरनस्त गेज़नर आदि जैसे नाम, आज भी जुड़े हुये हैं। इसी महान परंपरा के आधार पर कार्लमार्क्स-स्ताद्त तथा इसके आस पास के क्षेत्र का टेक्सटाइल निर्माण उद्योग, विकास तथा प्रगति के आधुनिकतम सोपान तक बढ़ आया है।

दूसरे महा युद्ध में इस क्षेत्र के उक्त उद्योग को बहुत क्षति पहुंची। निराशावादियों को ध्वस्त कारखानों के पुनर्निमाण में काफी सन्देह था। लेकिन अन्त में उनको भी अपनी धारणा बदलनी पड़ी। अपने पूर्वजों की इस गौरवशाली परंपरा ने यहां के श्रमिक वर्ग को प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया युद्ध के घावों को भरने के लिए। सैक्सन प्रदेश के टेक्सटाइल मशीन निर्माण उद्योग की भव्य परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए वे एक साथ जुट गये काम में देखते ही देखते, मजदूरों के हज़ारों लाखों हाथों ने मिल कर, खण्डहरों के ऊपर बड़े बड़े कारखाने खड़े किये। यहां के श्रमिकों, इंजीनियरों तथा तकनीशनों के सामने केवल ध्वस्त कारखानों को फिर से चालू करने का ही काम नहीं था। इसके अलावा उन्हें उद्योग की इस शाखा विशेष के तेज़ी से बदलते हुये तकनीकी मानों के अनुरूप भी बनाना था इन कारखानों को।

भारत के एक कारखाने में ज. ज. ग. का एक सूती स्वचालित करघा

यह कठिन और महत्वपूर्ण काम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसका ज्वलन्त प्रमाण है इस उद्योग के उत्पादन और उसके निर्यात में उत्तरोत्तर वृद्धि। सैक्सन प्रदेश के इस परम्परागत उद्योग — टेक्स्टाइल मशीन निर्माण उद्योग को न केवल पुनः स्थापित किया गया तथा उसका आधुनिकीकरण ही हुआ, बल्कि इसका बहुत अच्छा विस्तार भी हुआ! .... इस उद्योग विशेष के सतत विकास तथा विस्तार के लिये यहां दो संस्थान — टेक्स्टाइल मशीन निर्माण संस्थान और टेक्स्टाइल टेकनालोजी संस्थान, निरन्तर काम कर रहे हैं।
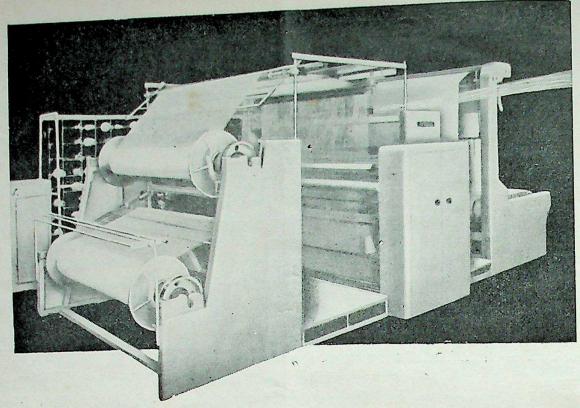
मालिमो-१६०० नामक सिलाई-बुनाई मशीन

सैक्सन के टेक्सटाइल मशीन उद्योग को आगे बढ़ाने वालों तथा इस से संबंधित आविष्कारकों की सूची तब तक अधूरी रहेगी जब तक इसमें, एक साथ ही सिलाई-बुनाई करने वाली 'मालिमो' नामक मशीन के आविष्कारकर्त्ता इंजीनियर, श्री मार्नज़-बगर्र का नाम न जोड़ लिया जाये। इस प्रतिभाशाली इंजीनियर को उक्त आविष्कार पर ज.ज.ग. की सरकार ने, राष्ट्रीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया। टेक्सटाइल उद्योग के क्षेत्र में सिलाई-बुनाई मशीन का आगमन, एक क्रांति से कम नहीं। ज.ज.ग. की, 'मालिमो' और इसी प्रकार का 'मालिपोल' तथा 'मालिवाट्ट' नामक सिलाई-बुनाई मशीनें आजकल दुनिया के कई देशों में बहुत बड़ी संख्या में निर्यात की जाती हैं। इन देशों में विशेष उल्लेखनीय हैं: ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, पश्चिमी जर्मनी इत्यादि। भारतवर्ष में भी इन नई मशीनों ने पदार्पण किया है और यहां के टेक्सटाइल उद्योग के क्षेत्र इसमें काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। ....अमरीका के एक टेक्सटाइल उद्योगपति ने भी ज.ज.ग. की इस मशीन का लाइसेन्स प्राप्त किया है अमरीका में इसके उत्पादन के लिये।

पिछले चन्द वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की टेक्सटाइल उद्योग की अन्य शाखाओं में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। नवीनतम तकनीकी स्तर की निम्न टेक्सटाइल मशीनें तैयार की गई हैं ज.ज.ग. में: ब्लोरूम्स तथा काटन काम्बर्स, ग्रिप्पर शटल स्वचालित करघा—४४०५ माडल, बिना ढक्कन के चार रंगों वाला ऊनी तथा वरस्टिड स्वचालित करघा—४३०७/३ माडल, और स्वचालित फ्लैट बुनाई की मशीन।

ज.ज.ग. में अन्य महत्वपूर्ण उद्योगों की तरह टेक्सटाइल उद्योग भी राष्ट्र की सम्पत्ति है। इस उद्योग की शाखा के वर्तमान उत्पादन-कार्यक्रम में निम्नलिखित टेक्सटाइल मशीनों का उत्पादन शामिल है:

रासायनिक रेशों का उत्पादन तथा शोधन करने की मशीनें; ऊन, सूत, एस्बसटस, कांच तथा विशिष्ट रेशे कातने की मिलों के लिये मशीनें; मरोड़ने-ऐंठने तथा लपेटने की मशीनें; बुनाई की मशीनें; ऊन, कपास तथा रेशम के बुनाई-करघे मालिमो, मालिपोल तथा मालिवाट् मशीनें; कपड़ा बुनने की मशीनें; विभिन्न उद्योगों तथा घरेलू इस्तेमाल के लि सिलाई मशीनें; और पूरे के पूरे, तैया टेक्सटाइल संयंत्र (प्लांट्स)।

ज.ज.ग. का 'टेक्सटिमा' नाम सा दुनिया में प्रसिद्धि पा चुका है। भारत भी, ज.ज.ग. की टेक्सटाइल मशीनें का मशहूर और लोकप्रिय बनती जा रही है पिछले चन्द वर्षों में, जर्मन जनवादी गणत ने, कपड़े बुनने के एक हज़ार से भी अधि स्वचालित करघे, ऊनी वस्त्र बुनने के अने स्वचालित करघे, ऐंठने-मरोड़ने की मशी और रद्दी की कताई मशीनें काफी संख्या भारत के विभिन्न टेक्सटाइल क्षेत्रों सप्लाई की हैं।

इस वर्ष के वसन्तकालीन लाइपज़ि व्यापार मेले में (जो १ से १० मार्च त लगेगा) विश्व के अनेक देशों के दर्श जर्मन जनवादी गणतन्त्र के टेक्सटा मशीन-उद्योग की आश्चर्यजनक प्रगति देखेंगे।

भारतीय गणतंत्र दिवस और जर्मन जनवादी गणतंत्र

राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, भारत के १४ वें गणराज्य दिवस के शुभअवसर पर भारत के राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को हार्दिक बधाई भेजी है तार के द्वारा। तार में लिखा गया है: "भारतीय गणराज्य के १४ वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, महामहिम, मैं आपको तथा भारतीय जनता को, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् एवं जनता की ओर से हार्दिक बधाइयां भेजता हूं।

"इस शुभ अवसर पर मुझे इस धारणा को व्यक्त करने की आज्ञा दीजिये कि भारतीय गणराज्य तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र में पिछले १० वर्षों से जो संबंध मौजूद हैं वे भविष्य में भी हमारे दोनों देशों की जनता के हितानुकूल, निरन्तर बढ़ते और पुष्ट होते रहेंगे।

"महामहिम, आपके व्यक्तिगत स्वास्थ्य और भारत तथा भारतीय जनता की निरंतर अभिवृद्धि संबंधी मेरी शुभकामनायें स्वीकार कीजिये। . . ."

इसी शुभअवसर पर, ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री ने भी श्री **जवाहरलाल नेहरू** को अपनी शुभकामनायें भेजी हैं। साथ ही उन्होंने श्री नेहरू के, जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना की हैं, ताकि वे भारत की महान जनता का साहसपूर्ण नेतृत्व निरन्तर करते रहें।

इसी प्रकार, ज. ज. ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, प्रोफेसर योहान्नेस दीकमन्न ने भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष, **सरदार हुकुमसिंह** और भारत के उपराष्ट्रपति, **डा. जाकिर हुसैन** को भी अपने शुभ संदेश भेजे हैं।

ज. ज. ग. के हाल्ले प्रांत की राजधानी के महापौर, श्री हांस क्रुइगर ने प्रांत के नागरिकों की ओर से, मद्रास के महापौर को गणराज्य दिवस की बधाइयां भेजी हैं।....हाल्ले नगर निगम के कौंसिलरों का एक प्रतिनिधि मण्डल जल्द ही मद्रास आ रहा है।

गणतंत्र दिवस और ज. ज. ग. के अखबार

जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक प्रमुख तथा सुप्रसिद्ध दैनिक "नूइस दूइशलैण्ड" ने २६ जनवरी, १९६४ के दिन अपने एक अग्रलेख में भारतीय गणराज्य के १४ वें गणतन्त्र दिवस का अभिनन्दन करते हुये लिखा है: "भारत के गणराज्य दिवस पर आज हम जो बधाई देते हैं, वह एक रीति मात्र को पूरा करना नहीं है, बल्कि यह है ज. ज. ग. की सरकार एवं जनता की हार्दिक सहानुभूति की अभिव्यक्ति भारतीय जनता के प्रति। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व संबंधी पंचशील के सिद्धांतों का प्रवर्तक होने के नाते, आजकल की विश्व समस्याओं को सुलझाने में भारत का सक्रिय हिस्सा रहा है—विशेषकर विश्व शांति को बनाये रखने में।... ..." इस अखबार ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के बारे में भारत ने यथार्थवादी रवैया अपनाया है। इस संदर्भ में अखबार के उक्त अग्रलेख में भारत के प्रधानमंत्री नेहरू के उस बयान का उल्लेख किया गया है जो उन्होंने तटस्थ देशों के बेलग्राद सम्मेलन में सन् १९६१ में दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के बारे में दिया था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के परराष्ट्र मंत्रालय के मुखपत्र "विदेशवार्ता बुलेटिन" (जो कई भाषाओं में छपता है) ने भी भारतीय गणराज्य दिवस के संबंध में एक लेख प्रकाशित किया है। इस लेख का शीर्षक है "भारत का एक महा पर्व"। लेख में कहा गया है कि "२६ जनवरी, सन् १९५० से भारत सरकार अपनी स्वतंत्र राष्ट्रीय नीति को अमली जामा पहनाने, स्वाधीनता को आशु विकास तथा निर्माण के द्वारा अधिक दृढ़ करने, और विदेश नीति में तटस्थता को अपनाने के राजमार्ग पर निकल पड़ी।

"ज. ज. ग. की जनता के दिल में भारतीय गणराज्य के प्रति बहुत सम्मान है, क्योंकि वह आम निःशस्त्रीकरण तथा अणुशस्त्रों पर पाबन्दी का दृढ़ समर्थक, और विश्व जन गन में मैत्री का पोषक है।

"दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व संबंधी भारत की मान्यता और जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने के उसके रवैये ने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने में काफी मदद पहुंचाई है।......"

खण्डहरों के गर्भ से उत्पन्न नया ड्रेस्डेन
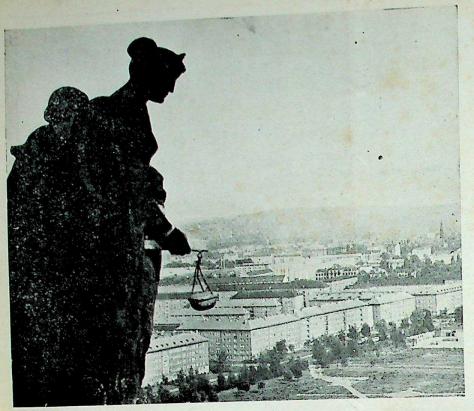
ड्रेडेन के टाउन हाल से 'न्याय की देवी' की मूर्ति नये ड्रेस्डेन को निहार रही है

ड्रेस्डेन की एक ऐतिहासिक यादगार 'स्विण्गर' नामक भव्य स्मारक एक बार फिर अपने पूर्व गांभीर्य तथा सौन्दर्य को प्राप्त कर रहा है। कला का यह अमर अवशेष, फरवरी सन् १९४५ की एंग्लो-अमरीकी बमबारी से तबाह हुआ था। इस को पुनः अपने मौलिक रूप तथा आकार में लाने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने एक करोड़ मार्क (१ मार्क = १.१२ न. पै.) की धनराशि लगाई है, और यहां के इंजीनियर इस पर पिछले १० वर्षों से काम कर रहे हैं। यह ऐतिहासिक स्मारक अब लगभग तैयार हो चुका है।

दूसरे महायुद्ध में बमवर्षा से यह भव्य 'स्विण्गर' इतना नष्ट हुआ था कि प्रायः इसको पुनः 'जीवित' करने वाले मूर्तिकारों तथा इंजीनियरों को, इसका यथातथ रूप प्रदान करने के लिये, पुराने फोटुओं तथा चित्रों का ही आश्रय लेना पड़ता था। बालू-पत्थरों पर खचित इसकी ६०० भित्ति-मूर्तियों को अपना मौलिक रूप और आकार देने के लिये उन्हीं पत्थर-खदानों का मसाला प्रयोग में लाया गया जो २०० वर्ष पहले इन मूर्तियों को बनाने में लगाया गया था।

पूरे ड्रेस्डेन की यही कहानी है। १३ फरवरी, सन् १९४५ की भयंकर ऐंग्लो-अमरीकी बमवर्षा से, अमर कला का भण्डार, ड्रेस्डेन, बिलकुल नष्ट हुआ। लेकिन आज, यहां के ५ लाख निवासियों ने, अपने सतत तथा अनथक प्रयत्नों से ध्वंस के खण्डहरों में से निकालकर एक बार फिर इसका उद्धार किया है। आज इसका सौन्दर्य पहले से अधिक निखर आया है।...जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना से अब तक लगभग ३०,००० लोग ड्रेस्डेन के नये फ्लैटों में जगह पा चुके हैं। पिछले चार वर्षों में यहां प्रति १५० मिण्टों पर एक नया फ्लैट तैयार हुआ। आल्टामार्क्त नामक प्रसिद्ध चौक (बाजार) भी बमबारी से पूरा का पूरा तबाह हुआ था, लेकिन आज वहां कई मंजिलों वाली सुन्दर और हवादार नई इमारतें, अपना सीना ताने, नीले आकाश से आंख-मिचौनी खेल रही हैं।

ड्रेस्डेन, राज्य कला-संग्रहों का केन्द्र है। यहां के इन विश्व-प्रसिद्ध कला-संग्रहों का मुकाबला केवल पेरिस के लौरे कला-संग्रह ही कर सकते हैं। कला के उच्च अध्ययन के लिये, ज. ज. ग. के अनेक कला-संस्थान भी यहीं स्थित हैं। इसलिये ड्रेस्डेन, ज. ज. ग. का ही नहीं बलिक विश्व मह[illegible] का एक कला भण्डार है।

एक ओर जहां ड्रेस्डेन कला-संग्रहों का एक मूर्तिमान संग्रहालय है, दूसरी ओर य[illegible] उद्योग की विभिन्न शाखाओं का केन्द्र भी है। इनमें से उल्लेखनीय हैं प्रकाशीय त[illegible] वैज्ञानिक औजार और विद्युत तकनीकी उप[illegible]करण बनाने के कारखाने टर्बाइन बनाने, बिजली से चलने वाले भारी इंजन, ट्रांसफार्म[illegible] और एक्स-रे बनाने वाले भारी उद्योग [illegible] कारखाने भी हैं यहां। इसी कोटि के [illegible]
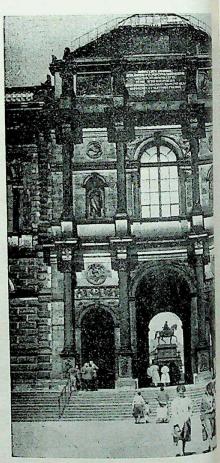
जेम्पर नामक सुप्रसिद्ध कला-गैलरी

हाफकिरखे नामक इस ऐतिहासिक अवशेष के पुनरनिर्माण पर २० लाख मार्क खर्च किये गये हैं

त्विगर के मृत्तिका-शिल्प के संग्रह

जैसे बायलर, इस्पात, लोह के पुल आदि बनाने के कारखाने भी यहां लगे हैं।

ड्रेस्डेन के कैमरा तथा तद्संबंधी उपकरण दुनिया भर में मशहूर हैं। यह सामान काफी मात्रा में अन्य देशों को निर्यात किया जाता है। . . . ड्रेस्डेन, ज. ज. ग. के नाभिकीय अनुसन्धान का केन्द्र भी है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय महत्व के कई शिक्षा संस्थान भी यहां स्थित है, जिनमें से उल्लेखनीय हैं: विश्वविद्यालय, तकनीकी विश्वविद्यालय, परिवहन हाई स्कूल, प्लास्टिक कलाओं का कालेज, संगीत कालेज, नाटक स्कूल और औषध-अकादमी इत्यादि। ड्रेस्डेन का महत्व इस एक तथ्य से स्पष्ट होता है कि गत वर्ष (१९६३) में यहां लगभग ८० राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुये। इसके अलावा, एक भी ऐसा दिन नहीं गुज़रता जब दुनिया के किसी न किसी देश के अतिथि या पर्यटक ड्रेस्डेन का दौरा न कर रहे हों। स्वीडन के एक ऐसे ही पर्यटक जो वहां के ताइरिनजे नामक स्थान के कौंसिलर हैं, के शब्दों में: "मुझे यहां यह देख कर काफी सन्तोष हुआ कि प्राचीन सांस्कृतिक निधि को यहां बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित रखा गया है, और युद्ध में नष्ट हुये ऐतिहासिक अवशेषों का पुनः उद्धार किया गया है। आने वाली पीढ़ियां इसके लिये बहुत आभारी रहेंगी।"
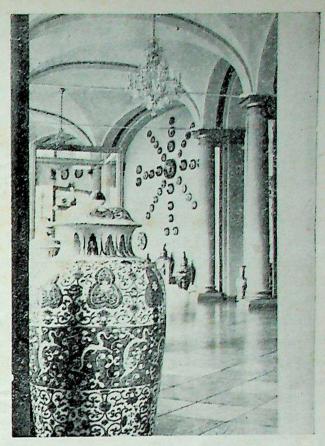
त्विगर: अपने पूर्व सौंदर्य तथा गरिमा में
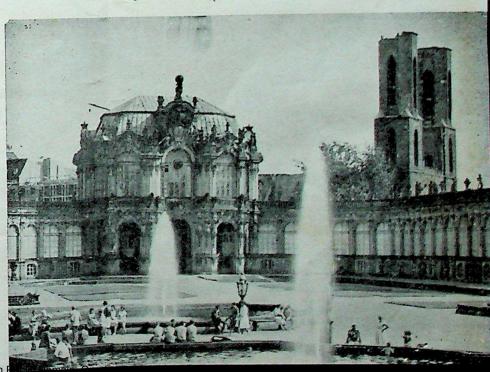
बर्लिन प्रवेश-पत्र सन्धि : एक विश्लेषण

—समीक्षक

अपनी 'पत्रिका' के गतांक में हम, बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि पर, विस्तार पूर्वक प्रकाश नहीं डाल सके थे। यह महत्वपूर्ण संधि, जैसा कि आप जानते हैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और पश्चिम बर्लिन सेनेट (नगर प्रशासन) के अधिकारियों के बीच हुई थी। इसके अनुसार प. बर्लिन के लाखों निवासियों को, क्रिसमस तथा नव-वर्ष के पर्वों के दौरान, ज. ज. ग. की राजधानी जनवादी बर्लिन में अपने सगे संबंधियों से मिलने के लिये अनुज्ञा-पत्र दिये गये। इसके लिये पहल की ज. ज. ग. की सरकार ने, और इसकी सफलता की सीमा तक ले जाने के पहले—अर्थात् बर्लिन संधि पर हस्ताक्षर होने से पहले—ज.ज.ग. के राज्य-सचिव, श्री एरिख वेनद्त और पश्चिम-बर्लिन सेनेट कौंसिलर, श्री होर्स्त कोरबर में सात बैठकें हुई थीं। तब इस लम्बी बातचीत के बाद बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि पर दस्तखत हुये, १८ दिसम्बर १९६३ के दिन। संधि की वैध अवधि थी १९ दिसम्बर, १९६३ से लेकर ५ जनवरी, १९६४ तक।

दादी अम्मा का पत्र है . . . उन्हीं से मिलने जा रहे हैं हम !

इस संधि की उक्त वैध-अवधि में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिकारियों ने १३ लाख, १८ हजार और ५ सौ उन्नीस (१,३१८,५१९) प्रवेश-पत्र प्रदान किये। इनमें से कुल १२ लाख, ४२ हजार और ८ सौ दस (१,२४२,८१०) पश्चिम बर्लिन-वासी जनवादी बर्लिन में अपने संबंधियों से मिलने आये, अर्थात् ५० प्रतिशत से भी अधिक प. बर्लिन में रहने वाले लोग ज. ज. ग. राजधानी में आये (पश्चिम बर्लिन की कुल जनसंख्या २२ लाख है)। इसी प्रकार, सीमा-शुल्क विभाग को अपने कर्मचारियों की संख्या सात, आठ गुनी बढ़ा देनी पड़ी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, जनवादी बर्लिन के हजारों नागरिकों ने अपनी मर्जी से अपने अवकाश तथा छुट्टियों का बलिदान किया और बर्लिन संधि को सफल बनाने के लिये खोले गए नये टिकट घरों, परिवहन दफ्तरों, स्वास्थ्य केन्द्रों आदि को उन्होंने अपनी सेवायें अर्पित की। इस प्रकार उन्होंने प. बर्लिन से आये हुये अपने लाखों मेहमानों को हर तरह से आराम पहुंचाने का एक बड़ा अभियान चलाया।

बर्लिन-वासियों के इस महान अभियान को पूरी तरह सफल बनाने के लिये ज ज.ग. की सरकार ने अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। परिवहन तथा यातायात विभाग ने संधि-अवधि में २,२९३ स्पेशल रेल गाड़ियां, बिजली से चलने वाली ९५ स्पेशल बसें, ८७ स्पेशल ट्रामें और १२० स्पेशल भूमिगत रेलगाड़ियां चालू रखीं। रेल-विभाग ने ७०० नये आदमी भरती किये, और बर्लिन परिवहन विभाग ने १,३४९ अतिरिक्त व्यक्तियों को चालकों, टिकट-परीक्षकों, संवाहकों आदि के रूप में भरती किया। ९५ स्पेशल बिजली-बसें हर रोज ३,७०० फेरे और ८७ स्पेशल ट्रामें हर रोज ७८० फेरे लगाया करती थीं।

ज. ज. ग. की स्वास्थ्य-सेवा (विभाग) ने अपने विशिष्ट दल संगठित किये थे जिनमें १७०० व्यक्ति काम कर रहे थे। प. बर्लिन से आने वाले लोगों में से हर आठवें व्यक्ति ने इन विशिष्ट स्वास्थ्य-सेवा-दलों की सहायता से फायदा उठाया। उदाहरण के लिये, प. बर्लिन के इन लाखों मेहमानों ने ज. ज. ग. के अधिकारियों की भूरि भूरि प्रशंसा की जिन्होंने प्रवेश-पत्र देने में बहुत अच्छी योग्यता तथा उच्च संगठन का परिचय दिया। उन्होंने सीमा-सुरक्षकों के विनम्र व्यवहार तथा हार्दिक स्वागत की खास तौर से प्रशंसा की।

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि का महत्व इस तथ्य में निहित है कि जब से जर्मन भूमि पर दो जर्मन राज्य और पश्चिम बर्लिन का विशिष्ट क्षेत्र वजूद में आये, तब से आज पहली बार जर्मन जनवादी गणतंत्र और पश्चिम बर्लिन सेनेट के प्राधिकृत प्रतिनिधियों ने मिलकर, एक सरकारी संधि पर दस्तखत किये। इस महत्वपूर्ण संधि ने इस बात को भी एकदम सामने लाया कि सद्भावना तथा समझौते के रवैये को अपनाने से वैचारिक मतभेद होते हुये भी जटिल समस्याओं को हल किया जा सकता है। बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि पर न केवल दस्तखत हुये बल्कि यूरोप के एक अत्यन्त सूक्ष्म तनाव-स्थल पर यह संधि सफलतापूर्वक अमल में भी लाई गई—यह न केवल राष्ट्रीय (जर्मन) वरन् अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का भी तथ्य है।

उक्त बर्लिन संधि को पूरी तरह सफल बनाने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र
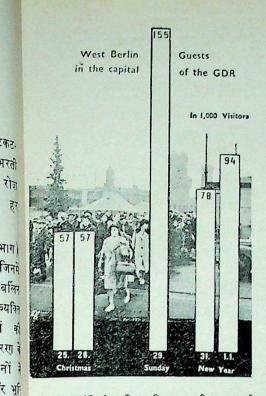
प्रवेश-पत्र संधि के अन्तिम दिन, यानी ५ जनवरी को सबसे अधिक प० बर्लिन वासी (२,८०,००) जनवादी बर्लिन में आये

३७ लाख मार्क (१ मार्क=१.१२ न. पै.) की रकम खर्च की। संधि की अवधि के दौरान अतिरिक्त लोगों को काम पर लगाया गया। ज. ज. ग. के डाक-तार विभाग को बढ़े हुये काम को पूरा करने के लिये सैकड़ों लोगों को भरती करना पड़ा। इस अवधि में कुल मिला कर, प. बर्लिन तथा जनवादी बर्लिन के बीच, ५ लाख अतिरिक्त तारों का विनिमय हुआ।

स्वास्थ्य दलों के स्वयंसेवक चलने-फिरने में असमर्थ २५०० वृद्धों को सीमा से लेकर उनके सगे संबंधियों के पास पहुँचा आये स्पेशल बसों में।

बर्लिन-संधि की अवधि थी १८ दिन और इन दिनों में से हर एक दिन हज़ारों परिवारों के पुर्नमिलन तथा हर्षोल्लास का दिन था जनवादी बर्लिन में। ये हज़ारों लाखों प. बर्लिन निवासी यह भावना लेकर वापस लौटे कि यदि उनके सेनेट और ज. ज. ग. सरकार के बीच, मैत्री तथा सद्भावना पूर्ण वातावरण में फिर से बात-चीत चले तो उनका उपर्युक्त १८ दिनों का सीमित पुनर्मिलन स्थाई आनन्द में बदल सकता है। इस तथ्य की पुष्टि हुई एक मतांकन द्वारा, जिसका आयोजन किया था पश्चिम बर्लिन के महापौर, श्री विल्ली ब्रांत ने, बर्लिन-संधि की समाप्ति के कुछ ही दिन बाद। पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध अखबार 'देर स्पीगल' ने इस मतांकक का उल्लेख करते हुए लिखा कि इस गणना में प. बर्लिन की ९० प्रतिशत जनता ने यह मत प्रकट किया है कि पूर्व और पश्चिम के बीच समझौते की बात-चीत पश्चिम बर्लिन के हित में है (१९६३ के बसन्त में आयोजित एक मतांकन में केवल ६१% जनता ने समझौते की बात-चीत का समर्थन किया था।)

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि-परिषद के अध्यक्ष के सूचना विभाग के एक वक्तव्य में कहा गया है: 'ज. ज. ग. की सरकार, तनाव कम करने वाली अपनी सद्भावना युक्त तथा मैत्रीपूर्ण नीति पर दृढ़ता से अमल करती रहेगी। इसकी दृष्टि में १७ दिसम्बर, सन् १९६३ की (बर्लिन) संधि एक अच्छा तथा समुचित आधार प्रस्तुत करती है समझौते की बात-चीत को फिर से शुरू करने के लिये।..' यह प्रेस-विज्ञप्ति १० जनवरी को ज ज. ग. के सभी पत्रों में छप गई है।

बर्लिन-संधि की समाप्ति के बाद ही, ज. ज. ग. के कार्यकारी प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्तोफ ने दो जर्मन राज्यों के छोटे और बड़े मसलों को बातचीत के द्वारा हल करने का सुझाव दिया था। इसी दौरान, ज. ज. ग. के राज्य सचिव, श्री एरिख वेनदत और पश्चिम बर्लिन सेनेट के कौंसिलर श्री होरेस्त कोरबेर के बीच कई बैठकें हुई, जिनमें उक्त समस्याओं को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने की संभावनाओं पर विचार विनिमय हुआ। ज. ज. ग. ने एक और सुझाव भी दिया है। प. बर्लिन का सेनेट यदि इस सुझाव को मान लेगा तो वहां के नागरिक बहुत जरूरी पारिवारिक मामलों के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, जनवादी बर्लिन में अपने सगे संबंधियों से मिलने के लिये आ जा सकेंगे।

हम इस बात की आशा रखते हैं कि बर्लिन प्रवेश पत्र संधि ने पश्चिम के सर्द रवैये में जो पहली दरार और पिघलन पैदा की है उसको ऐसी ही अन्य संधियों तथा समझौतों के द्वारा चौड़ा और पूरी तरह पिघला दिया जायेगा। हमारी यह भी कामना है कि बर्लिन-संधि, दो जर्मन राज्यों—पश्चिमी जर्मनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र—के आपसी सम्बन्धों को उस्तवार करने में एक आदर्श बने।

क्रिसमस का सुखद पुनर्मिलन

रस-धारा

प्रस्तुत है, १८वीं शताब्दी के एक जर्मन कवि स्व. गोत्तफ्रीद आउगुस्त बूरगर के एक गीत का रूपान्तर। इस रचना में, शोषित किसान, अपने शोषक सामन्त को खरी खरी सुनाता है स्पष्ट तथा दृढ़ स्वर में। क्रूर शोषक को चुनौती देते हुये युग युग का शोषित कृषक घोषित करता है: "सब मेरा है— श्रम, फसल, रोटी!"

—संपादक

एक चुनौती

तुम कौन हो, कुंवर,
तुम—कि जिसके रथ के निमम पहिये
निकल जाते हैं, रौंद रौंद कर
मेरी काया को —
कि जिसका जंगी-घोड़ा
कुचल कुचल देता है, मेरे तन को ?

तुम कौन हो, कुंवर,
तुम—कि जिसका मित्र, शिकारी कुत्ता
मेरी नग्न मांस-पेशियों में
जहरीले दान्त, पैने पंजे
गड़ा देने का दुस्साहस करता है ?

तुम्हारी मृगया, आखेट तुम्हारे
घोड़ों की दौड़, उछल कूद कुत्तों की
(तुम्हारे मन बहलाने के साधन)
खड़ी फसलों को (मेरे सपनों को)
रौंद कुचल कर, धाराशायी कर देते हैं —
फसल यह मेरी है। रोटी भी मेरी है !

तुमने, दिन रात
खून पसीना नहीं बहाया,
सींचीं नहीं सुनहली फसलें !
तुम पर-जीवी हो,
तुमने खेतों में नहीं चलाये हल
आन्धी पानी में —
यह श्रम मेरा है,
शस्य श्यामला धरा मेरी है !

क्षुद्र ! तुम ईश्वर-दत्त
'दिव्य अधिकार' की दुहाई देते हो अब ?
ईश्वर करूणानिधि है (दीन दयाल)
दया, ममता का सागर अथाह।
और तुम हो मूर्तिमान अभिशाप,
दूसरों के संचय के अपहंत्ता।
क्रूर, ये सब देवाज्ञा से नहीं करते तुम !

रुपान्तरकार:
ओम पंडित 'पम्पोश'

ग्राहकों तथा पाठकों से

१. 'सूचना पत्रिका' — मासिक पत्रिका है जो हर महीने की **२० तारीख** को छपती है।

२. पत्रिका का **वार्षिक चन्दा २ रुपया** है। इच्छुक पाठक चन्दा, मनी-आर्डर अथवा पोस्टल-आर्डर द्वारा, **सूचना अधिकारी, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार दूतावास, १२ कौटिल्या मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज सकते हैं।

३. कालिजों, पुस्तकालयों, पंचायतों तथा ऐसी ही अन्य **सार्वजनिक संस्थाओं** को, मांगने पर, 'पत्रिका' निःशुल्क भेजी जा सकती है।

४. ग्राहक, हमारे साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपनी **ग्राहक संख्या** अवश्य लिखा करें जो 'पत्रिका' के रैपर पर, पते के साथ टाइप की हुइ होती है। **ग्राहक संख्या** न लिखने से ग्राहक की इच्छापूर्ति करने में हम असमर्थ होंगे।

५. ग्राहकों अथवा पाठकों को यदि 'सूचना पत्रिका' महीने की **२५ तारीख** तक न मिला करे तो उन्हें पहले स्थानीय डाकखाने से इस बारे में पूछ ताछ करनी चाहिये। ठीक उत्तर न मिलने पर वे हमें लिख सकते हैं।

६. पता, हमेशा **साफ और पूरा** लिखा करें। अस्पष्ट तथा अधूरे पते के कारण आप 'पत्रिका' से वंचित रहेंगे।

प्रश्न और उत्तर

'सूचना पत्रिका' के गतांक में **प्रश्न और उत्तर** स्तम्भ चालू करने के लिये जो सूचना दी थी, हमारे सजग पाठकों ने उसका काफी अच्छा तथा उत्साहपूर्ण स्वागत किया है। इसके लिये हमारे पास अनेकानेक प्रशंसापूर्ण पत्रों के साथ साथ कई छोटे बड़े और रोचक प्रश्न भी आये हैं। तो लीजिये, इस मास से अपनी 'पत्रिका' में चुने हुये प्रश्नों के उत्तर देना शुरू कर रहे हैं —संपादक

प्रश्न : **अलवर, राजस्थान से श्री कैलाश चन्द्र मेठी** ने पांच प्रश्न भेजे हैं, जिनमें से हम दो का उत्तर देंगे। पहला प्रश्न है : लाइपजिक व्यापार मेले की शुरूआत कब से हुई, और इस वर्ष के मेले में कितने देश भाग ले रहे हैं?

उत्तर : लाइपजिक व्यापार मेले का इतिहास बहुत पुराना है—८०० वर्ष पुराना। आज तो लाइपजिक विश्व-व्यापार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है, लेकिन तब भी यह शहर यूरोप के व्यापार का संगम था। उस समय यूरोप के दो बड़े व्यापार मार्ग थे। एक मार्ग स्पेन, फ्रैंकफोर्ट तथा पोलैण्ड से होता हुआ रूस के यूक्रेन प्रान्त तक जाता था और दूसरा, उत्तरी जर्मनी से उत्तरी इटली तक जाता था। इन दो बड़े तथा महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों के बीच में लाइपजिक खड़ा था, एक चौराहे के रूप में। यूरोपीय देशों के सौदागर, घोड़ों और खच्चरों पर माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह आते जाते थे। लाइपजिक उनके लिये एक बहुत बड़ा विश्रामस्थल था। यहां, अनेक देशों के व्यापारियों के मिलन ने धीरे धीरे एक व्यापार मेले का रूप धारण कर लिया।...और सन् १८६४ में यहां एक अंग्रेज व्यापारी आया। उसके पास माल तो नहीं था, लेकिन उसने यहां कुछ वस्तुओं के नमूने तथा नक़शे प्रदर्शित किये। इन नमूनों तथा नक़शों ने लाइपजिक में इतनी धूम मचाई कि लोगों ने मेले को "मुस्तेर मेसे"—अर्थात् 'नमूनों का मेला' नाम दिया।... सन् १९१८ में, लाइपजिक में पहली बार औद्योगिक वस्तुओं का मेला लगा।

दूसरे महायुद्ध में लाइपजिक ध्वस्त हुआ, लेकिन सन् १९४९ में जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के बाद, लाइपजिक का पुनःनिर्माण हुआ। ज. ज. ग. की सरकार ने, लाइपजिक व्यापार मेलों की भव्य परम्परा को न केवल बरकरार ही रखा, बल्कि बहुत बड़े और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर उनको आयोजित करती रही।.. अब साल में दो व्यापार मेलों का आयोजन होता है यहां। पहला मेला, वसन्तकाल में लगता है और मार्च के प्रथम सप्ताह में आरंभ होकर दस दिन तक चलता है। इस मेले में केवल औद्योगिक उत्पादों का प्रदर्शन और व्यापार होता है। दूसरामेला, शरद्काल में—अर्थात् सितम्बर में लगता है। शरद्कालीन व्यापार मेले में उपभोक्ता माल का प्रदर्शन और व्यापार होता है।

लाइपजिक के दोनों व्यापार मेलों में दुनिया के अनेक देश और विश्वप्रसिद्ध व्यापार फर्में तथा संस्थायें भाग लेती हैं। भारतवर्ष, पिछले दस वर्षों से, इन व्यापार मेलों में अपनी वस्तुएं लेकर जाता है, और जर्मन जनवादी गणतंत्र के अलावा, कई अन्य देशों से व्यापार समझौते करता है।... इस वर्ष का बसन्तकालीन व्यापार मेला १ मार्च को लगेगा और १० मार्च को समाप्त होगा। इस मेले में दुनिया भर के लगभग ६० देश भाग लेंगे, जिनमें ११ एशियाई, १० अफ्रीकी और ६ अमरीकी देश भी शामिल हैं। संयुक्त राज्य अमरीका की कई प्रसिद्ध व्यापार फर्में भी भाग लेंगी इस मेले में।... इस प्रकार, विश्व व्यापार विश्वशांति को कायम रखने में सहायता देता है।

प्रश्न : ज. ज. ग. में कुल कितने विश्वविद्यालय हैं, एवं उनमें कुल कितने छात्र पढ़ते हैं? उनमें विदेशी छात्रों की संख्या क्या है, और भारतीय छात्र कितने हैं?

उत्तर : हमारे पास नवीनतम—अर्थात् सन् १९६३ के आंकड़े अभी नहीं हैं। इसलिये सन् १९६२ के आंकड़ों के आधार पर ही हम आपके प्रश्न का उत्तर देंगे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में ६ विश्वविद्यालय थे सन् १९६२ में। इनके अतिरिक्त, वहां ३७ विशिष्ट कालेज भी थे, जहां खास खास विषय ही पढ़ाये जाते हैं। इन ४३ शिक्षा संस्थानों में कुल एक लाख, चौदह हज़ार, दो (११४,००२) विद्यार्थी पढ़ते थे जिनमें से २९,९४१ छात्रायें थीं। बर्लिन के विश्वप्रसिद्ध हुमबोल्त विश्व-विद्यालय में १०,९८८ विद्यार्थी पढ़ते थे जिनमें से ४६% छात्रायें थीं। ज. ज. ग. के उक्त शिक्षा संस्थानों में विदेशी छात्रों की संख्या विषयक आंकड़े हमारे पास अभी नहीं हैं। लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि एशिया, अफ्रीका तथा लातीनी अमरीका के सैकड़ों छात्र छात्रायें उनमें अध्ययन करते हैं। हमारे भारत के लगभग १५० विद्यार्थी, सरकारी तौर पर (अर्थात् सांस्कृतिक विनिमय के आधीन) ज. ज. ग. में, विविध विषयों में अध्ययन कर रहे हैं, खासकर तकनीकी विषयों में।

प्रश्न : **हरद्वार, उ.प्र. से**, 'विज्ञान श्रोता क्लब' के पदाधिकारी, **श्री नानक चन्द गुप्ता** पूछते हैं : जर्मन जनवादी गणतंत्र में इस समय नियुक्त राष्ट्रपति के पहले कितने राष्ट्रपति रह चुके हैं? यदि राष्ट्रपति के पद पर वहां कोई महिला नियुक्त हो तो उन्हें किस नाम से पुकारा जायेगा?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजनीतिक प्रणाली में

(शेष पृष्ठ २२ पर)

चिट्ठी पत्री

बन्धुवर,

अन्य अंकों की भांति नव वर्ष की प्रथम 'सूचना पत्रिका' प्राप्त हुई। मैं अपनी, अपने अध्यापक वर्ग तथा छात्राओं की ओर से आपकी इस निःशुल्क सेवा का हृदय से आभार प्रकट करती हूं। साथ ही निवेदन करती हूं कि आप यह पत्रिका अविराम भेजने का कष्ट वहन करते रहेंगे। आपकी यह पत्रिका जर्मन गणतन्त्र के सर्वांगीण विकास तथा भारत के प्रति बन्धुत्व का ही परिचय नहीं देती बल्कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की भी महती सेवा करती है।

मंगल कामनाओं सहित पुनः धन्यवाद।

भवदीया
सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
(एम. ए., पी. एच. डी.)
प्रधानाचार्या
के. आर. महिला महाविद्यालय
मथुरा (उ. प्र.)

प्रिय महाशय,

आप से प्रार्थना है कि हमारे विद्यार्थियों के अध्ययन और ज्ञान के लिए आपके प्रकाशन की एक प्रति नियमित रूप से प्रेषित किया करें। हमारी इच्छा है कि विद्यालय के छात्र छात्राएं आपकी पत्रिका द्वारा जर्मनी के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करें।

कृपाकांक्षी

भवदीय
विष्णुप्रिया
मंत्री, मयलाइ हिंदी विद्यालय
मद्रास-४.

सम्पादक महोदय,

भारत-जर्मन मैत्री का प्रतीक आपकी लोकप्रिय 'सूचना पत्रिका' हमें बहुत पसंद है। विशेष रूप से निवेदन यह है कि गत वर्ष से आप अपनी 'सूचना पत्रिका' नियमित प्रेषित कर रहे हैं जिसके लिए मैं और मेरा मित्र वर्ग आपका हार्दिक आभार मानते हैं और इसके लिये धन्यवाद देते हैं। आशा है आप भविष्य में भी अपनी 'पत्रिका' नियमित भेजते रहने की महती कृपा प्रदर्शित करते रहेंगे।

मैं और मेरे मित्र आपको निम्न सुझाव भेजते हैं:

१. आप के देश के बारे में अधिक जानकारी के लिये एक प्रश्नावली चालू करनी चाहिए।

२. पत्र-मित्र विभाग भी चालू कीजिए।

भवदीय
एस. के. मेहता
और अनेक मित्र
बम्बई (महाराष्ट्र)

सम्पदक महोदय,

सादर हरि स्मरण।

आपके सौजन्य से सनातन धर्म पुस्तकालय, विदिशा (म. प्र.) के पाठकों को जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'सूचना पत्रिका' नवम्बर ६३ से नियमित रूप से प्राप्त हो रही है।

'पत्रिका' में प्रकाशित ज. ज. ग. की प्रगति के वृत्तान्तों से हम को प्रसन्नता है। पाठकगण 'पत्रिका' की सचित्र सूचनाओं को बड़े उत्साह से पढ़ते हैं। जनवरी ६४ का अंक विशेष आकर्षक है। भगवान विश्वनाथ, विश्व के अन्य प्रगतिशील, राष्ट्रों की भांति आपके राष्ट्र को भी प्रगति व शांति के पथ पर सफलता प्रदान करें ऐसी हमारी शुभ मंगलमय कामना है।

इति शम्

भावत्क:
गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी, शास्त्री
मैनेजर
श्री सनातन धर्म पुस्तकालय
विदिशा (म. प्र.)

आदरणीय सम्पादक महोदय,

कल हमारे छोटे से पुस्तकालय में आप की 'सूचना-पत्रिका' का जनवरी अंक प्राप्त हुआ। मैंने तथा सदस्यों ने पत्रिका को खूब ध्यानपूर्वक पढ़ा। हम सब बड़े प्रसन्न हुए कि हमारे पुस्तकालय में दूसरे कुछ मैगज़ीनों के साथ-साथ एक और महत्वपूर्ण तथा सुन्दर मैगज़ीन की वृद्धि हो गई।

समाचार, व्यक्तित्व की झांकी तथा सांस्कृतिक-पृष्ठ आदि जैसे स्थाई-स्तम्भ बहुत ही पसन्द आए। यह पढ़ कर तो और भी प्रसन्नता हुई कि आप आगामी अंक से प्रश्नोत्तर-स्तम्भ भी शुरू कर रहे हैं। हमारे पुस्तकालय के सभी सदस्यों ने यह इच्छा प्रगट की है कि 'पत्रिका' में पत्र-मित्रता के लिए ज.ज.ग. के युवकों का पता अवश्य छापा जाय, क्योंकि इससे स्व-विचारों का आदान-प्रदान हो सकेगा।

ऐसी पत्रिका के विषय में जितना लिखा कम है। इसलिये ज्यादा न लिखता हुआ यह पूर्ण आशा करता हूं कि हमारे पुस्तकालय के लिए आप यह 'पत्रिका' तथा और भी छोटी-छोटी पुस्तकें नियमित रूप से भेजते रहने की कृपा करेंगे।

आपका
जोगिन्दर पाल गुप्त 'गु
होशियारपुर, (पंजाब)

श्रीमान जी,

उन सभी सार्वजनिक स्थलों पर जहां कि 'सूचना पत्रिका' आती है, जनवरी-६ का नव वर्षीक अत्यधिक विलम्ब से प्राप्त हुआ है। 'पत्रिका' के पृष्ठावरण के रंग परिवर्तन और 'प्रश्नोत्तर' स्तम्भ के खुल के कारण पत्रिका अन्यतम उपयोगी एवं आकर्षक हो गई है।

जनवरी ६४ के अंक में 'चिट्ठी-पत्री' नामक स्तम्भ में प्रकाशित श्री कैलाश च मेठी के सुझावों का दृढ़ता से समर्थन करता हूं, क्योंकि ये सुझाव पत्रिका की लोकप्रियता को प्रोत्साहित करने में अतुलनीय योगदान देंगे।

'प्रश्नोत्तर स्तम्भ' से ही पाठकों की अधिकाधिक कठिनाईयां दूर की जा सकती थीं, अतः इस के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

अगले अंक से प्रारम्भ होने वाले स्तम्भ के लिये मैं प्रश्न भेज रहा हूं आशा है आप यथासम्भव उत्तर देंगे।

आपका
पुरुषोत्तम कुमार गौड़
नागल (उ. प्र.)

देश देश के विद्यार्थी

प्रो. कटारिना हारिग

(विदेशी छात्रों के लिये हेरडर संस्थान की निदेशिका)

राष्ट्रमुक्ति आन्दोलनों में लगे हुए उपनिवेशों और हाल ही में स्वाधीन हुये राज्यों के साथ समर्थन के प्रतीकरूप में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सरकार इन देशों के विद्यार्थियों के प्रशिक्षण के लिये वजीफ़े देती है। प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद, विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त करके ये विद्यार्थी जब स्वदेश लौटते हैं तो वहां के आर्थिक नवनिर्माण और राजनीतिक आज़ादी को सुदृढ़ करने में हाथ बटाते हैं।

हमारे देश ज.ज.ग. के द्वार, प्रत्येक देश के ऐसे नवयुवकों के लिये सदा खुले हैं जो यहां के किसी विश्वविद्यालय अथवा शिक्षा-संस्थान में अध्ययन करना, या किसी विशेष तकनीकी क्षेत्र में ट्रेनिंग लेना चाहते हों। विदेशी विद्यार्थियों के लिये यहां हम केवल एक ही कड़ी शर्त रखते हैं, और वह शर्त यह है कि यहां रहते हुये वे न तो किसी प्रकार के जाति-भेद या रंगभेद का प्रदर्शन करें, न वे अन्य देश के राष्ट्रिकों की निन्दा करें और न ही वे युद्ध का प्रचार आदि करें। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के कानून के अनुसार ऐसा करना बहुत बड़ा अपराध है। विश्व के समस्त राष्ट्रों के प्रति हम सद्भावना तथा मित्रता रखते हैं, और हम विदेशी-छात्रों के रीति-रिवाजों का आदर करते हैं। जितने समय के लिये ये विद्यार्थी हमारे यहां रहते हैं, हम हर संभव तरीके से यही प्रयत्न करते हैं कि वे यहां अजनबी न महसूस करें अपने आपको।

विदेश में, प्रत्येक विद्यार्थी (या कोई अन्य व्यक्ति) अपने आपको प्रायः एक अजनबी वातावरण में पाता है जहां उसके लिये हर चीज एक दम नई होती है। पश्चिमी देशों से आने वाला विद्यार्थी यहां, पहली बार, अपने देश से एक भिन्न व्यवस्था—समाजवादी समाज-व्यवस्था—का साक्षात्कार करता है। इसलिये यह हमारा प्रथम तथा अनिवार्य कर्त्तव्य बन जाता है कि हम उसको इस व्यवस्था के नियम-कानून समझने में मदद करें। ... मुमकिन है कि विदेश से आने वाले विद्यार्थी के पारवारिक जीवन और मर्द-औरत के रिश्तों आदि से संबंधित विचार बिल्कुल भिन्न हों हमारे विचारों से। इस लिये विदेशी विद्यार्थियों को अपने आचार विचार से परिचित कराना भी हमारे कार्य में शामिल है। संक्षेप में, यही कहा जा सकता है कि ज.ज.ग. के शिक्षा-अधिकारी इस बात के लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं कि अन्य देशों के विद्यार्थी यहां से अच्छी शिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटें और अपने देश के निर्माण कार्य में सहयोग प्रदान करें। इसके बदले में हम उनसे केवल मित्रता का अटूट सम्बन्ध चाहते हैं और कुछ नहीं।

हमारे नोटिस में यह बात भी आई है कि अन्य देशों के तरुण विद्यार्थी, मैट्रिक का प्रमात्र-पत्र दिखाने पर भी (दाखिले के लिये यह सार्टिफिकेट जरूरी है), बाद में प्रायः हमारे विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। इसका मुख्य कारण है दो देशों के स्कूली-शिक्षा के पाठ्यक्रमों में एक बहुत बड़ा अन्तर। इस कठिनाई को हल करने के लिये, लइपज़िक के कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय में 'हेरडर संस्थान' की स्थापना की गई है। ज. ज ग. में जो विदेशी विद्यार्थी अध्ययन करने के लिये आते हैं, उनको सबसे पहले इसी संस्थान में भेज दिया जाता है। यहां जर्मन भाषा सीखने के साथ-साथ उनको अपने-अपने विशिष्ट विषयों में भी एक अनुपूरक पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाती है।

साधारणतयः विद्यार्थियों को 'हेरडर संस्थान' में १० मास रहना पड़ता है। लेकिन विश्वविद्यालयों की पूरी शिक्षा वाले स्नातकों को केवल तीन महीनों के लिये यहां रहना पड़ता है। जो विद्यार्थी मैट्रिक पास न हों उनको अधिक समय के लिये उक्त संस्थान में अध्ययन के लिये रहना पड़ता है। संस्थान से निकले हुये विद्यार्थी जब ज.ज.ग. के विभिन्न संस्थाओं में अध्ययन तथा ट्रेनिंग के लिये जाते हैं, तो 'हेरडर संस्थान' में सीखी जर्मन भाषा उनके बहुत काम आती है (ज.ज.ग. में शिक्षण का माध्यम जर्मन भाषा है—सं०)।

हमारे प्रतिरोधी, कई बार हम पर यह लांछन लगाते रहते हैं कि हम विद्यार्थियों को अपने राजनीतिक प्रचार का साधन बनाते हैं। लेकिन इस गलत अभियोग का सीधा जवाब यह है कि ज.ज.ग. में अधिकांश विदेशी विद्यार्थी तकनीकी विषयों, औषधि-शास्त्र और प्राकृतिक-विषयों का अध्ययन करते हैं, राजनीति का नहीं। हम विदेशी छात्रों पर अपने विचार थोपने के पक्षपाती नहीं। हां, यदि वे कई वर्षों के अपने आवास में, ज.ज.ग. में रोज़मर्रा के जीवन से प्रभावित हो जायें और इस प्रभाव के

(शेष पृष्ठ २३ पर)

ज.ज.ग. के एक शिक्षा-संस्थान में विदेशी छात्र किसी समस्या पर बातचीत कर रहे हैं

जर्मन-फारसी शब्दकोश

जर्मन जनवादी गणतंत्र की विज्ञान-अकादमी, जल्दी ही दो शब्दकोश प्रकाशित करेगी। ये हैं जर्मन-फारसी और जर्मन-वियतनामी भाषाओं के शब्दकोश। ये कोश यहां के हाल्ले प्रान्त का एक विशिष्ट छापाखाना छापेगा। पिछले वर्ष जर्मन-इन्डोनेशियाई तथा जर्मन-मंगोलियाई भाषाओं के तीन शब्द-कोश इसी छापखाने से छपकर निकले थे। यह विशेष छापखाना दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं में किताबें छापता है।

काहिरा में अन्तर्राष्ट्रीय लोकगीत समारोह

११ जनवरी, ६४ के दिन, काहिरा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय लोकगीत समारोह का उद्घाटन हुआ जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोकगीत गायक-दल के कार्यक्रम से। काहिरा के आपेरा-भवन में वहां के कई प्रतिष्ठित नागरिक, सरकारी अफसर तथा अन्य सम्मानित नेता उपस्थित थे। संयुक्त अरब गणराज्य में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि राजदूत, डा० एरनस्त शोल्स भी वहां आये थे।... रविवार (१२ जनवरी) के दिन काहिरा की सब से बड़ी रंगशाला खचाखच भरी थी। उस दिन ज. ज. ग. के विभिन्न गायक-दलों ने वहां अपना कार्यक्रम पेश किया। अरब गणराज्य के टेलिविजन पर भी उन्होंने अपने प्रोग्राम से जनता का मनोरंजन किया।

महिला वाली-बाल खिलाड़ियों की जीत

जर्मन जनवादी गणतंत्र के 'बर्लिन डाइ-नमो खेल क्लब' नामक नारी वाली-बाल टीम ने, यूरोपीय कप प्रतियोगिता में पहला क्वार्टर फाइनल मैच जीत लाया, प्राग के नारी वाली-बाल टीम को हरा कर इस प्रतियोगिता का अन्तिम मैच आने वाले रविवार को प्राग (चेकोस्लोवाकिया) में खेला जाएगा।

महान जर्मन गवेषक के ६००० पत्रों का संकलन

स्वर्गीय एलेक्साण्डर वान हुमबोल्त १६ वीं सदी के एक महान गवेषक तथा शोधार्थी थे। इन्हीं के नाम पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में बर्लिन के विश्व प्रसिद्ध हुमबोल्त विश्व विद्यालय का नामकरण हुआ है। उनकी मृत्यु-शताब्दी के अवसर पर (५ मई, १६५६), जर्मन जमवादी गणतंत्र की विज्ञान अकादमी ने विश्व के सभी देशों को, श्री हुमबोल्त के उन पत्रों को उपलब्ध करने की अपील की थी जो स्वर्गीय गवेषक अपने मित्रों, विद्वानों आदि को लिखे हों अथवा इनसे स्वयं प्राप्त किये हों। विज्ञान-अकादमी की इस अपील के परिणामस्वरूप, विभिन्न देशों ने बहुत अच्छा सहयोग प्रदान किया और [अ]पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों आदि सब हुमबोल्त के ६००० पत्र प्राप्त [हुए] अकादमी को।

प्रसिद्ध गवेषक ने कई देशों में अप[ना] शोधकार्य किया था, जिनमें से उल्लेखनी[य] हैं वेनेजुएला, कोलम्बिया, मेक्सिको, अ[मे]रीका तथा सोवियत संघ।

भारत के लिये नई जर्मन सिला[ई] मशीन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'मालिम[ो] —१६००' नामक सिलाई त[था] कपड़ा बुनाई मशीन, दुनिया की सब[से] तेज और सब से योग्य सिलाई-बुना[ई] मशीन है। सन् १६६४ के जनवरी मा[स] से अन्य देशों की तरह भारत में भ[ी] ज. ज. ग. की इन मशीनों का आया[त] होगा। एक 'मालिमो' मशीन [का] उत्पादन, आधुनिक ढंग के २० स्वचालि[त] बुनाई करघों के बराबर है। ये सिला[ई] बुनाई मशीनें, ज. ज. ग. के कार्ल मा[र्क्स] स्ताद्त नाम के स्थान के एक कारखा[ने] में बनती हैं, और यूरोप के लगभग स[भी] देशों में इन मशीनों का निर्यात हो[ता] है। समुद्रपार देशों, जैसे अमरीक[ा], अरजनटीना, ब्राज़िल, अरब गणरा[ज्य], लेबेनान आदि देश भी ये मशीनें आया[त] करते हैं।

आप हैं कुमारी ज.ज.ग. यह है ए नियरों काम क

प्रश्न और उत्तर

(पृष्ठ १६ का शेष)

राष्ट्रपति का पद नहीं है। जब सन् १६४६ में जर्मनी का विभाजन हुआ और वर्तमान जर्मन जनवादी गणतंत्र ने जन्म लिया, उस समय वहां के संविधान में राष्ट्रपति-पद की व्यवस्था थी, और ज.ज.ग. के प्रथम राष्ट्रपति, श्री विलहेल्म पीक चुने गये थे वहां की लोकसभा अर्थात्—पीपुल्स चैम्बर के द्वारा। किन्तु सितम्बर, १६६० में उनके देहांत के बाद, ज.ज.ग. के संविधान की राष्ट्[पति] संबंधी धारा में, वहां की लोकसभा ने संशो[धन] किया, और राष्ट्रपति का स्थान एक राज्य-परि[षद] ने लिया, जिसके सदस्य लोकसभा द्वारा निर्वाचित [होते] हैं। राज्य-परिषद, ज. ज. ग. की शासन-पद्धति [का] सर्वोच्च अंग है, और इस अंग के सर्वोच्च पदाधिकारी अध्यक्ष। इस समय इस परिषद के अध्यक्ष हैं, श्री वा[ल्टर] उलब्रिख्त।... इसके बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है ज.ज.ग. में किसी महिला के राष्ट्रपति निर्वाचित होने [का] प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

आप हैं लाइपजिक के शरीर विज्ञान कालेज की कुमारी क्रिसीटीन लुइर्वत। आपने, सन् १९६३ की ज.ज.ग. की, व्यायाम जूनियर चैम्पियनशिप जीती

ज.ज.ग. के प्रसिद्ध चित्रकार तथा मूर्तिकार प्रो. फ्रित्स क्रामर (बाईं ओर) की चित्रशाला में भारत के प्रसिद्ध चित्रकार श्री कृष्ण कुलकर्णी (दाईं ओर)। बीच में श्रीमती लंजिनहामेन खड़ी हैं

सचित्र समाचार

यह है एक नया शल्य-यंत्र जिसको ज.ज.ग. के इंजीनियरों ने ईजाद किया है, और जो बिजली से काम करता है (पूर्ण विवरण देखिये पृष्ठ २० पर)

(पृष्ठ १९ का शेष)
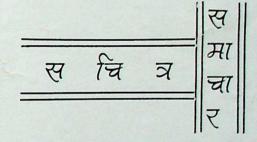
परिणामस्वरूप वे सोचना, समझना तथा तुलना करना शुरू करें तो हम उनको ऐसा करने से कैसे रोक सकते हैं।

विदेशी विद्यार्थी, ज.ज.ग. में रहते हुये इसकी समस्याओं को सही रूप से समझ लें, इसके लिये उनको हम अपने इस नये जर्मन राज्य—अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के उद्भव तथा विकास संबंधी इतिहास से परिचित कराते हैं। हमारा यह नया जर्मन राज्य, जर्मन-भूमि के इतिहास में पहला शांतिकामी तथा युद्ध-विरोधी समाजवादी राज्य है। हम इस बात पर गर्व किये बिना नहीं रह सकते कि बहुत कम अवधि में हमने यहां बहुत कुछ उपलब्ध किया। इसी संदर्भ में, इतिहास को सही रूप में जानने के इच्छुक लोग, जर्मन भूमि पर स्थित दूसरे राज्य के बारे में भी सच्चाई जाने बिना नहीं रह सकते।

इस समय, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों, कालेजों, व्यवसाय स्कूलों तथा अन्य वैज्ञानिक संस्थानों में दुनिया के ७० देशों के विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। एशिया तथा अफ्रीका के विकासशील राज्यों से आने वाले शिक्षार्थियों की संख्या वर्ष प्रति वर्ष, बढ़ती जा रही है।

ज.ज.ग. के विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा-संस्थानों में निःशुल्क पढ़ाई होती है। डाक्टरी इलाज के लिये भी पैसा नहीं देना पड़ता विद्यार्थियों को। ज. ज. ग. में विद्यार्थी, लालची मकान मालिकों का शिकार नहीं होते, जैसा कि पश्चिमी जर्मनी में अक्सर होता है।...समाजवादी व्यवस्था में किसी भी प्रकार का शोषण एक बड़ा अपराध होता है।

सूचना पत्रिका
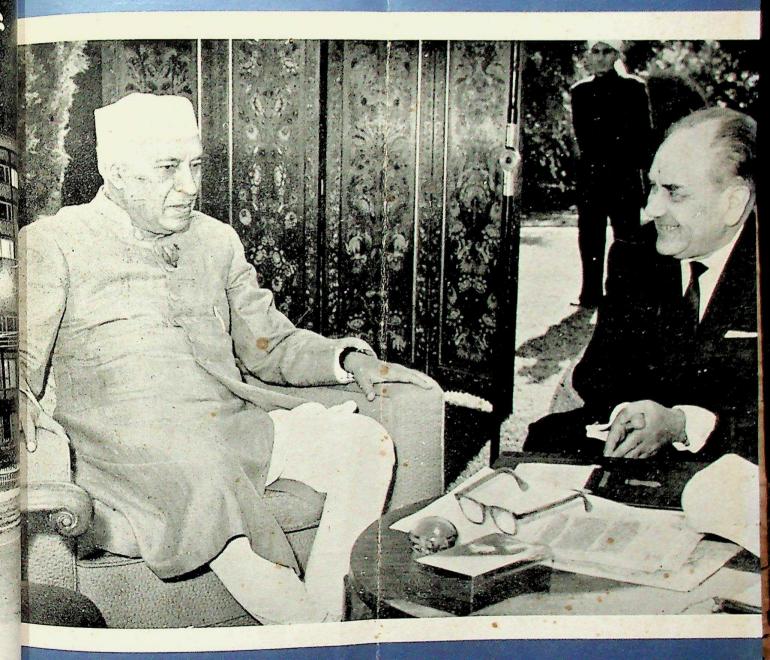
जर्मन
जनवादी
के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक ३ | २० मार्च, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : जर्मन जनवादी गणतंत्र के सद्भावना-मण्डल के नेता, श्री ब्रूनो लोइशनर की प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से भेंट

अंतिम पृष्ठ : दैत्याकार मशीनों का स्वामी, मानव

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं । प्रेसकटिंग पाकर हम आभारी होंगे ।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र का सद्भावना - मण्डल

गत मास की १४ तिथि (फरवरी) को जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक शिष्टमण्डल एक हफ्ते के दौरे पर भारत आया। इस शिष्टमण्डल का नेतृत्व ज.ज.ग. की मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष अर्थात वहां के उपप्रधान मंत्री श्री ब्रूनो लोइशनर कर रहे थे। इस सद्भावना-मण्डल में ज.ज.ग. के उपविदेश मंत्री, श्री वोल्फगांग कीजेवेटर, और वहां के उपविदेश-व्यापार मंत्री, श्री फ्रित्ज कोख भी शामिल थे। इनके अतिरिक्त, कई विशेषज्ञों का एक दल भी उक्त शिष्टमण्डल के हमराह था। १४ से २१ फरवरी, १९६४ तक इस शिष्टमण्डल के सदस्य भारत सरकार के अतिथि रहे।

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की राज्य-मंत्री, श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने, पालम के हवाई अड्डे पर, सद्भावना-मण्डल का स्वागत किया। इसके अलावा, भारत के कुछ गण्यमान्य व्यक्तियों तथा सभा-संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी इस शिष्टमण्डल का भव्य स्वागत किया। इनमें श्रीमती अरुणा आसफ अली और श्रीमती सुभद्रा जोशी (लोक-सभा की कांग्रेस सदस्य) विशेष उल्लेखनीय हैं। भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टकर, और व्यापार-दूतावास के अन्य सदस्यों के अतिरिक्त कई देशों के राजदूत तथा राजनयिक कोर के कई अन्य सदस्य भी इस स्वागत में उपस्थित थे।

प्रधान मंत्री नेहरू से भेंट

अपनी भारत-यात्रा के दौरान, ज.ज.ग. के शिष्टमण्डल के सदस्यों को प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से भी भेंट करने का सुअवसर मिला। इस भेंट में, सद्भावना-मिशन के नेता, श्री ब्रूना लोइशनर ने भारत के प्रधान मंत्री तक ज.ज.ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और वहां के प्रधान मंत्री, श्री ओटो ग्रोटवोल की उनके तुरन्त स्वस्थ होने की शुभकामनायें पहुंचाई। श्री नेहरू के अतिरिक्त, शिष्टमण्डल के सदस्य, भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष से भी मिले।

सद्भावना मण्डल के सदस्यों ने अपने व्यस्त कार्यक्रम में भारत सरकार के निम्न मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों से मुलाकातें कीं : श्री गुलजारीलाल नन्दा (गृह मंत्री), श्री लालबहादुर शास्त्री (निर्विभागीय मंत्री), श्री यशवन्त राव चौहान (प्रतिरक्षा मंत्री), श्री मनुभाई शाह (अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री), श्री टी. टी. कृष्णमाचार्य (वित्त मंत्री), श्री एच. सी. दासप्पा (रेल मंत्री), श्री राजबहादुर (परिवहन तथा नौ-परिवहन मंत्री), श्री सी. सुब्रह्मण्यम (इस्पात, खदान तथा भारी इंजीनियरी मंत्री), श्री अशोक मेहता (योजना आयोग के उपाध्यक्ष), श्रीमती लक्ष्मी मेनन (विदेश मंत्रालय में राज्य-मंत्री), श्री एम. जे. देसाई (विदेश मंत्रालय के महा-सचिव), और विदेश मंत्रालय के अन्य उच्चाधिकारी। १९ फरवरी को, श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के शिष्टमण्डल के सम्मान में एक भोज दिया।

राजघाट पर श्रद्धांजलि

१४ फरवरी के अपराह्न में ही, श्री ब्रूनो लोइशनर तथा शिष्टमण्डल के अन्य सदस्य राजघाट गये, और वहां भारत के राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी की समाधि पर उन्होंने श्रद्धा के फूल चढ़ाये। यहां रखी गई अतिथि-रजिस्टर में, श्री लोइशनर ने निम्न शब्द लिखे : "भारत के महान सपूत और भारतीय राष्ट्र के पिता, महात्मा गांधी का नाम स्वतंत्र भारत का एक अभिन्न अंग है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता, शांति तथा स्वाधीनता के संघर्ष के एक महान अगुआ के रूप में इनका सम्मान करती है।"

बरौत तथा भाखड़ा नंगल में

१५ फरवरी को यह सद्भावना-मण्डल, उत्तर प्रदेश के बरौत सामुदायिक विकास खण्ड को देखने गया। यहां उनका भव्य स्वागत हुआ। उन्होंने कई कृषि संस्थान भी देखे। . . . आदर्श नाथला के गांव के किसानों ने फूल मालाओं तथा गुलदस्तों से ज. ज. ग. के इन प्रतिनिधियों का स्वागत किया गांव के नये स्कूल में। स्थानीय पंचायत के सरपंच, श्री रघुवीर सिंह ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये अपार हर्ष व्यक्त किया। बरौत के समुदायिक विकास खण्ड में ज. ज. ग. के सद्भावना-मण्डल के नेता श्री लोइशनर ने भारत सरकार द्वारा अपनाये गये उन उपायों की सराहना की जिनसे वह भारत के गांवों के पिछड़ेपन को दूर करने और देश के कृषि उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास कर रही है।

१५ फरवरी की शाम को, श्री ब्रूनो लोइशनर तथा सद्भावना-मण्डल के कुछ सदस्य, नई दिल्ली स्टेशन से रेल के द्वारा भाखड़ा-नंगल योजना देखने गये। एशिया की इस सबसे बड़ी तथा विराट योजना को देखकर वे काफी प्रभावित हुये। १६ फरवरी को योजना देखने के बाद वे मोटर के द्वारा चन्डीगढ़ गये, जहां वे पंजाब के मुख्य मंत्री, सरदार प्रताप सिंह कैरों से मिले। पिंजोर में उन्होंने 'हिन्दुस्तान मशीन टूल्स फैक्ट्री' भी देखी।

"संगे-मरमर में खचित स्वप्न" ताजमहल, यात्रियों का विशेष आकर्षण केन्द्र रहा है, शताब्दियों से। भारतीय वास्तुकला के इस अमर नमूने को भी ज. ज. ग. के सद्भावना शिष्टमण्डल ने देखा और इसके सौन्दर्य से वे आश्चर्य चकित रह गये। २० फरवरी के दिन नई दिल्ली में, पत्रकारों से बातचीत करते हुये सद्भावना-मण्डल के नेता, श्री ब्रूनो लोइशनर ने कहा : "भारत सरकार के मंत्रियों तथा उच्चाधिकारियों से हमारी जो मुलाकातें हुई उन में हमने उनको जर्मन जनवादी गणतंत्र की वर्तमान स्थिति से अवगत किया, और जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल से संबंधित अपने सुझाव भी उनके

सामने रखे। हमारी समस्याओं के प्रति यहां बहुत मात्रा में मैंने सहानुभूति पाई, इस बात से मुझे काफी प्रसन्नता तथा संतोष हुआ। इसके अतिरिक्त, आपस की बातचीत से, यह बात फिर एक बार स्पष्ट हुई कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर हमारा दृष्टिकोण समान है।..."

भारत सरकार के मंत्रियों तथा अन्य उच्चाधिकारियों से हुई मुलाकातों में, भारत गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र के वर्तमान आर्थिक तथा व्यापारिक संबंधों को अधिक विस्तृत करने के बारे में काफी लम्बी बात-चीत हुई। इस संदर्भ में उन्होंने कहा: "हमने, आर्थिक तथा व्यापार संबंधों को काफी हद तक बढ़ाने के बारे में कई सुझाव भी भारत सरकार के सामने रखे। पिछले चन्द वर्षों में, ज.ज.ग. की अर्थव्यवस्था ने बहुत प्रगति की है। इसी प्रगति के आधार पर, व्यापार में अपने साझीदार देशों को, विशेष कर अफ्रो-एशियाई देशों को, हम नई संधियों की पेशकश करने में समर्थ हैं। जहां तक आपके देश का सवाल है हम इसको (भारत को) पूरे के पूरे कारखाने, उपकरण और मशीनें काफी मात्रा में निर्यात करने के लिये तैयार भी हैं और समर्थ भी। इस संबंध में भी हमने भारत सरकार के सामने कुछ निवेदन रखे हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार उक्त कारखाने तथा मशीनें आदि, भारत को, अनुकूल शर्तों पर देने को तैयार है। इसके साथ ही साथ, ज.ज.ग. में हम भारतीय उत्पादनों के आयात परिमाण को बहुत हद तक बढ़ाने केलिये भी तैयार हैं। भारत ने, इस पेशकश में काफी दिलचस्पी दिखाई है, और इस बात की आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में हमारे देशों के विशेषज्ञ मिलकर इस बारे में बातचीत करेंगे।"

प्रथम सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

ज.ज.ग. के शिष्टमण्डल के सदस्यों ने भारतीय अधिकारियों के साथ भारत और ज. ज. ग. के बीच सांस्कृतिक, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान, खेलकूद तथा अन्य क्षेत्रों में सहयोग के प्रश्नों पर विचार-विनिमय किया। इसके फलस्वरूप दोनों देशों ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किये। इस कार्यक्रम के अनुसार दोनों देश विज्ञान, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कला, साहित्य, प्रसारण और खेलकूद के क्षेत्रों में वर्तमान सहयोग को न केवल दृढ़ ही करेंगे बल्कि इसको काफी विकसित भी करेंगे। इस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर, भारत सरकार की ओर से शिक्षा सचिव, श्री पी. एन. कृपाल, और ज.ज.ग. की सरकार की ओर से, भारत में ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री कूर्त बोत्तकर ने, हस्ताक्षर किये। दोनों देशों में अब वैज्ञानिकों, डाक्टरों, शिक्षकों, कलाकारों तथा खिलाड़ियों आदि का विनिमय होगा। इस कार्यक्रम को हर साल विचाराधीन लाया जायेगा।

जर्मन समस्या का हल

यह एक स्वाभाविक बात है कि जर्मन राज्य के प्रतिनिधि से अन्य देशों में जर्मन समस्या से संबंधित प्रश्न पूछे जायें। जर्मनी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्री ब्रूनो लोइशनर ने अपनी पत्रकार-कानफ्रेंस में कहा कि इस जटिल समस्या को केवल शान्तिपूर्ण तरीकों से ही हल किया जा सकता है। इस प्रसंग में उन्होंने कहा: "जर्मन समस्या को ईमानदारी से हल करने के लिये इस ठोस तथ्य और वास्तविकता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि जर्मन भूमि पर दो भिन्न समाज व्यावस्था वाले दो जर्मन राज्य मौजूद हैं। ज.ज.ग. का यह मत है कि आजकल की वस्तुस्थिति में जर्मन समस्या को हल करने का एक ही रास्ता है और वह है दो जर्मन राज्यों के बीच सामान्य संबंधों की स्थापना तथा सद्भावना। इस दिशा में ज.ज.ग. ने कई सुझाव पेश किये

(शेष पृष्ठ १८ पर)

श्रीलंका और ज. ज. ग. के बीच कोंसली-संबंध स्थापित

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष, श्री ब्रूनो लोइशनर के नेतृत्व में, ज. ज. ग. का एक सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल श्रीलंका आया था। प्रतिनिधि-मण्डल और श्रीलंका सरकार के प्रतिनिधियों में एक बातचीत के बाद यह फैसला किया गया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा श्रीलंका के वर्तमान संबंधों को कोंसली (राजनयिक) संबंधों की कोटि तक बढ़ाया जाये। इन दो देशों के बीच अब तक केवल व्यापारिक संबंध ही थे। इस समझौते के परिणामस्वरूप, श्रीलंका में स्थित ज. ज. ग. के व्यापार मिशन को अब कोंसलेट-जनरल के स्तर पर ले जाया जायेगा।

इस समझौते के बारे में, श्रीलंका की सरकार ने १४ फरवरी को, एक प्रेस विज्ञप्ति जारी की जिसमें कहा गया है: "जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष, श्री ब्रूनो लोइशनर एक शिष्टमण्डल के साथ श्रीलंका आये और वे ७ से १४ फरवरी, १९६४ तक यहां रहे। ज. ज. ग. के उपविदेश-मंत्री, श्री वोलफगांग कीज़ेवेट्टर, और विदेश तथा अन्तर-जर्मन व्यापार के उपमंत्री, श्री फ्रित्स कोख के अतिरिक्त विशेषज्ञों तथा सलाहकारों का एक दल भी उनके साथ था। अपने आवास के दिनों में उन्होंने यहां के कई उद्योग-केन्द्र और कुछ ऐतिहासिक स्थान भी देखे।

"श्री ब्रूनो लोइशनर ने, यहां के सेनेट के अध्यक्ष, श्री थामस अमरसूर्य से भी औपचारिक भेंट की।

"प्रधान मंत्री, श्रीमती आर. डी. भण्डारनायक ने—जो यहां की रक्षा तथा विदेश मंत्री भी हैं—जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष से विचारों का आदान-प्रदान किया। इस अवसर पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपविदेश मंत्री, श्री वोलफगांग कीज़ेवेट्टर, और विदेश तथा अन्तर-जर्मन व्यापार के उपमंत्री, भी श्री लोइशनर के हमराह थे। विचार विनिमय की इस बैठक में श्रीलंका के कृषि तथा खाद्य-मंत्री और सुरक्षा तथा विदेश वार्ताओं के संसद-सचिव, श्री एफ. आर. दयस भण्डारनायक भी उपस्थित थे।

"इस अवसर पर श्री ब्रूनो लोइशनर ने (श्रीमती भण्डारनायक को), जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्तर उल्ब्रिख्त का एक व्यक्तिगत सन्देश भी दिया।

"जर्मन समस्या पर, श्रीलंका की प्रधानमंत्री ने अपनी पहली राय को फिर से दोहराया और कहा कि जर्मनी के एकीकरण का सवाल शांतिपूर्ण बातचीत से, और वर्तमान दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के आधार पर ही हल किया जाना चाहिये।

"श्री ब्रूनो लोइशनर ने इस बात की घोषणा की कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, श्रीलंका की तटस्थ नीति और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने की नीति का समर्थन करती है।

"श्री लोइशनर, यहां के वित्त मंत्री, श्री टी. बी. इल्लंगरत्ने, और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री, श्री एम. सेनानायक और अन्य उच्चाधिकारियों से भी मिले। उनके साथ, श्रीलंका तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों को अधिक बढ़ाने के बारे में बातचीत हुई।

"निकटस्थ संबंधों को स्थापित करने के उद्देश्य को सामने रखते हुये, दोनों देश इस बात से सहमत हुये कि कोलम्बो में स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के वर्तमान व्यापार-मिशन को कोंसलेट-जनरल के पद तक बढ़ाया जाये। इस संबंध में आवश्यक सरकारी पत्रों का आदान प्रदान भी हुआ।

"श्री लोइशनर ने इस बात की भी घोषणा की कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, श्रीलंका के उत्पादनों की पर्याप्त मात्रा खरीदने को तैयार है। उन्होंने श्रीलंका के आर्थिक विकास में हाथ बटाने के लिये, ज.ज.ग. के कुछ सुझाव भी पेश किये, जैसे श्रीलंका में औद्योगिक कल-कारखाने लगाना आदि। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि ज.ज.ग. श्रीलंका की सरकार को, लम्बी-अवधि का कर्ज़ा भी दे सकता है। श्रीमती भण्डारनायक ने इस पेशकश का हार्दिक स्वागत किया जो श्रीलंका के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होगी। इस पेशकश को अमली जामा पहनाने के लिये, विशेषज्ञों के प्रतिनिधि-मण्डलों का, निकट भविष्य में, आदान-प्रदान होगा।

"श्रीलंका तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, सांस्कृतिक संबंधों को अधिकाधिक बढ़ाने के संबंध में भविष्य में कौन से कदम उठाये जायेंगे, इस सिलसिले में भी बातचीत हुई और आवश्यक दस्तावेजों का विनिमय हुआ।

"यहां से विदा होते समय, ज. ज. ग. की मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष तथा पूरे शिष्टमण्डल ने श्रीलंका की सरकार, तथा जनता के प्रति आभार प्रदर्शन किया उनके आतिथ्य और मैत्रीपूर्ण भावना के प्रदर्शन के लिये।"
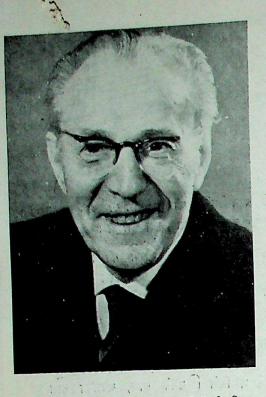
व्यक्तित्व की झाँकी

ओटो ग्रोतवोल ज.ज.ग. के प्रधानमंत्री

(७० वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर)

इस महीने (मार्च) की ११ तिथि के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री, श्री ओटो ग्रोतवोल ७० वर्ष के हो गये। आज से सत्तर वर्ष पहले श्री ग्रोतवोल ने जर्मनी के ब्रून्स्विक नामक स्थान पर, एक मजदूर परिवार में जन्म लिया। प्रारम्भिक स्कूलों में शिक्षा लेने के बाद उन्होंने सन् १९०८ से १९१२ तक मुद्रण-कला सीखी। १४ साल की आयु में श्री ग्रोतवोल, जर्मनी की 'सोशल डेमोक्रेटिक तरुण मजदूर संघ' में शामिल हुये। चार वर्ष के बाद वे जर्मनी के प्रमुख राजनीतिक दल 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' के सदस्य बन गये।.. प्रथम महा युद्ध में वे सेना में भरती हुये। सन् १९१७ में, श्री ग्रोतवोल, 'स्वतंत्र सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी' में शामिल हुए। ये पार्टी जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक तहरीक की वामपंथी तथा मध्य-वामपंथी धारा का नेतृत्व कर रही थी, दक्षिण पंथियों के विरोध में। यह पार्टी प्रायः 'स्पारटेक्स दल' का साथ देती थी जो बाद में 'जर्मन कंम्युनिस्ट पार्टी में परिणत हो गया।

सन् १९१८ में, कील के नौसैनिकों ने, युद्ध को जारी रखने के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह किया। इसके बाद मजदूर तथा सैनिक कौंसिलें कायम की गयीं जिन्होंने जर्मनी के कई नगरों तथा कस्बों पर कब्जा किया। श्री ओटो ग्रोतवोल, जर्मन-डच सीमा पर कायम की गई ऐसी ही एक मजदूर-सैनिक कौंसिल के अध्यक्ष रहे नवम्बर, सन् १९१८ से जनवरी, सन् १९१९ तक। इसके बाद वे अपने जन्मस्थान, ब्रून्सविक की मजदूर तथा सैनिक कौंसिल के सदस्य रहे। इसके साथ ही साथ वे 'आरवाइतेरवर' (सशस्त्र मजदूर मिलिशिया) के भी सदस्य थे। सन् १९२० से १९२५ तक श्री ग्रोतवोल, ब्रून्जविक प्रान्तीय विधान सभा के सदस्य रहे।

सन् १९२३ में, श्री ग्रोतवोल, ब्रून्जविक के शिक्षा तथा न्याय मंत्री बने। सन् १९२५ से १९३३ तक वे ब्रून्जविक प्रान्तीय बीमा कम्पनी के अध्यक्ष, जर्मन राइखस्टाग (संसद) के सदस्य और प्रान्तीय सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की कार्यकारिणी के अध्यक्ष रहे। इस अवधि में, सार्वजनिक जीवन में बहुत व्यस्त रहने के बावजूद, श्री ग्रोतवोल ने, हानोवर की लाइबनिस अकादमी में और बर्लिन विश्वविद्यालय के 'अर्थशास्त्र कालेज' तथा 'राजनीति का कालेज' में अपनी शिक्षा जारी रखी।

सन् १९३३ में जब जर्मनी पर फासिस्टों ने जबरदस्ती कब्जा किया, श्री ओटो ग्रोतवोल को अन्य देशभक्तों की तरह

सन् १९५९ में, श्री ओतो ग्रोतवोल भारत आये ज. ज. ग. के एक सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल के नेता के रूप में। भारत के प्रधानमन्त्री के साथ उनका लिया गया चित्र

अज्ञातवास लेना पड़ा। लेकिन इस रूप में भी वे फासिस्त अत्याचारों के विरोधी आन्दोलन में सक्रिय किन्तु गुप्त भाग लेते रहे। आखिर हिटलर की गेस्तापो पोलिस ने उनको सन् १९३८ में गिरफ्तार कर लिया और उन पर राज्य-द्रोह का मनगढ़न्त अभियोग थोप दिया। लेकिन फासिस्त दरिन्दे इस मुकदमे को आगे न चला सके। सन् १९३९ में उनको फिर फासिस्त पोलिस ने हिटलर के खिलाफ साज़िश के सन्देह में पकड़ लिया, लेकिन दो महीने के बाद उनको छोड़ दिया।

जेल से छूटते ही फासिस्तवाद-विरोधी आन्दोलन में श्री ग्रोतवोल फिर जुट गये। सन् १९४४ में, फासिस्टों की क्रूरताओं से बचने के लिये उनको फिर गुप्तवास धारण करना पड़ा। आखिर सन् १९४५ में जर्मनी की दूसरे महायुद्ध में करारी पराजय के साथ ही फासिस्तवादी दैत्य का भी संहार हुआ। इसके बाद, श्री ग्रोतवोल, सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। अपने व्यस्त राजनीतिक जीवन में वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों का गहरा अध्ययन भी कर चुके थे। सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के श्री शूमाखर जैसे दक्षिणपन्थी नेताओं की नीति का हमेशा विरोध और श्रमिक वर्ग की एकता का समर्थन करते रहे।.. अप्रैल, १९४६ में जर्मनी की दो प्रमुख पार्टियों... कम्युनिस्ट पार्टी और सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी का विलय और वर्तमान 'समाजवादी एकता पार्टी' का जन्म हुआ। श्री ग्रोतवोल इस नई पार्टी के दो अध्यक्षों में से एक अध्यक्ष बन गये। दूसरे अध्यक्ष स्वर्गीय विलहेल्म पीक थे। श्री विलहेल्म पीक तथा श्री वाल्टर उलब्रिख्त जैसे जन-नेताओं के साथ मिलकर वे जर्मनी के श्रमिक-वर्ग के संगठन तथा एकता के लिये निरन्तर काम करते रहे। सन् १९४६ से १९५० तक वे सैक्सन प्रान्त की विधान-सभा के सदस्य रहे। 'जर्मन जन परिषद्' के नेतृत्व में जर्मनी को विभाजित होने से बचाने के लिये चलाये गये 'एकता और शांति के लिये' नामक आन्दोलन में उन्होंने विशेष भूमिका अदा की।

श्री आतो ग्रोतवोल एक उग्र तथा समर्थ भाषण-कर्त्ता हैं। एक सशक्त भाषण देते हुये वह यहां देखे जा सकते हैं

श्री ओटो ग्रोतवोल, जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी के पोलिटब्यूरो के तभी से सदस्य हैं जब से इस पार्टी का जन्म हुआ। सन् १९५९ में जब जर्मनी का विभाजन हुआ और जर्मन जनवादी गणतंत्र का जन्म हुआ (७ अक्तूबर के दिन), तब से श्री ग्रोतवोल यहां के 'पीपुल्स चैम्बर' (लोक सभा) के सदस्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री रहे हैं। सन् १९६० के सितम्बर मास में जब, ज. ज. ग. के राज्य परिषद् की स्थापना हुई, श्री ग्रोतवोल इस परिषद् के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद् का अध्यक्ष होने के नाते, श्री ओटो ग्रोतवोल ने समय-समय पर ज. ज. ग. की शांतिप्रिय नीति और जनवाद तथा समाजवाद के लिये लगातार संघर्ष के हक में और पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवाद तथा प्रति-शोधवाद के खिलाफ अनेक घोषणायें और सुझाव पेश किये हैं। वे जर्मन शांति संधि के भी ज़बरदस्त समर्थक हैं।

श्री ग्रोतवोल, सन् १९५३ में 'कार्लमार्क्स पदक,' से, सन् १९५४ में 'देशभक्ति का स्वर्ण पदक' से और सन् १९५४ तथा १९५९ में (दो बार) 'श्रम नायक' के सम्मान से विभूषित हो चुके हैं अपनी विशिष्ट जन सेवाओं के लिये। श्री ग्रोतवोल ने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। इनमें से विशेष उल्लेखनीय हैं: चुने हुये लेख और भाषण (१९५४-१९५९), मास्को, १९६१; शांतिप्रिय, जनवादी और समाजवादी जर्मनी के निर्माण पथ पर, बर्लिन, १९५९; जर्मन जनवादी गणतंत्र की एकता के संघर्ष में (भाषण तथा लेख), १ से ५ भाग तक, दूसरा संस्करण, बर्लिन, १९५९; जर्मनी के लिये संघर्ष (भाषण और लेख) भाग १ तथा २, बर्लिन, १९५८; ३० वर्ष बाद: नवम्बर क्रांति और जर्मन मजदूर-वर्ग आन्दोलन के इतिहास के सबक, ५वां संस्करण, बर्लिन, १९५३; जर्मन संवैधानिक योजनायें, बर्लिन, १९४७; जर्मन सांस्कृतिक नीति, ड्रस्डेन, १९५२। इन पुस्तकों के अतिरिक्त श्री ग्रोतवोल ने अनेक राजनीतिक पुस्तिकायें भी लिखी हैं।

न[illegible]की व्यावसायिक शिक्षा-पद्धति

उर्जूला क्राइज़िग

हाल ही में जब हम जर्मन जनवादी गणतंत्र के समुद्र तटवर्ती प्रदेश रोस्टोक-वार्नेम्यूण्दे का दौरा कर रहे थे, वहां एक लड़की से हमारी मुलाकात हुई। उसने अपना नाम हेल्गा बोख बताया और उसकी आयु १६ वर्ष की थी। वह रोस्टोक के "एर्नस्त टेलमन्न" नामक (उच्चतर) माध्यमिक स्कूल की दशवीं कक्षा की छात्रा है। हमारी उत्सुकता जाग पड़ी। हम ने हेल्गा से पूछा वह यहां इस पोत-निमाण कारखाने में क्या करती है? इस सवाल का जो जवाब हमें उस लड़की से मिला, वह इस प्रकार था:

कुमारी हेल्गा बोख उल्लिखित हाइ स्कूल से डिपलोमा लेने के साथ साथ (अर्थात् अध्ययन करने के साथ ही साथ) यन्त्रविज्ञ का प्रमाण-पत्र भी हासिल करना चाहती है—यानी वह एक कुशल मजदूर भी बनना चाहती है। इसीलिये वह हफते में एक दिन, अपने अन्य सहपाठियों के साथ उस वारनो पोत-निर्माण कारखाने में अमली प्रशिक्षण लेने के लिये आती है। वह प्रखर प्रतिभा वाली छात्रा है, और भाषायें उसके सबसे अच्छे विषय हैं। वह एक साथ तीन भाषाओं—रूसी, अंग्रेज़ी और पोलिश का अध्यनन करती है। भाषायें सीखने के कार्यक्रम में चेक भाषा अगले नम्बर पर है। इस भाषा को सीखने के बाद वह दुभाषिया बनना चाहती है।

हमने हेल्गा से पूछाः "तब तुम यन्त्र-विज्ञ का प्रमाण-पत्र लेकर क्या करोगी?" हेल्गा ने उत्तर दिया: "इस व्यवसाय के सीखने में कई लाभ हैं। अन्य बातों के अलावा, शारीरिक श्रम से संबंधित ज्ञान इस से प्राप्त होगा मुझे। और फिर, तकनीकी विषयों की जानकारी प्राप्त करना एक दुभाषिये के लिये वर्जित भी तो नहीं है।..." कुमारी हेल्गा से हमारी बात चीत काफी दिलचस्प होती जा रही थी। एक साथ, हाइ स्कूल का डिपलोमा और कुशल-मज़दूर का सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाली उस लड़की से हमें ज. ज. ग. की नई शिक्षा-पद्धति के बारे में बहुत कुछ मालूम हुआ।

इस समय जर्मन जनवादी गणतंत्र में एक तकनीकी क्रांति हो रही है। इसलिये व्यावसायिक प्रशिक्षण में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहे हैं। प्रशिक्षण देने के पुराने तथा घिसे-पिटे तरीकों से ज. ज. ग. के नौजवान विद्यार्थियों को, वैज्ञानिक तथा टेकनोलोजी संबंधी क्रांतिकारी परिवर्तनों के अनुरूप नहीं ढाला जा सकता है। अब तक सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा यहां अलग अलग दी जाती थी, और इनका संगठन तथा कार्यक्रम भी अलग अलग था। लेकिन उक्त क्रांतिकारी परिवर्तनों के फल-स्वरूप इनका यह अलगाव बहुत तेज़ी से खत्म हो रहा है और शिक्षा के ये दो क्षेत्र एक दूसरे के पूरक और सहयोगी बन रहे हैं। कालान्तर में व्यावसायिक शिक्षा सामान्य शिक्षा का ही एक अभिन्न अंग बन जायेगी। इस दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदन उठाया भी जा चुका है, अर्थात् सभी स्कूलों में पोलितकनीकी शिक्षा आरंभ कर दी गई है। इसके अतिरिक्त, दस कक्षाओं वाले पोलितकनीकी स्कूलों की ऊंची कक्षाओं में सामान्य बुनियादी तकनीकी शिक्षा देने और बारह वर्षीय पोलीतकनीकी उच्चतर स्कूलों में पूरी व्यावसायिक ट्रेनिंग देने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। आजकल ज.ज.ग. के, आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले ८० प्रति शत से अधिक विद्यार्थी पास होने की सूर में किसी उच्चतर माध्यमिक स्कूल ९वीं कक्षा में दाखिल हो जाते हैं। लिए यहां धीरे धीरे किन्तु निश्चित रूप एक समरूप शिक्षा- पद्धति विकसित हो है जो किंडरगार्टेन से शुरू होकर व्यावसायिक प्रशिक्षण पर समाप्त हो है। उदाहरण के लिये माध्यमिक पो तकनीकी स्कूलों में ९वीं कक्षा के छा छात्रायें, १०० से भी अधिक व्यवसा विषयों में से किसी एक या अधिक वि में प्रशिक्षण ले सकते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में आज अनेक ऐसी छात्र-छात्रायें हैं जो गणित भौतिकी में बहुत रुचि रखते हैं। अन्तरिक्ष उड़ानों के स्वप्न देखते हैं, किसी भी इलेक्ट्रानिक उपकरण का देखने के लिये वे खतरों की किये बिना उसमें घुस सकते हैं। बर्लिन के किसी माध्यमिक स्कूल के वि को यदि गणित तथा भौतिकी में अच्छे नम्बर मिलते हैं तो उसको वहां हाइनरिख हर्त्स माध्यमिक स्कूल में दा किया जाता है। इस तथा ऐसे ही स्कूलों में, विशिष्ट शिक्षक, ऐसे विद्या को तकनीकी कम्प्यूटरों और भौतिकी प्र शालाओं के सहायक बनने का व्यावसा प्रशिक्षण देते हैं। यह प्रशिक्षण शह से पहले और ९वीं कक्षा की पढ़ा प्रारंभ के दिनों में, १४ दिनों का बुनियादी कोर्स कराया जाता है। विद्यार्थियों को वज़ीफे दिये जाते हैं बहुत अच्छा काम करने पर उनको पुर दिये जाते हैं धन के रूप में। इन वि

स्कूलों में, विद्यार्थी, स्कूल की आयु से ही, दुरूह वैज्ञानिक उपकरण का प्रयोग और व्यवहार सीखते हैं और उनके द्वारा वे भौतिकी के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

इन स्कूलों में, सात में पांच दिन, सामान्य पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों को एक या दो विदेशी भाषायें, इतिहास तथा साहित्य, संगीत, कला, खेलकूद आदि जैसे विषय पढ़ाये, सिखाये जाते हैं। दूसरे शब्दों में इन पांच दिनों में उक्त विशिष्ट स्कूलों में भी सामान्य माध्यमिक स्कूलों वाला पाठ्यक्रम ही चलता है। लेकिन हर सप्ताह का छटा दिन इनमें व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिये रखा गया है। हाइनरिख हेर्त्स माध्यमिक स्कूल में व्यावसायिक प्रशिक्षण के इस दिन गणित, भौतिकी, रसायन तथा ऐसे ही ज्ञान-विज्ञान में निपुण कराने वाले विषय पढ़ाये जाते हैं। गर्मियों की दो महीने की छुट्टियों में भी कई हफ्ते इन विषयों में इन विद्यार्थियों को अमली काम कराया जाता है।

किसी माध्यमिक स्कूल में १२ वर्ष की शिक्षा के बाद विद्यार्थी इस योग्य होते हैं कि यदि चाहें तो वे सीधे किसी उद्योग में काम कर सकते हैं। इस शिक्षापद्धति के पहले यदि कोई विद्यार्थी सीधे उद्योग में जाना चाहता तो तकनीकी कौशल के अभाव के कारण वह बाल-मजदूर ही भरती किया जाता। लेकिन आज की स्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। उच्चतर माध्यमिक पोलि-टेकनीकी स्कूल से निकलकर ज. ज. ग. के प्रत्येक विद्यार्थी में इतनी क्षमता तथा योग्यता होती है कि वह किसी भी तकनीकी व्यवसाय में जाकर अच्छी प्रगति कर सकता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा-प्रणाली अब इस तरह ढाली गई है कि यहां के किसी भी तकनीकी संस्थान, कालेज अथवा विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए उच्चतर माध्यमिक स्कूल पास करने का सर्टिफिकेट और कुशल-कारीगर सर्टिफिकेट आवश्यक है। अनुभवों तथा प्रयोगों के आधार पर धीरे धीरे, ज. ज. ग. में, स्कूलों और उद्यमों में एक अटूट रिश्ता स्थापित किया गया है। उदाहरण के लिये मेक्लेनबुर्ग के देहाती क्षेत्र के माध्यमिक स्कूलों में कृषि-विज्ञान संबंधी विषयों, जैसे पशु-पालन, मत्स्य-विज्ञान, पशु-चिकित्सा, बीज-विज्ञान आदि में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी प्रकार, मेक्लनबुर्ग के उत्तर में स्थित महत्वपूर्ण पोत-निमाण केन्द्र के आसपास के स्कूलों में, लड़के इस उद्योग विशेष का प्रशिक्षण पाते हैं। माग्देबुर्ग भारी मशीनें बनाने का केन्द्र है। यहां के माध्यमिक स्कूल के लड़के लड़कियां 'ऐर्नस्त टेलमन्न कारखाने' में जाकर मिस्त्री, टर्नर, औजार-निमाता आदि का काम सीखते हैं। आगे जाकर इन्हीं में से इंजीनियर, डिजाइनर, डाक्टर आदि नमूदार होंगे।

ल्यूना और वोल्फेन नामक रासायनिक कारखानों के केन्द्रों में, इस महत्वपूर्ण उद्योग में काम करने वाले भविष्य के कुशल कारीगरों को प्रशिक्षण दिया जाता है—अर्थात् इस क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल के छात्र-छात्राओं को। इस तरह के दर्जनों उदाहरण यहां प्रस्तुत किये जा सकते हैं लेकिन उल्लिखित दो चार उदाहरण हमारे मन्तव्य को स्पष्ट करने में पर्याप्त हैं। संक्षेप में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की नई शिक्षा-पद्धति की यही रूप रेखा है जो आधुनिक वास्तविकता और राष्ट्रीय आवश्यकता के आधार स्तम्भों पर खड़ी होकर विकसित हो रही है।

भारत और ज. ज. ग. के बीच सन् १९६४ की वस्तु-विनिमय करार

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, नये वर्ष (१९६४) में माल-विनिमय के लिये बातचीत हुई और २८ दिसम्बर सन् १९६३ के दिन नये वर्ष की माल-विनिमय करार पर दस्तखत हुये। नई करार संबंधी इस बातचीत में, ज ज.ग. और भारत के व्यापार-प्रतिनिधि-मण्डलों का नेतृत्व, क्रमशः 'विदेश तथा अन्तर-जर्मन व्यापार मंत्रालय' के महा-निदेशक, श्री ई. रेनाइज़ेन और भारत सरकार के 'अन्त-र्राष्ट्रीय-व्यापार मन्त्रालय' के सह-सचिव, श्री एस. वोहरा कर रहे थे।

माल-विनिमय की उक्त करार के अनुसार, सन् १९६४ में, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र, एक दूसरे को ३५ करोड़ रुपयों की रकम का माल सप्लाई करेंगे। दूसरे शब्दों में, इन दो देशों के व्यापार में, नये वर्ष में, ३५ प्रतिशत की वृद्धि होगी (सन् १९६३ में कुल व्यापार की रकम २५ करोड़ रुपये थी)। सन् १९६४ की इस करार का विशेष उल्लेखनीय पहलू यह है कि भारत, ज.ज.ग. को, २ करोड़ रुपये की रकम का सिर्फ इंजीनियरी सामान निर्यात करेगा। इससे पहले भारत, अधिकांशतः अपनी पारंपरिक वस्तुएं चाय, काफी, मसाले, चमड़े आदि ही निर्यात करता था ज.ज.ग. को।

निर्यात किये जाने वाले, उक्त इंजीनियरी सामान में ये वस्तुएं विशेष उल्लेखनीय हैं: संचायक बैटरियां, टायर, आटोमोबाइलों के पुर्जे, ढली हुई सूक्ष्म वस्तुएं, ट्रापिकलानुकूलित मोटरें, बिजली का सामान, काबलें तथा पेच, मशीनी औजार के कल-पुर्जे तथा उनके उपसाधन, नेत्र-विज्ञान के उपकरण, रासाय-निक यंत्र, केब्ल तथा तार, कोयला तथा खनिज पीसने की मशीनें, घरेलू इस्तेमाल की बिजली की चीजें, टेलिफोन यंत्र तथा सामग्री, मोबाइल वर्कशाप क्रेन, कपड़ा बुनने की मशीनें तथा उनके कल-पुर्जे, औद्योगिक शटर, और अन्य लिपि-मशीनें (डूपलिके-टिंग-मशीन्स)।

इस इंजीनियरी सामान के अतिरिक्त, सन् १९६४ में भारत, ज.ज.ग. को महत्व-पूर्ण औषधियां, जैसे सोडियम बाइकोरेट, सोडियम पेरबोरेट, कुनीन हायड्रोक्लोराइड, हार्मोन तथा विटामिन आदि भी निर्यात करेगा। इन वस्तुओं के अतिरिक्त, ज.ज.ग. भारत से सूती तथा अन्य वस्त्र, फलों के रस तथा मुरब्बे, हस्तकरघों तथा हस्तकला की चीजें, जूते और नारियल की जटा से

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जर्मन जनवादी गणतंत्र में गृह-निर्माण

दूसरे महा युद्ध में जर्मन जनवादी गणतंत्र के क्षेत्रफल में लगभग आठ लाख (८००,०००) मकान बमबारी से तबाह हुये, और लाखों लोग बे-घर हुये। बड़े-बड़े परिवार, एक छोटे कमरे में खाते-पीते, सोते जागते और खाना पकाते थे। युद्ध की समाप्ति के बाद भी यह समस्या सुलझने के बदले और भी जटिल हो गई, क्योंकि हजारों ऐसे मकानों को गिरा देना पड़ा जो बमों की मार के कारण रिहायश के योग्य नहीं रह पाये थे। पहले पहल, इस गंभीर समस्या की ओर इसलिये अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका, क्योंकि बिजली घरों. गैस तथा जल-सेवा, परिवहन और खाद्य-पदार्थ उत्पादक जैसे ध्वस्त उद्योगों तथा कारखानों को पुनः खड़ा कर देना बुनियादी महत्त्व का काम था।

मकानों की संख्या

इस काम के कुछ-कुछ आगे बढ़ने के तुरन्त बाद, रिहायशी मकानों के निर्माण के महत्वपूर्ण काम को भी हाथ में लिया गया। इस काम में तभी हाथ डालना संभव था जब निर्माण सामग्री उद्योग के उत्पादनों की पर्याप्त मात्रा बाज़ार में उपलब्द होती। इस बड़ी कठिनाई के बावजूद, जर्मन जनवादी गणतंत्र में, सन् १६५० से गृह-निर्माण योजना ने काफी उन्नति की थी। उस वर्ष यहां ३०,६६२ रिहायशी मकान तामीर किये गये। सन् १६५७ तक ६१, १२० परिवारों को नये मकानों में जगह दी गई। इसी प्रकार, ज.ज.ग. के इंजीनियरों तथा इमारती मज़दूरों ने सन् १६५६ में ७६,६५३ और सन् १६६१ में लगभग ६२, ००० नये मकानों का निर्माण किया। ये नये रिहायशी मकान, ५,०६३,००० वर्ग मीटर के कुल क्षेत्रफल पर, और १ अरब, ८५ करोड़ ६० लाख (१,८५६,०००,०००) मार्क की लागत (१ मार्क = १.१२ नये पैसे) से बनाये गये। आजकल, ज.ज.ग. में प्रति एक घण्टे में दस नये मकान तैयार किये जाते हैं।

यूनेस्को (Unesco) द्वारा प्रकाशित किये गये एक विवरण में कहा गया है कि सन् १६६० में गृह-निर्माण में ज.ज.ग. यूरोप के प्रमुख राज्यों में से एक था। ज.ज.ग. में प्रति १००० व्यक्तियों पर ३१६ रिहायशी मकान हैं, जबकि पश्चिम जर्मन फैडरल रिपब्लिक, ब्रिटेन और इटली में इस अनुपात की दर क्रमानुसार केवल २८६, ३११ तथा २६७ मकान हैं।...ज.ज.ग. में कुल ५५ लाख रिहायशी मकान हैं जिनमें से १३ प्रतिशत एक कमरे के, ३६ प्रतिशत दो कमरों के, ३१ प्रतिशत तीन कमरों के और १७ प्रतिशत चार या अधिक कमरों वाले फ्लैट हैं।

गृह निर्माण के स्थल

ज.ज.ग. में गृह-निर्माण भी औद्योगिक निर्माण का एक अंग है और एक पूर्व-निर्धारित तथा निश्चत योजना के आधीन चलता है। उदाहरण के लिये बर्लिन नगर में आजकल कई गृह-निर्माण प्रायोजनायें चलती हैं जो वस्तुकला, रूप-सज्जा आदि की दृष्टि से एकदम आधुनिक ढंग की है। तामीर की यह सरगर्मी अधिकतर निरन्तर विकसित होती हुई नई उद्योग-पुरियों के आस-पास विशेष रूप से देखने को मिलती है। मिसाल के लिये न्यू-होयेसंवरवडा को ही लीजिये। पोलेण्ड तथा ज.ज.ग. की सीमा पर स्थित इस उद्योग-पुरी का जन्म कुछ वर्ष पहले ब्लैक-पम्प नामक विराट लिगनाइट कारखानों के पडोस में हुआ। आजकल यहां स्कूलों, अस्पतालों, दूकानों, खेल मैदानों तथा सिनेमाओं आदि के अलावा दस हज़ार नये मकान भी हैं। गृह-निर्माण की यह सरगर्मी अब नगरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दूर गांवों तक भी फैल चुकी है — विशेष कर ज. ज. ग. के उत्तरी हिस्से में इसके दर्शन होते हैं।

सुख-सुविधायें

गृह- निर्माण योजनाके अन्तर्गत बनाये जाने वाले मकानों में हर प्रकार की आधुनिक सुविधायें उपलब्ध की गयी हैं। जाड़े के दिनों में इन मकानों को गर्म रखने के लिये, गर्मी पैदा करने वाले कारखाने इन को गर्मी सप्लाई करते हैं (गैस या बिजली सप्लाई की तरह)।

बर्लिन में, खास तौर से इसके पूर्वी भाग में, जो अब जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी है, पहले हज़ारों गीले, गन्दे तहखाने हुआ करते थे। अस्वस्थ स्थानों में रहने वाले लोगों को वहां से निकालकर खुले हवादार फ्लैटों में जगह दी गई है। जनवादी बर्लिन में तहखाने नाम की चीज़ अब भूत की एक याद-मात्र रह गई हैं।

इसी प्रकार, बर्लिन का 'नियानदे क्षेत्र' नामक स्थान तंग तथा अन्धकार पूर्ण बद्दे मकानों की दरिद्र लोगों की एक गन्दी वस्ती थी पहले। लेकिन अब वहाँ आपको २४ तथा २५ मंज़िलो के भव्य, गगनचुम्बी मकान देखने को मिलेंगे। उस ज़माने में इस क्षेत्र की एक हेक्टर भूमि पर १००० व्यक्ति रहने पर मजबूर थे, लेकिन आज साफ सुथरे मकानों में यहाँ एक हेक्टर क्षेत्र में केवल १६६ व्यक्ति रहते हैं (१ हेक्टर = २.५ एकड़ भूमि)।

गृह-निर्माण सहकारी समितियां

सन् १९५४ तक, गृह-निर्माण का काम केवल यहां की सरकार ही किया करती थी, और इस काम के लिसे राज्य-बजट में, हर साल, कोई निश्चित रक़म रखी जाती थी लेकिन नये मकान हासिल करने वाले लोगों का सहयोग पाने के लिये, और किरायों को कम स्तर पर रखने के किये, सन् १९५४ में प्रथम "श्रमिक गृह-निर्माण सहकारी समितियों" की स्थापना की गई। देखते ही देखते ये समितियां बहुत लोकप्रिय हो गयीं। आजकल ज. ज. ग. में लगभग १००० ऐसी समितियां हैं जिनकी सदस्य संख्या ४००,००० के आस-पास है। गृह-निर्माण कार्यक्रम में अब इनका ६५ प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा है जो आने वाले वर्षों में बढ़ता जायेगा। ज. ज. ग. का प्रत्येक नागरिक स्व-इच्छा से गृह-निर्माण समितियों का सदस्य बन सकता है।

इन समितियों को सरकार मुफ्त जमीन (निर्माण-स्थल) और इसके अलावा, बिना सूद के कर्जे उपलब्ध करती है। ये कर्जे कुल तामीराती लागत के ८५ प्रतिशत भाग तक दिये जाते हैं। वास्तव में इन कर्जों का अधिकांश भाग निष्क्रेय नहीं है—अर्थात सरकार को वापस लौटाये नहीं जाते हैं इन कर्जों के अतिरिक्त भवन- निर्माण सहकारी समितियां, यहां के सरकारी उद्यमों के सांस्कृतिक तथा सामाजिक कोश से भी काफी अनुदान पाती हैं।

रेल-कर्मचारियों की गृह-निर्माण सहकारी समितियां

अब हम, ज. ज.ग. के रेल-कर्मचारियों की विशिष्ट गृह-निर्माण सहकारी समितियों पर भी एक नज़र डालेंगे। बर्लिन की एक ऐसी समिति का एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। श्री मिलकिन एक रेल-इंजीनियर हैं। सन् १९५६ से वह, अपनी पत्नी तथा ११ वर्षीय पुत्र के साथ, एक स्वच्छ तथा सुन्दर तीन कमरों वाले फ्लैट में रहते हैं फ्रीदरिख्सहाइन नामक कस्बे में। श्री मिलनिक जब समिति के सदस्य बने तो उनको केवल १० मार्क दाखिले की फीस देनी पड़ी। इसके बाद उक्त फ्लैट के लिये उनको केवल २१०० मार्क देने पड़े और वे भी सात साल में मासिक किस्तों पर। यदि कभी वे इस मकान को छोड़ना चाहेंगे तो उनका अपना सारा पैसा वापिस मिल जायेगा जिस फ्लैट में श्री मिलनिक रहते हैं उस मकान में ऐसे अनेक रिहायशी फ्लैट हैं, और इसके निर्माण में उन्होंने अपने अन्य सहयोगियों के साथ सवेतन स्वयं ४५० घन्टे काम किया है। मकान में रहने वाले अन्य परिवारों की तरह उनको भी, सभी आधुनिक सुविधाओं से सज्जित फ्लैट के लिये केवल ४८.५२ मार्क (लगभग ५३ रुपये) किराया देना पड़ता है हर महीने।

मकानों का किराया

जर्मन जनवादी गणतन्त्र में मकानों का किराया कानून से बंधा हुआ है। यहां जब कोई चाहे मकानों का किराया नहीं बढ़ा सकता। सन् १९४८ से आज तक इन किरायों में कोई बढ़ौती नहीं हुई है, हालांकि लोगों की मजदूरी और तनख्वाहें में काफी वृद्धि हुई है। किरायों की दर है कुल आय का ३ प्रतिशत से १० प्रतिशत का भाग। आधुनिक सुविधाओं से आरास्ता ३ कमरों के फ्लैट का किराया यहां केवल ५० मार्क अर्थात् ५६ रुपया है, जबकि पश्चिमी जर्मनी में ऐसे ही फ्लैट के लिये ११० से लेकर १३५ मार्क (१ मार्क = १.१२ न. पै.) किराया देना पड़ता है।

★ ★ ★
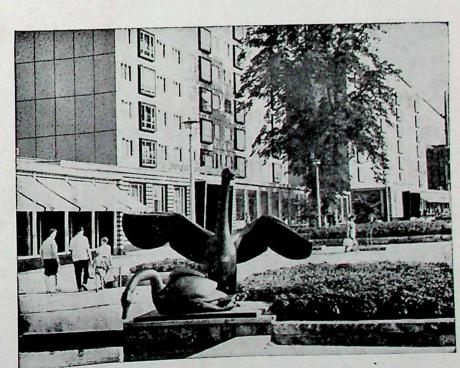
लाइपजिक की कई मंजिलों वाली एक भव्य और सुन्दर रहायशी इमारत
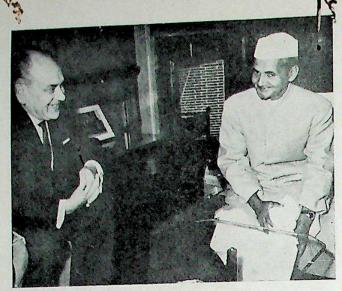
श्री ब्रुनो क्रेइशनर, निर्विभागीय मन्त्री, श्री लालबहादुर शास्त्री के साथ

रक्षा मंत्री श्री यशवन्त राव चौहान के साथ

पर राष्ट्र मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती लक्ष्मी मेनन के साथ

सहयोग स

भा र त में | ग. ना-

(बायें) ज. ज. ग. का शिष्टमण्डल; भारत के गृह-मंत्री, साथ (द

राष्ट्रपिता महा श्रद्धांजलि

ोग सद्भावना

ग. का

ना-मण्डल
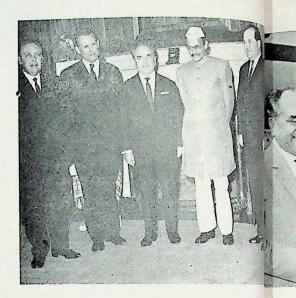
ंत्री, साथ (दायें) पालम हवाई अड्डे पर सद्भावना-मण्डल का स्वागत

महा श्रद्धांजलि चढ़ाते हुये ..

श्री ब्रनो लोइशनर, भारत के वित्त मन्त्री, श्री टी. टी. कृष्णमाचार्य के साथ

लोक सभा के अध्यक्ष, सरदार हुकम सिंह के साथ

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मन्त्री, श्री मनुभाई शाह के साथ

उपन्यास का बाल-नायक जो जीवित है

६ और २३ वर्ष की आयु में उपन्यास का नायक, स्टेफान स्वाइग

जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक लेखक, श्री ब्रूनो आपित्स और उनके उपन्यास 'भेड़ियों के घेरे में', की ख्याति सारे संसार में आग की तरह फैल गई कुछ ही वर्ष पहले। इस उपन्यास की कथा, कुख्यात बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर में फासिस्त दरिन्दों के पाशविक अत्याचारों की कहानी तो है ही। लेकिन इससे भी बढ़कर यह उपन्यास के उस ३ वर्षीय बाल-नायक की कथा है जिसको एक बदक़िस्मत इन्सान ने बूखेनबाल्ड हत्या शिविर में अपने फटे हुये चमड़े के सन्दूक में छिपा कर लाया इस धूमिल आशा के साथ कि शायद वह नन्हा बालक किसी चमत्कार से शिविर के हत्यारे फासिस्ट सैनिकों के शिकंजे से बच निकले और जीवित रहे।...और यह चमत्कार हुआ भी। शिविर के सैकड़ों कैदियों ने, मृत्यु की काली छाया जिन पर चौबीसों घंटे मडराती रहती थी, अपने प्राणों की बाजी लगा कर उस कोमल कली को फासिस्तों की गैस-भट्टियों में जिन्दा जलने से बचा लिया। पोलैण्ड का यह मासूम यहूदी बालक उस ज़बरदस्त संघर्ष का केन्द्र बिन्दु बन गया जिसमें बूखेन-वाल्ड शिविर में क़ैद यूरोप की हर जाति और राष्ट्र के बन्दियों (रूसी, जर्मन, फ्रेंच, चेक आदि) ने हिस्सा लिया। यह संघर्ष, अन्त में, सशस्त्र विद्रोह के रूप में फूट कर सफल भी हो गया। इस प्रकार एक बार फिर मानवता, दानवता पर, और जीवन मृत्यु पर विजयी हो गये।

'भेड़ियों के घेरे में' के लेखक श्री ब्रूनो आपित्स स्वयं भी इस महान संघर्ष के एक अभिन्न अंग रहे थे बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर में। इसीलिये अपनी अनुभूत भावनाओं को जब उन्होंने उपन्यास का रूप दिया तो वे और उनकी कृति, एकदम, सब सीमाओं को तोड़ कर सार्वभौम मानवता की अपनी रचना बन गई। श्री आपित्स का यह उपन्यास, युद्धोत्तर जर्मनी का सबसे अधिक अनूदित तथा सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला उपन्यास है। दुनिया की बीस से अधिक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। भारत की दो भाषाओं बंगला तथा उर्दू में भी। हिन्दी में इसका अनुवाद हो रहा है, और इसके जल्दी प्रकाशित होने जाने की संभावना भी है।

बूखेनवाल्ड का बालक जीवित है

सहसा, फरवरी के प्रथम सप्ताह में एक दिन बर्लिन के एक सांध्य कालीन दैनिक अखबार 'बी. जेड. ए.' में यह सनसनीखेज खबर छपी कि "बूखेनवाल्ड का बालक जीवित है। वह अब २३ वर्ष का नवयुवक बन चुका है और उसका नाम है स्टेफान येरज़ी स्वाइग। वह एक वकील जाखारियस स्वाइग का बेटा है जो बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर में बन्दी था, जो अब इज़राइल की राजधानी टेल-अवीव में आबाद हुआ है। २३ वर्षीय स्टेफान स्वाइग, इस समय फ्रांस में, लियों के पोलितकनीकी संस्थान में शिक्षा पा रहा है।..."

इस सनसनीखेज खबर के छपने पर उक्त सांध्य-दैनिक के एक विशेष प्रतिनिधि ने, 'भेड़ियों के घेरे में' के लेखक, श्री आपित्स से मुलाकात की। पत्रकार से लेखक ने कहा: "मेरा उपन्यास प्रकाशित होने के बाद, मेरा अन्तर-मानस

अपने रचयता, उपन्यास-कार ब्रूनो आपित्स के साथ १९ वर्षों के बाद मिलन

अशांत था। बूखेनवाल्ड के बालक (और मेरे उपन्यास के नायक) पर क्या गुजरी हत्या-शिविर से छुटकारा पाने के बाद, इस चिन्ता के बोझ से मेरी अन्तर-आत्मा दबी रहती थी। लेकिन मेरा बाल-नायक जीवित है इस समाचार ने मेरी वर्षों की इस चिन्ता को एकदम एक अपार हर्ष तथा आनन्द में बदल दिया। . . . दुनिया भर के देशों से — ममता भरी माताओं से और स्त्रियों, पुरुषों तथा स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों से, मुझे प्रायः पत्र आते थे, और उन असंख्य पत्रों में केवल एक ही प्रश्न पूछा जाता था : बालक का क्या हुआ? अभी तीन दिन पहले भी मुझे एक ऐसा ही पत्र मिला है। इन पत्रों का मेरे पास केवल एक ही दुःखद उत्तर हुआ करता था : 'मुझे कुछ भी मालूम नहीं। . . .' और अब मैं ऐसा अनुभव करता हूं जैसे १९ वर्षों के बाद सहसा मुझे अपना खोया बच्चा मिल गया हो। . . ."

कुछ समय से बूखेनवाल्ड शिविर के बालक की तलाश जारी थी। सन् १९६३ के मास्को फिलम समारोह में इस संबंध में एक निश्चत सुराग मिल गया। इस फिलम समारोह में 'भेड़ियों के घेरे में' उपन्यास पर आधारित फिलम दिखाई गई। यह फिलम देखने के बाद, बालक के किसी दूर के संबंधी ने कहा कि वह बालक को पहचानता है। सांध्य-पत्र 'बी. ज़ेड. ए.' के संवाददाताओं ने इस सुराग पर बालक की तलाश जारी रखी। आखिर इस तलाश ने उनको इज़राइल की राजधानी टेलअवीव तक, और वहां स्टेफान के पिता डा. ज़ाखारियस ज्वाइग तक पहुंचा दिया। वहां, हर्ष से गद्गद् हो कर, पिता ने बालक के जीवित होने पर इन शब्दों में सच्चाई की मुहर लगाई : "मेरा बेटा, स्टेफान-येरजी ही बूखेनवाल्ड का बालक है। . . ." श्री ब्रूनो आपित्स ने, जिन्होंने बूखेनवाल्ड हत्या शिविर के संघर्ष के दिनों में बालक को प्रायः अपनी गोद और हाथों में लिया था अखबार के प्रतिनिधि से कहा कि स्टेफान स्वाइग के बूखेनवाल्ड-बालक होने में और उसकी सही शिनाख्त के बारे में अकाट्य प्रमाण उनको, फासिस्तवाद विरोधी संघर्ष की एक योद्धा, श्रीमती चालाट्टे होल्ज़र से भी मिले हैं। वह भी आजकल इज़राइल में ही रहती हैं।

बाल-नायक का पत्र अपने रचयता को

स्टेफान स्वाइग ने, १० जनवरी १९६४ की तिथि को श्री ब्रूनो आपित्स को एक पत्र भेजा है। उसमें लेखक के बाल-नायक ने लिखा है :

"बहुत समय तक मेरी यही धारणा रही कि बूखेनवाल्ड शिविर को सभी भूल चुके हैं। किन्तु आपकी रचना 'भेड़ियों के घेरे में' ने मेरी इस भ्रान्ति को जड़ मूल से उखाड़ कर फेंक दिया। मुझे अपनी इस गलती का एहसास है। बहुत समय बीत जाने पर भी, अतीत की रोंगटे खड़े कर देने वाली स्मृतियां, हमारे सामने साक्षात् चुनौती बनकर खड़ी हैं। हत्या-शिविर के आप जैसे बन्दी-जन गौरव और सम्मान के सही पात्र और भागी हैं, क्योंकि कई वर्षों तक, आप लोग, अज्ञात अटल-योद्धाओं के रूप में अपने मोर्चे पर डटे रहे (अकथनीय हिटलरी बर्बरता के विरुद्ध)।

"मैं हर मुमकिन कोशिश करूंगा आपसे मिलने की। हमारी बहुत सी चीजें समान हैं। ......"

इस बीच स्टेफान-येरजी स्वाइग की श्री आपित्स से मिलने की कोशिशें सफल भी हुई हैं। बूखेनवाल्ड का बाल-नायक अपने रचयता से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। लेखक के अतिरिक्त, स्टेफान, जर्मन जनवादी गणतंत्र में उन बीसियों व्यक्तियों से भी मिला जिन्होंने २० वर्ष पहले अपने जान की बाज़ी लगाकर उसको फासिस्त पशुओं से बचाया था। वह, विल्ली ब्लाइखर से भी मिला, जिन्होंने उसको यातना शिविर के एक स्टोर-रूम में छिपा लिया था।.. इसके अतिरिक्त, स्टेफान स्वाइग बूखेनवाल्ड सैनिक शिविर के स्थान को भी देखने गया। वहां उसको वे सभी स्थान और कमरे दिखाये गये जहां, फासिस्तवाद-विरोधी योद्धाओं ने नन्हें स्टेफान को छुपाया था और जहां हिटलरी दरिन्दे उन पर अमानुषिक अत्याचार किया करते थे। उस शिविर में नवयुवक स्टेफान स्वाइग को वह स्थान भी दिखाया गया, जहां १९ वर्ष पहले, उसकी रक्षा तथा स्वतन्त्रता के लिये शिविर के कैदियों ने हाथों में शस्त्र लेकर फासिस्ट कुत्तों से अन्तिम मोर्चा लिया था.. और जहां अन्त में मानवता ने दानवता पर विजय पाई थी। तभी वह ३ वर्षीय निर्बोध बालक, जवान होकर स्टेफान-येरजी स्वाइग बनने में समर्थ हुआ था।.

—:०:—

बर्लिन, ज. ज. ग. के विश्वप्रसिद्ध प्रकाशकों **सेवन सीज़ पब्लिशर्स** ने श्री ब्रूनो आपित्स का उपन्यास **नेकेड अमंग दि वूल्वस्** अंग्रेजी में प्रकाशित किया है।

भारत में निम्न पुस्तक-विक्रेता तथा प्रकाशक इस उपन्यास के वितरक हैं :

★ पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली

★ नेशनल बुक एजन्सी, १२, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता

★ न्यू सेनचुरी बुक हाउस, १९९, मांउट रोड, मद्रास

—:०:—

इस उपन्यास का **उर्दू अनुवाद**, श्रीमती रज़िया सज्जाद ज़हीर ने किया है जिसका नाम है :

'फूल और समूम'

प्रकाशक : नई रोशनी प्रकाशन, नई दिल्ली। **बंगला अनुवाद** किया है, श्रीमती गीता मुखोपाध्याय ने, **'अमुतेर पुत्र'** नाम से

प्रकाशक : नवअरुण प्रकाशन, कलकत्ता

चिट्ठी पत्री

आदरणीय बन्धुवर,

आप की 'सूचना पत्रिका' जर्मन जनता एवं भारतीयों के आपसी स्नेह, सौहार्द और बन्धुत्व का मंगल-सूत्र है जिसके पवित्र धागे में आबद्ध हो कर हम सत्य विश्वास तथा प्रगति के पथ पर अग्रसित हैं।

मैं अनुगृहीत हूं कि आप के द्वारा अनवरत रूप में इस की प्रतियां आ रही हैं। फरवरी ६४ का अंक मेरे सामने है। मैंने अभी-अभी उसे पढ़कर समाप्त किया है। इस सुरुचिपूर्ण पत्रिका में साहित्यक, सांस्कृतिक एवं अन्य आधुनिक गतिविधियों से सम्बन्धित काफी अच्छी और सारगर्भित सामग्री दी जाती है। 'खण्डहरों के गर्भ से उत्पन्न नया ड्रेसडेन' लेख के अवलोकन से किसी भी कल्पना-शील विचारक या जिज्ञासु का मन ड्रेसडेन के गौरवशाली अतीत से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। 'सुविण्गर' के मृतिका-शिल्प संग्रह के चित्र को देखकर ऐसा लगता है कि ड्रेसडेन अपनी संस्कृति एवं कला सम्बन्धी सम्पदाओं के कारण विश्व का एक महान वैभव शाली केन्द्र रहा है, और आज, आज तो खैर एक पाशविक विभीषिका में पूर्णतः नष्ट हुये इस नगर ने जो पुर्नजन्म लिया है वह संसार के लिये एक उदाहरण है।

माननीय वाल्टर उल्ब्रिख्त का प्रो. एरहार्ड के नाम खत को मानवता नयी सम्भावनाओं एवं उम्मीदों के साथ निहारती है।

तुम परजीवी हो,
तुमने खेतों में नहीं चलाये हल
आंधी पानी में—
यह श्रम मेरा है,
शस्यश्यामला धरा मेरी है।

जर्मन कवि स्वर्गीय गोस्तफ्रीद की 'चुनौती' की उक्त पंक्तियां न केवल जर्मनी के शोषित पीड़ित किसानों की भावनाओं को ही अभिव्यक्त करती हैं वरन् सारे विश्व के असंख्य शोषितों की भावनाओं को भी मुखरित करती हैं।

खैर, इन सभी उपादेय समग्रियों के प्रकाशन के लिये आप हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

शुभ कामनाओं सहित
रामचन्द्र मिश्र 'मधुप'
अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
बी.एस. कालेज, दिनापुर.

प्रिय बन्धुवर

सादर श्री हरि स्मरण।

सर्व प्रथम विलम्ब से मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार करें। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि आपकी 'सूचना पत्रिका' में प्रतिवर्ष अपनी अनूठी कृति होने के कारण चार चांद लग जायें और यह निर्विघ्न उत्तरोत्तर वृद्धि करती रहे।

आपकी अमूल्य पत्रिका विगत कई माहों से मिल रही है। नवीन परिधान पहनाकर आपने इस पत्रिका का कलेवर ही बदल दिया है, यह आपकी अनूठी प्रतिभा का ही परिणाम समझना चाहिये। वैसे इस के द्वारा समस्त सूचनायें प्राप्त तो होती ही हैं, फिर भी 'प्रश्न और उत्तर' स्तम्भ खोलकर आपने अपने पाठकों की सभी मांगों को पूरा कर दिया है।

कविताओं के हिन्दी रूपान्तर होने पर भी उससे उसका रसास्वादन अछूता नहीं रह जाता है एवं उससे भी उसकी वास्तविकता का बोध हो जाता है। एक बार पुन: मेरे इष्ट मित्रों की ओर से शुभकामना स्वीकार करें और भविष्य में भी इसी प्रकार अपनी अमूल्य कृति के साथ-साथ कुछ ज्ञानवृद्धि का मसाला भेजने का अनुग्रह करें।

महन्त प्राणगोपाल आचार्य
बृन्दावन धाम
मथुरा (उ. प्र.)

(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्रिय महोदय,

आपकी पत्रिका हमारे कार्यालय [illegible] नियमित आती हैं और हमारे साथी [illegible] बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसके लिये आप[illegible] मैं धन्यवाद देना चाहता हूं।

पत्रिका के 'सांस्कृतिक पृष्ठ' में [illegible] विशेष रुचि लेता हूं और आपसे सानु[illegible] निवेदन है कि इस स्तम्भ को चालू र[illegible] की कृपा करें तथा 'रस-धारा' के अन्त[illegible] गेटे जैसे विश्वप्रसिद्ध कवियों के काव्य-[illegible] का भी अपने पाठकों को आस्वा[illegible] करायें।

दिसम्बर १९६३ के अंक में '[illegible] धारा' के अन्तर्गत 'फसल गीत' सु[illegible] रचना पढ़ने को मिली, जिसके सम्बंध [illegible] मुझे कुछ निवेदन करना है।

आपने अनुवादक महोदय की अ[illegible] मति से अंग्रेजी शब्द 'मिल' का अनु[illegible] 'पवन-चक्की' के स्थान पर 'पन-चक्[illegible]' कर दिया है। क्योंकि पनचक्की 'भारत[illegible] मानस और चेतना के अधिक समीप है' वस्तुतः पवन-चक्की को भी भारत[illegible] समझा जाता है।

आपके संशोधन पर मुझे दो कार[illegible] से आपत्ति है। पहला, 'पन-चक्की' [illegible] में एक मात्रा कम होने के कार[illegible] कविता-पाठ भंग हो जाता है [illegible] अखरता है। दूसरे, 'गुनगुन' की ध्व[illegible] 'पवन-चक्की' से ही निकलती है '[illegible] चक्की' से नहीं। 'पन-चक्की' की ध्व[illegible] 'घूं घूं' अथवा 'घर्र-घर्र' की होती है।

सम्भवतः आप मेरे विचारों से सह[illegible] न हों। और जब कि अनुवादकार[illegible] 'पम्पोश' ने संशोधन को अपना सम[illegible] दे दिया है तो मेरा यह निवेदन [illegible] धृष्ठता ही है। परन्तु मूल रच[illegible] स्व. रिचार्ड डेमेल के साथ उक्त संशो[illegible] न्याय नहीं करता।

मैं श्री ओम पंडित 'पम्पोश' [illegible] अनुवादों से अत्यंत प्रभावित हूं। कृ[illegible] उन्हें मेरा अभिवादन भेजिये।

धन्यवाद पूर्वक
ओमदत्त शास्त्री
मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

रसधारा

(इस बार हम 'रसधारा' के अन्तर्गत १८ वीं शताब्दी के जर्मन कवि, स्वर्गीय योहान्न गोत्तफ्राइड हेरडर (१७४४-१८०३) की एक कविता के अंग्रेज़ अनुवाद 'लस्ट आफ कांक्वस्ट' का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें कवि ने, सामन्तों तथा राजा महाराजाओं की लोलुपता को —निरसहाय, निर्धन जनता को जिसका साधन बनाया जाता है — निरावरण करके रख दिया है।

—संपादक

लिप्सा

धिक्कार है तुम पर, सामन्तो . . राजकुमारो !
अपनी कीर्ति, यश के लिये तुम
जनता का खूनबहाते हो —
तुम्हारे मान, ऐश्वर्य, सत्ता के लिये
न जाने कितनी आंखें
बहाती हैं आंसू अविरल —
क्यों तुम सन्तुष्ट नहीं ?
क्यो विश्राम नहीं मिलता तुमको,
अपने अनन्त, अथाह वैभव-विलास में
जो तुम मदोन्मत हो कर फिरते हो
जुटाने · · अधिक और, और अधिक।
अनगिनत नेत्रों से बहा खारा जल
एक दिन बनेगा कड़ुवा पेय,
और, आश्रित भाटों का शुष्क प्रशंसागान
बदल जायेगा अभियोगों, अभिपापों में—
मृत्यु के दिन तुम्हारी प्रत्येक श्वास
तुम से गिन गिन कर बदला लेगी
और, मृत्यु के बाद भी
तुम्हारी सन्तानों को चुकाना होगा
तुम्हारे अत्याचारों का ऋण—
अपरिमित लिप्सा का ऋण !

रूपान्तरकार
ओम् पण्डित 'पम्पोश'

भारत में ज.ज.ग. का सद्भावना-मंडल

(पृष्ठ ४ का शेष)

हैं। लेकिन हमें इस बात का बहुत अफसोस है कि इन सुझावों का न केवल जवाब ही नहीं दिया गया, बल्कि जर्मनी का एक भाग (प. जर्मनी— सं.) पहले की तरह आज भी एक अयथार्थवादी, भ्रमपूर्ण और खतरनाक रास्ते पर चल रहा है। कुछ भी हो, जर्मन जनवादी गणतंत्र, जर्मनी में शांति कायम रखने के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को पूरी तरह समझता है इसलिये वह फेडरल (जर्मन) रिपब्लिक से सामान्य संबंध स्थापित करने के अपने प्रयत्नों को जारी रखेगा, और इस प्रकार यूरोप की शांति बनाये रखने में योगदान देगा। . . ."

शिष्टमण्डल की विदाई

२१ फरवरी को ज. ज. ग. का सद्भावना शिष्टमण्डल स्वदेश को विदा हुआ। विदा होने से पहले, श्री ब्रूनो लोइशनर ने पालम हवाई अड्डे पर, निम्न वक्तव्य दिया :

"आपके सुन्दर देश की हमारी यात्रा अब समाप्त हुई। हमारे लिये यहां के अधिकारियों ने जो बहुत अच्छा कार्यक्रम बनाया था उसके कारण हमें आपके राष्ट्र की प्राचीन तथा भव्य संस्कृति में झांकने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस प्राचीनता के साथ ही साथ हमने नवीन भारत के भी दर्शन किये—उस नवीन भारत के दर्शन जिसकी जनता के हाथों इसका ज़बरदस्त विकास हो रहा है। आपके प्रधान मंत्री से भी मिलने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम एक बार फिर उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं।

"आपके देश के उच्चाधिकारियों से एक मैत्रीपूण वातावरण में हम मिले और बात-चीत की। इस बात-चीत में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों और हमारे दो देशों के संबंधों को अधिक विकसित करने की बातों पर सोच-विचार किया गया। हमारी राय में, पिछले दशक में, हमारे देशों के पारस्परिक संबंधों में सम्यक विकास हुआ है। इन संबंधों को और भी विकसित करने की गुंजाइश है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये, हमारे शिष्टमण्डल और भारतीय अधिकारियों की आपसी बात-चीत, एक ठोस आधार प्रस्तुत करती है। इस आधार को तैयार करना ही हमारे शिष्टमण्डल का मुख्य उद्देश्य था।

"स्वदेश लौट कर हम अपने लोगों से टेलिविजन तथा रेडियो और अखबारों के द्वारा अपनी भारतीय-यात्रा का विवरण देंगे। हमारी जनता इस यात्रा में बहुत दिलचस्पी रखती है।

"अन्त में, मैं आपकी भारतीय जनता को, अपना हार्दिक धन्यवाद दूंगा उनके चिर स्मरणीय आतिथ्य के लिये। मैं आपके राष्ट्रीय निर्माण, और स्वतंत्रता को दृढ़ करने तथा विश्व-शांति के आपके प्रयत्नों के प्रति सफलता की कामना करता हूं।"

प्रश्न : **मध्य-प्रदेश,** चिरमीरी के उच्चतर माध्यमिक हाइ स्कूल के पुस्तकाध्यक्ष, **पूरण कुमार दास** पूछते हैं : जर्मन जनवादी गणतन्त्र में कुल कितने पुस्तकालय हैं? उनमें से सबसे बड़ा पुस्तकालय कौन है और उसमें कितनी पुस्तकें हैं?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतंत्र में दो प्रकार के सार्वजनिक पुस्कालय हैं : १. सामान्य सार्वजनिक पुस्तकालय और २. श्रमिक-संघों के पुस्तकालय

सन् १९५६ में पहली कोटि के १०,३४६ पुस्तकालय थे जिनमें कुल ९,४०,०० पुस्तकें थीं। इन आंकड़ों में बाल-पुस्तकालय तथा उनकी पुस्तकें शामिल नहीं हैं। ... सन् १९६२ में इस कोटि के पुस्तकालयों की कुल संख्या बढ़कर १२,२५२ तक पहुंच गई और इनमें कुल १४,४०४,००० पुस्तकें थी।

दूसरी कोटि के पुस्तकालयों की संख्या सन् १९५६ में ५,३६६ थी और इनमें कुल पुस्तकों की संख्या थी ५,०२४,००। ये संख्यायें भी सन् १९६२ में बढ़कर क्रमशः ७,७८१ और ५,७९८,०० तक पहुंच गयीं। सबसे बड़े पुस्तकालय का नाम तथा आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं।

प्रश्न : **होशियारपुर, पंजाब से, श्री जोगिंद्रपाल गुप्त 'गुरू'** पूछते हैं : क्या ज. ज. ग. में हरिजन नाम की तरह का कोई समुदाय भी है? अगर है तो इसके कल्याणार्थ कौन से पग उठाये जाते हैं?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतन्त्र, जैसा कि आप जानते हैं, एक समाजवादी राज्य है। सामान्य शब्दों में इसका अर्थ यह है कि ज. ज. ग. में श्रमिकों का शासन है। समाजवादी समाज-व्यवस्था का सबसे बड़ा और मज़बूत आधार-स्तम्भ है समानता—प्रत्येक क्षेत्र में समानता। इस व्यवस्था में ऊंच-नीच, हरिजन ब्राह्मण, शोषित शोषत आदि जैसे अन्तर एकदम नष्ट होते हैं और श्रम ही सम्मान और आदर की वस्तु बन जाती है। जर्मन जनवादी गणतन्त्र का राज्य भी समाजवाद के इस मूल सिद्धान्त का अपवाद नहीं। यहां भी जातिगत और वर्गगत भेदभाव समाप्त कर दिये गये हैं। यहां भी किसी व्यक्ति के श्रम का शोषण नहीं होता। अन्य समाजवादी राज्यों की तरह, ज. ज. ग. में भी किसी भी प्रकार का शोषण तथा भेदभाव करना कानूनन दण्डनीय है। इसलिये हरिजन तरह के किसी समुदाय का ज. ज. ग. में होना असम्भव है। यहां इस तरह का कोई समुदाय नहीं।

प्रश्न : **भोपालगढ़, राजस्थान से, श्री राजेन्द्र कुमार मेहता** का एक प्रश्न है : ज. ज. ग. में रेलें और मोटर तथा जल-यातायात निजी व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न होता हैं, या इस पर सरकार का स्वामित्व है?

उत्तर : जैसे समाजवाद में ऊंच-नीच का प्रश्न ही नहीं उठता और इस व्यवस्था का मूलाधार जैसे समानता है, इसी प्रकार समाजवादी व्यवस्था में निजी व्यक्तियों के नियंत्रण का (किसी भी क्षेत्र में) सवाल ही पैदा नहीं होता। निजी नियंत्रण पूंजीवादी-व्यवस्था में ही संभव है। समाजवादी देशों में न केवल यातायात ही बल्कि उद्योग धन्धे, कृषि, शिक्षा और बैंक आदि जैसी राष्ट्रीय महत्व की चीज़ें राष्ट्र की सम्पत्ति होती हैं, इसलिये इन पर राज्य का ही नियन्त्रण होता है। निजी हाथों में, अर्थात् पूंजीपतियों के हाथ में राष्ट्र की सम्पत्ति देने का अर्थ होता है शोषण तथा असमानता को जन्म देना। समाजवाद में, चन्द व्यक्ति निरन्तर मुनाफा कमाते रहें और शेष जनता गरीब रहे, इस बात की इजाज़त नहीं दी जाती। जर्मन जनवादी गणतन्त्र भी एक समाजवादीराज्य है, जहां पूंजीवादी शोषण को हमेशा के लिये समाप्त कर दिया गया है। इसलिये वहां यातायात अथवा अन्य राष्ट्रीय महत्व के क्षेत्रों में निजी नियन्त्रण का प्रश्न ही नहीं उठता।

प्रश्न : **कानपुर, उत्तर प्रदेश से, श्री अशोक** का प्रश्न है : क्या ज. ज. ग. में एक साधारण नागरिक राष्ट्र के उच्चतम पद पर आसीन हो सकता है?

उत्तर : इस प्रश्न का सीधा उत्तर है हां। इस हां को प्रमाणित करने के लिये दो एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा।... सन् १९४९ में जर्मनी का विभाजन और जर्मन जनवादी गणतन्त्र का जन्म हुआ। यह नया जर्मन रज्य, जर्मन भूमि पर, इतिहास में प्रथम समाजवादी तथा शान्तिप्रिय राज्य है। जर्मनी का दूसरा राज्य, अर्थात् पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक कहलाता है, जहां पूंजीवादी व्यवस्था का शासन है। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के नये संविधान में राष्ट्रपति का पद सर्वोच्च था और ज. ज. ग. के प्रथम राष्ट्रपति चुने गये श्री विलहेल्म पीक। स्वर्गीय पीक एक ठेठ मज़दूर थे, जर्मनी के एक साधारण नागरिक और वे जर्मन जनता के अत्यन्त लोकप्रिय नेता भी थे। इसी प्रकार, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने भी आज से ७०-७१ वर्ष पहले जर्मनी के एक गरीब मजदूर परिवार में ही जन्म लिया है। ज. ज. ग. में श्री विलहेल्म पीक के देहान्त के बाद राष्ट्रपति का स्थान एक राज्य-परिषद ने लिया, और अध्यक्ष वहां का सर्वोच्च पदाधिकारी है। ... इस संदर्भ में यह स्पष्ट कर देना लाज़िमी है कि ज. ज. ग. में प्रभुसत्ता श्रमिक वर्ग के हाथों में होने के कारण यहां के प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पदों पर सर्वसाधारण नागरिकों का—श्रमिक जनता जिनका एक सब से बड़ा भाग है—आसीन होना एक अपवाद नहीं बल्कि सामान्य बात है।

तथ्य और आंकड़े

सबसे बड़ा

नगर... ......बर्लिन (ज.ज.ग. की राजधानी) १,०६१,२१८ (जनसंख्या)

द्वीप..........र्‍यूगेन............६२६,४ वर्ग किलो-मीटर (क्षेत्रफल)

झील..........म्यूरित्स............११६,८ ,, ,, ,,

बांध तथा जलाशय. ब्लाइलोख. ....२१५ गण मीटर (धारिता)

काउंटी (प्रांत)....पोत्सदाम........ १२,५६५ वर्ग किलो मीटर (क्षेत्रफल)

सबसे लम्बी

नदी.............एल्बे..............१,१६५ कि. मी.

नहर..............ओदर-श्प्री..........८३.७ कि. मी.

सबसे ऊँचा

पर्वत...............फिखेतेलबर्ग. ....१,२१४ मीटर

कस्बा.............प्लाएन.............समुद्र तल से ३६० मीटर ऊँचा

जर्मन जनवादी गणतंत्र का

कुल क्षेत्रफल.....................१०८,२६८ वर्ग किलो-मीटर

कुल जनसंख्या..................१७,१३५,८६७

नर.............................७,७४३,६३६

नारियां.........................९,३९१,९३१

भवन-निर्माण

वर्ष	नये बनाये गये अथवा मरम्मत किये गये रहायशी मकान — कुल	सहकारी संघों द्वारा बनाये गये	भवन-निर्माण पर खर्च की गई कुल रकम (१ मार्क = १.१२ न.पै.)
१९५०	३१.०००	——	२८ करोड़, ६० लाख मार्क
१९०५	३२,८००	३,२००	११२ करोड़, ८० लाख मार्क
१९५८	६३,५००	१४,७००	१६२ करोड़, ७० लाख मार्क
१९६०	८०,५००	४०,६००	१८० करोड़, २० लाख मार्क
१९६२	५०,६००	५०,६००	२०० करोड़, ३० लाख मार्क

लाइपज़िक व्यापार मेलों के कुछ आंकड़े

शरद्कालीन मेले

	प्रदर्शन क्षेत्रफल	प्रदर्शक संख्या	दर्शक संख्या
१९४७	४४,९०० वर्ग मीटर	४,३१९	१४२,१००
१९६२	११४,५०० वर्ग मीटर	६,४५०	१५२,००००

वसन्तकालीन मेले

वर्ष	प्रदर्शनी-क्षेत्रफल	प्रदर्शक-संख्या	दर्शक-संख्या
१९४६	२६,४०० वर्ग मीटर	२,७७१	१७२,४००
१९६३	२९८,७०० वर्ग मीटर	८,३७२	५५३,७००

हर साल, फरवरी की अन्तिम तिथि के बाद, प्रकाशित होने वाले, *सूचना पत्रिका* के स्वामित्व और अन्य बातों के सम्बन्ध में विवरण :

फार्म ४

(देखिए नियम ८)

१. प्रकाशन स्थान	नई दिल्ली
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. मुद्रक का नाम, राष्ट्रीयता और पता	जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार दूतावास १२, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
४. प्रकाशक का नाम	जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार-दूतावास १२, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
५. संपादक का नाम राष्ट्रीयता और पता	क्राफ्ट बुम्बेल; जर्मन; १२, कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली
६. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो इस पत्र के मालिक हैं, या जो इसकी कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हैं	जर्मन जनवादी गणतंत्र का भारत स्थित व्यापार-दूतावास १२. कौटिल्य मार्ग, नई दिल्ली

मैं, क्राफ्ट बुम्बेल, यह घोषित करता हूँ कि मेरी पूरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है ।

तिथि : १-३-६३

क्राफ्ट बुम्बेल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

स मा चा र

प. बर्लिन के अधिकारियों का गलत रवैया

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, पश्चिम बर्लिन सेनेट को, क्रिस्मस के दिनों की बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि जैसे ही कुछ सुझाव दिये थे ईस्टर के धार्मिक त्योहार के दिनों के लिये भी। इन सुझावों को मानने से, प. बर्लिन के निवासियों को जर्मन जनवादी बर्लिन में रहने वाले अपने सगे संबंधियों से, एक बार फिर मिलने का सुख मिलता। लेकिन ज.ज.ग. के इन सुझावों को, प. बर्लिन के अधिकारियों की हठधर्मी ने सफल होने नहीं दिया। इस तथ्य की घोषणा से पहले, ज.ज.ग. की राजधानी में, वहां के प्रतिनिधि राज्य-सचिव एरिख वेनद्त और प. बर्लिन के सेनेट सदस्य, श्री होरस्त कोरबेर के बीच एक मुलाकात हुई थी जिसमें ईस्टर-संधि के बारे में दो घंटों तक बातचीत होती रही यह बातचीत सफल नहीं रही, लेकिन अप्रैल के दूसरे हफ्ते में इसको जारी रखा जायेगा।

ज.ज.ग. के राज्य-सचिव, श्री वेनद्त के मतानुसार, प. बर्लिन सेनेट द्वारा बातचीत को अप्रैलतक टालने का कोई विशेष कारण नहीं था। यह फैसला, ज.ज.ग. की सरकार की मर्जी के खिलाफ था। इसके बावजूद ज.ज.ग. की सरकार किसी भी समय, इस बातचीत को फिर शुरू करने के लिये तैयार है। .. श्री वेनद्त ने, प. बर्लिन के सेनेट कौंसिलर, श्री कोरबेर को एक और सुझाव भी दिया एक मसविदे के रूप में। इस मसविदे के अनुसार पश्चिम बर्लिन के निवासी तात्कालिक-पारिवारिक मामलों के लिये ज.ज.ग. में आ सकते हैं। प. बर्लिन सेनेट ने इस सुझाव का भी अभी तक कोई जवाब नहीं दिया।

श्रीलंका की सरकार धमकियों से विचलित न हुई

श्रीलंका की सरकार पर कई साम्राज्यवादी राज्यों ने, इस बात के लिये बहुत दबाव डाला तथा धमकियां दीं कि वह जर्मन जनवादी गणतंत्र, कोरिया जनवादी लोकतंत्र (उत्तरी कोरिया) और वियतनाम जनवादी गणतंत्र (उत्तरी वियतनाम) के साथ, कोंसलेट-जनरल के स्तर पर संबंध न जोड़े। श्रीलंका की सरकार इन धमकियों से विचलित न हुई श्रीलंका के इस रवैये को यहां के एक सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'फारवर्ड' ने "सराहनीय तथा उत्साहवर्द्धक" कहा है। इस प्रसंग में अखबार ने आगे लिखा है: "इस देश के जनवादी आन्दोलन ने समाजवादी देशों के साथ पूरे तथा सामान्य राजनयिक संबंध जोड़ने की मांग का हमेशा सर्थन किया है। जहां तक ज.ज.ग. का सवाल है, इसके साथ व्यापार मिशन से आगे कोंसली संबंध स्थापित करने में दो साल लगे। "यहां की जनवादी शक्तियों के दृढ़ प्रयास, उक्त कोंसलेट-जनरल को पूर्ण राजनयिक मान्यता अर्थात् दूतावास के पद तक कम से कम समय में ले जा सकते हैं। ..."

विदेशी विद्यार्थियों की संख्या दुगुनी हुई

पिछले पांच वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वविद्यालयों, कालेजों तथा तकनीकी संस्थानों में अध्ययन करने वाले विदेशी विद्यार्थियों की संख्या दुगुनी से भी अधिक हुई। इस समय ज.ज.ग. में, विदेश के १८ देशों की छात्र-छात्रायें अध्ययन कर रहे हैं। इस संख्या के लगभग ६० प्रतिशत विद्यार्थी अफ्रीका, मध्य-पूर्व, दक्षिण पूर्वी एशिया तथा लातीनी अमरीका के देशों के हैं। ये आंकड़े, हाल ही में, ज.ज.ग. के उच्चतर शिक्षा सचिवालय ने प्रकाशित किये हैं। केवल सन् १९६३ में ही, विभिन्न देशों के छात्रों के ३००० प्रार्थना-पत्र ज.ज.ग. के विभिन्न कालेजों तथा तकनीकी संस्थानों प्राप्त हुए दाखिले के लिये।

सन् १९५७-५८ से ज.ज.ग. के शि संस्थानों ने अधिक से अधिक विदेशी छा को दाखिला दिया है। इसके फलस्वरू विभिन्न देशों के ५०० से अधिक वि लाइपजिक के कार्लमार्क्स-विश्वविद्या ड्रेस्डेन के तकनीकी विश्वविद्यालय फ्राइबर्ग की खदान अकादमी से शिक्षा ट्रेनिंग प्राप्त करके अपने देशों को लौटे जहां वे इंजीनियरों, डाक्टरों तथा तक शियनों के रूप में अपने देश निर्माण में सहयोग दे रहे हैं। इनके अ लगभग १५० विद्यार्थी, उक्त संस्थानों डाक्टर (पी. एच. डी.) की उपाधि ले निकले हैं। आज तक, ज.ज.ग. के वि शिक्षा-संस्थानों से, भारत वर्ष के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने पी. एच. डी. उपाधि प्राप्त की है।

विदेशी छात्रों को ज.ज.ग. मे प्रकार की सहाता तथा सुविधा दी जाती इन सुविधाओं में अच्छे वज़ीफे, डाक्टरी इलाज, सस्ता खाना पीना रहना आदि शामिल है।

एक सुप्रसिद्ध पश्चिमी जर्मनी के का मत

२५ फरवरी को, पश्चिमी जर्मनी बुन्दस्ताग (संसद) के उपा तथा यहां की 'फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी' नेता, डा. टामस डेलर ने अपने एक व में कहा कि पश्चिमी जर्मनी सरकार को, जर्मन जनवादी गणतंत्र प्रतिनिधियों के साथ, संपर्क स्थापित के सिद्धान्त का विरोध नहीं करना चा जैसा कि उसने (प. जर्मनी सरकार बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि के बाद किया इस उदार रजनीतिज्ञ ने यह मत भी किया कि प. बर्लिन निवासियों का संबंधियों से मिलने के लिये जर्मन ज गणतंत्र में प्रवेश करने से बातची आधार वही 'बर्लिन-पत्र संधि' हो है जिस पर ज.ज.ग. की सकार पश्चिम बर्लिन सेनेट के प्रतिनिधि दस्तखत किये दिसम्बर, सन् १९६

४२७ प. जर्मन शरणार्थी

इस मास के प्रथम और दूसरे सप्ताह में पश्चिमी जर्मनी में रहने वाले ४२७ व्यक्ति वहां से भाग निकले और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। इनमें ५० प्रतिशत ऐसे व्यक्ति हैं जो कुछ समय पहले ज.ज.ग. छोड़कर प. जर्मनी में आबाद होने के लिये गये थे। इनमें १२३ कुशल मज़दूर भी शामिल हैं।

ज ज.ग. में आने पर इन शरणार्थियों को दो हफ्तों के लिये विशेष स्वागत शिविरों में रखा जाता है। इस अवधि में उनके लिये रहने के लिये मकान और नौकरी की व्यवस्था की जाती है। .. जनवरी, १९६१ से अबतक पश्चिमी जर्मनी से २५,००० हज़ार व्यक्ति भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में आये हैं।

कम्बोदिया, ज.ज.ग. का संयुक्त वक्तव्य

कम्बोदिया की राजधानी नौम पेन्ह में स्थित यहां के राजमहल में २ जनवरी १९६४ के दिन एक संयुक्त वक्तव्य और सांस्कृतिक संधि पर दस्तखत किये गये। इसके लिये, हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक प्रतिनिधि-मण्डल कम्बोदिया आया था। कम्बोदिया सरकार के प्रतिनिधियों से मैत्रीपूर्ण वातावरण में बातचीत होने के बाद, उक्त वक्तव्य तथा संधि पर दस्तखत हुये। ज.ज.ग. की ओर से वहां के उप-प्रधान मंत्री, श्री ब्रूनो लोइशनर ने, और कम्बोदिया की ओर से वहां के उप-प्रधान मंत्री लेफटनेण्ट जनरल, लोन नोल ने दस्तावेज़ों पर दस्तखत किये। दस्तखत करने की रस्म पूरी होने के बाद, दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने यह भावना व्यक्त की कि उन देशों के परस्पर रिश्ते तथा दोस्ती इनसे और दृढ़ हो जायेगी।

श्री लोइशनर के नेतृत्व में कम्बोदिया गया हुआ उक्त प्रतिनिधिमण्डल दक्षिण-पूर्वी एशिया के विभिन्न देशों का दौरा करता हुआ अब वर्मा पहुच गया है। वर्मा से यह मण्डल भारत आयेगा।

लाइपज़िक पुस्तक प्रदर्शनी

इस वर्ष के वसन्तकालीन लइपज़िक व्यापार मेले में, जो १० मार्च को समाप्त हो गया एक पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गयी है। इसमें १७ देशों के सुप्रसिद्ध प्रकाशन-घरों ने, लगभग ४०,००० पुस्तकें प्रदर्शित की। जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रकाशकों ने, इस प्रदर्शनी में, अपने प्रकाशन व्यवसाय के प्रत्येक पहलू को भली भांति प्रदर्शित किया। लाइपज़िक के वसन्तकालीन मेलों में चूंकि तकनीकी तथा औद्योगिक उत्पादनों का ही प्रदर्शन होता है, इसलिये उक्त पुस्तक प्रदर्शनी में भी तकनीकी विषयों से संबंधित पुस्तकों का ही प्रदर्शन हुआ।

पर्यटकों के लिये नई सुविधायें

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपने पर्यटन-व्यवसाय को अधिक लोकप्रिय बनाने तथा सुव्यवस्थित करने के लिये एक नया कार्यक्रम तैयार किया है। १ मार्च, सन् १९६४ से समाजवादी देशों से इतर अन्य देशों के–विशेष कर पश्चिमी देशों के पर्यटक भी, किसी भी देश की मुद्रा में ज.ज.ग. का पर्यटन करने के लिये, या तो यात्रा-एजन्सियों के द्वारा अथवा सीधे ज.ज.ग. की राजधानी में उन एजन्सियों के मैनेजरों द्वारा स्थान आदि बुक कर सकते हैं।

ज.ज.ग. की मुख्य यात्रा-एजेन्सी, सीमा पार करने के द्वारों पर अपने स्वागत-केन्द्र तथा दफ्तर खोलेगी। बर्लिन के शोइनफेल्द नामक हवाई अड्डे पर भी एक स्वागत-केन्द्र खोला जायेगा। इन केन्द्रों तथा दफ्तरों में पर्यटकों को विज़ा आदि दिये जायेंगे।

२ स्वर्ण और २ चांदी के पदक जीते

हाल ही में, आस्ट्रिया के इन्नसब्रक नामक स्थान पर शीतकालीन ओलम्पिक खेलों की प्रतियोगिता में जर्मन जनवादी गणतंत्र के खिलाड़ियों ने, सोने तथा चांदी के दो-दो पदक जीत लिये। यह सम्मान पाकर जब ज.ज.ग. के खिलाड़ी वापस बर्लिन लौटे तो बर्लिन वासियों ने उनका भव्य स्वागत किया। उसी दिन शाम को, ज.ज.ग. की मंत्रि-परिषद ने, उनके सम्मान में एक स्वागत-समारोह का आयोजन भी किया।

उक्त प्रतियोगिता में दो जर्मन राज्यों के एक ही संयुक्त टीम ने हिस्सा लिया था और सोने के ३, चांदी के ३ तथा कांसे के ३ पदक प्राप्त कर लिये थे। ज.ज.ग. के खिलाड़ियों ने, इन पदकों में से, २ सोने के और २ चांदी के पदक जीत लिये थे।

पदक जीतने वाले विजेता खिलाड़ी

प. जर्मनी के ११ सैनिक भाग निकले

१५ जनवरी, १६६४ के दिन से फरवरी के प्रथम सप्ताह तक, पश्चिमी जर्मनी नाटो सेना के ११ सैनिकों ने भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। इन सैनिक शरणार्थियों में, पश्चिम बर्लिन का वोल्फगांग नागेल भी है जो नीनबर्ग (प. जर्मनी) में स्थित बखतरबन्द गाड़ियों के बटालियन में भरती हुआ था।

भारत यात्रा के बाद पादरी स्वदेश लौटे

जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो प्रमुख पादरी, हाल ही में, भारत की यात्रा करके अपने देश वापस आये। स्वदेश लौटने पर उन्होंने कहा कि उनकी इस भारतीय यात्रा से, ज.ज.ग. और भारत के प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की मित्रता सुदृढ़ हो गई है।

पादरी ब्रूनो शोत्ज़ताहद्त, जर्मन जनवादी गणतंत्र के इंवाजली चर्च के गोजनर समुदाय के प्रमुख हैं, और श्री कार्ल ओर्दनुंग, अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई शांति कानफ्रेन्स के क्षेत्रीय सचिव हैं। इसाई धर्म के ये दोनों पादरी भारत के छोटा-नागपुर तथा असम के इंवांजली गिरजे और दक्षिण एशिया के निमंत्रण पर, कई हफतों की भारत-यात्रा पर आये थे। इन गिरजों के नेताओं से अपनी बातचीत के दौरान, ज ज.ग. के उक्त पादरियों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में धार्मिक जीवन और ईसाई शांति कान्फ्रेन्स की गतिविधि से उनको परिचित कराया।

ज.ज.ग. की क्रिश्चियन डेमोक्राटिक पार्टी के मुख-पत्र में अपने दो पृष्ठों के एक लेख में, उक्त पादरियों ने अपनी भारतीय यात्रा का विवरण प्रस्तुय किया था, और भारत में प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की समस्याओं पर प्रकाश डाला था। इस लेख में उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि उनके मेज़बानों ने ज.ज.ग. में धार्मिक-जीवन से संबंधित कुछ निराधार बातें भी सुनी थीं। लेकिन ईसाई धर्म के प्रति हमारी भक्ति और बातचीत ने इस झूठे प्रचार की कलई खोल दी।

भारतीय मंडप में विदेश मंत्री पधारे

३ मार्च को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री, डा. लोतार बोल्स, लाईपज़िक व्यापार मेले में भारतीय प्रदर्शनी मण्डप देखने आये। मण्डप में प्रदर्शित वस्तुओं को देखकर, मंत्री महोदय काफी प्रभावित हुए।

भारत पिछले दस वर्षों से लाईपज़िक के व्यापार मेलों में भाग ले रहा है, और इस वर्ष यहां, अपनी पारंपरिक निर्यात वस्तुओं के अतिरिक्त उसने अपनी औद्योगिक वस्तुएं जैसे, विद्युत-मोटर, रिफ्रिजरेटर और विद्युत-बैटरियां आदि भी प्रदर्शनी के लिये रखी हैं। - - - भारतीय मण्डप के अधिकारियों से बातचीत करते हुए डा. बोल्स बोले: 'न केवल राजनीति में ही, बल्कि बढ़ते हुए आर्थिक संबंधों में भी भारत का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। —'

लाईपज़िक में हिन्देशिया तथा ज.ज.ग. की पहली करार

इस वर्ष के लाईपज़िक वसंतकालीन व्यापार मेले में (जो पहली मार्च से शुरू हुआ) जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश-व्यापार संस्थाओं और अन्य देशों के व्यापारियों तथा फर्मों के बीच व्यापार करारों पर दस्तखत होने शुरू हुए। इस सिलसिले में इन्डोनीशिया के व्यापारियों के साथ हुआ वह पहला समझौता विशेष उल्लेखनीय है जिसके अनुसार ज.ज ग. उनको ६५,००० मार्क की रकम के एम्पूल। निर्यात करेगा।

'६४ की करार...

(पृष्ठ ६ का शेष)

बनी हुई वस्तुओं का भी आयात करेगा। पटसन के उत्पादनों, कच्चे लोहे, अमरक तथा अन्य खदान उत्पादनों के निर्यात में भारत वृद्धि करेगा। पारंपरिक निर्यात वस्तुएं जैसे चाय, काफी, तम्बाकू, एरंड की खली आदि भी भारत यथावत निर्यात करेगा ज.ज.ग. को।

जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का सवाल है वह, बदले में भारत को मशीनी औज़ार, पूंजीगत सामग्री, भारी वि[illegible] उपकरण, मुद्रण यन्त्र और अन्य ऐसी मशीनें निर्यात करेगा। इन वस्तुओं [illegible] अतिरिक्त भारत, ज.ज.ग. से कई प्र[illegible] के उर्वरक—जैसे पोटाश म्यूरियेट, अमोनि[illegible] सल्फेट आदि भारी मिकदार में आ[illegible] करेगा।...भारत, ज.ज.ग. से, सिनेमा[illegible] एक्स-रे की कच्ची फिलम, शैक्षिक तथा [illegible] संस्थानों में काम आने वाले सूक्ष्म यंत्र, [illegible] अकार्बनिक रसायन भी आयात करेगा।

चिट्ठी-पत्री

मान्यवर,

आपकी 'सूचना पत्रिका' अध्ययन [illegible] का आज पहला अवसर प्राप्त हुआ। [illegible] लगा है कि व्यक्ति के नाते विकास की [illegible] का स्रोत आपकी सूचना पत्रिका के विच[illegible] में निहित है। मैं तो यह मानूंगा कि आ[illegible] इस छोटी सी पत्रिका में "गागर में 'सा[illegible] उतार दिया है। आपकी पत्रिका से [illegible] जर्मन जनवादी गणतंत्र के बारे में [illegible] जानकारी मिली है। अतः यह [illegible] पत्रिका हमारे पुस्तकालय में पाठकों [illegible] बहुत ही पसन्द की जा रही है। आ[illegible] बड़ी कृपा हो यदि आप सूचना पत्रिका [illegible] सूची में इस पुस्तकालय का नाम नामां[illegible] कर नियमित रूप से इसको हमें भिजवाने[illegible] व्यवस्था कर दें।

सुरेन्द्र कुमार [illegible]
धौलपुर (राजस्था[illegible]

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित 'सूचना पत्रिका' [illegible] अंक नियमित रूप से देखता हूं। इस प[illegible] में प्रकाशित होने वाले लेख आदि अ[illegible] आकर्षक एवं उपयोगी और उच्च कोटि [illegible] होते हैं। सूचना पत्रिका को पढ़ने [illegible] ज.ज.ग. का बड़ा सुहावना चित्र आंखों [illegible] सामने उपस्थित होता है। 'सू[illegible] पत्रिका' एक-दूसरे के स्नेह को भा[illegible] बढ़ाने में सहायक होती है। आपने [illegible] पत्रिका को बनाने में बहुत प्रयास किया [illegible] नवम्बर ६३ के अंक में भारत और ज.ज[illegible] का बढ़ता हुआ व्यापार आंकड़ों को दे[illegible] पता चलता है कि भारत और ज.ज.ग. [illegible] देशों में व्यापार काफी बढ़ा हुआ है। [illegible] और जर्मन जनवादी गणतंत्र मैत्री के प्र[illegible] लोकप्रिय 'सूचना पत्रिका' हमें और [illegible] मित्रों को पसंद है। धन्यवाद।

हाफचन्द को[illegible]
चुरू (राजस्था[illegible]

जनवरी के दूसरे सप्ताह में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री, मार्लीन दीत्रिच, अपने पर्यटन के दौरान, ज.ज.ग. की राजधानी बर्लिन में रुकीं कुछ देर के लिये। चित्र में वह ज.ज.ग. के कुछ प्रसिद्ध अभिनेताओं के साथ बातचीत करती दिखाई दे रही हैं

सचित्र समाचार

पिछले महीने, भारत की राजधानी में 'पूर्व-पश्चिम संगीत सम्मेलन' के समारोह में, ज.ज.ग. के प्रतिनिधि संगीतकार, प्रोफेसर एर्नस्त हर्मन्न मेयर ने एक सारगर्भित भाषण दिया

सन् १९६४ के, वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले में (जो १ मार्च से १० मार्च तक लगा था) स्वचालित बुनाई मशीन नं० ४४०५ भी प्रदर्शित हुई थी। यह उसी मशीन का चित्र है। इसको, ब्रिटेन की हैट्टरस्ले एण्ड सन्ज़ की सहायता से और भी विकसित किया जायेगा ↓
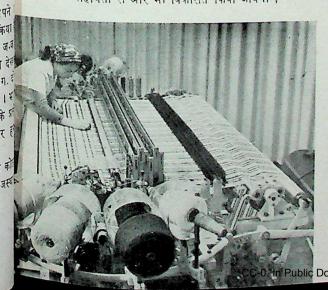
स्कूली बच्चों की स्की-छलांग चैम्पियनशिप के बाल-विजेता १३ वर्षीय हरबर्ट श्राम्म। इसने ११.५ मीटर लम्बी स्की-छलांग लगाई →

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

४

वर्ष ६
अप्रैल
१९६४

वर्ष ९
अंक ४ | २० अप्रैल, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : ड्रेस्डेन नगर के बीच में बनाया गया हाथी नगर के शिशुओं की एक प्रिय वस्तु

अंतिम पृष्ठ : माइज़ेन का विश्वप्रसिद्ध घण्टा, १३ फरवरी, सन् १९४५ में तबाह हुआ अब पुनः अपने पूर्व रूप की गरिमा में किया गया है ज. ज. ग. में

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेसकटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेंस

दक्षिण पूर्वी एशिया की सफल यात्रा

गत मास में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र का एक सरकारी प्रतिनिधि मण्डल, वहां के उपप्रधान मन्त्री, श्री ब्रूनो लोइशनर के नेतृत्व में दक्षिण-पूर्व के देशों की सद्भावना यात्रा पर गया था। इन्डोनेशिया, कम्बोदिया, बर्मा, श्रीलंका और भारत की लगभग एक महीने की यात्रा के बाद यह सद्भावना-मण्डल फरवरी के चौथे हफ्ते में स्वदेश लौटा।... १३ मार्च को श्री लोइशनर ने, एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस-कानफ्रेंस में पत्रकारों और संवाद-दाताओं से इस महा-यात्रा के बारे में अपने विचारों तथा अनुभवों पर बातचीत करते हुए कहा : "आज की महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर समान दृष्टिकोण, राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को बढ़ाने और जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता तथा उन देशों की जनता के आपसी रिश्तों को सुदृढ़ और विकसित करने के लिए, योग्य आधार प्रस्तुत करता है जिन देशों की यात्रा पर हम गये थे।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपप्रधान मन्त्री, दक्षिण-पूर्वी एशिया के दौरे में इन देशों के राज्य-प्रमुखों और वहां की सरकारों के मन्त्रियों तथा उच्चाधिकारियों से मिले। उन्होंने राजनीतिक महत्व की इन मुलाकातों का उल्लेख करते हुए कहा : "जर्मन समस्या पर अपनी नीति को स्पष्ट करने के बाद. इन देशों में, जर्मन स्थिति से सम्बन्धित हमारी धारणा को काफी सहानुभूति मिली। ये सभी देश, जिनकी हमने यात्रा की, जर्मनी की वर्तमान हकीकत को जानते और मानते हैं—अर्थात् वे जर्मन भूमि पर दो राज्यों के अस्तित्व से परिचित हैं। वे इस बात पर भी यकीन रखते हैं कि जर्मन समस्या का कोई शान्तिपूर्ण हल ढूंढना और दोनों जर्मन राज्यों को आपसी बात-चीतके मार्ग पर बढ़ाना बहुत आवश्यक है।..."

श्री लोइशनर ने, ज० ज० ग० और श्रीलंका के बीच कोंसिली सम्बन्ध स्थापित होने की भी चर्चा की। श्रीलंका में, ज० ज० ग० के कोंसलेट-जनरल की स्थापना से पहले वहां एक व्यापार-मिशन ही था। इस समाचार ने (पश्चिमी जर्मनी के) बोन सरकार में जो खलबली तथा बौखलाहट पैदा की उसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा : "बोन सरकार की धमकियों के बावजूद, श्रीलंका की सरकार हमारे साथ किये हुए समझौतों पर दृढ़ रही। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि ये देश अपने मामलों में बाहरी हस्तक्षेप नहीं चाहते और वे अपने हितों के अनुसार फैसले लेते हैं।..." श्री ब्रूनो लोइशनर आगे बोले : "हम श्रीलंका के इस रवैये का आदर तथा स्वागत करते हैं। हम पश्चिम जर्मन सरकार की, श्रीलंका को धमकाने की नीति को एक स्वतन्त्र तथा प्रभुसत्तात्मक राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप समझते हैं और इसकी कड़ी निन्दा करते हैं।..."

श्री लोइशनर ने इस बात पर काफी सन्तोष और प्रसन्नता व्यक्त की कि दक्षिण पूर्वी एशिया के जिन देशों की उन्होंने यात्रा की, उन देशों में आर्थिक विकास के लिए अच्छी योजनायें तैयार की गई हैं और उन पर वहां काम हो रहा है। उन्होंने कहा : "आने वाले वर्षों में इन देशों के साथ अपने आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्धों को हम काफी हद तक विकसित करना चाहते हैं।..."

इन देशों के साम्राज्य-विरोधी संघर्षों और यत्नों का उल्लेख करते हुए श्री ब्रूनो लोइशनर ने पत्रकारों से कहा : "दक्षिण पूर्वी एशिया के उक्त देशों की यात्रा के बाद हम यह दृढ़ धारणा लेकर लौटे हैं कि ये देश, अपने साम्राज्यवाद-विरोधी मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ रहे हैं. और वे उपनिवेशवादी पिछड़ेपन को आर्थिक निर्माण के द्वारा दूर करने का जबरदस्त यत्न कर रहे हैं। इन देशों में हमें जो स्नेह, सौहार्द्र तथा आतिथ्य मिला हम वह कभी नहीं भूल सकेंगे। वहां की प्राकृतिक परम्परा की झांकियों से हम अभिभूत हुए और वे हमारी स्मृति की अमूल्य निधि बन चुकी हैं। .. मैं यहां एक बार फिर इस बात की घोषणा करता हूं कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र इन देशों की जनता के साथ है। हमें इस बात का विश्वास है कि इन देशों की जनता भी, जर्मनी के प्रथम शान्तिप्रिय राज्य... अर्थात् ज० ज० ग० की शुभचिन्तक तथा मित्र है।"

इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस-कानफ्रेन्स में, श्री ब्रूनो लोइशनर, श्री वोलफगांग किज़वेत्तर (ज० ज० ग० के उप विदेश-मन्त्री) और

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेंस में, ज० ज० ग० के उप प्रधान मन्त्री श्री ब्रूनो लोइशनर

श्री फ्रित्स कोख (ज० ज० ग० के उप विदेश-व्यापार मन्त्री से भी) दो जर्मन राज्यों तथा अन्य देशों के पत्रकारों ने अनेक प्रश्न पूछे। पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध अखबार 'देर श्पीगल' के प्रतिनिधि के एक सवाल का जवाब देते हुए, श्री लोइशनर ने, इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के उस दृष्टिकोण का उल्लेख किया जो उन्होंने बेलग्राद में हुए तटस्थ देशों के सम्मेलन में अपनाया था। राष्ट्रपति सुकर्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि जर्मन समस्या को आजकल की ठोस हकीकत के आधार पर, पश्चिम बर्लिन को एक तटस्थ, स्वतन्त्र नगर में तबदील करके और बातचीत द्वारा शान्तिपूर्ण ढंग से हल करना चाहिए।

एक भारतीय पत्रकार के प्रश्न का उत्तर देते हुए ब्रूनो लोइशनर ने कहा कि उन्होंने भारत के प्रधान मन्त्री, श्री नेहरू और भारतीय सरकार के कई मन्त्रियों तथा उच्चाधिकारियों से मुलाकातें कीं। श्री लोइशनर, इस सन्दर्भ में बोले : "इन में से एक भी भारतीय महानुभाव ने दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व को अस्वीकार नहीं किया।..."

प्रेस कानफ्रेंस में, ज० ज० ग० के उप विदेश-व्यापार मन्त्री, श्री वोल्फगांग कीज़ेवेत्तर भी उपस्थित थे। उन्होंने भी पत्रकारों के कई प्रश्नों के उत्तर दिये। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, श्री कीज़ेवेत्तर ने कहा कि श्रीलंका में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के कोंसलेट-जनरल की स्थापना सामान्य राजनयिक सम्बन्धों की ओर एक सही कदम है। इसी सन्दर्भ में उन्होंने यह भी कहा कि कम्बोदिया की राजधानी नोमपेन्ह में, हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी के प्रतिनिधित्व की स्थापना हुई। इससे पहले ही, ज० ज० ग० का कोंसलेट-जनरल वहां स्थापित हो चुका है। इस तरह श्रीलंका के अलावा कम्बोदिया में भी अब दोनों जर्मन राज्यों का समान प्रतिनिधित्व हो रहा है। दुनिया के सभी देशों के साथ सामान्य राजनयिक सम्बन्धों की कामना करते हुए, श्री कीज़ेवेत्तर बोले "हमारा सुझाव है कि पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक इसी प्रकार सामान्य सम्बन्ध स्थापित करे। लेकिन इन देशों के साथ हमारे सम्बन्धों के मामले में हम किसी का भी हस्तक्षेप नहीं चाहते।

(शेष १८ पृष्ठ पर)

ब्रिटेन के उच्च न्यायालय का फैसला

६ मार्च के दिन, ब्रिटेन के उच्च-न्यायालय ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के येना प्रान्त में स्थित ज़ाइस्स फैक्टरी के हक में फैसला सुनाया। येना की इस विश्वप्रसिद्ध कार्ल जाइस्स नामक कारखाने और पश्चिमी जर्मनी में इसी नाम (ज़ाइस्स) की एक छद्म-नामधारी कम्पनी में मुकदमा चल रहा था। उच्च न्यायालय ने अपने फैसले में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि येना-स्थित वेब कार्ल जाइस्स (कारखाना) ही विश्वप्रसिद्ध जर्मन-फर्म कार्ल जाइस्स फाउंडेशन का सही और वैध उत्तराधिकारी **है**।

मुकदमे की भूमिका इस प्रकार है : लगभग १० वर्ष पहले, ब्रिटेन का विदेश-व्यापार मंत्रालय, उक्त फर्म (ज़ाइस्स) के ट्रेड मार्क अधिकार, पश्चिमी जर्मनी की इसी नाम की फर्म के हाथों में सौंपना चाहता था। इस पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने आपत्ति की, क्योंकि विश्व-प्रसिद्ध कार्ल ज़ाइस्स फैक्टरी का मौलिक तथा परंपरागत आवास हमेशा येना प्रान्त ही रहा है। इस प्रकार यह मुकदमा शुरू हुआ।

ब्रिटेन के उच्च न्यायालय ने इस मुकदमे में इस अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा मुख्य सवाल की छानबीन की कि क्या मुकदमे में, ज.ज.ग. का येना प्रान्त, स्थानीय प्राधिकारी के रूप, में कार्ल ज़ाइस्स फाउंडेशन का सही और वैध प्रतिनिधि है, और क्या "वेब कार्ल ज़ाइस्स, येना" नामक फैक्टरी का निदेशक, डा. श्रादे, इसका सही तथा वैध प्रतिनिधि है?

काफी कानूनी सोच-विचार के बाद ब्रिटिश उच्च-न्यायालय इस नतीजे पर पहुंचा कि येना और डा. श्रादे दोनों वैध प्रतिनिधि हैं। इस न्यायालय का यह महत्वपूर्ण फैसला, पश्चिमी जर्मनी के ऐसे ही अन्य मुकदमे के फैसले से सर्वथा और बुनियादी तौर से भिन्न है। पश्चिमी जर्मनी की अदालत ने यह अजीब सा फैसला दिया था कि "कार्ल ज़ाइस्स फाउंडेशन" अब खत्म हो चुकी है, और ज.ज.ग. की ज़ाइस्स फैक्टरी का अस्तित्व ही नहीं है। प. जर्मनी के इस गलत फैसले का एक हास्यास्पद पहलू यह भी है कि इस मुकदमे में ज.ज.ग. की येना स्थित "वेब कार्ल जाइस्स" फैक्टरी के प्रतिनिधि को प. जर्मनी की अदालत ने बोलने की इजाज़त ही नहीं दी। इस रवैये के विपरीत, ब्रिटेन के उच्च न्यायालय ने ज.ज.ग. के प्रतिनिधि डा. श्रादे की गवाही को ध्यान से सुना, और जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा पेश किये गये कार्ल ज़ाइस्स फैक्टरी से संबंधित कानूनी दस्तावेजों को पूरे तौर से वैध मान लिया।

ब्रिटेन के उच्च न्यायालय के इस फैसले पर टिप्पणी करते हुये यहां के सुप्रसिद्ध अखबार 'गार्जियन' ने ७ मार्च, १९६४ के दिन लिखा कि ऐसा लगता है कि श्रीमान् न्यायाधीश ने जर्मन जनवादी गणतंत्र को प्रथम वैध मान्यता प्रदान की है। अन्त में 'गार्जियन' ने लिखा है : 'यह फैसला, पूर्वी जर्मनी (जर्मन जनवादी गणतंत्र——सं.) की उस लड़ाई की पहली विजय है जो वह दुनिया की विभिन्न अदालतों में लड़ रहा है।...'
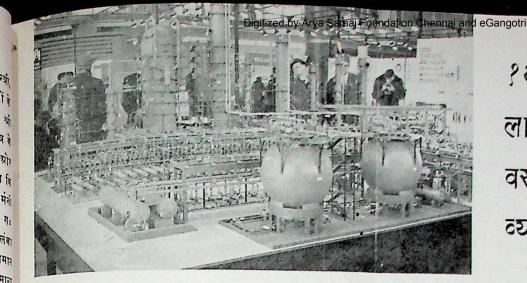
कच्चे तेल को साफ़ करने का एक कारखाना

१९६४ का लाइपज़िक वसन्तकालीन व्यापार मेला

—एक विवरण

सन् १९६४ के वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले ने संसार के व्यापारिक क्षेत्रों में एक बार फिर धूम मचाई और अपनी धाक जमा दी। इस मेले की भव्य सफलता ने फिर एक बार इस तथ्य को सिद्ध किया कि भिन्न समाज-व्यवस्था वाले देशों में आर्थिक सहयोग और सामान्य व्यापारिक सम्बन्ध, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति को मजबूत बनाने में बहुत सहायता देते हैं। यह वसन्तकालीन व्यापार मेला, लाइपजिक (ज. ज. ग.) में १ मार्च को प्रारम्भ होकर १० मार्च को समाप्त हुआ।

एक दिन मेले में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का अपने मंत्रि वर्ग के साथ पधारना एक उल्लेखनीय घटना है। वह ज. ज. ग. की सर्वप्रमुख राजनीतिक पार्टी 'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी के प्रथम सचिव भी हैं। इस पार्टी के पोलिट ब्यूरो के सदस्य तथा उम्मीदवार सदस्य भी उनके साथ मेला देखने के लिये आये। मेले में अपनी वस्तुएँ लेकर आये हुये प्रदर्शकों और दर्शकों के साथ बातचीत में श्री उल्ब्रिख्त ने इस बात पर बल दिया कि लाइपजिक व्यापार मेला, पूर्व-पश्चिम व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र है, और ज.ज ग का विकसित उद्योग इन मेलों की सफलता का एक अंग है। ज. ज. ग. के साथ व्यापार करने वाले देश, इसकी व्यापार-नीति के सिद्धान्तों की बहुत सराहना करते हैं।

वसन्तकालीन लाइपज़िक व्यापार मेले के दौरान, समाजवादी और गैर-समाजवादी देशों के १८ सरकारी और कई व्यापारिक प्रतिनिधि-मण्डल लाइपजिक में ठहरे हुये थे। समाजवादी देशों की 'पारस्परिक आर्थिक सहयोग परिषद्' ने, विशेषज्ञों पर आधारित एक प्रतिनिधि-मंडल यहां भेजा था। विभिन्न देशों के व्यापार के इन प्रतिनिधियों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, विदेश व्यापार और उद्योग के प्रतिनिधियों से मित्रता के खुशगवार वातावरण में व्यापार को बढ़ाने के सिलसिले में बातचीत की। मेले के दिनों में ही यहां जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, चेकोस्लोवाकिया समाजवादी गणराज्य और बलगारिया जनवादी गणराज्य के साथ वार्षिक व्यापार-करारों पर दस्तखत किये।

लाइपज़िक का प्रत्येक व्यापार मेला विश्व व्यापार का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र है। इस बात का प्रमाण वे कई व्यापारिक समझौते हैं जो समाजवादी तथा गैर-समाजवादी देशों की अनेक विदेश व्यापार फर्मों और संस्थाओं ने एक दूसरे के साथ किये। इसके अलावा समाजवादी देशों ने अन्य देशों की नई आयात संस्थाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित किये और पुराने सम्पर्कों को और भी दृढ़ किया। ज. ज. ग. ने जब अन्य देशों से पूरे और तैयार कारखाने आयात करने की इच्छा प्रकट की, तो तुरन्त कई पश्चिमी यूरोपीय तथा समाजवादी देशों ने ऐसे कारखाने सप्लाई करने की पेशकश की। दो एक देशों के साथ इस सिलसिले में अनुबंधों पर दस्तखत भी हुये।

लाइपजिक के उक्त वसन्तकालीन मेले में तकनीकी तथा उपभोक्ता सामान का प्रदर्शन हुआ था जो ६० शाखाओं में विभाजित किया गया था। तकनीकी स्तर तथा गुणों की दृष्टि से ये वस्तुएँ

ज. ज. ग. के वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया एक एक्स-रे टेलिविजन यन्त्र

काफी अच्छी थीं, इसलिये इनके क्रय विक्रय में कोई बाधा नहीं आयी। तकनीकी तथा वैज्ञानिक दृष्टि से जो सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ थीं उनको स्वर्ण पदकों तथा डिप्लोमा से पुरस्कृत किया गया।

जहां तक जर्मन जनवादी गणतंत्र की विदेश-व्यापार संस्थाओं का सम्बन्ध है उन्होंने भी बहुत अच्छा व्यापार किया मेले में। समाजवादी और गैर-समाजवादी देशों को इन संस्थाओं ने भारी परिमाण में सामान बेचा। इन बेची गई वस्तुओं में उत्पादनों की काफी मांग रही उनकी ओर से।

सन् १९६४ के इस वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले के प्रदर्शन मण्डपों ने ३,५००,००० वर्गफुट क्षेत्रफल घेर लिया था। इसमें ६४ देशों के ८,५३२ प्रदर्शक भाग ले रहे थे। इसके अलावा, ९१ देशों से दर्शक यह मेला देखने आये थे। इनमें से समाजवादी देशों से २३,६००, पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन और अन्य गैर समाजवादी देशों से ४०,००० और मेजबां

ज. ज. ग. की राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष श्री गेराल्ड गोइट्टिंग विश्व प्रसिद्ध कार्ल ज़ाइस कंपनी के मण्डप में एक नया संयंत्र देख रहे हैं

विशेष उल्लेखनीय हैं: मशीनी औज़ार, वाहक सामग्री, टेक्सटाइल मशीनें, बिजली तथा विद्युतिकी के उपकरण, तकनीकी एवं प्रकाशीय सूक्ष्म यंत्र, दफ्तरी मशीनें, कच्ची फिल्म तथा तत्संबंधी अन्य वस्तुएँ, वस्त्र और कांच तथा सेरामिक के उत्पादन आदि।

ज. ज. ग. ने मेले में दुनिया के ८१ देशों के खरीदारों के साथ निर्यात और आयात सम्बन्धी समझौते किये। कई देश विशिष्ट वस्तुओं को बनाने की उत्पादन-लाइसेनसें प्राप्त करने के इच्छुक थे। पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के व्यापारी तथा फर्में व्यापारिक-सम्बन्धों को बढ़ाने में बहुत सक्रिय रहीं। ज. ज. ग. की वस्तुओं—विशेषकर मशीनी औज़ार, दफ्तरी-मशीनें और हल्के उद्योग के

देश——अर्थात जर्मन जनवादी गणतंत्र से ५२५,००० दर्शक आये थे। इन दर्शकों में अनेक इंजीनियर, विशेषज्ञ तथा तकनीशियन भी थे जो औद्योगिक और उपभोक्ता वस्तुओं की अन्तर्राष्ट्रीय योग्यता तथा स्तर देखने के लिये मेले में आये थे। मेले के दौरान 'चैम्बर आफ टैकनालोजी' द्वारा आयोजित तीन गोष्ठियों, १०० से अधिक विशेष बैठकों और व्याख्यानों में ३००० विशेषज्ञों ने भाग लिया।

कुल मिलाकर, बिना किसी संकोच के यह बात कही जा सकती है कि सन् १९६४

यह "त्राबान्त ६०१" मोटर प्रदर्शनी में, लोकप्रि आकर्षण की वस्तु थी

का उक्त लाइपजिक वसन्तकालीन मेला अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को विस्तृत करने और उसके द्वारा भिन्न समाज-व्यवस्थाओं वाले विभिन्न देशों में दोस्ताना संबंध मज़बूत करने में, काफी सफल रहा। इसके अलावा अनुभवों तथा विचारों का आदान प्रदान भी हुआ जो सभी देशों के लिये हितकर है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये, बाधा रहित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, एक अनिवार्य आवश्यकता है।
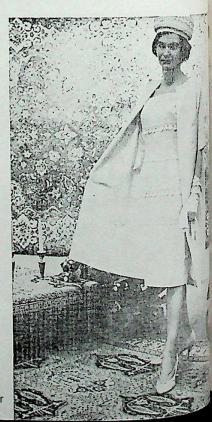
मेले के 'फैशन-शो' में दिखाई गई एक वेश-भूषा। यह वेश एक संश्लिष्ट वस्त्र से बनाया गया है

बारहवीं कृषि प्रदर्शनी

जैसा कि आप जानते ही हैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र का लाइपज़िक नामक नगर व्यापारिक मेलों और प्रदर्शनियों के लिये विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुका है। इसी नगर से जुड़ा हुआ एक अन्य स्थान है जिसका नाम है मार्क्कलीबर्ग। इस स्थान पर, पिछले १२ वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की एक कृषि प्रदर्शनी आयोजित होती है १४० हेकटर (१ हेकटर = २.५ एकड़) भूमि पर फैले हुये ८२ मंडपों में।

मार्क्कलीबर्ग की यह कृषि प्रदर्शनी "खुले आकाश के नीचे एक विश्वविद्यालय" के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है। इस 'विश्वविद्यालय' के अन्तर्गत २० हैकटर भूमि का प्रदर्शन-क्षेत्र, ४२ हैकटरों पर फैले हुये सुन्दर पार्क, २२ हैकटर भूमि पर फैले हुये जंगल, एक फर-पशु फार्म, और एक तीतर-चकोर शाला है। यदि कोई दर्शक सम्पूर्ण कृषि प्रदर्शनी को देखना चाहे तो ऐसा करने के लिये उसको १७.५ किलोमीटर का फासला तय करना पड़ेगा। गुलाबों तथा विभिन्न अन्य पुष्पों से सुसज्जित बाग, और साथ में जुड़े हुये रेस्तरां यात्रियों तथा दर्शकों की थकान मिटा कर उनके लिये खूब मनोरंजन प्रस्तुत करते हैं।

आज तक मार्क्कलीबर्ग में ११ बार कृषि-प्रदर्शनी हो चुकी है, और हर बार, इस प्रदर्शनी ने दुनिया भर के देशों से कृषि विशेषज्ञों को खासतौर से आकर्षित किया है। मार्क्कलीबर्ग की यह कृषि प्रदर्शनी मध्य तथा पश्चिमी यूरोप के देशों में, अपनी तरह की सब से बड़ी कृषि-प्रदर्शनी है। यहां से प्राप्त ज्ञान और अनुभव को, समाजवादी कृषि विकास के लिये, पर्याप्त सफलता के साथ इस्तेमाल किया गया है। आज तक यूरोप, एशिया, अफ्रीका तथा अमरीका के ८० देशों के ९० लाख दर्शकों विशेषज्ञों आदि ने इस प्रदर्शनी को देखा है। अतिथि-रजिस्टर में लिखी गयी अनेक सम्मतियां इस बात का प्रमाण हैं कि ज.ज.ग. की यह कृषि-प्रदर्शनी सार्वभौमिक कृषि समस्याओं की दृष्टि से उन देशों के लिये भी काफी महत्व रखती है। ये समस्यायें हैं: भूमि की उर्वरता को बढ़ाना, पशुधन का विकास, कम व्यय पर आधुनिक कृषि तकनीकों का इस्तेमाल, कृषि में रासायनिकों का उपयोग, श्रम उत्पादकता को बढ़ाना और मूल लागत को घटाना इत्यादि। प्रदर्शनी में आने वाले दर्शक तथा विशेषज्ञ, कृषि उत्पादन सहकारी समितियों सरकारी सामुदायिक फार्मों, और मशीन तथा ट्रैक्टर केन्द्रों के मण्डपों के माध्यम से देखते हैं कि ज.ज.ग. में इन समस्याओं को किस तरह हल किया जा रहा है।

इस वर्ष, मार्क्कलीबर्ग में, ७ जून से ५ जुलाई तक, ज.ज.ग. की १२वीं कृषि प्रदर्शनी की तैयारियां हो रही हैं। इसमें यहां के सहकारी किसानों, कृषि-श्रमिकों, ट्रैक्टर-चालकों और कृषि-विशेषज्ञों के समाजवादी निर्माण से संबंधित नवार्जित ज्ञान एवं अनुभवों का प्रदर्शन होगा। इस खुले 'विश्वविद्यालय' में दर्शक देख सकेंगे कि ज.ज.ग., कृषि में किस प्रकार औद्योगिक उत्पादन विधि का उपयोग कर रहा है। इसके अलावा इसमें यह भी दिखाया जायेगा कि ज.ज.ग. के किसान किस प्रकार यहां के लोगों को अधिक अच्छे खाद्य-पदार्थ, और उद्योग को अधिक कच्चा माल उपलब्ध कर सकते हैं।

यह १२वीं कृषि प्रदर्शनी, इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है कि इस बार इसमें अन्य समाजवादी देश भी भाग लेंगे, और अपने नवीनतम कृषि ज्ञान और

कृषि प्रदर्शनी में हमेशा ज० ज० ग० के नवीनतम कृषि-यंत्र प्रदर्शित किये जाते हैं। ऐसे ही एक यंत्र का यह चित्र है
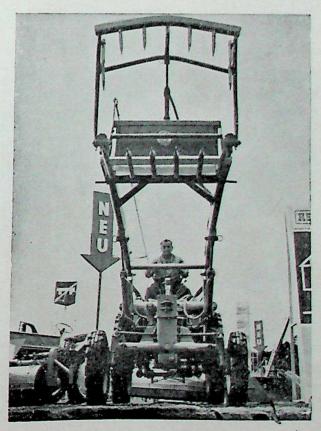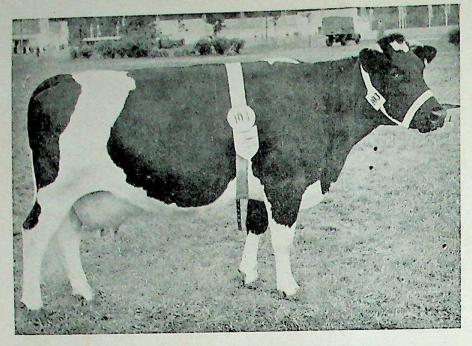
अच्छा लालन पालन स्वस्थ पशुधन को बढ़ाता है

अनुभवों का इसमें प्रदर्शन करेंगे। इस प्रकार यह प्रदर्शनी अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की है। इसके अतिरिक्त, अफ्रो-एशिया के नवोदित राज्य भी, हर साल, मार्क्कलीबर्ग की कृषि प्रदर्शनी देखने आते हैं जहां वे समाजवादी देशों की कृषि की नवीनतम प्रगति का परिचय प्राप्त करते हैं।

२ हैक्टर भूमि, जुताई और चारे की काश्त के लिये रखी गयी है। इसके द्वारा काश्तकारी की नयी विधियां, नये फसलों की बोवाई, और कृषिकर्म के नये तकनीकी यंत्रों का प्रयोग दिखाया जायेगा।

इस वर्ष के कृषि-प्रदर्शन क्षेत्र में, बारवान्डे के 'प्रशिक्षण तथा प्रयोग संस्थान' की ८०० हैकटर भूमि भी जोड़ दी गई है, जो कृषि प्रदर्शनी के प्रदर्शनक्षेत्र के बगल में स्थित है। यहां टेकनालोजी संबंधी कुछ विशिष्ट प्रयोग दिखाये जायेंगे। ५ हैकटर भूमि पर फैले हुये मशीन पार्क में, ज.ज.ग. और कृषि-प्रदर्शनी में भाग लेने वाले अन्य देशों के १२०० ट्रैक्टर तथा बड़े-बड़े कृषि यन्त्र रखे जायेंगे। इन यंत्रों का यहां क्रय-विक्रय करने का भी पूरा प्रबन्ध होगा।... ज.ज.ग. के अनुभवी सहकारी किसान, प्रदर्शनी के गाइड होंगे। ८ हैकटर भूमि पर फैले हुये ४० अस्तबलों में पशु-पालन विभाग होगा। बहुत अच्छे नस्ल के पशुओं का अलग से प्रदर्शन होगा, और पशु-पालक इस विषय में, अपने अनुभवों का विनिमय करेंगे।

विश्व के अनेक देशों में सुविख्यात और बहुचर्चित 'हाइदी' नामक कांच की गाय, मार्क्कलीबर्ग में आने वाले दर्शकों का विशेष आकर्षण केन्द्र रही है। यहां इस बात का स्मरण दिलाना अनुचित न होगा कि भारत की राजधानी दिल्ली, में स… १९५९-६० में आयोजित "विश्व कृ… मेला" में भी यह 'गाय' जर्मन जनवादी गणतंत्र के मण्डप में हजारों लोगों… आकर्षण तथा प्रशंसा की वस्तु रही।.. ब्रएनलोस नामक सहकारी खेत के सुप्रसि… कुक्कट-पालक, एक बार फिर अपने सफ… अनुभवों का प्रदर्शन करेंगे कृषि प्रदर्शनी में…

उपर्युक्त कृषि-प्रदर्शनी केवल कृ… संबंधी ज्ञान तथा नये अनुभवों का… भण्डार-घर नहीं, वरन् यह श्रमिक जन… की नवोदित संस्कृति का भी दर्पण है… प्रदर्शनी के दौरान यहां रंगमंच खड़े कि… जाते हैं और सहकारी किसानों और मजदू… के विभिन्न नाटक, संगीत और लोक-नृ… दल उन पर अपनी कला का अभिनय त… प्रदर्शन करते हैं। चित्रकार, फोटोग्राफर औ… अन्य कलाकार भी अपनी कला के नमू… प्रस्तुत करते हैं विशिष्ट प्रदर्शनियों में।

नाना आकार प्रकार तथा रंगों वा… पुष्पों से भरे हुये और इन्द्र धनुषी रंगों… फव्वारों से सुसज्जित दर्जनों सुन्दर बा… लोगों का पूरा-पूरा मनोरंजन करने के लि… प्रतीक्षा कर रहे हैं।.. खेलकूद की… प्रतियोगितायें भी मनोरंजन का अ… साधन हैं।...

३ दिन की आयु वाले शूकर और उनकी मां
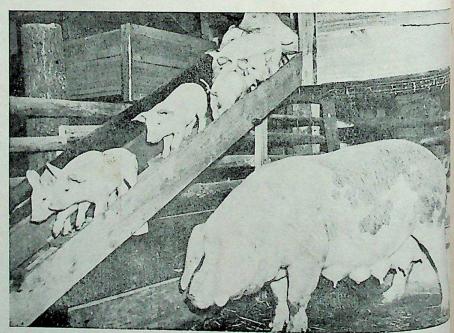
जर्मन जनवादी गणतंत्र में संगीत

प्रोफेसर एर्नस्त हर्मन्न मेयर

राज्य के नाते, हमारा राज्य एक कम उमर वाला राज्य ही कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, जर्मन भूमि पर, हमारे दूसरे राज्य, अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना सन् १९४९ में ही हुई है। लेकिन १५ वर्षों से भी कम अवधि में हमारी जनता ने, अपने इस नवजात राज्य को एक सबल और औद्योगिक राज्य बना दिया है। ज. ज. ग. की सर्वतोमुखी प्रगति का एक अभिन्न अंग है इसका अपूर्व सांस्कृतिक विकास।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक जीवन में अन्य कलाओं की तरह संगीत का भी महत्वपूर्ण स्थान है। एक ओर जहां, संगीत का सार्वभौमिक गुण यह है कि यह श्रोताओं का मनोरंजन करता है, और लोगों की मानसिक तथा शारीरिक थकान को दूर करता है, वहीं दूसरी ओर, संगीत का उदात्त उद्देश्य यह भी है कि वह श्रोताओं की भावनाओं को गहरा और परिष्कृत करता है, उनकी मनोवृत्ति को स्वच्छ बना देता है, और इस प्रकार उनको जीवन के प्रति सहृदय तथा उदार बना देता है।...यही कारण है कि ज. ज. ग. की समाजवादी सरकार, अन्य कलाओं की तरह इस ललित कला—संगीत—को हर प्रकार की सहायता प्रदान करती है।

अ. संगीत-कला की रूपरेखा

(क) *व्यावसायिक संगीत :* १ करोड़ और ७५ लाख जनसंख्या वाले हमारे राज्य में ९० से अधिक वाद्य-वृन्द हैं। प्रत्येक वाद्य-वृन्द में ४० से लेकर १०० तक सदस्य हैं। इनमें से अधिकांश, ज. ज. ग. के बड़े-बड़े कसबों तथा नगरों में ही स्थित हैं और कई रंगशालाओं के साथ सम्बद्ध हैं। इन वाद्य-वृन्दों में कुछ एक ने, जैसे 'ड्रेस्डेन राज्य वाद्य-वृन्द', 'लाइपजिक गेवोन्दहाउस वाद्य-वृन्द', 'बर्लिन सिम्फनी वाद्य-वृन्द' और बर्लिन रेडियो तथा लाइपजिक रेडियो के वाद्य-वृन्दों ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। इन वाद्य वृन्दों के अतिरिक्त, ज. ज. ग. में, अनेक व्यावसायिक संगीत मंडलियां, चैम्बर संगीत के एनसाम्बल, और वाद्य-वादक (पियानो, वयोलिन, बांसुरी वादक इत्यादि) तथा गायक-दल आदि भी हैं।

व्यावसायिक संगीत में रेडियो का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अपने वाद्य-वृन्द और गायक-दल हैं। रेडियो मुख्य रूप से संगीत रिकार्ड करता और प्रसारण करता है। लेकिन यह समय समय पर संगीत-गोष्ठियों का आयोजन भी करता है—विशेषकर आधुनिक नये संगीत का, रेडियो जिसका एक प्रबल समर्थक और प्रोत्साहक है। हाल ही में टेलिविजन भी संगीत का एक लोकप्रिय माध्यम बन गया है ज. ज. ग. में।

हमारे यहां ४८ आपेरा-भवन (संगीत नाट्य-गृह) हैं। इनमें से बर्लिन के दो, ड्रेस्डेन के दो, लाइपजिक का एक, हाल्ले का एक और वाइमर का एक आपेरा भवन विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं।

संगीत की शिक्षा : जर्मन जनवादी गणतंत्र में चार बड़े संगीत-महाविद्यालय हैं। इनमें से हर एक महाविद्यालय में बच्चों के संगीत शिक्षण-स्कूल भी जुड़े हुए हैं। इन महाविद्यालयों के अतिरिक्त यहां के दो प्रसिद्ध गिरजे—लाइपजिक का सेंट टामस नामक गिरजा (जहां विश्वप्रसिद्ध जर्मन संगीताचार्य स्वर्गीय बाख संगीत सिखाते थे) और ड्रेस्डेन का 'क्रूसियानर' नामक गिरजा लड़कों के दो संगीत विद्यालय चलाते हैं।

सभी संगीत स्कूलों तथा महाविद्यालयों में, सामान्य शिक्षा की तरह संगीत शिक्षा भी मुफ्त दी जाती है, (जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्राथमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा निःशुल्क है)। इसके अलावा विद्यार्थियों को वजीफे या विशेष अनुदान आदि भी दिये जाते हैं।...इस प्रोत्साहन का ही यह सद्परिणाम निकला है कि उपर्युक्त

बम्बई में, 'किन्नर कला स्कूल' के हाल में, प्रो. एर्नस्त मेयर एक व्याख्यान दे रहे हैं। वह, नई दिल्ली में आयोजित 'पूर्व-पश्चिम संगीत सम्मेलन' में ज. ज. ग. के प्रतिनिधि थे

संगीत महाविद्यालयों ने, अन्तर्राष्ट्रीत प्रसिद्धि के कई संगीतताचार्य संगीतकार तथा गायक पैदा किये हैं।

(ख) *अव्यावसायिक संगीत :* जर्मन जनवादी गणतंत्र में हजारों लोग - खासकर नौजवान, संगीत-मण्डलियों, नाटक तथा गायक-दलों में गाना-बजाना, अभिनय, वाद्य-वादन आदि सीखते हैं।... कई फैक्टरियों के अपने संगीत तथा गायक दल हैं। 'मावसहूटे' में ज. ज. ग. की एक सबसे बड़ी फाउन्ड्री का प्रसिद्ध अव्यावसायिक गायक-दल इसका उज्ज्वल उदाहरण है।

प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों के लिये संगीत एक अनिवार्य विषय है जर्मन जनवादी गणतंत्र में। इस विषय के अन्तर्गत उनको संगीत का स्वर-ज्ञान, गायन तथा कुछ वाद्य-यंत्रों की शिक्षा दी जाती है। अभी, हफ्ते में संगीत का केवल एक पाठ पढ़ाया जाता है छात्रों को। लेकिन निकट भविष्य में हफ्ते में दो पाठ पढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है।

ज. ज. ग. में संगीत को प्रोत्साहन देने के लिये व्यक्तिगत रूप से संगीताचार्य अथवा कोई वाद्य-वृन्द या संगीतज्ञों का दल किसी फैक्टरी, स्कूल या किसी अन्य संस्थान आदि के इच्छुक व्यक्तियों को अपनी देखरेख में संगीत सिखाते हैं। इन इच्छुक जनों या दलों और संगीताचार्यों अथवा वाद्य-वृन्दों के बीच एक समझौता होता है। जिसके अनुसार कलाकार, संगीत सीखने वाले व्यक्तियों अथवा दलों तथा संस्थानों की संगीत शिक्षा की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं।

(ग) *संगीत शास्त्र :* जर्मन जनवादी गणतन्त्र में संगीत के पाठ्यक्रम में, संगीत-शास्त्र के अध्ययन पर बहुत बल दिया जाता है। संगीत-शास्त्र के अन्तर्गत शिक्षार्थियों को संगीत-सिद्धान्तों का इतिहास, लोक-गीत, संगीत-मनोविज्ञान, समाज-शास्त्र और संगीत जाति विज्ञान पढ़ाया जाता है। संगीत की विभिन्न जातियों के सन्दर्भ में इस बात की ओर संकेत करना आवश्यक है कि बर्लिन विश्वविद्यालय में, भारतीय संगीत का एक अलग विभाग ही है। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों में संगीत-शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन होता है। संगीत तथा संगीत-शास्त्र से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें संगीत के विभिन्न रूपों पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है। हमारे यहां संगीत से सम्बन्धित कई पत्र-पत्रिकायें भी प्रकाशित होती हैं। इनके अतिरिक्त, विश्वप्रसिद्ध संगीताचार्यों, जैसे बाख, हाण्डेल, मोजार्ट आदि की संगीत रचनाओं के पूर्ण संकलन भी ज० ज० ग० में छापे जा रहे हैं।

(न) *संगीत—संगठन तथा प्रशासन :* जर्मन जनवादी गणतन्त्र में लोगों के सांस्कृतिक जीवन को समुन्नत करने के लिए एक अलग मन्त्रालय है—सांस्कृतिक मन्त्रालय। इस मन्त्रालय के आधीन ललित कलाओं से सम्बन्धित कई विभाग हैं। संगीत इनमें एक है। इसके अलावा नगर निगमों और प्रान्तीय क्षेत्रीय बोर्डों के अन्तर्गत भी संगीत के अलग-अलग विभाग काम करते हैं।

हमारे यहां ऐसे कई सुप्रसिद्ध प्रकाशन-गृह हैं जो केवल संगीत सम्बन्धी पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकायें आदि छापते हैं। इसके अलावा यहां एक बहुत बड़ी ग्रामोफोन रिकार्ड कम्पनी भी है जो सँगीत के रिकार्ड बेचती है।

संगीतज्ञों और संगीत शास्त्रियों का संघ : यह एक ऐसा संगठन है, जो अपने सदस्यों को कई प्रकार की सहायता देता है, जैसे संगीत गोष्ठियां आयोजित करना, नयी संगीत रचनाएं उपलब्ध करना आदि। इस 'संघ' में संगीतज्ञों की नयी रचनाओं पर आयोजित गोष्ठियों में परिचर्चा भी होती है।

जर्मन ललित-कला अकादमी : मंजे हुए तथा सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ, निर्वाचन अथवा नियुक्ति द्वारा इस अकादमी के सदस्य बन जाते हैं। ललित कला अकादमी सांस्कृतिक मन्त्रालय और अन्य संस्थानों को संगीत तथा अन्य कलाओं से सम्बन्धित प्रश्नों पर परामर्श देती है।

वेर्दी के 'ला त्राविआता' नामक गीति-नाट्य का एक दृश्य

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के बड़े-बड़े संगठन जैसे, 'स्वतन्त्र जर्मन नौजवान', 'जनवादी महिला संघ' और ट्रेड यूनियन आदि भी, संगीत गोष्ठियों तथा इससे सम्बन्धित कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग देते हैं और इस प्रकार संगीत को लोकप्रिय बनाने में इन संगठनों का महत्वपूर्ण योगदान है।

संगीत समारोह और त्योहार : प्रसिद्ध जर्मन संगीतकारों और संगीताचार्यों जैसे बाख, शूमन्न, बीतोव्न, शूबर्त, वागनर हाण्डेल आदि के नाम पर वार्षिक संगीत महोत्सव और त्योहारों का आयोजन होता है। 'नयी प्रतिभायें' नामक संगीत समारोह भी हर साल मनाया जाता है। पुरस्कार दिये जाते हैं और संगीत प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। उच्च कोटि के संगीतकार 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किये जाते हैं।

आ. संगीतकारों और नये-संगीत की समस्याएँ

(क) परंपरा और नवीन प्रक्रिया : जहां तक जर्मन संगीत की प्राचीन परंपराओं तथा अर्वाचीन प्रक्रियाओं की समस्याओं का सम्बन्ध है, भारतीय संगीतकारों को उनमें और अपनी ऐसी ही समस्याओं में पर्याप्त साम्य नजर आयेगा। एक ओर जहां हमें जर्मन संगीत की भव्य परम्परा को सुरक्षित रखना है. वहीं दूसरी ओर हमें उसको सर्व-साधारण जनता तक पहुंचाना भी है। पहले, जर्मन जनता के एक बहुत सीमित वर्ग को ही जर्मन संगीताचार्यों और उस्तादों की रचनाएं सुनने-समझने की सुविधाएं प्राप्त थीं। लेकिन हमारे समाजवादी राज्य में अब ये सुविधाएं समस्त जनता को उपलब्ध की गई हैं। संगीत की यह भव्य परम्परा, जो बाख, हाण्डेल, हेड्न, मोज़ार्ट, बीतोव्न, वेब्बर, शूबर्ट, शूमन्न, वागनर तथा दूसरे अन्य संगीताचार्यों के साथ सम्बद्ध है, आधुनिक जर्मन संगीत की दृढ़ नींव है। इस महान और दृढ़ आधार के बिना हमारा आधुनिक संगीत निर्जीव होगा, वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसलिये इस परम्परा की सुरक्षा करते हुये, इसको जनता की विरासत बनाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, और इसके आधार पर हमें नवीन संगीत की संरचना करनी है।

नया संगीत : हमारे उस्तादों ने संगीत की जिन ऊंचाइयों को छुआ, केवल उनका गुणगान करने से ही आज हम अपने संगीत को आगे नहीं बढ़ा सकते। अपने संगीत की प्राचीन परम्परा को सुरक्षित रखते हुये, आज हमें ऐसे नये संगीत की रचना करनी है जिसमें जन-मानस की आधुनिक भावनाओं और आशाओं आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति मिले। इसलिये हमारे सामने, प्राचीन और अर्वाचीन को समन्वित करने के उपायों को खोजना, एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस प्रश्न का महत्व तब और भी बढ़ जाता है जब हमारे सामने यह तथ्य आ जाता है कि पश्चिमी संगीत में परम्परा को खत्म करके उसके स्थान पर सस्ते और भौंडे किस्म के संगीत को प्रश्रय देने की प्रवृत्तियां मौजूद हैं। ज. ज. ग. में इन हानिकारक प्रवृत्तियों को समाप्त करने के प्रयत्न हो रहे हैं।

(ख) सन् १९४५ के बाद : सन् १९४५ तक न केवल जर्मन संगीत की परम्परा और नवीनता के बीच ही एक व्यवधान था, वरन् संगीतकार और श्रोता भी एक दूसरे से बहुत दूर थे। सन् ४५ के ५०, ६० वर्ष पूर्व, यहां के संगीतकार संगीतप्रिय जनता से दूर से दूरतर होते जा रहे थे। इसका प्रमुख कारण यह था कि जनता को गंभीर संगीत सुनने समझने की आवश्यक सुविधायें प्रदान नहीं की जाती थी। इसके विपरीत साधारण जनता को 'आसान मार्ग' पर हांका जाता था—अर्थात् जनता को सस्ते संगीत के मनोरंजन से बहलाया जाता था। ओपेरा-भवनों, कहवा-खानों तथा सिनेमाओं में और रेडियो, टेलिविजन एवं ग्रामोफोन रिकार्डों के द्वारा—अर्थात् प्रत्येक माध्यम के द्वारा जनता तक सस्ते प्रकार का संगीत ही पहुँचाया जाता था। इस प्रकार युद्ध तथा स्वस्थ संगीत और श्रोतागण के बीच एक बहुत बड़ी खाई वजूद में आई। इस खाई को पाटना आसान काम नहीं है।

पिछले १५ वर्षों से जर्मन जनवादी गणतंत्र में, उक्त खाई को पाटने का निरन्तर प्रयत्न किया जा रहा है। लोगों में प्राचीन संगीत की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। लेकिन जहां तक नये संगीत का प्रश्न है, इसमें हमें अभी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हम इन कठिनाइयों को हल करने के उपाय कर रहे हैं। एक ओर हम संगीतकारों को, संगीत सभाओं तथा गोष्ठियों में श्रोताओं के सामने लाते हैं, जहां वे संगीत के विविध विषयों पर व्याख्यान आदि देते हैं। दूसरी ओर ज.ज.ग. की सरकार जनता को संगीत की शिक्षा के सभी साधन उपलब्ध कर रही है। इस प्रकार के प्रयत्नों से, कठिनाइयों के बावजूद ज. ज. ग. के कई संगीतकार नये, जीवन्त और मधुर संगीत की रचना करने में सफल हुये हैं।

सामूहिक गान गाते हुए ड्रेस्डेन का एक बाल गायक-दल

बालटिक सागर-तट स्थित रोस्टोक कांउटी

डब्ल्यू. मेंगे

जब हम रोस्टोक काउंटी (प्रान्त) के औद्योगिक विकास की बात करते हैं तो समझ लेना चाहिये कि हम पोत-निर्माण की बात कर रहे हैं । इस काउंटी के रोस्टोक, स्ट्रालजुण्ड, वार्नेमुइनदे, विज़मार और वोलाज्त नामक स्थानों के जहाज़-निर्माण कारखानों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल जहाज़ों की संख्या का ४/५ भाग निर्माण होता है। उद्योग की यह (पोत-निर्माण) शाखा, ज.ज.ग. के धातुउद्योग में ६२ प्रतिशत वृद्धि की ज़िम्मेदार है।

जहाज-साज़ी के हमारे कारखाने कम आयु के तो हैं लेकिन आधुनिक टेकनालोजी से पूरी तरह सुसज्जित हैं। इन कारखानों में वारनाउ का पोत-निर्माण कारखाना सब से बड़ा है, और यूरोप के सब से बड़े और अत्याधुनिक पोत-निर्माण कारखानों में इसकी गिनती होती है। इस कारखाने में १०,००० टन और इस से भी अधिक क्षमता वाले माल-वाहक जहाज़ तैयार किये जाते हैं । इस प्रकार के, 'लाइपजिक', 'ड्रेस्डेन' आदि नाम वाले माल-वाहक जहाज़ इसी पोत-निर्माण कारखाने में बनाये गये हैं ।

विज़मार में स्थित 'मातियाज तेज़न' नामक पोत-निर्माण कारखाना, जो सन् १९४५ के बाद तामीर किया गया है, छुट्टियों में सैलानियों के काम आने वाले विशिष्ट प्रकार के छोटे जहाज़ निर्माण करता है । अन्य देश, जिन्होंने इनको खरीद लिया है, इन विशिष्ट जहाजों से काफी सन्तुष्ट हैं। विज़मार, पोटाश निर्यात का एक बहुत बड़ा केन्द्र है । इसलिये इस बन्दरगाह में, यूरोप के सब से बड़े पोटाश-गोदाम बनाये गये हैं।

स्ट्रालजुण्ड के पोत-निर्माण कारखाने, मछली-पकड़ने वाले और उष्ण कटिबंधीय जलवायु के लिये उपयुक्त जालपोत जैसे विशिष्ट जहाज़ बनाने का काम करते हैं। निर्यात क्षेत्र में, इस प्रकार के जहाज बहुत महत्व रखते हैं।...इसी प्रकार, वोलगास्त के जहाज़ साज़ी के कारखानों में तटीयपोतों का निर्माण होता है तटवर्ती व्यापार के लिये। . . . रोस्टोक के 'नेपचून' नामक यार्ड में अनुसन्धान-पोत और कम धारिता वाले जहाज़ बनाये जाते हैं।

रोस्टोक का पुनर्निमित बाज़ार-चौक

पोत परिवहन सेवा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सर्व प्रमुख नौ परिवहन एजेन्सी का नाम है 'डुइत्शे जीरोंदेराइ' । इसके पास इस समय, १०० माल-वाहक पोत हैं जिनकी भारवाहन क्षमता ६०१,५५३ टन है । इस एजेंसी ने अपनी सेवा सन् १९०३ में शुरू की थी केवल एक पोत से। ... इसके १०० पोतों में ६० पोत केवल पिछले ५ वर्षों में बनाये गये हैं ज.ज.ग. में।

रोस्टोक की बन्दरगाह १ मई, सन् १९६० के दिन खोली गई। इस विश्व-प्रसिद्ध बन्दरगाह का निर्माण केवल ३० महीनों में हुआ। आजकल दुनिया के सभी देशों के बड़े-बड़े जहाज़ इस बन्दरगाह में लंगर डालते हैं। अन्य देशों को, हर साल यहां से १० लाख टन तेल भेजा जाता है टैंकरों के द्वारा। . . . सन् १९५५ में ज.ज.ग. की बन्दरगाहों में २३ लाख टन माल उतारा चढ़ाया गया। इसके बाद इन बन्दरगाहों में सन् १९६१ में ५३ लाख टन और सन् १९६२ में ६८ लाख टन माल उतारा चढ़ाया गया ।

रोस्टोक ज़िले में, जहाज़-साज़ी से संबंधित अन्य उद्योग भी हैं, जैसे रोस्टोक शहर में डीज़ल मोटर फैक्टरी, बार्त में लोहे

ग्राइफ्सवाल्द का टाउनहाल

ढलाई फक्टर और रिबनित्वज़ में प्लास्टिक फैक्टरी आदि ।

अन्य उद्योग

ज. ज. ग. की रोस्टोक काउंटी का दूसरा महत्वपूर्ण उद्योग है मछली पकड़ना । यहां के मछवा-बेड़े ने सन् १९५५ में ६२,२०० टन मछली पकड़ी और सन् १९६१ में यह परिमाण बढ़कर १२२,९०० टन तक पहुंच गया । मत्स्य साधन उद्योग भी यहीं केन्द्रित हुआ है । इस ज़िले का खाद्य-उद्योग, मछली उद्योग का ही एक प्रधान अंग है ।

यहां का एक अन्य उद्योग है चाक (खड़िया) उद्योग, जिसका केन्द्र रुइगेन द्वीप है । सर्वसाधारण के इस्तेमाल के अलावा, चाक का बहुत उपयोग, निर्माण तथा रासायन उद्योगों में होता है । यह एक महत्वपूर्ण निर्यात वस्तु भी है ।

गृह-निर्माण उद्योग में भी यहाँ, पिछले कुछ वर्षों में, काफी विकास हुआ । सन् १९५६ से १९६१ तक इसमें ६३ प्रतिशत की वृद्धि हुई । इस अवधि में यहां २२,५६३ नये फ्लैट बनाये गये । सन् १९६२ में, ज.ज.ग. के कुल गृह-निर्माण में रोस्टोक काउंटी का ६.१ प्रतिशत भाग का योगदान था ।

कृषि

कृषि उत्पादन की दृष्टि से रोस्टोक प्रान्त बहुत समृद्ध है । यहां के प्रमुख फसल हैं आलू, जई तथा राई । विशेष उपजाऊ ज़मीन में गेहूं और चुकन्दर भी बोया जाता है ।

पशु-पालन को भी काफी विकसित किया जा रहा है । समुद्र तटवर्ती चरागाहें विशेषकर पशु-पालन में बहुत योग दे रही है । कृषि के लिये अनिवार्य मशीनों की आवश्यकता, बार्त और गूटत्स्कोउ में स्थित कृषि-मशीन निर्माण के कारखाने पूरे करते हैं । पशु-संक्रामक रोगों का एक सुप्रसिद्ध अनुसन्धान केन्द्र रीम्ज़ द्वीप में काम कर रहा है ।

प्रशिक्षण और मनोरंजन

ज. ज. ग. के सात विश्वविद्यालयों में से दो विश्वविद्यालय, रोस्टोक प्रान्त में हैं । नगर में स्थित रोस्टोक विश्वविद्यालय की स्थापना सन् १४१९ में हुई थी, और सन् १९६२ में इसमें ३,९२१ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे । . . . रोस्टोक काउंटी का दूसरा विश्वविद्यालय ग्राइफ्सवाल्ड में स्थित है । यह ५०० वर्ष पुराना है । सन् १९६२ में यहां २,८७६ विद्यार्थी पढ़ते थे । इस विश्वविद्यालय ने कई प्रकाण्ड विद्वान और विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक पैदा किये हैं, जैसे बिलरोत तथा साउरबुख (शल्य विशेषज्ञ), लोएफलर (आरोग्य शास्त्री), और इतिहासकार एरनस्त मोरित्स आर्न्दृत— जिनके नाम पर इस विश्वविद्यालय का नामकरण किया गया है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता के मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद के अनेक स्थान और साधन भी रोस्टोक प्रान्त उपलब्द करता है । छुट्टियां मनाने वाले हज़ारों यात्रियों को यहां के रमणीय स्थान आकर्षित करते हैं, हर साल । सन् १९६३ में, रोस्टोक काउंटी के विभिन्न मनोहर स्थानों में, २५ लाख यात्रियों ने अपनी छुट्टियों का आनन्द लूटा । ज.ज ग. का शायद ही कोई ऐसा नागरिक होगा, जिसने कभी न कभी इस बालटिक समुद्र तटवर्ती प्रान्त के मनोरम स्थानों को न देखा हो ।

ज़ासनित्ज़ की बन्दरगाह का एक दृश्य ।
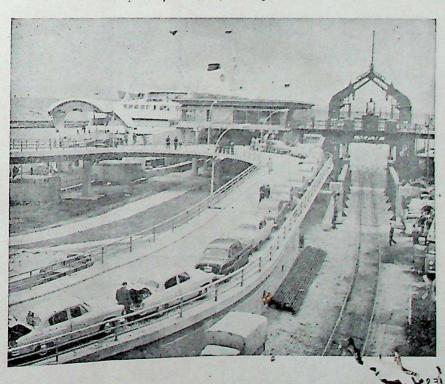
"कार्बाइड और सोरेल"
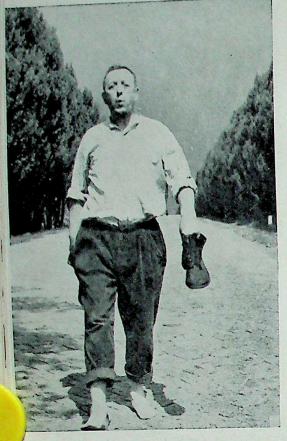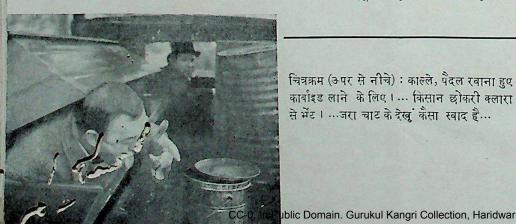
बहुत कम अच्छी सुखान्त फिल्में दुनिया में आजकल बनाई जाती हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र भी इसमें अपवाद नहीं। यहां की सर्वप्रमुख फिल्म कम्पनी 'डेफा' ने पिछले चन्द वर्षों में कई सुखान्त फिल्में बनायीं लेकिन उनमें से बहुत कम सफल हुई। हाल ही में 'डेफा' सही रूप में एक सुखान्त फिल्म बनाने में सफल हुई है। इस फिल्म का नाम है "कार्बाइड और सोरेल"।

पट्ट-कथा लेखकों—हांस ओलिवा और फ्रांक बेयर ने फिल्म की कहानी के लिये एक ऐसा कठिन युग चुना है, लोगों की चेतना में जो सदा के लिये बस चुका है। वह समय है दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद के आरंभिक दिन, जब भूख, खण्डहरों, और अकथनीय पीड़ाओं की कोख से जीवन के कोमल अंकुर फिर एक बार फूटने लगे थे। आज १८ वर्षों के कठिन पुनर्निर्माण के व्यवधान ने यातना के उस युग से हमें भले ही दूर कर दिया हो, लेकिन दुखद स्मृति अनायास ही आज भी कभी-कभी लौट ही आती है। उस बीते युग को—विशेषकर उस युग के हास्यास्पद पहलुओं और विकृतियों को भी—आज व्यंग-विनोद और हास-परिहास की दृष्टि से देखने की गुंजायश है। "कार्बाइड और सोरेल" की कथा इस प्रकार चलती है :

ड्रेस्डेन की एक तबाह हुई सिगरेट-फैक्टरी के मज़दूर यह फैसला करते हैं कि उन्हें अपने सह-कर्मी काल्ले को, जो अविवाहित होने के साथ-साथ शाकाहारी भी हैं और जो खासतौर से सोरेल (एक खट्टी-मीठी तरकारी) का शौकीन है, वित्तनबर्ग भेजना चाहिए भलाई के लिए कारबाइड लाने। वहां काल्ले का बहनोई एक कार्बाइड कारखाने में काम करता है। इसके लिए वह फौरन तैयार होता है और वित्तनबर्ग पहुंच जाता है। वहां कारखाने के मज़दूर काल्ले को कार्बाइड के सात बैरल दे देते हैं। हर बैरल का वज़न एक एक हंडरडवेट है। इन्हें ड्रेस्डेन तक पहुंचाना उसका काम है। कोई अन्य परिवहन न मिलने पर वह पैदल ही ड्रेस्डेन वापस जाने का फैसला करता है। यहां से कथा की घटनायें शुरू हो जाती हैं जिनको देखकर हंसते-हंसते दर्शकों के पेट दोहरे हो जाते हैं।

काल्ले की मुलाकात हो जाती है एक मज़बूत और तगड़ी किसान लड़की क्लारा से। उन दिनों मोटे ताजे मर्दों का अकाल था, इसलिए काल्ले को भला वह कैसे जाने देती हाथ से। फौरन उसने काल्ले को अपनी बैलगाड़ी में ड्रेस्डेन पहुंचाने की पेशकश की। लेकिन बिचारा काल्ले, वापस लौट आने का वादा करके, क्लारा से छुटकारा पा जाता है।... एक लारी उसे एक सड़क पर उतार कर चली जाती है। विवश होकर काल्ले को वह रात, सुरंगें बिछे हुए एक जंगल में बितानी पड़ती है। कहीं किसी भी सुरंग पर पैर पड़ता, तो उसकी धज्जियां हवा में बिखर जातीं। वह बच जाता है ऐसी एक दुर्घटना में, किन्तु एक सुरंग के फटने से उसके खाने पकाने के बर्तन टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। कार्बाइड के सात पीपे लिए हुए आखिर लाल सेना की एक गश्ती-टुकड़ी की नजर में

चित्रक्रम (ऊपर से नीचे) : काल्ले, पैदल रवाना हुए कार्बाइड लाने के लिए।... किसान छोकरी क्लारा से भेंट।...जरा चाट के देखूं कैसा स्वाद है...

जाता है। उसको पकड़ कर वे अपने हैड-क्वार्टर ले जाते हैं। लेकिन वहां उसकी बात सुन कर सोवियत सेना का कप्तान उसको कार्बाइड ले जाने का अनुमति-पत्र देकर विदा करता है।

मछलियों का शिकार करते हुए काल्ले की मुठभेड़, लाल सेना की एक अन्य टुकड़ी से होती है और इस भाग दौड़ में कार्बाइड के दो पीपों से उसको हाथ धोना पड़ता है। बाकी पांच पीपों को लेकर किसी प्रकार से वह एल्बे नदी के किनारे पर पहुंच ही जाता है। नाव में सवार होकर, घण्टों की यात्रा उसको ड्रेस्डेन पहुंचा सकती है। लेकिन जिस नाव में वह एक कन्या के साथ सफर कर रहा है उसमें पानी चूने लगता है और दूसरी मुसीबत यह कि एक ध्वस्त पुल का मलवा उसकी प्रगति को रोक देता है। आखिर नाव में इतना पानी भर जाता है कि वह काल्ले के तीन और कार्बाइड पीपों को साथ लेकर डूबती है। एल्बे नदी में मोटर बोट पर गश्त करने वाला एक अमरीकी सेना का अफसर काल्ले को डूबने से बचा लेता है। नदी के जिस स्थल पर यह नाटक हो रहा है, वह अमरीकी तथा सोवियत अधिकृत क्षेत्रों के बीच की सीमा रेखा है। जिस समय अमरीकी 'रक्षक' उस बेहूदा 'नाजी लड़के' को नदी से निकाल लाने का प्रयत्न कर रहा होता है, काल्ले एक चाल से मोटर बोट ले उड़ता है और वह अमरीकी सैनिक अफसर, ध्वस्त पुल के मलवे पर खड़ा देखता रह जाता है। काल्ले मज़े से तब तक अपनी यात्रा करता है जब तक मोटर बोट का पैट्रोल खत्म हो जाता है।

जहां वह मोटर बोट को छोड़ देता है वहां से उसकी मंज़िल यानी ड्रेस्डेन बहुत करीब है। यहां वह एक और चक्कर में फंस जाता है। प्रेम की भूखी एक विधवा काल्ले की कुशल कारीगरी (मेकनिकी) का अपनी छोटी फैक्टरी में उपयोग करना चाहती है। लेकिन वह उस 'महिला' के चंगुल में फंसने से बचाता है अपने आपको। अन्त में काल्ले, बचे हुए अपने कार्बाइड के दो पीपों को लेकर अपना रास्ता पकड़ता है, लेकिन अभी उसकी मुसीबत का अन्त कहां

वह कार्बाइड की चोर बाजारी के सन्देह में पकड़ा जाता है। बहरहाल पूछताछ के बाद उसको रिहा कर दिया जाता है और वह छः सप्ताह की अनुपस्थिति के बाद, अन्त में, अपने सहकर्मी बन्धुओं से मिल ही जाता है।

यहां वह यह देखकर हैरान हो जाता है कि सिर्फ छः हफ्तों में ही, उसके कारखाने में बड़ी-बड़ी तबदीलियां हो गयी हैं। जहां पहले मलवे के ढेर और टूटी-फूटी मशीनें थीं वहां काल्ले सैंकड़ों श्रमिक नर-नारियों को मलबा साफ करते और मशीनों की मरम्मत करते हुए देखता है। वह कार्बाइड के दो पीपे लेकर ठीक उस समय वहां पहुंचता है जब वहां उसकी बहुत जरूरत थी। अब वे भलाई का अत्यन्त महत्वपूर्ण काम शुरू कर सकते थे।

"कारबाईड और सोरेल" की उक्त कथा, दूसरे महायुद्ध के बाद ड्रेस्डेन की जनता के उस दृढ़ निश्चय की कथा है जिसके बल पर उसने खण्डहरों में से नये जीवन का और शान्तिपूर्ण भविष्य का निर्माण करने का व्रत लिया और उसमें सफलता पाई। जहां तक फिल्म के पात्रों के अभिनय का सवाल है, एर्विन गेशोन्नेक ने काल्ले का बहुत ही सफल अभिनय किया है। उसके सफल अभिनय ने जहां हजारों लाखों लोगों को हंसाया, वहीं एक ईमानदार, चतुर और खुशमिज़ाज मजदूर के रूप में एर्विन गेशोन्नेक दर्शकों पर एक गहरी और अविस्मरणीय प्रभाव भी डाल देता है।

कुल मिलाकर, डेफा की यह फिल्म एक अत्यन्त सफल सुखान्त फिल्म की उपाधि पाने की अधिकारी है।

चित्रक्रम (ऊपर से नीचे): शाकाहारी काल्ले जंगल में 'भोजन' ढूंढ रहे हैं।·· प्रेम के जाल में फंसने का चक्कर।·· अमरीकी अफसर को चकमा देकर रफूचक्कर हो रहे हैं··

रसधारा

लीजिये, इस बार हम एक सादी किन्तु सुन्दर जर्मन कविता का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कविता के रचनाकार हैं १८ वीं शताब्दी के एक कवि, **स्व. फ्रडरिख ग्रोत्तबोल क्लोप्स्टोक** (१७२४-१८०६), जो गेटे के पहले सबसे बड़े जर्मन कवि माने जाते थे। सीधे-सादे शब्दों में कवि ने प्रकृति के माध्यम द्वारा अमर प्रेम की भावना को वाणी दी है। इस जर्मन कविता के अंग्रेजी अनुवाद का शीर्षक है 'दि स्माल वुड'। इसी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर हाज़िर है :

—संपादक

बलूत कुंज

बलूत वृक्षों के सुन्दर कुंज हे
न जाने कब से दे रहे हो दान
अपनी शीतल छाया का। मैंने
रोपा नहीं तुमको, तुम विकसित हुये थे
मुझ से पहले, (बहुत पहले शायद)।

दिन ढलने पर तुम्हारे
किशोर कोमल तरुवर भी,
उन्नत भाल किये, फैला देते हैं
मुझसे भी लम्बे साये, अपने अपने।
तुम हरे रहो सदा, विकसो
बलूत वृक्षों के सुन्दर कुंज हे।

तुम्हारे सहचर होंगे बेत वृक्ष
रमणीय, लम्बे पत्तों वाले,
रोपूंगा उनको मैं, तुम्हारे चारों ओर।
और सूर्यास्त के बाद
(सन्ध्या सुन्दरी जब
फैलायेगी अपना श्यामल आंचल)
सन्ध्या की गन्ध सनी हवायें
हिलायेंगी पत्तों के पलने, हौले-हौले
(डाल-पात छेड़ेंगे साज,
मर्र मर्र गीत मधुर)।

तभी धीरे से प्रेमी एक
प्रेयसी के कानों में फुसफुसायेगा :
"नही प्रिये, उदास न हो !
वह रोदन की आवाज नहीं
संगीत है वह उस अज्ञात व्यक्ति का
जिसने न जाने कब, कैसे
इस स्थली को रोपा, सींचा, कुंज बनाया।
जहां अब, तुम्हारा मेरा प्यार
पेंगें भरता है, छूता है नभ के छोर !"

जब थम जायेगा तूफान, झंझावात,
और यह लघु बलूत-कुंज होगा शांत पुनः,
जब इस स्थली पर नीरवता छायेगी
और गीत का एक बोल भी (जब)
उठेगा नहीं नभ की ओर—
तब भी वे मौन गीत छटपटायेंगे
और भावों के पंखों पर
किसी उर के अन्तस्तल से उठकर
किसी अन्य हृदय का मर्मस्थल बेध जायेंगे।

रूपान्तरकार
ओम् पंडित 'पम्पोश,'

समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय शांति साइकल दौड़

इस वर्ष की, १७वीं वारसा-बर्लिन शांति साइकल दौड़ की प्रतियोगिता में अब तक १६ देशों ने भाग लेना स्वीकार किया है। इन देशों के नाम हैं: बेल्जियम, बलगारिया, चेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, फिनलैण्ड, हंगरी, लुक्समबर्ग, मोरक्को, पोलैण्ड, फ्रांस, जर्मन जनवादी गणतन्त्र, ब्रिटेन, हालैण्ड, रूमानिया, सोवियत संघ और यूगोस्लाविया।

भारतीय खिलाड़ी

२४ मार्च को भारत के चार खिलाड़ी, भारत-ज० ज० गणतन्त्र सांस्कृतिक विनियम कार्यक्रम के आधीन, जर्मन जनवादी गणतन्त्र को रवाना हुए। उनके नाम ये हैं: सर्वश्री जे० कृष्ण स्वामी किट्टू, पायरी मथाई, मनथूसेरी जोज़फ सेम और अज़ीतसिंह भुल्लर। इन खिलाड़ियों का चुनाव किया भारत सरकार के शिक्षा-मंत्रालय ने और ये ८ महीने की अवधि तक लाइपज़िक की 'शारीरिक विज्ञान एवं खेलकूद की जर्मन अकादमी' में प्रशिक्षण लेंगे।

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, **सूचना** पत्रिका को प्राप्त करना चाहते हों, **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक : २)
अर्ध-वार्षिक : १)

तथ्य और आंकड़े

सन् १९६३ के योजना विवरण में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, जर्मन जनवादी गणतंत्र के औद्योगिक उत्पादन में, सन् १९६३ में ४ ९ प्रतिशत की वृद्धि हुई। उद्योग की विभिन्न शाखाओं के निम्न आंकड़े दृष्टव्य हैं :

उद्योग-धन्धे

सब से अधिक बढ़ौती हुई रासायनिक, विद्युत-तकनीकी और मशीनी औज़ार उद्योगों के उत्पादन में—अर्थात् क्रमशः ६.८,६.८, तथा ७.१ प्रतिशत वृद्धि।... विद्युत-शक्ति की क्षमता में ६५२ किलोवाट्ट घण्टों की वृद्धि हुई, और भूरे कोयले का उत्पादन ४१ लाख टन से बढ़ा।

निर्माण उद्योग

निर्माण उद्योग में लगाई गई रकम में ४० करोड़ मार्क (१ मार्क=१.१२ न. प.) का इज़ाफा हुआ। इस रकम का ४० प्रतिशत भाग उद्योग-निर्माण में लगाया गया।...७५,००० नये रहायशी मकान बनाये गये जो आधुनिक सुविधाओं से ससज्जित है। ५६,००० नये मकान बनाये जा रहे हैं।

कृषि

फसलों की पैदावार और पशुधन में वृद्धि हुई। दूध की सप्लाई ६.३ प्रतिशत और अण्डों की सप्लाई ७ १ प्रतिशत बढ़ी। गोश्त के उत्पादन में ११ प्रतिशत का इज़ाफा हुआ।

परिवहन

सन् १९६३ में, १ करोड़ और ६० लाख टन अधिक माल ढोया गया। इसका १० प्रतिशत भाग मालवाहक जहाजों ने ढोया। १५ नये मालवाहक जहाज़ काम में लगाये गये। ज ज. ग. के मालवाहक जहाजों की कुल संख्या १०० है।

विदेश तथा आन्तरिक जर्मन व्यापार

सन् १९६३ में, २०० करोड़ मार्क के (१ मार्क=१.१२ न. पै.) माल की कुल बिक्री की ज. ज. ग. ने। इसमें से ११० करोड़ मार्क से भी अधिक रकम का माल (अर्थात् सन् १९६२ से १३.३ प्रतिशत अधिक) अन्य देशों को निर्यात किया गया। समाजवादी देशों को निर्यात किये गये माल में १५ प्रतिशत की, और पूंजीवादी देशों को निर्यात किये गये माल में १० प्रतिशत की वृद्धि हुई। अफ्रो-एशियाई एवं लातीनी अमरीका के देशों के साथ व्यापार में भी काफी अच्छी बढ़ौती हुई। पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के साथ हुये व्यापार में २.६ प्रतिशत का इज़ाफा हुआ।

खाद्य-पदार्थों का उपभोग

सन् १९६३ में, ज. ज. ग. के लोगों ने ४ प्रतिशत अधिक गोश्त, ३ प्रतिशत अधिक मक्खन, १२ प्रतिशत अधिक पशु-चर्बी ६ प्रतिशत अधिक अण्डे, ४ प्रतिशत अधिक दूध, और ५ प्रतिशत अधिक काफी का उपभोग किया।

औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुओं की सप्लाई में भी भारी वृद्धि हुई। ३८ प्रतिशत घरों में टेलिविज़न, १८ प्रतिशत में कपड़े धोने की मशीनें और १६ प्रतिशत परिवारों में रिफ्रिजिरेटर थे।

शिक्षा तथा संस्कृति

पिछले वर्ष, ज. ज. ग. में जितने बच्चों ने प्राथमिक स्कूल की शिक्षा समाप्त की, उनमें से तीन चौथाई बच्चों ने दस वर्षीय अथवा बारह वर्षीय उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में दाखिला लिया।.. सन् १९६३ में वहां के विभिन्न विश्व-विद्यालयों तथा तकनीकी कालेजों में २५६,५०० विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। इनमें ६५,५०० औरतें भी शामिल हैं।

ज. ज. ग. के रंगमंचों पर गत वर्ष, २७,००० अभिनय किये गये जिनको १ करोड़, ३० लाख दर्शकों ने देखा।... श्रमिक संघों द्वारा आयोजित, छुट्टियों की सैर में १० लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। 'जर्मन यात्रा सेवा' नामक जर्मन जनवादी गणतंत्र की पर्यटक संस्था ने, समाजजवादी देशों का भ्रमण करने के करने के लिये २८५,००० यात्रायें आयोजित कीं.. ३ लाख से अधिक विदेशी पर्यटक, जर्मन जनवादी गणतंत्र में आये। (सन् १९६३ में)।

प. जर्मनी से आने वाले शरणार्थी

पिछले चन्द महीनों में, पश्चिमी जर्मनी से भाग कर आने वाले शरणार्थियों की संख्या काफी बढ़ गई है। इनमें से अधिकांश व्यक्तियों की आयु १९ से लेकर २५ वर्षों तक ही है। ये लोग प. जर्मनी से भाग कर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण लेते हैं और यहीं बस जाते हैं।

इन नवयुवक शरणार्थियों की मासिक संख्या इस प्रकार है: जनवरी: १८९ फरवरी ४३०, मार्च के प्रथम पखवाड़े में ३९६। दिसम्बर, सन् १९६१ से लेकर अब तक, पश्चिमी जर्मनी के २५,००० से अधिक निवासियों ने ज. ज. ग. में शरण ली है। इनमें दर्जनों सैनिक भी सम्मिलित हैं।

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न : नागल, उत्तरप्रदेश से **श्री पुरुषोत्तम कुमार गौड़** ने दो प्रश्न भेजे हैं। एक प्रश्न में वह पूछते हैं कि 'जर्मन जनवादी गणतंत्र का किस राष्ट्र के साथ सर्वाधिक व्यापार होता है?' उनका दूसरा प्रश्न है: 'ज. ज. ग. में किस-किस सम्प्रदाय के नागरिक बसते हैं?'

उत्तर : जहां तक श्री गौड़ के प्रथम प्रश्न का सम्बन्ध है उसका उत्तर यह है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र का सर्वाधिक व्यापार, सोवियत संघ से होता है। ...दूसरे प्रश्न के बारे में यह निवेदन है कि धार्मिक दृष्टि से ज. ज. ग. में तीन मुख्य सप्रदाय हैं: प्रोटेस्टेन्ट ईसाई, कैथोलिक ईसाई और यहूदी। इनके अतिरिक्त इन प्रमुख सम्प्रदायों की अन्य शाखायें प्रशाखायें भी हैं जिनके अपने गिरजे तथा पाठशालायें, स्कूल आदि हैं।

प्रश्न : जोधपुर, राजस्थान से **श्री अशोक कुमार बोथा** पूछते हैं: ज. ज. ग. में धार्मिक जीवन की स्वतंत्रता कहां तक सीमित है?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतंत्र के संविधान में प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता की गारंटी दी गई है। कानून की परिधि में रह कर यहां के धार्मिक सम्प्रदायों के सदस्य अपने-अपने विश्वास के अनुसार पूजा, प्रार्थना, उपासना जैसे चाहें कर सकते हैं। गिरजे धार्मिक शिक्षा दे सकते इस काम के लिये ज. ज. ग. की सरकार गिरजों आर्थिक सहायता भी देती है। संक्षेप में यही कहा सकता है कि ज. ज. ग. में पूर्ण रूप से धार्मिक स्वतंत्रता

लेकिन धर्म के मामले में एक प्रतिबन्ध अवश्य ज. ज. ग. में। वह यह कि धर्म को राजनीति में देने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। धर्म सम्बन्धी विश्व व्यक्ति का निजी मामला है, लेकिन वह धर्म के नाम किसी अन्य व्यक्ति पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकता, न ही यहां धर्म के नाम पर किसी प्रकार के शोषण इजाज़त है। दूसरे शब्दों में धर्म घर की वस्तु है, राजनीति समाज की।

प्रश्न : तरनतारन, पंजाब से **श्री परमेन्द्रसिंह सिधू** ने यह भेजा है: बर्लिन नगर की आबादी कितनी है, ज. ज. ग. की सबसे बड़ी नदी कौनसी है?

उत्तर : जर्मनी सन् १९४९ में विभाजित हुआ. और जर्मन पर दो जर्मन राज्य वजूद में आये। इस विभाजन परिणामस्वरूप बर्लिन भी विभाजित हुआ। पश्चिम पर आज भी पश्चिमी देश—अमरीका, फ्रांस तथा कब्जा जमाये बैठे हैं, जबकि पूर्वी, अर्थात् जनवादी जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बन चुका सन् १९६२ में इसकी कुल जन-संख्या थी १,०६१,२ ज. ज. ग. की सबसे लम्बी नदी का नाम है एल्बे। लम्बाई है १,१६५ किलोमीटर।

अंतर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेन्स

(पृष्ठ ४ का शेष)

दक्षिण पूर्वी एशिया के नवोदित राज्यों के बारे में, दो जर्मन राज्यों की भिन्न नीतियों से सम्बन्धित वहां के लोकमत के बारे में पूछे गये एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, श्री वोल्फगांग कीज़ेवेत्तर बोले: "जिन देशों का हमने दौरा किया, वहां दो जर्मन राज्यों की भिन्न नीतियों और रवैयों के बारे में सही जानकारी है।..." इस विषय में उन्होंने पश्चिमी ईरियान और मलेशिया के सवालों पर ज० ज० ग० द्वारा इन्डोनेशिया का समर्थन का उल्लेख किया।

पाकिस्तान तथा भारत के झगड़े और भारत तथा चीन के सीमाविवाद के बारे में भी, श्री कीज़ेवेत्तर से सवाल पूछे गये। उत्तर में उन्होंने ज० ज० ग० की राज्यपरिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का वह बयान दोहराया जो उन्होंने समाजवादी एकता पार्टी की छठी कांग्रेस में दिया था पिछले साल। उस महत्वपूर्ण बयान में श्री उल्ब्रिख्त ने कहा था कि इस तरह के झगड़े शांतिपूर्ण ढंग से और आपसी बातचीत के द्वारा हल किये जाने चाहियें, नहीं तो इन झगड़ों से केवल साम्राज्यवादी ही फायदा उठायेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र आज भी इसी नीति का समर्थक है।

एक सुप्रसिद्ध भारतीय अखबार, साप्ताहिक "न्यू एज" के प्रतिनिधि ने, उप प्रधान मंत्री, श्री ब्रूनो लोइशनर से भारत को गई ज० ज० ग० की आर्थिक सहायता के बारे में जानकारी चाही। इसका उत्तर देते हुये श्री लोइशनर बोले: "जिन देशों का हमने दौरा किया, आर्थिक सहायता की पेशकश के रूप में हमने पारंपरिक उत्पादनों के आयात को अधिक बढ़ाने और बदले में तैयार कारखाने, औद्योगिक सामग्री और मशीनें सप्लाई करने पेशकश की। भारत को भी हमने, उसके औद्योगिक नवनिर्माण सहयोग तथा सहायता करने की पेशकश की। भारत को हम जो देंगे, उस पर ब्याज की दर २.५ और ३ प्रतिशत के बीच होगी, किसी भी प्रकार के राजनीतिक-सूत्रों से (अन्य समाजवादी देशों कर्जों की तरह ही) यहकर्जा बंधा हुआ नहीं होगा।...इस संबंध में इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि भारत को, पश्चिमी जर्मनी से जो कर्जे मिल रहे हैं, उन पर भारत को लगभग ६ प्रतिशत देना पड़ता है।..."

चिट्ठी पत्री

श्रीमान्

लगभग गत एक वर्ष से हमारी संस्था निरन्तर 'सूचना पत्रिका' प्राप्त कर रही है जिसके लिए हम आभारी हैं। इस संस्था के विद्यार्थी इसे बड़े चाव और लगन से पढ़ते हैं। इस कारण इसकी यहां मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की जाती है। मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार अब तक आप इसे निरन्तर भेज कर हमें लाभांवित करते रहे हैं, इस प्रकार भविष्य में भी सदा करते रहेंगे।

मन्त्री
राजस्थान स्वायत शासन संस्था
राजस्थान

महोदय,

आन्ध्र प्रदेश में स्थित 'हिन्दी प्रचार समिति' के लिए 'सूचना पत्रिका' की एक प्रति भेजने के सम्बन्ध में आप महोदय से विनम्र प्रार्थना है।

लिखना होगा कि इस समय हमारी संस्था के नाम से देश और विदेश के पत्र-पत्रिकायें अपने सदस्यों के अवलोकनार्थ सधन्यवाद प्राप्त होते हैं। फिर हम सदस्य आपके देश की प्रगति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने से वंचित क्यों रहें? अतः कृपया 'सूचना-पत्रिका' की एक प्रति हमारी संस्था के पते पर भेजने का कष्ट कीजिएगा।

संयोजक,
हिन्दी प्रचार समिति,
ज़हीराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

सम्पादक महोदय,

भारत जर्मन मैत्री की प्रतीक आपकी आदर्श 'सूचना-पत्रिका' हमें बहुत पसन्द आई। मैं और मेरे मित्रवर्ग एवं अन्य पाठकगण आपको हार्दिक धन्यवाद करते हैं कि आपने जनवरी मास से हमारी लाइब्रेरी को 'सूचना पत्रिका' का प्रेषण करना आरम्भ कर दिया। आशा है भविष्य में भी अपनी पत्रिका नियमित भेजते रहने की कृपा करते रहेंगे।

मैं और मेरा मित्र वर्ग आपके देश के युवकों से मित्रता करना चाहते हैं। हमें आशा है आप इसमें अवश्य ही सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

मैं स्वयं आपके देश के नागरिकों से आदर्श मित्रता का गठबन्धन जोड़ना चाहता हूँ। अगर आप जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रमुख एवं सुप्रसिद्ध दैनिक 'नूइस डूइशलैंड' और परराष्ट्र मंत्रालय के मुख पत्र 'विदेश वार्ता बुलेटिन' में मेरा पता छपवादें तो आपकी अत्यन्त कृपा होगी। इसके लिये मैं आपका हृदय से आभारी रहूँगा। भारत के एक युवक का जर्मन जनवादी गणतंत्र के नवयुवकों से परिचय एवं आदर्श मैत्री कराने में मैं आपका पावन सहयोग चाहता हूँ। आशा है आप अवश्य ही इस ओर ध्यानाकर्षण करेंगे।

सत्यनारायण बजाज
बीकानेर (राज.)

आदरणीय महोदय,

अन्य अंकों की भांति वर्ष १९६४ की 'सूचना पत्रिका' प्राप्त हुई। यह पत्रिका भारत जर्मन मैत्री का प्रतीक एक मासिक पत्रिका है जो निसंदेह पाठकों के दिल में अपना घर बना लेती है। आप पिछले कई वर्षों से मेरे पुस्तकालय को इस पत्रिका का एक अंक नियमित रूप से भेजते आ रहे हैं। यह आप जैसे ही दयालु सज्जन कर सकते हैं। मैं अपनी ओर पत्रिका की शुभकामना तथा आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। तथा आशा करता हू कि जिस गति से यह पत्रिका आगे बढ़ रही है यह पाठकों के लिये काफी हितकर सिद्ध होगी। भविष्य में इसी तरह पत्रिका भेजकर हमें इसके लाभों से लाभान्वित कराते रहेंगे।

मंत्री,
ग्राम सुधार पुस्तकालय
बाबूपुर (बिहार)

मान्यवर महोदय,

मैं गुलबर्गा नगर का एक युवा पत्रकार हूं। पत्रकारिता मेरी दिलचस्पी का विषय है। मैं समय-समय पर हिन्दी तथा कन्नड़ भाषाओं में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा व्यापारिक विषयों में लेख भी लिखता रहता हूं। मैं इस नगर का एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता हूं।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली 'सूचना पत्रिका' को काफी अभिरुचि से पढ़ता हूं, क्योंकि इसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता की कोमल सद्भावनाएं तथा विचार संकलित रहते हैं। आपकी यह 'सूचना पत्रिका' जर्मन जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, व्यापारिक तथा शैक्षणिक उपलब्धियों तथा महान प्रगतियों की झांकी प्रस्तुत करती है। इससे भारत तथा जर्मनी की जनता में एक-दूसरे को अच्छी तरह समझने एवं आपसी मित्रता को और मजबूत करने में काफी मदद मिलती है।

मुझे एक पत्रकार होने के नाते विविध विषयों की जानकारी रखना आवश्यक है। जर्मनी के चौतरफा प्रगति की जानकारी नियमित रूप से प्राप्त करने के लिए मैं 'सूचना पत्रिका' को काफी सहायक समझता हूं। इसलिए आपसे मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप मेरी विनती को स्वीकार करके 'सूचना पत्रिका' नियमित रूप से भेजते रहें। मैं आपके जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास के प्रति बहुत आभारी रहूंगा। कृपया आप मुझे 'सूचना पत्रिका' से सम्बद्ध अन्य प्रकाशन भी समय-समय पर भेजने का कष्ट करें।

आपकी कृपा दृष्टि और सहानुभूति के लिए मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद।

भवदीय
भीमराज भारती
गुलबर्गा (मैसूर राज्य)

समाचार

ब्रिटेन ने ज.ज.ग. से खाद खरीदी

८ मार्च के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र से, लाइपजिक व्यापार मेले में, लन्दन की 'प्रोपेन फर्टिलाइजर्स लिमिटेड' नामक व्यापार-फर्म ने, लगभग ढाई लाख टन पोटाश खाद खरीद ली। लन्दन की यह फर्म ब्रिटेन के कुल खाद उपभोग का एक तिहाई भाग सप्लाई करती है। इस फर्म ने, ज. ज. ग. के अधिकारियों के साथ, ५०,००० टन खाद निर्यात करने का पहला समझौता सन् १९४९ में किया था। तब से आज तक इस व्यापार में निरन्तर वृद्धि होती रही है। 'प्रोपेन फर्टिलाइजर्स लिमिलेड' के निदेशक ने ज.ज.ग. द्वारा निर्यात किये गये उर्वरकों के गुणों की सराहना करते हुये कहा कि ज.ज.ग. के ये उर्वरक ब्रिटेन की खाद-मण्डी की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

प. जर्मनी के १४ सैनिक भागे।

गत १० फरवरी के दिन से मार्च के पहले सप्ताह तक, पश्चिमी जर्मनी के १४ सैनिकों तथा अफसरों ने भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली है, और उनको यहां शरण दी गई।...गत वर्ष (१९६३) के सितम्बर से दिसम्बर तक के महीनों में, पश्चिमी जर्मनी के ६३ सैनिक वहाँ से भाग कर ज. ज. ग. में शरण ले चुके हैं।

फ्रांस से रासायनिक कारखाने खरीदे गये।

जर्मन जनवादी गणतंत्र, पश्चिमी देशों से कई रासायनिक कारखाने खरीदने जा रहा है। इस सिलसिले में, प्रथम रासायनिक कारखाने का आर्डर ज.ज.ग. ने फ्रांस को दे दिया है। इसके अतिरिक्त, हाल ही के वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले में, इंजन-रेलों और स्नेहक-तेलों को घोलने वाले दो कारखाने ज. ज. ग. को सप्लाई करने के संबंध में पेरिस की पेट्रो-कैमिस्ट्री नामक कम्पनी के प्रतिनिधि, श्री एम. गार्डन, और जर्मन जनवादी गणतंत्र की एफ.टी.ओ. नामक रासायनिक फर्म के महा-निदेशक, श्री ब्रांश के बीच एक समझौते पर दस्तखत हुये।

भारतीय वैज्ञानिक परिषद और जर्मन विज्ञान अकादमी में सहयोग

गत मास (मार्च) १३ तिथि के दिन 'भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान परिषद' और जर्मन जनवादी गणतन्त्र की बर्लिन स्थित 'जर्मन विज्ञान अकादमी' के बीच वैज्ञानिक सहयोग से सम्बन्धित एक समझौता हुआ।

भारत में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोत्कर ने, 'भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान परिषद' के महा-निदेशक, डा० हुसैन ज़हीर को, उक्त समझौते का दस्तावेज देते समय अपनी यह दृढ़ धारणा प्रगट की कि वैज्ञानिक ज्ञान तथा अनुभव के आदान-प्रदान और सहयोग से भारत और ज० ज० ग० दोनों देशों का कल्याण होगा। डा० ज़हीर ने भी इस समझौते को, दो देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को अधिक दृढ़ तथा विकसित करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम कहा।

यह समझौता, जो पांच साल तक चालू रहेगा, भारत ज.ज.ग. के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम का एक अंग है। इस कार्यक्रम पर २० फरवरी, १९६४ के दिन दस्तखत हुआ है। उक्त समझौता 'भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक-अनुसंधान परिषद' का दूसरा ऐसा समझौता है जो उसने किसी अन्य देश से किया है।

सोवियत संघ के श्री मिकोयाँ (बायें, बैठे) ज. ज. ग. के श्री ओत्तो ग्रोतवोल (बीच में) और श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के साथ (दायें बैठे)

तीन ग्रह कक्षों की बिक्री

येना (ज. ज. ग.) की विश्वप्रसिद्ध फर्म 'कार्ल ज़ाइस्स' ने, लाइपजिक-व्यापार मेले में सोवियत यूनियन, श्रीलंका और इन्डोनीशिया को तीन दैत्याकार ग्रह-कक्ष (प्लेनेटेरियम) बेचने की करार की। यह करार 'कार्लज़ाइस्स' के बिक्री-इतिहास में सब से बड़ी और महत्त्वपूर्ण है। यह फर्म सूक्ष्म मशीनें, प्रकाशीय विद्युत उपकरण आदि बनाने में अद्वितीय है, और आज तक इसने ३६ विराटाकार ग्रह-कक्ष तैयारकिये हैं।

नया यंत्र और नेत्र रोग

नेत्र-चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सा का एक नया ढंग खोज निकाला गया है। येना (ज. ज. ग.) स्थित 'कार्ल ज़ाइस्स' कारखाने में काम करने वाले वैज्ञानिकों के सत-प्रयत्नों के कारण ऐसा संभव हो सका। इन वैज्ञानिकों ने एक ऐसा नया सूक्ष्म-यंत्र तैयार किया है जिसकी सहायता से, क्षति पहुंचे हुये आंख के रेटिना (दृष्टि पटल) पर प्रकाश की किरणें फेंकी जा सकती हैं और इस तरह उसको ठीक किया जा सकता है। किरणों से उत्पन्न ऊर्जा को, उक्त यन्त्र की सहायता से, ऊष्मा में बदल दिया जाता है, और वह रेटिना में जज़ब कर दी जाती हैं। इस से क्षति युक्त रेटिना ठीक हो जाता [illegible]। इस नये यन्त्र की खोज से पहले रेटि[illegible]ा की क्षति को ठीक करने के लिये [illegible] आंख खोल देनी पड़ती थी आपरेशन के द्वारा। ऐसा करना काफी खतरनाक हुआ करता है। अब ऐसा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

व्यापार-दूतावास के प्रमुख, शिक्षा मंत्री से मिले

गत मास की १८ तिथि को भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोत्तकर और सांस्कृतिक सलाहकार, श्री बेर्नहार्ड शोएनके, भारत के शिक्षा मंत्री, श्री एम. सी. छागला से मिले। उन्होंने मंत्रि महोदय को, जर्मन जनवादी गणतंत्र की शिक्षा मंत्री, श्रीमती एम. होनेकर का एक पत्र दे दिया। इसके अतिरिक्त ज.ज.ग. के इन प्रतिनिधियों ने, श्री छागला के साथ, हाल ही में दो देशों के बीच हुये सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के सम्बन्ध में भी विचारों का आदान-प्रदान किया।

प्राग में ईसाइयों के शांति सम्मेलन की तैयारियां

इस वर्ष के २८ जून से लेकर ४ जुलाई तक, चेकोस्लावाकिया की राजधानी प्राग में 'द्वितीय अखिल-ईसाई शान्ति सम्मेलन' होगा। इस विराट सम्मेलन में दुनिया के विभिन्न देशों से १२०० प्रतिनिधि भाग लेने आयेंगे। प्रथम ईसाई शांति सम्मेलन भी प्राग में ही हुआ था सन् १९६१ में।

उक्त सम्मेलन का उद्घाटन प्राग बेतलहेम गिरजे में 'सामूहिक दिव्य प्रार्थना'' से होगा जिसमें सभी प्रतिनिधि भाग लेंगे। 'प्रार्थना' के अगुआ होंगे पश्चिमी जर्मनी के पादरी, डा० मार्टिन नीमोइल्लर। सम्मेलन की बैठकों में विश्व महत्व के प्रश्नों और चर्च के सामने आधुनिक समस्याओं पर विशेष आयोगों द्वारा विचार किया जायेगा।

अर्थ-शास्त्रियों द्वारा विश्व व्यापार सम्मेलन का स्वागत

२४ मार्च के दिन, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की वर्तमान समस्याओं पर यहां हो रहे दो-दिवसीय सम्मेलन ने, संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा आयोजित (जेनेवा में) विश्व-व्यापार सम्मेलन का हार्दिक स्वागत किया। जर्मन जनवादी गणतंत्र के अर्थ-शास्त्रियों का उक्त सम्मेलन २३ मार्च को आरम्भ हुआ था, और इसमें ज. ज. ग. के २०० अर्थशास्त्री भाग ले रहे थे। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था दुनिया के देशों को इस तथ्य से अवगत करना कि जर्मन जनवादी गणतंत्र विश्व में व्याप्त दो समाज व्यवस्थाओं के बीच व्यापारिक संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में अपना योगदान देने में तैयार भी है और समर्थ भी। इसके अतिरिक्त, नवोदित विकासशील राज्यों के विकास में सहयोग देने के लिए भी ज.ज.ग. तैयार है।

साइकल चैम्पियन की अकाल मृत्यु

२४ मार्च को, ज. ज. ग. के साइकल चैम्पियन, मानफ्रेद बूर्डनिग की एक दुर्घटना में अकाल मृत्यु हुई। स्व० बूर्डनिग ज. ज. ग. के चोटी के साइकल खिलाड़ी थे, और इस वर्ष के टोकियो ओलम्पिक खेलों में वह भाग लेने जा रहे थे। सड़क पर एक लारी से टकरा कर श्री बूर्डनिग बहुत आहत हुए और अस्पताल में उनकी मृत्यु हुई।

भारतीय शिक्षार्थी

भारतीय शिक्षार्थियों एक का दल, जर्मन जनवादी गणतन्त्र में दो वर्ष की ट्रेनिंग समाप्त करके, २१ मार्च को भारत के लिए रवाना हो गया। बर्लिन के शोएनेफेल्द नामक हवाई-अड्डे पर, ज० ज० ग० के शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि ने उनको विदा किया और उनके देश के आर्थिक विकास की सफलता की कामना की।

भारतीय शिक्षार्थियों की ओर से श्री गुहा ने ज० ज० ग० को धन्यवाद दिया जो भारतीय विद्यार्थियों को विशिष्ट क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त करने में सहायता तथा सहयोग दे रहा है। श्री गुहा के शब्दों में 'ज० ज० ग० हमारा दूसरा घर बन चुका है और किसी न किसी दिन हम फिर यहां आयेंगे।'

२१ मार्च के दिन ही ट्रेनिंग प्राप्त करके भारतीय शिक्षार्थियों का दूसरा दल 'नेरा' नामक जहाज से भारत के लिए समुद्र-मार्ग से रवाना हुआ। ज०ज०ग० में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले ये भारतीय उद्योग की विभिन्न शाखाओं, जैसे रसायन, इंजीनियरी, विद्युतकी, वास्तुकला आदि में ट्रेनिंग प्राप्त करके स्वदेश लौट रहे हैं। ये विद्यार्थी, भारत तथा ज० ज० ग० मंत्रालयों के बीच हुए एक समझौते के आधीन वहां ट्रेनिंग ले रहे थे।

निर्माण के सहयोगी

स्वागत समारोह

लाइपजिक के वसन्तकालीन मेले में, भारत की संयुक्त प्रदर्शनी के निदेशक, श्री दयाल ने भारतीय प्रदर्शनी-मण्डप में, ७ मार्च के दिन, एक स्वागत समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में जर्मन जनवादी गणतन्त्र के विदेश-व्यापार मंत्री श्री यूलियस बालको भी पधारे। इनके अतिरिक्त, ज० ज० ग० के निम्न उच्चाधिकारी भी इस स्वागत समारोह में आये: ज० ज० ग० के उप विदेश-व्यापार मंत्री, श्री गेरहार्ड वाइज, लाइपजिक मेला दफ्तर के महानिदेशक, श्री कूर्ट श्माजर, प्राग (चेकोस्लोविया) में भारत के राजदूत, श्री माथुर और भारत की राज्य व्यापार निगम (स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन) के प्रतिनिधि श्री कुमार।

भारत का राज्य व्यापार निगम

लाइपजिक के वसन्तकालीन व्यापार मेले में व्यापार बढ़ाने की सम्भावनाओं को व्यक्तिगत रूप में देखने के लिए, भारतीय राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष, श्री बी० पी० पटेल जर्मन जनवादी गणतन्त्र के दौरे पर गये। लाइपजिक पहुंच कर श्री पटेल ने कहा "हाल ही में जर्मन जनवादी गणतन्त्र का जो सद्भावना-मण्डल, यहां के उप प्रधान मंत्री, श्री ब्रूनो लोइशनर के नेतृत्व में भारत का दौरा करके लौटा है, मेरी पूर्ण आशा है कि हमारे दो देशों के व्यापार और मैत्रिपूर्ण सम्बन्धों पर इस दौरे का गहरा तथा काफी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।" श्री पटेल ने यह भी कहा कि ज० ज० ग० ने भारतीय मण्डी के कई क्षेत्रों में अपने मजबूत कदम जमाये हैं जैसे, हर प्रकार के फिल्म उपलब्ध करने में। इसी प्रकार छापाखानों के सप्लाई करने में भी ज० ज० ग० ने पहला स्थान ग्रहण किया है, ब्रिटेन को हटाकर। भारत में रासायनिक कारखानों के लगाने तथा चालू करने में भी जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने अपनी उत्तम योग्यता का परिचय दिया है।

अखिल भारतीय विनिमाता कारपोरेशन

लाइपजिक में एक प्रेस-भेंट में 'अखिल भारतीय विनिर्माता कारपोरेशन' के महामंत्री, श्री बादानी ने कहा कि सन् १९६५ के वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले में भारत के व्यापार का प्रतिनिधित्व करने वाला एक काफी बड़ा प्रतिनिधि मण्डल भाग लेगा। भारत और जर्मन जनवादी गणतन्त्र के बीच व्यापार को अधिकाधिक विकसित करने के लिए श्री बादानी ने यह सुझाव दिया कि ज० ज० ग० अपने विशेषज्ञों का एक दल खरीदार देश (भारत) भेजा करे सम्पर्क बढ़ाने के लिये। इस सिलसिले में, अपनी प्रेस-भेंट में 'विनिर्माता कारपोरेशन' के महामंत्री ने इस तथ्य का स्मरण कराया कि भारत समुद्रपार देशों में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र का सबसे बड़ा खरीदार देश है। वसन्तकालीन लाइपजिक व्यापार मेले में इस वर्ष भारत के प्रदर्शन-मण्डप १३००० घन मीटरों के रकबे पर फैले हुए थे और यहां के इन मेलों में भाग लेने वाली भारतीय फर्मों तथा व्यापार संस्थाओं की संख्या पिछले तीन वर्षों में १०० से बढ़कर २०० तक पहुंच गई है। इसी प्रकार सन् १९६० में भारत और ज० ज० ग० का व्यापार ९५ करोड़, ७० लाख रुपयों की रकम तक पहुंच गया। चालू वर्ष अर्थात् सन् १९६४ में, दो देशों के बीच इस व्यापार परिमाण में ३५ प्रतिशत की वृद्धि होगी।

जर्मन डाक्टरों का दल

भारत तथा जर्मन जनवादी गणतन्त्र के बीच सांस्कृतिक सहयोग और विनिमय समझौते के आधीन, ज० ज० ग० के तीन सुप्रसिद्ध डाक्टरों का एक दल यहां आया १६ मार्च, १९६४ के दिन। इस दल का नेतृत्व, डा० रिजमन्न कर रहे हैं जो 'महामारी-रोग निरोधक समस्या आयोग' के अध्यक्ष हैं। इस मेडिकल-दल के दो अन्य सदस्य हैं, बर्लिन हम्बोल्तद्त विश्वविद्यालय के 'विषाणु-विज्ञान संस्थान' के निदेशक डा० श्पी... और लाइपजिक सेंट जार्ज अस्पताल के संक्रामक रोग विभाग के अध्यक्ष डा० फोइरजटर।

नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर, ज० ज० ग० के इस मेडिकल-दल का स्वागत किया, भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रतिनिधि, श्री सी० एल० त्रेहन ने। ज० ज० ग० के ये डाक्टर, भारत में हैजे और चेचक जैसे भयंकर रोगों के कारणों तथा रोकथाम के तरीकों का अध्ययन करेंगे। अपने भारतीय सहकर्मियों के साथ मिलकर वे उनके साथ अपने ज्ञान तथा अनुभवों का आदान-प्रदान करेंगे और इन संक्रामक रोगों को खत्म करने में योगदान देंगे।

ज० ज० ग० में भारतीय पत्रकार

१३ मार्च के दिन, भारत और वियतनाम के छः पत्रकार, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राजधानी बर्लिन की राज्य सीमा—अर्थात् 'ब्रान्देनबुर्ग द्वार' देखने गये। इन पत्रकारों में भारत के सुप्रसिद्ध अखबारों 'इण्डियन एक्सप्रैस' 'फाइनानशियल एक्सप्रैस' और 'अमृत बाजार पत्रिका' के प्रतिनिधि थे।

सीमा-सुरक्षा के कमाण्डर के दफ्तर में रखी गई पर्यटक रजिस्टर में एक पत्रकार ने निम्न शब्द लिखे: 'भव्य दीवार (बर्लिन की राज्य सीमा को सुरक्षित करने के लिए बनाई कंक्रीट की दीवार ..सं०)

सचित्र समाचार
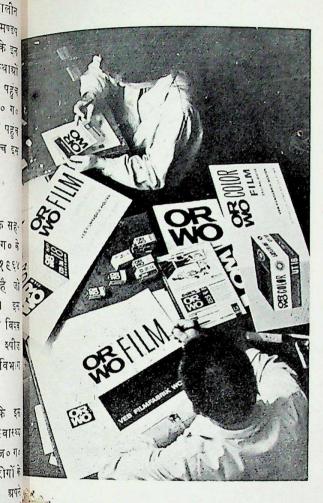
जर्मनी की भूतपूर्व Agfa कंपनी का, १ अप्रैल १९६४ से नया नामकरण हुआ। अब ORWO ट्रेड-मार्क के नाम से विश्वप्रसिद्ध वोल्फेन फिल्म फैक्ट्री के उत्पादन निर्यात होंगे ◀

ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त, बेल्जियम के संसदीय प्रतिनिधि-मंडल का स्वागत कर रहे हैं ▲

▶ ईस्टर त्योहार के दिन जन्म लेने वाले ये प्यारे प्यारे चूज़े

▶ थूरिनजिया में ८८ मीटर ऊंची स्की कूद की इस 'पहाड़ी' का उद्घाटन फरवरी में हुआ

◀ 'जर्मन विज्ञान अकादमी' और 'भारतीय विज्ञान तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्' के बीच पांच वर्षों की सहयोग सन्धि हुई। इस सहयोग के लिये 'जामे सेहत' पीते हुये 'भारतीय परिषद' के निदेशक, डा. हुस्सैन ज़हीर और ज. ज. ग. के श्री बोत्तकर तथा श्री मुइंजेर

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक ५
२० मई, १९६४

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : रोस्टोक की नई बन्दरगाह जहाँ विभिन्न देशों के पोत लंगर डालते हैं

अंतिम पृष्ठ : बर्लिन में उल्लसित वसन्त

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं । प्रेसकटिंग पाकर हम आभारी होंगे ।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

चीन की फूटवादी नीति का विरोध

जर्मन समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का वक्तव्य

जर्मनी की 'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी ने १४ अप्रैल, १९६४ के दिन चीन के नेताओं की फूट डालने वाली नीति के खिलाफ और कम्यूनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों की एकता को मज़बूत बनाने के समर्थन में एक वक्तव्य दिया है।

वक्तव्य में कहा गया है कि समाजवाद तथा साम्यवाद का निर्माण, तीसरे विश्व युद्ध के खतरे को टालना, और भिन्न समाज व्यवस्था वाले विभिन्न देशों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति की सफलता, "हमारे इस युग की बुनियादी आवश्यकतायें" हैं। वक्तव्य के अनुसार विभिन्न कम्यूनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों ने हाल ही में जो सफलतायें प्राप्त की हैं, वे अधिकांशतः उस संयुक्त नीति का परिणाम हैं जो सन् १९५७ और १९६० में मास्को में अपनाई गई थी (दुनियां की कम्यूनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों के प्रतिनिधियों द्वारा, जिनमें चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि भी शामिल थे —सं.)।

'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य के शब्दों में : "कोई भी व्यक्ति, जो सही सूझ-बूझ रखता हो, यह देख सकता है कि हमारी पार्टी द्वारा अपनाया गया रास्ता, सही रास्ता है। इस मार्ग से हमारी पार्टी को कोई हटा नहीं सकता।"

वक्तव्य में इस बात की ओर ध्यान खींचा गया है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने सन् १९५७ तथा १९६० की मास्को घोषणाओं को त्याग दिया है और इस प्रकार वे विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की सामान्य नीति का विरोध कर रहे हैं। इतना ही नहीं। अन्य बन्धु-पार्टियों के इन सुझावों को कि खुले वाग्युद्ध को बंद करके, मिल बैठकर विवादग्रस्त प्रश्नों पर सोच विचार किया जाये, उन्होंने इनका जवाब "अधिक भौंड़े लांछनों, अपमानों तथा गन्दे हमलों से दिया। इसमें कोई भी संदेह नहीं कि चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं ने, खुलेतौर पर, लेनिन द्वारा निर्मित पार्टी (सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी सं.) और अन्य देशों की कम्यूनिस्ट पार्टी के विश्वस्त मार्क्सवादी लेनिनवादी नेतृत्व को, उलट देने का खुले आम आह्वान किया है। ... चीनी नेताओं की यह गलत नीति इस समय अंतर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट आन्दोलन के लिये एक मुख्य खतरा बन चुकी है।"... उनके विचार तथा नीति "सिद्धान्त हीनता, टुटपूंजिया राष्ट्रवाद, साहसिकतावाद, महादेशीय अन्तर्राष्ट्रीयता, और जातिवाद की मिली जुली खिचड़ी है जिसके बल पर चीनी नेता, खुले तौर पर, विश्व का नेतृत्व संभालने पर अपना अधिकार जताने का प्रयत्न कर रहे हैं।..."इसलिये विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि "चीन के कम्युनिस्ट नेताओं के, मार्क्सवाद विरोधी झूठे विचारों को पूरी तरह नंगा करके खत्म करना चाहिये। हमारा नारा है : स्पष्ट विचार, एकता के दृढ़ आधार हैं। ..."

"इस बात का भी उल्लेख करना आवश्यक है कि चीन के नेता, स्टालिन की व्यक्ति पूजा जैसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी प्रपंच का भी समर्थन करते हैं।

"आजकल की स्थिति में युद्ध के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें हल नहीं की जा सकतीं। इसीलिये 'समाजवादी एकता पार्टी' ने दो जर्मन राज्यों और जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा पश्चिम बर्लिन के बीच सामान्य तथा मैत्रिपूर्ण संबंध स्थापित करने के बारे में बार बार सुझाव दिये हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र का यह ऐतिहासिक उत्तरदायित्व है कि वह अपने सर्वतोमुखी समाजवादी निर्माण के द्वारा ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार करे जिस से सम्पूर्ण जर्मनी की शांति तथा प्रगति की शक्तियों की विजय हो। इसके विपरीत चीनी नेता "इस तथ्य में विश्वास नहीं रखते कि आज़ाद हुए लोग, साम्राज्यवाद के अस्तित्व के बावजूद, शांतिपूर्ण श्रम के द्वारा अपने देशों का निर्माण कर सकते हैं, और आर्थिक प्रतियोगिता में साम्राज्यवाद को पराजित कर सकते हैं। परिणाम स्वरूप चीनी नेता अन्य देशों की मार्क्सवादी-लेनिवादी पार्टियों पर साम्राज्यवाद के खिलाफ सीमित युद्धों की नीति ज़बरदस्ती थोप देने का प्रयत्न करते हैं। ये सीमित युद्ध घातक परमाणु विश्व युद्ध में बदल सकते हैं। ... इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि हमारी 'समाजवादी एकता पार्टी' ने ऐसे दुस्साहसवादी, अतिवामपन्थी और मानवता-विरोधी नीति को अपना लिया होता, तो सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्र कितनी भयंकर परिणामों से दो चार हुआ होता। इस तरह की नीति से केवल पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधवादी और युद्ध लोलुप तत्वों को ही बल मिला होता, और अन्त में निश्चित रूप से संहारकारी परमाणु युद्ध का श्रीगणेश हुआ होता। ऐसे युद्ध में जर्मन राष्ट्र का भौतिक जीवन ही खतरे में पड़ जाता। ..."

केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य में कहा गया है कि "महा-देशीय अति राष्ट्रीयता से प्रेरणा लेकर, चीन के नेता, परमाणु बम को किसी भी तरह हस्तगत करना चाहते हैं, और इस तरह वे जानबूझ कर अथवा अनजान हो कर, पश्चिमी जर्मनी के उन सैनिकवादी तत्वों के हाथ मज़बूत करते हैं जो अणुशस्त्रों पर कब्ज़ा करने की कई वर्षों से मांग कर रहे हैं।..." चीनी नेताओं के इस सिद्धान्त को कि पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन तथा जापान के साम्राज्यवाद अमरीकी साम्राज्यवाद की तुलना में "केवल छाया" हैं, वक्तव्य में एक गलत और निराधार सिद्धान्त कहा गया है, क्योंकि इसमें "पश्चिमी जर्मनी के साम्राज्यवाद के बदनाम

प्रतिहिंसावाद को नज़रअंदाज करके उसके ज़बरदस्त खतरे को कम करके दिखाया जाता है । . . इसी नीति को, चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता, जर्मन जनता और विश्व जनगण के लिये, एक क्रांतिकारी नीति कहने का दुस्साहस करते हैं--उस जनता के लिये जो आज तक कई बार बर्बर जर्मन साम्राज्यवाद का शिकार हो चुकी है । चीनी नेता, जो स्वाधीनता संग्रामों के समर्थक होने का दावा करते हैं, पश्चिमी जर्मनी जैसी साम्राज्यवादी शक्ति की उपनिवेशवादी नीति के बारे में मौन धारण करते हैं । . . ."

समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य में इस बात की स्पष्ट घोषणा हुई है कि स. ए. पा. साम्राज्यवाद द्वारा दबाये गये देशों के स्वाधीनता संग्राम की ज़बरदस्त समर्थक है । इस प्रसंग में वक्तव्य में कहा गया है कि "समाजवादी एकता पार्टी, पश्चिमी जर्मनी के नये उपनिवेशवाद के खिलाफ खासतौर से, संघर्ष करती है । . . . राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का पूरा इतिहास ही इस बात का साक्षी है कि समाजवादी देशों का समुदाय, विशेष कर सोवियत संघ की महान आर्थिक तथा सैनिक शक्ति, नवोदित राज्यों के विकास और फलने फूलने का सबसे बड़ा तथा विश्वस्त आधार है । . . ."

दुनिया भर की कम्यूनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों ने, जिनमें चीन की कम्युनिस्ट पार्टी भी शामिल थी, सन् १९५७ तथा १९६० में हुए मास्को-सम्मेलनों में इस बात का फैसला किया था कि वे टुटपूंजिया राष्ट्रवाद और संकुचित राष्ट्रवाद के अवशेषों के खिलाफ डट कर संघर्ष करेंगे । इस प्रसंग में, वक्तव्य में कहा गया है कि "हमारी पार्टी ने इस फैसले पर पहले से ही अमल शुरू किया था, और परिणामस्वरूप, जर्मन जनवादी गणतंत्र, फासिस्टवादी संकीर्ण तथा अति राष्ट्रीयता को समूल नष्ट करने में सफल हुआ । यह ज. ज. ग. की एक ऐतिहासिक विजय है । . . . लेकिन अब चीनी नेता, विश्व कम्यूनिस्ट आन्दोलन से संबंधित तय शुदा नीति को क्यों बदलना चाहते हैं, और उसके स्थान पर क्यों अपनी '२५ सूत्री सामान्य नीति' लाना चाहते हैं जिसका मूलाधार है घृणित राष्ट्रवादी दम्भ, और विश्व नेतृत्व को ज़बरदस्ती हथियाने की आकांक्षा ? . . ."

'समाजवादी एकता पार्टी' की केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य में यह स्पष्ट किया गया है कि चीनी नेता, चीन की जनता के दिमागमें, सोवियत-विरोधी भावनायें कूट कूट कर भर रहे हैं । यह भावना मजदूर वर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय एकता के सर्वथा विरोधी है । सोवियत संघ, अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन का केन्द्र है, और इस यथार्थ को झुठलाया नहीं जा सकता कि जिन देशों में जनवादी लोकतंत्रों की स्थापना हुई है, वहां सोवियत संघ के सहयोग और सहायता से ही समाजवाद की बुनियाद डाली जा सकी है । इसलिये "हमारी पार्टी प्रथकतावादी गैर-मार्क्सवादी नीति को अस्वीकार करती है । इस गलत नीति को अपनाने से समाजवाद और पूंजीवाद के बीच आर्थिक प्रतियोगिता की गति धीमी पड़ जायेगी, समाजवादी देशों का समुदाय कमज़ोर पड़ जायेगा, और अन्त में समाजवाद की निश्चित विजय घपले में पड़ जायेगी ।"

'समाजवादी एकता पार्टी' के उक्त वक्तव्य में यह भी कहा गया है कि चीन के नेताओं द्वारा अपनाई गई नीति "जनवाद और समाजवाद के उद्देश्य को बहुत क्षति पहुंचा रही है । संकुचित राष्ट्रीयता तथा टटपुंजिया मनोवृत्ति ही, मुख्य रूप से, उनकी झूठी सूझ-बूझ का वर्गीय आधार है । . . ."

इस वर्गीय आधार का विश्लेषण करते हुए केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य में कहा गया है : "बुनियादी तौर पर एक कृषिप्रधान देश होने के नाते, संख्या की दृष्टि से मजदूर वर्ग की न्यूनता के कारण और कम्यूनिस्ट पार्टी की समाजिक संरचना के कारण, चीन की पार्टी में, टटपुंजिया तथा (संकुचित) राष्ट्रीयता का प्रभाव खास तौर से रहा है । आज टटपूंजिया राष्ट्रवाद और महादेशीय अतिराष्ट्रीयता, चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं की नीति की चारित्रिक विशेषता और प्रमुख उद्देश्य बन चुका है ।" इसके प्रमाण हैं : शक्ति को और परमाणु बम को भी, किसी भी कीमत पर प्राप्त करने के उनके प्रयत्न, *भारत के साथ सीमा विवाद को सैनिक लड़ाई में बदल देना* और दूसरे देशों की जनता से संबंधित उनका जातिवाद पर आधारित दृष्टिकोण ।

'घरेलू मामलों में भी चीन के नेताओं द्वारा अपनाई गई नीति, आजकल की वास्तविक स्थिति के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर नहीं अपनाई गई । परिणामस्वरूप उनकी लम्बी छलांग की नीति, मेहनती और विवेकशील चीनी जनता के लिये हानिकारक सिद्ध होने के साथ-साथ, समाजवाद के निर्माण में काफी कठिनाइयां पैदा करती है । . . ."

चीनी नेताओं ने, वैचारिक मतभेदों को राज्यों के आपसी संबंधों में भी झोंक दिया है । इस संबंध में, समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के वक्तव्य में कहा गया है : "चीन के नेताओं ने जानबूझ कर हमारे दो राज्यों के पारस्परिक संबंधों को बिगाड़ने की दिशा में काम किया है । उदाहरण के लिये उन्होंने व्यापार को घटाया, और हमें कच्चा माल सप्लाई करने के कई समझौते रद्द कर दिये । इस से हमारे आर्थिक विकास में कठिनाइयां पैदा हुई । इसके विपरीत, चीनी नेताओं ने, पूंजीवादी देशों से अपने व्यापारिक संबंध और भी मजबूत कर दिये । . . .

"समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की यह राय है कि दुनिया की कम्यूनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों का एक और सम्मेलन बुलाना बहुत ज़रूरी हो गया है । इसलिये यह सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के इस सुझाव का समर्थन करती है कि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय-कमेटी और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय-कमेटी के प्रतिनिधि-मंडलों की, मई मास में बैठक हो, और वे जून तथा जुलाई में दुनिया की उन कम्यूनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलायें, जिन पार्टियों ने सन् १९६० के मास्को सम्मेलन में भाग लिया था । इसके बाद, सन् १९६४ के हेमन्त में, दुनिया की तमाम कम्यूनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों की कानफ्रेंस होनी चाहिये । . . ."

जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'समाजवादी एकता पार्टी' के उपर्युक्त लम्बे और महत्वपूर्ण वक्तव्य का अन्त इन शब्दों से हुआ है "हमारे उद्देश्य न्याय और सत्य पर आधारित हैं । इसलिये हमारे उद्देश्य की विजय निश्चित है । . . ."

ज. ज. ग. में शेक्सपियर की चौथी जन्म-शताब्दी

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, ज. ज. ग. की राजधानी (जनवादी) बर्लिन में, अंग्रेज़ी के महान नाटककार तथा कवि स्वर्गीय विलियम शेक्सपियर की ४०० वीं वर्षगांठ से संबंधित कार्यक्रम का समारंभ किया २२ अप्रैल के दिन। उस दिन यहां ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त की उपस्थिति में 'शेक्सपियर सप्ताह" का उद्घाटन किया गया सरकार द्वारा।

उद्घाटन भाषण दिया ज. ज. ग. के उप-प्रधान मंत्री, श्री एलैक्ज़ाण्डर आबुश ने। इस उद्घाटन समारोह में सरकारी अधिकारी, अन्य देशों के दूतावासों के राजनयिक और देश-विदेश से आमंत्रित शेक्सपियर साहित्य के विद्वान उपस्थित थे। समारोह के आरंभ होने से पहले ज. ज. ग. के 'जर्मन ब्रिटिश संघ' ने, इंगलैण्ड से आये हुए अतिथियों के सम्मान में एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया। इन अतिथियों में अंग्रेज़ी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रोफ़ेसर विलियम फोल्कनर, इतिहासकार श्री आर्थर लेस्ली मोर्टन, और 'रायल शेक्सपियर थियेटर' के सुप्रसिद्ध अभिनेता, श्री वीमाक विशेष उल्लेखनीय हैं। . . . स्वागत समारोह के शुरू होने से पहले इसमें भाग लेने वाले महानुभावों के सामने, बर्लिन की 'दुइत्शे नाटक कम्पनी' ने शेक्सपियर के एक प्रसिद्ध नाटक "किंग लियर" का अभिनय प्रस्तुत किया, ज़ोरदार तालियों की गड़गड़ाहट से दर्शकों ने जिसका स्वागत किया।

उधर लन्दन में, ११ अप्रैल के दिन, बर्लिन के विश्वप्रसिद्ध हुम्बोल्दृत विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी तथा अमेरिकी साहित्य के प्रोफेसर और वाइमर स्थित 'जर्मन शेक्सपियर संघ' के अध्यक्ष, डा. मार्टिन लेनर्ट ने, शेक्सपियर की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की पुष्पमालायें चढ़ा कर। ये पुष्पमालायें जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'शेक्सपियर शताब्दि समिति' और 'जर्मन शेक्सपियर संघ' (जो सन् १९६४ में, वाइमर में स्थापित किया गया था) की ओर से शेक्सपियर की समाधि पर चढ़ाई गयीं।

विलियम शेक्सपियर की चौथी जन्मशती की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में, इस महान अंग्रेज़ी नाटककार के कई नाटकों को, जर्मन जनवादी गणतंत्र में खेला जायेगा इस वर्ष (१९६४) के अन्त तक। इन नाटकों में विशेष उल्लेखनीय हैं : 'हैमलेट', 'ओथेलो", प्रोकोफीफ द्वारा तैयार किया गया बैले 'रोमियो और जूलियट', ब्रेख्त द्वारा रूपान्तरित 'कोरियोलानस', और 'एथेन्स का टइमन'। शेक्सपियर की ये रचनायें क्रमानुसार "दुइत्शे थियेटर" "कामिक आपेरा", "जर्मन स्टेट आपेरा", "बर्लिनेर एनसाम्बल" और "लाइपज़िक थियेटर" प्रस्तुत करेंगे। . . . ज. ज. ग. की संगीत रिकार्ड बेचने वाली एक बहुत बड़ी फर्म "दुइत्शे शाल्लप्लात्ते", शेक्सपियर स्मृति समारोह के दौरान नाटककार तथा कवि के गीतों के रिकार्ड खासतौर से बेचेगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित "फोरेन अफ़ियर्स बुलेटिन" ने अपने एक लेख में, शेक्सपियर के महत्व पर लिखा है : "जर्मनी की राष्ट्रीय संस्कृति को किसी भी साहित्यकार ने इतना अधिक प्रभावित नहीं किया है जितना विलियम शेक्सपियर ने। उनकी रचनाओं ने लेस्सिंग, हेरदर और गेटे को जर्मनी का राष्ट्रीय साहित्य निर्माण करने और इसके सौंदर्य-शास्त्र संबंधी प्रतिमान स्थापित करने का मार्ग सुझाया। . . ."

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, वे **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :
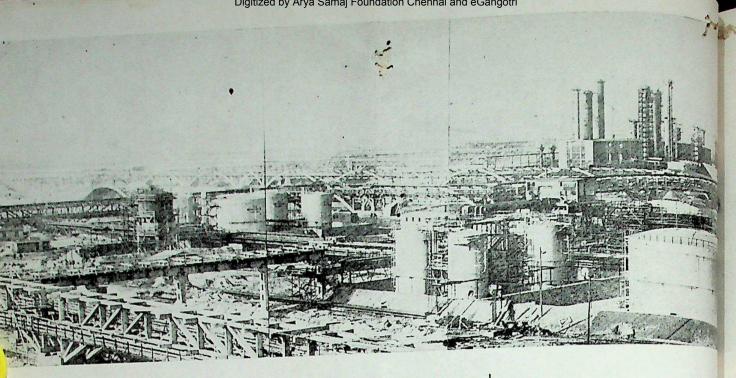
वार्षिक	:	२)
अर्ध-वार्षिक	:	१)

'ब्लैक पम्प' उद्योग-पुरी तब और अब

एच. म्यूल्लर-हान्के

लगभग नौ साल पहले का वह दिन याद आता है मुझको... वह दिन जब मैं "ब्लैक पम्प" नामक लिग्नाइट कारखाने का शिलान्यास करने आया था यहां। उस समय--सन् १९५५ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पूर्व में कोट्टबुस नामक क्षेत्र में स्थित 'ब्लैक पम्प' नाम वाले इस साधारण स्थान को कौन जानता था? यहां एक साराय और कुछ छोटे मोटे मकान थे। बस, यही था 'ब्लैक पम्प' उन दिनों में।

इसी स्थान पर, आज से लगभग नौ वर्ष पहले एक विराट उद्योग-पुरी की नींव डाली गई थी। कोयले को खदानों से बाहर निकाल लाने से लेकर उसके शोधन और उससे शक्ति पैदा करने तक---सभी तरह के लिग्नाइट-शोधन के बड़े-बड़े कारखाने यहां स्थापित किये गये जो आज दुनिया के सबसे बड़े लिग्नाइट-शोधक कारखानों में शुमार किये जाते हैं।

लेकिन नौ वर्ष पहले यहां फैले हुए जंगल और मैदान थे। कारखानों को आकार देने वाली योजनायें अभी कागज़ पर ही थीं।... तब एक दिन इन योजनाओं को मूर्त बनाने के लिये--९ साल पहले--प्रथम बुल-डोज़र ने अपना काम शुरू किया।...

समय की गति कितनी तेज़ है। नौ साल के बाद आज, सन् १९६४ के फरवरी मास के कड़ाके के जाड़े के इस दिन में मेरी मंज़िल वही 'ब्लैक पम्प' है। लेकिन आज यहां एक आश्चर्यजनक परिवर्तन ने मेरा स्वागत किया। दूर-दूर तक फैली हुई कारखानों की चिमनियां और इमारतें मानों आकाश से बातें कर रही हों। नौ वर्ष पहले जो बात मात्र कल्पना थी, आज साकार यथार्थ बन कर सामने खड़ी थी। दस वर्ग-किलोमीटर के क्षेत्रफल पर फै[ले] हुए बिजलीघरों, ब्रिकेट उत्पादक संयंत्रों [और] कोयला शोधक कारखानों को चालीस कि[लो]मीटर से भी अधिक पक्की सड़कें एक दू[सरे] से मिला देती हैं।

पिछले वर्ष के अगस्त मास में, जर्मन जनवा[दी] गणतंत्र के अखबारों के मुखपृष्ठों में मो[टे] मोटे अक्षरों में सहसा यह खबर छपी [थी] 'ब्लैक पम्प' नामक उद्योगपुरी के कारखा[नों] ने आज तक (तब तक) ३००० मिलि[यन] किलोवाट घंटे से भी अधिक विद्युत् श[क्ति] का, और ९० लाख टन से अधिक को[यले] की ईंटों (ईंधन) का उत्पादन किया है ...ज.ज.ग. में, लिग्नाइट, 'काला सो[ना]' के नाम से प्रसिद्ध है। बुर्गाम्मेर तथा वेल[्ज़ो]सएद की दो खदानों में, 'काला सोना'

पहुंचने के लिये, ३ करोड़ ६० लाख घन मीटर मलबा खोद कर हटाया गया था। बुर्गाम्मेर खदान में से, सन् १९६३ के आरम्भ से, कोयला निकाला जाने लगा है। तब से लेकर आज तक इस खान से लाखों टन 'काला सोना' निकाला जा चुका है।

७ अक्तूबर, सन् १९६३ के दिन, केन्द्रीय ब्रिकेट संयंत्र के प्रथम विभाग ने अपना उत्पादन शुरू किया—अर्थात् निश्चित समय से ९ महीने पहले। यह विभाग, इस वर्ष के अन्त तक १००,००० टन अतिरिक्त ब्रिकेट (कोयले की ईंटें जो घरों में ईंधन के रूप में इस्तेमाल होती हैं) पैदा करेगा। ईंधन का यह परिमाण, कोत्तबुस्स (जनसंख्या ६९,४७२) जैसे कस्बे की ईंधन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये काफी है।

'ब्लैक पम्प' के कारखानों में निरन्तर बढ़ता हुआ ब्रिकेट (ईंधन) उत्पादन, सेन्फ्तेनबर्ग नामक सम्पूर्ण लिग्नाइट खदान क्षेत्र के लिये निर्णायक महत्व का है। उदाहरण के लिये, सन् १९५८ की तुलना में १९६२ में, कोत्तबुस क्षेत्र में ४४ लाख टन अधिक ब्रिकेट पैदा किया गया। इस मिकदार का दो तिहाई भाग 'ब्लैक पम्प' के कारखानों ने पैदा किया। ...सेनफ्तेनबर्ग की ब्रिकेटें (ईंधन) यूरोप के दस देशों को निर्यात की जाती हैं आजकल।

उक्त खदान-क्षेत्र में, पिछले चन्द वर्षों से आधुनिक टेकनालोजी का इस्तेमाल उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। सन् १९५८ से यहां की खानों में ८ संवाहक पट्टियां, २९ बकेट खनित्र, २२ बकेट-चक्र खनित्र और संवाहक लिफ्ट काम कर रहे हैं। सन् १९६३ में, माग्देबुर्ग (ज.ज.ग.) में बनाये गये डी. एस. १६०० प्रकार के बकेट-खनित्र ने, वेल्ज़ो-सूएद नामक नई खान में काम करना शुरू किया।

'ब्लैक पम्प' का आर्थिक महत्वः 'ब्लैक पम्प' उद्योग-पुरी का, राष्ट्रीय अर्थतन्त्र में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रमुख उद्देश्य है जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक विकास के लिये ऊर्जा संबंधी प्यास को बुझाना, अधिकाधिक ऊर्जा का उत्पादन करके। पूर्ण रूप से विकसित होने के बाद 'ब्लैक पम्प' के कारखाने, हर साल, चार करोड़ (४०,०००,०००) कच्चे लिग्नाइट से, ब्रिकेट ईंधन, खनिज तेल तथा फिनाइल, गैस, विद्युत शक्ति और कोक आदि तैयार करेंगे। पिछले चन्द वर्षों में, जबरदस्त औद्योगीकरण के कारण ज.ज.ग. में, ऊर्जा की मांग बहुत ज्यादा बढ़ गई है। केवल इस साल में, ५०,००० मिलियन किलो वाट्ट घण्टे की विद्युत्-शक्ति पैदा की जायेगी। ऊर्जा की यह मांग, दिन प्रति दिन, और औद्योगीकरण के विराट विस्तार के साथ-साथ निरन्तर बढ़ती जायेगी जर्मन जनवादी गणतंत्र में।

ज.ज.ग. में ऊर्जा उत्पादन का मूलाधार है लिग्नाइट। लिग्नाइट के शोधन से देश की आर्थिकता का विकास भी सम्बद्ध है। उदाहरण के लिये :

—लिग्नाइट को शोध कर इससे बिजली, कोक और घरेलू इस्तेमाल के लिये गैस तैयार किया जा सकता है।

—लिग्नाइट शोधन के गौण-उत्पादन रसायनिक उद्योग के लिये आवश्यक मूल सामग्री है।

—लिग्नाइट को इसके जन्म-स्थान पर ही शोधा जा सकता है, जिस से परिवहन आदि जैसी लागत बच जाती है।

कोत्तबुस क्षेत्र जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे बड़ा लिग्नाइट भण्डार-गृह है। यहां के कुल लिग्नाइट निक्षेप का ६० प्रतिशत भाग कोत्तबस में ही मौजूद है। अनुमान लगाया गया है कि इस निक्षेप का कुल परिमाण १२,३०० मिलियन टन है (१मिलियन टन = १० लाख टन)। केवल 'ब्लैक पम्प' के आस-पास फैले हुये लिग्नाइट-निक्षेप, यहां के कारखानों को ८० से लेकर १०० वर्षों तक लिग्नाइट सप्लाई कर सकते हैं। यहां की वेल्ज़ो-सूएद नामक खान, कुछ समय के बाद यूरोप की सबसे बड़ी ओपनकास्ट खान होगी जिसका वार्षिक औसत उत्पादन २० मिलियन टन लिग्नाइट होगा।
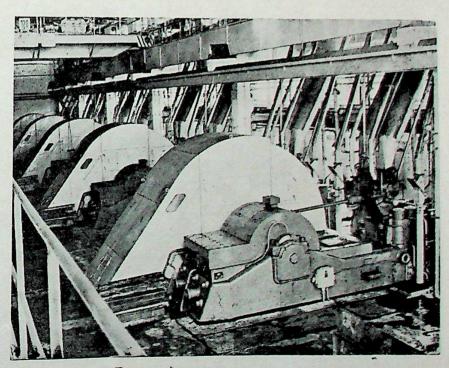
एक लिग्नाइट शोधक कारखाने में इंधन तैयार करने के एक संयंत्र का अनुभाग

ज. ज. ग. में वृद्धजनों की देख-भाल

पीतर नीके

यात्रियों द्वारा प्रायः पूछे जाने वाले वृद्धजनों से संबंधित प्रश्नों का उत्तर ढूंढने के लिये मैं बर्लिन की कोएपेनिक नामक औद्योगिक बस्ती गया। वहां मैंने बहुत से वृद्ध लोगों को देखा। उनमें से कुछ स्वस्थ तथा प्रसन्न थे और कुछ अस्वस्थ तथा दुखी। कुछ और पार्क की बेंचों पर बैठे-बैठे धूप सेंक रहे थे और कुछ अपने छोटे-छोटे बगीचों में काम करने में व्यस्त थे।

उन वृद्ध जनों में कोई भी ऐसा नहीं था जो अच्छा खाता-पीता और पहनता न हो।

भूतपूर्व शिक्षक, श्रीमती हेल्मदाख जो वृद्ध जनों के क्लबों में संगीत गोष्ठियों का आयोजन करती हैं

जर्मन जनवादी गणतंत्र में बूढ़े लोगों की काफी अच्छी देखभाल और आदर सत्कार होता है। जीवन की इस ढलती शाम में उन्हें किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं उठानी पड़ती। सारा समाज अपनी इच्छा से उन लोगों के लिए सहर्ष कुछ बलिदान देता है जिन्होंने अपने परिश्रम से एक ऐसी नींव डालने में सहायता दी है जिस नींव पर आज की सन्तति नयी समाजवादी व्यवस्था स्थापित कर रही है। कोएपेनिक औद्योगिक बस्ती के अध्यक्ष, हरबर्ट फ्रेखनर ने मुझसे इस बारे में कहा—"जर्मन जनवादी गणतंत्र में, इस समय, हर २५ नौकरीपेशा व्यक्तियों को पेंशन पाने वाले १० व्यक्तियों के लिय आजीविका कमानी पड़ती है, और १९७० में भी काम करने वाले हर २२ व्यक्तियों को, पेंशन पाने वाले १० व्यक्तियों के लिये आजीविका कमानी होगी। इसका मुख्य कारण है दूसरा महायुद्ध, जिसमें भिन्न-भिन्न अवस्थाओं वाले युवकों तथा काम-काज के योग्य लोगों की बहुत बड़ी संख्या नष्ट हुई। केवल १९७० के बाद ही, जब कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में नौजवान लोगों की संख्या काफी होगी, काम करने वाले लोगों का आयु संबंधी ढांचा आज से अधिक अच्छा होगा।" . . . इस सत्य को जान लेने के बाद मैं वृद्धजनों के एक अवकाश-गृह की ओर चल पड़ा।

ये अवकाश-गृह कुछ ही समय पहले खोला गया है और इसमें २३५ वृद्धों के रहने की व्यवस्था है। कमरे सुन्दर तथा आरामदेह सामान से सजाये गये हैं। हर कमरे में एक या दो बिस्तर लगे हुए हैं। वृद्धों की देखभाल के लिये तीस लोग रखे गये हैं जिनमें पांच नर्सें और दो डाक्टर भी शामिल हैं। यह अवकाश-गृह इस बस्ती के दूसरे दस ऐसे गृहों का केन्द्र भी है जिनमें ३७० स्थान हैं। सके अतिरिक्त, मधुमेह के रोगियों के लिये एक विशेष अवकाश-गृह है, और उन लोगों के लिये दो और गृह भी हैं जिन्हें खास देख रेख की आवश्यकता है।

आइये, अब हम श्रीमती ज़ाइत्स के साथ अवकाश-गृह की सैर करें। श्रीमती ज़ाइत्स ६७ वर्ष की हैं और इस गृह में रहने वाले वृद्धों ने उनको अपने अवकाश-गृह का 'रिसेपशनिस्ट' चुन लिया है। इस गृह में रहने वाले वृद्धजन लोकतंत्र-रीति से स्वयं इसका संचालन करते हैं। संचालक तथा काम करने वाले दूसरे कर्मचारियों को उनके सामने रिपोर्ट देना पड़ती है।

श्रीमती ज़ाइत्स पहले एक मालन थीं इसलिये वह गर्व से उस उद्यान की ओर संकेत करती हैं जो इस अवकाश-गृह के चारों ओर फैला हुआ है। वह विशेषकर उन क्यारियों को दिखाती हैं, जो झील के किनारे फैली हुई हैं। हर एक वस्तु की देखभाल यह बूढ़े लोग स्वयं ही करते हैं और ये फूलों के बाग उन्होंने खुद लगाये हैं। इस काम में जिस श्रम और लगन से उन्होंने काम किया है उसका सब आदर करते हैं। श्रीमती ज़ाइत्स ने हंसकर कहा—"प्रकृति का साहचर्य हमें जवान रखता है।"

वर्षा काल में भी मनुष्य बोर नहीं होता बहुत समय के लिये, गृह का प्रत्येक वासी अपने छोटे कमरे को स्वयं सुसज्जित कर सकता है। श्रीमती ज़ाइत्स के शब्दों में "हम इस काम में भी एक दूसरे की सहायता करते हैं ताकि सफाई करने वालों के लिये काम कठिन न हो जाये।"

मुझे, सामूहिक भोजन करने का वह सुन्दर कमरा भी दिखाया गया जहां दिन में तीन बार इन लोगों को अच्छा और स्वास्थ्यकर खाना दिया जाता है। यहां मैंने छोटे-छोटे सात रसोईघर भी देखे जहां गृह-वासी अपने चाय या कॉफी खुद बना सकते हैं और कभी कभी अपना मनपसन्द खाना भी। उन वृद्धों ने मुझसे कहा—"एक सप्ताह में दो या तीन बार, हमें इस हाल के मंच पर कोई न कोई नाटक आदि दिखाया जाता है। प्रायः हम भाषण सुनते हैं जिसके साथ ही 'स्लाइड' भी दिखाये जाते हैं, और सप्ताह में एक बार हमें फिल्म भी दिखाया जाता है। हम स्कूलों की पितृ-सभाओं में भी सरगर्मी से भाग लेते हैं जिस सरगर्मी से 'नेशनल फ्रन्ट' की राजनैतिक गोष्ठियों में भाग लेते हैं। कम से कम तीन महीनों में एक बार हम अपने दिलबहलावे के लिये कोई न कोई कार्यक्रम आयोजित करते हैं

उस समय आपको हमें देखना चाहिये। हम प्रायः युवकों से अधिक नाचते हैं।" इस पर एक महिला ने अपना 'स्कर्ट' कुछ ऊंचा किया और दो एक बार नाची।

अब आगे बढ़िए। मेरा परिचय कराया गया श्रीमती वेल्ली वेगनर से। श्रीमती वेगनर पहले एक पुस्तकाध्यक्ष थीं और वह इस अवकाश-गृह के पुस्तकालय में १२०० पुस्तकों की देख-रेख करती हैं। इसके अतिरिक्त अपने साथ रहने वालों के लिये वह अधिकारियों के साथ पत्र-व्यवहार भी करती हैं—"हम में से आधे लोग ऐसे हैं जिन्हें पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक है। हर महीने हम में से ५० व्यक्ति थियेटर जाते हैं जहां हमें कम दाम पर टिकटें दी जाती हैं। हमारे दो टेलिविजन कमरों में, हर शाम, कोई भी जगह खाली नहीं रह पाती। हम में से कोई भी व्यक्ति संसार की महत्वपूर्ण घटनाओं को देखे बिना नहीं रह सकता जो टेलिविजन के द्वारा हमारे बहुत निकट लायी जाती हैं।..."

श्रीमती वेगनर का कमरा बड़े करीने से सजाया गया था और मैंने देखा कि नहाने-धोने की एक छोटी सी जगह दीवार के अन्दर बनायी गई है। हर कमरे में गर्म और ठण्डा पानी आता रहता है और जाड़ों में कमरों को गर्म रखने के लिये एक केन्द्रीय वैज्ञानिक व्यवस्था है। मकान की हर मंजिल में दो गुसलखाने हैं। दामों में कपड़ा भी शामिल है—और दाम भी क्या है? साधारण गृहों में दाम देना होता है १०० मार्क और नर्सिंग होम में १३० मार्क। इसमें रहने के अतिरिक्त सम्पूर्ण भोजन और दूसरी सुविधाएं भी शामिल हैं। गृह निवासियों के पास कमसे कम ४८ मार्क जेब खर्च के लिये होने चाहिएं।

इस अवकाश-गृह में औसतन ७५ और ८० वर्ष की बीच की आयु वाले लोग रहते हैं। यह वे लोग हैं, क्षीण शारीरिक अवस्था के कारण जिनकी इन गृहों में उनके घरों से भी बेहतर देख-रेख होती है। ज.ज.ग. में पेंशन पाने वालों की अधिक संख्या अपने निजी फ्लैटों में रहती है। यहां ६५ से अधिक आयु के पुरुषों, और ६० से अधिक आयु की स्त्रियों को पेंशन दी जाती है। कुछ ही समय पूर्व यहां पेंशन की रकम को बढ़ाया गया। अब पेंशन पाने वाले औसतन १६० से १८० मार्क तक प्रति मास पाते हैं। इसके अतिरिक्त अकेले रहने वाले अथवा असमर्थ पेंशन पाने वालों को १ मार्क की अतिरिक्त रकम मिलती है।

समाज कल्याण तथा निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा के कारण ज.ज.ग. में औसत आयु की दर ७० वर्ष तक बढ़ गई है।

पेंशन पाने वाले बहुत से लोग अब भी इतने स्वस्थ हैं कि वे कुछ और वर्षों तक बराबर काम करते रहते हैं। उन्हें अपनी पूरी पेंशन के अलावा काम करने का वेतन भी मिलता है। उदाहरण के लिये वायरलेस का सामान बनाने वाले एक राष्ट्रीय कारखाने में 'हान्स बाएन्श' कल पुरजे बनाने का काम करता है। वह अपने काम पर प्रति दिन चार घंटे लगा रहता है। उसे अपने काम से बहुत प्यार है। वह मशीनों और उपज के साधनों में बढ़ोती करने की बातें हमेशा सोचता रहता है और इसके बदले में उसे पर्याप्त भत्ता दिया जाता है। साथ ही साथ वह 'पेंशनर्ज क्लब' की परिषद् का सदस्य भी है। यह क्लब, नगर-प्रशासन के द्वारा एक पुराने फैक्टरी मालिक के घर में स्थापित किया गया है।

अन्तिम बार जब मैं वहां गया तो मैं एक अध्यापिका श्रीमती हेल्मदाख से मिला, जिसने उस शाम को क्लब के साप्ताहिक कार्यक्रम के रूप में गाने बजाने का प्रबन्ध करवाया था। क्लब का कार्यक्रम दिन के खाने से आरम्भ होता है, जिस में लगभग सौ पेंशन पाने वाले रहते हैं। इनके अतिरिक्त आस-पास के बूढ़े लोग भी इसमें भाग लेते हैं। यह खाना पीना लगभग मुफ्त ही मिलता है और फैक्टरी का कैन्टीन इसका प्रबन्ध करता है। जो पेंशन पाने वाले अकेले रहते हैं, उनके मकानों की देख-रेख करने के लिये पन्द्रह स्त्रियां नियुक्त की गयी हैं जिनकी सेवायें इन लोगों को मुफ्त प्राप्त हैं। इस सेवा का नियोजन "जर्मन जनवादी स्त्री दल" द्वारा किया जाता है।

अवकाश-गृह की पुस्तकाध्यक्ष, श्रीमती वाल्ली वागनर

हर शाम क्लब में कुछ न कुछ होता ही रहता है। शाम को ज्योंही मा-बाप अपने बच्चों को वापिस ले आते हैं तो छोटे-बड़े सभी लोग एकत्रित होते हैं (जिन माताओं को कभी अचानक ही कहीं काम पर जाना पड़ता है वे अपने बच्चों को बूढ़ी स्त्रियों की देख-रेख में रखती हैं)। ऐसे सम्मेलनों में मनोरंजक भाषण होते हैं और पर्दे पर 'स्लाइड' दिखाए जाते हैं। स्त्रियों के लिये भी विशेष कार्यक्रम होते हैं। उन लोगों के लिए भी विशेष कार्यक्रम होते हैं जो डाक टिकटों को इकट्ठा करना पसन्द करते हैं, या जो लोग मिलकर गाना बजाना चाहते हैं।

अन्त में मैं कुछ आंकड़े दे कर इस छोटे से विवरण को समाप्त करूंगा। ज.ज.ग. में,

(शेष पृष्ट १९ पर)

अवकाश प्राप्त करने के बाद भी श्री हांस बाएन्स औजार बनाने का काम करते हैं

भारत और ज.ज.ग. निर्माण के सहयोगी

दिल्ली विश्व-विद्यालय में जर्मन पुस्तक प्रदर्शनी

दिल्ली विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डा. चिन्तामणि देशमुख ने ११ अप्रैल के दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में जर्मन जनवादी गणतंत्र की पुस्तकों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी १७ अप्रैल तक खुली रही, और इसको पांच हजार से अधिक लोगों ने देखा। "भारत तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विनिमय की योजना के आधीन, ज.ज.ग. की इस पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था।

प्रदर्शनी में प्रदर्शित पुस्तकों की संख्या लगभग १२०० थी जिनमें से अधिकतर तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों से संबंधित थीं। इसके अतिरिक्त कला, संगीत तथा बच्चों से संबंधित विषयों पर भी अनेक पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं, जर्मन और अंग्रेजी भाषाओं में। जर्मन जनवादी गणतंत्र में पुस्तक उत्पादन किस सीमा तक प्रगति कर चुका है, उक्त प्रदर्शनी इसकी एक झांकी थी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में तकनीकी तथा वैज्ञानिक विषयों से संबंधित साहित्य बहुत भारी मात्रा में प्रकाशित होता है। इसका मुख्य कारण है विभिन्न वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में, ज.ज.ग. की जबरदस्त प्रगति। यहां की पुस्तकें कलात्मक—अर्थात् रूप-सज्जा आदि की दृष्टि से भी बहुत सुन्दर तथा आकर्षक होती हैं।

प्रति व्यक्ति उत्पादन की दृष्टि से, ज.ज.ग. दुनिया में सबसे बड़ा पुस्तक-उत्पादक देश है। केवल सन् १९६२ में यहां ६४६२ शीर्षकों की कुल ९९,४४०,००० किताबें छापी गयीं। ... ज.ज.ग. लगभग १०० देशों को अपनी पुस्तकें निर्यात करता है। सन् १९५३ से सन् १९६१ तक यहां का पुस्तक-निर्यात चार गुना बढ़ा।

लाइपजिक, जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे बड़ा पुस्तक प्रकाशन तथा मुद्रण केन्द्र है। ... हेमन्तकाल में आयोजित होने वाले लाइपजिक व्यापार मेले के अवसर पर, यहां की अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में, भारत पहली बार भाग लेगा। लाइपजिक में २०० पुस्तकालय, ५८ प्रकाशन-घर, १०० से अधिक छापेखाने और किताबें बेचने की ९० दुकानें हैं। यहां के कुछ छापेखाने तो १०० वर्ष पुराने हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के ३ डाक्टरों का दल भारत के दौरे पर आया था। बाईं से दाईं ओर: डा. फोएरेस्टर, श्री त्रेहन (भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रतिनिधि), श्री शूएनके (ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के सांस्कृतिक सलाहकार), डा. शापीस्स, श्रीमती शूएनके, और डा. रीजमन्न

ज. ज. ग. के डाक्टर, भारतीय प्रयत्नों से प्रभावित

भारत जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत, ज.ज.ग. के तीन सुप्रसिद्ध डाक्टर, गत मास, भारत के दौरे पर आये। ये डाक्टर संक्रामक रोगों के विशेषज्ञ हैं। अपने दौरे में इन्होंने नई दिल्ली, मद्रास और कलकत्ता के कई प्रतिष्ठित आरोग्य संस्थानों को देखा। दौरे की समाप्ति पर इन डाक्टरों से जब भारत-यात्रा में संचित प्रभावों और अनुभवों के बारे में पूछा गया, तो इनमें से एक, डक्टर फोएरेस्टर ने कहा, "मद्रास में हमने एक बहुत बड़ा

अस्पताल और चेचक से ग्रस्त कई रोगी देखे । ... इसी प्रकार हमने कलकत्ता में हैजे के कई रोगी भी देखे। स्वास्थ्य से संबंध रखने वाले भारतीय अधिकारी इन भयंकर रोगों के उन्मूलन के लिये जो प्रयत्न कर रहे हैं वे अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। इसी प्रकार मलेरिया को खतम करने के लिये भी यहां काफी अच्छा काम हो रहा है । भारत आने से पहले हमने यह सोचा था कि यहां हम मलेरिया के रोगियों को देखेंगे । लेकिन इस रोग के उन्मूलन कार्यक्रम इतनी सफलता से यहां चलाया गया है कि हमें मलेरिया से ग्रस्त रोगी देखने को नहीं मिले । हम अपने अनुभव, ज.ज.ग. के तरुण डाक्टरों तक पहुंचायेंगे और हमारी यह राय है कि ज.ज.ग. के डाक्टरों को भारत आकर हमारे अनुभवों से लाभ उठाना चाहिये । ... "

अन्य डाक्टर, श्री शपीस्स ने कहा कि भारतीय डाक्टरों से उनकी मुलाकातें बहुत ही सन्तोष-जनक रहीं । उन्होंने कहा : "हमने यहां के विभिन्न मेडिकल संस्थानों में, पीलिया और पेचिश जैसे संक्रामक रोगों के उन्मूलन संबंधी अनुसन्धान तथा चिकित्सा के बारे में कई व्याख्यान दिये । श्रोता डाक्टरों ने उनमें न केवल बहुत रुचि ही दिखाई, बल्कि उन्होंने वाद-विवाद में सक्रिय भाग भी लिया ।" डाक्टर शपीस्स ने यह भी महसूस किया कि भारतीय डाक्टर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के डाक्टरों के साथ रोगों के उन्मूलन में और मेडिकल अनुसन्धान में सहयोग देने के इच्छुक हैं ।..."

जर्मन डाक्टरों के दल के नेता डा. रीज़मन्न ने भारतीय यात्रा से संबंधित अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए कहा : "हमने भारत में कई अस्पताल, जीवाणु संस्थान और चिकित्सा अनुसंधान संस्थान देखे । इस कार्य में हमें हर प्रकार की सहायता उपलब्ध की गई । सहयोग प्रदान करने वाले सभी मित्रों के हम आभारी हैं । हम भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के विशेष रूप से आभारी हैं जिसने हमारे लिये देखने जांचने के सभी द्वार खुले रखे हैं। हम यहां से, अमूल्य अनुभव और प्रभाव लेकर स्वदेश लौट रहे हैं ।..."

ज.ज.ग. की हाकी टीम भारत से सन्तुष्ट लौटी

इस मास के प्रथम सप्ताह में जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक हाकी टीम, "भारत-ज.ज.ग. सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम" के अन्तर्गत भारत आयी, और यहां पांच मैच खेलकर, संयुक्त अरब गणराज्य के लिये रवाना हुई । जर्मन जनवादी गणतंत्र की टीम ने ५ अप्रैल को पहले ही मैच में, राष्ट्रपति की टीम को १ के मुकाबले ३ गोल से हरा दिया । ७ अप्रैल को ज.ज.ग. की टीम ने मेरठ में, बाबू की टीम से दूसरा मैच खेला । यह मैच बिना हार जीत के समाप्त हुआ । दूसरे दिन, अर्थात् ८ अप्रैल को भारत की राष्ट्रीय हाकी टीम और ज.ज.ग. की हाकी टीम में, जालन्धर में मुकाबला हुआ । भारताकी टीम ने १ गोल से वह मैच जीत लिया । इसी प्रकार ९ अप्रैल को करनाल में भी एक मैच खेला गया। यहां पंजाब हाकी टीम ने ज.ज ग. की टीम को १ के मुक़ाबले में २ गोलों से हरा दिया । चन्दीगढ़ में इन दो टीमों ने आखिरी मैच खेला । यहां ज.ज.ग. की टीम ने २ के मुक़ाबले में ३ गोल से पंजाब हाकी टीम को हरा दिया ।

कुल मिलाकर, उक्त पांच मैचों में दोनों छोर से कुल १३ गोल किये गये । इनमें से जर्मन जनवादी गणतंत्र की टीम ने ७ और भारत की विभिन्न टीमों ने ६ ही गोल किये । इस दृष्टि से ज.ज.ग. की टीम आश्वस्त हो सकती है अपने हाकीखेल से । ...अपने भारत के दौरे में ज.ज.ग. की हाकी टीम को, यहां के कुछ मंजे हुए हाकी टीमों तथा उच्चकोटि के हाकी खिलाड़ियों के साथ खेलने का सुअवसर प्राप्त हुआ ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की उक्त हाकी टीम ऐसी पहली टीम है जो भारत में खेलने आई । यहां के विश्वप्रसिद्ध आतिथ्य से यह टीम बहुत प्रभावित हुई । "भारतीय हाकी फेडरेशन" जिसने इन मैचों का प्रबन्ध किया था, का प्रबन्ध काफी सन्तोषजनक और अच्छा था । उक्त टीम यहां से यह दृढ़ धारणा लेकर स्वदेश की ओर रवाना हुई कि ज.ज.ग. और भारतीय खिलाड़ियों के बीच मैत्री के यह प्रथम संपर्क—जो "भारत तथा ज.ज.ग. के बीच सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सहयोग की योजना" के अधीन स्थापित हुए, भविष्य में न केवल अधिक सुदृढ़ ही होंगे बल्कि विस्तार भी पायेंगे । भारत से विदा लेते समय ज.ज.ग. के खिलाड़ियों ने अपने मेज़बानों और दर्शकों को धन्यवाद दिया जिन्होंने उनको यहां काफी प्रोत्साहन दिया था ।
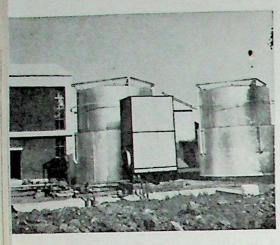
उत्तरी भारत ...ब
ज. ज. ग. ...ाक

मेसर्स 'नेशनल प्रोडक्ट्स' के दो चित्र (ऊपर और नीचे)
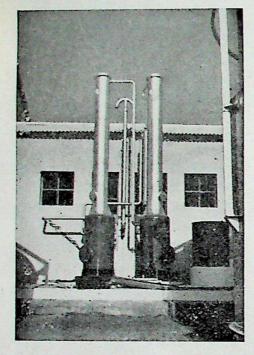
अक्सीजन संयंत्र के उद्घाटन-समारोह में सम्मिलित हुये (नीचे, बायें से दायें) : न. ए. प्रो. के निदेशक, श्री चन्द्रा; ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कुर्त बोत्तकर; दिल्ली के मुख्य आयुक्त, श्री धर्मवीर; न. ए. प्रो. के अध्यक्ष, श्री देव, और भारत के उद्योग मन्त्री, नित्यानंद कानूनगो

दिल्ली के निकट स्थित फरीदाबाद में १८ अप्रैल के दिन उत्तरी भारत के सबसे बड़े आक्सीजन-संयंत्र का उद्घाटन हुआ। इस संयंत्र की सभी मशीनें तथा उपकरण, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने सप्लाई किये हैं, और ज.ज.ग. के इंजीनियरों ने इन मशीनों को जोड़कर संयंत्र खड़ा करने में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

उद्घाटन-समारोह में बहुत चहल-पहल थी। भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के कर्मचारी वर्ग के अलावा, भारत सरकार के उद्योग मंत्री, श्री नित्यानन्द कानूनगो और कार्य, आवास तथा सप्लाई मंत्री, श्री मेहरचन्द खन्ना इस समारोह में विशेष अतिथियों के रूप में पधारे थे। . . . 'नेशनल एयर प्रोडक्ट्स' के महा-निदेशक, श्री चन्द्रा ने इस अवसर पर, आक्सीजन संयंत्र स्थापित करने की प्रायोजना में ज. ज. ग. की अमूल्य सहायता प्रदान करने की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस संयंत्र की स्थापना, भारत के औद्योगीकरण में एक देन है। . . . यह संयंत्र प्रति दिन ३,६०० घनमीटर आक्सीजन का उत्पादन करेगा। इसका दूसरा भाग, ऐसीटिलीन एकांश भी निर्माणाधीन है, और इस एकांश के लिये भी ज.ज.ग. ही उपकरण तथा यंत्र आदि सप्लाई करेगा। . . . पिछले चन्द वर्षों में, जर्मन जनवादी गण तंत्र की रासायनिकों के आयात-निर्यात करने वाली प्रमुख विदेश व्यापार संस्था ने भारत को, १६ आक्सीजन संयंत्र निर्यात किये हैं। इनमें से प्रत्येक संयंत्र की प्रति घण्टा उत्पादन क्षमता ६०–६३ घन मीटर है। ज.ज.ग. के इन सभी संयंत्रों के काम से भारत की खरीदार फर्में अथवा संस्थायें पूरी तरह सन्तुष्ट हैं।
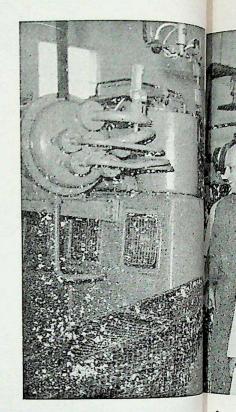
उद्घाटन के बाद, श्री देव तथा ... श्री फले...

उद... सा...

रत ...ब से बड़ा
...आक्सीजन संयन्त्र

श्री फ्लेमिंग एक दिलचस्प प्रयोग दिखा रहे हैं। गैस में एक बिस्की डाल रहे हैं।

श्री फ्लेमिंग उद्योग मंत्री कानूनगो

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने दुनिया के कई देशों को उक्त प्रकार के आक्सीजन संयंत्र निर्यात किये हैं। इन देशों में से कतिपय उल्लेखनीय देश हैं : सीरिया, कोलम्बिया, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, हंगरी, रूमानिया आदि ।

भारत को निर्यात किये गये उपर्युक्त प्रकार के आक्सीजन संयंत्र बहुत छोटे आकार-प्रकार के हैं। ज.ज.ग. दैत्याकार आक्सीजन संयंत्र निर्यात करने में समर्थ है, जिनकी उत्पादन-क्षमता १२५, २५०, ६००, १५००, ३००० और ६००० घट मीटर प्रति घण्टा है। हाल ही में, ज. ज. ग. ने ब्राज़ील को, ६००० घन मीटर उत्पादन की क्षमता वाला एक आक्सीजन संयंत्र निर्यात किया है।

....श्री कानूनगो अब "गैस-स्नात" बिस्की को छू रहे हैं जो पत्थर की तरह सख्त बन चुकी है

किसी भी देश के औद्योगिकरण के विकास के साथ साथ वहां आक्सीजन की आवश्यकतायें भी बढ़ती जाती हैं। इस्पात, लोहे तथा टीन के उद्योगों में धातुओं के काटने और झलाई के लिये आक्सीजन का बहुत उपयोग होता है। इस्पात के कारखानों में खासतौर से आक्सीजन बहुत इस्तेमाल होता है। कांच उद्योग तथा डाक्टरी क्षेत्र में भी इसका काफ़ी इस्तेमाल होता है। इसी प्रकार, आधुनिक रसायन-क्षेत्र विशेषकर कोयला परिष्करण में भी आक्सीजन काफी मात्रा में प्रयुक्त होता है।

उद्घाटन समारोह का एक दृश्य। भारत के सार्वजनिक तथा आवास मंत्री श्री मेहरचन्द खन्ना (बायें से तीसरे)

उद्घाटन समारोह का दूसरा दृश्य

भयंकर रोगों के खिलाफ संघर्ष

जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्वास्थ्य तथा मेडिक्ल सेवा ने लकवा, क्षय-रोग, कैंसर मधुमेह और हृदय तथा रुधिर-संचार से संबंधित बीमारियों के उन्मूलन अभियान में सराहनीय काम किया है। इस क.म से पहले, यहां के लोगों की काफी संख्या इन भंयकर रोगों का आहार हुआ करती थी।

पोलियो (लकवा) : जर्मन जनवादी गणतंत्र में पोलियो जैसे खतरनाक रोग को समूल नष्ट किया गया है। ऐसा करना इसलिये संभव हो सका, क्योंकि ज.ज.ग. में ४० वर्ष तक के सभी नागरिकों को पोलियो के टीके लगवा कर इस रोग से सुरक्षित किया गया है। सन् १९५८ में ९५८ व्यक्तिपो लियो का शिकार हुये, लेकिन सन् १९६१ में केवल ३ व्यक्तियों पर इस रोग ने हमला किया और सन् १९६३ में यहां एक भी व्यक्ति इस रोग की ज़द में नहीं आया।

क्षयरोग : क्षय-रोग के उन्मूलन में भी ज.ज.ग लगभग सफल हुआ है। जब से यहां बच्चों और किशोरों की, क्षयरोग संबंधी मेडिकल जांच नियमित रूप से होने लगी तब से अधिकतर रोगियों का, आरंभिक अवस्था में ही इस रोग का निदान और सफल इलाज हुआ है। उदाहरण के लिये सन् १९६१ में ज.ज.ग में केवल १३ बच्चे क्षय रोग से मरे।

क्षयरोग पर काबू पाने के लिये, कुछ वर्ष पहले ज. ज. ग. में प्रत्येक नागरिक की एक्स-रे जांच शुरू की गई। इस रोग का पता चलाने में यह जांच इतनी लाभदायक सिद्ध हुई कि सन् १९६२ में, १२ वर्ष की आयु से ऊपर सभी व्यक्तियों के लिए एक्स-रे जांच अनिवार्य कर दी गई। . . . श्वेरिन नामक ज़िले में, कई एक्स-रे एकांश, सन् १९५१ से वहां के निवासियों की जांच करते आ रहे हैं। चलते फिरते बीसियों एक्स-रे क शाए दूर से दूर स्थित गांवों में पहुंच कर, वहां रहने वाले लोगों की एक्स-रे जांच करते हैं। इस तरह, इस ज़िले की कुल आबादी (४००,०००) के लगभग २।३ भाग की, सन् १९६१ तक एक्स-रे जांच हो चुकी थी।

क्षय-रोग की चिकित्सा और रोगियों की चिकित्सा-उपरान्त देखभाल में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किये गये हैं ज.ज.ग में। इसके परिणामस्वरूप क्षय रोग से पीड़ित रोगियों की संख्या बहुत घट गई है। सन् १९४९ में, ज.ज.ग. के विभिन्न क्षय-रोग के अस्पतालों में ४०,००० से अधिक रोगियों के लिये स्थान थे। सन १९६२ में इन स्थानों की संख्या केवल २९,००० रह गई। लेकिन इस रोग के उन्मूलन संबंधी प्रयासों तथा अनुसन्धान पर अधिक धन खर्च किया जा रहा है। सन् १९६२ में इस भयंकर रोग के उन्मूलन के लिये कुल राष्ट्रीय राजस्व का दसवां भाग खर्च किय गया—अर्थात् २३ करोड़ मार्क की रक़म (१ मार्क=१.१२ न. पैसे)। इस का नतीजा यह निकला है कि सन् १९४९ में क्षय-रोग से मरने वालों की संख्या ११.३ प्रति १०,००० व्यक्ति से एकदम घट कर, सन् १९६२ में १.४२ प्रति १०,००० व्यक्ति पर आ गई। क्षय रोगियों की चिकित्सा होने के बाद उनको सात वर्षों तक देखभाल और निरीक्षण के आधीन रखा जाता है—अर्थात् अन्य देशों की तुलना में दुगुने समय तक।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के बर्लिन-बूख क्षेत्र में, एक बहुत बड़ा केन्द्रीय क्षय-रोग अनुसंधान संस्थान स्थित है। इसी प्रकार, यहां के बाद-बेरका नामक स्थान में, १,१०० स्थानों वाला एक केन्द्रीय क्षय-रोग आरोग्य—आश्रम है जहां ५० मेडिकल विशेषज्ञ बीमारों की देख-भाल करते हैं। ज.ज ग. की सरकार केवल इस आश्रम पर हर साल, १ करोड़ और पांच लाख मार्क की रकम खर्च करती है। अस्पतालों अथवा आरोग्य आश्रमों में रहने के दौरान क्षय रोगियों को अपने अपने वेतनों का ९० प्रतिशत भाग मिलता है। इसके अलावा वहां, इलाज और दवाइयों पर जो कुछ खर्च होता है, वह खर्च भी सरकार ही देती है

रोगियों को पुनः स्थापित करने के लि भी ज.ज ग. में कई कदम उठाये जाते हैं ठीक होने पर, बाल रोगियों के लिये नियमि शिक्षा की, युवक रोगियों के लिये उचि ट्रेनिंग की, और बूढ़े रोगियों के लिये ह फुलके व्यवसाय की व्यवस्था की जाती है इस प्रकार रोगी हमेशा अपने आपको साम जिक जीवन का एक अंग मानते हैं औ भविष्य में किसी पर बोझ बनने की चिन्ता एकदम मुक्त हो जाते हैं। क्षय रोगियों पुनः स्थापन से संबंधित इन कामों के लि सरकार, हर साल, ३ करोड़ मार्क की धनरा खर्च करती है।

कैंसर : दुनिय के अन्य देशों की तर जर्मन जनवादी गणतंत्र में भी, कैन्सर ए बहुत बड़ी समस्या है। यह एक ऐसा रोग जो प्रत्याशित आयु के लम्बे होने के सा साथ बढ़ने की प्रवृत्ति दिखात है। ज.ज.ग सन् १९५१ में कैन्सर से ३२,२९९ व्यक्ति मरे, और सन् १९६० में यह संख्या बढ़कर ३९,८७९ तक पहुंच गई।

जब तक इस भयंकर रोग के उन्मूलन लिये कोई अचूक विधि (औषधि आदि) न मिलती, तब तक के लिये प्रारंभिक अवस् में ही कैन्सर का निदान; शल्य क्रिया द्वा रोगग्रस्त हिस्से को काटकर अलग करना किरण-चिकित्सा इस रोग को रोकने के लि अत्यन्त आवश्यक तत्व हैं। . . . ज.ज.ग लगभग २०० कैन्सर परामर्श केन्द्र हैं ज लोगों की नियमित जांच होती है। कैन्सर पता लगाने के लिये। इसके अतिरि टी. बी. एक्स-रे केन्द्रों में फेफड़ों के कैन् का तुरन्त पता लग जाता है। कैन्सर सं जांच अनिवार्य न होने पर भी, औरतों साल में एक बार यह जांच करने के लि काफी प्रोत्साहन दिया जाता है। यह ज निःशुल्क होती है। पिछले तीन वर्षों में लाख औरतों ने इस सुविधा का लाभ उठा

सन् १९६२ में जांच द्वारा, ज.ज.ग. में, ५०,७५३ व्यक्तियों में कैन्सर रोग का पता चला। इनमें से अधिकांश रोगी, रोग की प्रथम अवस्था में ही थे। इसलिये इलाज से उनको रोग-मुक्त किया जा सकता है। इलाज के दौरान रोगियों को रोग-वेतन दिया जाता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध क्लिनिकों और बड़े-बड़े अस्पतालों में कैन्सर विभाग जुड़े हुये हैं। सन् १९४८ में, बर्लिन-बुख क्षेत्र में, एक 'प्रायोगिक कैन्सर अनुसंधान संस्थान" की स्थापना की गई। कैन्सर संबंधी अनुसन्धान और चिकित्सा पर, ज.ज.ग. सरकार, हर साल, ४५ लाख मार्क की रकम खर्च करती है। ... सन् १९५७ से, ४५ हज़ार व्यक्तियों ने, ११ स्वास्थ्य-लाभ गृहों में तीन-तीन, चार-चार हफ्ते बिताये हैं जो कैन्सर रोगियों के लिये सुरक्षित रखे गये हैं।

मधुमेह (डयाबीटीज़) : ज.ज.ग. में मधुमेह की बीमारी भी बढ़ती जा रही है। यहां २५६ मधुमेह परामर्श-केन्द्र हैं जहां इस रोग से पीड़ित रोगियों को हर प्रकार की डाक्टरी सहायता दी जाती है। ज.ज.ग. में इस रोग का उन्मूलन अभियान--जो यूरोप में मधुमेह के खिलाफ सबसे बड़ा प्रयत्न है--सन् १९६२ में आरंभ हुआ। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है रोग को प्राथमिक अवस्था में ही पकड़ना। आज तक यहां १३ लाख लोगों की जांच हुई है जिनमें १.५ प्रतिशत व्यक्ति इस रोग से पीड़ित पाये गये।

ज.ज.ग. के कार्लस्बर्ग नामक स्थान में एक बड़ा आधुनिक "मधुमेह अनुसन्धान संस्थान" स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त यहां मधुमेह रोगियों के लिये दो आरोग्य-आश्रम कई छोटे-बड़े विशिष्ट क्लिनिक, तीन ट्रेड-यूनियन अवकाश-गृह, एक बोर्डिंग स्कूल और कई प्रसूति-गृह सुरक्षित रखे गये हैं।

हाजतमन्द और सीमित आर्थिक साधन वाले क्षय, मधुमेह तथा कैन्सर से पीड़ित रोगियों के लिये कल्याण-कोष स्थापित किया गया है। इस कोष से उनको अतिरिक्त पैसा दिया जाता है, अच्छा खाने पीने और रहने के लिये।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

रस-धारा

प्रकृति और प्रेम का संबंध संभवतः उतना ही प्राचीन है जितना आदम और हव्वा का। कवियों ने प्रकृति को प्रणय के अनुपम सहचर और प्रेरक के रूप में तभी से चित्रित किया है, जब से शायद आदि कवि ने प्रेम के सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करना शुरू किया है। यह कथन किसी एक देश विशेष का अपवाद नहीं, वरन् सभी देशों के सभी प्रणयाकुल मनुष्यों के लिये सत्य है।

१२-१३वीं शताब्दी के एक जर्मन कवि **वाल्टर फानदेर वोगेलवाइडे** (११६०-७०-१२३०) ने, अपनी एक कविता में, एक प्रेयसी के प्रेम की मधुर भावनाओं को वाणी दी है। इसी जर्मन कविता के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर पाठकों के लिये प्रस्तुत है।

--संपादक

लिंडन वृक्षों की छाया में

चरागाह में
लिन्डन वृक्षों के आंचल में
हम पड़े रहे
बाहुपाश में बद्ध।
प्यार के उद्गार के कुछ चिन्ह
जीवित हैं अब भी वहां
यदि तुम देखना चाहो :
घास मसली
दबी, टूटी कलियां--
हिश्श....चुप, सुनो
घाटी की गोद से वन की ओट में
बुलबुल का मधुर गीत फूटा है :
तिरा...लीरा...लीरा...ला...

चरागाह के वे नटखट झरने :
मेरा प्रियतम पहले
यहीं मिला था मुझसे,
यहीं दिये थे उसने कितने अनुपम उपहार,
(अल्हड़ यौवन तज कर)
यहीं मिला था मुझको नारियत्व का वरदान,
भाग्यवती बनी उस दिन मैं।
पड़ी रही निश्चल मैं और
उसने असंख्य चुम्बनों के मोती
बरसाये मुझ पर—
साक्षी है उस दिन के
ये अधर अनारी मेरे।
आज भी बुलबुल गाती है
तिरा...लीरा...लीरा...ला...

वहां...उधर...
मेरे प्रियतम ने सजाई थी सेज
प्रफुल्लित पुष्पों की--
और सारा कुंज
हमारे वास, मुक्त हास से गूंज उठा था।
आज भी यदि निकल आये कोई उस ओर
दबी दूब, मर्दित गुलाब कहेंगे उसको
कि मुदित काया मेरी कहां बिछी थी।
और बुलबुल का कंठस्वर फूटेगा :
तिरा...लीरा...लीरा...ला...

यदि कोई, जान जाये
हमारे इस मधुर रहस्य को
(खुदा ऐसा न करे),
कि मेरा प्रियतम मेरे पास वहां पड़ा था
लज्जा से मैं मर जाऊंगी,
और मैं उदास...बहुत उदास होऊंगी।
हम दोनों ने मिलकर
वहां किया जो कुछ
कभी, कोई भी न जानने पाये
बिना मेरे, मेरे प्रियतम के
और उस छोटी बुलबुल के
जो हमारे मधुर रहस्य की साक्षी है
जो आज भी गाती है वही मोहक गीत:
तिरा...लीरा...लीरा...ला...

रूपान्तरकार :
ओम् पण्डित 'पम्पोश'

प्राचीन मिश्र का बर्लिन संग्रहालय

हाल ही में, मिश्र देश के विश्वप्रसिद्ध संग्रहालय का, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, बर्लिन में, उद्घाटन हुआ ।

इस संग्रहालय के तीन कक्षों में, मिश्र के उन प्राचीन पंथों की वस्तुएं रखी गई हैं जो मृत्यु-पूजक थे । इन वस्तुओं में, औरत की एक ममी और बिल्ली, गीदड़ तथा एक जलपक्षी के रखी हुई ममियां विशेष आकर्षण की वस्तुएं हैं। प्राचीन मिश्र की ऐसी ही बहुमूल्य संकलित वस्तुओं में ममियों के चित्र, मरणोपरान्त "जीवन" के लिये मृतकों को दिये गये उपहार, शवों को ले जाने वाली गाड़ियां और ताबूत आदि विशेष उल्लेखनीय हैं ।

दूसरे महायुद्ध के बाद पहली बार, उक्त संग्रहालय में, ने-ऊसेर-रे द्वारा २,५०० वर्ष ईसा पूर्व अपनी समाधि के पास ही अबूसीर के सूर्य मन्दिर का द्वार भी दर्शकों को देखने को मिलेगा । इस द्वार पर, विविध रंगों से खचित प्राचीन मिश्रियों के रीति-रिवाज और बारह महीनों में पशुओं तथा पादपों का विकास दिखाया गया है । सूर्य मन्दिर का यह द्वार, वर्तमान शताब्दी के आरंभ में, जर्मन ओरियण्ट सोसाइटी को नील नदी की घाटी की खुदाई में प्राप्त हुआ । दूसरे महायुद्ध की बमबारी में मन्दिर के द्वार को काफी क्षति पहुंची थी और कुछ अमूल्य वस्तुएं नष्ट भी हो गयीं । लेकिन रंगों में खचित उल्लिखित चित्र फिर से जोड़कर सुरक्षित किये गये ।

सन् १८२३ में स्थापित किया गया मिश्र-संग्रहालय के कई भाग दूसरे महायुद्ध में नष्ट हुए । यहां रखे गये अमूल्य संकलनों का एक भाग, युद्ध के दिनों में, बर्लिन से थूरिनजिया लिये गये ताकि वे भी तबाह न हो जाएं । हिटलर की पराजय के समय ये संग्रह अमरीकियों के कब्ज़े में चले गये । अब कई वर्षों से ये पश्चिम बर्लिन में रखे हुये हैं । विजयी सोवियत सेनाओं ने संग्रहालय के अन्य प्राचीन संग्रह बचा लिये थे जो उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र को लौटा दिये सन् १९५८ में ।
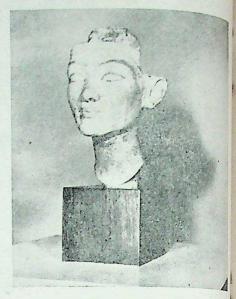
मिश्री संग्रहालय की एक अनुपम वस्तु : ईसा से १३५० वर्ष पूर्व प्रस्तर-खण्ड से तराशी गई, एखनातोन और नेफ़रताई की पुत्री, अनचेस-एन-पा-अतोन की मूर्ति

उपर्युक्त मिश्री संग्रहालय , जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के एक द्वीप में पुनः संस्थापित किया गया है ।
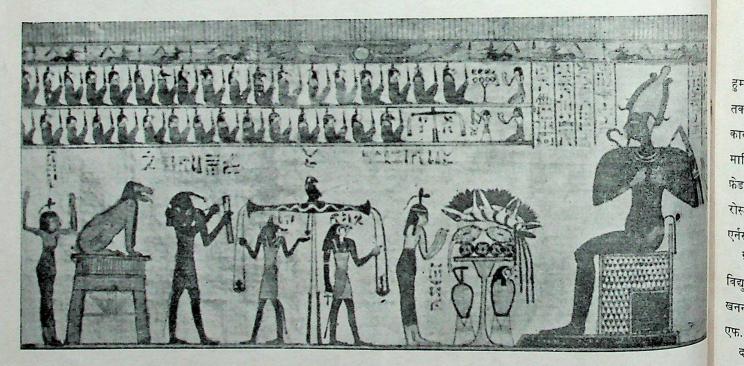
मिश्री संग्रहालय में पापइरस-संग्रह, दुनिया का सबसे बड़ा तथा अत्यंत मूल्यवान संकलन है । ये भित्ति-चित्र ११०० ईसा पूर्व के हैं

तथ्य और आंकड़े

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के विश्वविद्यालयों और बड़े-बड़े कालेजों में विद्यार्थियों की संख्या में वार्षिक वृद्धि के आंकड़े

वर्ष	कुल संख्या	छात्राओं की संख्या
१९५१	२७,८२२	६ ५१०
१९५५	६०,१४८	१७,८५०
१९५८	६४,१०६	१९,६६४
१९५९	६६० २७	२१,४९५
१९६०	६९,१२९	२१,९००
१९६१	७४,२०५	२३,७२९
१९६२	७७ २२७	२५,४८८

सन् १९६२ में ५०० से अधिक संख्या वाले प्रमुख विश्वविद्यालयों और कालेजों के नाम और उनमें पढ़ने वाले छात्रों की संख्या के आंकड़े

विश्वविद्यालय और कालेज	छात्रों की कुल संख्या	छात्राओं की प्रतिशत संख्या
हुम्वोल्द्त विश्वविद्यालय, र्बलिन	१०,९८८	४६.०
तकनीकी विश्वविद्यालय, ड्रेस्डेन	१०,३८७	९.२
कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय, लाइपज़िक	९,९०२	४२.५
र्मािटन लूतर विश्वविद्यालय, हाल्ले	४,६०३	४३.३
फ्रेडरिख शिल्लर विश्वविद्यालय, येना	४,२३५	४२.५
रोस्टोक विश्वविद्यालय, रोस्टोक	३,९२९	४१.४
एर्नस्त मोरित्स आरन्द्त विश्वविद्यालय ग्राइफ्सवाल्द	२,८७६	४५.६
विद्युत इंजीनियरी कालेज, इल्लेमनाउ	२,४१७	४.८
खनन अकादमी, फ्राइबर्ग	२,०६८	६.९
एफ. लिस्ट परिवहन इंजीनियर अकादमी, ड्रेस्डेन	२,०५६	६.६
शिक्षक कालेज, पोत्सदाम	१,९५१	४८.८
तकनीकी कालेज, माग्देबुर्ग	१,७०७	४.०
शिक्षक संस्थान, एरफुर्त	१,५६२	४७.१
इंजीनियरी क लेज, कार्ल मार्क्स स्तादृत	१,३८९	३.५
रसायन का तकनीकी कालेज, ल्यूना मेरजेबुर्ग	१,३७४	१५.२
अर्थशास्त्र का कालेज, र्बलिन	१,३०६	३५.५
शिक्षक संस्थान, ड्रेस्डेन	१,२५७	४९.५
शिक्षक संस्थान, हाल्ले	१,२५४	४३.९
वास्तु-कला और भवन-निर्माण क कालेज, वाइमर	१,१६४	१०.३
शारीरिक विज्ञान की जर्मन अकादमी लाइपज़िक	१,१०१	३६.९
शिक्षक संस्थान, कार्लमार्क्स स्तादृत	१०६६	३६.४
शिक्षक संस्थान लाइपज़िक	१,०६१	६१.३
शिक्षक संस्थान, गूदस्तरी	१०२९	४४.८
भवन-निर्माण अकादमी, लाइपजिक	९३७	५.८
अन्तर्देशीय व्यापार का क.लेज, लाइपजिक	७१०	५१.५
मेडिकल अकादमी, माग्देबुर्ग	६९८	५६.०
मेडिकल अकादेमी, ड्रेस्डेन	६८९	६०.७
शिक्षक संस्थान, म्यूएलहाउजेन	५०३	३७.२

नोट : उपर्युक्त विद्यार्थी संख्या में, ज. ज. ग. के विभिन्न शिक्षा संस्थानों में अध्ययन करने वाले अन्य देशों के सैकड़ों विद्यार्थी सम्मिलित नहीं हैं।

विषयों के अनुसार अध्ययन-रत छात्रों की संख्या (सन् १९६२ में)

विषय	छात्र संख्या
गणित तथा अन्य विज्ञान	८,८५६
तकनीकी विषय	१८,९३०
कृषि तथा वन-विज्ञान	४,९१२
पशु चिकित्सा	१,२०४
डाक्टरी	१३,८०१

(शेष पृष्ट २२ पर)

चिट्ठी पत्री

महाशय,

आपके दूतावास से प्रकाशित 'सूचना पत्रिका' देखी । जर्मन जनवादी गणतंत्र के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये यह अकेली पत्रिका है । इसमें प्रकाशित लेख शैक्षणिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं । इसकी एक प्रति हर सार्वजनिक संस्था में रहनी चाहिये । मेरे पास अन्य दूतावासों की पत्रिकाएं भी आती हैं, लेकिन 'सूचना पत्रिका' विशेष आकर्षक लगी । क्या मैं आशा करूं कि आप निम्न पते पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिये हमारी संस्था को 'सूचना पत्रिका' की एक प्रति भेजेंगे । आशा है आप सूचना पत्रिका नियमित रूप से भेजकर हमें अनुगृहीत करेंगे ।

गोविन्द शर्मा
पो. शेखपुर, मुंगेर,
बिहार

श्रीमान्

नमस्ते । मैंने आपकी 'सूचना पत्रिका' अपने दोस्त दिलीप कुमार कौल के यहां पाई । मगर वह सितम्बर, १९६३ की थी । वह आपका ग्राहक बना हुआ है ।

मैंने आपकी पत्रिका बड़े चाव से पढ़ी । इसमें लिखी हुई हिन्दी बड़ी अच्छी लगी । छपाई में भी यह लाजवाब थी । मेरे दिल में यह बात आई कि ऐसी सुन्दर पत्रिका को अपने कालेज रीडिंग रूम के लिये मंगवा लें । इसलिये आज मैं आपको पत्रिका अपने छोटे से रीडिंग रूम को भेजने के लिये लिख रहा हूं ।

हमारे रीडिंग रूम में यू.एस.एस.आर. व यू.एस.ए. आदि देशों की पत्रिकाएं आती हैं । आशा है कि आपकी पत्रिका भी अब आती रहेगी और हमारे रीडिंग रूम में आने वाले लोग भी इसकी तारीफ करेंगे । आशा है कि आप मेरी यह अभिलाषा पूरी करेंगे ।

पत्रिका के इन्तजार में

विजय मोहन कौल
श्रीनगर, काश्मीर

नमस्कार,

मैं एक साधारण पुस्तकालय का लाइब्रेरियन हूं । आज कई वर्षों से इसी पुस्तकालय की सेवा करना अपना मूल कर्त्तव्य समझता रहा ।

कारणवश आज शिबली कालेज के पुस्तकालय में आने का अवसर मिला । यहां पर मैंने अनेकों पुस्तकें तथा समाचार पत्र आदि देखा ।

परन्तु आपके यहां की एक 'सूचना पत्रिका' देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ । इस पत्रिका को अपने पुस्तकालय में भी मंगाना चाहता हूं : अतः आप अपने यहां के पत्रिका संबंधी नियमों से तथा उसके वार्षिक व्यय से निम्न पते पर तुरंत सूचित करके मुझे भी अपना ग्राहक बनाने की कृपा करें । मैं आशा करता हूं कि आप तुरन्त सूचित करेंगें ।

सैयद नवाजिश रज़ा
पो. घोसी
आजमगढ़ (उ. प्र.)

प्रिय महोदय,

सादर वन्दे ।

आज प्रातः पर्यटन करते हुए मुझे आपकी 'सूचना पत्रिका' किसी सज्जन से उपलब्ध हुई । पढ़कर व उसका स्वरूप देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई । मैं तो यह मानूंगा कि आपने इस छोटी सी पत्रिका में "गागर में सागर" वाली कहावत चरितार्थ कर दी है । पत्रिका से मुझे 'जर्मन जनवादी गणतंत्र' के बारे में काफी जानकारी मिली है ।

इस मार्च के अंक में भारत व जर्मनी के मध्य सहयोग भावना के "चित्रों" द्वारा व "तथ्य और आंकड़ों" द्वारा मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों देशों में व्यापार काफी बढ़ा हुआ है । इसकेद्वारा भारत व जर्मनी के मध्य मैत्री सुदृढ़ होती जा रही है । इस अंक में "लिप्सा" नामक जो कविता प्रकाशित हुई है उसने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है । अतः मेरी ओर से पं. 'पम्पोश' को हार्दिक बधाई ।

मेरी सुदृढ़ इच्छा है कि मैं भी इस पत्रिका का पाठक बनूं । अतः आपसे नम्र निवेदन है कि पत्रिका के पाठक बनने के नियम तथा फार्म एक पत्रिका का नमूना मुझे प्रेषित करते हुए कृतार्थ करें ।

पं. सत्यनारायण भिषगाचार्य
राजस्थान

महोदय,

आपके द्वारा भेजी 'सूचना पत्रिका', मार्च ६४ का अंक मुझे प्राप्त हो चुका है । मैंने पत्रिका पढ़ी व सभी बन्दियों ने उसका अवलोकन किया । सभी को पत्रिका बहुत पसन्द आई ।

मैं कामना करता हूं कि पत्रिका दिनोंदिन उन्नति करे । साथ ही आप हमें नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहने का कष्ट करेंगे ।

कष्ट के लिये धन्यवाद ।

वीरेन्द्र कुमार
ज़िला कारागार
होशंगाबाद

प्रिय महोदय,

सादर नमस्कार ।

एक स्थान पर आपकी 'सूचना पत्रिका' देखने को मिली । मुखपृष्ठ ही देखकर मुग्ध हो गया । 'चिट्ठी-पत्री' व कविताओं का संग्रह बहुत अच्छे लगे । क्या आप ऐसी ज्ञानप्रद पत्रिका को हमारे पुस्तकालय को भेजने का कष्ट करेंगे । इससे अनेकों पाठक लाभ उठायेंगे ।

बहुत से पाठक वर्तमान 'जर्मन समस्या' तथा जर्मनी की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नति के बारे में भी जानना चाहते हैं । साथ ही वे यह भी जानना चाहते हैं कि 'पूर्वी जर्मनी' और 'पश्चिमी जर्मनी' क्या हैं ? जर्मनी की पत्रिकाओं के बारे में जानने की उनकी बहुत इच्छा है । आशा है आप इन बातों की जानकारी देने वाली पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाओं को शीघ्र से शीघ्र भेजेंगे । साथ ही सूचना पत्रिका के प्रकाशित होने पर उसकी प्रति भी हर महीने अवश्य भेजें ।

ललित चन्द
श्री आदिनाथ पुस्तकालय
बारा

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न : अलीगढ़ (उ.प्र.) से श्री अब्दुल सलीम खां पूछते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुल कितने विश्वविद्यालय हैं और उनमें कुल कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं ?

उत्तर : जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुल सात बड़े-बड़े विश्वविद्याय हैं। इनके नाम हैं हूम्बोल्द्त वि. वि., बर्लिन; तकनीकी वि. वि. ड्रेस्डेन, कार्ल मार्क्स वि. वि., लाइपजिक, मार्टिन लूथर वि. वि., हाल्ले; फ्रेदरिख शिल्लर वि. वि., येना; रोस्टोक वि. वि. और एर्नस्त मोरत्सि आर्रनंद्त वि. वि., ग्राइफ्स्वाल्द। इनमें पढ़ने वाले छात्र छात्राओं की क्रमानुसार संख्या इस प्रकार है : १०,९८८; १०,३८७, ६,८०२; ४,६०३; ४,२३५; ३,९२६ और २,८७६--अर्थात् कुल ४६,८२० विद्यार्थी (ये आंकड़े सन् १९६३ के मध्य तक के हैं)।

प्रश्न : दिल्ली से श्री धर्मनाथ प्रसाद का एक प्रश्न है : जर्मन जनवादी गणतंत्र की कुल जनसंख्या कितनी है ? जीवन तथा मृत्युदर पर भी कुछ प्रकाश डालिये।

उत्तर : सन् १९६२ के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जर्मन जनवादी गणपंत्र की कुल जनसंख्या थी एक करोड़, इकहत्तर लाख, पैंतीस हज़ार, आठ सौ सतसठ--१,७१३,५,८६७। ...प्रति १००० व्यक्तियों पर १७.५ बच्चे जन्म लेते हैं और १३. मर जाते हैं।

प्रश्न : हरद्वार (उ.प्र.) से श्री नानक चन्द गुप्त पूछते हैं : जर्मन जनवादी गणतंत्र में कौन-कौन से दिन राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाये जाते हैं ?

उत्तर : यह तो आप जानते ही होंगे कि जर्मन भूमि पर इस समय दो राज्य हैं, पश्चिमी जर्मनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र। सन् १९४९ में जर्मनी का विभाजन हुआ और ७ अक्तूबर, सन् १९४९ के दिन जर्मन भूमि पर प्रथम शांतिप्रिय और समाजवादी राज्य--अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र का जन्म हुआ। इसलिये ज.ज.ग. में, ७ अक्तूबर अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह दिन वहां राष्ट्रीय पर्व की हैसियत रखता है।

प्रत्येक समाजवादी देश के लिये मई दिवस--अर्थात् मई मास का पहला दिन--राष्ट्रीय पर्व का दिन है। यह श्रमिकों का दिन है, दुनिया भर के श्रमिकों का पर्व। ज.ज.ग. में भी मई दिवस, १ मई, राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

ज.ज.ग. का एक अन्य राष्ट्रीय महत्व का दिन है ७ मई। इस दिन का भी एक छोटा किन्तु महत्वपूर्न इतिहास है। सन् १९४५ में सोवियत संघ की सेनाओं ने हिटलर की क्रूर, फासिस्त सेनाओं की कमर तोड़ दी थी, और जर्मनी को फासिस्त राक्षस के चंगुल से मुक्त किया था। ७ मई इसी मुक्ति के स्मृति रूप में तब से राष्ट्रीय उत्सव के रूप में मनाया जाता है, हर साल।

इन तीन राष्ट्रीय पर्वों के अतिरिक्त भी कुछ और ऐसे दिन हैं जो जर्मन जनवादी गणतंत्र में उत्सवों और त्योहारों के रूप में मनाये जाते हैं जैसे क्रिस्मस, नये वर्ष का पहला दिन (न्यू इयर्स डे), बाल दिवस (१ जून) आदि।

प्रश्न : श्रीनगर (काश्मीर) से द्वारिकानाथ दर ने यह प्रश्न भेजा है : क्या ज.ज.ग. में केवल एक ही राजनीतिक पार्टी काम करती है ? यदि नहीं तो, प्रमुख राजनीतिक दलों के नाम क्या हैं ?

उत्तर : जी नहीं, जर्मन जनवादी गणतंत्र में केवल एक ही राजनीतिक पार्टी नहीं, बल्कि पांच राजनीतिक पार्टियां काम कर रही हैं। इनके नाम हैं : जर्मन सामाजवादी एकता पार्टी, जर्मन डेमोक्रेटिक किसान पार्टी, लिबरल डिमोक्रेटिक पार्टी, जर्मन क्रिश्चियशन डेमोक्रेटिक यूनियन, और जर्मन नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी। ये राजनीतिक पार्टियां, ज.ज.ग. के विभिन्न वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं, यहां की लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर), नगर पालिकाओं, सहकारी समितयों और ग्राम स्वायत्त शासन सभाओं आदि में अपने निर्वाचित प्रतिनिधि भेजकर। जर्मन समाजवादी एकता पार्टी, ज.ज.ग. की सर्वप्रमुख राजनीतिक पार्टी है।

वृद्ध जनों की देख-भाल

(पृष्ठ ९ का शेष)

अभी तक १२०० अवकाश-गृह तथा नर्सिंग होम स्थापित किये गये हैं। इनके अतिरिक्त २५० 'पेंशनर्ज क्लब', और पेंशन पाने वालों के लिए ऐसे विशेष कमरे हैं जो कि एक छोटे से क्लब का ही रूप हैं। ये 'नेशनल फ्रंट' तथा 'जनएकता संगठन' के द्वारा संचालित होते हैं। लगभग ३० लाख वृद्ध जन इन संस्थाओं में आते-जाते रहते हैं। ये संस्थाएं, अवकाश-गृह तथा क्लब आदि समाज-कल्याण और स्वास्थ्य संबंधी देख-रेख का एक अभिन्न अंग है, जिस पर जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने वार्षिक बजट का २५ प्रतिशत भाग खर्च करता है।

(पृष्ठ १५ का शेष)

हृदय और रुधिर संचार रोग : ये रोग भी काफी लोगों की अकाल मृत्यु के कारण हैं। इन रोगों से पीड़ित रोगियों की बढ़ती संख्या चिन्ता का विषय है, ज. ज. ग. में। इन रोगों से मरने वालों की संख्या सन् १९५१ में ४०,०८४ से बढ़कर सन् १९६० में ४९,३८४ तक पहुंची। चिकित्सा की आधुनिक विधियों ने अब, इन रोगों की औसत दर घटा दी है।

बर्लिन, लाइपजिक तथा हाल्ले के विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध अस्पतालों में हृदय और रुधिर-वाहिकाओं के अति सूक्ष्म आपरेशन किये जाते हैं। इन रोगों के निदान तथा चिकित्सा से संबंधित कई नई विधियां भी अपनाई गई हैं। ड्रेस्डेन में स्थित "विकिरण विज्ञान एवं मेडिकल इलेक्ट्रानिकी का केन्द्र" इन रोगों के अनुसन्धान में अत्यन्त सराहनीय कार्य कर रहा है।

समाचार

पश्चिम जर्मन सेना का भूतपूर्व नाज़ी युद्ध अपराधी

१२ अप्रैल, १९६४ के अपने प्रकाशन में इटली की शक्तिशाली राजनीतिक पार्टी 'इटली समाजवादी पार्टी' के विश्वप्रसिद्ध मुखपत्र दैनिक "अवांती" ने, पश्चिमी जर्मनी सेना के एक प्रमुख इंस्पेक्टर जनरल, हांइज़ त्रेतनर के दूसरे महायुद्ध में किये गये अपराधों का भंडा फोड़ दिया है। उक्त अखबार ने अपने प्रथम पृष्ठ पर मोटे-मोटे शब्दों में लिखा "त्रेतनर : एक पुनः-स्थापित नाज़ी"। यहां इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर संकेत करना आवश्यक है कि इटली की समाजवादी पार्टी के नेता, श्री पीत्रो नेनी इटली के उप प्रधान मंत्री हैं। इस नाते 'अवांती' के उपर्युक्त समाचार को राजनीतिक महत्व दिया जा रहा है।

'अवांति' ने हाइंज़ त्रेतनर के बारे में लिखा है : "पश्चिमी जर्मन सेना के इस प्रमुख अफसर की जीवन झांकी यह है : सात वर्षों में वह, कप्तान से हिटलर का लेफटिनेण्ट जनरल बन गया। उसने गएरनिका और रोत्तरड़ाम पर बम वर्षा की। इटली के फ्लोरेन्स नगर के पुलों और सड़कों को बमों से उड़ा देने का इसी अफसर ने हुक्म दिया। नाज़ी विरोधी संघर्ष में भाग लेने वाले योद्धाओं के कत्लेआम करने का भी उस पर संदेह किया जाता है।" ... इस भूतपूर्व नाज़ी जनरल के कुकृत्यों तथा अपराधों का पर्दाफाश करने के बाद, अन्त में 'अवांती' इस निर्णय पर पहुंचा है : "जनरल त्रेतनर पर लगाये गये उक्त अभियोग बहुत गंभीर हैं जो चारों ओर से उस पर लगाये जा रहे हैं। यह केवल समाजवादी देशों का प्रचारमात्र नहीं है। ..."

विश्व शांति आन्दोलन का वार्षिक महोत्सव

१९ अप्रैल के दिन यहां "विश्व शांति आन्दोलन" का १५वां वार्षिक महोत्सव मनाया गया। यूरोपीय देशों के शांति आन्दोलन के अनेक प्रतिनिधि इस महोत्सव में शामिल हुए। इनके अतिरिक्त, विश्व शांति परिषद् के प्रतिनिधि, पादरी फ्रांसिस बोस्क भी इसमें उपस्थित थे। विश्व शांति आन्दोलन के इस महोत्सव के दौरान, जर्मन जनवादी गणतंत्र के ३३ शांति कर्मी—जिनमें विश्व प्रसिद्ध उपन्यास "भेड़ियों के घेरे में" के लेखक श्री ब्रूनो आपित्स भी शामिल थे—जर्मन शांति पदक से विभूषित किये गये।

ज. ज. ग. में शेक्सपियर महोत्सव

विश्व प्रसिद्ध अंग्रेज़ी नाटककार तथा कवि, स्वर्गीय विलियम शेक्सपियर की चौथी जन्म-शति, १९ अप्रैल के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की शेक्सपियर समिति के तत्वावधान में वाइमर महल में मनाई गई। इस समारोह में १४ देशों के निमंत्रित प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

इस महान नाटककार की चौथी जन्म-शताब्दी की पुण्य स्मृति में इस वर्ष के अन्त तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शेक्सपियर के अनेक नाटकों का अभिनय होता रहेगा। इन अभिनयों में नाटककार के विश्वप्रसिद्ध नाटक "ओथेलो", "हैमलेट", "रोमियो तथा जूलियट" आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

ज.ज.ग. में, इस समय तक, शेक्सपियर की अपनी, और उन पर लिखी गयी ८२ रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। ... वाइमर में आज से १०० वर्ष पहले "जर्मन शेक्सपियर सोसायटी" की स्थापना हुई है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित 'फोरेन अफियर्स बुलेटिन' ने अपने एक लेखमें, शेक्सपियर के महत्व पर लिखा है : "जर्मनी की राष्ट्रीय संस्कृति को किसी भी साहित्यकार ने इनना अधिक प्रभावित नहीं किया है जितना विलियम शेक्सपियर ने। उनकी रचनाओं ने लेस्सिंग हेरदर और गेटे को जर्मनी का राष्ट्रीय साहित्य निर्माण करने और इसके सौन्दर्य शास्त्र संबंधी प्रतिमान स्थापित करनेका मार्ग सुझाया। .."

खेल कूद कालेज में अफ्रो-एशियाई देशों के विद्यार्थी

जर्मन जनवादी गणतंत्र में लाइपज़िक के खेलकूद कालेज में, अफ्रीका और एशिया के नवोदित राज्यों के अनेक विद्यार्थी आठ महीने की ट्रेनिंग लेने के लिये दाखिल हो चुके हैं। कम्बोदिया, श्रीलंका, घाना, गिनी, भारत, इन्डोनेशिया, और सीरिया से आये हुये ये शिक्षार्थी, प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद अपने अपने देशों में शिक्षकों का काम करेंगे। खेलकूद संबंधी प्रशिक्षण के अलावा इन शिक्षार्थियों के पाठ्यक्रम में जर्मन भाषा सीखने के १०० पाठ भी सम्मिलित हैं।

अरब गणराज्य और ज. ज. ग. में नौ परिवहन संधि

१९५८ में, संयुक्त अरब गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच प्रथम नौ-परिवहन संधि हुई थी। सन् १९६४-६ में इस संधि को बढ़ाने के लिये २० अप्रैल के दिन दोनों देशों के प्रतिनिधियों में एक नया करार हुई।

गत वर्ष, सं. अ. ग. और ज. ज. ग. के दरमियान कुल माल का ९० प्रतिशत भाग दोनों देशों के अपने माल पोतों ने परिवहन किया। केवल १० प्रतिशत माल ही अन्य देशों के जहाज़ों ने ढोया। चूंकि गत वर्ष में दोनों देशों के व्यापार में २० प्रतिशत की वृद्धि हुई इसलिये दोनों देश नौ-परिवहन को और विस्तृत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। ज.ज.ग. के नौ-परिवहन बेड़े में १०० माल वाहक पोत हैं। इसका १०० वां जहाज़ ...

दो हाज़र प. जर्मन निवासी जर्मन जनवादी गणतंत्र की शरण में

सन् १९६३ की पहली अक्तूबर से लेकर मार्च, १९६४के अन्त तक पश्चिमी जर्मनी से २००० निवासी भाग कर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में रहने लगे हैं। इनमें अधिकांश नवयुवक हैं। इन आंकड़ों की घोषणा, २२ अप्रैल के दिन बर्लिन की एक पत्रकार कांफ्रेंस में की गई। इस प्रेस कांफ्रेंस में पश्चिमी जर्मनी से भागे हुये ८० नौजवानों ने पत्रकारों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिये और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में, फिर से बस जाने के, अपने संतोषप्रद अनुभवों का भी उल्लेख किया।

१५ मई के दिन एलैक्जाण्ड्रिया की बन्दरगाह में पहली बार लंगर डालेगा :

जर्मन विशेषज्ञों का स्वागत

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेषज्ञों का एक दल ज़ंजीबार के आर्थिक निर्माण में सहयोग देने के लिये, अफ्रीका के इस नव-स्वतंत्र राज्य में काम कर रहा है। गत १२ अप्रैल के दिन यहां के राष्ट्रपति, श्री उबैद कारूमे ने, अपने निवासस्थान पर इन विशेषज्ञों का स्वागत किया। इस स्वागत समारोह में ज़ंजीबार के सभी मंत्री, क्रांतिकारी परिषद के सदस्य, ज़ंजीबार में ज.ज.ग. के राजदूत और अन्य सम्मानित नागरिक शामिल हुए। राष्ट्रपति करूमे ने, जर्मन विशेषज्ञों के कार्य की काफी प्रशंसा की। राष्ट्रपति ने, ज.ज.ग. के राजदूत, श्री गुइनतेर फ्रित्श से प्रार्थना की कि वह, जर्मन जनवादी गणनंत्र की राज्य परिषद् के अध्यक्ष, वहां की सरकार और वहां की जनता तक उनका धन्यवाद पहुंचा दें, जिन्होंने ज़ंजीबार की क्रांति को सुदृढ़ करने में बहुत अच्छी सहायता प्रदान की।

१३ अप्रैल को, ज़ंजीबार के राष्ट्रपति की पत्नी, श्रीमती करूमे बर्लिन पधारीं ज.ज.ग. का दौरा करने के लिये। श्रीमती करूमे, ज़ंजीबार के नारी संगठन की अध्यक्षा हैं।

दाबक गैस कारखाने का निर्यात

हाल ही में, यूगोस्लाविया ने जर्मन जनवादी गणतंत्र से, एक आधुनिक दाब गैस कारखाना खरीद लिया। यह कारखाना, यूगोस्लाविया के कोसोवो-मेटजिका नामक स्वायत्त क्षेत्र के औद्योगीकरण की योजना में सहायक सिद्ध होगा। इस कारखाने की निर्यात संबंधी करार पर गत सप्ताह में दस्तखत हुये। इस कारखाने की प्रति घंटा उत्पादन क्षमता ६०,००० घन मीटर है और यह लिग्नाइट से चलता है।

अफ्रीकी बैले बर्लिन में

गिनी के ४५ संगीतकारों, गायकों तथा नर्तकों का एक बैले, जर्मन जनवादी गणतंत्र के, एक हफ्ते के दौरे पर आया हुआ है। इस दल ने अपने कार्यक्रम का पहला अभिनय राजधानी बर्लिन में शुरू किया, ३००० दर्शकों के सामने। अभिनय की समाप्ति पर दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अफ्रीका के इस सुन्दर बैले का ज़ोरदार स्वागत किया।

गिनी के इस बैले, जिसका नाम "बैले अफ्रीकन" है, की स्थापना, श्री कीता फोरेबा ने की है, जो आज गिनी के प्रतिरक्षा मंत्री हैं। ज.ज.ग. के बाद यह बैले, चेकोस्लावाकिया का दौरा करेगा।

विश्व व्यापार सम्मेलन में सभी देश शामिल हों : ज. ज. ग. की मांग

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, हाल ही में, एक बयान जारी किया था, जिसको 'संयुक्त राष्ट्र के व्यापार तथा विकास सम्मेलन' ने अपने सरकारी दस्तावेजों में शामिल किया। इस बयान में यह मांग की गई है कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार सभी देशों को उक्त विश्व व्यापार सम्मेलन में भाग लेने के लिये एक जैसी सुविधायें उपलब्ध की जानी चाहिये। इसलिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, सम्मेलन में, दोनों जर्मन राज्यों के साथ समान रवैया अपनाने की मांग की। ज.ज.ग. की सरकार के इस बयान का मसविदा, विदेश मंत्री श्री यूलियस बालको ने, 'संयुक्त राष्ट्र के व्यापार एवं विकास सम्मेलन' के अध्यक्ष, श्री अब्दुल मोनीम (अरब गणराज्य) को दे दिया।

जेनेवा में, विश्व व्यापार सम्मेलन शुरू होने से पहले ज.ज.ग. की सरकार ने उपर्युक्त बयान दिया था। इसमें, अन्य बातों के अतिरिक्त, इस बात पर विशेष बल दिया है कि 'व्यापार एवं विकास संबंधी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन' का उद्देश्य है अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने के लिये नये कदम उठाना। इसलिये, इस सम्मेलन का मुख्य कर्तव्य है हर प्रकार के भेदभाव का विरोध करना। कुछ राज्यों को इस सम्मेलन में भाग लेने से केवल इसलिये नहीं रोका जाना चाहिये, क्योंकि कुछ अन्य राज्य उनकी राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं को पसन्द नहीं करते। . . . बयान के अन्त में जर्मन जनवादी गणतंत्र के निरन्तर बढ़ते हुए आर्थिक विकास की ओर संयुक्त राष्ट्र संघ के उक्त सम्मेलन

बर्लिन में गिनी का "बैले अफ्रीकीन"

का ध्यान खींचते हुए कहा गया है : "सन् १९५५ से १९६३ तक की अवधि में अफ्रीका, एशिया के नवोदित्त राज्यों और लातीनी अमरीका के देशों के साथ, जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल व्यापार में २६० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। निकट भविष्य में इस बढ़ौती में तीन गुना और बढ़ाने की व्यवस्था की गयी है।"

क्षय रोग समाप्त हो रहा है

जर्मन जनवादी गणतंत्र में, क्षय रोगियों की संख्या, सन् १९६३ में १००,००० से घट कर १०,००० रह गई। सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबंधित ज.ज.ग. के अधिकारी इस विकट रोग को जड़ से उखाड़ने के लिये हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। आज भी दुनिया में हर साल ३० लाख लोग इस भयंकर रोग से मर जाते हैं। विश्व में क्षयरोग से पीड़ित लोगों की संख्या लगभग डेढ़ करोड़ है।

सरकारी सूत्रों के अनुसार, पश्चिमी जर्मनी में हर साल ७० हजार लोग क्षयरोग ग्रस्त हो जाते हैं जिनमें से ७,५०० मर जाते हैं। इस रोग से पीड़ित बच्चों की संख्या यहां (प. जर्मनी में) बहुत अधिक है।

ज.ज.ग. के उप प्रधान मंत्री ज़ंजीबार में

जंजीबार सरकार के निमन्त्रण पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक सरकारी प्रतिनिधिमंडल, उप प्रधान मंत्री, श्री पाल शोल्ज के नेतृत्व में यहां के मई दिवस समारोह में भाग लेने के लिए आया। हवाई-अड्डे पर तांगानीका तथा जंजीबार गणराज्य के उद्योग, खनन एवं ऊर्जा मन्त्री, श्री अब्दुल्ला क़ासिम हांगा तथा अन्य मंत्रियों, क्रांतिकारी मजदूर संघों के अध्यक्ष, और यहां स्थित ज. ज. ग. के राजदूत गुएन्तेर फ़्रित्ज ने उनका स्वागत किया।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के शिक्षक संघ के अध्यक्ष, श्री एल्फ़्रेद विल्के भी तांगानीका व जंजीबार गणराज्य के मई दिवस समारोह में भाग लेने के लिये यहां पहुंच गये हैं। इसी प्रकार, ज. ज. ग. के अन्य श्रमिक संघों के प्रतिनिधियों ने मोरोक्को आदि देशों के मई दिवस समारोहों में भाग लेने के लिये ... हैं।

तीन भारतीय शोधार्थियों के शोध प्रबन्ध

भारत के तीन शोधार्थियों ने, हाल ही में, अपना अनुसंधान समाप्त किया है, और उन्होंने अपने शोधप्रबन्ध ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय में जमा किये हैं डाक्टर की उपाधि प्राप्त करने के लिये। विगत तीन वर्षों से ये भारतीय शोधार्थी जर्मन जनवादी गणतंत्र के ड्रेस्डेन प्रसिद्ध तकनीकी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कर रहे थे। ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय, यूरोप का सबसे बड़ा पोलि-तकनीकी ट्रेनिंग संस्थान है। यूरोप तथा समुद्र पार देशों के ६० से भी अधिक शोधार्थी, इस विश्वविद्यालय में, विभिन्न तकनीकी विषयों पर डाक्टरेट पाने के लिये शोध कर रहे हैं आजकल। इनमें से १८ भारतीय शोधार्थी हैं। . . . पहले भी यहां से कई भारतीय शिक्षार्थी पी.एच.डी. की उपाधि लेकर भारत लौटे हैं, जहां वे ऊंचे और उत्तरदायी पदों पर काम कर रहे हैं। उदाहरण के लिये डा. खनोजा का नाम लिया जा सकता है। डा. खनोजा को, सन् १९६० में, ड्रेस्डेन विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि मिली, और आजकल वे जबलपुर के राज्यकीय इंजीनियरी कालेज में प्रोफ़ेसर हैं।

तथ्य और आंकड़े

(पृष्ठ १७ का शेष)

विषय	छात्र संख्या
अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शन, भाषा विज्ञान, ललित कलायें इत्यादि . . .	३,८६७
शारीरिक विज्ञान . . .	४५६
धर्म-शास्त्र . . .	५५४
शिक्षा-शास्त्र . . .	१८,८९९

सामाजिक आधार पर, ज. ज. ग. के विश्वविद्यालयों और कालेजों में पढ़ने वाले छात्रों की प्रतिशत संख्या :

सामाजिक उद्गम	प्रतिशत संख्या
श्रमिक वर्ग के . . .	४८.७
कर्मचारी वर्ग के . . .	२०.५
सहकारी सदस्यों के . . .	५.५
बौद्धिक वर्ग के . . .	१५.९
अन्य . . .	९.४

सचित्र समाचार

▲ ज.ज.ग. और भारत के राष्ट्रपति ११ के हॉकी टीमों के कप्तान एक दूसरे से परिचित हो रहे हैं

ज.ज.ग. की हॉकी टीम, भूतपूर्व मेयर, श्री नूरउद्दीन अहमद से मिल रही है
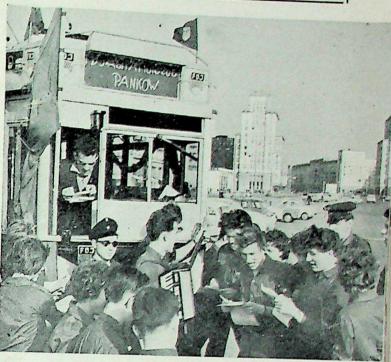
▲ ज.ज.ग. के युवक तथा युवतियां "अखिल जर्मन नौजवान समारोह" की सरगर्मी से तैयारी कर रहे हैं, बर्लिन में

भारत सरकार के मंत्रियों, श्री कानूनगो तथा श्री खन्ना को, इंजीनियर फ्लेमिंग बोतलों में गैस भरने की विधि समझा रहे हैं नेशनल एयर प्रोडक्ट्स, दिल्ली में
▼

◄ मार्शल मालिनोवस्की के नेतृत्व में, अप्रैल में, एक सोवियत सैनिक शिष्ट-मंडल बर्लिन आया। वहां वे सोवियत सैनिकों की समाधि पर देखे जा रहे हैं

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक ६ | २० जून, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : पंडित जवाहरलाल नेहरू और जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री, श्री ओतो ग्रोतेवोल—जब वे सन् १९५९ में भारत यात्रा पर आये थे।

अंतिम पृष्ठ : तूरिनजिया पर्वतमाला के आंचल में वार्तबुर्ग दुर्ग—जहां मार्तिन लूथर ने बाइबल का जर्मन अनुवाद तैयार किया था

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे।
जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

जवाहर लाल नेहरू के देहान्त पर ज. ज. ज. की शोक श्रद्धांजलि

स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरु

अध्यक्ष वाल्टर उल्बिरक्त का शोक संदेश राष्ट्रपति राधाकृष्णन को

भारत के महासम्मानित प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के देहान्त की शोकपूर्ण सूचना से गहरा सदमा हुआ।

परम श्रेष्ठ, जर्मन जनवादी गणतंत्र एवं राज्यपरिषद् की ओर से और व्यक्तिगत रूप में भी मुझे इस महाशोक में समवेदना प्रकट करने की इजाज़त दीजिए। कृपया, हमारी इस शोकसंतप्त समवेदना को दिवंगत के परिवार और भारतीय गणराज्य की जनता तक भी पहुंचाने की अनुकम्पा कीजिए।

प्रधान मंत्री का निधन भारतीय जनता के लिये एक अपूर्ण और ज़बरदस्त क्षति है। जवाहरलाल नेहरू का नाम, भारत के राष्ट्र मुक्ति संग्राम और उसकी स्वाधीनता का एक अभिन्न अंग बन चुका है। भारत के राजनीतिक एवं आर्थिक विकास में स्वर्गीय जवाहरलाल की देन अमर है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता, इन महान राजनीतिज्ञ के देहान्त पर, भारत और विश्व की समस्त शांतिकामी जनता के शोक में शरीक है, जो विश्व शांति की सुरक्षा के लिये अनथक संघर्ष करते रहे और जिन्होंने जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के पक्ष में अपना स्पष्ट तथा निश्चित मत दिया।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद् और यहां की जनता भारत के इस महान पुत्र की पुण्य स्मृति को अपने हृदयों में हमेशा के लिये संजो कर रखेगी।

श्री वाल्टर उल्बिरक्त का श्रीमती इन्द्रा गांधी को

आपके इस गहरे, व्यक्तिगत शोक के अवसर पर मेरी हार्दिक समवेदना स्वीकार कीजिए। आपके स्वर्गीय पिता जी का निधन, भारतीय जनता के लिये एक बहुत बड़ी क्षति है----उस जनता के लिये जिसके उद्धार में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। विश्व की समस्त शांतिप्रिय जनता उनको बड़े सम्मान की नज़र से देखती थी। एक बार फिर मेरी हार्दिक समवेदना कबूल कीजिये।

श्री ओत्तो ग्रोतवोल का श्रीमती इन्द्रा गांधी को

आपके पूज्य पिता के आकस्मिक निधन का दुःखद समाचार मुझे अभी अभी मिला। इस शोकपूर्ण अवसर पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और यहां की जनता अपनी हार्दिक समवेदना व्यक्त करती है।
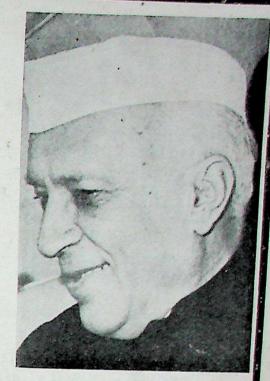
आपकी और भारतीय जनता की इस अपूर्ण क्षति पर मेरी सहानुभूति आपके साथ है।

हम उस मातम में शरीक हैं जो आज उस दूरदर्शी और महान राजनीतिज्ञ के लिये मनाया जा रहा है, समस्त शांतिकामी लोग जिसका सम्मान करते थे, और जो भारतीय जनता के कल्याण के लिये सदा प्रयत्नशील रहे।

हमारे देश के हज़ारों लाखों लोग आपके इस ज़बरदस्त व्यक्तिगत सदमे में शरीक हैं। अनेक कार्यों में व्यस्त रहने पर भी आपके स्वर्गीय पिताजी को, अपने परिवार में---अर्थात् आपमें---नई शक्ति का अक्षय प्रेरणा स्रोत मिला करता था। एक बार फिर मैं अपनी गहरी समवेदना प्रकट करता हूं।

श्री ओत्तो ग्रोतवोल का श्री गुलज़ारीलाल नन्दा को

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा यहां की जनता को, और मुझे भी इस खबर से गहरा सदमा पहुंचा कि जवाहरलाल नेहरू अब इस दुनिया में नहीं हैं। भारतीय जनता के लिये यह एक दुःखद क्षति है। इन महान राजनीतिज्ञ की पुण्य स्मृति में मेरे लिये एक अमर निधि

(शेष पृष्ठ १६ पर)

पं. जवाहर लाल नेहरू की पुण्य-स्मृति में

कूर्त बोत्तकर

(भारत में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख)

२७ मई के दिन एक महान मानव के हृदय की धड़कन बन्द हो गई। पण्डित जवाहरलाल नेहरू अब नहीं रहे। विश्व मानवता के लिये वे न केवल स्वतंत्र भारत के मूर्तिमान प्रतीक ही थे, वरन् वे अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ भी थे जिन्होंने समस्त मानवता की शांति, राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री और एक नवीन तथा खुशहाल संसार के निर्माण के लिये अपने अन्तिम श्वास तक संघर्ष किया। सर्वसाधारण जनता के लिये स्वर्गीय जवाहरलाल का नाम शांति, सद्भावना और सुखी जीवन के लिये संघर्ष के साथ जुड़ कर अमर हो गया है।

स्वतंत्र भारत का नायक : राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी और जन-नायक जवाहरलाल नेहरू ने भारत की स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त किया भारत वर्ष को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के फन्दे से मुक्त करके भारतीय गणतन्त्र के प्रथम प्रधानमंत्री ने एक नये भारत के निर्माण की बुनियाद डाली। इस नये राज्य के दो मुख्य आधार स्तम्भ थे : लोकतन्त्रीय सत्ता की स्थापना और सामान्य जनता की जीवन-स्थिति को सुधारना।

गान्धी जी और श्री नेहरू के नेतृत्व में लड़े गये राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के विजय पाने के बाद, भारत गणराज्य ने, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह सम्मानित स्थान प्राप्त करने का मुख्य कारण था प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा प्रतिपादित भारत की विदेश-नीति, जिसका मूलाधार है शांतिपूर्ण सह-जीवन और तटस्थता। इसी नीति ने भारतीय राष्ट्र को समस्त शांति-प्रिय विश्व-जनता के आदर की वस्तु बनाया है। जर्मन जनवादी गण-तंत्र की सरकार और जनता ने भी इस नीति का हार्दिक अभिनन्दन किया है। पराधीन राष्ट्रों की जनता के राष्ट्र-मुक्ति आन्दोलनों के समर्थन में और निःशस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द्र से संबंधित, नेहरू सरकार के सतत प्रयत्न, अन्तर्राष्ट्रीय रिश्तों में अहम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

ज. ज. ग. के उप-प्रधान मन्त्री, श्री ब्रूनो लोइश्वर (जो फरवरी, ६४ में भारत की सद्भावना-यात्रा पर आये थे) पंडित नेहरू से वार्तालाप करते हुये

अगस्त, सन् १९६१ में प्रोफेसर कूर्त हागर, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का एक विशेष संदेश लेकर भारत आये। चित्र में श्री नेहरू प्रो. हागर का स्वागत कर रहे हैं

नेहरू और जर्मन जनता : जर्मन जनवादी गणतंत्र के लोगों ने पं. जवाहरलाल नेहरू के, भारत के नव-निर्माण संबन्धी प्रयत्नों के प्रति अपना पूर्ण समर्थन और सहयोग प्रदान किया है। वे अनेक भारतवासी जो समय समय पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा कर चुके हैं, इस तथ्य को स्वयं देख आये हैं कि ज. ज. ग. के बच्चों के लिये भी नेहरू भारत था, और भारत नेहरू था। पं. नेहरू के निधन में जर्मन जनता ने एक सच्चा मित्र खो दिया—एक ऐसा मित्र जो जर्मनी की गतिविधि में विशेष दिलचस्पी लेते थे, और जो उन जर्मन जनों के प्रति सहानुभूति रखते थे जो एक जनवादी तथा शांति प्रिय जर्मनी के लिये लड़ते हैं। ....

अपने विद्यार्थी जीवन में (जब नेहरू इंगलैण्ड में पढ़ते थे) श्री नेहरू जर्मनी आये थे। .... जब जर्मनी को फासिस्तवादी राक्षस ने अपने

भारत में आयोजित 'ड्रेस्डेन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय' प्रदर्शनी में पं० नेहरु, ज. ज. ग. के भूतपूर्व विदेश-व्यापार मंत्री, श्री हेनरिख राव तथा उनकी पत्नी के साथ

पंजे में जकड़ लिया था, उन दिनों स्वर्गीय नेहरू की हमदर्दी उन जर्मन वीरों के साथ थी, जिन्होंने बर्बर दमनचक्र के बावजूद जर्मनी में लोकतन्त्र और मानवता की ध्वजा को झुकने नहीं दिया था। फासिज्म के उदय से लेकर, दूसरे महायुद्ध में इसके पराजय तक, पं. नेहरू ने हमेशा उन लोगों का साथ दिया जो इस राक्षस के भयंकर खतरे को पहचानते थे, और इस दानवके विनाश के लिये जो हमेशा इसके खिलाफ निरन्तर संघर्ष करते रहे। फासिस्तवाद विरोधी भावना से ही प्रेरित होकर पं. जवाहरलाल नेहरू, गृहयुद्ध-ग्रस्त स्पेन गये थे उन स्पेनी योद्धाओं का उत्साह बढ़ाने के लिये जो फ्रांको के फासिस्तों के खिलाफ लड़ रहे थे (इस गृह-युद्ध में फ्रांको की हत्यारी सेनाओं को हिटलर की सहायता--बम, हवाई जहाज आदि--मिली और स्पेन के रिपब्लिकन बहादुरी से लड़ते हुये शहीद हुये--सं.)।

नेहरू जी और जर्मन-समस्या : यह एक स्वाभाविक बात है कि दूसरे महायुद्ध के बाद, प्रधान मंत्री नेहरू उस जर्मनी की घटनाओं में खास दिलचस्पी ले लें जिसने दो दो महायुद्धों को जन्म दिया था। यद्यपि नये भारत की निर्माण संबंधी अनेक समस्यायें प्रधान मंत्री को सदा घेरे रहतीं, फिर भी पण्डित जवाहरलाल नेहरू, जर्मनी में विकसित होती हुई कुछ खतरनाक प्रवृत्तियों और घटनाओं से दुनिया को समय समय पर सचेत करते रहते थे।

जर्मन समस्या के प्रति भारत सरकार की नीति को प्रधान मंत्री नेहरू ने पहले अगस्त, सन् १९६१ में लोकसभा तथा राजसभा के सामने रखा, और बाद में तटस्थ राज्यों के बेलग्राद सम्मेलन में स्पष्ट किया। भारत सरकार की यह नीति अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को घटाने में [प्र]धान है। इसके अलावा, (स्वर्गीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिपादित) यह नीति उन सभी जर्मनों की जबरदस्त सहायक है जो जर्मनी की जटिल समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का लगातार संघर्ष कर रहे हैं।

२२ अगस्त, सन् १९६१ के दिन परराष्ट्र मामलों पर बोलते हुये प्रधान मंत्री नेहरू ने राजसभा में कहा : "यह बात बिलकुल साफ है कि आजकल दो (जर्मन) देश और दो सरकारें हैं--अर्थात् पश्चिम जर्मनी या फेडरल गणराज्य और पूर्वी जर्मनी का जनवादी गणतंत्र। ये मौजूद हैं, और उनका यह अस्तित्व एक भौगोलिक तथ्य है। भले ही कोई इस अथवा उस (राज्य) को पसन्द न करे, लेकिन उनका अस्तित्व एक हकीकत है, और उनमें एक या दोनों (राज्यों) के अस्तित्व को न मान लेना केवल अपनी आंखें मूंद लेना है ठोस तथ्यों से।......"

राजसभा के इसी भाषण में प्रधान मंत्री नेहरू ने इस बात की ओर भी ध्यान खींचा था कि जर्मनी के सवाल के हल के साथ शान्ति और युद्ध की संभावना भी जुड़ी हुई है।

स्वर्गीय प्रधान मंत्री इस तथ्य पर कई बार जोर डाल चुके हैं कि यूरोप के केन्द्रस्थल में (अर्थात् जर्मनी में--सं.) तनाव तभी कम हो सकता है जब दो जर्मन राज्यों की हकीकत को स्वीकार किया जाये। जर्मन समस्या के संबन्ध में उनके विचारों का यही मूलाधार था।

पण्डित नेहरू द्वारा प्रतिपादित भारत-सरकार की जर्मन समस्या से संबन्धित उक्त नीति, उन अनेक सुझावों के अनुरूप है, जो जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और वहां की राज्य परिषद ने समय-समय पर पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य के चान्सलर को भेजे। ये सुझाव थे :

--दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के आधार पर, जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण बातचीत से हल करना;

(शेष पृष्ठ १८ पर)
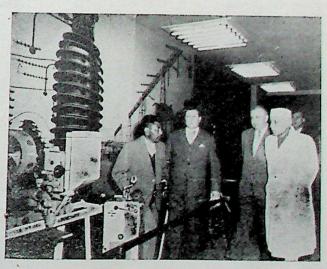
सन् १९६१ में, नई दिल्ली में आयोजित 'विश्व उद्योग मेला' में पं० नेहरू ने ज. ज. ग. की वस्तुओं में काफी दिलचस्पी दिखाई

बर्लिन में शोक-सभा

२९ मई के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी (जनवादी) बर्लिन में पं. जवाहरलाल नेहरू के शोक में एक शोक सभा बुलाई गई। इस शोकसभा में ज.ज.ग. में अध्ययन करने वाले भारतीय विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के अतिरिक्त ज.ज.ग. के अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ता, विद्वान, राजनीतिज्ञ इत्यादि सम्मिलित हुये। शोकसभा, बर्लिन के हुमबोल्त विश्वविद्यालय के मुख्य हाल में आयोजित हुई, जहां दिवंगत नेहरू का काले कपड़े में लपेटा हुआ एक वृहत्त चित्र रखा गया था। सफेद फूलों की मालायें और झुका हुआ भारतीय राष्ट्र-ध्वज, शोकपूर्ण वातारवण को और भी गहरा बना रहे थे।

यह शोकसभा 'जर्मन दक्षिण पूर्व एशिया संघ' और ज. ज. ग. में 'भारतीय विद्यार्थी यूनियन' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई। सभा का उद्धाटन हुआ दो मिनट की मौन-श्रद्धांजलि से जो उपस्थित लोगों ने भारत के स्वर्गीय प्रधान मंत्री को खड़े होकर अर्पित की। जर्मन जनवादी गणतंत्र की विज्ञान अकादमी के 'प्राच्य अनुसन्धान संस्थान' के डा. क्रूइगर ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये जवाहरलाल नेहरू के संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि विश्व के तमाम शांतिप्रिय लोग उनको प्यार और सम्मान करते थे। डा. क्रूइगर के शब्दों में, "जवाहरलाल नेहरू का नाम समानार्थक बन गया शान्ति के लिये, संसार के सभी देशों में। इसलिये उनका निधन केवल भारत के लिये ही एक अपूर्ण क्षति नहीं है। भारतीय जनता के इस महा शोक में, ज. ज. ग. के निवासी भी, इस महा मानव और विश्व शांति तथा प्रगति के अनथक योद्धा के मातम में शरीक हैं। उनके मानवीय विच[ार] और महान कर्म, सम्पूर्ण भारतीय जनता और शांतिप्रिय विश्व जन[ता] के हृदयों में अमर होकर जियेंगे।...."

डा. दत्त, जो सिलिगुडी विश्वविद्यालय के गणित विभाग के अ[ध्यक्ष] हैं और जो आजकल ज.ज.ग. के रोस्टोक विश्व-विद्यालय में विज़ि[टिंग] प्रोफेसर हैं, यहां (ज. ज. ग. में) रहने वाले भारतीय नागरिकों की [ओर] से बोले शोकसभा में। उन्हों ने कहा : "आगे आने वाले वर्षों में [जब] शांतिपूर्ण सह-जीवन के विचार सारे विश्व में विजयी हुये होंगे--[शांतिपूर्ण] सह-जीवन के विचार, स्वर्गीय नेहरू जिसके सशक्त और अथक सम[र्थक] थे--तब भी पण्डित नेहरू को सारी दुनिया याद करेगी।....."

बर्लिन के हुमबोल्त विश्वविद्यालय के प्राच्यशास्त्र संस्थान [में] पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थियों, और 'लिट्ल थियेटर ग्रुप' की प्र[सिद्ध] अभिनेत्री शोभा सेन ने पण्डित नेहरू के ग्रन्थों से कुछ अंश पढ़कर सु[नाये] जो उन महान आत्मा के मानवीय विचारों से ओत:प्रोत थे।

इस शोकसभा में अनेक लोगों के अलावा निम्न महानुभाव [और] सभा संस्थायें भी सम्मिलित हुई : ज. ज. ग. पत्रकार संघ के अध्य[क्ष] डा. जार्ज क्राउस; जर्मन दक्षिण-पूर्व एशियाई संघ के उपाध्यक्ष, डा. [...] हूबर; हुमबोल्त विश्वविद्यालय के प्राच्य-शास्त्र संस्थान के निदेशक, [...] रूबेन; ज. ज. ग. के विदेश मंत्रालय तथा सांस्कृतिक मंत्रालय के अ[धि]कारी, विश्वविद्यालय सेनेट के सदस्य और ज. ज. ग. के नौजवान सं[ग]ठन के प्रतिनिधि इत्यादि।

बर्लिन में, स्वर्गीय नेहरू को शोक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये डा० क्रूइगर

जवाहरलाल नेहरू
एक संस्मरण

डा. जार्ज क्रान्उस

उनसे मेरा पहला मिलन हुआ ब्रस्सेल्स में आयोजित उपनिवेशवादी दमन विरोधी सम्मेलन में। मेरे सामने खड़ा था एक दुबला-पतला किन्तु दिव्य आभा के चेहरे वाला एक नौजवान योद्धा, जो अपनी जनता को उपनिवेशवादी दमन तथा शोषण से मुक्ति दिलाने में कूद पड़ा था। इसके लिये क्रूर ब्रिटिश शासन, उनको कई बार कारावास में डाल चुका था। ब्रस्सेल्स के सम्मेलन में वे ,उपनिवेशवादी पराधीनता के खिलाफ गोरे और काले, अरब, चीनी, जर्मन, ब्रिटिश तथा अन्य देशों के समाजवादियों और साम्यवादियों के साथ अपनी आवाज़ उठाने के लिये आये थे।....

उस दिन के ३० वर्ष बाद उनसे दूसरी बार मिला। अब मैं बैठा था स्वतंत्र भारत की जनता के अत्यन्त प्रिय नेता और एक बहु-सम्मानित राजनीतिज्ञ के सामने।..... पारंपरिक वेषभूषा धारण किये हुये थे वे, और उनके काज में लाल गुलाब का फूल महक रहा था। उनकी बड़ी-बड़ी आंखों में आकर्षण था।..... धीरे-धीरे, और एक-एक शब्द को तोल तोल कर वे हमारे प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। वे उत्तर मानवीय भावनाओं, विश्व शांति की आकांक्षाओं और आशावान भविष्य के स्वप्नों से परिपूर्ण थे। उनके भव्य व्यक्तित्व में सम्मोहन की शक्ति थी।.....

जिस क्षण यहां, जर्मन जनवादी गणतंत्र में मैंने उस महान व्यक्ति के निधन का दुखद समाचार सुना, मेरे कानों में उनके वे कोमल किन्तु दृढ़ स्वर गूंज उठे जिनमें उन्होंने ज. ज. ग. की शांतिप्रिय नीति को सराहा था, पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवादी खतरे से सावधान किया था परमाणु बम के प्रति घृणा व्यक्त की थी, और सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच समझौते तथा सद्भावना की कामना की थी। इसीलिये आज इस अकूत क्षति पर समस्त संसार की शान्तिप्रिय जनता, शोकाकुल हो उठी है--मातम मना रही है।......

बर्लिन के हुमबोल्त विश्वविद्यालय के मुख्य हाल में भारतीय नागरिकों और ज. ज. ग. की जनता तथा सरकार के प्रतिनिधियों ने दिवंगत जवाहरलाल नेहरू को अपनी शोक-श्रद्धांजलि अर्पित की। यह दृश्य उसी शोक-सभा का है।

(पूर्ण विवरण देखिये पृष्ठ ६ पर)

श्री उल्ब्रिख्त के नये सुझाव

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने इस बात का समर्थन किया है कि "ज. ज. ग. पश्चिमी जर्मनी के साथ समझौते, शान्ति और मैत्री के मार्ग पर चलने के लिये तैयार है।" यह घोषणा, श्री उल्ब्रिख्त ने, पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर, डा. लुदविग एरहार्द को एक सुझाव के रूप में पेश की है अपने एक खत में। यह खत २७ मई के दिन बोन में, चान्सल्लर के दफ्तर में दिया गया। इसमें श्री उल्ब्रिख्त ने यह सुझाव दिया है कि पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारें अपनी पृथक उद्घोषणाओं में अणुशस्त्रीकरण के हर रूप का परित्याग करने के लिये वचन-बद्ध हो जायें। उक्त सुझाओं में कहा गया है कि इन उद्घोषणाओं में निम्न बातें शामिल हो :

"अपने अपने राज्य की सीमाओं में, अथवा दूसरे राज्यों में अपने इस्तेमाल के लिये या विदेशी सहायता से अणु-शस्त्रों का उत्पादन नहीं होगा;

"अणु-शस्त्र न तो हासिल और न ही स्वीकृत किये जायेंगे, और न तद्संबंधी नक्शे, अनुसंधान सामग्री आदि प्राप्त की जायगी;

"प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अन्य राज्यों अथवा शक्ति-दलों के माध्यम से या दूसरे देशों के सहयोग से अर्थात् किसी भी रूप में, अणुशस्त्रों को हासिल करने के प्रयत्न नहीं किये जायेंगे,

"किसी भी रूप में अणु-परीक्षणों में हिस्सा नहीं लिया जायेगा,

"अपने राज्यों (दो जर्मन राज्यों—सं.) की सीमाओं में न तो अणुशस्त्रों को रखा जायेगा और न ही अन्य देशों या शक्ति-दलों को अपने यहां रखने की अनुमति दी जायेगी,

"और कभी भी, स्वयं अथवा अन्य राज्यों या शक्ति-दलों के माध्यम से अणु-शस्त्रों का इस्तेमाल नहीं किया जायेगा।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र, इस प्रकार की उद्घोषणाओं से संबंधित किसी भी अन्य दस्तावेज़ को विचाराधीन लाने के लिये सतत तैयार है।

अपने खत में उक्त सुझाओं के अलावा, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, पश्चिमी जर्मनी की सरकार, वहां के बुन्दस्ताग (संसद) के सदस्यों, प्रान्तीय संसदों, विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं, ट्रेड यूनियनों, महिला संगठनों, किसान तथा युवक सभाओं आदि से निम्न विषयों पर अपनी राय प्रकट करने की प्रार्थना की है :

१. क्या आप दोनों जर्मन राज्यों में, हर प्रकार के अणुशस्त्रीकरण का, धीरे-धीरे निःशस्त्रीकरण, और शस्त्रीकरण पर खर्च होने वाली धनराशि को घटाने के हक में है ?

२. क्या आप दो जर्मन राज्यों और पश्चम बर्लिन के परस्पर सहयोग तथा समझौते, और एक अविभाजित तथा शांति-प्रिय जर्मनी को बनाने के पक्ष में हैं ?

३. क्या आप, विभाजित जर्मनी के एकीकरण के हित में, दो जर्मन राज्यों तथा पश्चिम बर्लिन को, धीरे धीरे एक दूसरे के निकट लाने के लिये एक ऐसी जर्मन परिषद बनाने के हक में हैं, जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर और फैडरल गणराज्य (पं. जर्मनी —सं.) के बुन्दस्ताग के प्रतिनिधियों की बराबर संख्या हो ?...

इस संदर्भ में, श्री उल्ब्रिख्त ने इस का आश्वासन दिया है कि ज.ज.ग. की म[illegible] संसदीय सदस्य, राष्ट्रीय फ्रंट के राजनै[illegible] दल तथा नेता, और संगठन आदि उ[illegible] प्रश्नों का उत्तर देने के लिये तैयार [illegible] उन्होंने खत में लिखा है : "मुझे इस बात [illegible] पूर्ण विश्वास है कि दो जर्मन राज्यों [illegible] प. बर्लिन के विशिष्ट क्षेत्र की जनता का [illegible] मत इन प्रश्नों का समर्थन करता है। [illegible] अलावा, (दूसरे महायुद्ध) में विजित [illegible] जो जर्मनी में तनावों को घटाने के [illegible] है, और अन्य राज्यों की सरकारें [illegible] सवालों के प्रति हमदर्दी का ही [illegible] अपना लेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र [illegible] नागरिक यह आशा रखते हैं कि [illegible] सुझाओं पर गंभीरता से ध्यान देकर [illegible] स्वस्थ एवं सद्भावनापूर्ण प्रत्युत्तर [illegible] जायेगा।..."

जर्मन समस्या के हल का उल्लेख [illegible] हुय, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने अपने पत्र [illegible] बात पर बल दिया है कि "जर्मन ज[illegible] गणतंत्र और पश्चिमी जर्मन फेडरल ग[illegible] के पारस्परिक संबंधों का विकास मूल[illegible] जर्मन राज्यों, उनकी सरकारों और व[illegible] संसदों की ज़िम्मेदारी है। इस सिल[illegible] हम विदेशी शक्तियों की दखलअंदाज़ी [illegible] गलत समझते हैं, और खास तौर से हम [illegible] विदेशी सरकारों के फरमानों को मा[illegible] लिये तैयार नहीं जो शुरू से ही जर्मनी के [illegible] मज़दूर राज्य (अर्थात् ज. ज. ग.—सं.) [illegible] विरोधी रही हैं, और जिन्होंने हमेशा [illegible] शांति संधि पर हस्ताक्षर करने से [illegible] किया है—उदाहरण के लिये अ[illegible] सरकार।..."

बर्लिन में युवकों का समारोह

ए. तानेबर्गर

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, बर्लिन, दुल्हन की तरह सजी थी धार्मिक-उत्सव "वितसुन" की छुट्टियों के दिनों में अर्थात् १६ मई से १८ मई तक । तीज-त्यौहार जैसी चहल-पहल थी चारों ओर । कारण ? . . . . ज.ज.ग. के "स्वतंत्र जर्मन नौजवान संगठन" ने दोनों जर्मन राज्यों के नवयुवकों तथा नवयुवतियों को, बर्लिन में आयोजित "अखिल जर्मन नवयुवक समारोह" में भाग लेने के लिये, निमन्त्रित किया था । प्रथम 'अखिल जर्मन नवयुवक समारोह' का आयोजन बर्लिन में हुआ था १४ वर्ष पहले सन् १९५० में । १४ वर्ष की इस अवधि में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की काया ही पलट चुकी है सतत आर्थिक विकास तथा राष्ट्रीय निर्माण की योजनाओं से । इन वर्षों में यहां समाजवाद का निर्माण पूरा हुआ, और एक नई जर्मन तरुण पीढ़ी पोषित हुई जो निकट भविष्य में जर्मनी की स्वामी और इस की कर्णधार बन जायेगी।

दो जर्मन राज्यों के इस समारोह में-- जिसका मुख्य नारा था शांति, पारस्परिक सद्भावना और युवकों की खुशहाली--पूर्व और पश्चिम के देशों से लगभग ५ लाख, ६० हज़ार (५६०,०००) नौजवान भाग लेने आये थे । (पश्चिमी जर्मनी से २८,००० और बर्लिन से १०० तरुण आये थे) । यह वृहत्त समारोह तीन दिन तक चला । इस समारोह को "नील वर्ण का त्योहार" की संज्ञा भी दी जा सकती है, क्योंकि समारोह के दिनों भाग लेने वाले नौजावनों की नीली वेषभूषाओं, नीले झण्डों और अथाह नीले आकाश ने सम्पूर्ण बर्लिन को मानो नीले रंग में रंग दिया था । इन तीन दिनों में अलहड़ जवानी के जोश, बेफिक्री और जिन्दादिली ने सारे बर्लिन को जवान बना दिया था । बुड्ढे लोगों पर भी जैसे जवानी छा गई थी । . . . . . .

तरुण पयोनियर बड़े बड़े गुब्बारे लिये जा रहे हैं

बर्लिन के मार्क्स-एंजेल्स चौक में पश्चिमी जर्मनी से आये नौजवान मार्च कर रहे हैं

समारोह शुरू होने से कई दिन पहले मेहमानों के स्वागत के लिये जबरदस्त तैयारियां हो रही थीं । इतने बड़े विशाल तरुण समूह का हर प्रकार का प्रबन्ध करना आसान काम नहीं था प्रबन्धकर्त्ताओं के लिये । किन्तु बर्लिन के नागरिकों की मेहमान नवाजी और सहयोग ने इस कठिन काम को बहुत आसान बना दिया।

११२ स्पेशल रेलगाड़ियों ने नवयुवकों को बर्लिन लाया । विशेष बसों तथा ट्रकों की तो बात ही नहीं । राजधानी में आते ही समारोह में भाग लेने वाले नौजवानों का हार्दिक स्वागत होता था जिसमें बर्लिन निवासी पेश पेश थे ।

१६ मई, सन् १६६४ के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने ६०,००० नवयुवकों की एक रैली के रूपमें दूसरे "अखिल जर्मन नवयुवक समारोह" का उद्घाटन किया 'वाल्टर उल्ब्रिख्त' नामक स्टेडियम में। इस अवसर पर श्री उल्ब्रिख्त ने उस त्रि-सूत्रीय सुझाव का एक बार फिर समर्थन किया जो उन्होंने ४ मई, सन् १६६४ के दिन हज़ारों नौजवानों की एक विशाल सभा में, जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी-सं.) के नौजवानों और वहां की सरकार के मनन के लिये पेश किया था। उस दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) ने नौजवानों से संबंधित एक नया "तरुण कानून" सर्वसम्मति से पास किया था। उक्त सुझाव के तीन सूत्र ये हैं:

१. एक ऐसे आयोग की स्थापना हो दो जर्मन राज्यों की संसदों और पश्चिम बर्लिन के प्रतिनिधि-सदन के नौजवान सदस्य जिसके सदस्य हों। यह आयोग नौजवानों को पेश आने वाली समस्याओं और एक नवयुवक विधेयक पर बातचीत करे।

२. एक कानून पास करके फेडरल गणराज्य के नवयुवकों को वे बुनियादी अधिकार दिये जायें जिनके वे अधिकारी हैं।

३. जर्मन युवकों के लिये शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण किया जाये, अणु शस्त्रीकरण को तिलांजलि देकर और दो जर्मन राज्यों में शस्त्रीकरण को रोक कर।

समारोह कमेटी के ये तीन सदस्य प. जर्मनी गये थे वहां के नौजवानों को दावत देने। वहां की सरकार ने इनको गिरफ्तार किया। लेकिन जबरदस्त विरोध प्रदर्शन के कारण इनको रिहा किया गया। बर्लिन आने पर उनका भव्य स्वागत हुआ

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त, प. जर्मनी के नवयुवक प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहे हैं

कहने की आवश्यकता नहीं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का यह सुझाव समझौते और सद्भावना की दिशा में, एक ओर महत्वपूर्ण कदम है, और यूरोप की शांति की सुरक्षा के लिये बहुत जरूरी है।

उक्त समारोह का दूसरा उल्लेखनीय आकर्षण था रविवार के दिन ५ लाख (५,००,०००) जर्मन नवयुवकों का प्रदर्शन जर्मन जनवादी गणतंत्र, पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम बर्लिन और दुनिया के अन्य देशों से आये हुये हजारों लाखों नौजवानों का जुलूस पूरे पांच घंटे बर्लिन के मुख्य मार्गों पर चलता रहा। विश्व शांति, सद्भावना और खुशहाल भविष्य के समर्थन में यह एक स्पष्ट तथा दृढ़ आवाज थी विश्व के नवयुवकों---और विशेषकर जर्मन युवकों की।

रविवार--अर्थात् १८ मई की शाम को अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नवयुवकों ने भाग लिया। पूरे बर्लिन में नाचने और गाने वाले नौजवानों के दल के दल देखे जा सकते थे। रेस्त्राओं तथा होटलों में और सड़कों पर, नवयुवक आपस में, जर्मन की भविष्य के बारे में गर्मागर्म बहसें कर रहे थे। कुल मिला कर इस 'अखिल जर्मन नवयुवक समारोह' का मुख्य अनुभव यही था कि जर्मनी का भविष्य जर्मन नवयुवकों के हाथों में सुरक्षित रहेगा और वे इस भारी जिम्मेदारी को निभा सकते हैं।

तीन दिन के इस समारोह के बाद देशान्तरों से आये हुये नवयुवक अपने अपने देशों को एक नई स्फूर्ति लेकर लौट गये। से वे यह नई आशा और दृढ़ विश्वास लेकर स्वदेश लौटे कि जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से और सद्भावनापूर्ण व्यवहार से हल करने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अखिल-जर्मन बात-चीत का सिलसिला शुरू किया है वह चालू रहेगा। जर्मन फेडरल गणराज्य तथा पश्चिम बर्लिन से आये हुये हजारों नवयुवक इस "नील वर्ण समारोह" से इतने प्रभावित होकर वापस गये कि वे अपने देशवासियों को, इस नई आशा और प्रेरणा का सन्देश दिये बिना नहीं रह सकते।

बर्लिन की एक सड़क पर नवयुवक प्रतिनिधि

बर्लिन : हुमबोल्त विश्वविद्यालय,

मानवीय परम्पराओं का आगार

आन्ने कातरिन हाइदेल

सन् १८१० के वर्ष का अक्तूबर मास। इस मास की ६ तारीख को, प्रेशया (आधुनिक जर्मनी) की राजधानी बर्लिन के स्वर्गीय राजकुमार हाइनरिख के महल में कुछ नौजवान मिले। राजमहल की हालत काफी खस्ता थी, और यह सन् १८८६ से खाली पड़ा था। इसी खस्ता हाल महल को क्लास्की आकार प्रदान किया वास्तुकारों ने... और, नया आकार वाला यही राजमहल, कालान्तर में, शिक्षा तथा अनुसन्धान का एक महान और पावन मन्दिर बन गया। १० अक्तूबर, सन् १८१० के दिन यहां के प्राध्यापकों की एक बैठक हुई जिसमें सेनेट का निर्वाचन हुआ। बिना किसी कृत्रिम उद्घाटन आदि के ही यहां शिक्षा-कार्य शुरू हुआ। दाखिला लिया था २५० छात्रों ने।

विलहेल्म वान हुमबोल्त : बर्लिन के इस विश्वविद्यालय के संस्थापक थे महान भाषाविद्, मानवता प्रेमी और राजनीतिज्ञ विलहेल्म वान हुमबोल्त। इनका जन्म हुआ था पोत्सदाम में २२ जून, सन् १७६७ के दिन और इनका देहान्त हुआ था ६८ वर्ष की आयु में—अर्थात् ८ अप्रैल, १८३५ के दिन। नपोलियन के दमनचक्र के युग में, सन् १८०० के आसपास, यह राजनीतिज्ञ-मनीषी गेटे तथा शिल्लर जैसे अन्य महान जर्मन मनीषियों के समसामयिक और प्रेशया राज्य के पुनर्स्थापन के समर्थक थे। संक्षेप में, ये १९ वीं शताब्दी के बौद्धिक जीवन के एक सौम्य आदर्श थे। पुरातत्व के गहन अध्ययन, जर्मन क्लास्की युग में सक्रिय योगदान और सम्पूर्ण यूरोप में घूम घूम कर जातियों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा श्री विलहेल्म हुमबोल्त ने, तद्कालीन जर्मनी में एक पूरी बौद्धिक पीढ़ी को जन्म देकर उसका पथ-प्रदर्शन किया।

बर्लिन के सुप्रसिद्ध एवन्यू, उन्तर देन लिनदन पर खड़ा हुमबोल्त विश्वविद्यालय

भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में श्री हुमबोल्त का अध्ययन बहुत ही व्यापक था। लेकिन उनकी प्रमुख रुचि थी यव-द्वीप (जावा) की भाषा, कावी भाषा में। इससे संबंधित अन्य प्रकाशित कृतियों के कारण संसार के सबसे बड़े भाषाविदों में उनकी गणना होने लगी। उन्होंने कई दूर और पास के देशों की (विदेशी) भाषाओं का अध्ययन किया था। अमरीका की आदिम जाति (इण्डियन) की अल्प ज्ञात भाषा के अतिरिक्त चीनी, मलय, संस्कृत, प्राचीन मिश्री और आइस्लैंडिक भाषाओं पर भी उनका अच्छा अधिकार था। सन् १८०८ में, श्री हुमबोल्त, सांस्कृतिक मंत्री बने, और इस प्रकार सार्वजनिक शिक्षा के सीधे प्रभाव में आये। इस महत्वपूर्ण पद से जो पहला काम उन्होंने किया वह था सार्वजनिक शिक्षा में सुधार। उच्च शिक्षा और वैज्ञानिक शिक्षा को काफी प्रश्रय तथा विस्तार मिला। लेकिन उनके शैक्षिक-प्रशासन काल की सब से महत्वपूर्ण परियोजना थी बर्लिन में विश्वविद्यालय की स्थापना। उन्हीं के सद्प्रयत्नों का यह नतीजा था कि सन् १८१० में बर्लिन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, और इस तरह जर्मन बौद्धिक जीवन के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र ने जन्म लिया। इस केन्द्र के संस्थापक (विलहेल्म वान हुमबोल्त) के शब्दों में, बर्लिन विश्वविद्यालय का उद्देश्य था "इसको सम्पूर्ण पितृभूमि (जर्मनी) के लिये स्वतन्त्र तथा महान राष्ट्रीय चेतना का आधार बनाना, क्योंकि पुराने विश्वविद्यालयों की स्थापना रोम-साम्राज्य के निहित-स्वार्थों के आधार पर की गई थी, इसलिये ये विश्वविद्यालय राष्ट्रीय भावना से अनभिज्ञ थे..."

एलेक्जाण्डर वान हुमबोल्त : स्वर्गीय विलहेल्म हुमबोल्त के छोटे भाई, स्व. एलेक्जाण्डर वान हुमबोल्त ने भी, बर्लिन विश्वविद्यालय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। वे भी

(शेष पृष्ठ १९ पर)

माइस्सेन

जो. ए. हाउफ
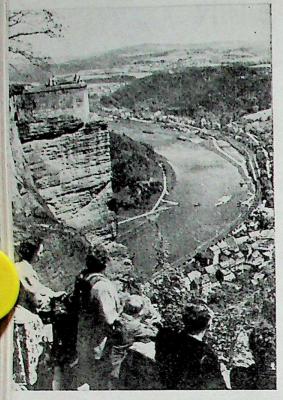
बल खाती हुई एल्बे नदी

जहाँ एल्बे नदी ड्रेस्डेन को छोड़ देती है, और जहां घाटी विस्तीर्ण हो जाती है, उस जगह से नदी के किनारों पर टीलों का सिलसिला शुरू होता है। इन छोटी-छोटी पहाड़ियों और टीलों पर अनेकानेक अंगूर वाटिकाएं फैली हुई हैं, और इन वाटिकाओं में काम करने वाले लोगों के छिटके हुए घर एक अनोखा दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह दृश्य उस स्थान पर समाप्त होता है जहां, एल्बे नदी के तट स्पार नामक पर्वतों का दामन थाम लेते हैं। इस पर्वतमाला की मेड़ों में, जर्मनी का अलौकिक सौन्दर्य वाला एक कस्बा बसा हुआ है, जिसका नाम है माइस्सेन। दूर से माइस्सेन का धुंधला आकार दिखाई देता है—विशेषकर इसका गिरजा-घर और आलब्रेख्त्स्बुर्ग नामक दुर्ग दर्शक की दृष्टि को बांध देते हैं।

एक हजार साल पुराना माइस्सेन कस्बा

सैकड़ों वर्ष पहले जब जर्मन सामन्तों की सेनाओं ने, एल्बे नदी पर बसे हुए स्लाव लोगों पर हमला किया तो उन सामन्तों को यह जगह किला-बन्दी करने के लिये बड़ी उप-युक्त लगी। दुर्गों में बैठकर यहां से वे विजित लोगों और क्षेत्रों पर अपना कड़ा शासन चला सकते थे। बाद में दुर्ग के पास पड़ोस में कई मकान भी तामीर हुए और यह जगह न केवल सैनिक-अधिकारी का ही आवास बना, बल्कि असैनिक और चर्च प्रशासन भी यहां से चलाया जाने लगा : जर्मन इति-हास में यही स्थान माइस्सेन मार्क के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दुर्ग के दामन में देखते ही देखते एक बस्ती बस गई और १३ शताब्दी तक माइस्सेन की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। ...उधर दुर्ग से घिरे हुए राजमहलों में सामन्त ऐश करते थे। दावतें उड़ती थीं, दंगल और खेलकूद होते थे और चारणों तथा भाटों की कविताओं का रसपान हुआ करता था। दुर्ग के क्षेत्र में ईसाई पादरियों ने दो विहार बनाये थे और वे कानवेण्ट स्कूल चला रहे थे। उन्होंने रोमानेस्क नामक एक गिरजा भी बनाया था वहां।

प्राचीन माइस्सेन का रूपाकार उपलब्ध नहीं है। लेकिन इसके आकार का रूप सन् १४०० के बाद निखरना शुरू हुआ जबकि यहां का अभिजात वर्ग तथा शासक वर्ग और चर्च भी इसके रूप संवरण में दिलचस्पी लेने लगे। ...वैसे गाथिक कला का एक गिरजा-घर यहां सन् १२२० से तामीर होना शुरू हुआ। इसकी तामीर दो शताब्दियों में पूरी
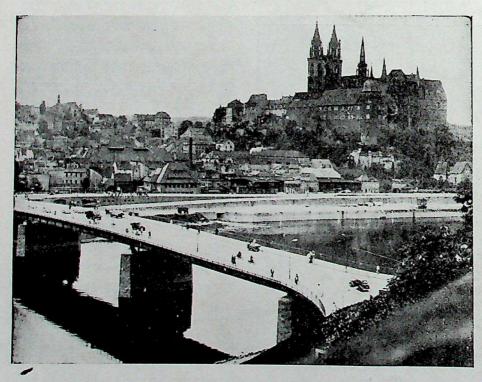
हुई । सन् १८७० में, प्रसिद्ध जर्मन वास्तुकार एर्नाल्ड वान वेस्तफालेन ने आलब्रेख्स्बुर्ग के शानदार दुर्ग की तामीर की जो वास्तुकला का एक सुन्दर और भव्य नमूना है ।

माइस्सेन में धर्म-सुधार आन्दोलन की सफलता के बाद वहां ईसाई धर्म-विहार और उन के द्वारा संचालित स्कूल बन्द कर दिये गए और उनका स्थान लिया "राजकुमारों का स्कूल" ने । यह स्कूल एक महान संस्थान बन गया बुर्जुआ मानवाद का, और इसमें यहां की कई पीढ़ियां शिक्षित हुई जिनमें विश्व-प्रसिद्ध जर्मन नाटक-कार एवं कवि गोत्तहोल्द एफ्राइम लेस्सिग का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

३० वर्षीय युद्ध ने माइस्सेन को ध्वस्त किया । ५,६ हज़ार आबादी वाले इस फलते-फूलते कस्बे में मुश्किल से ३०० व्यक्ति जीवित रहे, और सैकड़ों वर्षों की माइस्सेन की संचित सामाजिक महिमा धूल में मिल गई । इसके बाद, यहां के दरबारी जीवन की हलचल का केन्द्र ड्रेस्डेन बन गया । १८वीं शताब्दी के प्रारंभ में, माइस्सेन ने अपनी खोई हुई शान फिर से बटोरनी शुरू की, लेकिन यह अपने पूर्व गौरव को पूर्ण रूप से प्राप्त न कर सका ।

सन् १७१० में माइस्सेन में नई हलचल शुरू हुई । यह आर्थिक हलचल थी । एल्ब्रेख्त्स्बुर्ग राजदुर्ग के क्षेत्र में पोर्सिलेन की कई फैक्ट्रियां लग गयीं । यूरोप में सफेद पोर्सिलेन के आविष्कर्त्ता, श्री योहान्न फ्रेदरिख बोत्तकर ने ये फैक्टरियां लगवाई थीं वहां क्योंकि वह अपने स्वामी, पोलेण्ड के सम्राट् आगस्त शक्तिमान और सैक्सनी के इलेक्टर के लिये पोर्सिलेन के सुन्दर बर्तन तैयार करना चाहते थे । मृत्तिका शिल्प का यह उद्योग एल्ब्रेख्त्स्बुर्ग-दुर्ग क्षेत्र में सन् १८६३ तक फलता-फूलता रहा । इस अवधि में माइस्सेन की इस विशेष कला की ख्याति सारी दुनियां में फैल चुकी थी । माइस्सेन की यह विरासत आज तक भी न केवल जीवित ही रखी गई है, बल्कि उसको हर तरह से दृढ़ तथा विस्तृत भी किया जा रहा है ।

माइस्सेन का उक्त पोर्सिलेन उद्योग के उत्पादन--जो पुरानी तथा नई कला डिज़ाइनों के सुन्दर नमूने हैं--न केवल जर्मन जनवादी गणतंत्र में ही सुप्रसिद्ध है, बल्कि दुनियां के अनेक देशों को भी इनका निर्यात होता है । ...

आजकल माइस्सेन की कुल जनसंख्या ५० हज़ार से भी अधिक है । यहां की कई ऐतिहासिक और आलीशान इमारतें महफूज़ कर दी गई हैं । पुराना "राजकुमारों का स्कूल" सन् १९५३ से, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुप्रसिद्ध कालेज, "कृषि उत्पादन सहकारी संघों का कालेज", का आवास बन गया है । यहां के एल्ब्रेख्त्स्बुर्ग दुर्ग और गिरजाघर की कलाकृतियां आज सैकड़ों हज़ारों दर्शकों को आकर्षित करती हैं । . . .

———

पोर्सिलेन (मृत्तिका शिल्प) की कलापूर्ण वस्तुएं जो विश्व प्रसिद्ध हैं

बर्फ बनी एल्बे नदी । पार्श्व भूमि में आलब्रेख्त्सबुर्ग दुर्ग तथा गिरजे का धुंधला आकार दिखाई देता है

(पृष्ठ ११ का शेष)

एक महान वैज्ञानिक और मानवतावादी विचारक थे। विश्वप्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे के शब्दों में वे "अपने आपमें एक अकादमी थे"। अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करने के लिये उन्होंने एक घुमक्कड़ का जीवन अपना लिया था। इस जीवन में जो कुछ उन्होंने अर्जित किया, उसको ३६ ग्रन्थों, शोध-पत्रों, यात्रा-वृत्तान्तों में प्रकाशित किया। अनेक देशों की यात्रा में, स्व. एलेक्ज़ाण्डर हुमबोल्त की मिश्र देश, दूर पूर्व, स्पेन और दक्षिणी अमरीका के देशों की यात्रायें विशेष उल्लेखनीय हैं। .... नव महाद्वीप के विषुवीय-क्षेत्रों की यात्राओं पर ही केवल उनके ३० ग्रन्थ प्रकाशित हुये हैं। जहालत और अशिक्षा के उन्मूलन के लिये उन्होंने आजीवन सतत संघर्ष किया। उनके सार्वजनिक व्याख्यानों में हज़ारों लोग शामिल होते थे और श्री हुमबोल्त उनको, अन्तरिक्ष तथा ब्रह्माण्ड के अथाह वैज्ञानिक रहस्यों के बारे में बातें सुनाते थे। इस प्रकार वे विज्ञान के गूढ़ रहस्यों को जनता के निकट लाकर विज्ञान को लोकप्रिय बनाया करते थे। वे विज्ञान को मानव-सेवा का बड़ा साधन मानते थे। ब्रह्माण्ड से संबंधित अपने व्याख्यानों के आधार पर वे समस्त विश्व के बारे में एक वृहत्त ग्रन्थ लिखने की योजना तैयार कर चुके थे। लेकिन महाकाल ने उन को यह कार्य करने का अवकाश नहीं दिया।

९६ की पक्की आयु में श्री एलेक्ज़ाण्डर हुमबोल्त का देहान्त हुआ। लेकिन मृत्यु की कोख में समा जाने से पहले ही वे अमर हो चुके थे। उनके नाम पर अनेकानेक सभा-संस्थाओं, मार्गों तथा पर्वतों, ग्लेश्वरों तथा झीलों, प्रतिष्ठानों तथा शिक्षा संस्थानों और नगरों आदि का नामकरण किया जा चुका था। लेकिन यह एक अजीब बात है कि जिस बर्लिन विश्वविद्यालय को हुमबोल्त बन्धुओं ने जन्म देकर अपने खून पसीने से सींचा संवारा और अनुसन्धान तथा शिक्षा का विश्वप्रसिद्ध केन्द्र बनाया, दूसरे महा युद्ध के बाद ही, अपने जन्मदाताओं के नाम पर उसका नामकरण किया गया। (दूसरे शब्दों में फासिस्तवाद की पराजय के बाद, सन् १९४६ में बर्लिन विश्वविद्यालय का नाम पड़ा हुमबोल्त विश्वविद्यालय–सं.)।

सन् १८१० में, बर्लिन विश्वविद्यालय के प्रथम रेक्टर (कुलपति) का निर्वाचन हुआ और प्रसिद्ध दार्शनिक फिख़्ते इसके प्रथम रेक्टर नियुक्त हुये। कई विश्वप्रसिद्ध मनीषी, दार्शनिक और वैज्ञानिक इस विश्वविद्यायल में, समय-समय पर, अध्यापन का कार्य कर चुके हैं। १९ वीं शताब्दी के विश्वविख्यात जर्मन दार्शनिक और द्वन्द्ववाद के प्रवर्तक, हेगल, बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। उनका एक शिष्य, जिनके विचारों ने बाद में दुनिया में उथल पुथल मचा दी, अर्थात् मार्क्सवाद के संस्थापक और प्रणेता, कार्ल मार्क्स भी इस विश्वविद्यालय में पढ़ा चुके हैं। वैज्ञानिक समाजवाद के जनक कार्लमार्कस के सिद्धान्तों के आधार पर आजकल विश्व के समाजवादी शिविर का निर्माण हो रहा है जिसमें इस महान दार्शनिक-मनीषी की जन्म भूमि जर्मनी का एक भाग––अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र भी शामिल है। इन विश्वप्रसिद्ध दार्शनिकों के अलावा, निम्न विख्यात वैज्ञानिक इस विश्वविद्यालय में अध्ययन कार्य कर रहे थे: आइलहार्द मितशेरलिख (रसायन-शास्त्री), कार्ल रित्तेर (भूगोल-शास्त्री), गोत्तफ़्रीद एहरेनबर्ग (धर्म शास्त्री) और गुज़ताफ माग्नुज़ (भौतिकविद्)।

बर्लिन विश्वविद्यालय के विकास में १८४८ का वर्ष एक मील-पत्थर की हैसियत रखता है। उस वर्ष की मार्च मास की राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं में विश्वविद्यालय के अधिकांश छात्रों ने, बुर्जुआ आजादी के लिये जन-संघर्ष का स्वागत तथा समर्थन किया। इन घटनाओं के बाद, विश्वविद्यालय के अध्यापन कार्य के लिये, उच्च कोटि के वैज्ञानिकों तथा विद्वानों की नियुक्ति का क्रम जारी रहा। इनमें एक विशेष उल्लेखनीय नाम है रुडोल्फ विरखोव का।

रूडोल्फ विरखोव: इन महान वैज्ञानिक का जन्म हुआ १३ अक्तूबर सन् १८२१ के दिन शिवेलबाइन नामक स्थान पर। सन् १८३९ में उन्होंने डाक्टरी के अध्ययन के लिये दाखिला लिया। सन् १८४९ में वूर्ज़बुर्ग के मेडिकल कालेज में प्रोफेसर, और सन् १८५ में बर्लिन के रोग-विज्ञान संस्थान के निदेश नियुक्त हुये। सन् १९०२ में इनका देहान्त हुआ।

चार महान जर्मन (बाईं से दाईं ओर): फ्रेदरि शिल्लर, विलहेल्म हुमबोल्त, एलेक्ज़ाण्डर हुमबोल्त, और गेटे

स्वर्गीय रूडोल्फ विरखोव का नाम केवल औषधि शास्त्र के इतिहास में ही अम है, बल्कि वे १९ वीं शती के एक अच्छे प्रगति शील बौद्धिक भी थे। वैज्ञानिक के रूप श्री विरखोव अपने कोशिका रोग सिद्धान्त कारण विश्व-विख्यात हुये। इस सिद्धान्त अनुसार उन्होंने कोशिका (सेल) को स रोगों का अभि-बिन्दु सिद्ध किया। वर्षों में वे जर्मन मेडिसिन और मानव-विज्ञा के प्रमुख बन गये। वृद्ध-अवस्था पहुंचते पहुंचते, श्री रूडोल्फ विरखोव अपने उल्लिखित सिद्धान्त को (जिसमें का तथ्य था) एक रूढ़ि में बदल दिया था। स्वरूप, अन्य क्रांतिकारी मेडिकल सिद्धान्तों सामने उनका सिद्धान्त ठहर न सका—वि कर राबर्ट-कोख के अत्यन्त महत्वपूर्ण खो अर्थात् जीवाणु सिद्धान्त के सामने। ....

(शेष पृष्ठ १९ पर)

पुराना ग्राम - स्कूल

पीतर नीके

किसानों, मांझियों, लकड़ी चीरने वाले मजदूरों और वनों की देख-रेख करने वाले कर्मचारियों के इस 'लीबेनवाल्दे' गांव में ऐसी कोई आकर्षण की बात नहीं जो गुज़रते हुये किसी यात्री को घंटे भर के लिए भी आकर्षित करे। इसे संयोग की बात ही समझ लीजिए कि हमें 'पोतस्दाम काउन्टी' के इस गांव में रुकना पड़ा। एक नया बोर्ड जिस पर लिखा था 'स्कूल' एक ऐसी इमारत पर लगा दिया था जो बहुत पुरानी थी। इसकी छत मिट्टी की थी, खिड़कियां बेतरतीबी से लगी हुई थीं और दीवारों में दरारें पड़ी हुई थीं। हमारे लिये यह एक आश्चर्य की बात थी कि एक ऐसा मकान जो संग्राहालय की कोई वस्तु प्रतीत हो रहा था, जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक स्कूल भी हो सकता है। परन्तु मकान पर "स्कूल" तो लिखा ही था।

हमने, बन्द खिड़कियों की दरारों से कमरे में झांका। करीने से एक-दूसरे के ऊपर रखे गये भरे-पूरे बोरे दिखाई पड़े हमें।

पासवाले मकान के एक आदमी ने हमारी उलझन को सुलझाया : "यहां एक फिलम बनाई

पुराना ग्राम-स्कूल
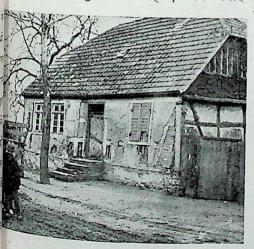
जायेगी। यह मका[illegible], ३५ वर्ष पूर्व हमारे गांव का स्कूल था। आ[illegible] यहां अनाज के बीजों का गोदाम है। हमा[illegible] [illegible]या स्कूल गांव के दूसरे सिरे पर है।"

उस व्यक्ति ने, जो हमारा दोस्त बन चुका था, अपना परिचय देते हुए कहा : "मेरा नाम हांस फ़्रित्शे है। मैं यहां स्कूल में पढ़ाता हूं।"

वह हमें अपने मकान पर आने के लिए कहता है। वह हमें इस गांव का लिखा हुआ वृत्तान्त दिखाना चाहता है, जो उस ने कई वर्षों से लिखकर तैयार किया है। उनकी मेज़ पर छात्रों के परचे हैं जो उसे देखने हैं। "हम-आपके काम में बाधा तो नहीं डाल रहें हैं?

"बिल्कुल नहीं जनाब। मेहमान तो कभी-कभी ही आते हैं इस ओर। इसलिए उन का आना सौभाग्य की बात है।"

५० साल की आयु के यह वयोवृद्ध अध्यापक पंगु हैं। दूसरे महायुद्ध में इनकी एक टांग कट गई है। एक वर्ष पहले वह इस स्कूल के मुख्याध्यापक थे, और इसलिये उनको बहुत दौड़ धूप करनी पड़ती थी—"अन्त में यह काम मैंने एक स्वस्थ युवक उत्तराधिकारी को सौंप दिया। अब मुझे कोई विशेष विषय पढ़ाने में अधिक रुचि है।"

गांव के पुराने स्कूल की बात चलाते हुए हमने पूछा कि फिल्म वाले इसको कैसे फिर से जीवित करेंगे? भूतपूर्व अध्यापक, श्री फ़्रित्शे बोले : ....."मैंने ऐसे ही एक स्कूल में वर्णमाला और पहाड़ात था जोड़ना-घटाना सीखा है। उन दिनों यह पढ़ाई हम पर बांस की छड़ी से पीट-पीट कर ठोंस दी जाती थी। उस समय के सभी अध्यापक भूतपूर्व सैनिक हुआ [illegible] थे जिन्हें १२ वर्ष की सैनि[illegible] सेवा [illegible] "सरकारी पद" एक अधिकार के रूप में दिया जाता था। उनको नियुक्त करते समय अधिकारी, उनके बौद्धिक गुणों या पढ़ाने की क्षमता की कतई परवाह नहीं करते थे। हमको अच्छे सैनिक बनाने के लिए हमें राष्ट्रीय उद्दण्डता और अन्य जातियों से घृणा करना दिखाया जाता था। थोड़े से पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त हमें कुछ भी नहीं सीखना था, क्योंकि एक सस्ते मजदूर के लिए इतना काफी था, जिसकी तलाश हमेशा जागीरदारों को रहती थी। कुछ प्रगतिशील अध्यापक चाहते हुए भी इस सबके विरुद्ध कुछ न कर सके। उन दिनों के उन स्कूलों की व्यवस्था देखकर वे हताश हो चुके थे।

"यह सच है कि लगभग हर बड़े गांव में एक स्कूल था उन दिनों, परन्तु इनमें एक या अधिक से अधिक दो कक्षायें हुआ करती थीं। ६ से १४ वर्ष तक के सभी छात्र एकसाथ एक ही कक्षा में पढ़ा करते थे। बड़ी आयु वाले छात्रों को छोटे बच्चों को पढ़ाना पड़ता था। 'लीबेनवाल्दे' स्कूल का अध्यापक सन् १६१५ में १५ छात्रों को एक साथ अकेले ही पढ़ाने के लिये मजबूर था। इतना ही नहीं, सन् १६४४ में भी उस को ६० छात्रों को एक साथ पढ़ाना पड़ता था। कई विद्यार्थी दो बार फेल होने पर छठी श्रेणी में ही स्कूल छोड़ने पर मजबूर हो जाते थे। इसका कारण उनकी मूर्खता या बुद्धिहीनता नहीं था, अपितु यह उस कठोर श्रम का परिणाम था जो उन्हें बचपन से ही करना पड़ता था और जिसकी वजह से वे स्कूल न जा सकते थे।

"हम चार बहन भाई थे घर पर। मैं अध्यापक बनना चाहता था, परन्तु मेरे पिता जी को खेतों में मेरी सहायता की आवश्यकता थी। घर चलाने के लिए पैसा कमाना जरूरी था।..."

इस कहानी को आगे बढ़ाते हुये श्री फ़्रित्शे कहने लगे : "दूसरे महायुद्ध के बाद जब जनवादी स्कूल सुधार अमल में ल[illegible] [illegible] तब ही श्रमिकों की अपनी मनपसन्द शिक्षा प्राप्त करने

अध्यापक हांस फ़ित्शे

की अभिलाशा पूरी हो सकी। ऐसे अनेक अध्यापकों पर, जिन्होंने नाजीवाद को बढ़ावा देकर बालकों के विचारों को विषाक्त कर दिया था, यह प्रतिबन्ध लगाया गया कि वे बालकों को न पढ़ाएं। थोड़े समय की ट्रेंनग के बाद, ३२ वर्ष की आयु में, मैंने पढ़ाना प्रारंभ किया यहां। दूसरे हज़ारों लोगों की तरह मुझे भी आधी आधी रात तक कई साल पढ़ना पड़ता था, और मैंने अध्यापकों के पत्रविधि पाठ्यक्रम द्वारा पूरी शिक्षा पाई।" . . .

प्रारम्भ में काम चलाने के लिये केवल गांव के पुराने स्कूल ही थे। उनमें भी बहुत कम कमरे थे पढ़ाई के लिये, क्योंकि युद्ध में बहुत से स्कूल नष्ट हो गये थे। इस कमी को पूरा करने के लिए रेस्तरानों तथा मेयर के दफ्तर आदि से भी स्कूल का काम लिया जाता था। परन्तु धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न आयु के विद्यार्थियों को अलग कर दिया गया। जहां सन् १९४५ में, आज की ज.ज.ग. की सीमा के अन्दर ४११४, एक श्रेणी वाले पिछड़े ग्राम स्कूल थे (जो अब केवल इतिहास की वस्तु बन चुके हैं) वहां इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी में आज भी [illegible],००० ऐसे स्कूल मौजूद हैं—— अर्थात् प्राथमिक स्कूलों की कुल संख्या का आधा भाग।

"और यह है हमारा नया स्कूल"——श्री फ़ित्शे के इस कथन से हम अवाक रह कर ठहर गए। यहीं श्री फ़ित्शे पढ़ाते हैं——इस आधुनिक स्कूल के सुन्दर भवन में ऐसे छोटे गांव में इससे अच्छी इमारत शायद ही कहीं देखने को मिलेगी। यहां के नये मुख्य अध्यापक की आयु लगभग ३० वर्ष की होगी, और शेष कर्मचारियों की औसत आयु २८ वर्ष है। मुख्य अध्यापक को इस नये स्कूल पर गर्व है। वह बड़े विनम्र भाव से अपने पूर्वाधिकारी तथा मित्र (श्री फ़ित्शे) के गुणों की प्रशंसा करते हैं जिससे वह प्रायः सलाह लेते हैं। ..

सात वर्ष पहले इस स्कूल का निर्माण हुआ। इसके निर्माण और जरूरी चीजों——मेज, कुर्सी, बोर्ड आदि की खरीद पर ३२ लाख मार्क (१मार्क=१.१२ पैसे) की रकम खर्च की गई। यह स्कूल अब आस-पास के आठ गांवों के बच्चों की पढ़ाई का केन्द्र बन चुका है। अन्य गांवों के बच्चों को लाने लेजाने के लिये स्कूल की अपनी बस है। लीबेनवाल्दे के इस नये स्कूल में २२ कमरे हैं, और हर कमरे में औसत ३० छात्र-छात्रायें बैठते हैं। यह स्कूल एक अपवाद नहीं है, बल्कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के ग्राम क्षेत्र में ऐसे ही सैकड़ों स्कूल काम कर रहे हैं। नगर स्कूलों की तरह ही इन ग्राम-स्कूलों में भी वैज्ञानिक शिक्षा-पद्धति पर अमल किया जा रहा है। लगभग ७०० विद्यार्थियों को औसत ३० अध्यापक पढ़ाते हैं–अर्थात् लगभग प्रति २३ विद्यार्थियों पर एक अध्यापक। . . . .

साधारण किन्तु आधुनिक सामग्री से सजी हुई कक्षाओं के अतिरिक्त हमने तीन ऐसे कमरे भी देखे जहां रसायन, भौतिकी और जीव विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। प्रारम्भिक कक्षाओं की अलमारियों की दराज़ें, माडल, प्रयोगशाला और शिक्षा सम्बन्धी सामग्री से भरी पड़ी थीं। चित्र-शाला, व्यायाम-गृह तथा सभा-कक्ष में खिड़कियों से सूर्य का प्रकाश उमड़-उमड़ आ रहा था।

विद्यार्थियों का एक तिहाई भाग, बिना किसी शुल्क के स्कूल के उस कार्यक्रम में भाग लेता है जो सामान्य दैनिक समय के बाद आरम्भ होता। इनमें अधिकतर संख्या उन बालकों की है जिन के माता पिता श्रमिक हैं। हर एक विद्यार्थी को शाम का खाना स्कूल की ओर से दिया जाता है जिसके लिए उन्हें केवल ०.५० (आधा) मार्क देना पड़ता है।

घर के लिए रखा गया स्कूल का काम करने के बाद बच्चे दूसरे महत्वपूर्ण कामों में जुट जाते हैं। खेल-कूद तथा दस्तकारी पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस स्कूल के दो लोक नृत्य और एक सामूहिक गायक दल काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। 'हैंड बाल" टीमों ने कई बार क्षेत्रीय तथा जिला चैम्पियनशिप जीती हैं। दस्तकारी, शतरन्ज तथा चित्र-

(शेष पृष्ठ १९ पर)
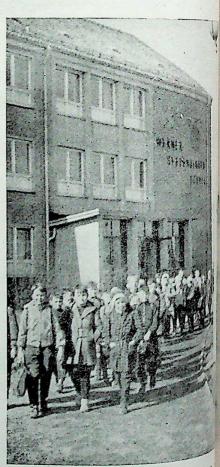
गांव का नया स्कूल, जिसमें ७०० विद्यार्थी पढ़ते हैं
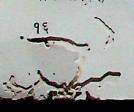
रस-धारा

विश्व विख्यात जर्मन कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय नाम है गेटे का—जिनका पूरा नाम है योहान्न वोल्फगांग गेटे (१७४६–१८३२)। इनकी इस प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण है इनके द्वारा रचित महाकाव्य "फाउस्त"। यह महाकाव्य, दुनिया की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में अनूदित हो चुका है।.... गेटे, महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'शाकुन्तलम्' नाटक से (जिसका उन्होंने जर्मन अनुवाद पढ़ा था) अत्यन्त प्रभावित हुये थे—विशेषकर शकुन्तला के सौन्दर्य और प्रभावशाली नारियत्व से।

इस बार इन्हीं विश्वप्रसिद्ध जर्मन कवि की एक कविता का हिन्दी रूपान्तर हम अपने पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। हम जानते हैं कि ऐसा करना दुस्साहस करना है। परन्तु यह एक सराहनीय दुस्साहस है।.... अंग्रेजी अनुवाद में इस कविता का शीर्षक है "गॉडलाइक"। उसी का निम्न हिन्दी रूपान्तर श्री 'पम्पोज' ने किया है।

—संपादक

महामानव

मानव को होना चाहिये
सौम्य, उदार, अच्छा।
ये ही गुण उसको
अन्य प्राणियों से अलग करते हैं
(मनुज कहलाने का देते हैं अधिकार उसे)।

अज्ञात, आने वाले
महा मानव की जय हो
जिसकी हम आकांक्षा करते हैं।
किन्तु क्यों न मनुज ही
उस महानता को करे प्राप्त
उसकी प्रतिकृति बनकर
पूर्ण श्रद्धा की शिक्षा लेकर।

प्रकृति कितनी निर्दय (निःसंग) है—
सूर्य, प्रकाशित करता है
न्याय, अन्याय—दोनों को,
चान्द, सितारे करते आलोकित
साधु, हत्यारे—दोनों को।

आन्धी, वर्षा
बिजली, घन, झंझावात
गरजता तूफां, बनकर बाढ़
(सिंह की तरह दहाड़ कर)
झपट पड़ते हैं, किसी एक पर
(बिना दोष के)।

ऐसे ही, सौभाग्य भी
किसी भीड़ में भटक जाता है :
कभी किसी किशोर के
कोमल कुन्तल सहलाता है,
और कभी किसी कुटिल, कुरूप
चन्दिया को चमकाता है।

शाश्वत, कठोर महा नियमों से अनुशासित
सभी को पूरा करना पड़ता है
अपना काल-क्रम।

किन्तु मनुज, (मानव)
असम्भव भी प्राप्त कर लेता है,
(विवेकशील है) वह
अच्छे बुरे का भेद करता है,
वह चयन करता, संचालन-कर्त्ता है,
वह निमिष को
शाश्वत में बदल सकता है।

केवल वह ही, (बस वह ही)
पुण्य-कृत्य को पुरस्कृत
और पाप को दण्डित करने का
साहस रखता है,
घाव पर मलहम रखता है
और, (नाश से) रक्षा कर सकता है,
पथ-भ्रष्टों को पुनः मार्ग सुझा सकता है।

मनुष्य बने श्रेष्ठ,
उदात्त, उदार, अच्छा—
अनथक-कर्मी, सृष्टा
न्यायशील, निःस्वार्थी।
वह बने प्रतिरूप
उस महा मानव का
जिसकी हम करते हैं आराधना, आकांक्षा।

रूपान्तर[illegible]
ओम पंडित, 'पम्प[illegible]

तथ्य और आंकड़े
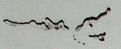
स्त्रियों की स्थिति

जर्मन जनवादी गणतंत्र के कुल श्रमिकों में स्त्रियों तथा लड़कियों की संख्या ६४ प्रतिशत है।

तीन महिलायें यहां की राज्य परिषद् की सदस्य हैं। इनमें से दो ज.ज.ग. की सर्वोच्च सभा—लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष-मंडल में बैठती है। एक महिला उपप्रधान मंत्री हैं। इसके अतिरिक्त न्यायमंत्री तथा शिक्षामंत्री के पदों पर भी दो महिलाएं ही विराजमान हैं।

लोक सभा के सदस्यों में २७.४ प्रतिशत सदस्य महिलाएं हैं।

ज.ज.ग. के न्यायालयों में ३०.४ प्रतिशत न्यायाधीशों के पदों पर महिलाएं नियुक्त हैं। छोटे न्यायाधीशों में ३४.६ प्रतिशत और सरकारी वकीलों में २० प्रतिशत से भी अधिक संख्या स्त्रियों की है।

सन् १९६३ में, ज.ज.ग. के विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में २६६५६ छात्राएं पढ़ती थीं, अर्थात् कुल विद्यार्थी संख्या का २५.६ प्रतिशत भाग। उसी वर्ष ३५,५०७ छात्राओं ने ज.ज.ग. के दूसरे तकनीकी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की (जो कुल विद्यार्थियों का २५.२ प्रतिशत भाग बनता है)।

सन् १९६२ में २७४,४२८ स्त्रियों ने फैक्ट्री संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त की, जिनमें २६,३५२ स्त्रियों ने विभिन्न उद्योगों में प्रवीणता प्राप्त कर परीक्षाएं पास कीं। इनमें से २७२८ छात्राओं ने फोरमैन की परीक्षा पास की और कुशल मज़दूर बनी। छात्राओं में से ५.२२२ विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में दाखिला लिया।

ज.ज.ग. में ६५५२ किंडरगार्टन तथा शिशु-गृह हैं। इन गृहों में ४०४,२२३ बच्चे ठहर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ३०७२ क्रेशे हैं जहां पर २०३,४६६ बच्चों के लिये स्थानों की व्यवस्था है। २०३ स्थाई-गृह भी हैं जिनमें कुल ६०३३ स्थान हैं बच्चों के लिये।

मां बनने वाली महिलाओं को १४ सप्ताह की प्रसूतिकालीन छुट्टी पूरे वेतन पर दी जाती है। यदि नवजात की माता चाहे तो वह बिना वेतन के तब तक छुट्टी ले सकती है जब तक कि उसका बालक एक वर्ष का हो जाए। ऐसी दशा में उसको नौकरी से अलग नहीं किया जाता है।

सब स्त्रियों को एक से काम के लिये एक सा वेतन मिलता है।

कृषि पर खर्च

ज.ज.ग. में कृषि के विकास के लिये, इस वर्ष २ अरब, १ सौ करोड़ मार्क [illegible] खर्च की जाएगी। इसमें से आधी रकम कृषि संबंधी [illegible] खर्च की जाएगी। कृषि उद्योग के लिये २५०० ट्रैक्टर, [illegible] भी [illegible] आलू छांटने की मशीनें और २५०० खाद डालने वाले यंत्र मुहैया किये जाएंगे। अनुमान लगाया गया है कि तीन चौथाई फसल मशीनों से बीन ली जाती है। चुकन्दर की ८६ प्रतिशत फसल भी मशीनों से ही काटी जाती है।

एक वर्ष में २७० पुल

जर्मन जनवादी गणतंत्र में लगभग १ अरब मार्क इस वर्ष सड़कों के निर्माण के लिये रखे गये हैं। सड़कों को मिलाने वाले विभिन्न लम्बाइयों के २७० पुल बनाये जायेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र की आज की सीमा के अन्दर हर पांचवां पुल दूसरे महायुद्ध में नष्ट कर दिया गया था। इसमें साल्ले, एल्बे और ओदर नदियों पर बने सभी पुल भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त लगभग २७,००० किलोमीटर सड़कें भी उस युद्ध में नष्ट हो गई थीं।

आजकल महत्वपूर्ण लम्बी सड़कों का निर्माण, तथा बड़े नगरों की यातायात व्यवस्था सुधारने का काम बड़ी तत्परता से हो रहा है।

ज.ज.ग. में आज कल जो सड़कों का जाल बिछा हुआ है, उसमें से २४०० किलोमीटर आटोबान सड़कें, २२०० किलोमीटर सड़कें, ३३०० किलोमीटर जिला सड़कें, ५६००० किलोमीटर म्युनिसिपल सड़कें तथा सड़कों के ३२०० पुल शामिल हैं।

(पृष्ठ ५ का शेष)

— एक शांति संधि पर दस्तखत करना, और मध्य यूरोप की स्थिति को सामान्य बना देना;

— दो जर्मन राज्यों के बीच, धीरे-धीरे पुनर्मेल स्थापित करना, और जर्मन एकीकरण को दृष्टि में रखते हुये आपस में हर प्रकार के संबन्धों को जोड़ देना;

— जर्मन सैनिकवाद के खतरे को पनपने न देना, और पश्चिमी जर्मनी का अणु-शस्त्रीकरण रोकना;

— दूसरे महायुद्ध के बाद स्वीकृत सभी राज्य सीमाओं को, और विशेषकर ओदर-नाइस्से सीमा को मान लेना;

— पश्चिम बर्लिन, जो पश्चिमी जर्मनी का हिस्सा नहीं है, के सवाल को समझौते और बातचीत के द्वारा हल करना।

— शोक सन्तप्त भारत और ज. ज. ग. : जिस समय, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने अपने बड़े हमदर्द और भारत के महान सपूत तथा राजनीतिज्ञ के देहान्त का दुखद समाचार सुना, वह शोक से सन्न रह गयी। अपनी जनता के इस गहन शोक को, जर्मन जनवादी गड़णतंत्र के राजनीतिज्ञों और नेताओं ने अपने शोक सन्देशों द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। किन्तु महा मानव पण्डित जवाहरलाल नेहरू का नाम, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता के हृदय तथा मस्तिष्क में हमेशा के लिये अमर होकर रहेगा।

नेहरू : ज. ज. ग. की श्रद्धांजलि

(पृष्ठ ६ का शेष)

रहेगी, अपनी भारतीय यात्रा के दौरान जिनसे मुझे भेंट करने का सौभाग्य मिला था, और जिनकी यथार्थपूर्ण तथा दूरदर्शी नीति सारे संसार में सम्मानित है। जवाहरलाल नेहरू के निधन में भारतीय जनता ने एक ऐसा महान राजनीतिज्ञ खो दिया है जिन्होंने अपनी सारी शक्ति उनके कल्याण में लगा दी थी। जवाहरलाल नेहरू विश्वशांति के अनथक योद्धा थे। मुझे इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि स्वर्गीय नेहरू के उदात्त विचार और उनके कर्म, भारतीय जनता और दुनियां के समस्त शांतिकामी लोगों के हृदयों में अमर होकर रहेंगे। मैं आपको, और आपके द्वारा भारत सरकार तथा भारतीय जनता को अपनी गहरी समवेदना और सहानुभूति भेजता हूं।

डा. लोतार बोल्स का श्रीमती लक्ष्मी मेनन को

गहरे दुःख के साथ मैंने, प्रधान मंत्री और परराष्ट्रमंत्री जवाहरलाल नेहरू के देहान्त का समाचार सुना। इस अवसर पर मेरी समवेदना और सहानुभूति स्वीकार कीजिए।

उनके निधन से न केवल भारतीय जनता ने ही अपना सर्वोच्च नेता खो दिया, बल्कि समस्त संसार ने भी वर्तमान समय का एक सबसे महान राजनीतिज्ञ खो दिया। श्री जवाहरलाल नेहरू का नाम उपनिवेशवाद के खिलाफ भारतीय मुक्ति आंदोलन के साथ जुड़ा हुआ है। उनके कुशल नेतृत्व में भारत संसार के शक्तिशाली देशों में एक देश बना। जवाहरलाल नेहरू ने सदैव शांति स्थापना संबंधी जन संघर्ष का साथ दिया, और उन्होंने भारतीय गणराज्य की समाजवादी देशों के साथ मित्रता कायम करने में पहल की। इस महान क्षति से मेरा शोक इसलिये अधिक गहरा हुआ क्योंकि मेरी भारत यात्रा के दौरान मुझे स्व. जवाहरलाल नेहरू से मिलने का सौभाग्य मिला था। इस महान राजनीतिज्ञ से बातचीत करने पर यह बात स्पष्ट हुई कि हमारी (जर्मन) समस्याओं के प्रति भी वे कितनी गहरी दिलचस्पी और सहानुभूति रखते थे। परमश्रेष्ठ, एक बार फिर मेरी हार्दिक समवेदना तथा सहानुभूति स्वीकार कीजिये।

पुराना ग्राम-स्कूल

(पृष्ठ १६ का शेष)

कला के कई क्लब यहां पर हैं। दूसरे छात्र १२०० वर्ग-मीटर वाले उद्यान की देख रेख स्वयं करते हैं। उनमें से तो कुछ छात्र पड़ोस के सहकारी कृषि उत्पादन संघ के ३५ बछड़ों की देख भाल भी करते हैं।

इन बालकों तथा नवयुवकों को विस्तृत रुप से सम्पूर्ण शिक्षा तथा ज्ञान पाने के बहुत से अवसर दिये जाते हैं। सरकार, गांव के इस केन्द्रीय स्कूल पर प्रतिवर्ष १२०,००० मार्क खर्च करती है। ज.ज.ग. के दूसरे सभी स्कूलों की तरह इस स्कूल के भी पोलितकनीकी माध्यमिक स्कूल में परिवर्तन किया गया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र में अब गांव तथा शहरों में दस वर्ष तक स्कूल में पढ़ना अनिवार्य कर दिया है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है कि नयी पीढ़ी के लिए अधिक अच्छी और विस्तृत शिक्षा। लेकिन साथ ही इसका यह भी अर्थ है कि उनके माता-पिता को, दो साल के लिए उनकी पढ़ाई पर अतिरिक्त पैसा खर्च करना पड़ेगा। इसलिए ऐसे व्यक्तियों को बच्चों की पढ़ाई के लिए अतिरिक्त भत्ता दिया जाता है जिनकी आय कम हो। कम से कम ३० मार्क दिए जाते हैं पर यदि बालक होनहार प्रमाणित हुआ तो यह रकम ५० मार्क तक बढ़ा दी जाती है। ये बातें हमें हांस फ़्रित्शे ने तब बताई जब हम नये स्कूल का अन्तिम चित्र ले रहे थे।—"देखिए न, आपका यहां आना लाभदायक ही सिद्ध हुआ। बहुत से लोग हमारे गांव से गुजर जाते है, हमारे नये स्कूल की ओर ध्यान दिये बिना ही। क्योंकि जर्मन जनवादी गणतंत्र में आधुनिक ग्रामस्कूल अब एक आम सी बात बन गई है। जो फिल्म स्कूल के कथानक को लेकर फिल्माया जा रहा है वह आज से ३० वर्ष पूर्व की कथा है। यह एक अच्छी बात है, क्योंकि ऐसे अवसरों पर हम अनुमान कर सकते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुछ ही वर्षों के समाजवादी निर्माण में क्या कुछ हुआ है। . . . . ."

हुमबोल्त विश्वविद्यालय

(पृष्ठ १० का शेष)

अपने जीवन में, श्री रुडोल्फ विरखोव ने कई अत्यन्त महत्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य किये वैज्ञानिक अनुसन्धान के अलावा। उदाहरण के लिये उन्होंने प्रथम बार यह मांग उठाई कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित के लिये एक निश्चित स्थान पर ही कूड़ा जमा किया जाये और मांस तथा बाजारों में बिकने वाली खुली चीजों की अनिवार्य जांच हो। उन्हीं के सतत परिश्रम का यह नतीजा निकला कि बर्लिन में मल-मूत्र नालियों की व्यवस्था लागू हुई। सन् १८४८ में जब जर्मनी में टाइफस की महामारी फैली तो श्री विरखोव ने उस घोर दरिद्रता की ओर शासकों का ध्यान खींचा जिसमें लोग अपना जीवन बिताते थे। इस संदर्भ में, जगह-जगह जाकर और तथ्य इकट्ठे करके, तद्कालीन जर्मन सरकार के सामने उन्होंने जो स्मृति-पत्र पेश किया, वह आदर्श जर्मन सामाजिक स्वास्थ्य-विज्ञान की परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें श्री विरखोव ने तद्कालीन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति को मिलाकर देखा और उसका विश्लेषण किया। इस विश्लेषण के आधार पर उन्होंने यह स्पष्ट परिणाम निकाला कि महामारियां तथा भीषण रोगों का मूल कारण है जनता की शोचनीय सामाजिक स्थिति—अर्थात भूख, शोषण और दमन। श्री विरखोव ने एक स्थान पर लिखा है : . . "डाक्टर गरीबों का स्वाभाविक वकील है। जीवित शक्ति पूंजी के आधीन नहीं होनी चाहिये।"

(अपूर्ण : शेष अगले अंक में)

समाचार

कृषि पर २ अरब १० करोड़ मार्क खर्च होंगे

इस वर्ष, जर्मन जनवादी गणतंत्र में कृषि की विभिन्न योजनाओं पर २ अरब और १० करोड़ मार्क की धनराशि खर्च की जायेगी। इस रकम में से आधा हिस्सा कृषि के यन्त्रीकरण पर खर्च किया जायेगा, और कृषि कार्य के लिये खेती करने वाले सहकारी किसानों आदि को २५०० ट्रैक्टर, २८०० आलू छांटने वाली मशीनें और १५०० खाद वाहक यंत्र दिये जायेंगे।

जर्मन समस्या के हल के लिये नये सुझाव

४ मई को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्य परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के लिये तीन नये सुझाव दिये हैं पश्चिमी जर्मनी की सरकार को। सुझाव ये हैं :

१. दो जर्मन राज्यों और पश्चिम-बर्लिन की संसदों के नौजवान सदस्यों पर आधारित एक आयोग की स्थापना की जाये जो जर्मन नवयुवकों से संबंधित समस्याओं पर सोच-विचार करे।

२. (प. जर्मन) फेडरल गणराज्य के नवयुवकों को कुछ अच्छे अधिकार देने के लिये वहां, युवक पीढ़ी के बुनियादी अधिकारों से संबधित एक कानून पास किया जाये।

३. नाभिकीय शस्त्रास्त्रों को हासिल करने के प्रयत्नों को तिलांजलि देकर और दोनों जर्मन राज्यों में शस्त्रीकरण को रोक कर, जर्मन युवकों के लिये एक शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण किया जाये।

ये सुझाव, श्री उल्ब्रिख्त ने, ज. ज. ग. के हजारों नवयुवकों की एक विशाल सभा में, बर्लिन में पेश किये। यह सभा, ज. ज. ग. के, नवयुवकों से संबंधित उस नये कानून के उपलक्ष में बुलाई गई थी, यहां के पीपुल्स चैम्बर (लोक सभा) ने सर्वसम्मति से जिसको हाल ही में पास किया।

अन्तर्राष्ट्रीय मोटर दौड़ में ज. ज. ग. की सफलता

हाल ही में म्यूनिख (प. जर्मनी), वियाना (आस्ट्रिया) और बूडापेस्ट (हंगरी) को मिला देने वाले राजमार्ग पर एक अन्तर्राष्ट्रीय मोटरकार दौड़ हुई जिसमें यूरोप के विभिन्न देशों की १२० मोटरों ने भाग लिया। इस दौड़ में भाग लेने वाली टीमों को कुल १,५५० किलो मीटर का फासला तय करना था।

इस दौड़ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की "त्राबान्त ६०१" और "वार्तबुर्ग १०००" नामक चार मोटरकारों ने भी भाग लिया। इस प्रतियोगिता में "त्राबान्त" को एक स्वर्ण पदक तथा दो चान्दी के पदक, और वार्तबुर्ग को चार स्वर्ण पदक मिले।

एक भारतीय मजदूर नेता का अभिमत

जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा करने के बाद, "भारतीय परिवहन मजदूर संघ" के सचिव, श्री अहमद ने, ज. ज. ग. से विदा होते समय कहा कि "जर्मन जनवादी

कलकत्ता में ज. ज. ग. की बाल-फिल्मों का समारोह

१० मई के दिन, कलकत्ता में, पश्चिम बंगाल विधान-सभा के अध्यक्ष, श्री केशवचन्द्र बसु, और भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोत्तकर ने ज. ज. ग. के एक बाल-फिल्म समारोह का उद्घाटन किया।

अपने भाषण में श्री वसु ने, इस बात पर काफी प्रसन्नता प्रकट की कि भारत के बच्चे, एक बार फिर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की बाल-फिल्में देख सकेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में ,ज. ज. ग. की सराहनीय प्रगति का उल्लेख करते हुये उन्होंने कहा कि बाल-फिल्मों का प्रदर्शन, परोक्ष रूप से भारत में शिक्षा संबंधी समस्याओं को हल करने में योगदान देगा।

भारत स्थित, ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री बोत्तकर ने कहा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारत के साथ अपने सांस्कृतिक संबंधों को जल्द विस्तार देना चाहता है। उनके इस कथन का कि ज. ज. ग., शिक्षा को अन्तर्राष्टीय मैत्री और स्थाई शांति की सुरक्षा के लिये एक महत्वपूर्ण साधन समझता है, तालियों द्वारा स्वागत किया गया।

कलकत्ता में, उल्लिखित "बाल फिल्म समारोह", "कलकत्ता बाल-फिल्म संस्थान" तथा ज. ज. ग. के व्यापार दूतावास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहा है। यह समारोह २५ मई तक चालू रहा।...... इसमें, ज. ज. ग. की १७ बाल-फिल्मों के ३६ शो दिखाये जायेंगे जिनका विषय है परी-कथायें, विज्ञान, साहस आदि। आशा की जाती है कि लगभग ३०,००० बच्चे इन फिल्मों को देखेंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र, "कलकत्ता बाल-फिल्म संस्थान" द्वारा हर साल आयोजित किये जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय बाल-फिल्म समारोह में भी भाग लेगा।

ज. ज. ग. के उक्त बाल-फिल्म समारोह के उद्घाटन अवसर पर प्रधान मंत्री नेहरू, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह, और तेल तथा रसायन मंत्री, प्रोफेसर हुमायूं कबीर के शुभ सन्देश पढ़कर सुनाये गये।

गणतंत्र में समाजवाद का निर्माण अत्यन्त सराहनीय है। ....." ज. ज. ग. की यात्रा पर श्री अहमद के साथ बम्बई के "वस्त्र मजदूर संघ" के अध्यक्ष, श्री रेड्डी के अलावा जापान, श्रीलंका और आस्ट्रेलिया के श्रमिक संघों के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता भी थे। इन सबों ने वहां बड़े-बड़े कारखाने, सरकारी फार्म, सहकारी खेत आदि देखे।

पश्चिमी जर्मनी में एक जाली मुकदमा

१३ मई के दिन, कड़े अन्तर्राष्ट्रीय विरोध के बावजूद, पश्चिम जर्मनी के ब्रून्स्विक नामक स्थान में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के छः नागरिकों को गिरफ्तार किया गया उनका केवल इतना ही 'दोष' था कि वे पश्चिमी जर्मनी के नौजवान संगठनों तथा संस्थानों के लिये एक निमन्त्रण लेकर गये थे, ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन में होने वाले "जर्मन युवक समारोह" में भाग लेने के लिये। इसी दोष के लिये, पश्चिमी जर्मनी की उक्त अदालत में उन पर "राज्य के लिये जासूसी खतरा" और "अवैध संपर्क स्थापित करने का प्रयत्न" करने का "अभियोग" लगाया गया है। कैसा अनोखा न्याय है यह पश्चिमी जर्मनी का?

अखिल जर्मन युवक समारोह समाप्त

१८ मई के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी, बर्लिन में आयोजित, त्रि-दिवसीय "अखिल जर्मन युवक समारोह" समाप्त हुआ। समापन पर एकत्रित हुये युवकों ने यह प्रतिज्ञा की कि "वे एक ऐसी जर्मनी के निर्माण में अपनी सारी शक्ति लगायेंगे जहां शांति, जनवाद और मानवता का साम्राज्य हो। ऐसी जर्मनी में ही जर्मन युवकों का भविष्य सुरक्षित होगा।

समारोह-समिति ने कुछ दिलचस्प तथ्य प्रकाशित किये हैं समारोह के संबंध में। इन तथ्यों के अनुसार, "अखिल जर्मन युवक समारोह" में कुल ५ लाख, ६० हजार (५६०,०००) जर्मन नौजवानों ने भाग लिया। इन में २४,००० पश्चिमी जर्मनी और १,००० पश्चिम बर्लिन से आये थे। इसके अतिरिक्त दुनिया के अन्य देशों के ५५७ आमंत्रित अतिथि, और सोवियत यूनियन, पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया तथा अन्य देशों के युवक संगठनों के प्रतिनिधि मण्डल भी इस समारोह में शामिल हुये थे। 'जनवादी युवकों का विश्व संघ' और 'अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी संघ' के प्रतिनिधि भी मौजूद थे समारोह में।

ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख पटना में

भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतासाव के प्रमुख श्री कुर्त बोत्तकर, २२ मई से २४ मई, १९६४ तक, बिहार की राजधानी पटना के सरकारी दौरे पर आये थे।

पटना के इस दौरे में, श्री बोत्तकर ने, बिहार के मुख्य मन्त्री, श्री कृष्ण वल्लभ-सहाय को, जर्मन जनवादी गणतंत्र के स्वास्थ्य मंत्री श्री मॉक्स सेफरिन का—जो दक्षिण पूर्वी एशिया संघ के अध्यक्ष भी हैं—व्यक्तिगत निमन्त्रण दे दिया।

इस मुलाकात के अवसर पर श्री सहाय तथा श्री बोत्तकर में, ज. ज. ग. और बिहार-राज्य के आपसी संबंधों को अधिक विस्तृत करने तथा सुदृढ़ बनाने के संबंध में विचार विनिमय हुआ। बाद में श्री बोत्तकर ने एक पत्रकार सम्मेलन में, जर्मन [illegible]याओं को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के लिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार द्वारा पेश किये गये अनेक सुझावों पर सविस्तार प्रकाश डाला।

पटना में अपने आवास के दौरान, ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख ने "बिहार चैम्बर आफ कामर्स" द्वारा आयोजित एक सभा में व्याख्यान दिया। विषय था: जर्मन जनवादी गणतंत्र का विदेश-व्यापार और भारत के साथ आर्थिक संबंध (ज. ज. ग. के)।

पटना का दौरा समाप्त करने से पूर्व श्री बोत्तकर ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पांच प्रसिद्ध चित्रकारों के ग्राफ-चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। ..... श्री बोत्तकर के उक्त दौरे को बिहार के अखबारों में काफी स्थान मिला।

तांगानीका एवं जंजीबार संयुक्त गणराज्य के साथ मैत्री-संधि

१७ मई के दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र और तांगानीका एवं जंजीबार संयुक्त गणराज्य के बीच मैत्री, पारस्परिक सहायता, तथा सहयोग को विस्तृत करने की एक संधि हुई। संयुक्त तांगानीका एवं जंजीबार गणराज्य की ओर से वहां के प्रथम उप-राष्ट्रपति श्री आबिद अमानी करूमे ने, और जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से वहां के राजदूत ने इस संधि पर दस्तखत किये।

संधि के अनुसार, जर्मन जनवादी गणतंत्र जंजीबार के आर्थिक विकास के लिये कर्ज़ा देगा। इसके अलावा, संधि में भवन-निर्माण, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा संबंधी सहायता भी उपलब्ध की गई है।

प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार का मत

अमरीका के सुप्रसिद्ध पत्रकार, श्री वाल्टर लिप्पमन्न ने, पश्चिमी-जर्मनी के विख्यात अखबार "स्पीगल" को, एक भेंट में, दो जर्मन राज्यों को परस्पर बातचीत करने की सलाह दी। "स्पीगल" ने, श्री लिप्पमन्न को, अमरीका का सर्वप्रमुख पत्रकार घोषित किया है। भेंट में श्री वाल्टर लिप्पमन्न ने कहा: "मेरा यह निश्चित मत है कि जर्मनी के एकीकरण के लिये दो जर्मन राज्यों की परस्पर बातचीत पहली शर्त है। रूसी लोग, जर्मन जनवादी गणतंत्र को खत्म नहीं करेंगे, और न ही वे बोन द्वारा ऐसा करना सहन करेंगे। लेकिन वे दो जर्मन राज्यों को, यदि वे चाहें तो, आपसी बातचीत द्वारा एक होने की इजाज़त देंगे। ....."

अमरीकी पत्रकार ने, प[illegible] जर्मनी के इस मत का भी खण्डन किया कि [illegible] शक्तियां ही जर्मनी के एकीकरण की जिम्मेदार

...उन्होंने कहा : "इस संबंध में मेरा यह मत है कि जर्मनी फिर से तभी एक हो सकता है जब दो जर्मन राज्य स्वयं इसके लिये प्रयत्न करें। यह एकता न वाशिंगटन और न ही मास्को कर सकता है। ...." श्री लिप्पमन्न ने पश्चिमी बर्लिन के लिये "एक अस्थायी व्यवस्था" को ही उचित कहा। उनके शब्दों में : "इस व्यवस्था में पश्चिम बर्लिन और उसके गमनागमन के मार्गों की आजादी की गारण्टी होनी चाहिये। लेकिन इसके साथ ही साथ यह (प. बर्लिन) जासूसी, तोड़फोड़ और विषैले प्रचार का केन्द्र नहीं रहना चाहिये।"

अणुशस्त्रों को हासिल करने के पश्चिमी जर्मनी की कड़ी निन्दा करते हुये, श्री वाल्टर लिप्पमन्न बोले : "मैं आशा करता हूं कि एक बहुदेशीय नाटो-अणुशस्त्र सेना वजूद में नहीं आयेगी। सैनिक दृष्टि से भी ऐसी सेना निरर्थक है, पैसा इस पर बहुत बरबाद होगा, और इससे विश्व भर में सन्देह तथा खतरे का वातावरण पैदा होता है। ...."

ज. ज. ग. में ब्रिटिश पत्रकार के अनुभव

मार्च के महीने में, ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध दैनिक "बर्मिन्घम पोस्ट" ने, लाइपजिक (ज. ज. ग.) में आयोजित वसन्तकालीन व्यापार मेले में अपना विशेष औद्योगिक संवाद-दाता भेज दिया था। उन का नाम है हरमन्न रोबर्ट्स। मेला समाप्त होने के बाद, श्री रोबर्ट्स ने पूरे जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा किया। आजकल वह, "बर्मिघम पोस्ट" में ज. ज. ग. की यात्रा से संबंधित एक लेख-माला प्रकाशित कर रहे हैं।

श्री हरमन्न राबर्ट्स विशेष रूप से प्रभावित हुये हैं सविकाउ नामक खदान क्षेत्र और "त्राबान्त" नामक मोटर को देखकर। एक लेख में उन्होंने लिखा है : "पूर्वी जर्मनी, अपने खदान मजदूरों की शाही वर्ग की तरह देख भाल करता है। ..." "त्राबान्त" मोटर कारखाने में प्लास्टिक का बहुल प्रयोग की उन्होंने काफी प्रशंसा की। इस मोटर के उत्पादन की लाइसेन्स ब्रिटेन की एक फर्म ने प्राप्त की है।

लाइपजिक नगर के चारों ओर फैले हुये अनेक गांवों का भ्रमण करने के बाद श्री राबर्ट्स ने एक अन्य लेख में लिखा है : "पहले के छोटे-छोटे किसानों में से ९५ प्रतिशत किसान अब सामूहिक खेतों के सदस्य बन चुके हैं, और प्रगति की रफ्तार बहुत तेज हुई है। ..... " ब्रिटेन की तुलना में, जहां किसानों को मजदूरी बहुत कम है, श्री राबर्ट्स ने देखा कि "खेतों और कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की आय में बहुत कम अन्तर है। पूर्वी जर्मनी के किसान काफी खुशहाल हैं, और मजदूर आर्थिक संकट के भय से एक दम मुक्त हैं।"

विदेशी कलाकारों के कार्यक्रम

हर साल, विश्व के विभिन्न देशों से अनेक कलाकार जर्मन जनवादी गणतंत्र के दौरे पर आते हैं, और यहां के विभिन्न स्थानों पर अपनी - अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं। इसी वर्ष, मार्च के मास में, कई कलाकारों ने, विभिन्न कलाओं में अपने अपने प्रदर्शन प्रस्तुत किये। जिन देशों से ये कलाकार जर्मन जनवादी गणतंत्र आये उन देशों के नाम हैं : सोवियत संघ, यूगोस्लाविया, हंगरी, पश्चिमी जर्मनी, अमरीका, रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया, बलगरिया, ब्रिटेन, पोलैण्ड, जापान, फ्रांस, स्वीडन और फिनलैण्ड।

पश्चिमी जर्मनी के सैनिक, ज.ज. ग. की शरण में

अप्रैल मास के मध्य तक पश्चिमी जर्मनी की सेना के १४ सैनिक भाग कर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में आये। इनमें से दो वहां की वायुसेना बटालियन नं. : २५२ के सैनिक हैं। यह बटालियन, जर्मन फेडरल रिपब्लिक के दक्षिण पश्चिम में, नागोल्द नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ, ट्रेनिंग प्राप्त करने वाले नवसिखुये वायु सैनिकों के साथ [illegible] के कारण, जबरदस्त हो-[illegible] था।

के हजारों

दक्षिणी अफ्रीका के साथ कोई सम्बन्ध नहीं

पश्चिमी जर्मनी हर संभव तरीके से जर्मन जनवादी गणतंत्र को बदनाम करने की कोशिश करता है। हाल ही में पश्चिमी जर्मनी के अखबारों ने यह झूठा प्रचार शुरू किया है कि ज. ज. ग., दक्षिणी अफ्रीका के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ा रहा है।

लेकिन यह एक सर्वविदित सत्य है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और जनता, हमेशा अफ्रीका की जनता के वीरत्वपूर्ण स्वाधीनता संग्राम की जबरदस्त समर्थक रही है। इतना ही नहीं। ज. ज. ग. उन ६० देशों में से एक देश है जिसने दक्षिण अफ्रीका की फासिस्त सरकार से हर तरह के संबंध काट दिये हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के प्रस्ताव नं. १७६१।१७ और आदिस अबाबा में अफ्रीकी राज्यों के शिखर सम्मेलन के फैसले का समर्थन करते हुए, ज. ज. ग. ने, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्त सरकार के साथ, नौ-परिवहन, व्यापारिक तथा अन्य संबंध काट दिये हैं। इन तथ्यों को देखते हुये, पश्चिमी देशों के अखबारों में, छपी हुई ज. ज. ग. तथा दक्षिण अफ्रीका के बीच बढ़ते व्यापार की खबरें, मनगढ़न्त और निराधार हैं।

पश्चिमी जर्मनी के अखबारों द्वारा फैलाई गई इन झूठी खबरों का मात्र उद्देश्य है जर्मन जनवादी गणतंत्र को बदनाम करना। लेकिन इस झूठ का पर्दा फाश होकर रहेगा, क्योंकि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने साम्राज्यवाद विरोधी और उपनिवेशवाद-विरोधी नीति अपनाई है और वह अफ्रीका के नवोदित राज्यों तथा जनता का प्रबल समर्थक है।

बिहार
के व्य

सचित्र समाचार

१ जून, अन्तर्राष्ट्रीय शिशु दिवस के अवसर पर ज. ज. ग. के डाक मंत्रालय द्वारा छापे गये विभिन्न डाक-टिकट

बर्लिन का नवीनतम १३ मंज़िला 'बरोलीना' होटल। इसमें ७५० मेहमान ठहर सकते हैं

'युवक और तकनीकी-क्रांति' नाम से, बर्लिन में एक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ

बर्लिन का नया 'ऑपेरा कैफ़े'
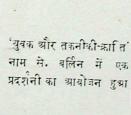
बिहार राज्य के मुख्य मंत्री, श्री कृष्ण वल्लभ सहाय, भारत में ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोत्तगर से हाथ मिला रहे हैं

सूचना पत्रिका
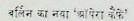
ज. ज. ग.—सोवियत संघ की मैत्रि संधि

जर्मन
जनवादी
जनतंत्र

दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक ७ | २० जुलाई, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : श्री निकिता ख़ुश्चेव और श्री वाल्टर उल्ब्रि... 'ज.ज.ग.—सोवियत संघ मैत्रि-संधि' पर हस्ता... क्षर कर रहे हैं

अंतिम पृष्ठ : जवान उमंगें निहार रही हैं समृद्ध भविष्य...

——

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लि... अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य ... नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हा... मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ज.ज.ग. और सोवियत संघ के बीच 'मैत्री, पारस्परिक सहायता एवं सहयोग सन्धि'

पिछले महीने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के नेतृत्व में, वहां की सरकार और वहां की विभिन्न पार्टियों का एक प्रतिनिधि-मण्डल सोवियत-संघ की यात्रा पर गया। नये तथा शांति पूर्ण जर्मन राज्य के इन प्रतिनिधियों को अपनी विस्तृत यात्रा में, सोवियत जनता का अपार स्वागत तथा स्नेह मिला।

यात्रा समाप्ति के बाद, उक्त प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य, सोवियत-संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी तथा सरकार के नेताओं तथा प्रतिनिधियों से मिले और उनसे बातचीत की। इस बातचीत के परिणामस्वरूप सोवियत-संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच "मैत्री, पारस्परिक सहायता एवं सहयोग संधि" पर हस्ताक्षर हुये। संधि पर दस्तखत होने के [illegible] संधि तथा बातचीत सम्बन्धी सह-विज्ञप्ति जारी की गई।

ऐतिहासिक और विश्व महत्व की इस संधि और सह-विज्ञप्ति को [illegible] रूप में यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। —सम्पादक

१२ जून, १९६४ के दिन मास्को में, जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत-संघ के बीच 'मैत्री, पारस्परिक सहयोग एवं सहायता-संधि' पर दस्तखत हुये। जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से वहां की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वल्टर उल्ब्रिख्त ने, और सोवियत-संघ की ओर से, प्रधान मंत्री निकिता खुश्चेव ने उक्त संधि पर हस्ताक्षर किये।

संधि में दोनों देशों ने इस बात पर अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की कि वे पूर्ण समानता तथा एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के आधार पर अपनी मैत्री को अधिक विस्तृत करेंगे, यूरोप और विश्व में शान्ति की सुरक्षा के लिए प्रयत्न करेंगे, दोनों राज्यों की सीमाओं तथा प्रभुसत्ता को किसी भी हमले से बचायेंगे, एक जर्मन शान्ति संधि

मैत्रि-संधि पर हस्ताक्षर के बाद हर्षोल्लास की मुद्रा में श्री खुश्चेव और श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त

करने का मार्ग आसान बना दें, और एक शान्ति पूर्ण तथा जनवादी आधार पर विभाजित जर्मनी को फिर से एक करने का सतत प्रयत्न करते रहेंगे।

संधि पर दस्तखत करने वाले दोनों राज्यों ने इस बात की स्पष्ट घोषणा की है (संधि में) कि शान्ति और समस्त विश्व जनता के शांति-पूर्ण भविष्य के लिये वे (दोनों देश) दूसरे महायुद्ध के शेष बचे तनाओं को खत्म करने, एक जर्मन शांति संधि पर दस्तखत करने और इस के आधार पर पश्चिम बर्लिन की असामान्य स्थिति को सामान्य बनाने का निरन्तर संघर्ष करेंगे। इस संदर्भ में हस्ताक्षरित संधि में कहा गया है :

"दोनों राज्यों का यह दृष्टिकोण है कि जब तक एक जर्मन शांति संधि पर दस्तखत नहीं होते, तब तक के लिये अमीरीका, ब्रिटेन और फ्रांस पश्चिमी जर्मन-फेडरल गणराज्य की सीमाओं में उन सभी वादों तथा मांगों को पूरा करने के लिये जिम्मेदार होंगे जो वादे, युद्ध समाप्ति के बाद पोत्सदाम और अन्य अन्तर्राष्टीय संधियों के रुप में चार मित्र राष्ट्रों ने मिलकर एक-दूसरे से किये हैं– जैसे जर्मन सैनिकवाद और नात्सीवाद को खत्म करना और जर्मन आक्रमण को रोकना आदि।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ द्वारा हस्ताक्षरित संधि में इस बात को फिर से दोहराया गया है कि जर्मन भूमि पर दो भिन्न प्रभुसत्तात्मक जर्मन राज्यों–अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र और पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य–के अस्तित्व को मद्दे-नज़र रखते हुये, एक शांतिपूर्ण, लोकतन्त्रात्मक, अविभाजित जर्मनी पैदा करने का एक ही रास्ता है, और वह रास्ता है इन दो प्रभुसत्तात्मक जर्मन राज्यों की समानता के आधार पर आपसी बातचीत और सद्भावना।...."

संधि पर दस्तखत करने वाले दोनों देश (ज.ज.ग. और सोवियत संघ) पश्चिम बर्लिन को एक स्वायत्त राजनीतिक सत्ता मान लेंगे। इसके अलावा दोनों राज्यों ने इस बात की प्रतिज्ञा की है कि वे शांतिपूर्ण

सह-जीवन के सिद्धान्तों को आधार मानकर, अपनी शक्ति के अनुसार, ऐसे कदम उठायेंगें जिनसे "आम और पूर्ण निःशस्त्रीकरण, शस्त्रीकरण की दौड़, अंतर्राष्ट्रीय तनाव को कम करना, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राज्यों के बीच सीमा तथा क्षेत्रीय झगडों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाना आदि जैसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के हल में मदद मिले।

प्रतिहिंसावादी और सैनिकवादी शक्तियों के आक्रामक युद्ध के खतरे को देखते हुये दोनों देशों ने यह घोषणा की है कि जर्मन जनवादी गणतन्त्र की सीमाओं की अखण्डता यूरोपीय सुरक्षा के आधारभूत तत्वों में से एक है। इस संबंध में उन्होंने वारसा-संधि में उद्घोषित इस दृढ़ संकल्प को एक बार फिर दोहराया कि ज.ज.ग. की राज्य सीमाओं की अखण्डता हर कीमत पर बनी रहेगी। "वे (ज.ज.ग. और सोवियत संघ) ऐसे तमाम कदम उठायेंगे जिन से, प्रतिशोधवादी और सैनिकवादी शक्तियों की सीमाओं को जबरदस्ती बदलने के इरादे तथा इच्छायें कभी पूरे न होंगे।

"संधि के अनुसार, संधि पर दस्तखत करने वाले दो देशों में से किसी भी एक देश पर यदि यूरोप का कोई राज्य अथवा राज्यों का समूह हमला करेगा तो दूसरा देश तुरन्त उसकी सहायता के लिये आयेगा। ऐसे समय में संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों के आधीन सुरक्षा-परिषद को किसी भी उठाये गये कदम से सूचित किया जायेगा। यदि सुरक्षा-परिषद ऐसे कदम उठायेगी जो विश्व शान्ति और सुरक्षा के लिये आवश्यक है, हम अपने उठाये गये कदम रोक लेगें।

"उक्त संधि २० वर्षों की अवधि तक वैध होगी। इस अवधि के बाद भी १० और वर्षों तक यह मान्य रहेगी यदि दो में से एक देश वैध अवधि की समाप्ति के १२ महीने पहले इस संधि को रद्द करने की नोटिस न दे। इस बीच में अगर कभी एक संयुक्त लोकतन्त्रात्मक और शांति प्रिय जर्मन राज्य वजूद में आ जाये, अथवा एक जर्मन शांति संधि पर हस्ताक्षर हो, तो ऐसी स्थिति में वैध अवधि से पहले भी दो में से एक राज्य की प्रार्थना पर सन्धि पर फिर से सोच विचार किया जा सकता है। संधि का अनुसमर्थन अनिवार्य है, और यह तभी से लागू समझी जायेगी जब दोनों देश बहुत जल्द बर्लिन में अनुसमर्थन-संबंधी दस्तावेज़ों का आदान-प्रदान करेंगें।...."

सह-विज्ञप्ति

उक्त संधि पर दस्तखत होने के पहले, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त, सरकारी दौरे पर दो सप्ताह सोवियत संघ गये और वहां के नेताओं, विशेषकर श्री निकिता खुश्चेव से वार्तालाप करते रहे। इस दौरे की समाप्ति के बाद सोवियत संघ के प्रधान मंत्री श्री खुश्चेव और श्री उल्ब्रिख्त की बातचीत के बारे में एक सह-विज्ञप्ति जारी की गई। यह विज्ञप्ति, जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ में हुई 'मैत्री एवं सहायता संधि' को यूरोपीय सुरक्षा का आधार, दोनों देशों द्वारा शांतिपूर्ण सह-जीवन के सिद्धान्तों में आस्था और यूरोप तथा विश्व की स्थिति के सन्तुलन को बरबाद न करने का एक महत्वपूर्ण तत्व घोषित करती है। विज्ञप्ति के अनुसार वर्तमानकाल का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण काम है नाभिक्रीय शस्त्रास्त्रों पर पाबन्दी लगाने और पूर्ण निःशस्त्रीकरण के लिये निरन्तर संघर्ष करना।

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त और श्री निकीता खुश्चेव में हुई बातचीत के बारे में सह-विज्ञप्ति में कहा गया है: "दोनों देशों में समाजवादी तथा साम्यवादी निर्माण प्रक्रिया और अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक आन्दोलन की समस्याओं के बारे में उन्होंने विचार विनिमय किया। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, जर्मनी की समस्या तथा पश्चिम बर्लिन की अनिश्चित स्थिति को सामान्य बनाने, और यूरोप की शांति तथा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने से संबंध रखने वाले प्रश्नों पर उन दोनों में विचारों का आदान-प्रदान हुआ।" इन दोनों राजनीतिज्ञों ने पश्चिमी जर्मनी की प्रतिशोधवादी नीति के ज़बरदस्त खतरे से भी दुनिया को सचेत कर दिया। विज्ञप्ति के शब्दों में: "जो व्यक्ति इस गलत दावे का समर्थन करता है कि फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी-सं) पूरी जर्मनी का प्रतिनिधि है वह जानबूझ कर अथवा अनजाने में बोन सरकार की प्रतिशोधवादी नीति का समर्थन करता है, अन्तर्राष्ट्रीय तनावशैथिल्य में बाधा डालता है, और खतरनाक नतीजे पैदा कराने वाली नीति को बढ़ावा देता है।...."

सोवियत-संघ में वाल्टर उल्ब्रिख्त का अपार स्वागत हुआ फूलों से और "मैत्री अमर रहे" के नारों से

नाभिकीय शस्त्रों से सुसज्जित एक बहुदेशीय (नाटो गुट के देशों की) सेना को जन्म देना और पश्चिमी जर्मनी की सेना को नाभिकीय शस्त्रों का अधिकार देने की स्थिति "अनिवार्यतः सोवियत संघ, जर्मन जनवादी गणतंत्र और वारसा संधि के अन्य देशों को अपनी सुरक्षा के लिये आवश्यक और प्रतिकारी कदम उठाने पर मजबूर करेगी। वास्तव में पश्चिमी जर्मनी की सैनिक संख्या और शस्त्रास्त्रों को घटाना, और वहां के युद्ध-सामग्री उत्पादन पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण की नीति यूरोप की शांति का आधार है।

"यह बात, दूसरे महायुद्ध में जर्मनी के आत्मसमर्पण और सन् १९४५ की पोत्सदाम संधि की शर्तों को भी पूरा करती है।"

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को एक स्वस्थ दिशा की ओर-मोड़ने के लिये, जर्मन शान्ति सन्धि एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकती है। ऐसी संधि, एक ऐसे स्रोत को बन्द कर देती है जो "राज्यों के पारस्परिक संबंधों में खतरनाक तनाव पैदा करता है, और विश्व के सबसे बड़ी ताकतों को एक-दूसरे के खिलाफ, अपनी सेनायें खड़ी कर देने के लिये विवश करता है। . . ." जर्मन समस्या को केवल, वास्तविक स्थिति और तथ्यों के आधार पर ही हल किया जा सकता है। दो जर्मन राज्यों की हकीकत और इनके बीच खिची गई वर्तमान सीमा-रेखाओं को मानना होगा और दोनों जर्मन राज्यों के आपसी रिश्तों को सामान्य बनाना होगा। इस दिशा की ओर पहला कदम यह होता कि जर्मन जनवादी गणतंत्र और फेडरल जर्मन गणराज्य को – (अर्थात् दोनों जर्मन राज्यों को – सं) संयुक्त राष्ट्र संघ में दाखिल किया जाता।

उक्त सह-विज्ञप्ति, सोवियत-ज.ज.ग. के सभी क्षेत्रों में आपसी संबंधों पर, सविस्तार प्रकाश डालती है। इसमें इस बात का उल्लेख किया गया है कि इस वर्ष, दोनों देशों में ११०० करोड़ मार्क से भी अधिक रकम का कुल व्यापार होगा। बातचीत से यह संभावना भी सामने आई कि आने वाले पांच वर्षों में दोनों देशों का वस्तु विनिमय परिमाण बहुत बढ़ सकता है। दोनों देशों ने 'पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद' (कोमेकोन) को हर तरीके से सुदृढ़ करने का निश्चय फिर से दोहराया।

सह-विज्ञप्ति में, सोवियत-संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र ने घोषित किया है कि वे क्यूबा की वीर जनता को हर तरह की सहायता पहुंचाते रहेंगे। इस संदर्भ में दोनों देशों ने, कारिबियन क्षेत्र में शांति बनाये रखने के क्यूबा सरकार द्वारा पेश किये गये पंच सूत्रीय कार्यक्रम का समर्थन किया। दोनों देशों ने अफ्रीका, एशिया और लातिनी अमरीका की जनता के साथ अपनी एकजूटता व्यक्त की है, और हर प्रकार के उपनिवेशवादी दमन तथा शोषण का तिरस्कार किया है। आधुनिक युग के एक सबसे शक्तिशाली प्रगतिशील तत्व –अर्थात् राष्ट्र मुक्ति आन्दोलनों का, भविष्य में यथावत् समर्थन किया जायेगा। विज्ञप्ति में कहा गया है कि निकीता ख्रुश्चेव ने वाल्टर उल्ब्रिख्त को राष्ट्रपति बिन बेल्ला और राष्ट्रपति नासिर के साथ हुई अपनी बातचीत से अवगत किया।

दोनों देशों ने पुर्तगाली उपनिवेशवाद की क्रूर नीति की कड़ी निन्दा की है। दक्षिणी वियतनाम की जनता के संघर्ष के प्रति भी उन्होंने अपनी सहानुभूति और समर्थन प्रकट किया है। सह-विज्ञप्ति में, ज.ज.ग. और सोवियत-संघ ने, साइप्रेस की जनता के अपने आन्तरिक मामलों को स्वयं निपटाने के संघर्ष का पूर्ण समर्थन किया है। चीनी लोक गणतंत्र को, संयुक्त राष्ट्र संघ में जल्दी से जल्दी अपना उचित स्थान देने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। ताइवान से अमरीकी सेना हटाये जाने की चीन की सही मांग का भी उन्होंने समर्थन किया है।

सोवियत संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारों ने, लाओस में, प्रतिक्रियावादी शक्तियों की तिकड़मों की कड़ी निन्दा की है। उन्होंने कोरिया की जनता की सही मांगों और कोरियाई लोक गणराज्य की इस मांग का समर्थन किया है कि, दक्षिणी कोरिया पर अमरीकी आधिपत्य समाप्त हो, वहां से अमरीकी फौजें हट जायें, और जनवाद के आधार पर कोरिया का शांतिपूर्ण एकीकरण हो।

सह-विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी और सोवियत-संघ की कम्युनिष्ट पार्टी के प्रतिनिधियों ने, दोनों बन्धु-पार्टियों के पारस्परिक संबंधों पर खुलकर विचार विनिमय किया। दोनों पार्टियों ने, मास्को में हुये सन् १९५७ तथा १९६० के कम्युनिस्ट पार्टियों के सम्मेलनों में विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन से संबंधित अपनाई गई नीति के प्रति अपनी अटूट वफादारी की घोषणा की। इस संदर्भ में विज्ञप्ति के ये शब्द उल्लेखनीय हैं : "दो भिन्न तथा विरोधी समाज व्यवस्थाओं का संघर्ष, पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग की लड़ाई, पराधीनता के खिलाफ जनताओं के राष्ट्र मुक्ति आन्दोलनों की बढ़ती गति, और सामाजिक प्रगति अनिवार्यतः साम्राज्यवाद के पतन और उपनिवेशवाद के समूल नाश का कारण बन जायेगें।"

दोनों पार्टियों ने, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं की फूटवादी नीति की कड़ी निन्दा की, जो विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन में फूट डालकर अपना एक अलग गुट बनाना चाहते हैं। चीन के नेताओं का यह अमल समाजवाद के उद्देश्य को जबरदस्त क्षति पहुंचाता है। विज्ञप्ति के शब्दों में : "जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्तों को वामपन्थी तथा दक्षिणपन्थी अवसरवाद से बचाने का सतत संघर्ष करेगी, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा १९५७ और १९६० के कम्युनिस्ट पार्टी सम्मेलनों द्वारा अपनाई गई नीति के ठोस आधार पर विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन को एक करेगी। . . ."

मैत्री तथा सहायता सन्धि :
विश्व-व्यापी प्रतिक्रिया

१२ जून, १९६४ के दिन मास्को में सोवियत संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच 'मैत्री, पारस्परिक सहायता एवं सहयोग सन्धि' पर हस्ताक्षर होने के बाद, विभिन्न देशों के अखबारों ने इस पर टीका-टिप्पणी की। कुछ सुप्रसिद्ध अखबारों द्वारा अभिव्यक्त प्रतिक्रियायें हम नीचे दे रहे हैं :

पोरिस-प्रेस इन्त्रासिजां : पेरिस के इस स्वतंत्र अखबार ने मैत्री संधि के बारे में लिखा : "इस बात का सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इस संधि के द्वारा ख्रुश्चेव, पश्चिमी जर्मनी के सामने पुनः यह तथ्य रखना चाहता है कि उन्हें पूर्वी जर्मनी को वैध अथवा तथ्येन मान्यता देनी पड़ेगी। नयी संधि, तटस्थ देशों द्वारा पूर्वी जर्मनी को मान्यता प्रदान करने की प्रतिक्रिया की गति तेज़ कर सकती है। इस तरह, एरहार्ड के लिये हाल्लज़टाइन-सिद्धान्त को बनाये रखना और कठिन होगा।

* * *

लिबरेशन, पेरिस : "संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए चुना गया समय, इस संधि को बहुत महत्वपूर्ण बना देता है। मास्को में वे (सोवियत-संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र–सं.) अपनी स्थिति बिलकुल स्पस्ट करना चाहते थे, जब पश्चिमी जर्मनी का चान्सलर वाशिंगटन में अपने कुछ भ्रम पाल रहा था। जर्मन जनवादी गणतंत्र पर आक्रमण करना, सोवियत संघ पर आक्रमण माना जायेगा, और वह तुरन्त ज.ज.ग. की सहायता के लिये आयेगा। सीमित युद्धों के प्रचारकों को इस तथ्य पर विचार कर लेना चाहिये। दूसरी ओर जर्मनी के एकीकरण का एक ही रास्ता है, और वह है दो जर्मन राज्यों की आपसी बात-चीत। दूसरे शब्दों में एरहार्ड साहब या कोई और साहब यह न सोचें कि जर्मन समस्या, सीधे सोवियत संघ से बातचीत करके हल की जा सकती है।'

* * *

वुरुइत, [illegible]स : "केवल पांच वर्ष पहले तक भी सोवियत-पूर्वी जर्मनी संधि कल्पनातीत थी, क्योंकि इस से शीत युद्ध तुरन्त गर्म हो जाता। लेकिन सोवियत-संघ की सहनशीलता और नित नये सुझाओं ने अब ऐसा वातावरण तैयार किया है कि अब पूंजीवाद एक समाजवादी देश (ज.ज.ग.–सं) को हड़पने में कदापि सफल नहीं होगा।"

* * *

टिडनिनजेन, स्टाकहाल्म: "बोन में, सोवियत ज.ज.ग. मैत्रि संधि के प्रति मिश्रित प्रतिक्रिया सरकारी सूत्रों में व्याप्त संभ्रान्ति को दिखाती है। पश्चिमी जर्मन सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिये कि पूर्वी यूरोप के साथ संबंधों को सामान्य स्थिति पर लाना बहुत आवश्यक है, विशेष कर ओदर-नाइस्से सीमा को मान्यता देना अत्यन्त आवश्यक है। निसन्देह, पश्चिमी देशों के लिये यह एक अच्छी बात होगी कि वे अपनी निरर्थक नीति को त्यागकर कुछ सृजनात्मक सुझाव लेकर सामने आयें।"

* * *

दी वेल्त, पश्चिमी जर्मनी : "वह (पश्चिमी जर्मनी का चान्सलर–सं) वहां (अमरीका–सं) बहुत सारे प्रश्न पूछने और आश्वासन तथा वायदे लेने गया था। लेकिन अचानक सब कुछ बदल गया : प्रश्न, आश्वासन आदि धरे के धरे रह गये। मास्को में, उल्ब्रिख्त और खुश्चेव ने, मैत्री संधि पर दस्तखत कर दिये थे। इसतरह उल्ब्रिख्त, (पश्चिमी) जर्मन चान्सलर का अमरीकी दौरा तथा मा[illegible] बातचीत का कार्यक्रम डांवाडोल करने [illegible] सफल हुआ था।"

* * *

अलजर रिपब्लिकन, अलजीरिय : "सोवि[illegible] संघ और ज.ज.ग. के बीच हुई मैत्री संधि [illegible] जैसी कि आशा थी, पश्चिमी देशों ने [illegible] स्वागत नहीं किया। लेकिन, फेडरल रिपब्लि[illegible] (प.जर्मनी) का शासक-वर्ग इस संधि [illegible] खिलाफ, सबसे अधिक विष वमन [illegible] रहा है।"

* * *

फिगारो, पेरिस : "यह संधि, तनाव घटाने [illegible] नीति के खिलाफ नहीं, बल्कि इसके अनुकूल है [illegible] पश्चिमी देशों और बोन की यह कल्पना कि [illegible] अपनी सोच के अनुसार जर्मन एकीक[illegible] सोवियत संघ पर ठोस सकेंगे एक हिमाकत है [illegible] तथाकथित जर्मन जनवादी गणतंत्र का अस्ति[illegible] है, और भविष्य मे भी रहेगा।"

'सूचना पत्रिका'

जो पाठक, मासिक **सूचना पत्रिका** को प्राप्त करना चाहते हों, [illegible] **दो रुपये** वार्षिक चन्दा भेज दें। इसके बाद **पत्रिका** नियमित रूप से उनको मिलती रहेगी। चन्दे की दर इस प्रकार है :

वार्षिक : २)
अर्ध-वार्षिक : १)

श्रीलंका और ज. ज. ग. के सुदृढ़ सम्बन्ध

इस वर्ष के मई मास के अन्तिम और जून के प्रथम हफ्ते में, श्रीलंका सेनेट के अध्यक्ष, श्री थामस अमरसूर्य जर्मन जनवादी गणतंत्र की ११ दिनों की यात्रा पर गये थे। इस यात्रा का कारण था ४,५ वर्ष पुराना वह निमन्त्रण जो ज.ज.ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के अध्यक्ष, प्रोफेसर योहान्नेस दीकमन्न ने उनको तब दिया था जब वे ज.ज.ग. के संसद-सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मण्डल लेकर श्रीलंका गये थे।

बर्लिन आने पर, श्री अमरसूर्य का भव्य स्वागत हुआ। इस स्वागत में, ज.ज.ग. के उप विदेश मंत्री, श्री वोल्फगांग किज़ेवेत्तर, प्रोफेसर दीकमन्न और 'नेशनल डैमोक्रेटिक पार्टी' के लोकसभा सदस्य-दल के नेता, श्री वोल्फगांग रोइसर भी उपस्थित थे।

श्री अमरसूर्य, ज.ज.ग की लोकसभा देखने गये। लोकसभा के अध्यक्ष, प्रो. दीकमन्न ने उनका स्वागत किया। दोनों अध्यक्षों ने, अपने-अपने देशों के संसदों से संबंधित आत्म अनुभवों आदि का आदान-प्रदान किया।

३ जून को, ज.ज.ग. के प्रथम उप प्रधानमंत्री, श्री विल्ली स्तोप ने श्रीलंका के माननीय अतिथि का स्वागत किया। इस स्वागत में, उप प्रधानमंत्री श्री अर्नो लोइष्नर और उप-पर राष्ट्र मंत्री श्री किज़ेवेत्तर भी शामिल थे। श्री अमरसूर्य का स्वागत करते हुये, श्री विल्ली स्तोप ने, शांति को सुरक्षित करने तथा सुदृढ़ बनाने से संबंधित श्रीलंका के, संघर्ष तथा प्रयत्नों की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने अपने अतिथि को इस बात का पूर्ण आश्वासन दिया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, प्रत्येक क्षेत्र में श्रीलंका [illegible] स्वाधीन रहने [illegible]त्नों का समर्थन करता और ग[illegible]नुभूति रखता है। श्री स्तोप ने, श्री अमरसूर्य से प्रार्थना की कि वे, श्रीलंका की प्रधान मंत्री, श्रीमती भण्डारनायक और वहां की जनता तक उनकी हार्दिक शुभकामनायें पहुंचा दें। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी दोनों देशों की मैत्री का आधार सुदृढ़ और विस्तृत होता जायेगा।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख समाचार एजेन्सी ए.डी.एन. से एक भेंट में श्री अमरसूर्य बोले, "मुझे यह बात कहने में खुशी होती है कि मेरे आगमन से लेकर मेरी यात्रा के अन्त तक मैं ज.ज.ग. में जहां भी गया, वहां के लोगों ने खुले दिल से मेरा स्वागत किया। मुझे हर जगह ऐसा लगा जैसे मैं अपने मित्रों में हूं। ऐसे स्नेही लोगों को मैं भूल नहीं सकता। इसीलिए अनिच्छा से मैं यहां से विदा ले रहा हूं।..."

ज.ज.ग. की बहुमुखी सफलताओं का उल्लेख करते हुये, श्री अमरसूर्य बोले:

"अपनी ११ दिवसीय यात्रा के दौरान मैंने आपके गणतंत्र के चतुर्मुखी विकास तथा निर्माण कार्यों को देखा। मैंने यहां के ड्रेस्डेन पोत्सदाम तथा लाइपजिक आदि नगरों-कस्बों को भी देखा। ड्रेस्डेन के तकनीकी विश्वविद्यालय में श्रीलंका के विद्यार्थियों से भी मिला। इस विश्वविद्यालय को मैं एक बेहतरीन शिक्षा संस्थान मानता हूं"।

एक कृषि उत्पादन व सहकारी संघ को देख कर वे काफी प्रभावित हुये थे। इस संदर्भ में, अमरसूर्य ने कहा: "ज.ज.ग. में सहकारिता

(शेष पृष्ठ १७ पर)

श्री अमरसूर्य (दायें) प्रोफेसर दीकमन्न के साथ

आइज़ेनहुत्तेन-स्तादत में श्री तथा श्रीमती अमरसूर्य और उनकी सुपुत्री

एक यात्रा-विवरण

चन्दीगढ़ से अमृतसर तक

श्रीमती दोलोर्स दो

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुप्रसिद्ध लाइपज़िक विश्वविद्यालय में, कई वर्षों तक में इतिहास पढ़ाती रही हूं। इस लिए जब मुझे भारत की यात्रा, और विशेषकर पंजाब की यात्रा का सुअवसर दिया गया, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। पंजाब मेरे अध्ययन का विशेष विषय रहा है। अपनी यात्रा के दौरान मुझे जो आतिथ्य, स्नेह और मैत्री मिली वहां के लोगों से, मेरे लिए वह आजीवन एक स्मृति बन कर रहेंगे।

मेरी पंजाब-यात्रा का मुख्य उद्देश्य तो था अपने अनुसन्धान कार्य के लिये सामग्री एकत्रित करना। लेकिन इसके साथ ही मैं वहां के जन-जीवन, आचार-विचार और जलवायु आदि से भी परिचित होना चाहती थी। मैं एक शोधार्थी हूं, और भारत सरकार और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार के बीच छात्र विनियम योजना के अन्तर्गत मैं यहां शोध करने आई हूं। मेरा मुख्य आवास है नई दिल्ली में स्थित भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार। पंजाब का विस्तृत दौरा करने के अतिरिक्त, भारत के कुछ अन्य स्थानों की यात्रा भी की है मैंने।

मैं पिछले दो महीनों से पंजाब की यात्रा कर रही हूं। इस यात्रा में पंजाबी परिवारों में रहीं हूं और उनका रहन-सहन अपनाने का प्रयास कर चुकी हूं। इन परिवारों में मुझे अपने घर का सा स्नेह तथा अपनापन मिला है मुझे एक विदेशी न समझकर अपने परिवार का एक सदस्य ही समझा गया। यह अनुभव मेरे जीवन के कतिपय अत्यन्त सुखद अनुभवों में से एक है।

नव निर्माण में संलग्न नये भारत का प्रथम दर्शन यहीं चन्दीगढ़ और भाखड़ा नंगल में ही किये मैंने। नये और आधुनिक का प्रतीक चन्दीगढ़ एक भव्य तथा प्रभावोत्पादक नगर है। सुन्दर वास्तुकला का यह सुनियोजित तथा स्वच्छ, और आरामदेह मकानों तथा चौड़ी [illegible] सड़कों वाला नगर मुझे बहुत पसन्द आया।

पंजाब विश्वविद्यालय : शिक्षक होने के नाते यहां के पंजाब विश्वविद्यालय में दिलचस्पी रखना मेरे लिये एक स्वाभाविक बात थी। यह विश्वविद्यालय १४ न. सेक्टर में है, और एक विशाल नगर में एक छोटे नगर का आभास देता है। यहां मैं, विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष, डा. आर. आर. सेठी से मिली। बातचीत करने पर उनसे कई मूल्यवान सूचनायें मुझे मिलीं—विशेषकर विद्यार्थियों की शिक्षा, इतिहास में शोध कार्य आदि के संबंध में। डा. सेठी स्वयं पंजाब इतिहास के विशेषज्ञ हैं, इसलिये अपने शोध-विषय से संबंधित कई समस्याओं पर उन से विचार विनियम किया मैंने। इतिहास विभाग के ही एक प्राध्यापक, डा. गोस्वामी और उनके परिवार के साथ बाद में मैंने बहुत अच्छा समय काटा।

मैं चन्दीगढ़ में दस दिन रही, पंजाब विश्वविद्यालय के सुसज्जित और आरामदेह अतिथि-भवन में। मैंने विश्वविद्यालय के विभाग देखे, और यहां के बहुत सुन्दर [illegible] कालय में अध्ययन किया। पुस्तकाल[illegible] डा. शर्मा ने मेरी हर तरह से सहायता [illegible] विश्वविद्यालय के अलावा मैंने यहां [illegible] सेकरिटेरियट, विधानसभा-हाल और [illegible] न्यायालय भी देखे। नाना रंगों से आ[illegible] और आकर्षक वास्तुकला के नमूने वि[illegible] सभा-हाल ने मुझे विशेष रूप से प्रभा[illegible] किया।

मैं पंजाब विश्वविद्यालय के शारीरि[illegible] शिक्षा विभाग के अध्यक्ष, डा. गुप्त से भी मि[illegible] डा. गुप्त ने, लाइपजिक के 'शारीरिक सं[illegible] एवं खेलकूद का जर्मन कालेज' में पढ़ा है [illegible] वहीं से उन्होंने डाक्टरेट की उपाधि भी प्[illegible] की है। डा. गुप्त ने मुझे नंगल देखने [illegible] निमंत्रण दिया और मैं उनके परिवार के [illegible] नंगल देखने गई।

भाखड़ा नंगल में : आधुनिक भारत [illegible] निर्माण के प्रतीक इस विराट स्मारक [illegible] देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। मैं एक [illegible] स्थान पर खड़ी हुई और देखने लगी वि[illegible] जलाशय में उठती हुई उत्ताल तरंगों को [illegible] एक पूरे तैयार तथा दूसरे अधूरे बिजली[illegible]

लेखिका, श्रीमती दोलोर्स दोमिन अपने कुछ पंजाबी मित्रों के साथ
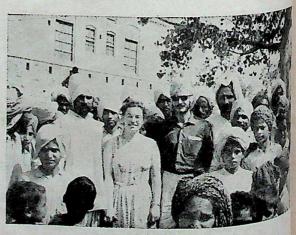
को। मैं सोचने लगी : 'यही भाखड़ा नंगल है—नये, स्वतंत्र और निर्माण में संलग्न भारत का प्रतीक। इस प्रकाश-पुंज ने यहां के दूरदराज़ और छोटे से छोटे गांव को भी बिजली के प्रकाश से आलोकित किया है। अनेकानेक तृषातुर खेतों की प्यास बुझाई है, और दर्जनों कल-कारखानों को गति प्रदान की है इसने। ऐसा है यह भाखड़ा-नंगल नये भारत का नया प्रतीक।....'

एक सुखद घटना याद आई मुझे। चन्दीगढ़ आने के पहले दिन ही, इत्तेफाक से मेरी मुलाकात हुई पंजाब विश्वविद्यालय के प्राणि-शास्त्र विभाग के कुछ शोधार्थियों से। उन्होंने सारे नगर में मुझे घुमाया और आस-पास के देशातों में भी वे मेरे साथ आये।—मैं रुपड़ भी गई, जहां मैं राज्यकीय कालेज के प्रिन्सिपल डा. जोशी की मेहमान रही। रुपड में प्राचीन भग्नावशेषों की खुदाई हो रही है। मैं खुदाई क्षेत्र को देखने गई। इसके अलावा मैंने कई गुरुद्वारे भी देखे। कालेज के कई प्राध्यापकों के साथ विचारों का अच्छा आदान-प्रदान भी हुआ।—चन्दीगढ़ के बाद में पटियाला गई।

पटियाला में : चन्दीगढ़ और पटियाला की तुलना कल्पनातीत है। पटियाला एक पुराना, छोटा नगर है लेकिन जीवन का गर्म खून मानो इस नगर की धमनियों में भरा हुआ है। यहां सुप्रसिद्ध इतिहासकार, डा. गंडासिंह ने मेरे रहने-खाने का प्रबंध करने की कृपा की थी। यहां मैं, आयुर्वेदिक महिला छात्रा-वास की मुख्य अधीक्षिका, श्रीमती शर्मा के साथ रही जिन्होंनें हर तरह से मेरा ध्यान रखा। यहां से मैं हर रोज मोती-बाग महल में स्थित पंजाब राज्य के अभि-लेखागार जाया करती थी अध्ययन के लिए। लगभग एक महीने तक यहां मैं पंजाब सरकार के पटियाला संबंधी रेकार्ड देखती रही। अभिलेखागार के निदेशक, श्री सूरी में मुझे एक अच्छे इतिहासकार और सक्रिय पुराता-त्विज्ञ के दर्शन हुये। इसलिए उनके इस अभिलेखागार में अध्ययन करने में मुझे बहुत आनन्द मिला। उन्होंने मुझे इतिहास का संग्रहालय दिखाया और अपनी विद्वत्ता तथा पाण्डित्य से मुझे हर तरह की सहायता दी। श्री सूरी ने पंजाब इतिहास से संबंधित महत्व-पूर्ण स्रोत-सामग्री को अनूदित करके प्रकाशित किया है। इसलिए मेरे विशिष्ट शोध-विषय के बारे में बातचीत करने के लिए वे अत्यन्त समर्थ तथा उपयुक्त विद्वान थे। इन के अति-रिक्त मैं उप-निदेशक श्री अरोड़ा की भी आभारी हूं जो मेरी हर कठिनाई दूर करने के लिये सदा प्रस्तुत रहे और हर प्रकार से जिन्होंने मेरी सहायता की।

पटियाला जैसे शहर में एक महीना रहना, वहां के लोगों के निकट संपर्क में आने के लिए कई अवसर उपलब्ध करता [illegible]वियों के स्नेहपूर्ण आतिथ्य, जिन्दादिली और ईमान-दारी के गुण मेरे मानस पर एक अमिट छाप छोड़ गये हैं।—मैं यहां के पंजाबी विश्वविद्यालय और महेन्द्र कालेज के प्राध्यापकों से भी मिली। इस कालेज और राज्यकीय महिला कालेज के वार्षिक महोत्सवों में भी मैंने भाग लिया। एक महीने के आवास के बाद मैं पटियाला से विदा हुई जहां मैंने न केवल अपने शोध-संबंधी ज्ञान को ही अभिवृद्ध किया बल्कि भारत के एक भाग के जीवन्त लोगों के आचार-विचार से भी परिचित हुई और जहां मैंने कई अच्छे मित्र भी बनाये।

अमृतसर में : मेरी पंजाब यात्रा का अगला पड़ाव था अमृतसर। सिक्खों के इस प्राचीन नगर में विश्वप्रसिद्ध स्वर्णमन्दिर (दरबार साहब का स्वर्ण मन्दिर— सं.) देशभक्तों का तीर्थ जलियांवाला बाग, और खालसा कालेज आदि स्थित हैं! यहां मैं खालसा कालेज के प्रधानाचार्य की अतिथि थी। कालेज के सिख-इतिहास विभाग के अध्यक्ष, प्रोफेसर कृपालसिंह ने मुझे अपना विभाग दिखाया और कुछ अमूल्य उद्धरण तथा सुझाव दिये मुझे। खालसा कालेज के इतिहास विभाग में सिख और पंजाब संबंधी पुस्तकों तथा सामग्री का लगभग पूर्ण संग्रह है। इसलिये मुझे यहां कतिपय अनुपलब्ध सामग्री पढ़ने को मिली। पुस्तकालय के अध्यक्ष तथा उनके सहायक ने मुझे यहां हर तरह की सुविधायें दीं।

इस पावन नगर अमृतसर में एक पुण्य-दिवस के दिन मेरा आगमन हुआ। वह दिन था १३ अप्रैल। उस दिन सिक्ख, बैसाखी का महोत्सव मना रहे थे। गुरु नानक जी के भक्तों की एक भारी भीड़ दरबार साहब के स्वर्ण मन्दिर में एकत्रित हुई थी। कितना भव्य दृश्य था वह : मन्दिर के चारों ओर, पवित्र तालाब के चारों ओर खड़ी लाल तथा सफेद रंगों की इमारतों में—सभी जगह लोग रंग बिरंगी वेष भूषाओं में प्रसन्न होकर घूम रहे थे।

जलियांवाला बाग : पवित्र स्वर्ण मन्दिर से कुछ ही दूर एक और ऐतिहासिक तीर्थस्थल है : जलियांवाला बाग। उसी दिन, अर्थात १३ अप्रैल को, वहां भी एक मेला सा लगा हुआ था। जलियांवाला बाग में शहीद दिवस मनाया जा रहा था। भारतीय शहीदों के रक्त से बने हुये तीर्थ में पहुंचकर मेरे सामने, लगभग ४५ वर्ष पूर्व की वह भयंकर घटना साकार हो उठी जब उपनिवेशवादी ब्रिटिश सरकार ने, धोखे से इस बाग में, सैकड़ों निर्दोष भारतीयों को भून दिया था। लेकिन आज, स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र नागरिकों के बीच में यहां अपने आपको पाकर मेरा मस्तक भी उन अनेक शहीदों की पुण्य स्मृति में झुक गया।

सिक्ख इतिहास मेरे अध्ययन का विशेष विषय है। इस लिये अमृतसर में मेरी खास दिलचस्पी थी। खालसा कालेज के पुस्तकालय में रखी हुई महत्वपूर्ण सामग्री का अध्ययन करने के अलावा, मैं वहां के अध्यापकों से प्रायः विचारों का आदान प्रदान भी किया करती थी।

दो जर्मन राज्यों में रुचि : यह जानकर मुझे काफी आश्चर्य भी हुआ और प्रसन्नता भी कि पंजाब के लोग दो भिन्न जर्मन राज्यों के विषय में काफी दिलचस्पी रखते हैं। इस संबंध में मेरी काफी बातचीत हुई कालेज पुस्तकालय में अन्य लोगों के साथ। यहां प्रो. राजेन्द्रसिंह और उनके परिवार के साथ

(शेष पृष्ठ १८ पर)

हुमबोल्त विश्वविद्यालय, बर्लिन

मानवीय परस्पराओं का आगार

आन्ने कारतिन हाइडे[illegible]

(गतांक से आगे)

बर्लिन विश्वविद्यालय : अब हम फिर बर्लिन विश्वविद्यालय की ओर चलते हैं। प्राकृतिक विज्ञान से संबंधित विषयों के अध्ययन अध्यापन की गति बराबर आगे बढ़ती रही, और विज्ञान जगत के अग्रगण्य विद्वान् माक्स वान लाये तथा माक्स प्लांक जैसे भौतिकविद् और आगूस्त बीर, थ्योडोर ब्रुग्श तथा रोबर्ट कोख इत्यादी जैसे औषधि-शास्त्री तथा डाक्टर, विश्वविद्यालय के शिक्षक वर्ग में रहे। ...वाइमर गणराज्य भी उन दिनों विद्वानों का गढ़ था। वहां से भी एल्बर्ट आइन्स-टाइन, लिज़े माइत्नर, रिचार्ड वान मिज़ेस, रोबर्ट रुस्सले, फर्डिनंड साउरब्रुक, एर्विन श्रूदिगर और इंस्साय शूर जैसे मनीषी तथा विचारक बर्लिन चले आये और विश्वविद्यालय में पढ़ाते रहे। विश्वविद्यालय के १४ प्राध्यापक-विद्वान, ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी देन के कारण कुछ ही वर्षों में, विश्व के सर्वोच्च नोबुल पुरस्कार से विभूषित हुये। कुल मिलाकर, २७ नोबल पुरस्कार विजेता बर्लिन विश्वविद्यालय में पढ़ाते रहे हैं।

जब जर्मनी को फासिस्तवाद की कालरात्रि ने अपनी काली छाया से ढक दिया सन् १९६२-६३ के आसपास, तब जर्मनी के अनेक विश्व प्रसिद्ध विद्वानों, विचारकों और वैज्ञानिकों को अपने देश से भागना पड़ा फासिस्तवादी खूनी पंजे से [illegible] के लिये। इनमें विश्वविद्यालय के विद्वान प्रोफेसर भी थे। हिटलर के फासिस्त-वादी अधिकारियों ने विश्वविद्यालय के २३० प्रोफेसरों तथा विद्वानों को नौकरी से अलग कर दिया। इसी दमन चक्र में प्रोफेसर माक्स प्लांक के बेटे, एर्विन को, फासिस्टों ने मौत के घाट उतार दिया।

प्रोफेसर माक्स प्लांक : प्रो. प्लांक, परमाणु-भौतिकी के एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। लेकिन हिटलर के नाज़ी दरिन्दों के अत्याचारों और दूसरे महायुद्ध की तबाही ने उनको एक तंग अंधेरे कमरे में मरने के लिए मजबूर कर दिया। –सन् १९४६ के जनवरी मास में इस नोबुल पुरस्कार प्राप्त महान वैज्ञानिक ने गोतिनजैन जाने के लिए पश्चिमी जर्मनी के एक अफसर को प्रार्थना-पत्र दिया। उसने [illegible] यह प्रार्थना ठुकरा दी। अन्त में प्रो. मा[क्स] प्लांक ने ४ अक्तुबर, सन् १९४७ के दिन [illegible] अंधेरी कोठरी में दम तोड़ दिया ८७ वर्ष [की] आयु में। यद्यपि, इन तपस्वी वैज्ञानिकों [का] दूसरे महायुद्ध में सर्वस्व स्वाहा हो गया [था] फिर भी उन्होंनें मानवता के प्रति अ[पनी] ईमानदारी और दायित्व को नहीं छोड़ा। उनकी इसी उदात्त मानवता और प्रखर वि[द्वता] के परिणामस्वरूप उनकी कृतियां और [illegible] अमर बन चुकी है। परमाणु-भौतिकी [के] बुनियादी सिद्धान्तों को जानने के लिये उ[त्सुक] भावी पीढ़ियां और लाखों लोग, प्रोफे[सर] प्लांक को युग-युग तक स्मरण करेंगें।

श्री माक्स प्लांक २३ अप्रैल के दिन कील[illegible] पैदा हुये थे। स्कूल की तालीम हासिल क[रने] के बाद उन्होंनें भौतिकी के विषय का अध्य[यन] शुरु किया। कालान्तर में वे, कील वि[श्व]विद्यालयमें रीडर, और ३४ वर्ष की आयु [में] ही वे बर्लिन विश्वविद्यालय में सैद्धान्ति[क] भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुये।

सन् १९०० में प्रो. प्लांक ने बर्लिन [की] फिजिक्ल सोसाइटी के सन्मुख अपने प्र[illegible] विकिरण सिद्धान्त पर भाषण दिया। इस[के] बाद ही उन्होंने इस सिद्धान्त के आधार [पर] तथ्य को समझाया। यह परमाणु-भौतिकी [का] एक बुनियादी तथ्य है जो यह है कि उ[illegible] निरन्तर रूपान्तरित नहीं हो सकती ब[ल्कि] वह केवल कुछ अंशों – अर्थात 'क्वान्टों' [में] रूपान्तरित होती रहती है। दो दशकों [के] बाद, इस महत्वपूर्ण खोज के लिये, श्री मा[क्स] प्लांक को भौतिकी में नोबुल पुरस्कार दि[या] गया। दिसम्बर, सन् १९०० में इनके [illegible]

स्वर्गीय राष्ट्रपति विलहैल्म पीक, प्रो. थ्योडोर ब्रुग्श (बायें) को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान कर रहे हैं

उपभोग सन् १९५८ में ११.७ किलोग्राम से बढ़कर सन् १९६२ में १२.० किलोग्राम हो गया। चीनी और अन्य मिष्टान्नों का उपभोग सन् १९५८ में २६.४ किलोग्राम से बढ़कर सन् १९६२ में ३०.२ किलोग्राम हो गया। सन् १९६२ में ३०.२ किलोग्राम हो गया। अण्डों का उपयोग भी सन् १९५६ में १७६ से बढ़कर सन् १९६२ में १८१ हो गया। इस संबंध में ये कुछ ही उदाहरण हैं।

सन् १९६२ में ज.ज.ग. में तीन सदस्यों का परिवार (दो वयस्क और एक बच्चा) अपनी कुल आय का १९.७ प्रतिशत भाग खाने-पीने पर और ८.८ प्रतिशत भाग अटिकाऊ विलास वस्तुओं पर खर्च करता था। ऐसी वस्तुओं की भी इस दुकान में कमी नहीं है। इनमें विभिन्न मूल्यों तथा किस्मों की स्थानीय शराबों से लेकर यूगोस्लाविया, पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, रूमानिया, और दूसरे देशों की कई तरह की चुनी हुई शराबों तक सभी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इन में कॉफी भी पर्याप्त मात्रा में मिलती है ज.ज.ग. में, सन् १९५८ में जहां एक व्यक्ति ०.७ किलोग्राम कॉफी का प्रयोग करता था, वहां सन् १९६३ में इसकी खपत बढ़कर लगभग १.६ किलोग्राम हो गई। इसी प्रकार उष्ण-कटिबंधीय (ट्रापिकल) फलों का प्रति व्यक्ति उपभोग सन् १९५८ में ५.७ किलोग्राम से बढ़कर सन् १९६२ में ९६ किलोग्राम हो गया।

आइये, अब पास की दुकान में सजाई गई टिकाऊ विलास वस्तुओं को एक नज़र देख लें। इन वस्तुओं के उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। अब ज.ज.ग. का नागरिक हर किस्म की वस्तुएं, जैसे ४३ सैंटिमीटर के पर्दे वाले टेलिविजन (५३ तथा ५६ सेंटिमीटर पर्दे वाले टेलीविजन भी कुछ समय के बाद खरीदे जा सकते हैं), रेडियो सेट, सफाई करने वाले यंत्र, घड़ियां, मोटर साईकल, बिजली के चूल्हे आदि खरीद सकता है।

ज.ज.ग. में हर १०० परिवार में ३८ घर ऐसे हैं जिन के पास टेलीविजन हैं, ४४ ऐसे है जिनके पास कपड़े सीने की मशीनें हैं, १६ घरों के पास रिफ्रिजिरेटर और १८ परिवारों के पास बिजली से चलने वाली कपड़े धोने की मशीनें हैं। सन् १९६३ में किस्तों द्वारा कीमत चुकाने के तरीके को काफी फैलाया गया।

ज.ज.ग. में, तीन सदस्यों का एक परिवार अपनी कुल आय का १५.५ प्रतिशत भाग टिकाऊ उपभोज्य वस्तुओं पर, करीब १०.८ प्रतिशत भाग कपड़ों आदि पर, और ११.८ प्रतिशत वस्तुओं की मरम्मत, बिजली तथा गैस के बिल चुकाने, परिवहन, किराये आदि पर व्यय करता है। म्युनिस्पेल्टी की रकम और किराया, कुल आय का केवल ३.८ प्रतिशत भाग बनता है। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि १९५४ से लेकर अब तक ज.ज.ग. में किराये, बिजली तथा गैस की फीस को बिलकुल नहीं बढ़ाया गया है।

इस प्रकार से तीन व्यक्तियों का एक परिवार अपनी आय का लगभग २१.८ प्रतिशत शेष भाग दूसरे कामों पर खर्च कर सकता है या बचा सकता है।

इस सर्वेक्षण में वे सभी बातें नहीं आतीं जिन से कि परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव पड़ता है। ऐसा करने के लिए उन रकमों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है जो सरकार तथा दूसरी संस्थाएं जनता की सुविधा के लिए खर्च करती हैं: जैसे संसथाओं द्वारा चलाये जाने वाले वे केन्द्र जहां से हर श्रमिक परिवार खाने पीने की चीजें बहुत ही कम दामों पर खरीद सकता है, किंडरगार्टन तथा नर्सरी के लिए आर्थिक सहायता और अवकाश के दिन बिताने के लिए चन्दा आदि।

ज.ज.ग. के श्रमिकों, तथा आम जनता के परिश्रम से ही ऐसा वातावरण पैदा हुआ है कि हमें ऐसी सफलता प्राप्त हुई है। उत्पादन में आश्चर्य जनक वृद्धि जनता के बढ़ते हुए जीवन स्तर का दर्पण है, और इस प्रकार इस कथन को अमल में लाया जा रहा है कि हम जैसा परिश्रम आज करेंगे, कल हमें उसका वैसा ही मीठा फल भी खाने को मिलेगा।

हुमबोल्त विश्वविद्यालय

(पृष्ठ ११ का शेष)

नये जनवादी और शांतिप्रिय जर्मनी के निर्माण में जुट गये। इस महान तथा मानवीय डाक्टर की अनगिनत सेवाओं के उपलक्ष्य में गणतंत्र की सरकार ने प्रो. ब्रुग्श को कई राष्ट्रीय पारितोषकों और पदवियों से सम्मानित किया।

बर्लिन विश्वविद्यालय ने जब से जन्म लिया है (१९वीं शती के चौथे दशक में वैज्ञानिकों और सुप्रसिद्ध विद्वानों का संबंध इसके साथ बराबर रहा है। और जब प्रशिया के किसी सम्राट के नाम पर इस विश्वविद्यालय का नामकरण हुआ, तब भी इसकी इस भव्य परम्परा में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। हुम्बोल्ट बन्धुओं से जन्म पाने से लेकर विरखो, हेगल, कार्ल मार्क्स, माक्स प्लांक, आइन्स्टाइन और थ्योडोर ब्रुग्श तक चली आई परम्परा ने बर्लिन विश्वविद्यालय को उदात्त, मानवीय ज्ञान-विज्ञान का अक्षय आगार बना दिया है।

विद्या और अनुसन्धान का यह मन्दिर फासिस्तवाद की पराजय के बाद, सन् १९४६ में, ध्वंस के खण्डहरों से एक बार फिर उठ खड़ा हुआ। फासिस्त-विरोधी, जनवादी शक्तियों ने इसकी भव्य, मानवीय परम्परा को ही नहीं बल्कि इसकी ज्ञान-विज्ञान संबंधी परम्परा को भी पुन: स्थापित किया। सन् १९४६ में पुन: खुल जाने के बाद, बर्लिन विश्वविद्यालय का नाम बदल कर इसके जन्म-दाता हुमबोल्त बन्धुओं के नाम पर रख दिया गया। तब से इस का नाम पड़ा 'विलहेल्म एवं एलेक्जाण्डर वान हुमबोल्त विश्वविद्यालय। इसी का संक्षिप्त रूप है हुमबोल्त विश्वविद्यालय। जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस प्रसिद्ध विश्वविद्यालय की मानवीय परम्पराओं को न केवल सुदृढ़ ही किया जा रहा है बल्कि ज्ञान-विज्ञान की परिधि को अधिक से अधिक विस्तार भी दिया जा रहा है।

सात समुद्रों में ज. ज. ग. के पोत

२ अप्रैल, १९६४ के दिन 'जर्मन नौपरिवहन कम्पनी' ने एक खास उत्सव मनाया। उस दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की नौपरिवहन कम्पनी में १०० वें जहाज का इज़ाफ़ा हुआ। इस मालवाहक पोत का नाम है विलहेल्म फ्लोरिन। यह १०,००० टन वजन का है, और वारनो जहाज़ साज़ कारखाने में इसकी तामीर हुई।

विलहेल्म फ्लोरिन को मिलाकर जर्मन नौपरिवहन कम्पनी के पास अब कुल १०० पोत हैं, जिनमें ९८ भारवाहक पोत और २ लाइनर हैं। जहाजों के इस बेड़े का कुल वज़न ६२२,१५५ टन है। सन् १९७० तक इन भारवाहक पोतों का कुल वज़न १२ लाख टन बढ़ा दिया जायेगा।

पिछले वर्ष, जर्मन नौपरिवहन कम्पनी के जहाजों ने, कुल ४६ लाख टन माल ढोया अन्य देशों को।
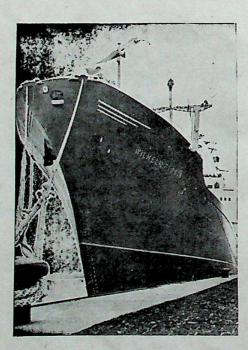
१०,००० वज़न वाला 'विलहेल्म फ्लोरिन' पोत

प्रथम पोत सेवा का आरंभ

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रथम पोत सेवा सन् १९५६ में आरंभ हुई। इसके बाद, ज.ज.ग. के जहाज लगातार रोस्टोक बन्दरगाह से फिनलैण्ड को जाने आने लगे।

आ[illegible] ज.ज.ग. की दे[illegible] नौपरिवहन सेवा भारत, [illegible]वियत संघ, क्यूबा, संयुक्त अरब गणराज्य, फिनलैण्ड और पश्चिमी अफ्रीका के साथ है। इसके अलावा ग्रेट ब्रिटेन, हालैण्ड बेलजियम और भूमध्यसागर के देशो को भी ज.ज.ग. के भारवाहक जहाज माल लेकर जाते हैं। दूर पूर्व और दक्षिणी अमरीका के देशों के साथ, जर्मन नौपरिवहन कम्पनी की स्थाई पोत सेवा चालू है।

'कम्पनी' के तेलवाहक जहाज़ काला सागर, उतरी सागर और बालटिक सागर में तेल लेकर जाते हैं। लाइनर पोत मुख्यतः उतरी सागर, बालटिक सागर, काला सागर और कारिबियन में स्थित बन्दरगाहों को जाते आते हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारवाहक पोत आजकल दुनिया की चार सौ बीस (४२०) बन्दरगाहों को जाते-आते हैं और २५० से भी अधिक विदेशी नाविक एजेन्सियों के साथ जर्मन नौपरिवहन कम्पनी के रिश्ते कायम हो चुके हैं। दूसरे शब्दों में, दुनिया के हर देश में ज.ज.ग. की इस कम्पनी के गाहकों की अच्छी खासी संख्या है।

अन्तराष्ट्रीय सहयोग

जर्मन जनवादी गणतंत्र, 'स्थाई नौपरिवहन कार्य दल' का सदस्य है। यह 'दल' पारस्परिक आर्थिक सहयोग परिषद (कोमिकोन) के परिवहन आयोग से सम्बद्ध है। इस कार्यदल का मुख्य कार्य है बन्दरगाहों की क्षमता को देखना, भारवाहक जहाज़ बेड़े की योज[illegible] का नियन्त्रण करना और भारवाहक [illegible] तेलवाहक पोतों को निरन्तर विकसित क[illegible] इत्यादि।

इस स्थाई नौपरिवहन कार्य दल के [illegible] पर, समाजवादी देशों के पोत-परिवहन [illegible] का एक केन्द्रीय कार्यालय स्थापित [illegible] गया है। यह कार्यालय विभिन्न समाज[illegible] देशों की नौपरिवहन सेवाओं का ताल[illegible] बैठाता है। उदाहरण के लिए बालटिक [illegible] से क्यूबा तक के लम्बे समुद्र-मार्ग पर [illegible] ज.ज.ग, पौलैण्ड, चोकोस्लोवाकिया होता [illegible] क्यूबा जाता है, उक्त कार्यालय के नियन्[illegible] में समाजवादी देशों के पोत जाते आते [illegible]

'जर्मन नौपरिवहन कम्पनी' के जन[illegible] लगभग १२ वर्ष बाद, कम्पनी का 'विल[illegible] फ्लोरिन' नामक १०० वां जहाज, परि[illegible] सेवा के लिए समुद्र में उतारा [illegible] इतनी कम अवधि में, इतना बड़ा भार[illegible] जहाज़ी बेड़ा तैयार करना, विश्व के नौपरि[illegible] इतिहास में एक अनुपम उदाहरण है। [illegible] की आवश्यकता नहीं कि इतने बड़े जह[illegible] बेड़े को तैयार करने में जर्मन नौपरि[illegible] कम्पनी को हज़ारों नाविकों, कप्तानों, [illegible] नियरों और कर्मचारियों आदि को ट्रेनिंग [illegible] तैयार करना पडा होगा। युद्ध-पूर्व की [illegible] नौपरिवहन कम्पनी में, सन् १९३६ में, [illegible] ३६ कर्मचारी काम करते थे, लेकिन [illegible] १९६३ में इस कम्पनी में ५,२९५ व्यक्ति [illegible] पर नियुक्त थे।

'कम्पनी,' अपने नाविकों, पोत-[illegible] इंजीनियरों की ट्रेनिंग को प्रथम महत्[illegible] है। केवल सन् १९४६ से १९६३ तक, [illegible] ने ८०० नाविकों को ट्रेनिंग दी। नौपरि[illegible]

के इतिहास में पहली बार नाविक को कुशल मजदूर की कोटि में रखा गया है। नाविकों के प्रशिक्षण के लिए, कम्पनी के पास 'हाइनरिख हाइने', 'थ्योऐर कूरनेर' और 'जे. जी. फिख्ते', नाम के तीन विशिष्ट पोत हैं।

वारनेम्यून्दे के नाविक इंजीनियरी कालेज ने आज तक ज.ज.ग. के ६०० नाविक इंजीनियर और मेकनिक प्रशिक्षित किये हैं। इस के अलावा, बुजतो के नाविक कालेज में ४०० कप्तानों तथा अन्य अफसरों और ७५ बेतार के अफसरों को आज तक प्रशिक्षण मिला है।

सुविधायें

'जर्मन नौपरिवहन कम्पनी' अपने कर्मचारियों को मनोरंजन की अधिक से अधिक सुविधायें उपलब्ध करने का प्रयास करती है। भारवाहक और यात्रा-पोतों में चित्रपट आदि उपलब्ध किये गये हैं जिनपर लगभग ४५० फिल्में दिखाई जाती हैं।

'कम्पनी' के पोतों पर नाविकों तथा अन्य लोगों के पढ़ने के लिए पुस्तकालय भी उपलब्ध किये गये हैं जिन में कुल २०,००० पुस्तकें हैं। लोक धुनों, नृत्यों, शास्त्रीय संगीत, रेडियो रूपकों और सुन्दर गानों के टेप रिकार्ड भी पुस्तकालयों में रखे गये हैं। और पोत के कर्मचारी जब चाहें अपना मनपसन्द टेप-रिकार्ड सुन सकते हैं।

पोत के एक सुसज्जित कमरे में नाविक तफरी कर रहे हैं

इलाज

'रोबर्ट कोख' नाम का पोत एक "तैरता हस्पताल" है। रोस्टोक (ज.ज.ग.) की मछली कम्पनियां इसकी मालिक हैं। हाल ही में यह समुद्रीय अस्पताल, अपनी ५३ वीं यात्रा पर निकल चुका है। आठ वर्ष पहले यह अस्पताल-पोत अपनी प्रथम यात्रा पर निकला था, और आज तक यह २५०,००० मीलों की समुद्री यात्रा कर चुका है। इस अवधि में इसने ७०० बीमारों का इलाज किया है।

श्रीलंका......

(पृष्ठ ६ का शेष)

आन्दोलन बहुत सफल हुआ है। यहां के उच्च संगठनात्मकता और योजनाओं को दृढ़ता से पूरा करने के काम को देखकर, मैं खासतौर से प्रभावित हुआ। निस्सन्देह इन सब सफलताओं और उपलब्धियों के पीछे आपकी परिश्रमी जनता के कठिन श्रम का हाथ है। दूसरे महायुद्ध के ध्वंस के घावों को भरकर आपकी श्रमिक जनता ने आश्चर्यजनक निर्माण किया है।..."

श्रीलंका के माननीय अतिथि ने निम्न शब्दों में अपनी प्रेस-भेंट का अन्त किया : "जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता को मैं इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ज.ज.ग. और श्रीलंका के बीच मौजूद मैत्रिपूर्ण संबंधों को अधिक व्यापक और सुदृढ़ बना दिया जायेगा।"

चन्दीगढ़.. ...

(पृष्ठ ६ का शेष)

मेरी मुलाकात हुई। यहां की तंग गलियों और बाजारों को मुझे उन्होंने दिखाया और छोटी-छोटी दुकानों पर बैठकर मैंने हर प्रकार के खाद्य पदार्थों का मजा लिया।

अमृतसर तहसील के कई गांव भी देखे मैंने। 'भूमि समेकन प्रायोजना' के रिसर्च-अफसर, श्री बी. एस. नन्दा ने, खालसा कालेज में जिन से मेरी मुलाकात हुई थी, एक गांव की यात्रा कराई। उन्होंने मुझे अपनी प्रायोजना के उद्देश्य तथा विधि समझाई और गांव वालों के जीवन-स्तर से परिचित कराया। रामपुर गांव के लगभग सभी निवासी मेरे स्वागत के लिए आये। एक घनी भीड़ से घिरी हुई मैं गांव में दाखिल हुई और वहां के कई घरों को देखा मैंने। धनी किसानों के घरों में जितनी खुशहाली देखी, ग़रीब किसानों के घर उतने ही बदहाल देखे। लेकिन मैं यह भावना लेकर लौटी वहां से कि स्वतंत्र भारत का निर्माण इन लोगों को भी खुशहाल बना देगा कालान्तर में।

अमृतसर से विदा लेने के साथ ही मेरी इस सुखद पंजाब यात्रा का अन्त हुआ। लेकिन यह अन्त वास्तव में पंजाब की उपजाऊ धरती और इसके मेहनती लोगों के साथ मेरी मैत्री का आरंभ है। मैंने यहां के निवासियों से बहुत कुछ सीखा और, इस तरह मैंने पंजाब से संबंधित अपने ज्ञान को बढ़ाया।

अपने साथ मैं काफी सामग्री दिल्ली लाई जो मेरे शोधकार्य में निर्णायक योगदान देगी। इस यात्रा ने, भारत और भारतीय जनता के प्रति, यहां के इतिहास और संस्कृति के प्रति, मेरे सम्मान को द्विगुणित कर दिया है।

चिट्ठी पत्री

प्रिय बन्धु,

आपके साहित्य - दीप से निकली हुई किरणों ने साहित्य-जगत को पूर्णतः देदीप्यमान कर दिया है। आपके प्रकाशनों ने साहित्य-प्रेमियों को बहुत कुछ प्रदान किया है इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं। मैं आशा करता हूं कि आप अपनी रचनाएं भेज कर मेरी भी साहित्य-पिपासा शान्त करते हुए मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

शेख एम. एच. सिद्दीकी,
गोंडा (उ.प्र.)

प्रिय महाशय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र की **'पत्रिका'** मुझे नियमित रूप से भेजने से मैं आपका बड़ा आभारी हूं। मुझे यह बात कहने में अधिक प्रसन्नता हो रही है कि ज.ज.ग. की आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने वाले लेख हमें अत्यधिक प्रिय और रुचिकर लगते हैं। ज.ज.ग. की सांस्कृतिक अन्तरधारा का मनोमुग्धकारी प्रभाव पाठकों को अधिक आकर्षित करता है। मैं महाराजास कलालय की पढ़ाई की पूर्ति कर चुका हूं। इसलिये मुझे नये पते पर पत्रिका नियमित रूप से भेजने की कृपा करें।

पी. कृष्णन,
एरनाकुलम (केरल)

महोदय जी,

यह एक प्रसन्नता का विषय है कि हम ठीक समय पर **सूचना पत्रिका** प्राप्त करते हैं। मैं इस 'पत्रिका' को लगभग ३ वर्ष से पढ़ रहा हूं। दिनोदिन इसका व्यापक प्रचार होता जा रहा है और इसका कलेवर भी बड़ा मन-मोहक है। इस पत्रिका के पढ़ने से हमें ज.ज.ग. की सारी गतिविधियों का ज्ञान हो जाता है जिससे हमें अन्तर्राष्ट्रीय जगत की गतिविधियों का भी अवलोकन हो जाता है। मैं आशा करता हूं कि यह, दोनों राष्ट्रों एवं संपूर्ण विश्व के बन्धु-समता की भावना को प्रोत्साहन देती रहेगी। अब तो 'पत्रिका' की बाह्य रूप सज्जा भी बड़ी आकर्षक हो गई है। आपने प्रश्नोत्तर स्तम्भ खोलकर पत्रिका को अधिक उपयोगी बना दिया है।

ए. एस. बोधा,
मंत्री,
श्री भारतीय पुष्करणा ब्राह्मण सभा,
जोधपुर (राज.)

माननीय महानुभाव,

प्रमाभिवंदन। सुसंम्पादित व सुमुद्रित अपनी **सूचना पत्रिका** को आप हमारी ब्रह्मविद्या-प्रचारक मासिक 'ब्रह्मवाणी' के कार्यालय में अविराम भिजवा रहे हैं, इसके लिये हम हृदय से आपका अनुग्रह मानते हैं। यदि ज.ज.ग. के प्रख्यात रचियताओं की कथाकृतियों और बौद्धिक लेखों को भी आप समावेशित करें, तो निस्संदेह 'पत्रिका' साहित्यिक दृष्टि से भी ऊंचा उठ सकती है। अपने साहित्यकारों की गतिविधियों का सविस्तार परिचय देने वाला एक स्थायी-स्तम्भ आप इसके लिये आरम्भ कर सकते हैं। इससे हिन्दी-पाठकों को बहुत लाभ होगा। कार्य बेशक श्रमसाध्य है, परंतु असंभव नहीं। आप सुरीति से इसको निभा सकते हैं, क्योंकि आप समर्थ हैं।

'पत्रिका' की सुरुचि-सम्पन्नता के लिये पुनः बधाई। **पं. पम्पोश** का कवितान... कार्य स्तुत्य व मंगलप्रद है।

कृष्ण मुनि प्र...
सम्पादक : ब्रह्म...
नई दि...

प्रिय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** हमें ... से नियमित रूप से प्राप्त हो रही है ... पाठकगण आपकी पत्रिका बड़े उत्साह ... पढ़ते हैं। '६३ में हमारे ग्रंथागार को ज... जनवादी गणतंत्र के सम्बन्ध में कुछ पु... मिली थीं। इसलिए हम पूर्ण आशा क... हैं कि हमारे ग्रन्थागार के लिए आप अ... पत्रिका तथा और भी छोटी-छोटी पु... नियमितरूप से भेजते रहने की कृ... करेंगे।

कष्ट के लिए धन्यवाद।

सुबीर मु...
विवेकानन्द ममोरियल ग्रंथा...
मदिनीपुर (प. बंगा...

महोदय,

आपके द्वारा भेजी गई **सूचना पत्रिका** माह मई ६४ का अंक, 'भारत सेवक ...' के यहां पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत पत्रिका में **ओम पन्डित** ... द्वारा रूपान्तरित कविता **लिडन वृक्षों** **छाया में** पढ़ कर दिल हर्ष से गद्... गया। वास्तव में 'पम्पोश' ने अच्छी ... का रूपान्तर कर छात्रों का दिल मु... दिया है।

श्री 'पम्पोश' को इसके लिये शुभ ... भेज रहा हूं।

रघुनन्द...
बहादुरपुर (...

ग्राहकों तथा पाठकों से

१. 'सूचना पत्रिका' — मासिक पत्रिका है जो हर महीने की **२० तारीख** को छपती है।

२. पत्रिका का **वार्षिक चन्दा २ रुपया** है। इच्छुक पाठक चन्दा, मनी-आर्डर अथवा पोस्टल-आर्डर द्वारा, **सूचना अधिकारी, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार दूतावास, १२ कौटिल्या मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज सकते हैं।

३. कालिजों, पुस्तकालयों, पंचायतों तथा ऐसी ही अन्य **सार्वजनिक संस्थाओं** को, मांगने पर, 'पत्रिका' निःशुल्क भेजी जा सकती है।

४. ग्राहक, हमारे साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपनी **ग्राहक संख्या** अवश्य लिखा करें जो 'पत्रिका' के रैपर पर, पते के साथ टाइप की हुई होती है। **ग्राहक संख्या** न लिखने से ग्राहक की इच्छापूर्ति करने में हम असमर्थ होंगे।

५. ग्राहकों अथवा पाठकों को यदि 'सूचना पत्रिका' महीने की **२५ तारीख** तक न मिला करे तो उन्हें पहले स्थानीय डाकखाने से इस बारे में पूछ ताछ करनी चाहिये। ठीक उत्तर न मिलने पर वे हमें लिख सकते हैं।

६. पता, हमेशा **साफ और पूरा** लिखा करें। अस्पष्ट तथा अधूरे पते के कारण आप 'पत्रिका' से वंचित रहेंगे।

त थ्य औ र आं क ड़े

सिंचाई-खर्च

जर्मन जनवादी-गणतंत्र की सरकार अपने गणतंत्र के १४ प्रान्तों में, सिंचाई के विकास पर इस साल २१ करोड़ और ३० लाख मार्क (१ मार्क = १.१२ पैसे) खर्च करेगी। यह रकम, सन् १९६३ में खर्च की गई रकम से दुगुनी है। बालु-युक्त किन्तु नर्म १४,४०० हैक्टर भूमि को जल देकर उपजाऊ बना दिया जायेगा। इस योजना पर ५६ लाख मार्क की रकम अलग खर्च की जायेगी।

६४ जलाशय

जर्मन जनवादी गणतंत्र में इस समय कुल ६४ विराटाकार जलाशय हैं जिनकी कुल भारिता ८५ करोड़ गण-मीटर है। सन् १९४५ में, आजकल के ज. ज. ग. क्षेत्र में केवल २५ जलाशय थे।

पोलियो खतम

ज. ज. ग. में पोलियो (लकवा) नामक खतरनाक बीमारी का अन्त कर दिया गया है। सन् १९६२ में दो अन्तिम रोगी इस बीमारी का शिकारी हुये थे। ये दो बच्चे थे जिन्होंने पोलियो नाशक औषधि का टीका नहीं लिया था।.........दस साल पहले, ज. ज. ग. में २, ६३४ पोलियो-ग्रस्त रोगी थे।

२३ देशों के छात्र

बर्लिन : २३ देशों के नौजवान विद्यार्थी, जर्मन जनवादी गणतंत्र के उष्ण-कटिबंधीय कृषि संस्थान में अध्ययन कर रहे हैं। यह संस्थान १०० वर्ष पुराने लाइपजिक विश्वविद्यालय का नवीनतम विभाग है। उक्त विद्यार्थी अफ्रीका, मध्य पूर्व और लातीनी अमरीका से आये हैं। यह कृषि संस्थान खासतौर से, नवोदित राज्यों को ट्रेनिंग देने के लिये ही बनाया गया है।.........अध्ययन चार वर्षों के पाठ्यक्रम पर आधारित है। हर साल, इस संस्थान में, ३० विदेशी छात्रों को दाखिला दिया जाता है।

ओलम्पिक टीम

टोकियो की विभिन्न ओलम्पिक खेलों में संभवतः ४२४ जर्मन खिलाड़ी भाग लेंगे। अब तक कुल ६५ खिलाड़ियों का चयन हुआ है, जिनमें ज.ज.ग. के खिलाड़ियों की संख्या, पश्चिमी जर्मनी के खिलाड़ियों से अधिक है। इस संबंध में निम्न तालिका दृष्टव्य है :

	ज. ज. ग.	पश्चिमी जर्मनी
हाकी	१८ खिलाड़ी	— — —
जूडो	१ ,,	३ खिलाड़ी
घुड़-सवारी	२ ,,	६ ,,
जल-पोलो	११ ,,	— — —
घूसे-बाजी	६ ,,	४ ,,
वजन उठाना	४ ,,	३ ,,
फुटबाल	२० ,,	— — —
कुश्ती	३ ,,	५ ,,
	६५ खिलाड़ी	२४ खिलाड़ी

निर्माण के सहयोगी

भारत के नये प्रधान मंत्री को ज.ज.ग. की हार्दिक बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री, श्री ग्रोटो ग्रोतवोल ने, श्री लालबहादुर शास्त्री को भारत का प्रधान मंत्री निर्वाचित होने पर तार के द्वारा अपनी हार्दिक बधाई दी है। तार में लिखा गया है :

"परम श्रेष्ठ, भारतीय गणराज्य के प्रधान मंत्री चुने जाने के इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

"मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि भारतीय सरकार आपके नेतृत्व में, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू द्वारा शांतिपूर्ण सह-जीवन, विश्व जन में मैत्री तथा सहयोग और विश्व शान्ति की सुरक्षा संबंधी प्रतिपादित नीति को चालू रखेगी। मैं आशा करता हूं कि हमारे दो देशों के पारस्परिक संबंध, जो पिछले कुछ वर्षों में बड़ी सफलता से विकसित हुये हैं, भविष्य में भी अधिक विस्तृत और सुदृढ़ होंगे।

"भारतीय गणराज्य के इस उच्च तथा सम्मानित पद पर आसीन होकर आप परम श्रेष्ठ, भारत की जनता के हित तथा विश्व की शान्ति के कार्य में सफल हों, यही मेरी कामना है। आपके स्वास्थ्य एवं सबलता की कामना करते हुये अपनी समस्त शुभेच्छाओं के साथ, आपका......"

ज. ज. ग. में भारतीय व्यापार-प्रतिनिधि मण्डल

'मशीन निर्माण उत्पादनों की भारतीय परिषद' का एक प्रतिनिधि-मण्डल आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा कर रहा है। वहां वे, भारत और ज.ज.ग. के बीच, इस क्षेत्र विशेष में, सहयोग की संभावनाओं पर बातचीत कर रहे हैं। प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व श्री पी.एल. किरलेस्कर कर रहे हैं, और प्राग में स्थित भारतीय व्यापार कौंसिलर, श्री आर.सी. कालरा उनके हमराह हैं।

२३ जून को, ज.ज.ग. के उप विदेश-व्यापार मंत्री श्री गेरहार्ड वाइस्स ने उल्लिखित 'भारतीय परिषद' के प्रतिनिधि-मण्डल का स्वागत किया। प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य, जल्द ही, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार चैम्बर के उपाध्यक्ष श्री कूर्त वोल्फ से बातचीत करेंगे। इसके अतिरिक्त भारतीय व्यापार के प्रतिनिधि ज.ज.ग. की विदेश व्यापार कम्पनी, परिवहन यन्त्र निर्यात और [illegible] नामक व्यापार [illegible] के प्रतिनिधियों से भी दो देशों में व्यापार बढ़ाने की बातचीत करेंगे।

ज. ज. ग. में एक भारतीय डाक्टर की सेवा

कुछ दिन पहले, एक भारतीय डाक्टर हेमकान्त किरलोस्कर ने, हजारों वर्षों की भारतीय संस्कृति को, स्लाइड-चित्रों से युक्त व्याख्यान के द्वारा, जर्मन जनवादी गणतंत्र के श्वेरिन नामक कस्वे के लोगों के सामने मानो जीवित कर दिया। भारत के भूत और वर्तमान से संबंधित, डा. किरलोस्कर के स्लाइडों और भाषण को २०० से अधिक लोगों ने देखा सुना।

डा. हेमकान्त किरलोस्कर, ज.ज.ग. के श्वेरिन कस्वे के मेज्तलिन नामक गांव के अस्पताल को चला रहे हैं। एक प्रेस कानफ़्रेन्स में डा. किरलोस्कर ने बताया : "हमारा पेशा, राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं मानता। हर जगह रोगी होते हैं, और उनको डाक्टर की सेवा मिलनी चाहिये। . . . ." डाक्टर साहब ने बम्बई में डाक्टरी पढ़ी है, और भारत में उन्होंने चौदह साल रोगियों का इलाज किया है।

मेज्तलिन में डा. किरलोस्कर बहुत ही लोकप्रिय डाक्टर हैं। उनका नाम इसलिये भी बहुत आसान हो गया है वहां, क्योंकि रोगियों के इलाज और दवाइयों पर जितना भी धन खर्च होता है वह सरकार दे देती है। डा. किरलोस्कर के सुझाओं पर, मेजतलिन के अस्पताल को विस्तार देकर ७०० रोगियों के इलाज के योग्य बना दिया गया है। अस्पताल का [illegible] क्रिया कक्ष भी आधुनिक ढंग का बना है।

भारत और ज.ज.ग. मिलकर फिल्म बनायेंगे

भारत की 'बोम्बे फिल्म प्रो[illegible] कोआपरेटिव लिमिटेड' नामक [illegible] कम्पनी और जर्मन जनवादी गणतंत्र की [illegible] फिल्में बनाने वाली कम्पनी 'डेफा' मिल कर एक फिल्म बनायेंगे। इस फिल्म का [illegible] है 'सिकन्दर और चाणक्य' और इसके [illegible] 'डेफा' कम्पनी निर्देशक (श्री हाइन्स [illegible]) पटकथा लेखक (श्री गेहार्ड बेन्श) तथा [illegible] (श्री रूदी हान्नेमन्न) उपलब्ध करेंगे। 'सिकन्दर और चाणक्य' की नायिका का [illegible] एक पोलिश अभिनेत्री बिल्याता टिकमे[illegible] अदा करेगी।

भारतीय नाटककार ज.ज.ग. से प्रभावित

भारत के नाटककार श्री सी.सी. [illegible] ने, जो बरोदा विश्वविद्यालय [illegible] ललित-कला विभाग में प्रोफेसर हैं, जर्मन [जन]वादी गणतंत्र के सांस्कृतिक जीवन की भूरि प्रशंसा की है। श्री मेहता हाल [ही में] ज.ज.ग. की १२ दिवसीय यात्रा पर [गये थे।] वहां के नाटक-कारों, अभिनेताओं और [नाट्य]शालाओं के निर्देशकों के साथ अनुभव [के] आदान-प्रदान करने के लिये। अपनी [यात्रा में] उन्होंने बर्लिन, ड्रेस्डेन, लाइपजिग [और] वाइमर की नाट्य-शालाओं में १३ [नाटक] देखे। प्रोफेसर मेहता, विश्व-विख्यात [जर्मन] नाकटकार स्व. बर्तोल्त ब्रेख्त की नाट्[यशाला] से विशेष प्रभावित हुये। इसको देखकर [उन्होंने] कहा, "ब्रेख्त एनसाम्बुल लोक-रंगमंच का [प्रति]निधि है, और कई रूपों में इसकी तुलना [भार]तीय लोक-रंगमंच से की जा सकती है।"

श्री मेहता, अगले वर्ष फिर जर्मन ज[नवादी] गणतंत्र की यात्रा पर जायेंगे, और बर्लि[न और] लाइपजिक थियेटर कालेज में नाट्[य से] संबंधित कुछ व्याख्यान देंगे।

स मा चा र

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के प्रति ज.ज.ग. के मंत्रिपरिषद की शोक श्रद्धांजलि

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष-मण्डल ने ६ जून के दिन अपने नये सत्र के शुरू होने के अवसर पर भारत के प्रथम दिवंगत प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के प्रति अपनी शोक-श्रद्धांजलि अर्पित की ।

इस अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम उप-प्रधान मंत्री, श्री विल्लीस्तोप ने भारत के इन महान नेता के जीवन संघर्ष के प्रति सम्मान व्यक्त किया । उन्होंने, भारत के स्वाधीनता संग्राम में स्व. नेहरू की देन, विश्व शांति में उनकी अटूट आस्था और शांतिपूर्ण सह-जीवन के आधार पर राज्यों के पारस्परिक व्यवहार एवं सहयोग में उनके विश्वास पर विशेष रूप से प्रकाश डाला । श्री स्तोप ने यह विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में भी भारत और ज.ज.ग. के आपसी संबंध विस्तृत और सुदृढ़ होंगे ।

जर्मनी के एकीकरण की समस्या

इटली के एक सुप्रसिद्ध अखबार 'यूनिता'' ने, अपने १६ जून के अंक में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम उपप्रधान मंत्री विल्ली स्तोप का एक इण्टरव्यू छापा है । इस इण्टरव्यू में विभाजित जर्मनी को फिर से एक करने की महत्वपूर्ण समस्या पर मंत्रिमहोदय ने ज.ज.ग. की नीति को स्पष्ट किया है । यूनिता में लिखा गया है ''जर्मन समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के लिए यह एक अनिवार्य आवश्यकता है कि दोनों जर्मन राज्य (ज.ज.ग. और प. जर्मन गणराज्य–सं.) आपस में किसी समझौते पर पहुंच जायें । लेकिन पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोधवादियों द्वारा अपनाई गयी नीति इस समझौते के रास्ते में एक बड़ी रुकावट है ।''

दोनों जर्मन राज्यों द्वारा अणु-शस्त्रों के परित्याग के महत्व का उल्लेख करते हुये उप-प्रधान मंत्री ने अपने उक्त इण्टरव्यू में कहा है : ''जर्मन भूमि पर, दो भिन्न विश्व व्यवस्थायें अपने जबरदस्त सैन्य दल बल के साथ, एक दूसरे के सामने सीधे खड़े हैं। इसलिये पश्चिमी जर्मनी में यदि अणु-शस्त्रों का आगमन हो जाये तो एक विश्व विध्वंसक अणु-युद्ध छिड़ने का खतरा कई गुना बढ़ जायेगा । इसलिये यदि दोनों जर्मन राज्य अणु शस्त्रीकरण का परित्याग करें, जैसा कि ज. ज. ग.ने कई बार सुझाव दिया है तो इससे दोनों जर्मन राज्यों के बीच का फासला अधिक नहीं बढ़ेगा, और जर्मन समस्या के समझौते तथा शान्तिपूर्ण हल के लिये एक अनुकूल वातावरण तैयार हो जायेगा ।''

श्री विल्ली स्तोप ने यह भी कहा कि ज.ज.ग. हर उस कदम का स्वागत करेगा जो पश्चिमी जर्मनी के सभी समाजवादी देशों के साथ सामान्य संबंध स्थापित करने की ओर उठेगा ।

सोवियत संघ के लिये ४४ पोत

इस वर्ष, जर्मन जनवादी गणतंत्र के जहाज साजी के कारखानों में सोवियत संघ के लिये ४४ जहाज निर्माणाधीन है । इन जहाजों के अतिरिक्त, ज.ज.ग. इस साल सोवियत संघ को विभिन्न प्रकार के ७४ औद्योगिक लोकोमोटिव, ८३३ कूलिंग-वैगन, १६० भोजन-गाड़ियां और ८७० यात्री-डब्बे सप्लाई करेगा । अब तक, ज.ज.ग. ने सोवियत संघ को १३६ औद्योगिक कारखाने सप्लाई किये हैं, जिनमें सीमेंट बनाने का ४० फैक्ट्रियां भी शामिल हैं । इन आंकड़ों का उद्घाटन किया, ज.ज.ग. के विदेश व्यापार मंत्री डा. लोतार बोल्स ने 'जर्मन-सोवियत मैत्रिसंघ' की कार्यकारिणी की एक बैठक में ।

सोवियत संघ ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के समाजवादी निर्माण में कितनी जबरदस्त सहायता दी है, डा. बोल्स ने उसका भी उल्लेख किया । इस संबंध में उन्होंने श्वेत स्थित तेल शोधक कारखाने, ल्यूना द्वितीय के पेट्रोरासायनिक कारखाने, और दो बड़े ताप-विद्युत केन्द्रों का विशेष उल्लेख किया ।

पश्चिमी जर्मनी के शरणार्थी

२९ मई और ४ जून के बीच, पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन से १८९ व्यक्ति भाग कर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण लेने के लिये आये । इनमें ५६ नौजवान हैं, और एक तिहाई व्यक्ति कुशल मजदूर हैं । इन शरणार्थियों को जर्मन जनवादी गणतंत्र में ठीक तरह से बसा दिया गया है ।

राजस्थान के योजना मंत्री ज. ज. ग. में

हाल ही में भारत के, राजस्थान राज्य के योजना मंत्री, श्री मथुरादास माथुर ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा समाप्त किया । ४ जुलाई के दिन उन्होंने ज. ज. ग. के विदेश व्यापार मंत्री, श्री यूलियस गालकों से मुलाकात की । दोनों में, भारत और ज. ज. ग. के आर्थिक सहयोग---विशेषकर लिग्नाइट उत्पादन में सहयोग के बारे में काफी मूल्यवान बातचीत हुई । दोनों देशों के वर्तमान संबंधों को अधिक सुदृढ़ तथा विकसित करने के बारे में भी विचार विनिमय हुआ ।

श्री मथुरादास माथुर ने ज. ज. ग. के कोत्तबुस प्रान्त में ''श्वार्जे पम्पे'' नामक विराटाकार लिग्नाइट उत्पादक कारखाना भी देखा जिस से वे बहुत प्रभावित हुये । ज. ज. ग. में अपने आवास के दिनों में श्री माथुर यहां की कई बड़ी बड़ी विदेश-व्यापार फर्मों से भी मिले यह जानकारी हासिल करने के लिये कि ज. ज. ग. द्वारा भारत को तैयार और बने बनाये कारखाने आयात करने की क्या और कितनी संभावनायें हैं ।

ज.ज ग. के नारी संगठन की सरगर्मी

जर्मन जनवादी गणतंत्र के, "जर्मन महिला डेमोक्रेटिक संघ" नामक नारी संगठन ने, दुनिया के ८० देशों के नारी संगठनों से अपने संपर्क स्थापित कर लिये हैं। पिछले तीन वर्षों में ६२ देशों की ७०० से अधिक महिलायें ज.ज.ग. आयीं, और उन्होंने स्वयं देख लिया कि नारियां, समानता के आधार पर, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भाग ले रही हैं। ज.ज.ग. का उक्त नारी संगठन, उन देशों के लोगों से अपनी गहरी सहानुभूति रखता है जो अभी पराधीन हैं और स्वाधीनता के लिये संघर्षरत हैं। उपनिवेशवाद की लानतों को खत्म करने के लिये नवोदित राज्य जो गंभीर प्रयत्न करते हैं, ज.ज.ग. की नारियां बहुत प्रसन्न हैं। ऐशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका की छात्राओं को, ज.ज.ग. में अध्ययन की विशेष सुविधायें मिलती हैं।

अपनी एक भेंट में, "जर्मन महिला डेमोक्रेटिक संघ" की अध्यक्ष, श्रीमती इल्जे टीले ने एक सुप्रसिद्ध पत्र से कहा : "हमारे गणतंत्र की विदेश नीति ने—शांति, पारस्परिक सद्भावना और सभी विश्व जनगण की मैत्री जिसका मूलाधार है—हमारे देश को सम्मानित बना दिया है। इस नीति से महिलाओं की आपसी मैत्री भी सुदृढ़ हो गई है।. . . "

ज.ज.ग. के मंत्री के सम्मान में भोज

विगत मास में, संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार तथा विकास सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल के उप-नेता श्री के. वी. लाल ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप विदेश-व्यापार मंत्री, श्री गेरार्ड वाइस्स के सम्मान में एक भोज दिया। इस भोज में भारतीय-मण्डल के कार्यकारी नेता श्री डी.ए. जोशी और भारतीय तथा ज.ज.ग. के प्रतिनिधि मण्डलों के दूसरे विशेषज्ञ, सदस्य आदि भी उपस्थित थे। भोज के उपरान्त दोनों देशों के प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्यों ने, भारत और ज.ज.ग. में आर्थिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की।

विश्व बाल चित्र-कला प्रदर्शनी

गत १२ जून को, बर्लिन में, एक "विश्व बाल चित्र प्रदर्शनी" का उद्घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी में दुनिया भर के बच्चों द्वारा बनाये गये ४०० ऐसे चित्र प्रदर्शित हुये हैं, जो पिछले वर्ष की चित्रकला प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुये हैं। यह प्रतियोगिता जर्मन जनवादी गणतंत्र की 'विश्व जन मैत्री लीग' और 'यूनेस्को-कार्य आयोग' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई थी। इस प्रतियोगिता में दुनिया के ४१ देशों के बच्चों ने २०,००० चित्र भेजे थे जिन में से उपर्युक्त ४०० चित्र-प्रदर्शनी के लिये चुने गये। यह प्रदर्शनी, बर्लिन के बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र के अन्य नगरों और दूसरे देशों में भी दिखाई जायेगी।

पश्चिमी जर्मनी के शरणार्थी

१६ जून से लेकर १८ जून तक, अर्थात् केवल तीन दिनों में, पश्चिमी जर्मनी से ११७ लोग भाग निकले और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। प. जर्मनी के इन शरणार्थियों में १५ परिवार भी शामिल है, और ये सभी शरणार्थी ज.ज.ग. में बस जाना चाहते हैं। पश्चिमी जर्मनी से भाग कर ज.ज.ग. में शरण लेने वाले लोगों की संख्या, हर हफ्ते और हर महीने बढ़ती जा रही है, जो हजारों तक पहुंच चुकी है।

लन्दन की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में ज. ज. ग. के मशीनी औजार

२५ जून से ६ जुलाई तक, ब्रिटेन की राजधानी लंदन में वहां के ओलम्पिया हाल में, मशीनी औजारों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी में, जर्मन जनवादी गणतंत्र भी अपने नवीनतम मशीनी औजार लेकर भाग ले रहा था। ज.ज.ग. के तकनीशियनों, इंजीनियरों, फिटरों आदि का ३० सदस्यों के एक दल ने इन औज़ारों का इस्तेमाल दिखाया दर्शकों को। ब्रिटेन की तीन सुप्रसिद्ध व्यापार फर्मे, ज.ज.ग. के मशीनी औजारों की बिक्री की एजेन्ट हैं।

पश्चिमी जर्मनी के कृषक प्रभावित

हाल ही में पश्चिमी जर्मनी के किसान... एक दल, जर्मन जनवादी गणतंत्र... कोत्तबुस नामक प्रान्त के दौरे पर आया... वहां उन्होंने, कृषि उत्पादन सहकारी... इन संघों में कृषकों को मिलने वाली... सुविधाओं, और सहकारी किसानों के... स्तरीय जीवन को देखकर वे बहुत प्र... हुये।

एक सहकारी फार्म में उन्होंने दे... फार्म के किसानों के पास ४५ लाख... (३७५,००० पौंड) की सम्पत्ति—अर्थात्... यन्त्र, खाद, बीज आदि है। इसके अलावा... फार्म में २० लाख मार्क (लगभग १७०... पौंड) की रकम का पशुधन भी था। इस... कारी खेत का ट्रैक्टर-चालक, सालाना... मार्क कमाता था और उसके पास एक... आरामदेह मकान के अलावा अपनी... भी थी। यह सब कुछ देखकर पश्चिमी ज... कृषक दल के एक किसान ने कहा : "प... में हमारा जीवन इतना सुरक्षित नहीं है।"

▲ ब...
(दायें)

भारत की महिला-नेतृी का...

हाल ही में, "भारतीय महिला... राष्ट्रीय फेडरेशन" की मंत्री, श्री... सरला शर्मा, जर्मन जनवादी गणतंत्र... दौरे पर आई थीं। दौरा समाप्त... के बाद, ज. ज. ग. की श्वेरिन... में उन्होंने एक वक्तव्य में बताया... जर्मन जनवादी गणतंत्र की नारियां... प्रयत्न दो जर्मन राज्यों की आपसी... भावना को बढ़ाते हैं, और समस्त विश्व... माताओं तथा नारियों के हितों के अनु... है। श्रीमती शर्मा ने आगे कहा : ... यह दृढ़ विश्वास लेकर स्वदेश लौट रही... कि ज. ज. ग. की सरकार और यहां... जनता विश्वशांति के जबरदस्त... हैं। जहां भी हम गये, हमने... विभिन्न राष्ट्रों में मैत्री को बढ़ावा दे... उत्कट भावना पाई।"......

श्रीमती सरला शर्मा, जून के... सप्ताह में आयोजित ज. ज. ग. के... सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये... आई थीं।

न...
मुद्रण-...
मशीन...

सचित्र समाचार

▲ बड़ौदा विश्वविद्यालय की ललित-कला संकाय के प्रोफेसर मेहता (दायें) बर्लिन में, विश्वप्रसिद्ध जर्मन नाटककार स्व० बर्तोल्त ब्रेख्त की पत्नी श्रीमती हेलेने वाइगल के साथ

▲ श्रीमती सरला शर्मा (चश्मा लगाये) बर्लिन में, ज.ज.ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, वाल्टर उलब्रिख्त के साथ। श्रीमती उलब्रिख्त बीच में खड़ी हैं (विवरण के लिये देखिये पृष्ठ २२)

★

नई दिल्ली के 'न्यू ऐज प्रिन्टिंग प्रेस' में ज.ज.ग. के एक मुद्रण-विशेषज्ञ, अपने देश की एक अत्याधुनिक छापाखाने की मशीन का काम दिखा रहे हैं। यह स्वयंचलित यंत्र एक साथ कई रंगों की छपाई करता है ▼

▲ ज.ज.ग. की यात्रा के बाद, श्री हर्षदेव मालवीय ने एक अत्यन्त रोचक पुस्तक लिखी है। नाम है "नया जर्मनी : नया इतिहास"। पिछले महीने नई दिल्ली के कानस्टिट्यूशन क्लब में एक विशेष समारोह में लेखक ने भारत में ज.ज.ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री बोत्तार को अपनी पुस्तक भेंट की

सूचना पत्रिका

25/8/64

जर्मन
जनवादी
जनतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

८ वर्ष १ अगस्त १९६४

वर्ष ९
अंक ८ | २० अगस्त, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : बाल - खिलाड़ी

अंतिम पृष्ठ : कारलोवी वारी के फिल्म-समारोह में सोवि[illegible] संघ की अभिनेत्री अनास्तासिया वेर्तिन्स्का[illegible] और ज. ज. ग. की अभिनेत्री रेनाते ब्लूमे[illegible] कर रही हैं

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लि[illegible] अनुमति अपेक्षित नहीं । प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे ।

जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य [illegible] नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हा[illegible] मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

हमें युद्ध नहीं शांति चाहिये

प्रथम महायुद्ध की ५० वीं और दूसरे महायुद्ध की २५ वीं वार्षिकी की भयावह स्मृति में

वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संसार ने दो दो संहारकारी विश्व-युद्ध देखे । प्रथम महायुद्ध आज से ५० वर्ष पहले अगस्त, सन् १६१४ में और दूसरा महायुद्ध आज से २५ वर्ष पहले सितम्बर, सन् १६३६ में आरंभ हुआ । ये दोनों विश्वयुद्ध, साम्राज्यवाद की—विशेषकर जर्मन साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद की उपज थे ।

उन अंधकारपूर्ण संहारकारी दिनों की ओर, यूरोप और विश्व के अनेकानेक नर नारियों का ध्यान जाना एक स्वाभाविक बात है । युद्ध के विकराल दानव ने, ५० और २५ वर्ष पूर्व (अगस्त और सितम्बर मास में) उनके घरों को उजाड़ दिया, माताओं की हरी भरी गोदें सूनी कर दीं, दुल्हनों तथा सुहागनों के माथे के सिन्दूर चाट लिये और वृद्धों के जीवन के सहारे छीन लिये ।.... और जब इस युद्ध-दानव का ताण्डव समाप्त हुआ तो शेष बचे थे धूधू जलते हुये शहर, गांव, कारखाने, पुस्तकालय तथा शिक्षा संस्थान, असहाय अनाथ बच्चों और औरतों का करुण क्रन्दन, धरती और वायु में समायी हुई बमगोलों तथा बारूद की और सड़ी गली लाशों की दुर्गन्ध ! मानव द्वारा निर्मित शताब्दियों की सभ्यता और संस्कृति, क्षत विक्षत होकर तड़प रही थी ! .... समस्त योरुप में एक भी घर ऐसा नहीं बचा था जिसका कम से कम एक प्रिय जन युद्ध-राक्षस द्वारा लगाये गये उन दावानल में स्वाहा नहीं हुआ था । निरीह, निर्दोष जनता ने दो महायुद्धों में कितने अत्याचार सहे, शब्द उनको व्यक्त करने में असमर्थ हैं ।

प्रथम महा-युद्ध

५० वर्ष पहले, अगस्त १६१४ में, सारायेवो नामक स्थान पर बन्दूकों ने आग उगलनी शुरू की, और इसके तुरन्त बाद जर्मन सैनिकवाद तथा साम्राज्यवाद की निरंकुश सेनायें, यूरोप के कई देशों के शान्त गांवों और शहरों में आग बरसाती घुस गयीं । ज़ाहिरी तौर पर तो प्रथम महा-युद्ध का कारण था बलकान संकट, जिस को जर्मन सैनिकवाद के प्रतीक बिस्मार्क ने "बासफोरस का रोगी" क नाम से पुकारा था । लेकिन वास्तव में इस युद्ध का मुख्य कारण था उस समय के दो साम्राज्यवादी शक्ति-गुटों के निहित स्वार्थों का टकराव । इन दो शक्ति-गुटों में से एक था जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली, और दूसरा गुट था ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा अमरीका ।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो प्रथम महा-युद्ध का आरंभ करने के लिये जर्मन सैनिकवाद तथा साम्राज्यवाद ही ज़िम्मेदार ठहरता है । जर्मन राइख (संसद) के कर्त्ता-धर्त्ता सम्राट कैज़र की नीति "आग और तलवार" पर आधारित थी । उसने आक्रमण और दुस्साहसी युद्ध की बड़ी-बड़ी तथा महत्वाकांक्षी योजनायें तैयार की थीं, और इनके आधार पर वह विश्व-विजय के सपने भी देखने लगा था ।.... "पूर्व में पांव टिकाने की जगह" और "सूर्य के नीचे जर्मनी का उज्जवल स्थान" जैसे नारों को बलन्द करके, वास्तव में जर्मन साम्राज्यवादी यूरोप पर अधिकार करना चाहते थे, और एशिया तथा अफ्रीका के उपनिवेशों की लूट में, अपने प्रतिद्वन्दी साम्राज्यवादियों से कुछ हिस्सा मांग रहे थे ।

अपने इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये कैज़र और उस के चेले चांटे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल में जकड़े हुये अफ्रीकी, अरबी, भारतीय तथा अन्य उपनिवेशों की जनता के प्रति दिखावे की हमदर्दी जताते थे । लेकिन वास्तव में वे इन उपनिवेशों की स्वाधीनता के लिये संघर्षरत जनता को ब्रिटेन के खिलाफ भड़का कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते थे । हाल ही में 'जर्मन राष्ट्रीय अभिलेखागार' में कुछ ऐसे अहम दस्तावेज़ पाये गये हैं जो कैज़र तथा जर्मन साम्राज्यवादियों के शोषण और दमन के उक्त उद्देश्यों को एकदम नंगा करते हैं । चतुर वाक्जाल द्वारा हमदर्दी जताने के पीछे उनका असली उद्देश्य था ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाड़ कर उसके स्थान पर स्वयं विराजमान होना और अफ्रो-एशियाई उपनिवेशों को लूटना, उनका शोषण करना । किन्तु जर्मन साम्राज्यवाद और सैनिकवाद के ये उद्देश्य, सपने बनकर ही रह गये जब सन् १६१८ में जर्मनी को पराजित हो कर आत्मसमर्पण करना पड़ा ।

यह ध्वंस फिर न होने पाये....

इस तरह के निर्माण को विश्व व्यापी बनाने के लिये हमें **शांति चाहिये युद्ध नहीं**

दूसरा महायुद्ध

प्रथम महा-युद्ध के गहरे घाव अभी भरने ही लगे थे कि २५ साल बाद, सितम्बर १९३९ में दूसरा महा-युद्ध छिड़ा। एक बार पराजित जर्मन सैनिकवाद को शेष साम्राज्यवादियों ने शस्त्रास्त्र और धन-धान्य की संजीवनी पिला पिला कर फिर से जिला दिया था। इस बीच जर्मनी को, हिटलर और उसके नर-दानव दल, नाज़ी पार्टी ने हथिया लिया था, और सारे यूरोप पर फासिज़्म की काली छाया मंडरा रही थी। हिटलर और फासिस्तवाद की छत्रछाया में जर्मन साम्राज्यवाद तथा आक्रामक सैनिकवाद का विकाल दानव एक बार फिर अपना ताण्डव नाचने की पूरी तैयारी कर रहा था। इस तैयारी में, और उसको खुश करने के लिये, अन्य साम्राज्यवादी भाई-बन्धु उसकी हर तरह की सहायता कर रहे थे। उनकी आशा थी, बल्कि विश्वास था कि वे इस बार इस दानव को दुनिया के प्रथम समाजवादी राज्य सोवियत संघ को नष्ट करने के लिये इस्तेमाल करेंगे। . . . . लेकिन हिटलर कुछ और ही सोच रहा था। सम्राट कैज़र की तरह वह भी, विश्व विजय का संकलप कर चुका था। वह इस लूट में उन साम्राज्यवादी शक्तियों को साझीदार नहीं बनाना चाहता था जिन्होंने जर्मनी को एक बार पराजित करके अपमानजनक संधि पर दस्तखत करा लिये थे। हिटलर पहले उनसे ही निपटना चाहता था, और उनको जीत कर वह सोवियत संघ को खत्म करने की योजना बना चुका था। इसी योजना को अमल में लाने के लिए, शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हिटलर की फासिस्त सेनाओं ने सितम्बर १९३९ में पौलैण्ड को रौंद डाला। इस प्रकार भंयकर तथा सर्वनाशी दूसरे महायुद्ध का आरंभ हुआ।

इसके बाद हिटलर की क्रूर सेनाओं ने आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया तथा अन्य यूरोपीय देशों को पादाक्रांत किया। दो वर्षों के अन्दर लगभग सारा यूरोप, हिटलर की पाशिवक सेना और क्रूरतम शोषण के नीचे दब कर त्राहि-त्राहि कर रहा था। हिटलर की आक्रामक सेना और फासिस्त दरिन्दों ने फ्रांस, बेलजियम, नेदरलैण्ड, डेनमार्क, पोलैण्ड, सोवियत संघ, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, जर्मनी आदि देशों के फासिस्तवाद-विरोधी हज़ारों, लाखों योद्धाओं और देश-भक्तों को यातना-शिविरों में डालकर घुट-घुट कर मौत के घाट उतारा, अथवा गोली-मार दस्तों द्वारा कतल किया। दूसरे महायुद्ध के पहले और उसके दौरान बर्बर फासिस्तों द्वारा किये गये क्रूरतम अत्याचारों की कहानी विश्व इतिहास में एक काला अध्याय बनकर जुड़ गई है।

भारत पर फासिस्तों की गिद्ध दृष्टि: यूरोप को पादाक्रान्त कर और उसको अपने खूनी पंजे में जकड़ कर, जर्मन फासिस्त, विश्व पर आधिपत्य जमाने की अपनी युद्ध योजनाओं को अमल में लाने के लिए बढ़े। हमारे भारतीय पाठकों के लिए यह एक दिलचस्प तथ्य होगा कि सोवियत संघ पर कब्ज़ा करने के बाद जर्मन फासिस्त सेनाओं का ध्येय था भारत को अधिकृत करना। इस संबंध में यह योजना थी कि उत्तरी अफ्रीका में जर्मन जनरल रोमेल की सेना और सोवियत संघ में दक्षिणी मोर्चे पर लड़ने वाली जर्मन सेनायें (जो उस समय काकेशिया तक बढ़ आई थीं) ईरान से होते हुये भारत पर धावा बोल देतीं, और वहां अपने मित्र जापान की आक्रामक सेनाओं से मिल जातीं। लेकिन यह भारत का बहुत बड़ा सौभाग्य था कि उसको महात्मा गांधी और पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे दूरदर्शी और परिपक्व नेता मिले थे। इनकी राजनीतिक सूझ-बूझ और चिन्तन दृष्टि ने शुरू से ही फासिस्तवाद के भयानक रूप को ठीक से देखा और समझ लिया था। इसलिए उन्होंने विश्वव्यापी फासिस्त-विरोधी आन्दोलन का पूर्ण रूप से समर्थन किया।....

प्रथम महायुद्ध में एक करोड़ से अधिक, और दूसरे महायुद्ध में पांच करोड़ से भी अधिक स्त्री-पुरुष और बच्चे युद्ध-दानव का

(शेष १७ पृष्ठ पर)

बूखेनवाल्द

जब फासिस्तवाद की काली परछाईं जर्मनी पर पड़ी, नाजियों ने हार्त्सबर्ग के जंगलों में 'बूखेनवाल्द बन्दी शिविर' निर्मित किया। इतिहास में इस शिविर को भयानकतम मृत्यु जाल के नाम से अंकित किया जाएगा जिसमें हमारे हजारों महान साहसी देश-भक्तों, लाखों लोगों, जिन्हें योरुप के विभिन्न देशों से बे-घर करके निकाल लिया गया, उन पर अत्याचार हुआ, उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया, गैस भट्टियों में झोंक कर जला दिया गया और जंगली कुत्तों द्वारा उनके चीथड़े उड़वा दिए गए।

"प्रत्येक को उसका भाग" यह उक्ति बूखेनवाल्द शिविर के प्रवेश-द्वार पर अंकित थी। वियाना के संगीतकार लियोपोल्डी ने भी यह उक्ति उस समय देखी जब उन्हें सन् १९३८ में साथी पीड़ितों सहित इसी द्वार के रास्ते परेड के मैदान में ले जाया जा रहा था। उन्होंने वह तख्ता भी देखा जिसके साथ वन्दियों को बांध कर मारा पीटा जाता था।

"प्रत्येक को उसका भाग" का अर्थ था भूख, पत्थर की खदानों में कड़ा श्रम, निर्दय यातना तथा मृत्यु।

लियोपोल्डी एक यहूदी थे। मौत उनके सरपर खड़ी थी। परन्तु राबर्ट जीवर्ट वन्दी नं. ५०४४ ने उनको मौत के मुंह से निकाल लिया। राबर्ट जीवर्ट एक साम्य-वादी तथा महान योद्धा थे। वे उन लोगों में से एक थे जिन्होंने साथियों की जान बचाने के लिए हजारों बार अपनी जान की बाजी लगा दी। जीवर्ट उन्हें थवाइयों की टोली में चोरी से भगा लाए और उन्हें कन्नी का प्रयोग सिखलाया।

हमारी तथा योरुप में रहने वाली जनता नाजी बन्दी शिविरों में अत्याचार से पीड़ित थी। फिर भी जीवन के प्रति विश्वास तथा परित्राण के प्रति अपनी आशाओं का परित्याग नहीं किया। और जो गीत उन्होंने गाए, वे उनके साहस तथा भविष्य में उनके विश्वास के प्रतीक थे। परन्तु बुखेनवाल्द में अभी तक कोई गीत नहीं गाया गया था—

उस वर्ष शिविर अधिकारी रोयदेल ने बन्दियों को एक शिविर-गीत तैयार करने का आदेश दिया। इसकी तैयारी के लिए उसने केवल दो दिन का समय दिया।

इन्हीं दो दिनों में लेहार की स्वतन्त्रता कथाएं लिखने वाले व्यक्ति ने बुखेनवाल्द गीत को शब्द-रूप दिया और लियोपोल्डी ने उसे संगीत-बद्ध किया। इसके साथ ही बन्दियों ने अभ्यास आरम्भ कर दिया।

अत्याचारी, खूनी रोयडल ने कुछ बन्दियों को गीत प्रस्तुत करने का आदेश दिया।

और करंट-सटित तारों की बाड़ के पीछे परेड के मैदान से उनकी संघृत परन्तु शोक-ग्रस्त गीत-ध्वनि उभरने लगी :

ओ बूखेनवाल्द !
सदा रखूंगा याद तुम्हें
मेरा भाग्य खींच लाया तेरे पास मुझे :
तुम माप नहीं सकते
(मुक्ति के घेरे को) —
आभास नहीं हो सकता तुमको
मुक्त-जीवन कितना
उल्लास भरा हो सकता है !

रोयदेल ने गीत की धुन को त्रुटिपूर्ण बतलाया। "अरे मूर्खो, यह तो कूच के समय का गीत है," वह चिल्लाया और ऊपर नीचे हाथ हिलाकर अपनी इच्छित धुन समझाने लगा। यह बन्दियों तथा

व्यक्तित्व की झांकी

ओत्तो गोत्तशे

ओत्तो गोत्तशे का जन्म १९०४ ई० में आइजलेबेन में हुआ। वह एक खनिक के पुत्र थे। उनका पेशा नलसाजी था। चौदह वर्ष की आयु में ही वह समाज-वादी हो गए। अठारह वर्ष की आयु में उन्हें राजनीतिक सक्रियता के कारण जेल जाना पड़ा। २१ वर्ष की आयु में उन्हें दोबारा जेल हुई। १९२० से ३० के बीच उन्होंने वामपक्षी पत्रों के लिए कार्य किया तथा साम्यवादी पार्टी के लिए भी सक्रिय रहे। १९२७ में वह रूस की यात्रा पर गए। १९३३ में उन्हें नाजियों ने गिरफ्तार करके सोन्न-वर्ग बन्दी शिविर में भेज दिया। १९३४ में जब वह रिहा हुए तो गुप्त साम्यवादी कार्यों में जुट गए और अपनी यह सक्रियता पूर्ण नाजी-काल तक जारी रखी। १९४० में उन्होंने फासिस्ट विरोधी मध्य जर्मन श्रमिक दल के नियोजन में योग दिया। १९४८ से ले कर अब तक वह विभिन्न सरकारी पदों पर कार्य कर चुके हैं। १९६० में वह राज्य परिषद के सचिव बनाए गए। १९१८ से लेकर जर्मन जनवादी गणतंत्र के भूमि सुधार तक के क्रांति-काल पर उन्होंने चार उपन्यास लिखे हैं।

ओत्तो गोत्तशे ने ३ जुलाई को अपनी वर्षगांठ मनाई। इस अवसर पर राज्य परिषद्, मंत्री परिषद, जर्मन लोक सभा, नेशनल फ्रंट परिषद तथा जर्मन कला-अकादमी की ओर से उन्हें शुभ कामनाओं के अनेक संदेश प्राप्त हुए। ओत्तो गोत्तशे को 'श्रमनायक' की उपाधि द्वारा सत्कारित किया गया तथा समाजवाद के प्रति उनकी विशिष्ट सेवाओं तथा उनके साहित्यक कार्यों के लिए उन्हें "योहन्नेस आर. बेखर" पदक प्रदान किया गया। नीचे हम उनकी एक साहित्यक कृति से "बुखेन वाल्ड" नामक एक कहानी का हिंदी रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं।

संगीतकार की आशाओं तथा साधना का जो उन्होंने इस गीत को अर्पित की थी, परिहास मात्र था।

भला उसे कौन बतलाता कि उस गीत का संगीत एक यहूदी संगीतकार ने तैयार किया है। क्योंकि इसका अर्थ होता लियोपोल्डी की निश्चित मृत्यु तथा ज़ीवर्ट और उसके साथियों के लिए निर्दय अत्याचार। इस प्रकार बुखेनवाल्द गीत का जन्म हुआ।

विदेशी सहायता प्राप्त करके सुप्रसिद्ध संगीतकार लियोपोल्डी महायुद्ध के आरम्भ होने से पहले ही बुखेनवाल्द से बच निकले। उन्हें सरहद के पार छोड़ दिया गया। परन्तु कई हज़ार लोगों को बन्दी शिविर की भयानक यातनाएं भुगतनी पड़ीं।

जो जीवित रहे उन्हें लियोपोल्डी का कोई पता न चला और यह विश्वास किया जाने लगा कि वह मर चुके हैं।

राबर्ट जीवर्ट, जिनकी साहसिक सहायता ने अनेक जानें बचाईं, १९४८ में वियाना यात्रा पर गए। यात्रा का उद्देश्य आस्ट्रिया में नियोजित भूतपूर्व शिविर बन्दियों की एक सभा में सम्मिलित होना था। इस यात्रा में उनके साथ जर्मन प्रतिरोध योद्धाओं की एक टोली थी जिसमें रोज़ा टेलमन्न भी सम्मिलित थी।

फ्रांस, पोलैंड, रूस, हालैंड, चैकोस्लोवाकिया तथा जर्मनी के अनुभवी शिविर बन्दियों का यह हर्षित पुर्नमिलन था। एक शाम ज़ीवर्ट के आस्ट्रियाई मित्र कार्ल दिरमायर और मैक्सल उमश्वाइग उसे एक नाइट-क्लब में ले गए। यह एक अत्यन्त सुन्दर स्थान था। उत्तम वस्त्र पहिने पुरुष तथा सायं वस्त्रों से सुशोभित युवतियों की एक भीड़ सी लगी थी। कमरे के एक कोने में मंच पर से धीमी सुरीली संगीत लहरें उभर रही थीं। यह वातावरण देख कर ज़ीवर्ट को बेचैनी सी होने लगी। अनेक लोगों की आंखों देखी मृत्यु तथा बन्दीग्रह के जीवन ने उसे कठोर बना दिया था। और संभवतः उसकी आत्मा भी अन्दर ही अन्दर मर चुकी थी। उसका दम घुटने लगा और उसने वहां से चला जाना चाहा।

परन्तु उसी समय एक सन्नाटा छा गया। मंच पर से उठने वाली संगीत-ध्वनि डूबने लगी। और इन्हीं डूबते स्वरों में से अचानक उभरा बुखेनवाल्द गीत—धीमे स्वरों से उठता उभरता अन्ततः ढोल-ढप्पे की आवाजों में खो गया।

इस अकस्मात परिवर्तन से सभी लोग चकित हो उठे। वे समझ गए थे कि इसका कारण कोई असाधारण बात है।

संगीत-निर्देशक तेजी से मंच के अगले भाग पर आकर खड़ा हो गया—

"भाईयो और बहनो, आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि आपने अभी-अभी बुखेनवाल्द शिविर-गीत की धुन सुनी है। मुझे क्षमा कीजिए, मुझसे यह धुन बजाए बगैर रहा न गया क्योंकि वह व्यक्ति जिसने मेरी जान बचाई थी, अभी-अभी इस हाल में दाखिल हुआ है"।

लियोपोल्डी मंच से नीचे की ओर झुके और कूद कर भागते हुए जीवर्ट के पास पहुंच गए। उन्होंने जीवर्ट को बाहों के घेरे में लपेटा और उसे चूमने लगे।

कमरे में एक फुसफुसाहट सी हुई और फिर जोर-जोर से तालियां बजने लगीं और शोर मच गया। ज़ीवर्ट को मित्र तथा अन्यजन घेर कर खड़े हो गए।

और वह व्यक्ति जो अपने अनेक मित्रों को दम तोड़ते देखने के बाद अत्यन्त कठोर बन चुका था—उसकी आंखों से आंसू उमड़ पड़े।

ज. ज. ग. की सर्वतोमुखी प्रगति

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने १९६४ के पहले छः महीनों में एक बार फिर से राष्ट्रीय आर्थिक क्षेत्र में बड़ी प्रगति प्राप्त की है। इस वृद्धि को दिखाने के लिए हम उस ब्योरे की सहायता लेंगे जो योजना के पहले ६ महीनों के पूरा हो जाने पर पेश किया गया है।

राष्ट्र के कुल उत्पादन में ८ प्रति[illegible] वृद्धि हुई। श्रम द्वारा वस्तुओं के उत्पादन [illegible] ७ प्रतिशत तथा राष्ट्रीय आय में ७ प्रति[illegible] वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त व्यय के का[illegible] पर १३ प्रतिशत तथा मजदूरी में २.४ प्रति[illegible] वृद्धि हुई है।

राज्य द्वारा चलाये जाने वाले कारखा[illegible] में उत्पादन की वृद्धि की दर इस प्रकार [illegible]

रसायन	९ प्रति[illegible]
इलेक्ट्रानिकी उपकरण	९ प्रति[illegible]
इन में से निर्माण की चीजें तथा वैकम यंत्र हैं	२३ प्रति[illegible]
सूक्ष्म औजार तथा अन्य प्रकाशीय यंत्र	११ प्रति[illegible]
इस्पात	९ प्रति[illegible]
ऊर्जा	१३ प्रति[illegible]

प्रगति के इस क्षेत्र में केवल उत्पादन [illegible] भाग में २३ प्रतिशत वृद्धि हुई है। [illegible] मूलरूप से वस्तुओं की कीमत कम हो सक[illegible] है। इस बारे में समुद्री जहाज बनाने [illegible] कारखानों ने जहाजों के निर्माण में [illegible] प्रतिशत लागत कम कर के एक उदारण सा[illegible] रखा है।

१९६४ के पहले ६ महीनों में २४०[illegible] नये फ्लैट बनाये गये जिन में ८८ प्रति[illegible] फ्लैट उस सामग्री से बनाये गये जो पहले [illegible] कारखानों में तैयार की गई थी। जून के [illegible] तक ५४००० फ्लैट बनाये गये थे। [illegible] उत्पादन की वृद्धि बहुत ही उत्साहजनक [illegible]

२८ प्रतिशत अधिक पशु थे
४७.२ प्रतिशत अधिक मुर्गे मुर्गियां
२१.७७ प्रतिशत अधिक अण्डे
और ४.६ प्रतिशत अधिक दूध था

ज. ज. ग. से बाहर भेजी जाने [illegible] वस्तुओं में १०.३ प्रतिशत वृद्धि हुई। पश्चि[illegible] जर्मनी को भेजी जाने वाली वस्तुओं में [illegible] प्रतिशत की वृद्धि हुई। जनता की [illegible] ५ प्रतिशत बढ़ गई तथा परचून में [illegible] जाने वाली वस्तुओं की बिकरी २.४ प्रति[illegible] बढ़ गई है। कारखानों में बनाई जाने [illegible] ऐसी वस्तुओं की तादाद और भी बढ़ गई [illegible]

(शेष पृष्ठ [illegible]

एर्नस्त टेलमन्न

आज से बीस वर्ष पहले १८ अगस्त, १९४४ को नाजियों ने एर्नस्त टेलमन्ने की हत्या बूखेनवाल्द के फासिस्त बन्दी शिविर में की ।

एर्नस्त टेलमन्न गरीब मां बाप का बेटा था, अतः उसने जीवन की कठोरता को बालपन में ही अनुभव किया था । उनका जन्म १६ अप्रैल, १८८६ को हुआ और १७ वर्ष की आयु में वह श्रमिक आन्दोलन में शामिल हुये । वह जीवन भर श्रमिकों के हित के लिए लड़ते रहे । उन्होंने १९२८ तथा १९२३ की क्रांतिमें श्रमिकों की ओर से हम्बर्ग में लड़ाई लड़ी । १९२३ की लड़ाई में उन्होंने ख्याति प्राप्त की और जर्मनी के क्रांतिकारी श्रमिकों ने उन्हें अच्छी तरह जान लिया । १९२५ में वह जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष चुने गये । एर्नस्त टेलमन्न के नेतृत्व में जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी का विस्तार फैलता गया और पार्टी की शक्ति ट्रेड यूनियन, युवक तथा नारी संगठनों में मजबूत हो गई । इस प्रकार एक प्रगतिवादी सांस्कृतिक आंदोलन की नींव पड़ी । एर्नस्त टेलमन्न ने अपनी पूरी शक्ति के साथ उभरते हुये फासिस्तवाद का मुकाबला किया । उन्होंने श्रमिकों तथा शान्ति-कामी जनता को फासिस्तवादी खतरे तथा युद्ध के खिलाफ संगठित होने के लिए ललकारा । फासिस्त दरिन्दे उसको अपना सबसे बड़ा शत्रु मानते थे, क्योंकि टेलमन्न ने जर्मन जनता के सामने उनका असली रूप नंगा करके रखा था । फिस्ताई सरकार बनने के कुछ ही सप्ताह बाद एर्नस्त टेलमन्न को कारावास में बन्द किया गया—जहां से उन्होंने फिर कभी स्वतंत्रता नहीं देखी । ११ वर्ष से भी अधिक समय तक उन्हें भिन्न-भिन्न जेलों में अकेला रखा गया ।ये जेल ऐसे थे जो बंदियों पर जुल्म तोड़ने के लिए कुख्यात थे । १८ अगस्त, १९४४ को नाजियों ने एर्नस्त टेलमन्न को बूखेनवाल्द बन्दी शिविर में डाल दिया— और उस रात उस कैम्प में जो गोलियां चलाई गयीं उनको बूखेनवाल्द के कैदी कभी भूल नहीं सकते—क्योंकि उन गोलियों ने ही उनके प्रिय नेता की हत्या की थी ।

जितने वर्ष फासिस्तों की सरकार जर्मनी में बनी रही, एर्नस्त टेलमन्न का नाम फासिस्तों के खिलाफ लड़ने वाली जर्मन जनता के लिए एक चमकता प्रतीक रहा । इनमें वे लोग भी शामिल थे जो एर्नस्त टेलमन्न की ही तरह जेलों में बन्द, कठोरताओं को सह रहे थे, और वे भी जो जेल से बाहर फासिस्तों के खिलाफ बराबर लड़ रहे थे ।

एर्नस्त टेलमन्न जिन आदर्शों के लिए जीवनभर लड़ते रहे आज जर्मन जनवादी गणतंत्र में वे साकार हो उठे हैं । फासिस्तों को उखाड़ फेंकने तथा फौजी सरकार को समाप्त करने, जातिभेद मिटाने, तथा श्रमिकों का दमन करने वालों की शक्ति छीनने और शांति के पथ को अपनाकर समाजवाद का निर्माण करने से जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है । ऐसे देशभक्त के लिए यह श्रद्धांजलि महान भी है और उचित भी !

सन् १९३२ में, बर्लिन की एक मई दिवस सभा में भाषण देते हुये स्व. टेलमन्न

(पृष्ठ ६ का शेष)

सर्वतोमुखी प्रगति की....

जिन चीजों का उपयोग घर गृहस्थी के कामों में किया जाता है, नीचे इन में से कुछ के वृद्धि आंकड़े दिये जाते हैं :

बिजली द्वारा कपड़े धोने के यंत्र	१२.६	प्रतिशत
रिफ्रीजरेटर	३५.७	,,
टेलिविजन सेट	३.५	,,
मोटर गाड़ियां	१५.८	,,
मिरर रिफ्लेक्स कैमरे	१८.५	,,
नकली रेशम तथा रेशमी तार	११.१	,,
ऊन जैसा कपड़ा (मालिमो)	८२.८	,,
ऊन का वर्स्टिड तथा सेमि वर्स्टिड तार	२.६	,,
रिहायशी सामान	६.७	,,
खिलौने	८.७	,,
डेडिरोन रेशम के अन्तर्वस्त्र	३१.३	,,

समृद्ध न्यू-हालैण्ड

तीन शताब्दियों से भी अधिक समय पहले 'डच लोग' हावलैण्ड में आ बसे। यह इलाका जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के उत्तर-पश्चिम में पड़ता है। अपनी धर्मनिष्ठा के कारण, 'स्पेन' के सम्राट के अत्याचारों से बचने के लिये ये लोग भी दूसरे ऐसे ही लोगों की तरह नयी जगह की तलाश में निकले जहां ये शांति से बस सकें। जर्मनी के कई प्रभुसत्तात्मक प्रदेश इन लोगों को बिना मूल्य के, धार्मिक स्वतंत्रता तथा बसने के लिए जहग दे तो सकते थे, पर इस के अतिरिक्त और कुछ देने के लिये वे तैयार नहीं थे। समस्त जर्मन भूमि में ये मण्डलीय राज्य टैक्स देने वाले तथा सस्ते खेतिहरों की खोज में थे, क्योंकि जर्मनी तीस वर्षीय युद्ध और महामारी से उजड़ गया था। इस प्रकार डच लोगों को यहां एक ऐसे क्षेत्र में बसने की अनुमति दी गई जो दलदल होने के अतिरिक्त खारा भी था। फैले हुए इस दलदल से हटकर, इन लोगों ने ऊपर पहाड़ियों पर अपने झोंपड़े बनाए। उनका यह गांव १८ किलोमीटर तक फैल गया। उन्होंने अनथक श्रम से दलदल के पानी को निकाल कर सुखा दिया, और फलस्वरूप

न्यू-हालैण्ड का एक भाग

इस धरती की उपज बहुत अच्छी हुई। परन्तु उनके कठिन श्रम का यह फल सामन्तों ने उनसे छीन लिया और वे जिस सुखद जीवन के सपने देख रहे थे, वह ३५० वर्ष बाद ही साकार हो सका, अर्थात् उन के उत्तराधिकारियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी व्यवस्था में उस सपने का साक्षात्कार किया।

अब एक पक्की सड़क न्यू हालैण्ड गांव तक जाती है। कस्बे या दूर के रेलवे स्टेशन को जाने आने वाली बसें इस गांव से होकर गुज़रती है। क्लाउस बित्तेरलिख पहला व्यक्ति था जो विमान द्वारा न्यू-हालैण्ड आया। वह 'इन्टर फ्लूग' नामक हवाई परिवहन सेवा का विमान चालक है। यहां के खेतों पर विमान द्वारा खाद छिड़कवाने के लिए गांव में उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। हमने भी इस यात्रा में उसका साथ दिया।—"आधुनिक ढंग की खाद डालने की मशीनें जो काम दस घंटों में करती हैं, उससे अच्छा काम विमान द्वारा केवल एक घंटे में हो सकता है", विमान चालक ने हमसे कहा।

हावलैण्ड अपने फैले हुए नदी नालों के समेत, इस समय, ठीक हमारे विमान के नीचे है। फैले हुए खेत साफ देखे जा सकते हैं। और वह रहा न्यू-हालैण्ड अपने नये आकार में। पेड़ों से घिरा हुआ वह ऐसा लगता है जैसे एक मोती सोने की चौखट में सजाया गया हो। सड़कों के दोनों ओर छोटे-छोटे और बड़े-बड़े पंक्तिबद्ध मकान खड़े हैं। हमारा विमान एक शाद्वल स्थली पर उतरता है। सफेद पोटाश खाद से भरी हुई लारियां इस "उड़ते किसान" के लिए तैयार हैं। हमारा विमान चालक दूर-दूर तक इसी नाम से मशहूर है। ग्राम परिषद का सदस्य श्री हरवर्ट बेरेण्ड इन शब्दों से हमारा स्वागत करता है: "क्षमा करियेगा: हमारे कृषि उत्पादन सहकारी संघ का अध्यक्ष आजकल एक डिप्लोमा के लिये हुमबोल्ट विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठने गया है। . . . ."

हमारे पांव के नीचे अब कोई दलदल नहीं अपितु ठोस धरती थी। हमने देखा कि गांव में बहुत ही ऊंची-ऊंची इमारतें हैं। सहकारी खेतों के लिये विशेष महत्व रखने वाले अस्तबल उपयुक्त स्थानों पर बनाये गये हैं। खाद्य पदार्थों तथा अनाज के भण्डार-भवन आकाश से बातें करते हुए नज़र आ रहे थे। इसके अतिरिक्त, कृषि यन्त्र पार्कों के ऊपर बहुत ही लम्बे-लम्बे छप्पर लगाये गये हैं। इन पार्कों में ही कृषि यंत्रों की मरम्मत भी की जाती है।

"आप पुराने न्यू-हालैण्ड के इतिहास को तो जानते ही होंगे, लेकिन क्या आपने यहां की नवीनतम प्रगति के बारे में भी कुछ सुना है?" हमारे साथी हरवर्ट बेरेन्ड ने हमसे पूछा। श्री बेरेन्ड ५६ वर्ष के हैं। मजबूत हाथ पांव वाले इस व्यक्ति की आंखों में एक मुस्कान सी झांकती है। बहुत व्यस्त व्यक्तियों की तरह, जिनके पास बहुत कम समय होता है, परन्तु अपने गांव की प्रगति के बारे में हर तरह की जानकारी भी देना चाहते हैं। ऐसा करते हुए वह अपने आपको, अपने किये हुए बहुत अच्छे काम को भूल सा जाते हैं। बातचीत करते समय जो बात उन्हें सबसे अधिक महत्वपूर्ण लगती है, वह है उनका गांव और वहां के लोग।

"मेरे जीवन में कोई खास बात नहीं है। मेरा वास्तविक जीवन तब से आरम्भ हुआ जबसे मैं सहकारी-खेत में सम्मिलित हुआ," मुस्कराते हुये वह बोले, "अब तक मेरा काम मानो मेरे अर्थपूर्ण जीवन की तैयारी थी।"

तैयारी —हां यह तब भी हो रही थी जब श्री बेरेण्ड एक बड़े ज़मींदार के यहां

पर खेतिहर बनकर काम करते थे और एक मैले कमरे में रहते थे। यह तैयारी तब भी जारी थी जब उसने अन्तिम बार हिटलर की सेना की वर्दी पहनी और एक युद्ध-बन्दी बन गये। और यह तैयारी तब भी जारी थी जब अन्य हजारों किसानों की तरह 'नये किसान' के रूप में उन को भी ६ हेक्टर जमीन दी गयी, सन् १९४५ के "जनवादी भूमि सुधार" के अन्तर्गत।

कुछ और नये किसानों के साथ मिलकर उन्होंने सन् १९५२ में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम कृषि उत्पादक सहकारी संघों में से एक की नींव डाली। इन किसानों ने अपने खेतों को मिलाकर एक कर दिया, पशुओं को एक ही अस्तबल में रखा और सारे काम को आपस में बांट लिया। पहले पहले इस सहयोगी प्रयास में कुछ अड़चनें आयीं। किसानों के घर खेतों से काफी दूर थे। इसलिए इन सहकारी किसानों ने एक नये गांव को बसाने का निश्चय किया। एक बड़ी योजना तैयार की गई। अन्य किसानों को उसके पूरा होने में सन्देह था। (जो अब भी अलग-अलग खेती कर रहे थे)। परन्तु जब पहला मकान बन कर तैयार हुआ, तो और भी बहुत से किसान इस सामूहिक प्रयास में सम्मिलित हुए। ज्यों-ज्यों काम आगे बढ़ता गया किसानों की संख्या भी बढ़ती गई। जो किसान पहले अलग रह कर काम करते थे वह सभी इसमें सम्मिलित हो गये। यहां तक कि १९५६ में, अन्तिम किसान भी इस तथ्य को जान गया कि मिलकर काम करना आसान भी होता है और लाभदायक भी।

आज इस सहकारी खेत के सदस्यों की संख्या २५० तक पहुंच गई है और ये २५०० हेक्टर धरती पर खेती करते हैं। इनके पास २००० पशु, १८०० सुअर और १५०० मुर्गे-मुर्गियां हैं। घोड़ों की तादाद कुछ कम है, इन की संख्या केवल ३० है। इनके बदले ४३ ट्रैक्टर, २कैटर-पिलर ट्रैक्टर, ७ फसल काटने के यंत्र, ४ फसल बटोरने के यंत्र, ७१ ट्रेलर वाली ६ लारियां, ५ आलू बोने और निकालने वाले यंत्र तथा १७० दूसरे कृषि यंत्र लाये गये।

हम गांव के बारे में कुछ और जानना चाहते थे। हम ग्राम-परिषद और सहकारी संघ के प्रबंध-बोर्ड के एक दूसरे के साथ सहयोग के बारे में जानना चाहते थे।

"सहकारी खेतों और ग्राम शासन को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता," श्री हरबर्ट बेरेण्ड ने कहा—"ये एक दूसरे के पूरक हैं। हमारे सहकारी खेत की सफलता के बिना इतनी शीघ्रतासे नये गांव का निर्माण करना असम्भव था। हमारे इस संघ की सम्पत्ति लाखों मार्क की मूल्य तक पहुंच गयी है। कृषि उत्पादन सहकारी संघ के सभी योग्य किसान, ग्राम सभा के भी सदस्य हैं। ये किसान सभा में उन मांगों का समर्थन करते हैं जिनकी मांग चुनाव में जनता ने की हो। वे इस बात का प्रयत्न करते हैं कि जनता की हर मांग को पूरा किया जा सके।"...अब सुनिये ग्राम-सभा के सदस्य और गांव के निर्माण-दल के फोरमैन श्री हाइंज़ बोरखेंटकी बातें :

"अब तक, ६० पुराने ढंग के रिहायशी मकान, और आधुनिक ढंग के मकानों वाले ६० ब्लाक बनाये गये हैं। ब्लाकों में काम आने वाली सामग्री पहले से ही, कम कीमत पर बनवा के रखी गई थी। ये मकान हमारे सहकारी संघ की सम्पत्ति है,"—श्री हाइंज़ गर्व से बोले। अब तक एक सौ (१००) परिवारों को नये फ्लैट दिए गये हैं। इनमें अधिकतर संख्या पुराने डच लोगों के जवान वंशजों की है। इन युवकों ने नया गांव बसाने के लिए अपने माता-पिता के घर त्याग दिये थे। नये गांव की जनसंख्या ७८० है, और इसमें २८० बच्चे हैं। इन बच्चों को पुर्खों के मटमैले, धुंएंदार मकान अब बड़े रोमान्टिक लगते हैं। दो तथा चार कमरों वाले नये फ्लैट हवादार और खुले हैं। सुसज्जित रसोई घर, गर्म पानी वाले गुसल खाने, छोटे-छोटे बगीचे तथा 'शड' हर एक फ्लैट के साथ शामिल है।

यहाँ मेरा सुन्दर घर बसेगा....

इस गांव के निर्माण करने की योजना में जिन बातों का उल्लेख हुआ है, अभी वे सभी साकार नहीं हो पायी हैं। स्त्रियां एक लाण्डरी की मांग कर रही हैं, जिसमें उन में से कई एक को काम मिलेगा। अभी इस धुलाई-घर का निर्माण नहीं हो पाया है। उपभोक्ता सहकारी संघ के आधुनिक ढंग के डिपार्टमेंट स्टोर की नींव हाल में ही डाली गई है। आजकल इस स्टोर से आरजी तौर पर काम चलाया जाता है। नये स्कूल का भवन आज से ६ माह पूर्व बनकर तैयार हो गया है, जहां श्रमिक माताओं के बच्चों की देख-रेख की जाती है और उन्हें बिना किसी दाम के खाना भी दिया जाता है। मकानों को गर्म रखने के नये यंत्र से स्कूल तथा ब्लाकों के फ्लैटों को गर्म रखा, जाता है। इस यंत्र में किंडरगार्टन, नर्सरी गांव क्लब, रोगियों के क्लीनिक को गर्म रखने के लिए पर्याप्त शक्ति है। १९७० में जब सारा निर्माण कार्य पूरा होगा, तब तक यह सुविधायें केवल प्रादेशिक रूप से मिल सकती हैं। क्लब के लिए जो मकान बनेगा उसे शेष सभी मकानों से प्रमुखता प्राप्त होगी। इसका निर्माण इस वर्ष आरम्भ होगा। गांव के बीच में स्थापित इस भवन

(शेष पृष्ठ ११ पर)

ज. ज. ग. की नारियां

खुशहाल जीवन की निर्मात्री

श्रीमती सरला शर्मा

वह सुन्दर सुरीला नारा---"हमारे लोकतंत्र को समस्त नारियों की आवश्यकता है । समस्त नारियों को लोकतंत्र की आवश्यकता है " आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है । यह वह नारा है जिसने २५ से २७ जून तक ज.ज.ग. में हुए नारी सम्मेलन की पृष्ठ भूमि तैयार की ।

यह एक विशाल सम्मेलन था जिसमें सभी विचारधाराओं की नारियां, जर्मन लोकतंत्र नारी संघ की सदस्याएं, सभी व्यवसायों से सम्बद्ध नारियां जैसे मन्त्री, न्यायाधीश, अध्यापिकाएं, शिल्पी तथा सामूहिक खेती की प्रगतिनिधि स्त्रियों ने भाग लिया । ७०,५०० नारियों का इस सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करने वाली नारियों की संख्या १२०० थी । ये नारियां शांति तथा खुशहाली के लिए सुदृढ़ता से कार्य करने की समान इच्छा हृदय में लेकर एकत्रित हुई थीं । वे अपने साथ विचार, सुझाव तथा उस सम्पूर्ण समता पर अपना प्रतिवेदन लिए प्रस्तुत हुई थीं जो उनकी समाजवादी सरकार द्वारा उन्हें प्राप्त है । वह समता जो केवल विधान में ही नहीं बल्कि व्यवहार में भी उनको प्राप्त है और जीवन के हर क्षेत्र में प्राप्त है ।

एक सूक्ष्म यंत्र फैक्टरी की श्रमिक तथा एक सामूहिक कृषक की बातें अत्यंत प्रेरणायुक्त थीं । उन्होंने बाताया कि उन्हें सरकार ने शिक्षा तथा तकनीकी प्रशिक्षण की सभी सुविधाएं दे रखी हैं । सरकार ने सभी आयु के बच्चों के लिए शिक्षक, बाल-विहार, दिन के विद्यालय, ग्रीष्म शिविर तथा उत्तम उपवन जुटाए हैं इससे हम माताओं को बच्चों के विषय में कोई चिन्ता नहीं रहती है । मशीनें हमारे कपड़े धोने का काम करती हैं तकनीकी यंत्रों तथा पूर्व-पक्वाहार इत्यादि सुविधाओं ने हमारे रसोई घर को भी अत्यंत सुगम बना दिया है । घर अथवा कार्यालय के निकट किसी एक ही स्थान पर आवश्यकता की हर वस्तु केवल एक चिट लिख भेजने से मिल जाती है और इससे समय की बहुत बचत हो जाती है । यही समय हम सांस्कृतिक तथा व्यवसायिक उन्नति के कार्यों तथा खुशहाल गृहस्थ जीवन में अधिक समरसता उत्पन्न करने पर लगा सकती हैं ।

जैसा उन्होंने बताया था, न्यूब्रानदेन दुर्ग प्रांत की यात्रा के समय प्रिबार्न सामूहिक फार्म में हमने अपनी आंखों से वैसी ही व्यवस्थाएं देखीं ।

जी हां, इस सम्मेलन में, न्यूब्रानदेनबुर्ग में तथा बर्लिन की गलियों में ज.ज.ग. की नारियों, माताओं, युवा लड़कियों के जो कांतिमय, स्वस्थ, सुबोध और विश्वासपूर्ण चेहरे देखे, और उनमें हमने अधिक सीखने की इच्छा, अधिक उत्पत्ति की भावना तथा जीवन को और अधिक खुशहाल बनाने की जो तत्परता देखी, ये सब ज.ज.ग. की नारियों के संतुष्ट और उच्चस्तरीय जीवन के सूचक हैं । ये चेहरे एक अधिक सुदृढ़ शांतिपूर्ण मानववादी जर्मनी के निर्माण के प्रति सच्चे निश्चय के द्योतक हैं--एक ऐसे जर्मन देश के जो फिर कभी युद्ध या उसके भयानक परिणामों से दो चार न होगा ।

ज. ज. ग. की नारियों को अपनी स[illegible] कार पर गर्व है जिसने उनके जीवन को खु[illegible] हाल बनाया तथा व्यक्तित्व, योग्यता तथा बुद्धिवैभव के विकास के अवसर [illegible] हुए हैं । हृदय में प्रेम, अधरों पर गीत त[illegible] मन में ज्ञान का प्रकाश लिए बुद्धि[illegible] जिम्मेदार तथा समान साझेदारों के रूप में [illegible] नारियां प्रसन्नचित्त अपने देश के निर्[illegible] में संलग्न हैं--एक शांतिपूर्ण, समाजवा[illegible] निर्माण में ।

लोकतंत्र की मांग के अनुसार ना[illegible] सम्मेलन ने देश में तकनीकी क्रांति [illegible] स्त्रियों व युवतियों को अधिक [illegible] अधिक तकनीकी शिक्षा का नारा लगाया [illegible] सम्मेलन ने यह स्पष्टतः घोषित किया [illegible] उसका दृष्टिकोण ज़नाना नहीं बल्कि इस[illegible] लक्ष्य स्त्री सामर्थ्य को समाज में सबकी प्र[illegible] के लिए एक समान तथा लाभकारी [illegible] के स्तर पर लाना है ।

और हमने देखा कि ज. ज. ग. [illegible] नारियां अपनी सरकार के वि[illegible] पर पूरी उतरी हैं । अनेक उच्च पदों [illegible] पर नारियां नियुक्त हैं, जैसे ३१ प्रति[illegible] न्यायाधीश नारियां, भारी उद्योग [illegible] की निदेशक नारियां, बर्लिन प्रसार [illegible] तथा सामान्य सूचना अभिकरण की [illegible] शक नारियां इस तथ्य के प्रति [illegible] उदाहरण हैं । हमें अनुभवी पुरु[illegible] यहां तक बताया कि सामूहिक फार्मों [illegible] अध्यक्ष के रूप में स्त्रियां पुरुषों से [illegible] सफल हैं ।

शांति, प्रगति तथा सम्पन्नता नारी सम्मेलन के विशेष विषय थे । इस बात को एक प्रतिनिधि ने जिन शब्दों में रखा वह मुझे अत्यन्त पसन्द आए । उसने कहा, "जैसे हमें सांस लेने के लिए वायु की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार शांति भी हमारे लिए आवश्यक है" । एक अन्य प्रतिनिधि ने कहा, "शांति हमारे दैनिक भोजन के समान है, इसका निर्माण हमें अपने हाथों से करना होगा ।"

और हमने ऐसा ही पाया । नारियों ने जो रचनात्मक कार्य किया है वह उसी शांति का द्योतक है । हमने ऐसा अनुभव किया कि ज. ज. ग. में युद्ध के कारणों का विनाश हो चुका है । परन्तु ज. ज. ग. की जनता पश्चिमी जर्मनी की दशा पर खून के आंसू रोती है ।

स्वतंत्र तथा विकासोन्मुख देशों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया ।

हम सम्मेलन में भाग लेकर तथा ज. ज. ग. के दर्शन कर के अत्यन्त प्रसन्न हुए । बढ़ता हुआ उत्पादन, उच्च औद्योगीकरण, खेती का यन्त्रीकरण, गृह-निर्माण की तीव्र गति, बच्चों तथा कल्याण केन्द्रों की बढ़िया व्यवस्था, शिक्षा केन्द्र तकनीकी शिक्षालय, बहुचिकित्सालय इत्यादि जो सर्वजनहित के लिये विकसित हुए हैं ज. ज. ग. को संसार के प्रथम श्रेणी के उन गिने-चुने देशों में ला खड़ा करते हैं जो केवल शांति के प्रतिवादी नहीं अपितु शांति निर्माण के वास्तविक कार्य में जुटे हैं ।

जर्मन देश की इस वास्तविकता से संसार कब तक आंखें मूंद सकता है । अब

श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त के साथ वार्तालाप करती हुई श्रीमती सरला शर्मा

नारी सम्मेलन ने पश्चिमी जर्मनी की नारियों से अपील की कि वे नेटो नीति तथा अणु अस्त्रों के संकट को समझें और सतर्क रह कर पश्चिमी जर्मनी को परमाणु युद्ध का मैदान बनने से बचायें ।

सम्मेलन ने हाल ही में ज. ज. ग. तथा सोवियत संघ में हुई मैत्री-संधि पर हर्ष प्रकट किया । राष्ट्र-मुक्ति के लिए संघर्ष में लगे देशों के प्रति सम्मेलन ने पारस्परिक दायित्व की भावना व्यक्त की और नव-

समय आ गया है कि जर्मन प्रश्न के प्रति टालमटौल का रवैया त्याग दिया जाए । ज. ज. ग. को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त होनी ही चाहिए । विश्वशांति तथा सुरक्षा की भी यही मांग है ।

जब हम बर्लिन पहुंचे थे तो हमने यह नारा सुना था —

"हमारे लोकतंत्र को सभी नारियों की आवश्यकता है—सभी नारियों को लोकतन्त्र की आवश्यकता है ।"

जब हम चलने लगे तो हमने यह नारा लगाया—

"ज. ज. ग. की नारियां समस्त संसार की नारियों से सहयोग और मित्रता चाहती हैं ।

और समस्त संसार की नारियां भी उसी प्रकार ज. ज. ग. की नारियों का सहयोग और उनकी मित्रता चाहती हैं ।"

(पृष्ठ ९ का शेष)

में चलचित्र दिखाये जायेंगे भाषण दिये जायेंगे तथा दूसरे प्रोग्राम मनाये जायेंगे । इसके साथ ही एक 'कैंटीन' खोलने की भी योजना है जहां कम कीमत पर खाना मिलेगा जिससे किसान नारियों के घरेलू काम का एक बहुत बड़ा अंश समाप्त हो जायेगा ।

यहां के बसने वालों ने इस निर्माण कार्य के लिए हजारों घंटों का श्रमदान किया है । हांस बरेण्ड का सहयोगी संघ तथा गांव की सभा के आपसी सहयोग के प्रश्न को न समझना भी ठीक ही था, क्योंकि एक नया समाजवादी परिवार हालैण्ड में उभर रहा है । यहां दुःख सुख मिलकर बांटा जाता है । १६ वर्ष पहले २५०० हेक्टर जमीन, बड़े-बड़े जमीदारों से लेकर इन गरीब किसानों के बेटे-बेटियों में बांट दिया गया था । इस धरती ने इनकी दरिद्रता को दूर कर इन्हें सम्पन्न बना दिया । उनका ऊंचा जीवन-स्तर उनकी वेश-भूषा से देखा जा सकता है । हर दूसरे फ्लैट में सांझ होने के साथ ही टेलिविजन का बटन दबा कर कार्यक्रम सुना जाता है । हर तीसरे परिवार के पास मोटर है । हर विवाहित जोड़ी इस वर्ष अवकाश के दिन बाल्टिक सागर के तट पर अथवा पहाड़ों पर बिताने के लिये जायेगी ।

किसानों का इस प्रकार अवकाश के दिन बिताना—या फिर कुछ का समुद्र की यात्रा करना—यह जर्मनी के इतिहास में पहली बार सम्भव हो सका है—यह समाजवादी जर्मनी में ही सम्भव है जो कि नये हालैण्ड वासियों को उच्चतम नागरिकों का एक अभिन्न अंग मानते हैं, और इस बात पर गर्व करतेहैं ।

भारत और ज. ज. ग. निर्माण के सहयोगी

एक भारतीय फर्म के साथ क़रार

हाल ही में, बम्बई की मेसर्स आर्थर इम्पोर्ट-एक्स्पोर्ट कम्पनी नामक फर्म ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक फर्म मेसर्स इनवेस्ट-एक्स्पोर्ट बर्लिन, के साथ एक सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किये । इस क़रार के अनुसार ज. ज. ग. की उक्त फर्म, भारतीय फर्म को एक ३ टन नाइलोन उत्पादक संयंत्र सप्लाई करेगा, और महाराष्ट्र-राज्य में लगा कर देगा ।

संधि के अनुसार जर्मन फर्म बम्बई की उक्त फर्म को लगभग २ करोड़ की कीमत का नवीनतम नाइलान उत्पादक सयंत्र एवं तत्संबंधी उपकरण मुहैया करेगा । इस संयोजना पर कुल चार करोड़ रूपये की लागत का अनुमान लगाया गया है । ज. ज. ग. की सरकार ने, भारतीय फर्म से दीर्घकालीन आस्थगित अदायगी के आधार पर मूल्य चुकाना मान कर भारत के प्रति अपनी विशेष मैत्री और सद्भावना प्रकट की है ।

नाइलोन कारखाने की मशीनें आदि जहाजों में लदकर १९६५ के अन्त तक अथवा सन् १९६६ के प्रारंभ में आनी शुरू होंगी, और ६ महीनों में, संयंत्र और उपकरण संबंधी सारा सामान भारत पहुंच जायेगा । अनुमान है कि यह संयंत्र, १९६६ के अन्त से बिक्री के लिये नाइलोन उत्पादन शुरू करेगा । संयंत्र संबंधी तकनीकी जानकारी ज. ज. ग. की फर्म उपलब्ध करेगी अपने इंजीनियरों के रूप में ।

उक्त करार के संबंध में, बम्बई की फर्म ने एक वक्तव्य जारी किया है । इसमें कहा गया है कि "यह संयंत्र अपनी तरह का तीसरा नाइलोन उत्पादक कारखाना होगा जो पहले दो कारखानों से बड़ा होगा । वस्त्र उद्योग आजकल अपने लिये नाइलोन, सूत और रेशे की काफी मात्रा आयात करता है । लेकिन यह मात्रा वास्तविक जरूरतों की मात्रा से काफी कम है ।

"योजना आयोग ने, तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक नाइलोन के वार्षिक उत्पादन का लक्ष्य १ करोड़ पौंड निश्चित किया था । लेकिन, अब तक नाइलोन उत्पादन की वार्षिक क्षमता मुश्किल से २० लाख या ज्यादा से ज्यादा ३० लाख पौंड तक पहुंच चुकी है । इस बात का अनुमान लगाया गया है कि चौथी पंचवर्षीय योजना, अर्थात १९७१ के अन्त तक, नाइलोन का वार्षिक उत्पादन २८,००० टन अर्थात् ६ करोड़ २० लाख पौड होना चाहिये । नाइलोन से कई प्रकार की वस्तुएं जैसे वस्त्र, होजरी का सामान, पैराशूट, मोटर गाड़ियों के टायर, मछलियां पकड़ने के जाल और रस्सियां आदि बनाई जाती हैं । भारत में बढ़ते हुये जीवन-स्तर को देखते हुये, इस देश की नाइलोन संबंधी आवश्यकतायें उल्लिखित अनुमानित मात्रा से भी अधिक हो जायेंगी । इसलिये यह सहज ही देखा जा सकता है कि इस क्षेत्र में जाना, जिससे संबंधित क़रार पर हमने (ज. ज. ग. की फर्म के साथ — सं.) दस्तखत किये, न केवल महफूज ही है बल्कि लाभप्रद भी है ।

बाईं से दाईं ओर खड़े: सर्वश्री सेल्तमन्न, राइख तथा हेनद्रीख (इनवेस्ट-एक्सपोर्ट के प्रतिनिधि); भारत में ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के श्री राइमन्न; सर्वश्री रजनीकान्त शाह और राम खन्ना (आर्थर आयात-निर्यात कम्पनी के प्रतिनिधि); **क़रार पर हस्ताक्षर करते हुये** श्री एस. एन. पुरी तथा एन. काइल

तयार और पूरे रेयन संयंत्रों का निर्यात

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की दो औद्योगिक संस्थाओं का एक संयुक्त प्रतिनिधि-मण्डल भारत आया था । इन संस्थाओं का नाम है 'वी. ई. बी. टेक्सटाइल प्रोजेक्ट' और 'इनवेस्ट-एक्स्पोर्ट' । ये दोनों व्यापार-संस्थायें, ज. ज. ग. से पूरे तथा तैयार कारखाने दूसरे देशों को निर्यात करती हैं ।

ज. ज. ग. की इन फर्मों का उक्त प्रतिनिधिमण्डल, रेयान और संशलिष्ट सूत उद्योग के मुकम्मल कारखानों की आवश्यकताओं को देखने के लिए भारत आया था ।

(बायें) : बरौदा विश्वविद्यालय के ललितकला संकाय के प्रोफेसर, श्री सी. सी. मेहता हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र गये वहां के रंगमंच का अध्ययन करने के लिये। यहां वे विश्वप्रसिद्ध जर्मन नाटककार, स्व. बर्तोल्त ब्रेख्त की पत्नी, प्रोफेसर हेलीने वाइग्ल से बातचीत कर रहे हैं। (दायें चित्र में) प्रो. मेहता जर्मन जनवादी गणतंत्र की नवनिर्मित राजधानी, बर्लिन को देख रहे हैं

लौटने से पहले मण्डल के सदस्यों ने भारत सरकार के अधिकारियों और इस क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाली विभिन्न फर्मों आदि को एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट में, ज. ज. ग. से रेयान उत्पादन के पूरे तथा तैयार संयंत्रों (प्लांट्स) के निर्यात की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

इस रिपोर्ट के अनुसार, टेक्स्टीमा प्रोजेक्ट भारत को निम्न वस्तुएं और पूरे तथा तैयार कारखाने सप्लाई कर सकता है :

(क) सामान्य तथा उच्च आर्द कोटि का विस्कोज़ तन्तु

(ख) वस्त्रों और सूपर टायर डोरों के लिये विस्कोज़ रेयान

(ग) वस्त्रों और तकनीकी कामों के लिय पीलिमाइड तन्तु तथा तन्तु संयंत्र (प्लांट)

(घ) पोलियेस्टर (टेरिलिन) तन्तु संयंत्र, और

(च) पोलिए क्रिलनित्रिल।

उल्लिखित संयंत्रों के अलावा, टेकसटीमा-प्रोजेक्ट सूत कातने, मरोड़ने तथा बुनने, वर्स्टिड कताई करने, बुनाई करने, और धोने तथा साफ करने के पूर्ण संयंत्र भी निर्यात कर सकते हैं।

'टेक्सटीमा-प्रोजेक्ट' ने अपने ११ वर्ष के जीवन में संयंत्र निर्यात करने, उनको लगाने आदि का काफी मूल्यवान अनुभव हासिल किया है। इस अवधि में ज. ज. ग. की इस फर्म ने, दुनिया के विभिन्न देशों को ८० से अधिक पूरे और तैयार कारखाने निर्यात किये हैं। कुछ उल्लेखनीय उदाहरण ये हैं :

१. भारत की एक फर्म मेसर्स केशवराम रेयान, कलकत्ता को, ७.५ टन प्रति दिन उत्पादन क्षमता का एक विस्कोज़ रेयान संयंत्र सप्लाइ किया।

२. सोवियत संघ को, ७.५ टन प्रतिदिन उत्पादन क्षमता वाला एक पोलिस्टर तन्तु संयंत्र दिया।

३. हंगरी में ८ टन प्रति दिन उत्पादन क्षमता वाला एक पोलियामाइड तन्तु संयंत्र लगा दिया।

४. चीन को, १५ टन प्रति दिन उत्पादन की क्षमता वाला एक विस्कोज रेयान संयंत्र सप्लाइ किया।

५. इन रेयान तथा अन्य प्रकार के संयंत्रों के अतिरिक्त, टेक्सटीमा-प्रोजेक्ट ने संयुक्त अरब गणराज्य, तुर्की, चीन, रुमानिया, यूगोस्लाविया, क्यूबा और सोवियत संघ को सूत कातने तथा बुनाई करने के पूरे संयंत्र निर्यात किये। इनमें ८००,००० कताई-तकलियां और ३,५०० से अधिक स्वचालित करघे भी शामिल हैं।

ढ़ेरों सारे ऐसे ही तथ्यों के आधार पर यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, वस्त्र उद्योग से संबंध रखने वाले तैयार और मुकम्मल कारखाने, अन्य देशों को सप्लाइ करने में समर्थ है। टेक्सटीमा-प्रोजेक्ट और इनवेस्ट-एक्सपोर्ट का संयुक्त प्रतिनिधि-मण्डल, भारत के दौर के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि भारत की वस्त्र उद्योग संस्थाओं तथा फर्मों के साथ विशेषकर संशलिष्ट तन्तु संयंत्र सप्लाई करने के क्षेत्र में, व्यापार बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार इस दिशा में हर प्रकार की सहायता तथा सहयोग देने के लिये तैयार है।

निर्माण के सहयोगी

अर्थ-शास्त्र कालेज में भारतीय अर्थ-शास्त्री

जर्मन जनवादी गणतंत्र के बर्लिन स्थित अर्थ-शास्त्र कालेज में, २० समाजवादी देशों के ३० अर्थ-शास्त्री प्रथम विशेष कोर्स में भाग ले रहे हैं।... इस कोर्स में भारत के प्रतिनिधि भी मौजूद हैं। गैर-समाजवादी देशों के अर्थशास्त्रियों के लिये खासतौर से आयोजित यह प्रथम कोर्स, ३१ जुलाई तक चालू रहा। यहां, अफ्रोएशियाई देशों के नवोदित राज्यों के अर्थ-शास्त्रियों को योजना और राष्ट्रीय अर्थशास्त्र से सम्बद्ध समाजवाद के आधारभूत सिद्धांतों को जानने का अवसर मिला।

भारतीय बच्चे जर्मनी को रवाना

पयोनियर्स नामक भारतीय बच्चोंके एक संगठन का एक प्रतिनिधि-मण्डल १४ जुलाई को जर्मन जनवादी गणतंत्र के लिये रवाना हुआ। भारतीय बालकों का यह प्रतिनिधि-दल, जर्मन जनवादी गणतंत्र के ऐर्नस्त टेलमन्न बाल पयोनियर नामक बाल संगठन के निमन्त्रण पर वहां गया है, और यह दल कई हफ्ते बितायेगा, वहां। जर्मन जनवादी गणतंत्र में भारत के ये नन्हे मेहमान, बर्लिन के निकट वेरवेल्लिन नामक सुन्दर झील के किनारे कुछ दिन बितायेंगे अपने जर्मन बाल-सहचरों के साथ। इसके अलावा वे कार्ल मार्क्स स्तादृत में होने वाली पांचवीं पयोनियर बैठक में भी भाग लेंगे। यह बैठक अगस्त में होगी। जर्मन जनवादी गणतंत्र रवाना होने से पहले भारत के इन बाल-राजदूतों से, भारत स्थित जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रतिनिधि मिले।

पिछले साल भी, कुछ भारतीय बच्चों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीष्म बाल शिविर में भाग लिया था। ज. ज. ग. से भी जर्मन बच्चों का एक दल भारत के उक्त बाल संगठन पयोनियर्स का कई दिनों तक मेहमान रहा पिछले जाड़ों में।

भारतीय कृषि-कर्मी ज. ज. ग. में

जर्मन जनवादी गणतंत्र के मुख्य कृषक संगठन के निमन्त्रण पर, 'भारतीय कृषक समाज' के आठ कृषि-कर्मी और कृषि-विशेषज्ञ ज. ज. ग. आ चुके हैं यहां की व्यवस्था से परिचित होने के लिये।

भारतीय कृषक समाज के उक्त सदस्यों का, बर्लिन के शोएनेफेल्द हवाई अड्डे पर शानदार स्वागत हुआ जिस में ज. ज. ग की 'कृषि परिषद' नामक संस्था के उपाध्यक्ष, श्री वूनो स्कोदोव्सकी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भारतीय अतिथियों ने कृषि-प्रदर्शनी देखी

भारतीय कृषकों तथा कृषि-विशेषज्ञों के एक प्रतिनिधि मंडल ने, जो आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा कर रहा है, लाइपजिक मार्क्लीबर्ग में स्थित ज. ज. ग. की स्थाई कृषि-प्रदर्शनी देखी। इस प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व कर रहे हैं 'भारतीय कृषक समाज' की मद्रास शाखा के सचिव, श्री पी. वराहराजन। उक्त प्रदर्शनी के उप-निदेशक, श्री गुएनतेर कोश्तइरित्श ने भारतीय मेहमानों को कृषि प्रदर्शनी दिखाई। अनाज, आलू और दूध के उत्पादन में भारतीय कृषकों के प्रतिनिधियों ने काफी रुचि दिखाई।

स्थाई प्रदर्शनी देखने के [illegible] भारतीय मेहमान, निकट का एक [illegible] उत्पादन सहकारी संघ देखने गये। [illegible] के बाद वे बेर्नबुर्ग स्थित कृषि [illegible] और क्लाइनवांस्लेबेन स्थित [illegible] रोपण संस्थान देखने जायेंगे।

भारत के नये परराष्ट्र मंत्री [illegible] ज.ज.ग. की बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र के [illegible] मंत्री, डा. लोतार बोल्स ने [illegible] स्वर्ण सिंह को, भारत गणराज्य [illegible] परराष्ट्र-मंत्री नियुक्त किये जाने [illegible] अपनी हार्दिक बधाई तथा शुभ काम[illegible] भेजी हैं। बधाई के अपने सन्देश [illegible] ज. ज. ग. के परराष्ट्र मंत्री ने यह [illegible] प्रकट की है कि भारत और जर्मन [illegible] वादी गणतंत्र की मैत्री तथा सह[illegible] दोनों देशों के कल्याण के लिए [illegible] दृढ़ और विकसित होगा।

ज.ज.ग. के वैज्ञानिक का भार[illegible] आगमन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की [illegible] धानी बर्लिन में स्थित हुम्बो[illegible] विश्वविद्यालय के गणित एवं प्राकृ[illegible] विज्ञान विभाग से सम्बद्ध 'भौ[illegible] रसायन संस्थान' के निदेशक, प्रो[illegible] रोल्फ लान्डस्बर्ग भारत के लिये [illegible] हो चुके हैं। वहां वे भारत की राज[illegible] में आयोजित तृतीय पंचवर्षीय यो[illegible] में 'विज्ञान और राष्ट्र' नामक गोष्ठी [illegible] सम्मिलित होंगे। २७ जुलाई को [illegible] गोष्ठी आरंभ हुई। गोष्ठी [illegible] होने के बाद, प्रोफेसर लान्डस्बर्ग [illegible] के विभिन्न विश्वविद्यालयों और [illegible] संस्थानों को देखेंगे।

जन सेवा में रत

एक रेल-चालक की कहानी

/ एन. पीतर

प्रातः ५. ३५ पर बर्लिन ओस्तबानोफ रेलवे स्टेशन से प्रस्थान। इसके साथ ही हमारी एक असाधारण यात्रा आरम्भ होती है। यह यात्रा रेल के आनन्द-दायक डिब्बे में बैठकर नहीं, गाड़ी के आगे लगे इंजन द्वारा की जाती है जो काफी दिलचस्प है। यह एक ऐसी यात्रा है जो हमें रेल-चालक कार्ल दोम्पके के जीवन से परिचित करायेगी। जर्मन रेलवे के सुनहरी परों वाले पहिए के साथ खड़ा वह अपनी तेल से पुती टोपी के साथ हमारा स्वागत करता हुआ हंसते हुए कहता है—"वक्त हो गया, लाईन साफ होने का इशारा मिल चुका है।" और इससे पहले कि हम चालक के केबिन का निरीक्षण कर सकें हरी रोशनी का इशारा मिल जाता है। इंजन चालक थ्राट्ल खोलता है और फायरमैन

कार्ल दोम्पके (दायें) अपने एक सहकर्मी के साथ

अपने बेलचे से धधकती आग में और कोयला फेंकने लगता है।

अब ज. ज. ग. की राजधानी के आस-पास एक्सप्रेस गाड़ी द्वारा यात्रा के लिए रास्ता साफ है और हमारे उन प्रश्नों के लिए भी "हरी रोशनी" है जिनके द्वारा हम इस अनुभवी रेल कर्मचारी का चित्र खींचने वाले हैं। कार्ल दोम्पके ४५ वर्ष का एक औसत बर्लिन निवासी है। इसका जन्म बर्लिन के एक उपनगर में ठीक उस समय हुआ जब प्रथम जर्मन गणराज्य की घोषणा की गई। हमने सभी लोगों में से उसी को क्यों चुना? वह पूछता है। उसको अभी तक इस बात का पता नहीं कि १६ जून को रेल कर्मचारी दिवस के अवसर पर उसे एक विशेष पुरस्कार दिया जाने वाला है।

कार्ल दोम्पके, एक हृष्ट पुष्ट, और अपने मित्रों के शब्दों में लौह मांस-पेशियों वाला व्यक्ति है। उसने पहले-पहल लुहार का काम सीखा और समुद्री जहाज बनाने लगा जिन पर बर्लिन निवासी अपनी रविवारीय यात्राओं पर जाया करते थे। परन्तु प्रथम और द्वितीय महायुद्ध के बीच का शान्तिकाल केवल २० वर्ष का समय था। २० वर्ष की अवस्था में कार्ल दोम्पके को फासिस्ट सेना में भर्ती होने के लिए बुला लिया गया। और कार्ल दोम्पके ने फासिस्तों के मृत्यु-द्योतक झंडे तले विदेशी भूमि पर कदम रखा। इस अनिश्चित यात्रा की समाप्ति इंग्लैंड के शहर शफील्ड में हुई। यहां पहुंचकर कार्ल दोम्पके ने फ्रांस के गांवों को तबाह करने या एक अपराधिक कार्य के लिए जान देने की बजाय युद्धबन्दी के रूप में गलियों की खाक छानना स्वीकार किया।

"अपने देश में पूर्णतया निराशा का राज था"—इन्जन चालक ने लाईन से ध्यान हटाए बगैर कहा। उस के महान संकल्प तथा सम्पूर्ण शक्ति का उदाहरण उस समय मिला जब यह युद्धबन्दी शिविर से १९४८ में अपने देश लौटा और उसे युद्ध-विनाशित-बर्लिन के पुनर्निर्माण में भाग लेने को कहा गया। उसने एक बार फिर एक रेल वर्कशाप पर एक लुहार के रूप में काम करना शुरू किया। इंजनों तथा माल डिब्बों को वास्तव में टुकड़ों से ही पुनः निर्मित करना था। इसके साथ ही स्टेशनों को फिर से व्यवस्थित करना था। बर्लिन का वर्तमान प्रतिनिधि स्टेशन ओस्तबा-नोफ जल कर राख हो गया था। परन्तु इस अवशेष ढांचे में फिर से जान फूंकने के लिए जो सामान चाहिए था उस का प्रबंध कहां से होता। कार्ल दोम्पके को एक आश्चर्यजनक विचार आया उसने पुराने पहियों की धुरियों को संधानित करके गर्डर प्रबलीकरण के रूप में नए माल के लिए प्रयोग करना शुरू किया। उसके इस कार्य के लिए, वह पहला ज. ज. ग. निवासी था, जिसे "कर्मठ" की उपाधि से पुरस्कृत किया गया।

इस बातचीत के साथ ही साथ हम लोग हैन्नीगज्डोरफ पहुंच गये। हैन्नीगज्-डोरफ इस्पात बेलन-मिलों तथा इंजन उद्योग का महत्वपूर्ण नगर है। कार्ल दोम्पके कर्मचारियों को प्रथम पारी के लिए इस गाड़ी द्वारा लाया है और गाड़ी दो मिनट लेट हो गई है। कर्मचारी, श्रेष्ठ स्तर के हास्य-विनोद में प्रश्नोत्तर द्वारा कार्ल दोम्पके से झगड़ रहे हैं। हो सकता है इन लोगों में से कुछ चालक, आसन पर बैठे देखकर उसे ईर्षा करते हों, बिल्कुल वैसे ही जैसे पहले वह स्वयं भी इसी आसन पर अपने साथियों को देख कर ईर्षा किया करता था। वह जीवनभर हथौड़ा हाथ में लिए भट्टी के सामने खड़ा रहना नहीं चाहता था। शीघ्र ही रेलवे ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। लोहार

की दुकान से उठकर वह चालक केबिन में शंटिंग-इंजन में जा पहुंचा और फायरमैन के रूप में काम करने लगा। उसने हजारों टन कोयला बेलचे द्वारा अपने हाथों से एक्सप्रेस-गाड़ी के भारी इंजनों में आग की दहकती लपटों के हवाले किया और एरफुर्त रोस्टोक से १८००० किलोमीटर लम्बी और मैग्देबुर्ग से गोएरलित्स तक की दो रेलवे लाईन से परिचित हो गया।

१९५३ में कार्ल दोम्पके ने इन्जन चालक परीक्षा को विशेष सफलता से पास किया और तुरंत ही लाइपजिक जाने वाली एक्सप्रेस गाड़ियों के लिये उसकी नियुक्ति हो गई। स्टाप। सामने लाल बत्ती है। पोतस्दाम जाने का रास्ता अभी साफ नहीं था। दो घण्टे की इस यात्रा के पश्चात् हम इस स्टेशन पर निश्चित समय से एक मिनट पहले पहुंच गए हैं। इंजन चालक तथा फायरमैन के बीच सहयोग एक नित्य की

अपनी छोटी बेटी एल्के के साथ श्री दोम्पके माडल रेल बनाने पर 'विचार' कर रहे हैं

बात जान पड़ती है, परन्तु वास्तव में यह कार्य महान एकाग्रता का है। अन्तर्चेतना से लाईन पर ध्यान रखने तथा तुरन्त अभिक्रिया के कारण ही कार्ल दोम्पके एक दुर्घटना को बचाने में सफल हो सका था। अन्यथा उस दुर्घटना में अनेक जानें जातीं। एक मोड़ मुड़ने के बाद उसने देखा कि एक माल गाड़ी लाईन पर खड़ी है। दुर्घटना में चेष्टा द्वारा न्यूनतम क्षति तो सम्भव थी परन्तु दुर्घटना से पूर्णतः बचाव असम्भव था। केवल पांच यात्रियों को साधारण चोटें आई। गम्भीर रूप से घायल होने वाला केवल एक ही व्यक्ति था और वह था स्वयं इंजन चालक कार्ल दोम्पके। "परन्तु आप इस बात से किसी निष्कर्ष पर न पहुंच जाइयेगा। विश्वास रखिए रेल, यातायात का अत्यंत सुरक्षित साधन है", कार्ल दोम्पके तुरंत कहता है। सामने से आने वाली एक गाड़ी के इंजन में खड़े व्यक्ति को हाथ हिला कर वह हर्ष प्रकट करता है। "यह व्यक्ति हमारी इस प्रतियोगिता का सबसे तेज प्रतियोगी है" कार्ल दोम्पके हमें बताता है।

नियुक्त समय पर रेलों का बाधा रहित आवागमन, मशीनों का उत्तम संरक्षण इन बातों में इंजन चालकों की प्रतियोगिता के बारे में कार्ल दोम्पके ने हमें बताया। हमारी बातचीत ज. ज. ग. की राजधानी के चारों ओर बिछी "स्पूतनिक लाइन" पर यात्रा से संबंधित थी और यह एक अत्यन्त रोचक विषय था। १९५९ में कार्ल दोम्पके के नेतृत्व में तीन इंजन चालकों तथा तीन फायरमैनों ने मिल कर एक टोली बनाई। इन की इच्छा यह थी कि तीन अलग-अलग पारियों में मूल्यवान इन्जनों का प्रयोग अधिक से अधिक देख-भाल से किया जाए और उन्हें किसी भी हानि से पूर्णतया सुरक्षित रखा जाए। ५ वर्ष के समय में इन इंजनों द्वारा ६ लाख किलोमीटर का, जो भूमि के घेरे का १५ गुना है, बाधा रहित यातायात हुआ और इस प्रकार इतने समय में उन की देख-भाल

और मरम्मत पर व्यय होने वाले [illegible] मार्क बचा लिए गए। यह बात इस [illegible] की अपने उद्देश्यों में सफलता [illegible] एक अच्छा उदाहरण है। कार्ल [illegible] नई-नई रीतियां प्रयोग में लाता [illegible] जो उच्चतर उपलब्धियों की ओर ले [illegible] रहीं। इस प्रकार अपने सामने [illegible] उद्देश्य रख कर वे (टोली सदस्य) [illegible] हुए और सफल हुए थे। अब उनकी [illegible] थी कि वे इकट्ठे रह कर अपने काम [illegible] सीखें और उन्नति करें और अपने सुख [illegible] भागीदार रहें। इन विचारों को [illegible] मान कर यह टोली कार्य करती रही [illegible] एक दिन इस टोली को "समाजवादी [illegible] टोली" की उपाधि प्रदान की गई [illegible] बातें लिखना बहुत सरल काम है, [illegible] कोई भी अन्य व्यक्ति उन चेष्टाओं, [illegible] भावनाओं और कार्यों का अनुमान [illegible] लगा सकता जिनके कारण इन व्यक्ति[illegible] को प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हुआ। [illegible] दोम्पके और उसके फायरमैन साथी को [illegible] बार "कर्मठ" की उपाधि प्रदान [illegible] गई और बाद में "ज. ज. ग. के सम्मा[illegible] श्रमवीर" के पुरस्कार द्वारा सत्[illegible] किया गया। एक नए सदस्य के अति[illegible] टोली के सभी सदस्य दोहरे [illegible] हैं। और अब हमारे इंजन में जो व्यक्ति [illegible] ओस्तबानोफ स्टेशन पर पहुंचने [illegible] एक और व्यक्ति आन खड़ा है जिसे [illegible] दिन पहले महानतम पुरस्कार "[illegible] रेल व्यक्ति" प्रदान किया गया था। [illegible] पुरस्कार में तीन हजार मार्क का [illegible] भी सम्मिलित होता है।

यह है कार्ल दोम्पके का कार्य, [illegible] व्यवसाय, जिसमें वह तनमन से संलग्न [illegible] है। दिन प्रति दिन वह हजारों श्रमि[illegible] नियुक्त समय पर उनके काम पर पहुंचाता [illegible] वापस घर लाता है। हम भी उसके साथ [illegible] घर चल दिये। उसका आनन्दपूर्ण घर [illegible] तीन कमरे हैं, कार्ल मार्क्स एले[illegible] स्थित है।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

प्रश्न : गढ़वाल, उत्तर-प्रदेश से एक विद्यार्थी **श्री सच्चिदानन्द डोमाल** पूछते हैं : जर्मन जनवादी गणतंत्र में, इस समय, विवाह की कौन सी प्रथा प्रचलित है ? इसके लिये सरकारकी अनुमति अपेक्षित है या नहीं ? क्या भारत की भांति वहां भी दहेज जैसी कुप्रथा प्रचलित है ?

उत्तर : यूरोप और अन्य पश्चिमी देशों की तरह जर्मन जनवादी गणतंत्र में भी चूंकि ईसाई धर्म प्रचलित है, इसलिए ईसाई रीति से यहां विवाह रचाये जाते हैं। बालिग युवक तथा युवतियां स्वयं अपने जीवन साथी को चुनते हैं। माता-पिता द्वारा कन्या के लिए वर, अथवा लड़के के लिए वधू ढूंढने का रिवाज नहीं है पश्चिमी देशों में। विवाहसूत्र में बन्ध जाने के पहले, लेकिन एक दूसरे को पसन्द करने के बाद, भावी पति-पत्नी कुछ समय तक एक-दूसरे के निकट संपर्क में रहते है, और एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानने का प्रयत्न करते हैं। इस अवधि को 'कोर्टशिप' कहते हैं। एक-दूसरे को अच्छी तरह जान लेने के बाद, अर्थात, कोर्टशिप समाप्त होने के बाद, नौजवान युगल (युवक, युवती) चर्च में जाते हैं और ईसाई-रीति से विवाह-सूत्र में बन्ध कर पति पत्नी बन जाते हैं।

विवाह, दो व्यक्तियों और दो हृदयों का संगम है। इस निजी मामले में सरकार किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करती। इसलिये सरकार की अनुमति देने या न देने का सवाल ही पैदा नहीं होता है। दम्पति के लिए केवल बालिग होना जरूरी है।

जिस अर्थ में दहेज, भारतीय विवाह-पद्धति का एक अंग सा बन चुका है, उसी अर्थ में पश्चिमी देशों में दहेज की प्रथा नहीं। और ज. ज. ग. इस नियम का अपवाद नहीं। विवाह सम्पन्न हो जाने पर दम्पति के सगे-सम्बन्धी और निकट के मित्र कई विवाहोपहार देते हैं उनको। बस यही उनका दहेज समझ लीजिये। दुल्हन, पूरा दहेज लेकर दूल्हे के घर आये, इस तरह की प्रथा पश्चिमी देशों में नहीं है।

25/8/64

हमें युद्ध नहीं शांति चाहिये

(पृष्ठ ४ का शेष)

ग्रास बन गये। विश्वव्यापी तबाही ग्रौर विकाल खण्डहर अपनी अलग गाथा कह रहे थे। हर देश की जनता निराश ग्रौर हताश थी। लेकिन धीरे-धीरे ग्रमर जीवन की, निर्माणकारी कोटिशः भुजायें हरकत में ग्रा गयीं। इसके साथ ही प्रत्येक देश की जनता के मन में युद्ध के प्रति उत्कट घृणा, ग्रौर शान्ति के प्रति ग्रथाह चाह के सोते फूटने लगे। ग्रौर इस प्रकार विश्व की निराश, हताश जनता को एक नया चिन्तामणि मिला विश्व शांति ग्रान्दोलन के रूप में। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि विश्वशान्ति को स्थाई रूप देने में उस जर्मनी के कन्धों पर विशेष ज़िम्मेदारी है जहां से दो-दो सर्वनाशी युद्धों ने जन्म लिया।

इसलिये यह एक स्वाभाविक बात है कि ग्राजकल सारी दुनिया के लोग, दूसरे महायुद्ध के बाद वजूद में ग्राये दो जर्मन राज्यों में होने वाली प्रत्येक घटना को बड़े ध्यान से देखते हैं। पश्चिमी जर्मनी में पनपती हुई कई खतरनाक प्रवृत्तियों के खिलाफ वहां के लोगों की ग्रावाज़ दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। वहां की इस गतिविधि से वे चिन्तित होने लगे हैं। सारे यूरोप में पश्चिमी जर्मनी ही एक ऐसा राज्य है जो खुलेग्राम पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया ग्रौर सोवियत संघ से कई क्षेत्रों का दावा करता है। पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर, डा. एरहार्ड ने भी हिटलर के समय की जर्मन सीमाग्रों ग्रर्थात १९३७ की जर्मन राइख की सीमाग्रों को फिर से पूर्ववत करने की मांग की है। इसी प्रकार, वहां के कई मंत्री भी उक्त देशों की सीमाग्रों को पश्चिमी जर्मनी की सीमायें घोषित करते रहते हैं। यह बात बिल्कुल साफ है कि मध्य यूरोप की इन सीमाग्रों को केवल नये युद्ध द्वारा ही बदला जा सकता है।

पं. नेहरू का मत : यूरोप की इन सीमाग्रों के प्रश्न पर बोलते हुये, भारत के प्रथम प्रधान मंत्री, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने २३ ग्रगस्त, सन् १९६१ को राज्य सभा में कहा था : "दूसरी ऐसी ही सीमा को, जो युद्ध (दूसरे महायुद्ध) का परिणाम है ग्रौर जो पोलैण्ड के साथ ग्रोदर-नाइस्से के नाम से प्रसिद्ध है, कुछ देशों, विशेषकर पश्चिमी जर्मनी ने स्वीकार नहीं किया है। इस क्षेत्र में लोगों की पर्याप्त संख्या निवास करती है। बहरहाल, एक चीज़ जो बिल्कुल साफ है वह यह है कि इन सीमाग्रों में तबदीली लाने का मतलब होगा एक खतरनाक युद्ध। इसीलिये मुझे इस बात पर ताज्जुब होता है कि इस ग्रहम सवाल को यह शोशे फैलाकर भ्रमपूर्ण बनाया जाता है कि इन सीमाग्रों को बदलना चाहिये।......"

ज. ज. ग. की शान्ति नीति : पश्चिमी जर्मनी की उल्लिखित नीति के विपरीत जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ग्रौर तमाम शांति-प्रिय जर्मन वासियों का यह उद्देश्य ग्रौर इच्छा है कि जर्मन भूमि से एक ग्रौर नये, सर्वनाशी युद्ध का ग्रारंभ न हो। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर ज. ज. ग. की सरकार, समय-समय पर, पश्चिमी जर्मनी की सरकार को यूरोप की शान्ति बचाये रखने के लिए कई सुझाव देती रहती है। हाल ही में, ज. ज.ग. की राज्य परिषद के ग्रध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर को दो खत भेजे हैं जिनमें दोनों जर्मन राज्यों को ग्रणु-शस्त्रीकरण से दूर रखने के सुझाव पेश किये गये हैं। वर्तमान काल की एक सब से बड़ी ग्रौर सबसे खतरनाक समस्या है—जर्मनी का मसला। यह मसला यूरोपीय शान्ति का केन्द्र है। ग्रौर इस समस्या का एक ही शांति पूर्ण हल यह है कि दो जर्मन राज्यों के साथ शांति संधि हो, दोनों राज्य ग्रणु-शस्त्रीकरण से दूर रहें, दोनों राज्य ग्रापस में सामान्य रिश्ते स्थापित करें ग्रौर दोनों जर्मन राज्य पुनः एक होने के लिए पहले एक जर्मन महा संघ (जर्मन कानफेडेरेशन) कायम करें। इसी में जर्मनी, यूरोप ग्रौर विश्व का कल्याण है। इसी नीति के द्वारा युद्ध-दानव के ताबूत में एक बड़ी कील ठोकी जा सकती है। विश्व की जनता ग्राज एक स्वर से मांग करती है : हमें युद्ध नहीं, शांति चाहिये।

तथ्य और आंकड़े

दो जर्मन राज्यों में खाद्यान्नों, घरेलू उपभोग की वस्तुओं और अन्य चीजों की कीमतों की तुलना करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि सन् १९५० में, जर्मन जनवादी गणतंत्र में, विभिन्न वस्तुओं की कीमतें काफी ज्यादा थीं पश्चिमी जर्मनी की कीमतों के मुकाबले में। लेकिन सन् १९६२ तक आते आते ज. ज. ग. में कीमतें एकदम घट गयी थीं, जबकि पश्चिमी जर्मनी में चीजों के दाम, सन् १९५० की कीमतों से, काफी बढ़ गये थे। इस संबंध में, दो जर्मन राज्यों से संबंधित निम्न मूल्य-तालिका दृष्टव्य है :

वस्तु	१९५०			१९६२	
	ज. ज. ग.		प. जर्मनी	ज. ज. ग.	प. जर्मनी
	कि. ग्रा.	मार्क	मार्क	मार्क	मार्क
आलू	५	०.६०	०.७६	०.८५	१.७४
फल्ली	१	१.०६	१.०३	१.०४	१.३५
आटा	१	२.४०	०.५९	१.३२	१.०४
डबलरोटी	१	०.७१	०.४२	०.५२	०.८८
चीनी	१	१२.००	१.१८	१.६४	१.२३
पोर्क	१	३१.५०	४.२५	८.००	७.०२
बीफ	१	२८.२५	३.४३	९.८०	६.६०
सासेज	१	३०.००	४.७९	६.८०	६.३३
मक्खन	१	३६.००	५.५३	१०.००	७.२०
लिग्नाइट	५०	९.२०	२.५५	३.६६	४.८७
पोसिलेन प्लेट	१	१.९६	१.०३	१.४०	१.२०
बिजली लैम्प	१	५.८५	१.१९	१.००	१.००
साइकिल	१	६४०.००	१५१.००	२४२.००	१८१.००
पकाने का बर्तन	१	१०.०२	४.१८	५.००	६.५९
शेव का साबुन	१	१.१६	०.४८	०.४५	०.७३

ऊपर की तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सन् १९५० से लेकर १९६२ तक जहां जर्मन जनवादी गणतंत्र में मार्क की क्रय-शक्ति ८३ प्रतिशत बढ़ गई, वहां इसी अवधि में, पश्चिमी जर्मनी में यह क्रय-शक्ति २२ प्रतिशत घट गई।

पश्चिमी जर्मनी के ही एक मासिक पत्र "विर्तशाफ्त उण्ड स्तातिस्तिक" ने अपने जनवरी अंक के एक लेख (पृष्ठ ९०) में, पचिश्मी जर्मनी में सन् १९५८ से लेकर दिसम्बर, १९६२ तक की प्रतिशत वृद्धि पर निम्न आंकड़े प्रस्तुत किये :

	कीमतों में वृ
सामान्य वस्तुओं में	६.५ प्रतिशत
मकानों के किरायों में	२१.५ ,,
रेल भाड़ा में	१०.५ ,,
स्थानीय परिवहन में	२५.८ ,,
रेस्त्रां के भोजन में	२२.३ ,,
सिनेमा, नाटक आदि की टिकटों में	१८.२ ,,
बाल काटने में	२२.० ,,
कपड़ों की सिलाई में	२३.६ ,,
जूतों की मरम्मत में	१२.५ ,,

इसी प्रकार, पश्चिमी जर्मनी के ही एक सुप्रसिद्ध दैनिक "दी ने ८ जनवरी, १९६४ के अपने अंक में, पश्चिमी जर्मनी में बढ़ मंहगाई का उल्लेख करते हुये लिखा : "मध्यवर्गीय उपभोक्ता मूल्य-सूचक अंक में २२ प्रतिशत की बढ़ौती हुई है।... सार्व परिवहन के किरायों और डाक फीस में सबसे अधिक बढ़ौती हुई प्रतिशत)। इसके बाद गैस तथा बिजली का नम्बर आता है, ५९ प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार मकानों के किराये और पदार्थ के दाम ५७ प्रतिशत बढ़े। बुन्देज़बंक के अनुसार, कीमत औसत बढ़ौती ४४ प्रतिशत है। शिक्षा, मनोरंजन तथा आमोद के दामों में भी ४४ प्रतिशत की बढ़ौती हुई।..."

प्रति व्यक्ति उपभोग

(सन् १९६१-६२ की औसत कीमत)

पर्दाथ	मात्रा	ज. ज .ग.	प. जर्मनी
गोश्त	१ कि. ग्रा.	५४.७ मार्क	६०.१ मार्क
मछली	१ ,, ,,	१२.९ ,,	१२.४ ,,
मक्खन	१ ,, ,,	१२.७ ,,	८.८ ,,
चीनी	१ ,, ,,	३०.९ ,,	३०.० ,,

चिट्ठी पत्री

प्रिय सम्पादक जी,

नमस्कार । मैं आभारी हूं कि आप नियमित रूप से **सूचना पत्रिका** मेरे पास भेजते रहते हैं । इस पत्रिका से हमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की बहुत सी बातों का पता चलता है जो अन्यथा सम्भव नहीं होता । भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र का काफी पुराना मेल-जोल है ।

धन्यवाद ।

रोचक पंडित,
अन्धेरी पूर्व, बम्बई ८६

आदरणीय महोदय,

आपके दूतावास से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** प्रायः प्रत्येक माह में हमारे पुस्तकालय में पहुंच जाती है । यह पत्रिका भारत जर्मन मैत्री का प्रतीक है । हमारे देश के महान प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के देहान्त पर, ज. ज. ग. के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त महोदय का जो शोक संदेश भारतीय गणराज्य की जनता को मिला है, वह अत्यन्त मर्मस्पर्शी है । भारतीय जनता के दुख में आपके देश की महान जनता का शामिल होना यह सिद्ध करता है कि भारत और ज. ज. ग., दोनों में परस्पर मैत्री की भावना बहुत गहरी है ।

मंत्री
शहीद बच्चन पुस्तकालय
सारन (बिहार)

महोदय,

आपके यहां से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** का अध्ययन करने का आज पहला अवसर प्राप्त हुआ । सूचना पत्रिका पढ़ने से ज.ज.ग. का बड़ा सुहावना चित्र आंखों के सामने उपस्थित होता है । आपकी इस छोटी सी पत्रिका को एक कहावत गागर में सागर कहें तो कोई आपत्ति नहीं है ।

आपकी 'सूचना पत्रिका' हमारे ग्राम पंचायत में ग्रामीण पाठकों द्वारा बहुत ही पसंद की जा रही है । आपकी बड़ी कृपा होगी यदि आप सूचना पत्रिका की सूची में इस ग्राम पंचायत का नाम नामांकन कर नियमित रूप से इसको हमें भिजवाने की व्यवस्था कर दें ।

वृजभूषण लाल शर्मा
ग्राम पंचायत 'कठिया'
(मध्य प्रदेश)

महोदय,

आपकी **पत्रिका** पढ़ने का आज पहला अवसर मिला । ऐसा लगा कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की शक्ति का स्रोत आपकी पत्रिका के विचारों में निहित है । मेरा तो ऐसा मानना है कि प्रत्येक पुस्तकालय व वाचनालय में आपकी पत्रिका पहुंचनी चाहिये । जिससे लोकतंत्र की बुनियाद जो नैतिकता है उसमें और ज्यादा बल मिल सके । इसलिए मैं भी इस पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता हूं । मेरी इस पुस्तक के पढ़ने में बहुत रूचि है । मैं बी. ए. का विद्यार्थी हूं । कृपया पत्रिका प्राप्ति का फार्म तथा पत्रिका के नमूने की प्रति शीघ्र भेजें । पत्रिका तथा फार्म के आने के पश्चात मैं दो रूपये मनिआर्डर द्वारा भेज दूंगा ।

वृन्दावन बिहारी नवलराम स्वामी
जयपुर (राजस्थान)

एक रेल-चालक की कहानी

(पृष्ठ १६ का शेष)

घर पहुंचने पर उसकी दो पुत्रियों ने उसका स्वागत किया । बड़ी लड़की मोनिका है जिसकी आयु १६ वर्ष है और आठ वर्षीय छोटी लड़की का नाम एल्के है । श्रीमती दोम्पके एक दुकान पर सहायक के पद पर नियुक्त है और आज वह दूसरी पारी में काम पर गई हुई हैं । परन्तु मां के तैयार किए हुए खाने को परोसने के लिए मोनिका पूर्णतः योग्य है । आज मौसम अत्यन्त प्रिय है और घर का काम भी पिता की दृष्टि में पूर्ण सन्तोषजनक रूप से समाप्त हो चुका है । वे सब सामान्यजनों की भांति बर्लिन के चिड़िया घर को चल देते हैं । कार्ल दोम्पके यहां के कार्यकर्त्ताओं के लिए भी कोई अजनबी नहीं है । वह चिड़िया घर के निर्देशक प्रोफेसर दाथे से भली प्रकार परिचित है । एक रेलवे कर्मचारी, दूसरा प्राणिवैज्ञानिक–भला दोनों का क्या मेल ? चिड़ियाघर को वर्तमान रूप देने के लिए १२००० से अधिक घण्टों के लिए इस इन्जन चालक ने हजारों अन्य निर्माण श्रमिकों के साथ मिल कर एक उपेक्षित पार्क पर निर्माण कार्य किया था । आज यह चिड़िया-घर योरुप का महानतम जन्तु स्वर्ग समझा जाता है । इस प्रकार एक वैज्ञानिक और रेलवे कर्मचारी मित्र बन गए ।

प्रो. दाथे ने एक ओर ले जा कर हमें वह रंगीन छोटा तोता दिखाया जो कार्ल दोम्पके को उपहार के रूप में उसके सत्कार दिवस पर प्रस्तुत किया जाने वाला है । जन्तुओं की देख-भाल इस रेल-चालक को विशेष प्रिय है, उसी प्रकार जैसे फोटोग्राफी, जिस में उसे दक्षता की सीमा तक सफलता प्राप्त किए बहुत समय हो चुका है । अवकाश के समय के लिए दोम्पके का एक तीसरा प्रियकार्य भी है । वह है एक नवीनतम माडल रेल तैयार करना । इसे आगामी पतझड़ तक तैयार कर लिया जाएगा–भला इससे अच्छा खेल बाप और दोनों बेटियों के लिए और क्या हो सकता है ।

स मा चा र

ब्रिटिश वैज्ञानिक सम्मानित

२ जुलाई, १९६४ के दिन, कैम्ब्रिज (ब्रिटेन) के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफसर पाल एड्रीन मोरिस डाइरेक को, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जर्मन विज्ञान अकादमी ने 'हेलमोल्त्स पदक' से सम्मानित किया। प्रोफेसर डाइरेक भौतिकी के महान पंडित हैं और उनको इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने पर विश्वप्रसिद्ध 'नोबुल पुरस्कार' भी दिया गया है। प्रोफेसर महोदय, जर्मन अकादमी द्वारा आयोजित 'लाइपजिक दिवस' में भाग लेने के लिये पधारे थे। आस्ट्रिया, पश्चिमी जर्मनी और अन्य देशों के वैज्ञानिक भी इस समारोह में शमूलियत के लिये आये थे।

अमरीकी गणितज्ञ बर्लिन में

एक सुप्रसिद्ध अमरीकी गणितज्ञ, प्रोफेसर कार्ल मेंगर ने हाल ही में बर्लिन के हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के गणितीय लाजिक संस्थान में ८ जुलाई को एक व्याख्यान दिया। वे इस संथान के निमन्त्रण पर जर्मन जनवादी गणतंत्र आये थे। 'गणितीय लाजिक संस्थान' द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक पत्र को प्रोफेसर मेन्गर ने, गणित और लाजिक पर प्रकाशित दुनिया के सब से अच्छे पत्रों में से एक कहा। उन्होंने 'संस्थान' के निदेशक, डा. कार्ल शूरोस्तर तथा ज. ज. ग. के अन्य वैज्ञानिकों से निकटतर संबंध स्थापित करने की इच्छा प्रकट की।

जर्मन मज़दूरों के कर्मठ नेता का देहान्त

जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य, श्री ओत्तो बुखवित्स का ८५ वर्ष की आयु में ९ जुलाई, १९६४ के दिन देहान्त हुआ। स्व. बुखवित्स, ज. ज. ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) के प्रवर अध्यक्ष, जर्मन रेडक्रास सोसाइटी के आनरेरी अध्यक्ष, और लेनिन शांति पुरस्कार के विजेता थे।

जर्मन मजदूर वर्ग के आन्दोलन के नेताओं की पुरानी पीढ़ी से स्व. ओत्तो बुखवित्स का संबंध था। इस आन्दोलन से, सन् १८९८ से उनका रिश्ता था। अपने सक्रिय राजनीतिक जीवन में, विभिन्न समयों पर वे, सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी तथा ट्रेड-यूनियनों के विभिन्न पदों पर काम करते रहे। इसके अलावा गोएरलित्स, जिलेज़ियन तथा प्रशियन विधान सभाओं और राइखताग (केन्द्रीय संसद) के भी वे सदस्य रहे। सन् १९३३ में, स्व. बुखवित्स निर्वासित होने पर मजबूर हुये।...

सन् १९४० में हिटलर की फासि[स्ट] सरकार ने उनको गिरफ्तार किया औ[र] आठ साल की सख्त कैद दी। कारा[]वास के कई वर्ष उन्होंने फासिस्टों के कुख्यात सोन्नेवर्ग यातना-शिविर [में] काटे।

दूसरे महायुद्ध के बाद, स्व. ओ[त्तो] बुखवित्स जर्मन मजदूर वर्ग की पार्टि[यों] की एकता के संघर्ष में कूद पड़े। अ[न्त] में सन् १९४६ में उनके ये प्रयत्न स[फल] हुये जब जर्मनी की दो प्रमुख मज़[दूर] पार्टियां, कम्युनिस्ट पार्टी और सोश[ल] डेमोक्रैटिक पार्टी, मिल गयीं, औ[र] उन्होंने 'जर्मन समाजवादी एक[ता] पार्टी' को जन्म दिया।

वयोवृद्ध होने और अस्वस्थ र[हने] के बावजूद स्व. बुखवित्स ने जर्मन ज[न]वादी गणतंत्र में समाजवादी नवनिर्मा[ण] के लिये अपनी सारी शक्ति लगा दी ...जर्मन जनता के इस निर्भीक तथा क[र्मठ] पुत्र का शव, १३ जुलाई को ड्रेस्डेन [के] टाउन-हाल में नागरिकों के अन्ति[म] दर्शनों के लिये रखा गया था।

ज. ज. ग. का वैज्ञानिक-युगल अमरीका में

बर्लिन के हुमबोल्त विश्वविद्यालय के 'सामान्य जीवविज्ञान संस्थान' के निदेशक, प्रोफेसर जैकब जेगाल और उनकी पत्नी, डा. लिल्ली जेगाल, विगत मास (जुलाई) में अमरीका के दौरे पर रवाना हुये हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के ये वैज्ञानिक कई सप्ताह अमरीका में रहेंगे और वहां के विभिन्न विज्ञान संस्थाओं तथा अकादमियों में व्याख्यान देंगे। केलिफोरनिया के सैक्रेमेन्टो स्टेट कालेज में उन्होंने कई व्याख्यान दिये भी हैं आज तक। इसके अलावा वाशिंगटन में आयोजित जीवरसयान वैज्ञानिकों के सम्मेलन में भी उक्त वैज्ञानिक दम्पति ने भाग लिया।

सांस्कृतिक संबंधों के विनिमय के लिये हम तैयार हैं

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक मंत्री, श्री हांस बेन्तसीन ने एक अन्तराष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेन्स में इस बात को फिर ए[क] दोहराया कि ज. ज. ग. का सांस्कृतिक म[ंत्रालय] दो जर्मन राज्यों के सांस्कृतिक संबंध[ों को] स्तर पर लाने की बातचीत के लिए तै[यार है]। मंत्रि महोदय ने, प्रेस कानफ्रेन्स में उ[स पत्र को] भी पढ़कर सुनाया जो उन्होंने पश्चिमी [जर्मनी] के सांस्कृतिक मंत्रालय को लिखा [था कुछ] दिन पहले। उन्होंने यह भी कहा कि इस पत्र का आज तक जवाब नहीं आ[या]।

नवयुवकों की अन्तर्राष्ट्रीय पुर[स्कार] प्रतियोगिता

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख [नवयुवक] संस्था 'जनवादी नवयुवक फ़ेडरेशन'...

केन्द्रीय परिषद ने, विश्व भर के नौजवानों के लिए एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता की घोषणा की है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले हर एक नवयुवक को ज.ज.ग. से, चित्रों से सुसज्जित एक अत्यन्त सुन्दर पंचांग भेजा जायेगा जिसमें प्रतियोगिता से संबंधित सभी सवाल और अन्य जानकारी उपलब्ध की गई है। इस प्रतियोगिता के लिये जिन प्रश्नों का चयन किया गया है वे अरबी, अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, इतालवी, स्पेनी, फिन्नी, और डेन भाषाओं में प्राप्य हैं, और प्राप्त करने का पता है : 'नवयुवक भवन की अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता, बर्लिन डब्ल्यू ८, उनतर-दन-लिन्दन-३६। प्रश्नों का उत्तर, इस वर्ष की २१ अक्तूबर तक, उक्त पते पर, निश्चित रूप से पहुंचना चाहिये। यह तिथि अन्तिम तिथि है।

रंग भेद नहीं : घाना के छात्र का कथन

अपनी एक प्रस भेंट में, जर्मन जनवादी गणतंत्र में पढ़ने तथा काम करने वाले घाना के नागरिकों की संस्था "ज. ज. ग. में घाना विद्यार्थी एवं श्रमिक संघ" के एक प्रमुख सदस्य, श्री विलियम गान्दा ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से, नवोदित स्वाधीन अफ्रीकी देशों को दी जाने वाली सहायता तथा सहयोग की बहुत प्रशंसा की। श्री गान्दा घाना के उन ५० छात्रों में से एक हैं जो लाइपज़िक में पढ़ रहे हैं।

श्री विलियम गान्दा, ज. ज. ग. में डाक्टरी पढ़ रहे हैं। उक्त प्रेस-भेंट में उन्होंने कहा : "हम हर रोज यह देखते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और यहां की जनता कैसे हमारी देखभाल करते हैं। उनके लिये रंगभेद एक अनजान वस्तु है। और प्रशिक्षण का स्तर बहुत ही अच्छा है यहां"।......घाना के इस छात्र ने ज. ज. ग. की सरकार द्वारा अपनाई गयी परराष्ट्रनीति की भी बहुत सराहना की, जिस का एक मुख्य ध्येय है अफ्रीका की जनता के साथ मैत्री के संबंध जोड़ना।

इन्दोनेशिया और ज. ज. ग. की व्यापार संधि

जर्मन जनवादी गणतंत्र और इन्डोनेशिया के बीच, सन् १९६४-६५ के लिये, एक नयी व्यापार-संधि पर २ जुलाई के दिन दस्तखत हो गये। ज. ज. ग. की ओर से वहां के विदेश व्यापार मंत्री श्री हरवर्ट मेयर ने, और इन्डोनेशिया की ओर से वहां के व्यापार मंत्रालय से सम्बद्ध आयात-निदेशक, श्री जूलियो इदाद ने उक्त संधि पर हस्ताक्षर किये।

विमानों द्वारा खेतों पर खाद डाली गई

इस वर्ष के पूर्वाध में (६ महीनों में), जर्मन जनवादी गणतंत्र में १२६,५०० हेक्टर भूमि पर विमानों के द्वारा ४०,३०० टन खाद डाली गई। इसी प्रकार, इसी अवधि में फसलों और पौधों को कीड़ों की बरबादी से बचाने के लिये १२६,८०० हेक्टर कृषि भूमि और १६,००० हेक्टर वन-भूमि पर, विमानों द्वारा कृमि नाशक रासायन फैलाये गये। इस संबंध में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि एक ट्रेक्टर जहां हर रोज २० हेक्टर भूमि को कीड़ों से बचा सकता है, वहां एक विमान ३०० से लेकर ४०० हेक्टर भूमि पर फैले फसलों को इस खतरे से सुरक्षित रख सकता है।

बाल गणितज्ञों का मास्को में समारोह

गत मास (जुलाई) की २ से लेकर १० तिथि तक मास्को में समाजवादी देशों के सब से अच्छे बाल गणितज्ञों का एक समारोह हुआ। इसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र के, उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के दस बाल गणितज्ञों ने भाग लिया। ये लड़के देश-व्यापी प्रतियोगिताओं के बाद ही ज. ज. ग. के प्रतिनिधि चुने गये थे उक्त बाल गणितज्ञ समारोह के लिये। समारोह में नौ (९) समाजवादी देशों के सब से अच्छे बाल-गणितज्ञों ने भाग लिया। इन देशों के नाम हैं : सोवियत संघ, हंगरी, रूमानिया, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, जर्मन जनवादी गणतंत्र, बलगेरिया और मंगोलिया। इस समारोह में, ज. ज. ग. के बाल गणितज्ञों को एक द्वितीय और दो तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुये।

विश्व प्रसिद्ध जर्मन प्राच्यविद की ७५ वीं वर्षगांठ

गत मंगलवार के दिन, लाइपजिक के कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय ने, अपने एक विद्वान प्रोफेसर, फ्रेदरिख वेल्लर की ७५वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई। प्रोफेसर वेल्लर एक विश्व प्रसिद्ध जर्मन प्राच्य-शास्त्री हैं जो भारत की तीन प्राचीन भाषाओं संस्कृत, पाली तथा प्राकृत के प्रकाण्ड विद्वान होने के साथ-साथ प्राचीन तथा आधुनिक चीनी भाषा, तिब्बती, मंगोलियाई और जापानी भाषाओं के ज्ञाता भी हैं।

प्रो. वेल्लर, सन् १९५८ तक, लाइपजिक विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग के अध्यक्ष थे। ज. ज. ग. की सरकार ने उनको राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके अतिरिक्त विद्वान आचार्य अनेक विदेशी अकादमियों तथा विश्वविद्यालयों के सदस्य भी हैं, जिनमें से लन्दन विश्वविद्यालय का 'प्राच्य तथा अफ्रीकी अध्ययन का स्कूल' विशेष उल्लेखनीय है।

प्रोफेसर फ्रेदरिख वेल्लर ने बौद्ध-धर्म का विशेष अध्ययन किया है, जिसके लिये उनको विश्व ख्याति प्राप्त हुई है।

राष्ट्रीय उत्पादन में ८ प्रतिशत वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र के केन्द्रीय सांख्यिकीय बोर्ड ने एक दिलचस्प विवरण प्रकाशित किया है। इसमें इस तथ्य का उद्घाटन हुआ है कि इस वर्ष के प्रथम छः महीनों में, सन् १९६३ के प्रथम छः महीनों की तुलना में, ज. ज. ग. के राष्ट्रीय उत्पादन में आठ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में प्रकाशित निम्न आंकड़े उद्धरणीय हैं :

इसी अवधि में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राष्ट्रीय आय में ७ प्रतिशत—अर्थात २५० करोड़ मार्क की वृद्धि हुई।... इसी प्रकार, उद्योगों का कुल उत्पादन ७ प्रतिशत बढ़ा, और मजदूरी में २.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। २४,००० नये फ्लैट तामीर किये गये इसी समय में।

पश्चिमी जर्मनी के सैनिक शरणागत

इस वर्ष के जून मास के मध्य से लेकर अब तक पश्चिमी जर्मनी की सेना के १७ सैनिक भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ले चुके हैं। इनमें कुछ अफसर भी शामिल हैं। इन नौजवान सैनिकों के वहां से भाग आने का मुख्य कारण है ट्रेनिंग के दौरान उन पर होने वाले अकथनीय अत्याचार। हाल ही में, पश्चिमी जर्मन सेना का एक रंगरूट मार्च करते-करते वहां बेहोश हो गया।

पश्चिमी जर्मनी के २८६ शरणार्थी

पिछले एक हफ्ते में, पश्चिमी जर्मनी के २८६ नागरिकों ने भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। हाल ही में प्रकाशित आंकड़ों के एक सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया है कि पश्चिमी जर्मनी से हर रोज ४०, व्यक्ति भागकर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण लेते हैं।

इसी हफ्ते में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के १३७ नागरिक, जो पहले पश्चिमी जर्मनी गये थे, वापस स्वदेश लौट आये।

ज.ज.ग. का नौजवान-मित्र-दल माली रवाना हुआ

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, यहां के नवयुवकों के प्रमुख संगठन के प्रथम मैत्री दल को अलविदाई भोज दिया गया। ज. ज. ग. के नौजवानों का यह दल, माली गणराज्य के लिये रवाना हुआ, जहां वे वहां के नवजवान नागरिकों को, आर्थिक तथा कृषि विकास के कार्यों में हर तरह का सहयोग देंगे। इस नवयुवक दल में कृषि विशेषज्ञ, इंजीनियर और कई कुशल कारीगर भी शामिल हैं।

›फ्रीका के विकासशील, नवोदित राज्यों और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच संबंध निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं।

ज.ज.ग. में अन्य देशों के विद्यार्थी

गिनी का एक विद्यार्थी जिसका यूसुफ कोरोमा है, जर्मन जनवादी में औषध-शास्त्र का अध्ययन करता है ही की एक अपनी प्रेस-भेंट में इस ने कहा : "अपने देश में मेरे सामने इटली, स्विटजरलैंड, कनाडा, और जर्मन गणतंत्र में से किसी एक देश में पढ़ने की रखी गई। मैंने ज. ज. ग. में पढ़ने का किया। यह फैसला मैंने इसलिये लिया में पूंजीवाद से समाजवाद तक के विकास सभी समस्याओं और संघर्षों को भी चाहता था"।..श्री यूसुफ करोमा ने यह कि वह सन् १९५९ में जर्मन जनवादी में आया और वह यहां अत्यन्त सन्तुष्ट उसने यहां की शिक्षा प्रणाली, स्वास्थ्य और खेलकूद के लिये सरकारी तथा प्रेरणा की खासतौर से प्रशंसा की

प. जर्मनी में भारत विरोधी पुस्तक

तीन वर्ष पहले पश्चिमी जर्मनी में एक पुस्तक छपी थी जिस में भारत के बारे में तरह-तरह के झूठ लिख मारे थे लेखक ने। इस पुस्तक का नाम है "चमत्कार-युक्त और चमत्कारहीन भारत"। उस समय भारतीय लोक-सभा के कई सदस्यों तथा अन्य भारतीयों ने इस भारत-विरोधी पुस्तक के प्रति जोरदार विरोध और तीव्र असन्तोष व्यक्त किया था।.... हाल ही में, पश्चिम बर्लिन के एक प्रगतिशील अखबार "दी वारहाइत्त" ने अपने एक अंक में यह रहस्योद्घाटन किया है कि पश्चिम बर्लिन के सार्वजनिक पुस्तकालयों में आज भी यह पुस्तक पढ़ने के लिये पाठकों को दी जाती है।

भारत के खिलाफ विषवमन करने वाली उक्त पुस्तक का लेखक कोई पीतर शिमिद है जो कभी भारत आया था। लेखक ने इस यात्रा-विवरण में लिखा है : "ऐसे क्षण आ ही जाते हैं जबकि यात्री को भारतीयों के बौद्धिक स्तर पर सन्देह होने लगता है।... केवल वन्दरों की तरह नकल उतारना सीख सकते हैं। (ऐसे) भारतीयों के लिये (इस्पात) पिघलाने के लिये दम भट्ठियां नहीं, बल्कि (उनको मारने के लिये) मजबूत गैस-भट्ठियां तामीर की जानी चाहियें।......"

"दी वारहाइत" अखबार ने यह समाचार भी दिया है कि पश्चिम बर्लिन की समाजवादी एकता पार्टी ने, के संबंधित अधिकारियों से इस बात की अपील की थी कि वे सार्वजनिक पुस्तकालयों से इस गन्दी पुस्तक को हटा के लिये लेकिन अभी तक प. बर्लिन के किसी अधिकारी ने इस अपील की ओर ध्यान नहीं दिया है।

जुलाई में आया। यह

सचित्र समाचार

जुलाई में फ्रांस के संसद-सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मण्डल ज. ज. ग. की यात्रा पर आया। यहां विल्ले फ्रांच दे रूजेरू के महापौर, श्री राबर्ट फावरे माग्देबुर्ग के स्कूली बच्चों के साथ हंसी मजाक कर रहे हैं

▲ सोवियत संघ और ज. ज. ग. की फुटबाल टीमों का निर्णायक मैच का एक निर्णायक क्षण। ज. ज. ग. की टीम ४ के मुकाबले में १ गोल से जीत गई। वह अब टोकियो ओलम्पिक खेलों में भाग लेगी

◄ पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के संयुक्त टीम के खिलाड़ी इस प्रकार की वेष भूषा में टोकियो जायेंगे ओलम्पिक खेल कूद समारोह में भाग लेने के लिये

► विश्व प्रसिद्ध जर्मन संगीतकार हाण्डेल के जन्मस्थान हाल्ले में १३वाँ हाण्डेल उत्सव मनाया गया। उत्सव में भाग लेने वाले संगीतकार-दलों ने हाण्डेल की समाधि पर फूल चढ़ाये

सूचना पत्रिका

जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ

भारत - ज. ज. ग.
मैत्री और सहयोग के १० वर्ष

१५ वीं वर्षगांठ
७ अक्तूबर, १९६४

विशेषांक

९
वर्ष ९
सितम्बर
१९६४

वर्ष ९
अंक ९ | सितम्बर, १९६४

संकेत

विशेषांक परिशिष्ट :
ज. ज. ग. के दिवंगत प्रधान मंत्री, स्व. ओटो ग्रोतवोल की शोक-स्मृति

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, निकट मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

भारतीय मित्रों के नाम . . .

७ अक्तूबर, सन् १९६४ के दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र अपनी १५वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस शुभ अवसर के लिये सूचना पत्रिका के इस विशेषांक के द्वारा, श्री ओटो ग्रोतवोल ने, भारत और भारतीय मित्रों की समृद्धि के लिये एक विशिष्ट शुभ-कामना सन्देश भेजा था जो हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। गहरे शोक के साथ कहना पड़ रहा है कि २१ सितम्बर, १९६४, हृदय गति रुक जाने से, श्री ओटो ग्रोतवोल का देहान्त होगया। निधन के दिन तक स्व. ग्रोतवोल, ज. ज. ग. की मंत्रिपरिषद् के अध्यक्ष अर्थात् प्रधान मंत्री रहे। सूचना पत्रिका का परिवार दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता है —संपादक

इस माध्यम (सूचना पत्रिका) के द्वारा में आज भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के भारतीय मित्रों को सम्बोधित कर रहा हूं, यह मेरे लिये बड़े हर्ष की बात है।

इन दिनों, जर्मन जनवादी गणतंत्र के गांवों, कस्बों और शहरों में यहां की जनता, ज. ज. ग. की १५ वीं वर्षगांठ मना रही है। इस पुण्य अवसर पर, यहां के निवासी बड़े गर्व के साथ पिछले वर्षों का लेखा जोखा देख रहे हैं —उन १५ वर्षों का जिनमें उन्होंने अपना खून पसीना एक करके ज. ज. ग. में एक नये और खुशहाल जीवन का निर्माण किया।

हमारे नये गणतंत्र का—जो एक किसान-मजदूर राज्य है—जन्म लेने से लेकर आज तक, एक कठिन मार्ग पर चलना पड़ा है। (जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना ७ अक्तूबर, सन् १९४९ के दिन हुई थी—सं.) । हिटलर के पाश्विक युद्ध की विरासत गांवों, नगरों और समस्त जर्मन जनता पर एक भारी बोझ बन कर बैठ चुकी थी। जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों को ध्वंस और दहन की कोख से एक बार फिर जीवन को जन्म देना था।...आज हमारे मजदूर, किसान और बौद्धिक इस बात पर गर्व करते हैं कि उन्होंने जर्मनी के सब से पिछड़े हुये और ध्वस्त भाग को (अर्थात् ज. ज. ग. को—सं.) इन कुछ ही वर्षों में, वृहत निर्माण के द्वारा एक ऐसे समाजवादी औद्योगिक राज्य में बदल दिया है जहां आज सुख, शांति और समृद्धि विराजमान है।...हमारी जनता के इन महान और शांतिपूर्ण तथा आश्चर्यजनक सफलताओं के कारण जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, समस्त विश्व के प्रगतिशील लोगों का आदर और मैत्री उपार्जित की है।

हमें इस बात की बहुत खुशी है कि ऐसे मित्रों में भारत जैसा महान देश भी हमारा मित्र है—वह भारत जिस ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे अनुपम रत्नों को जन्म दिया है।
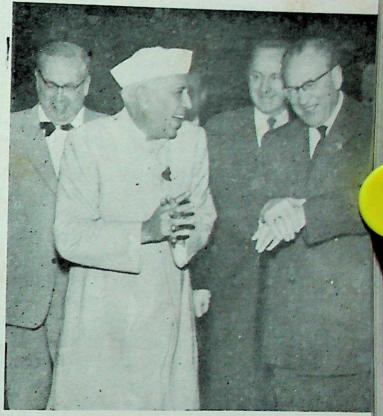
अपने महानतम अनुभवों और चिरस्मरणीय घटनाओं में वह दिन सदा अमर रहेगा जिस दिन, सन् १९५९ में, अपनी भारत-यात्रा के दौरान मुझे भारतीय गणराज्य के प्रथम प्रधान मंत्री और एक महान राजनीतिज्ञ, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू से मिलने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। आइये, समस्त प्रगतिशील शक्तियों के साथ मिलकर, हम उनके स्वप्न को साकार करें—अर्थात् सबों के लिये सुखद तथा खुशहाल जीवन बनायें और विश्व शांति को कायम रखें।

सन् १९५९ : ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री, श्री ओटो ग्रोतवोल भारत के प्रधान मंत्री के साथ . . .

(शेष पृष्ठ २९ पर)

ज. ज. ग. की १५वीं वर्षगांठ | भारत - ज. ज. ग. संबंधों के १० वर्ष

कूर्त बोत्तकर

(भारत स्थित ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख)

जर्मनी के भूतपूर्व सोवियत अधिकृत क्षेत्र पर, ७ अक्तूबर १९४९ के दिन, जर्मनी के एक नये राज्य—जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुयी। इस नये राज्य की स्थापना से जर्मनी के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया। जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना जर्मनी के शांति प्रिय, प्रगतिशील और समाजवादी शक्तियों का प्रत्युत्तर था जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी—सं.) को, जिसकी स्थापना तीन भूतपूर्व पश्चिमी देशों द्वारा अधिकृत क्षेत्रों को मिलाकर की गयी थी, और जहां की शासनसत्ता के ऊंचे पदों पर जर्मन के पुराने कुख्यात तत्वों और शक्तियों ने एक बार फिर कब्ज़ा कर लिया था। इस प्रकार जर्मन भूमि पर दो राज्य स्थापित हो गये।

जर्मनी का पूर्वी भाग, सदियों से न केवल बहुत ही पिछड़ा और कम विकसित प्रदेश था, बल्कि दूसरे महायुद्ध में यह क्षेत्र, सब से अधिक तबाह भी हुआ था। जर्मनी का यही भाग जर्मन जनवादी गणतंत्र का राज्य बना आज से १५ वर्ष पहले।

स्पष्ट है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता को फासिस्ती युद्ध का विध्वंस और तबाही ही विरासत में मिली नये राज्य की स्थापना के समय। लेकिन इस नवोदित राज्य की जनता हताश हो कर हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठी। उसने कमर कसी और महान समाजवादी नवनिर्माण के राजमार्ग पर निकल पड़ी। इस नवनिर्माण के अभियान में ज. ज. ग. की जनता अपने जीवन में पहली बार इस महान तथ्य को जानती थी कि इस बृहत निर्माण की एक-एक ईंट उसकी अपनी सम्पत्ति है—पराये श्रम पर जीने वाले किसी सेठ साहूकार की नहीं। स्पष्ट है कि इस बिचार ने जनता की भुजाओं में द्विगुणित बल और स्फूर्ति प्रदान की।

आज १५ वर्षों के कड़े परिश्रम के बाद, हम गर्व और सन्तोष के साथ अपनी सफलताओं को देख सकते हैं। क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से ज. ज. ग. कुल जर्मनी का केवल एक तिहाई है, लेकिन इस वर्ष के अन्त तक इसका औद्योगिक उत्पादन, सन् १९३६ के महायुद्ध पूर्व जर्मनी के उत्पादन के बराबर हो जायेगा। दूसरे शब्दों में कहना चाहें तो हम यह कह सकते हैं कि औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से सोवियत संघ, पश्चिमी जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस के बाद यूरोप में ज. ज. ग. का पांचवा स्थान है। विश्व केदस सब से अधिक विकसित औद्योगिक देशों में ज. ज. ग. एक है।

भारत और ज. ज. ग. का समान दृष्टिकोण

हम इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हैं कि अधिकांश महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर भारत सरकार और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार का समान दृष्टिकोण है। इस संदर्भ में, स्वर्गीय प्रधान मंत्री, स्व. जवाहरलाल नेहरू के दो ज[illegible] राज्यों के अस्तित्व, और जर्मन सम[illegible] के शांतिपूर्ण हल की अनिवार्य आवश्य[illegible] से संबंधित दिये गये उनके कई [illegible] विशेष उल्लेखनीय है। अगस्त, सन् १९[illegible] में लोकसभा में दिया गया पं. नेहरू [illegible] भाषण, उनकी जर्मन समस्या की स्पष्ट [illegible]कारी का ज्वलन्त प्रमाण है। इस भा[illegible] में व्यक्त किये गये विचार, उन [illegible] सुझाओं के बहुत निकट हैं जो जर्मन जन[illegible] गणतंत्र की राज्य परिषद् तथा सरकार [illegible] जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी[illegible] की सरकार को, जर्मन समस्या के हल के [illegible] समय-समय पर पेश किये हैं। लोक[illegible] के उक्त भाषण में पं. जवाहरलाल ने[illegible] बोले: "यदि जर्मनी का एकीकरण अ[illegible] है तो मेरे विचार में शांतिपूर्ण ढंग से [illegible] धीरे-धीरे ऐसा करने का एक ही रास्ता [illegible] और वह है पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी [illegible] बीच, व्यापार तथा अन्य विभिन्न संबंधों [illegible] बढ़ाना।..."

अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में भी [illegible] और ज. ज. ग. की सरकारों का एक[illegible] दृष्टिकोण है। दोनों देशों ने शांतिपूर्ण [illegible] जीवन के सिद्धांतों को, अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] में, अपनी बुनियादी नीति घोषित किया [illegible] इसी आधारभूत नीति ने, जनवरी [illegible] १९६३ में ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् [illegible] अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त को [illegible] चीन सीमा विवाद के अवसर पर यह [illegible]

पर बाध्य किया: "हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि भारत-चीन सीमा विवाद---जो हमारे विचार में बिल्कुल निरर्थक है---विश्व शांति तथा राज्यों के शांतिपूर्ण सह-जीवन के लिये अहितकर है, और इस से विश्व समाजवादी व्यवस्था के हितों को भी क्षति पहुंचती है।..."

भारत और ज. ज. ग. साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, शस्त्रीकरण और अणु-परीक्षणों का तीव्र विरोध करने में भी समान दृष्टिकोण रखते हैं। भारत, विश्व का पहला देश था जिसने मास्को परीक्षण प्रतिबंध संधि पर दस्तखत किये। इसी प्रकार ज. ज. ग. आठवां राज्य था जिसने विश्व महत्व की इस संधि पर हस्ताक्षर किये। हर आकार और प्रकार के उपनिवेशवाद का तीव्र विरोधी होने के नाते, ज. ज. ग. ने भारत के गोआ, दामन तथा दिव के मुक्ति-अभियान का शुरू से समर्थन किया।

सरकारी स्तर पर प्रथम संबंध: भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, सरकारी तौर पर अक्तूबर, सन् १९५४ में प्रथम संबंध स्थापित हुआ। उस मास में, हमारे दो देशों के बीच प्रथम व्यापार और भुगतान संधि पर दस्तखत हुये, और भारत (दिल्ली) में जर्मन जनवादी गणतंत्र का पहला व्यापार-दूतावास स्थापित हुआ। सन् १९५४ में हमारा व्यापार अपेक्षाकृत एक छोटी रक़म ---अर्थात् २.३ करोड़ रूपये की रकम से आरंभ हुआ। सन् १९६३ तक आते-आते, ज. ज. ग. और भारत का व्यापार लगभग ११ गुना हो चुका था---अर्थात् २३.२४ करोड़ रूपये तक पहुंच चुका था। इस वर्ष (१९६४) के अन्त तक यह व्यापार ३४.८५ करोड़ रूपये की रकम तक पहुंच जाने का अनुमान है। हमारे देशों के बीच भविष्य में भी, व्यापार बढ़ाने की बहुत गुंजाइश है।

ये आंकड़े यह तथ्य सिद्ध करते हैं कि समुद्र पार देशों में, ज. ज. ग., भारत के व्यापार में सब से बड़ा साझीदार है। भारत की दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान, बढ़ती हुई विदेश मुद्रा संबंधी कठिनाइयों को देखते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र सर्वप्रथम देश था जिसने सन् १९५८ में, रुपयों में भुगतान को वैध अदायगी का दर्जा दिया।

आयात-निर्यात की वस्तुएं: ज. ज. ग. भारत को मुख्यतय: मशीनें, इंजीनियरी उत्पादन, खादें और कच्ची फिल्म आदि निर्यात करता है। भारत द्वारा ज. ज. ग. को निर्यात की जा रही वस्तुओं में अभी कृषि उत्पादनों का ही प्राधान्य है। किन्तु भारतीय निर्यात की इन वस्तुओं में सन् १९६३ से काफी परिवर्तन शुरू हुआ है। अब भारत, ज. ज. ग. को, स्टोरेज बैटरियां जैसी इंजीनियरी वस्तुएं भी निर्यात करने लगा है। इस वर्ष से भारत, भारी गाड़ियां (ट्रकें) और टयर भी ज. ज. ग. को निर्यात करने लगा है।

भारतीय उत्पादकों और ज. ज. ग. की विदेश व्यापार संस्थाओं तथा कारखानों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिये, और भारतीय उत्पादनों के लिये ज. ज. ग. की मण्डी की जांच पड़ताल करने के लिये, बर्लिन (ज. ज.ग. की राजधानी) में एक भारतीय व्यापार-दूतावास का कायम हो जाना आवश्यक ही नहीं बल्कि अब अनिवार्य भी हो गया है। इस कदम के उठाने से ज. ज. ग. को भारतीय वस्तुओं तथा उत्पादनों का निर्यात काफी मात्रा में बढ़ जायेगा।

तकनीकी सहयोग: भारतीय फर्मों तथा कारखानों ने अभी जर्मन जनवादी गणतंत्र से प्राप्त होने वाली तकनीकी सहयोग की जबरदस्त संभावनाओ से अभी पूरा फायदा नहीं उठाया है, हालांकि इस सहयोग की शर्तें बहुत ही अनुकूल हैं। भारत की फर्में तथा उत्पादक बड़ी उदार और अनुकूल शर्तों पर मशीनों तथा तत्संबंधी उपकरणों के उत्पादन के लिये तकनीकी जानकारी और अन्य सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

सांस्कृतिक संबंध: राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में भारत और ज. ज. ग. के समान-हितों के इस संदर्भ में हमारे देशों में वर्तमान सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। सांस्कृतिक क्षेत्र में भी हमारे दो देशों के रिश्ते बड़ी तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप इसी वर्ष (१९६४) के फरवरी मास में भारत और ज. ज. ग. के बीच एक सांस्कृतिक तथा विनियम कार्यक्रम पर हस्ताक्षर हुये। ज. ज. ग. हर साल भारत सरकार को, कई छात्रवृत्तियां उपलब्ध करता है। इन छात्रवृत्तियों पर आज तक कई भारतीय विद्यार्थी तथा शोधार्थी उपाधियां और ट्रेनिंग प्राप्त करके भारत लौट आये हैं। उदाहरण के लिये आज तक ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय से ५० भारतीय शोधार्थी, इंजीनियरी में डाक्टरेट की उपाधियां लेकर लौटे हैं। दोनों देशों के वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, कलाकार आदि एक-दूसरे देश में आते-जाते हैं, और एक-दूसरे की समस्याओं को हल करने में हाथ बटाते हैं। दोनों देशों की सांस्कृतिक संस्थाओं ने भी एक-दूसरे से काफी अच्छे संपर्क कायम किये हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ, और भारत तथा ज. ज. ग. के संबंधों का एक दशक पूरा होने के इस दोहरे पुणीत अवसर पर कुल मिलाकर यह बात निस्संकोच कही जा सकती है कि कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर हमारे दोनों देशों का समान दृष्टिकोण है, जिसके फलस्वरूप भारत और ज. ज. ग. की मैत्री, सद्भावना, व्यापार और सहयोग विस्तृत और दृढ़ होता जा रहा है। इन संबंधों को अभी बहुत आगे बढ़ाया और गहरा किया जा सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।—

४० करोड़ रुपये की नयी करार

१२ सितम्बर, १९६४ के दिन भारत गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकारों के प्रतिनिधियों ने, एक लम्बी अवधि वाली व्यापार और भुगतान करार पर हस्ताक्षर किये । इस क़रार की अवधि सन् १९६५ से १९६७ तक है, और हस्ताक्षर होने से पहले, कई दिनों तक, दोनों देशों के सरकारी प्रतिनिधि-मण्डलों में काफी बातचीत हुई । जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओर से वहां के विदेश तथा अन्तर-जर्मन व्यापार के उपमंत्री, श्री कूर्त एप्परलाइन, और भारत सरकार की ओर से वित्त मंत्रालय के सचिव, श्री डी. एस. जोशी ने उक्त क़रार पर दस्तखत किये ।

उक्त क़रार के अनुसार आने वाले तीन वर्षों में, वस्तु विनिमय के परिणाम में काफी वृद्धि होगी । अनुमान लगाया गया है कि सन् १९६६ में, दोनों देशों का माल विनिमय दुगुना हो जायेगा सन् १९६३ की तुलना में । इस क़रार के अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र, केवल भारत की परंपरागत वस्तुएं जैसे चाय, काफी, कपड़ा, अभ्रक तथा पटसन आदि ही आयात करेगा, बल्कि वह भारत से स्टोरेज बैटरियां, कुछ इंजीनियरी वस्तुएं, रासायनिक उत्पादन और औषधियां आदि जैसे औद्योगिक उत्पादन भी आयात करेगा । इन आयातों के बदले में, जर्मन जनवादी गणतंत्र भारत को मुख्य रुप से इंजीनियरी सामान, मुद्रण यंत्र, विभिन्न प्रकार के तैयार तथा पूरे संयन्त्र (प्लांट), सूक्ष्म प्रकाशीय यंत्र और विद्युत-तकनीकी उत्पादन आदि निर्यात करेगा ।

अनुमान है कि इस नई क़रार के आधीन भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार ४० करोड़ रुपये तक पहुंच जायेगा - अर्थात् सन् १९६३ की तुलना में, इस व्यापार में १५ करोड़ रूपये से अधिक की वृद्धि होगी ।

करार पर हस्ताक्षर करते हुये ज. ज. ग. के उप विदेश व्यापार मंत्री, श्री कूर्त एप्परलाइन (बांईं ओर) और भारत के वित्त मंत्रालय के सचिव, श्री जोशी (दांई ओर)

भारत - ज. ज. ग. व्यापार के १० वर्ष

एच. जे. लेमनित्सर

(भारत में ज. ज. ग. के व्यापारिक प्रतिनिधि एवं वाणिज्य-सलाहकार)

७ अक्तूबर, १९४९ के दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना हुई। उस दिन से लेकर आज तक के १५ वर्षों के ज. ज. ग. के विकास में विदेश-व्यापार का महत्वपूर्ण हाथ रहा है। ज. ज. ग. की कुल जनसंख्या १ करोड़ ७० लाख है, और इसका प्रति व्यक्ति विदेश-व्यापार परिमाण १,३२१ रुपये है। यह परिमाण भारत के प्रति व्यक्ति विदेश-व्यापार परिमाण से लगभग ३३ गुना अधिक है। (भारत का प्रति-व्यक्ति विदेश-व्यापार परिमाण ४० रुपये है)।

अनेक देशों को जर्मन जनवादी गणतंत्र का निर्यात इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र का अर्थतंत्र बहुत विकसित है — विशेषकर इसके भारी तथा हल्के इंजीनियरी उद्योग, रासायनिक और विद्युत-तकनीकी उद्योग इत्यादि। लेकिन ज. ज. ग. के पास लिगनाइट को छोड़कर अन्य कच्चे माल की बहुत कम मात्रा है। इसलिये अपने औद्योगिक विकास के लिये वह अन्य देशों से बुनियादी कच्चा माल बहुत बड़ी मात्रा में आयात करता है। बहुत विकसित विशिष्ट औद्योगिक आधार प्राप्त करने के कारण ज. ज. ग. कुछ हद तक, खाद्य तथा कृषि उद्योग के उत्पादन भी आयात करता है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र आजकल, दुनिया के ११० से भी ज्यादा देशों के साथ व्यापारिक रिश्ते कायम कर चुका है। यह एक ज्ञात तथ्य है कि इसके इस विदेश-व्यापार का अधिकतर व्यापार पारस्परिक आर्थिक सहयोग परिषद (कोमेकोन) के सदस्य राज्यों के साथ होता है। ज. ज. ग. का विदेश व्यापार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, और इस बढ़ौती के साथ ही साथ समाजवादी देशों से इतर अन्य देशों के साथ भी ——विशेष कर अफ्रोएशिया के नवोदित, विकासशील राज्यों के साथ भी, इसका विदेश व्यापार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। अन्य क्षेत्रों की तरह, विदेश व्यापार के क्षेत्र में भी जर्मन जनवादी गणतंत्र की आधारभूत नीति है शांतिपूर्ण सहजीवन तथा मैत्रिपूर्ण सहयोग, अधिकारों की समानता और पारस्परिक लाभ। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह नीति अफ्रोएशिया के नवोदित राज्यों के लिये बहुत ही लाभदायक है।

इस लेख के लेखक, श्री लेमनित्सर (दायें), इंडियन कौंसिल फार सांइटिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च के महा-सचिव, डा. हुसैन ज़हीर (बायें) के साथ बात चीत कर रहे हैं। बीच में, भारत स्थित ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के भूतपूर्व वाणिज्य-सलाहकार, डा. एण्डरलाइन खड़े हैं

भारत और ज. ज. ग. की प्रथम व्यापारिक करार : जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना के पांच वर्ष बाद, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच, १५ अक्तूबर, १९५४ के दिन, प्रथम व्यापार-करार हुई। उस दिन तक ज. ज. ग. और भारत के बीच केवल नाम मात्र का व्यापार था, और वह भी ब्रिटेन तथा अन्य मध्यस्थों के माध्यम से होता था। लेकिन हमारे दो देशों के बीच प्रथम व्यापार करार होने के बाद से लेकर अब तक — अर्थात १० वर्षों में ——— भारत और ज. ज. ग. के व्यापार में जबरदस्त वृद्धि हुई है। सन् १९५४ में हमारे देशों के बीच केवल २.३१ करोड़ रुपये का व्यापार हुआ। लेकिन गत वर्ष (१९६३) तक यह व्यापार २३.२४ करोड़ रुपये की रकम तक पहुंचा था ——— अर्थात् लगभग ११ गुना बढ़ गया था। अनुमान लगाया गया है कि इस वर्ष (१९६४) के अन्त तक व्यापार की यह मात्रा काफी हद तक और बढ़ेगी।

दूसरी-व्यापार करार : भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच दूसरी व्यापार-करार हुई सन् १९५६ में। इस करार के अनुसार, भारत की राजधानी दिल्ली में ज. ज. ग. के प्रथम व्यापार-दूतावास की स्थापना हुई, और कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई में इस व्यापार-दूतावास ने अपनी शाखायें कायम कीं। इस प्रकार, हमारे दो देशों के बीच व्यापार बढ़ाने की संभावनायें बहुत बढ़ गयी।

भारत की, विदेश मुद्रा संबंधी कठिनाइयों को देखते हुये, सन् १९५८ में भारत और ज. ज.

ग. के बीच एक अनुपूरक करार पर दस्तखत हुये। इस करार के अनुसार जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भारत की राष्ट्रीय मुद्रा, अर्थात् रूपये को भुगतान का जरिया स्वीकार किया। दोनों देश इस बात पर सहमत हो गये कि माल-विनिमय से संबंधित भुगतान केवल भारतीय मुद्रा —— अर्थात् रूपये में हुआ करेगा। बाद में यूरोप के सभी समाजवादी देशों ने इस महत्वपूर्ण संधि का अनुकरण किया, और इस प्रकार रूपया-भुगतान का जन्म हुआ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार की यह निश्चित नीति है कि एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के विकासशील तथा नवोदित राज्यों के साथ स्थाई व्यापारिक संबंधों की स्थापना होनी चाहिए। इसी नीति को दृष्टि में रखते हुए हमारे देश की सरकार ने भारत के साथ, सन् १९५९ में प्रथम और इसी वर्ष के इसी मास में —— अर्थात् १२ सितम्बर, १९६४ के दिन —— दूसरी दीर्घकालीन व्यापार एवं भुगतान करार पर दस्तखत किये। इस नयी अर्थात् दूसरी दीर्घकालीन करार के अनुसार सन् १९६५ से १९६७ तक, भारत और ज. ज. ग. के बीच वस्तु विनिमय की मात्रा का मूल्य, सन् १९६६ में लगभग दुगना हो जायेगा सन् १९६३ की तुलना में ——अर्थात् ४० करोड़ रूपये से अधिक होगा।

भारत और ज. ज. ग. के बीच बढ़ता हुआ व्यापार दोनों देशों के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल है, क्योंकि इस व्यापार का मूलाधार है दोनों देशों के बीच सन्तुलित वस्तु विनिमय। राज्यकीय स्तर पर व्यापारिक संबंधों की स्थापना होने के बाद से लेकर आज तक जर्मन जनवादी गणतंत्र ने ३० करोड़ रूपये के मशीनी-यंत्र तथा अन्य इंजीनियरी वस्तुएं भारत को बेच दी हैं। इन वस्तुओं के अतिरिक्त मुद्रण-यंत्र, सूक्ष्म तथा मेकनिकी प्रकाशीय यंत्र, विभिन्न प्रकार के संयन्त्र तथा संबंधित उपकरण और विद्युत-तकनीकी सामान, काफी मात्रा में ज. ज. ग., भारत को, निर्यात करने लगा है। इस प्रकार के निर्यात में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

इन वस्तुओं के अतिरिक्त ज. ज. ग. पूरे के पूरे आक्सिजन तथा एसटिलीन के कारखाने, तेल निकालने के कारखाने, कास्टिक सोडा, कैलशियम कारबाइड तथा कृत्रिम रेशे बनाने के यंत्र, कपड़ा बुनने के पूरे कारखाने और बड़ी-बड़ी रोटरी मशीनें (छापखाने) आदि भारत को निर्यात कर रहा है। ज. ज. ग. के विश्वप्रसिद्ध कार्ल जाइस्स कारखाने ने भारत को एक तारागृह बेच दिया, जिसको हमारे देश के इंजीनियरों ने कलकत्ता में लगा दिया है।

राष्ट्रीय अर्थतंत्र को सुदृढ़ करने में योगदान: जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भारत के विकासशील राष्ट्रीय अर्थतन्त्र को, तकनीकी जानकारी उपलब्ध करके और नये औद्योगिक क्षेत्रों में कई नये उद्योग शुरू करके, विकसित तथा सुदृढ़ बनाने में हर संभव तरीके से सहयोग प्रदान किया है। भारत और ज. ज. ग. की विभिन्न व्यापारिक फर्मो ने तकनीकी सहयोग के कई समझोतों पर दस्तखत किये हैं। इन समझोतों के परिणाम स्वरुप जर्मन जनवादी गणतंत्र के अनेक इंजीनियर तथा विशेषज्ञ भारत आये और आ रहे हैं। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जर्मन जनवादी गणतंत्र कई मूल्यवान वस्तुएं जैसे मुद्रण यंत्र, टेक्साइटल मशीनें, कच्ची फिल्म, उर्वरक, विभिन्न रसायन, मशीनी औज़ार आदि भारत को निर्यात करता है।

ज. ज. ग. को भारत का निर्यात: इसी प्रकार भारत भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र को विभिन्न वस्तुएं निर्यात करता है। सरकारी स्तर पर भारत और ज. ज. ग. में व्यापारिक संबंधों की स्थापना से लेकर आज तक, भारत के निर्यात में (ज. ज. ग. को) बहुत वृद्धि हुई है। ज. ज. ग., भारत में रूपयों की अपनी संचित निधि से (जो वस्तुओं को बेच कर जमा होती है) भारत में अपने काम का सामान खरीद कर स्वदेश निर्यात करता है।

ज. ज. ग. का योजना-बद्ध अर्थतंत्र भारतीय वस्तुओं — पारपंरिक तथा औद्योगिक वस्तुओं के लिये एक उमदा मण्डी उपलब्ध करता है। खल्ली, मूंगफली, अखरोट गरी, मिर्च [illegible] अन्य मसाले, काफी, चाय, तम्बाकू [illegible] ऐसी ही दूसरी कृषि वस्तुएं मुख्य भाग [illegible] भारत के निर्यात का (ज. ज. ग. को)। इनमें से कुछ वस्तुओं का तो ज. ज. [illegible] मुख्य खरीदार है। पिछले वर्ष हमारे [illegible] ने भारत के कुल काफी निर्यात का [illegible] २४ प्रतिशत भाग आयात किया। भा[illegible] से मूंगफली के आयात में ज. ज. ग. प्र[illegible] और अमरीका दूसरे स्थान पर है। [illegible] प्रकार, भारत से खल्ली आयात करने [illegible] देशों में ज. ज. ग. उन कतिपय देशों में [illegible] एक है जो १ लाख टन खली आयात क[illegible] हैं।

नई दीर्घकालीन करार के अनुसार, ज. ज. [illegible] कुछ औद्योगिक उत्पादन भी भारत से आ[illegible] करेगा। इनमें उल्लेखनीय हैं स्टोरेज बैटरि[illegible] इंजीनियरी उद्योग के कुछ उत्पादन [illegible] कुछ रसायन तथा औषधियां।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि भा[illegible] जर्मन जनवादी गणतंत्र को, अपनी वस्[illegible] की आयात-मात्रा बहुत हद तक बढ़ा सक[illegible] है। इसके लिये भारत, हमारे देश की [illegible] की आवश्यकताओं को गहराई से देखे [illegible] बहुत अच्छा है। इस उद्देश्य की पूर्ति [illegible] लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधा[illegible] बर्लिन में, भारत के एक व्यापार-दूतावास [illegible] कायम होना बहुत ज़रूरी है। इस माध्यम [illegible] भारत, हमारे देश के विभिन्न कारखानों, [illegible] व्यापार संस्थाओं तथा फर्मों आदि से निकट [illegible] संपर्क स्थापित करके अपने देश के नि[illegible] को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पिछले १० वर्षों में, समाजवादी शिवि[illegible] बाहर, भारतवर्ष, जर्मन जनवादी ग[illegible] का समुद्रपार के देशों में सबसे बड़ा साझे[illegible] बन चुका है व्यापार में। यह एक अ[illegible] उत्साहवर्द्धक बात है जो दोनों देशों के [illegible] कल्याणकारी है। लेकिन यहां यह [illegible] अनुचित न होगा कि हमारे दो दे[illegible] व्यापार बढ़ाने की अनेक सम्भावनायें [illegible] मौजूद हैं।

भारत और ज. ज. ग. को

दृढ़ सूत्र में बांधने वाले | सांस्कृतिक संबंध

जब भी हम भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक संबंधों की बात करते हैं तो अनायास ही उन अनेक जर्मन मनीषियों तथा विद्वानों का चित्र हमारे सामने आ जाता है, जिन्होंने अपने सतत मनन और श्रम से, पश्चिम को, भारत की भव्य तथा श्रेष्ठ सांस्कृतिक परम्परा से परिचित कराया । बोप्प, वेब्बर, ल्यूडर्स, माक्स म्यूल्लर, गेटे, श्लेग्ल, शोपनहावर आदि जैसे अनेक जर्मन चिन्तकों और विद्वानों के नाम भारत में भी उतने ही प्रसिद्ध हैं जितने जर्मनी में । इन विद्वानों ने अपनी ज्ञान-साधना से जर्मनी के नाम को चार चांद तो लगाये ही, साथ ही उन्होंने भारत और जर्मनी के बीच निकटतम संबंधों की परम्परा का दृढ़ आधार भी तैयार किया ।

इन महान मानवतावादी जर्मन विद्वानों के अमूल्य अनुसन्धान की परम्परा को, दो में से एक जर्मन राज्य, अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न भारत-विद्या संस्थानों और जर्मन विज्ञान अकादमी के भारतीय विभाग में आगे बढ़ाया जा रहा है । अपने शोध कार्य द्वारा, प्रोफेसर रूबेन तथा प्रो. वेल्लर जैसे विश्वप्रसिद्ध प्राच्य-शास्त्री, और नई पीढ़ी के अनेक भारतीय-विद्याविद्, भारतवर्ष के भूत तथा वर्तमान को अपनी रचनाओं द्वारा अपने देशवासियों के सामने लार हे हैं ।. . . उदाहरण के लिये रवीन्द्रनाथ ठाकुर शताब्दी समारोह, जो ज. ज.ग. में मनाया गया सन् १९६१ में, बड़ा सफल रहा । इस अवसर पर ज. ज. ग. के अखबारों में और रेडियो पर रविठाकुर के जीवन और कृतित्व पर विशेष लेख लिखे पढ़े गये, उनकी रचनाओं के विशेष प्रकाशन छापे गये और उनके कुछ नाटक रंगमंच पर खेले गये । इस शताब्दी की पुणीत स्मृति में, बर्लिन की एक सड़क का नाम रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग रखा गया...।

रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग की सूचक-पट्टिका...और नीचे (बीच में) खड़े हैं स्व. डा. के. एम. अशरफ

इसी प्रकार भारत की महान विभूतियों बुद्ध, कालिदास तथा स्वामी विवेकानन्द के पुण्य दिवस भी मनाये गये जर्मन जनवादी गणतंत्र में । इस समय, बर्लिन स्थित जर्मन विज्ञान अकादमी **शहीद लाला लाजपतराय** की शताब्दी मनाने की धूमधाम से तैयारियां कर रही है ।—स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान-मंत्री, स्वं. जवाहरलाल नेहरू की ७५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर, बर्लिन में एक बृहत भारत प्रदर्शनी का आयोजन भी हो रहा है । इस विराट प्रदर्शनी के एक बड़े भाग में भारत के स्वाधीनता संग्राम और इस संग्राम में महात्मा गांधी तथा पं. जवाहरलाल नेहरू की विशिष्ट देन को चित्रों आदि द्वारा दिखाया जायेगा । इस सिलसिले में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने ९६ बड़े-बड़े फ्रेम-जड़े चित्र देने की कृपा की है । इस के लिये, ज. ज. ग के उप-प्रधानमंत्री, श्री माक्स सेरफिन ने भारत सरकार के प्रति आभार प्रदर्शन किया है । श्री सेरफिन ज. ज. ग. के जर्मन दक्षिण पूर्वी एशिया संघ के अध्यक्ष भी हैं । इसी संघ के तत्वावधान में उक्त प्रदर्शनी का आयोजन हो रहा है ।

सन् १९५६ से, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक संबंध प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं । इस सम्बंध में दोनों देशों के बीच कई वार्षिक योजनाओं पर सहयोग हो रहा है । इन योजनाओं के तहत ज. ज. ग. के अनेक वैज्ञानिक कलाकार, प्रोफेसर, डाक्टर आदि भारत यात्रा कर चुके हैं, और यहां के कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में भाग ले चुके हैं । ज. ज. ग. के कई डाक्टर, भारत के अनेक अस्पतालों में कठिन आपरेशन कर के लौट गये हैं । दोनों देशों की रेडक्रास सोसाइटियों के संपर्क स्थापित हुये हैं । भारतीय सर्जनों के संघ ने, ज. ज. ग. के सुप्रसिद्ध शल्यज्ञ, डा. हाबिल किर्श को अपना सदस्य बनाया है । ये प्रथम जर्मन डाक्टर है जिसको भारत में यह सम्मान दिया गया. .

रंगमंच और नाट्यकला में रुचि रखने में अनेक भारतीय दलों और जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वप्रसिद्ध बर्लिनेर एनसाम्बल (नाटककार ब्रेख्त द्वारा संस्थापित थियेटर) के बीच विचारों तथा अनुभवों का सक्रिय आदान प्रदान हो रहा है । सन् १९६३ में निर्माता हबीब तनवीर, नृत्यकला में निपुण बम्बई की माया राव तथा रीता देवी, और ब्रिटेन में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के एक सांस-

कृतिक दल ने ज. ज. ग. की यात्रा की। नृतय निपुण वजिफदार बहनों, भारतीय लिटिल बैले ट्रूप, मद्रास की कुमारी कमला के नृत्यों तथा प्रदर्शनों ने ज. ज. ग. की जनता को मुग्ध किया।—ज. ज. ग. के रंगमंच भी, समय समय पर, शकुन्तला तथा वसन्तसेना जैसे भारतीय नाटक खेलते हैं। आकाशवाणी (आल इण्डिया रेडियो) और ज. ज. ग. रेडियो आपस में संगीत रिकार्डों का आदान-प्रदान करते हैं।

छात्रवृति और प्रशिक्षण: जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारतीय नागरिकों को अमली ट्रेनिंग देने और अनुसन्धान करने के लिये वर्षों से छात्र-वृत्तियां दे रहा है। आज तक, ज. ज. ग. के केवल ड्रेस्डेन के तकनीकी विश्वविद्यालय से ५० से अधिक भारतीय शोधार्थी इंजीनियरी के विभिन्न विषयों में डाक्टरेट की उपाधियां प्राप्त कर चुके हैं। इस समय ज. ज. ग. के विभिन्न संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में १२० भारतीय विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण ले रहे हैं और अध्ययन कर रहे हैं।

सन् १९६३ में ज. ज. ग. के कई वैज्ञानिक तथा विद्वान, अपने विशेष क्षेत्रों में शोध के संबंध में भारत आये। इसी प्रकार, भारत से भी कई डाक्टर तथा अन्य विशेषज्ञ जर्मन जनवादी गणतंत्र गये अध्ययन तथा शोध के सिलसिले में। भारत में आयोजित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी ज. ज. ग. के प्रतिनिधि समय-समय पर भाग लेने आये हैं। उदाहरण के लिये, इसी वर्ष नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्यविद् सम्मेलन में, ज. ज. ग. के ११ प्राच्य-शास्त्री भाग लेने आये थे। इन में से अनेक जर्मन विद्वानों, जैसे डा. क्रूइगर. डा. स्पिट्स्वारद्त, डा. ह्यूबर तथा डा. हाइडरिख ने राष्ट्रीय अभिलेखागार, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, इंडियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अफेअर्स और कई कालिजों तथा संस्थानों में कई विद्वतापूर्ण भाषण दिये।

खेलकूद के क्षेत्र में भी भारत और ज. ज.ग. के संपर्क बढ़ रहे हैं। इस वर्ष के अप्रैल मास में ज. ज. ग. की राष्ट्रीय हाकी टीम ने भारत की विभिन्न टीमों के साथ पांच मैच खेले। चार भारतीय खेलकूद प्रशिक्षक आजकल, ज. ज. ग. के लाइपजिक स्थित शरीर विज्ञान तथा खेलकूद अकादमी में विशेष ट्रेनिंग पा रहे हैं। – ज. ज. ग. की हाकीटीम टोकियो ओलम्पिक खेलकूद समारोह में भाग लेकर भारत आयेगी और भारत में नवम्बर के महीने में, कई मैच खेलेगी।

भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के उपर्युक्त सांस्कृतिक संबंधों को २० फरवरी १९६४ के दिन एक दृढ़ आधार और ठोस आकार दिया गया। उस दिन दोनों देशों में 'सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विनिमय करार' पर दोनों देशों की सरकारों ने हस्ताक्षर किये। इन संबंधों को १३ मार्च, १९६४ के दिन और भी दृढ़ और विस्तृत किया गया, जबकि ज. ज. ग. की जर्मन विज्ञान अकादमी और 'भारतीय वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद्' के बीच पारस्परिक संबंध तथा संपर्क बढ़ाने के लिये एक पांच वर्षीय करार हुई।

इस वर्ष के फरवरी मास में जर्मन जनवादी गणतंत्र के बच्चों की एक प्रमुख संस्था 'एर्नेस्ट टेलमन्न पायोनियर संगठन' का एक बाल-दल भारत-यात्रा पर आया। यहां कई दिन बिताकर बहुत ही सुखद स्मृतियों को लेकर वे स्वदेश लौटे।... ज. ज. ग. की 'जन मैत्री लीग' ने जून में एक अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्र प्रदर्शनी आयोजित की थी। इस में ४१ देशों के बच्चों ने २०,००० चित्र बनाकर भेजे थे, जिन में से ४०० चित्र प्रदर्शनी के लिये चुने गये। इनमें भारतीय बच्चों के कई चित्र भी थे। ज. ज. ग. के अखबारों ने भारतीय बच्चों के चित्रों की बहुत प्रशंसा की। इसी प्रकार, 'शंकर्स वीकली' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्र प्रतियोगिता में ज. ज. ग. के ८ बच्चों को इनाम मिले।

मई (१९६४) मास में कलकत्ता 'बाल फिल्म प्रतिष्ठान' के तत्वावधान ज. ज. ग. की बाल फिल्मों का एक समारोह मनाया गया। १५ दिनों के समारोह में लगभग ३००,००० भार बच्चों ने १७ जर्मन बाल-फिल्में देखीं इस समारोह की सफलता के लिये प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक हा शुभकामना सन्देश भेजा था।

जिस दिन सारा भारत वर्ष जवाहर नेहरू के अचानक देहान्त के कारण, समुद्र में डूब गया, जर्मन जनवादी गण की जनता भी शोक संतप्त हो उठी। के हुम्बोल्त विश्वविद्यालय में एक शोक सभा हुई, जिसमें ज. ज. ग. के नागरि मंत्रियों, संसद सदस्यों तथा विद्यार्थियों भाग लिया।

गत मास में ही (अगस्त में) हुम्बो विश्वविद्यालय के गणित संस्थान के नि डा. लाण्डस्वर्ग ने, नई दिल्ली में आयो विज्ञान और राष्ट्र नामक अन्तर्राष्ट्रीय में भाग लिया। उनके भाषणों और पत्र की बहुत प्रशंसा हुई।... इसी (सितम्बर) के प्रारंभ में ज. ज. ग. के सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य-विशेषज्ञ डा. (श्रीम रापोपोंत और प्रो. दीकोफ्फ भारत स के स्वास्थ्य मंत्रालय के निमन्त्रण पर आये।

ऊपर के पृष्ठों में, भारत और जर्मन वादी गणतंत्र के बीच, पिछले एक में निरन्तर बढ़ते हुये सांस्कृतिक संपर्कों सम्बंधों का तथ्यों पर आधारित इस बात का प्रमाण है कि इन दो दे बीच इन रिश्तों के दृढ़ से दृढ़तर हो और अधिक से अधिक व्यापक होने की बहुत गुंजाइश है। इन दो शांति-प्रिय के ये सांस्कृतिक संबंध विश्व शांति सभी जनों की मैत्री को सुदृढ़ करेंगे।

भारतीय - विद्या का अध्ययन

लेखक : कार्ल फिशर

हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के भारतीय-विद्या संस्थान में शोध-सहायक

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में स्थित, हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के **भारतीय-विद्या संस्थान** का विकास, ज. ज. ग. के पिछले १५ वर्षों के विकास क्रम से सम्बद्ध है। वैसे, इस संस्थान का इतिहास काफी पुराना है। पिछली शताब्दी के आरम्भ में इसकी स्थापना हुई, और कालान्तर में यह महत्वपूर्ण संस्थान वोप्प तथा वेव्वर जैसे मनीषियों और प्रसिद्ध प्राच्य-शास्त्रियों के कार्य का सक्रिय केन्द्र वन गया। वेदों तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान और विश्व-प्रसिद्ध प्रच्य-शास्त्री **माक्स म्यूल्लर** ने भी इस संस्थान की गोष्ठियों तथा भाषणों आदि में काफी हिस्सा लिया। स्व. माक्स म्यूल्लर का जन्म सन् १८२३ में देस्साउ नामक एक कस्बे में हुआ, और सन् १८४३ में लाइपज़िक विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातक की उपाधि ली (देस्साउ और लाइपज़िक दोनों स्थान जर्मन जनवादी गणतंत्र के क्षेत्र में हैं)। सन् १९५० से, उक्त भारतीय-विद्या संस्थान, प्रोफेसर डा. रुबेन के निर्देशन में काम कर रहा है।

जीवन स्तर के बढ़ने के साथ-साथ जनता के ज्ञान का भण्डार भरने और उनकी सांस्कृतिक परिधि को अधिकाधिक विकसित करने की संभावनायें भी हमारे देश में बढ़ती जा रही हैं। भारत और ऐसे ही नवोदित राज्यों की पूरी जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा जर्मन जनवादी गणतंत्र में दिन प्रति दिन बढ़ रही है। जर्मनी में भारत से संबंधित रुचि कोई नई वस्तु नहीं, बल्कि सदियों पुरानी है। इस रुचि के पीछे भारत की तथाकथित रहस्यमयता तथा चमत्कारिता का आकर्षण भी था, लेकिन वास्तविक रुचि की जड़ें अधिक गहरी थीं। गेटे, श्लेगेन और शापनहाउवर जैसे मनीषियों तथा दार्शनिको ने भारतीय साहित्य तथा दर्शन का काफी गहरा अध्ययन किया। (यूरोप में) उनकी कृतियों ने भारतीय-दर्शन का व्यापक प्रभाव फैलाया। विश्वप्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक **कार्ल मार्क्स** ने भारतीय इतिहास और तत्कालीन भारतीय जीवन की समस्याओं का अध्ययन किया। इस क्षेत्र में उनके मूल्यवान अनुसन्धान ने, भारत संबंधी ज्ञान की सीमायें काफी विस्तृत कीं।

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के बारे में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता की रुचि उत्तरोतर बढ़ती जा रही है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद, अपने राष्ट्रीय निर्माण तथा विकास से संबंधित भारत के प्रयत्नों के बारे में भी हमारे लोग जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, भारत से संबंधित बढ़ती हुई दिलचस्पी का एक

कार्ल फिशर (दायें) भारतीय-विद्या संस्थान के शोध पुस्तकालय में
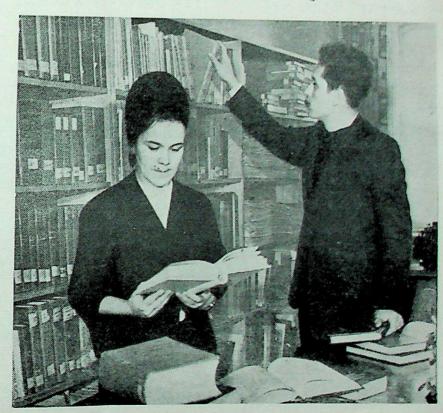
प्रमुख कारण है भारत सरकार की पंचशील पर आधारित नीति में दृढ़ आस्था। दो जर्मन राज्यों में से एक राज्य--अर्थात जर्मन जनवादी गणतंत्र भी शांतिपूर्ण सहजीवन की इसी नीति पर चलता है।

कई बातों में भारत और ज. ज. ग. का समान दृष्टिकोण, हमारे लोगों को काफी प्रभावित करता है। इसलिये हमारे 'भारतीय विद्या संस्थान' का एक मुख्य उद्देश्य है भाषणों, प्रकाशनों, गोष्ठियों आदि द्वारा भारत संबंधी ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाना।

भारतीय-विद्या के अध्ययन को हमारे संस्थान में जो नया आकार दिया गया है वह उतना ही नया है जितना जर्मन जनवादी गणतंत्र। इसलिये हमारे भारतीय विद्या-विद् भी अपेक्षाकृत नये हैं, और अभी वे अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर पूर्ण रूप में सामने नहीं आये हैं। लेकिन इस वर्ष के प्रारंभ में नई दिल्ली में आयोजित प्राच्य-शास्त्रियों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हमारे प्राच्य-विदों ने जो सक्रिय भाग लिया, वह इस बात का साक्षी है कि हमारे भारतीय विद्या-विदों की नई पीढ़ी, धड़ल्ले से सामने आ रही है।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन: हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के 'भारतीय विद्या संस्थान' में किस प्रकार का कार्य होता है? जाहिर है कि इस प्रश्न का उत्तर होगा: अध्ययन तथा अनुसन्धान। **संस्थान** तीन विभागों में विभाजित है। ये विभाग हैः भाषा विज्ञान, दर्शन तथा साहित्य, और इतिहास। **भाषा-विज्ञान विभाग** में जर्मन प्राध्यापकों के अतिरिक्त दो भारतीय भी पढ़ाते हैं। एक हिन्दी के रीडर हैं और दूसरे बंगला के लेकचरर। यह विभाग, सब से पहले, विद्यार्थियों के लिये पंचवर्षीय अनिवार्य हिन्दी पाठ्यक्रम तैयार करता और पढ़ाता है। आज तक ऐसे सभी छात्रों के लिये एक बुनियादी संस्कृत पाठ्यक्रम का पढ़ना भी अनिवार्य था। इसके अलावा, जर्मन विद्यार्थी अन्य भारतीय भाषायें, जैसे बंगला, उर्दू, तमिल, मलियालम आदि भी पढ़ते हैं। जर्मन विद्यार्थियों को आधुनिक भारतीय भाषायें सिखाने के लिये हमें बहुत कम पाठ्य-पुस्तकें और बहुत कम अनुभव उपलब्ध है। इसलिये इस विभाग में काम करने वाले लोग आधुनिक भारतीय भाषायें पढ़ाने के लिये पाठ्य पुस्तकें, शब्दकोश आदि तैयार करने में अपना अधिकांश समय व्यतीत करते हैं।

दर्शन तथा साहित्य विभाग में, जर्मन विद्यार्थियों के अलावा दो भारतीय विद्यार्थी भी अनुसन्धान कार्य कर रहे हैं। इस विभाग में प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय दर्शन और साहित्य का अध्ययन किया जाता है। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी, बंगला, उर्दू तथा तमिल साहित्य का अध्ययन शामिल है। इस विभाग के सदस्य ज. ज. ग. के प्रकाशन गृहों से संपर्क स्थापित किये हुये हैं। वे भारतीय साहित्य की अच्छी-अच्छी रचनाओं का जर्मन भाषा में अनुवाद कर के छापने में सहायता करते हैं। हमारे संस्थान के इस विभाग के कई विद्यार्थी यहां के कई प्रकाशन-गृहों में भी काम करते हैं।

'संस्थान' के **इतिहास विभाग** में भारतीय इतिहास और तदसंबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक भारत के आर्थिक विकास का इतिहास भी सम्मिलित है। सन् १९६० में, भारत के एक सुप्रसिद्ध इतिहासकार और दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, स्व. डा. अशरफ हमारे संस्थान में प्रोफेसर बनकर आये। उन्होंने संस्थान के इतिहास विभाग में **भारतीय सामन्तवाद का इतिहास** नाम से एक अनुभाग की स्थापना की। उन्होंने अपने आवासकाल में यहां भारत के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन पर कई सारगर्भित भाषण भी दिये। उक्त अनुभाग स्वर्गीय विद्वान् के अनथक परिश्रम का नतीजा और उनकी एक चिरस्मरणीय देन है।

हुम्बोल्त विश्वविद्यालय के 'भारतीय विद्या संस्थान' के तीन महत्वपूर्ण विभागों का उल्लेख करने के बाद, अब मैं संस्थान में विद्यार्थियों की ट्रेनिंग पर किंचित् प्रकाश डालना चाहूंगा। विद्यार्थियों को सम्यक ज्ञान प्रदान करने के लिये हमारा संस्थान, बर्लिन स्थित [illegible] **विज्ञान अकादमी** के प्राच्य-विद्या अनुसन्धान संस्थान के साथ निकटतम संपर्क रखता है। उपर्युक्त भारतीय भाषायें पढ़ाने के अतिरि[illegible] व्याख्यानों तथा विचार गोष्ठियों के लि[illegible] भी काफी समय दिया जाता है---विशेष[illegible] भारत के समसामयिक इतिहास के लिये भारतीय इतिहास से संबंधित व्याख्या[illegible] निम्न छः युगों में बांटे गये हैं: **आदिका[illegible] दास युग, सामन्त युग, उपनिवेशी शास[illegible] काल--सन् १८५६ तक, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन कालः सन् १९४७ तक, औ[illegible] स्वातन्त्र्योत्तर भारत**। भारतीय इतिहास [illegible] संबंधित उक्त व्याख्यान-माला के अला[illegible] भारतीय साहित्य, दर्शन, अर्थशास्त्र औ[illegible] राजनीति आदि पर भी विशेष व्याख्या[illegible] का आयोजन किया जाता है संस्थान में।

मानव सभ्यता तथा संस्कृति के विका[illegible] में भारत की बहुत देन है। हमारा भार[illegible] विद्या संस्थान जर्मन जनवादी गणतंत्र [illegible] जनता को भारत की भव्य सांस्कृतिक परं[illegible] से परिचित करने का अत्यन्त महत्व[illegible] कार्य कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में संस्था[illegible] ने **गौतम बुद्ध, कालिदास** और **रवि ठाकुर** [illegible] पुण्य स्मृति में समारोहों का आयोजन किया [illegible] पिछले वर्ष ही समारोह से संबंधित सम्मेलन [illegible] भारतीय विद्या संस्थान के प्राध्यापकों औ[illegible] विद्यार्थियों ने **स्वामी विवेकानन्द** शता[illegible] समारोह में सक्रिय भाग लिया। हमा[illegible] संस्थान का एक प्रतिनिधि, भारत में आयोजि[illegible] विवेकानन्द जन्मशताब्दी समारोह में भा[illegible] लेने के लिये भारत गया।

इन पृष्ठों पर मैं बर्लिन विश्वविद्याल[illegible] भारतीय-विद्या-संस्थान की केवल एक झां[illegible] दे पाया हूं। संस्थान में अध्ययन, अध्या[illegible] करते हुये हम अपने सामने यह भारतीय [illegible] सुभाषित रखते हैं: शास्त्र और ज्ञान [illegible] भण्डार अनन्त है, किन्तु हमारा समय (आ[illegible] सीमित है। -हम इस पवित्र उद्देश्य [illegible] प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं कि संस्थान औ[illegible] इसका कार्य जर्मन जनवादी गणतंत्र औ[illegible] भारत की जनता के संबंधों को अधिक [illegible] और विस्तृत करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

भारत में | ज. ज. ग. का विशेष दूत

१९ सितम्बर १९६४ के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के मंत्रिपरिषद् की उपाध्यक्ष, डा. (श्रीमती) ग्रेटे वितकोव्स्की भारत की राजधानी में पधारीं, भारत सरकार के साथ बातचीत करने के लिये। – डा. वितकोव्स्की, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त की विशेष दूत की हैसियत से भारत आयी थीं, और कई दिनों के व्यस्त कार्यक्रम के बाद स्वदेश लौट गयीं।

भारत आगमन के दिन, राजधानी के पालम हवाई अड्डे पर, भारत सरकार के उप विदेश-मंत्री, श्री दिनेश सिंह; नयाचार के उप-प्रमुख, श्री प्रेम शंकर; समाजवादी देशों के राजदूतों और भारत में ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूत बोत्तकर ने उनका भव्य स्वागत किया। विशेष दूत के साथ जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्रालय में दक्षिण-पूर्वी एशिया विभाग के प्रमुख, श्री हर्बर्ट फिशर भी थे (श्री फिशर कई वर्षों तक भारत स्थित, ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के उपप्रमुख रह चुके हैं – सं०)।

२० सितम्बर को, डा. ग्रेटे वितकोव्स्की राजघाट और शांति-वन गयीं, जहां उन्होंने महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू की समाधियों पर श्रद्धा के फूल चढ़ाये। इस के बाद वह आगरा गयीं ताज-महल देखने।

भारत आवास के दिनों में श्रीमती ग्रेटे विटकोव्स्की, भारत के उपराष्ट्रपति डा. ज़ाकिर हुसैन से मिलीं, और उनको, ज. ज. ग. की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का एक विशेष पत्र दे दिया। यह पत्र, राष्ट्रपति डा. राधा कृष्ण के नाम था।

उप-राष्ट्रपति से मिलने के अलावा, ज. ज. ग. की विशेष-दूत भारत के गृहमंत्री, श्री गुलज़ारी लाल नन्दा; विदेश मंत्री, श्री स्वर्ण सिंह; शिक्षा मंत्री, श्री मुहम्मद करीम छागला; सूचना एवं प्रसारण मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, और वाणिज्य मंत्री, श्री मनुभाई शाह से भी मिलीं।

भारत के बाद ज.ज.ग. की विशेष-दूत को बर्मा जाना था। बर्मा के लिये रवाना होने से पहले, श्रीमती ग्रेटे वितकोव्स्की ने एक प्रेस-कानफ़ेन्स में कहा कि भारत सरकार के प्रतिनिधियों के साथ उनकी बातचीत काफी लाभदायक रही। उन्होंने यह आशा प्रकट की कि उनकी भारत यात्रा, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के मैत्रिपूर्ण संबंधों को अधिक दृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगी। प्रेस कानफ़ेन्स में, पत्रकारों तथा पत्र-प्रतिनिधियों ने, डा. वितकोव्स्की से तटस्थ देशों के दूसरे सम्मेलन से (जो काहिरा में होनेवाला है) संबंधित और आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अन्य समस्याओं से संबंधित कई प्रश्न पूछे। एक प्रश्न का उत्तर देते हुये श्रीमती वितकोव्स्की ने कहा कि वह भारत सरकार के जिन मंत्रियों से मिलीं उन्होंने उनकी समस्याओं के प्रति समझदारी दिखाई।

डा. (श्रीमती) ग्रेटे वितकोव्स्की, भारत के विदेश-मंत्री, श्री स्वर्ण सिंह के साथ (बांयें)....और सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ (दायें)। दोनों चित्रों में श्री हर्बर्ट फिशर भी देखे जा सकते हैं जो ज. ज. ग. के विदेश-मंत्रालय के दक्षिण पूर्वी एशिया विभाग के प्रमुख हैं

रस-धारा

पतझड़ !

रचनाकार : निकरोलाउस लेनाउ (१८०२–१८५०) | रूपान्तरकार : ओम् पंडित 'पम्पोश'

बादल उदास, धूमिल वायु पतझर की,
अपनी गलियों में आवारा, अकेला
फिर रहा हूं मैं ।
झरे पात, पक्षियों की वाणी है रूद्ध––
आह, यह खामोशी दम घुटाती है ।
मैं अकेला हूं,...अकेला हूं ।

शिशिर – ठंडा जैसे मौत, आ रहा है,
सहम गया है हर्षोल्लास
कूल, कुसुमों का––
कभी झूमती, लहराती सुनहली फसलें
थकी हारी सो चुकी हैं, उदास खेतों में ।

ठंड की झकड़न बढ़ रही प्रतिक्षण,
शाम छाई है सवेरे ही,
घिर गये उद्यान कुहासे से,
कुंजों की सूनी आंखों से
झांक रही है वीरानी––
व्यथा से भर गया है
वातावरण सारा ।

हृदय, सुन रहो हो क्या
कोलाहल (करूण क्रन्दन)
भागते जल-प्रपातों का ?
काश, मैं समझ पाता
बहुत पहले
प्यार की धड़कन तुम्हारी,
तुम्हारे वे रसीले बोल
अनमोल !

न जाने कितनी बार
ओ हृदय मेरे
दर्द से तुम छटपटाये हो !
प्यार की पीड़ा, मिलन की आश के
दुर्दम क्षणों में

(शेष पृष्ठ ३० पर)

नयी धरती का गीत

रचनाकार : योहान्नस बखर (१८९१–१९५८)
रूपान्तरकार : ओम् पंडित 'पम्पोश'

वह दिन कितना सुन्दर था––
जिस दिन, शत शत कृषक, श्रमिक
निकल पड़े अपनी कुटियों से
कदम मिलाये कदमों से,
(कंधे से कन्धा भिड़ा दिया)
और रौंद दिया महलों का वक्ष,
झुका दिये उनके सदियों के दर्पोन्नत भाल––
वह दिन कितना सुन्दर था, शुभ था,
उस दिन वृद्धा धरती ने भी
अपना श्रृंगार किया था !

धरती मां का नव यौवन
फूटा था उस दिन एक बार फिर––
जिस दिन–सामंती ज़ंजीरों को
चकनाचूर किया था धरती के पुत्रों ने,
और बूढ़े खेतों की अछूती परतों ने
पंक्तिवद्ध, चमकीले ट्रैक्टरों की पैनी नौकों का
चुंबन पहली बार किया था ।
(मिट्टी ने आलिंगन किया था उनका) !

उस दिन, धरती के सस्मित अधरों से
फूटा था नया गीत––
जिस दिन, सामंती अंकुश से होकर आज़ाद
पहली बार ग्रामीणों ने
नये फसल को निर्भय होकर काटा,
चूमी उसकी देह
उस दिन उनका श्रम सार्थक हुआ था !

उस दिन कोई दास नहीं,
रहा न कोई स्वामी–––
(शोषण अशेष हुआ)
मुक्त, नई मानव-पीढ़ी का
धरती पर उस दिन से शासन था ।

वह दिन कितना सुन्दर––
कितना शुभ था !

ज.
ज. में
ग.

कुशल श्रमिकों का जीवन

हांस होफमान

मैं वाल्टर मर्टेन को कई वर्षों से जानता हूं। लेकिन हमारी यह जान पहचान बस में हर रोज की मुलाकात के समय नमस्कार तक ही सीमित रही है। मुझे इस बात का गुमान भी नहीं था कि काले बालों वाला वह नौजवान, बर्लिन के एक सब से बड़े भारी इंजीनियरी कारखाने में काम करता है। वह हर रोज़, "७ अक्तूबर" नामक सरकारी कारखाने के बस-स्टाप पर उतरता था, और कारखाने के लोहे के फाटक में चला जाया करता था।

एक दिन मैंने देखा कि श्री मर्टेन नाव-दौड़ तथा अन्य जल-क्रीड़ाओं के एक मासिक पत्र को बड़े गौर से देख रहा था। मुझ से न रहा गया। मैंने पूछ ही लिया उसे कि क्या वह भी हज़ारों बर्लिनवासियों की तरह आसपास फैले हुये झीलों में नाव खेने, मोटर-बोट दौड़ाने अथवा पाल-नावें चलाने का शौकीन है ?... जी हां, बिल्कुल—श्री वाल्टर मर्टेन ने फौरन जवाब दिया। उसने यह भी कहा कि वह चार-स्थान वाले एक मोटर-नाव का मालिक है और यदि मैं चाहूं तो वह मुझ को कभी मोटर-नाव में झील की सैर करा सकता है। भला इतनी अच्छी दावत मैं कैसे छोड़ सकता था।

एक दिन वितसुन त्यौहार की छुट्टियों में मैंने अपनी नाव छोड़ी जिसको खेने के लिये, चप्पुओं पर मुझे काफी मेहनत करनी पड़ती थी। उस दिन मैं, मर्टेन-परिवार के सुंदर और सुसज्जित मोटर-नाव में आराम से बैठा, मानों पंख लगाकर उड़ता जा रहा था, म्यूगेल झील के एक छोर से दूसरे छोर तक। दोपहर को, श्री मर्टेन और उनकी सुन्दर युवा पत्नी को मैंने, थोड़े से विश्राम और जलपान के लिये निमन्त्रित किया। झील के किनारे पर स्थित एक रेस्त्रां में हम बैठ गये। जलपान के साथ-साथ बातचीत भी चलने लगी।...

बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि वाल्टर मर्टेन एक कुशल मज़दूर है। कारखाने में काम करने के बाद उसके दो शुगल हैं: बर्लिन के झीलों में अपनी मोटर-नाव दौड़ाना, और ऐतिहासिक उपन्यास पढ़ना। ज. ज. ग. के सभी कुशल मजदूरों की तरह श्री मर्टेन को भी ऊंची ट्रेनिंग मिली है। १८ वर्ष की आयु में वह टरेट खरादिया बन चुका था (इस समय वह ३१ वर्ष का है)। अन्य सभी कुशल मजदूरों की तरह मर्टेन को भी अधिकाधिक पढ़ने की चाह है।

आजकल, श्री मर्टेन उक्त इंजीनियरी कारखाने के एक महत्वपूर्ण विभाग का इन्चार्ज है, और फोरमैन की परीक्षा पास करने की तैयारी कर रहा है। इस तैयारी के साथ ही साथ वह रूसी भाषा भी सीख रहा है। वाल्टर मर्टेन के शब्दों में रूसी भाषा सीखने का कारण यह है कि "मैं सीधे सीधे, रूसी तकनीकी साहित्य के माध्यम से सोवियत संघ में तकनीकी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं।" ...इस सारे काम में मर्टेन की सहायक है उसकी पत्नी जो बर्लिन के एक स्कूल में भौतिकी और रूसी भाषा पढ़ाती है।

मर्टेन परिवार सुखी और सुरक्षित जीवन गुज़ार रहा है। एक कुशल फोरमैन के नाते उसको औसत १००० मार्क (१ मार्क = ११२ पैसे) हर महीने मिलते हैं। उसकी शिक्षक-पत्नी को जो चार साल से स्कूल में पढ़ा रही है, ७५० मार्क मासिक वेतन है।...दो वर्ष पहले मर्टेन परिवार, बर्लिन के हाइनरिख हाइने भवन के तीन कमरों वाले एक नये और हवादार फ्लेट में आ गया है। इस फ्लेट में हर तरह की आधुनिक सुविधा प्राप्त है उनको। सुन्दर तैल चित्रों से दीवारें, और नवीन ढंग के सामान से उनके कमरे सजे हैं। बैठक के एक कोने में टेलिविजन रखा हुआ है। रसोई में रिफ्रिजिरेटर और गुसलखाने में कपड़े धोने की मशीन रखी हुई है। जाड़ों में कमरे गर्म रखने और गर्म पानी पाने की केन्द्रीय व्यवस्था है। ऐसे सुख सुविधाओं से पूर्ण फ्लेट के लिये मर्टेन परिवार को केवल ५० मार्क मासिक किराया देना पड़ता है (अर्थात ५६ रुपये)। गैस, बिजली तथा परिवहन आदि भी बहुत सस्ता है ज. ज. ग. में।

मर्टेन दम्पति का एक २ साल का बच्चा भी है। नाम है पीतर। हर प्रातः मां, पीतर को बर्लिन के ३३० आधुनिक किंडरगार्टेनों में से एक में छोड़ आती है। किंडरगार्टेन में बच्चों को हर रोज़ दूध और स्वादिष्ट खाना मिलता है जिसके लिये बच्चे के मां बाप को केवल १२.५० मार्क देने पड़ते हैं हर महीने। पढ़ाई निःशुल्क है। वास्तव में देखा जाये तो १२.५० मार्क भी उनको नहीं देने पड़ते, क्योंकि राज्य प्रत्येक बच्चे के लिये उसके मां-बाप को (चाहे उनकी आय कुछ भी हो) हर महीने २० मार्क की रकम देती है।

आजकल, मर्टेन-परिवार, ज. ज. ग. में बनाई जा रही "त्राबान्त" कार खरीदने के लिये पैसा बचा रहा है। एक साल में पति-पत्नी वांछित रकम बचा लेंगे, और तब मर्टेन परिवार अपनी मोटर खरीद लेगा। – लेकिन तब मैं हर रोज़ बस में वाल्टर मर्टेन को नमस्ते न कह पाऊंगा, क्योंकि वह अपनी मोटर में कारखाने जाया करेगा।

जर्मन हिन्दी टाइपराइटर : राष्ट्रपति को उपहार

सन् १९६१ में नई-दिल्ली में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेले' में गोदरेज-ओपतिमा हिन्दी टाइपराइटर का पहली बार प्रदर्शन किया गया था। स्व. प्रधान मन्त्री नेहरू इस टाइपराइटर पर उंगलियां चलाते हुये नज़र आ रहे हैं

३१ अगस्त, १९६४ के दिन राष्ट्रपति भवन में, भारत के राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को, श्री गोदरेज ने, गोदरेज-ओपतिमा हिन्दी टाइपराइटर पेश किया । यह हिन्दी टाइपराइटर, भारत की प्रसिद्ध फर्म गोदरेज और जर्मन जनवादी गणतंत्र के वेब ओपतिमा के संयुक्त प्रयत्नों तथा सहयोग का सुफल है । टाइपराइटर पेश करने के समारोह में, भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के कार्यवाहक प्रमुख, श्री के. एन. फेस्पर तथा यहीं के वाणिज्य-सलाहकार, श्री लेपिनित्सर भी उपस्थित थे ।

एक पखवाड़ा पहले, महाराष्ट्र राज्य के मुख्य मन्त्री, श्री. वी. पी. नायक को भी बम्बई में एक समारोह में ऐसा ही एक हिन्दी टाइपराइटर भेंट किया गया था। गोदरेज-ओपतिमा हिन्दी टाइपराइटर के ऐसे ही कई माडल, भारत के विशिष्ट व्यक्तियों को पेश किये जायेंगे ।

उक्त हिन्दी टाइपराइटर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में बनाये गये हैं, और जल्दी ही भारत में भी इनका उत्पादन शुरू होगा।...

महाराष्ट्र के मुख्य-मंत्री श्री नायक को एक विशेष समारोह में जर्मन हिन्दी टाइपराइटर भेंट किया गया । (चित्र में) श्री नायक समारोह में भाषण दे रहे हैं ↓

भारतीय बच्चों ने ज. ज. ग. में स्वाधीनता दिवस मनाया

कुछ समय पहले, भारतीय बच्चों का एक दल जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा करने गया है । आजकल यह दल, कार्ल मार्क्स स्तादत में जर्मन जनवादी गणतंत्र की बाल-संस्था 'पयोनियर्स' के ५ वें सम्मेलन में भाग ले रहा है । भारत के इन बच्चों ने अपने देश का स्वाधीनता दिवस––अर्थात् १५ अगस्त, कई देशों के साथ यहां मिलकर मनाया ।...

'बाल गीत' गाते हुये, उक्त सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी बच्चे, कार्ल मार्क्स स्तादत (नगर) की सड़कों पर जलूस बनाकर निकले सुसज्जित सड़कों के दोनों ओर खड़े लोगों ने, तालियां बजा-बजा कर इस ... का हार्दिक स्वागत किया । जर्मन जनवादी

भारत—ज. ज. ग.

गणतंत्र के एक बाल-पयोनियर ने अपने भारतीय बाल साथियों के गले में रंग-बिरंगे फूलों के हार डाले । इसके बाद दुनिया के अनेक देशों से आये हुए ४२ बाल प्रतिनिधि दलों ने भारत के बाल-दल को फूलों के हार पहनाये ।

भारत में ज. ज. ग. का एक व्यापार प्रतिनिधि मण्डल

जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक सरकारी व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डल यहां से भारत के लिये रवाना हुआ है । इस प्रतिनिधि–मण्डल का नेतृत्व कर रहे हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश व्यापार उपमंत्री, श्री कुर्त एप्पारलाइन । उक्त, व्यापारिक प्रतिनिधिमण्डल, १८ अगस्त को नई दिल्ली पहुंचा । वहां, यह ज.ज.ग. और भारत के बीच, वस्तु-विनिमय तथा आर्थिक सहयोग के विस्तार के लिये भारत सरकार के प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहा है ।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डा० गोपाल रेड्डी

नेल्लोर में ज. ज. ग. की कला प्रदर्शनी

१७ जुलाई, १९६४ के दिन, भारत के भूतपूर्व मंत्री, डा. बी. गोपाल रेड्डी ने यहां के कोओपरेटिव सैन्ट्रल बैंक के हाल में, **जर्मन कला प्रदर्शनी** का उद्घाटन किया । इस समारोह की अध्यक्षता, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार-दूतावास की मद्रास शाखा के प्रतिनिधि, श्री, एच. जे. पोइके कर रहे थे । उद्घाटन समारोह में आये हुये अतिथियों का स्वागत किया नेल्लोर के **भारत-जर्मन मैत्री संघ** के महा सचिव, श्री के. पुरुषोत्तम राव ने ।

उक्त 'कला प्रदर्शनी' में, विश्वप्रसिद्ध ड्रेस्डेन आर्ट गैलरी के चित्रों की अनुकृतियां और जर्मन जनवादी गणतंत्र के चित्रकारों द्वारा बनाये गये चित्र और ग्राफ-चित्र प्रदर्शन के लिये रखे गये थे । ...प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुये, डा. गोपाल रेड्डी ने कहा कि इस प्रकार की प्रदर्शनियां विभिन्न देशों की सांस्कृतिक परंपराओं को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं । उन्होंने यह भी कहा कि भारत जैसा सहिष्णु और कला पारखी देश किसी भी देश से घृणा नहीं करता । भारतवासी, अन्य विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं वाले देशों में रहने वाले लोगों के जीवन को समझने के लिये बहुत उत्सुक हैं । यही कारण है कि भारत द्वारा अपनाई गयी तटस्थ नीति की चारों ओर से प्रशंसा होती है । भाषण का अन्त करते हुये भूतपूर्व मंत्री ने कहा कि भारतवासी जर्मन प्राच्य शास्त्रियों के आभारी हैं जिन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति को दुनिया के सामने लाया ।

ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के श्री पोइके ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों को विस्तृत और सुदृढ़ करने पर बल दिया । उन्होंने नेल्लोर के भारत-जर्मन मैत्री संघ के दो देशों की जनता में मित्रता बढ़ाने के सद्प्रयत्नों की भी प्रशंसा की । ...उक्त प्रदर्शनी दो दिन तक चली और इन दो दिनों में ही नेल्लोर के सैकड़ों लोगों ने उसको देखा ।

ज. ज. ग. के खेलकूद अधिकारी भारतीय शिक्षा मंत्री से मिले

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख खेल-कूद संस्था 'खेलकूद फेडरेशन' के अध्यक्ष, श्री मानफ्रेद एवाल्द और वहां की 'राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति' के महामंत्री, श्री हेलमुत बेरेनद्त ने अगस्त मास में, भारत के शिक्षा मंत्री, श्री छागला से भेंट की । ज. ज. ग. के इन दो खेलकूद अधिकारियों ने, अपने देश में टोकियो ओलम्पिक खेलकूद समारोह संबंधी तैयारियों से, मंत्रि महोदय को अवगत किया । इसके अतिरिक्त, भारत के शिक्षा मंत्री के साथ उन्होंने, ज. ज. ग. और भारत की खेलकूद संस्थाओं के बीच आपसी संबंध बढ़ाने के प्रश्नों पर भी बातचीत की।... उक्त अधिकारी, बाद में भारतीय शिक्षा मंत्रालय के सचिव श्री कपूर से भी मिले ।

ज. ज. ग. के भारवाहक पोत भारत के लिये सामान ला रहे हैं

जर्मन जनवादी गणतंत्र के चार मालवाहक पोत वहां से माल लेकर भारत की विभिन्न बन्दरगाहों की ओर चल पड़े हैं । 'बर्लिन' तथा 'एरफुर्ते' नामक जहाज भारत की बेदीपुन्दर नामक बन्दरगाह पर, और 'श्वेरिन' तथा 'ऐडगर आन्द्रे' क्रमशः मद्रास तथा बम्बई की बन्द्रगाहों में माल उतारेंगे ।

ज. ज. ग. के इन चार मालवाहक पोतों के अलावा, १०३००० टन वजन वाला 'काएते नीदेरकिर्खनर' नामक वहा का एक और नया मालवाहक जहाज आजकल, रोस्टोक की बन्दरगाह में माल भर रहा है भारत ले जाने के लिये । इस माल में कई प्रकार के उर्वरक भी शामिल हैं । यह जहाज, पिछले महीने (अगस्त), में ही ज. ज. ग. के वारनौ पोत निर्माण कारखाने में बनकर तैयार हुआ है । इसकी लम्बाई १४२ मीटर है, और यह जर्मन जनवादी गणतंत्र के मालवाहक पोत बेड़े का १०३ वां जहाजहै ।

ज. ज. ग. | ५०० कारखाने निर्यात कर चुका है

गेरहार्द केगल

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने आज तक, लगभग दुनिया के सभी देशों को ५००, पूरे और तैयार संयन्त्र तथा कारखाने निर्यात किये हैं। ये कारखाने प्रत्येक देश विशेष की जल-वायु और स्थानीय स्थिति के अनुरूप बनाये गये है। ज. ज.ग. के इन कारखानों को, अन्य देशों के औद्योगिक उत्पादन के विकास में बहुत अच्छा काम करने के लिये राजकीय पुरस्कार प्रदान किये गये हैं। ज. ज. ग. द्वारा समाजवादी देशों को लगभग ४०० बड़े कार-खानों का निर्यात, समाजवादी दुनिया के आर्थिक निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

अफ्रो-ऐशिया के नवोदित राज्य, जर्मन जनवादी गणतंत्र के औद्योगिक संयत्रों में सब से अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं। उदाहरण के लिये उन्होंने, समुद्र के जल से नमक पैदा करने के ४६ कारखाने, ज. ज. ग. से खरीद लिये। ये विकासशील राज्य, ज. ज. ग. की विदेश व्यापार संस्थाओं के निर्यात कार्य-क्रम में शामिल लगभग १०० विभिन्न प्रकार के कारखानों में गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं।

उक्त नवोदित राज्यों में, ज. ज. ग. आज तक, ६६ बड़े औद्योगिक कारखाने लगा चुका है। ये कारखाने उन देशों को अपना कच्चा माल स्वयं इस्तेमाल करने में सहायता देते हैं। दूसरे शब्दों में इसका मतलब यह है कि ज. ज. ग. के ये कारखाने इन देशों को, तमाम गौण-उत्पादनों और वर्ज्य पदार्थों को भी शोधित करके उनको उपयोगी बनाने के अतिरिक्त साधन भी उपलब्ध करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इससे इन देशों की समृ[द्धि] बढ़ जाती है। उदाहरण के लिये चीनी उत्पा[दक] कारखानों को लीजिये। चीनी उत्पादक कारखा[नों] का मुख्य काम है चीनी तैयार करना। ज. ज. ग. के नवीनतम चीनी उत्पादक का[र]खाने २ घण्टे में लगभग ६ टन चीनी उत्पा[दन] की क्षमता रखते हैं। इस मुख्य काम [के] अतिरिक्त ये कारखाने बर्फ, मदिरायें, ग्लूटेमि[क] अम्ल, नीबू का सत, कारबोनिक अम्ल, और खमीर जैसे गौण-पदार्थ भी तैयार करते हैं।

इसी प्रकार, हाल ही में इन्डोनेशिया ने जर्मन जनवादी गणतंत्र से पूरा और तैया[र] तेल खोजने तथा शोधने का एक कारखा[ना] खरीद लिया। यह कारखाना जहां एक ओर भारी मात्रा में तेल उत्पादन करता है वहीं दूसरी ओर इसके अन्य विभाग विभिन्न प्रकार के गौण उत्पादन भी पैदा करता है। यहकार खाना हर साल, सूरजमुखी फूलों के ५०० टन गिरी से तेल निकालेगा। अति-रिक्त यंत्रों तथा मशीनों के लग जाने से इन्डोनेशिया में ज. ज. ग. का उक्त कारखाना अखरोट और नारियल (गिरी) से भी तेल निकालना शुरू करेगा। ज. ज. ग. इस कारखाने का एक गौण-उत्पादन अर्थात् सेलाद तेल इन्डोनेशिया से खरीद लेगा।

ज. ज. ग. तो संयन्त्र निर्यात के क्षेत्रों में पारंपरिक स्थिति को पहुंच गया है। अन्य निर्यातों में, जैसे रासायनिक कारखानों के निर्यात में, ज. ज. ग. विश्व ख्याति अर्जित कर चुका है। ज. ज. ग. की पारंपरिक निर्यात वस्तुओं में मुख्य वस्तुएं हैं: वस्त्र संयन्त्र, सीमेंट बनाने के कारखाने, चीनी के कारखाने और ब्रिकेट फैक्टरियां।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

ज. ज. ग. द्वारा निर्यात की गयी आटे की कई मिलें, भारत के विभिन्न स्थानों में चालू हैं
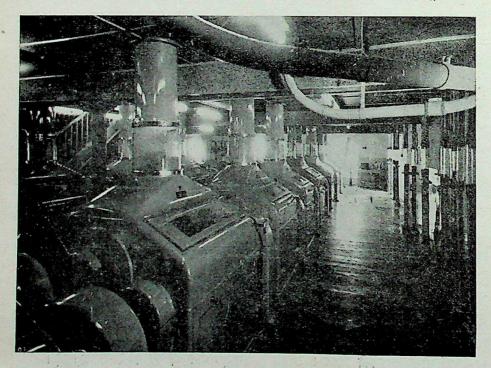
आजतक जर्मन जनवादी गणतंत्र ने दुनिया के ५२ देशों को, ७४ वस्त्र बुनने के तैयार और पूरे के पूरे कारखाने सप्लाई किये हैं। हाल ही में इन्डोनेशिया ने ३०,००० तकलियों वाली कपड़ा बुनने की एक तैयार मिल के लिये आर्डर दिया है। यह कारखाना सामान्य सूत के अलावा संश्लिष्ट रेशों (टेरिलीन, डेडोरौन आदि) से भी वस्त्र तैयार कर सकेगा इस प्रकार के तैयार और पूरे कारखानों में कताई, बुनाई, धुलाई और सुखाने आदि की सभी मशीनें सम्मिलित होती हैं। संयुक्त अरब गणराज्य में ज. ज. ग. ने चार कताई मिलें लगाने के अलावा, शिबिन-एल-काम नामक स्थान पर १०००,००० तकलियों वाला, कपड़ा बुनने का एक कारखाना भी लगा दिया है। तुर्की ने भी ज. ज. ग. से, दो कताई मिलें और कपड़ा बुनने के ५ पूरे और तैयार कारखाने खरीद लिये हैं। इसी प्रकार सीरिया और कोलम्बिया ने भी इसी तरह के कई कारखाने आयात किये हैं ज. ज. ग. से।

आज तक ज. ज. ग. ने १२६ तापीय बिजली घर निर्यात किये हैं। इसमें अरब गणराज्य को सप्लाई किया गया एक भारी बिजली घर भी शामिल है। लिग्नाइट (भूरा कोयला) उत्पादन में दुनिया में प्रथम स्थान होने के कारण ज. ज. ग. अन्य देशों को बड़े-बड़े खदान यन्त्र, पूरे के पूरे और तैयार ब्रिकेट संयन्त्र आदि निर्यात कर सकता है। इन कारखानों की दैनिक उत्पादन क्षमता ५०० से लेकर ६००० टन (कोयला) है।

ज. ज. ग. के सीमेन्ट कारखाने भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। ज. ज. ग. आज तक, अन्य देशों को, १०० सीमेन्ट कारखाने निर्यात कर चुका है। हर तरह के पत्थर अलग करने और कूटने के यंत्र, और प्रत्येक आकार प्रकार में सप्लाई किये जाते हैं। इन यन्त्रो की वार्षिक क्षमता (पत्थर कूटने आदि की) २००,००० से लेकर १,४००,००० घन मीटर है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का रसायन-उद्योग बहुत विकसित है। इसलिये इस क्षेत्र में भी ज. ज. ग. आज कल ३० प्रकार के
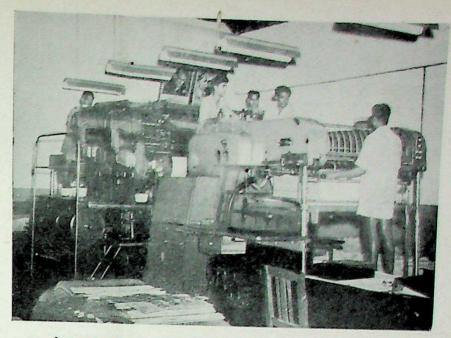
मद्रास के एक छापाखाने में भारतीय मुद्रक ज. ज. ग. की एक छपाई-मशीन पर काम कर रहे हैं

रासायनिक कारखाने तथा यंत्र निर्यात कर रहा है। अन्य देशों को निर्यात किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के इन रासायनिक कारखानों में से विशेषकर आक्सीजन तथा नाइट्रोजन उत्पादन के संयन्त्रों की मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। इन विशिष्ट कारखानों की उत्पादन क्षमता १६,००० घन-मीटर प्रति घन्टा तक हो सकती है। जर्मन जनवादी गणतंत्र ने आज तक ऐसे ४० आक्सीजन उत्पादन कारखाने विभिन्न देशों को निर्यात किये हैं।...आधुनिक इस्पात कारखानों में, जिनका आधार एल. डी. विधि है, बहुत बड़े परिमाण में आक्सीजन का उपयोग होता है। इसलिये विकासशील देशों को आक्सीजन उत्पादक कारखानों की बहुत आवश्यकता है। इसी प्रकार पूर्णित दूध, काफी और चारा तैयार करने वाले जर्मन जनवादी गणतंत्र के यंत्रों की बहुत ज्यादा मांग है अन्य देशों में।

पश्चिमी यूरोप के देशों में उच्च-निर्वात (हाइ वैकुअम) तकनीक के लिये, औषधियों के सोखन तथा केबलों का निर्वात-व्यापन (वेकुअम इम्प्रेग्नेटिंग), और कृत्रिम तन्तु उत्पादन तथा पोलियामाइड चिप्स को साफ करने के लिये मुख्यतः जर्मन जनवादी गणतंत्र की मशीनें ही इस्तेमाल होती हैं।.. तेल शोधक कारखानों, और यूरिया, मेथानोल तथा शुद्ध इथाइलीन के संयंत्रों का निर्यात भी बढ़ने लगा है। सोडा और कारबाइड उत्पादन की ज. ज. ग. की विधियां, विश्व मान्य तकनोलोजी में गिनी जाती हैं। आज-कल ज. ज. ग., दुनिया का सब से बड़ा कार-बाइड कारखाना बना रहा है। ज. ज. ग. के, रासायनिक संयंत्र के निर्यात कार्यक्रम में सन् १६७० तक, अन्य कारखानों के अतिरिक्त निम्न रसायनों के उत्पादन संयन्त्र भी शामिल हो जायेंगे : फोमेलीन, कापरी-लैक्टम, कैल-शियम कारबाइड, पी. वी. सी. पोलि-थाइलीन, पोलिप्रोपाइलीन, स्टाइरीन और पोलिस्टाइरीन।

ज. ज. ग. का भारी इंजीनियरी उद्योग भी बहुत विकसित उद्योग है। ज. ज. ग. के कुल यन्त्र-निर्यात में ५० प्रतिशत हिस्सा इंजीनियरी सामान का है। इस देश के भारी इंजीनियरी संयन्त्रों की विश्व व्यापी मांग है। धातु उद्योग में जर्मन जनवादी गणतंत्र के इंजीनियरी यंत्रों की खास मांग है।

(शेष २१ पृष्ठ पर)

ड्रेस्डेन ललित-कला कालेज

पीतर नीके

१७वीं १८ वीं शती की वास्तुकला शिल्प से निर्मित ड्रेस्डेन नगर को सब से पहले किसने "एल्बेफ्लोरेन्स", अर्थात 'एल्बे तट का फ्लोरेन्स' का सुन्दर नाम दिया वह अज्ञात है । इटली के फ्लोरेन्स नगर की तरह, जो अनुपम वास्तु-शिल्प और सुन्दर कला के लिये सदियों से विश्वविख्यात है, ड्रेस्डेन में भी दर्शक को वास्तु-शिल्प, मूर्तिकला, चित्रकला और संगीतकला के अनुपम नमूनों का साक्षात्कार होता है । एल्बे नदी के तट पर स्थित इस नगर के कला-भण्डार को, सदियों पहले, यहां के महलों और अट्टालिकाओं में रहने वाले सामन्तों तथा कुंवरों ने सुन्दर तथा अमूल्य कला कृतियों से भर दिया था । तब यह भण्डार उनकी निजी सम्पत्ति थी । लेकिन आज, जर्मन जनवादी गणतंत्र की समस्त जनता ड्रेस्डेन की इस अमर और अनुपलब्ध कला-भण्डार की मालिक है । एक दुखद दृश्य जो आज भी मन को मसोस लेता है वह है ड्रेस्डन के वे घाव जो दूसरे महायुद्ध के १९ वर्ष बाद भी भर नहीं पाये हैं । फरवरी, १९४५ की उस भयंकर कालरात्रि को कभी नहीं भुलाया जा सकता जिस रात ड्रेस्डेन पर, बिना किसी अर्थ के (क्योंकि तब तक हिटलर की सेनाओं की कमर टूट चुकी थी), तीन लाख (३०००,०००) आग लगाने वाले, और दो हजार (२,०००,) भारी विस्फोटक बम बरसाये गए ।

ड्रेस्डेन नगर में २०० वर्ष पुराना एक संस्थान है जिसने इसके सांस्कृतिक विकास और कला संबंधी ख्याति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इस संस्थान का नाम है "ड्रेस्डेन का ललित-कला कालेज" । वर्तमान काल में भी इस कला-संस्थान ने ड्रेस्डेन के पुनर्निर्माण में काफी सहायता दी है । अब यह कालेज जर्मन जनवादी गणतंत्र के सांस्कृतिक जीवन के विकास पर भी काफी प्रभाव डाल रहा है । – हाल ही में ड्रेस्डेन के इस ललित-कला कालेज ने अपनी दूसरी जन्म-शती मनाई । इस अवसर पर, न केवल यूरोप के ही, बल्कि तमाम दुनिया के कला-प्रेमियों और बौद्धिकों ने भी शुभ-कामना सन्देश भेजे इस कला-संस्थान को ।

२०० साल पहले, सन १७६४ में एक माण्डलिक नरेश 'इलैक्टर आगस्ट तृतीय' (जो पोलैण्ड का राजा भी था उन दिनों) के राज्य की राजधानी–अर्थात् वर्तमान ड्रेस्डेन में, कलाओं की सामान्य अकादमी की बुनियाद डाली गई । यह वह समय था जबकि सप्त वर्षीय युद्ध के कुप्रभावों के कारण, उस समय के माण्डलिक-राज्यों में दुख और दरिद्रता छा गई थी । उक्त अकादमी कलाओं को विकसित करने की प्रेरणा से स्थापित की गई हो ऐसी बात नहीं । इसकी स्थापना के पीछे एकमात्र उद्देश्य था हस्तकला तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादनों का निर्यात बढ़ाना ।

ड्रेस्डेन के प्रसिद्ध दुर्ग के निर्माता, स्व. दानियल पोयपेलमन्न 'कला अकादमी' की स्थापना के प्रबल समर्थक थे । उनकी मृत्यु के बाद, जब उक्त अकादमी की स्थापना हुई, प्रसिद्ध जर्मन वास्तुकार स्व. गोतफ्रीद जेम्पर ने इस 'कला आकदमी' के विकास और दृढ़ीकरण में अपनी समस्त शक्ति लगाई । इस महान वास्तुकार द्वारा बनाये गये 'ड्रेस्डेन आपेरा भवन', 'वियाना बुर्ग थियेटर' तथा अन्य इमारतें १८वीं १९ वीं शताब्दी के जर्मन-वस्तु शिल्प के अत्यन्त महत्वपूर्ण नमूने हैं । स्व. अनतोन ग्राफ्फ, जो स्विटज़रलैण्ड से आये थे, अपने समय के सब से बड़े रूपचित्रकार थे, जिन्होंने लगभग अपने समकालीन [illegible] प्रतिभावान तथा वरिष्ठ जनों के [illegible] बनाये हैं । इनके अलावा 'कला अक[illegible] के और ड्रेस्डेन के सांस्कृतिक विस्तार में [illegible] जर्मन बौद्धिकों तथा मनीषियों ने [illegible] अमूल्य योगदान दिया उनमें से कुछ [illegible]खनीय नाम हैं: एर्नस्त रीतशैल, एर्नस्त यूलि[illegible] हानेल, आद्रियन लुडविग रिखतेर, [illegible] वान कारोल्ज़फे‌ल्द

फ्रांस की बुर्जुआ क्रांति से सारा [illegible] प्रभावित हुआ । यह प्रभाव बहुमुखी [illegible] सांस्कृतिक क्षेत्र इस क्रांति से विशेष प्रभा[illegible] हुआ ।

ड्रेस्डेन की उक्त कला अकादमी चूंकि [illegible] के निरंकुश तथा व्यक्तिगत विचारों [illegible] आश्रित थी, इसलिये क्रांति के प्रभाव [illegible] उसके सन्मुख संकट पैदा किया । नव[illegible] अभिजात वर्ग, नरेशों की शक्ति को हर [illegible] सीमित करना चाहते थे । जर्मनी का [illegible]जात वर्ग भी शासन, राजनीति, सांस्[illegible] जीवन आदि में अपना अधिकार [illegible] लगा । सामंती शासनतंत्र और दरबारी [illegible] डांवाडोल होने लगे । कला-क्षेत्र में इन [illegible] और प्रगतिशील विचारों के प्रवर्तक [illegible] चित्रकार काज़पार डैविड फ्रीदरिख [illegible] गोतफ्रीद ज़ेम्पर, और ८० वर्ष बाद [illegible] डिक्स, जो आज भी सक्रिय हैं । लेकिन [illegible] शासन ने सभी प्रगतिशील प्रवृत्तियों का [illegible] किया । इस दमन -चक्र ने इतना [illegible] रूप धारण किया ड्रेस्डेन में कि गोत[illegible] जेम्पर को अपनी जान बचाने के लिये [illegible] से भागना पड़ा, और ओत्तो डिक्स को [illegible] फासिस्तों ने (वर्तमान शताब्दी के [illegible] दशक में) जर्मनी से निष्कासित किया [illegible] हिटलरी बर्बरता और फासिस्तवाद के [illegible] काल में जर्मनी से, आइन्सटाइन जैसे [illegible] विख्यात वैज्ञानिकों, प्रोफेसरों, कला[illegible] आदि को जर्मनी से निकाला गया और [illegible] में से जो बाकी बचे उनके विचारों तथा [illegible] आदि पर जबरदस्त रोक लगा दी गई । [illegible] अपने विचारों को अभिव्यक्त करने

दुस्साहस किया, उनको नाज़ियों ने जेलों की काल कोठरियों में बन्द कर दिया ।...

सन् १९४५ में जब फासिस्तवाद की कालरात्रि के साथ हिटलर की तानाशाही का भी अन्त हुआ, और क्षत-विक्षत जीवन ने पुनर्निर्माण के अमृत का पान आरंभ किया तो, ड्रेस्डेन की कला अकादमी को भी नया जीवन मिला । लेकिन अकादमी नये जीवन के पथ पर सन १९४९ के बाद ही निर्बाध गति से दौड़ने लगी, क्योंकि इस वर्ष जर्मनी का विभाजन हुआ, और जर्मन भूमि पर दो राज्यों की स्थापना हुई । पश्चिमी जर्मनी के फेडरल गणराज्य ने तो लकीर का फकीर की नीति ही अपनाई, लेकिन दूसरे राज्य, अर्थात जर्मन जनवादी गणतंत्र ने समाजवादी निर्माण का विशाल और मानवीय मार्ग अपना लिया ।

'ड्रेस्डेन ललित-कला कालेज' में (उपर्युक्त 'कला अकादमी' का अब यही नया नाम है) अब बीसियों नौजवान लड़के लड़कियां विभिन्न कलाओं का अध्ययन करते हैं । इस कालेज में चित्रकारी, वास्तुकला, संगीत, ग्राफ-डिज़ाइन आदि के विभिन्न विभाग हैं । अध्ययन की अवधि समाप्त होने पर कालज के स्नातकों को बाकायदा विश्व-विद्यालय की उपाधि मिलती है ।

हाल ही में, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, प्रोफेसर रूडोल्फ बेरगान्दर, ललित कला कालेज के नये रेकटर नियुक्त हुये हैं । प्रोफेसर महोदय ने ही हमें 'कला-अकादमी' के इतिहास का परिचय दिया । उन्होंने हमें कालेज भवन और इसके विभिन्न विभाग दिखाये । उनको इस बात का गर्व है कि सन १९३३ तक वे स्वयं भी इसी अकादमी के विद्यार्थी थे ।... प्रो. बेरगान्दर और उनके अन्य मित्रों ने बहुत ही कठिन परिस्थितयों में पढ़ा था 'अकादमी' में । लेकिन आज, कालेज में पढ़ने वाले छात्र-छात्रायें बहुत खुश किस्मत हैं जिनमें से ८८ प्रतिशत को राज्य की ओर से छात्रवृत्तियां तथा अन्य आर्थिक सहायता मिलती है । इन विद्यार्थियों में से अधिकांश ऐसे हैं जो आधुनिक सुविधाओं से युक्त आरामदेह और सुन्दर छात्रावास में रहते हैं । सामाजिक दृष्टि से, पुरानी अकादमी और आज के कालेज में दाखिला लेने वाले, छात्रों की संख्या के आंकड़े बहुत दिलचस्प हैं । सन १९०८ से १९३३ तक निम्न वर्गों के केवल १५ प्रतिशत छात्र अकादमी में दाखिला ले सके थे, जबकि आज 'ललित-कला कालेज' में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों की ७० प्रतिशत संख्या मजदूर और किसान परिवारों से आती है ।

'ललित-कला कालेज' ने सायंकालीन प्रशिक्षण का भी प्रबन्ध किया है । ऐसे श्रमिक तथा अन्य नौकरी पेशा लोग जो दिन में अध्ययन के लिये नहीं आ सकते, काम से छुट्टी पाने के बाद विभिन्न कलाओं का अध्ययन करने आते हैं। कालेज में इस समय ऐसे ७० विद्यार्थी यहां पढ़ाई करते हैं ।

जिन लोगों में कला-प्रतिभा के दर्शन होते हैं, उनके लिये हफ्ते में तीन बार अध्ययन का विशेष प्रबन्ध किया गया है । उन का यह अध्ययन तीन वर्ष तक चलता है । इस अवधि में से अपनी कला विशेष में उच्च उपाधियां प्राप्त करने के योग्य बन जाते हैं । इन लोगों में से सब अच्छे शिक्षार्थियों को ड्रेस्डेन 'ललित कला कालेज' में, अथवा ज. ज. ग. के अन्य तीन कला स्कूलों में से किसी एक में दाखिल किया जाता है ।

'ललित कला कालेज' के विद्यार्थी और प्राध्यापक, कालेज और कला अध्ययन तक ही अपने आपको सीमित नहीं रखते । गांवों और सहकारी खेतों में जा कर किसानों का मनोरंजन करने के अलावा वे उन के काम में भी उनका हाथ बटाते हैं । उदाहरण के लिये कालेज के विद्यार्थी हर साल फसल काटने के समय, 'वान्नेविल्स' नामक सहकारी खेत के किसानों की सहायता करते हैं । किसानों की सहायता करने के अतिरिक्त उनमें से कई एक ने उनके दैनिक जीवन को अपने चित्रों, मूर्तियां आदि का विषय भी बनाया है । इस सारे कार्य में कालेज के प्रोफेसर तथा प्राध्यापक अपने विद्यार्थियों के साथ रहकर उनके काम में हिस्सा लेते हैं । गांव के किसान उनकी संगीत गोष्ठियों, चित्रकला प्रदर्शनियों, नाटकों आदि में आकर विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाते हैं ।

ड्रेस्डेन 'ललित कला कालेज' से निकले हुये वास्तुकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों आदि की कला की छाप सारे जर्मन जनवादी गणतंत्र के मुख्य नगरों तथा कस्बों जैसे रोस्टोक, बर्लिन, लाइपज़िक, आइज़ेन-हुएत्तेनस्ताद, ड्रस्डेन इत्यादि के नव निर्मित फ्लेटों, आलीशान भवनों, कला गैलरियों आदि की संरचना पर देखी जा सकती है ।...कालेज के प्रोफेसरों, प्राध्यापकों और स्नातकों में चार राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, पांच राष्ट्रीय विशिष्ट सेवा पदक विजेता, और दो कला पुरस्कार विजेता भी हैं ।...

ड्रेस्डेन 'ललित-कला कालेज' ज. ज. ग. में आकार पाते हुये नये जीवन के कला संबंधी तकाज़ों को पूरा करने में एक ऐतिहासिक भूमिका आदा कर रहा है । इस नये जीवन का आधार है समाजवादी निर्माण और मानवीयता ।

'ललित-कला कालेज' के स्टूडियो में दो विद्यार्थी
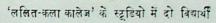
लाइपज़िक का शरद्कालीन व्यापार मेला

इस वर्ष, ६ से १३ सितम्बर तक जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रसिद्ध लाइपजिक नगर में, एक बार फिर पारंपरिक शरद्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला लगा। इस व्यापार मेले में लगभग ८० देशों के हज़ारों दर्शकों, फर्मों और प्रदर्शकों ने भाग लिया।

उक्त मेले की गतिविधि पर जिस तथ्य ने बहुत प्रभाव डाला इस वर्ष, वह था जर्मन जनवादी गणतंत्र और सोवियत संघ के बीच हाल ही में हुई मैत्री एवं सहायता संधि। इस संधि के अनुसार दोनों देश एक-दूसरे के आर्थिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास में सहयोग देंगे। स्पस्ट है कि इससे ज. ज. ग. की औद्योगिक क्षमता में तीव्र विकास होगा।

शरद्कालीन लाइपजिक मेले की एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह मेला, जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना की १५ वीं वर्षगांठ के कुछ ही दिन पहले, आयोजित हुआ। ज. ज.ग. की स्थापना हुई है ७ अक्तूबर, सन् १९४९ के दिन। इसलिये मेले में भाग लेने वाले, प्रदर्शकों और फर्मों को, पिछले १५ वर्षों में ज. ज. ग. का विकास देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हाल ही में, ज ज, ग. के इस निरन्तर विकास का, एक बार फिर प्रमाण मिला। यह देखा गया है कि १९६४ के प्रथम छः महीनों की आर्थिक योजना का लक्ष्य न केवल पूरा ही किया गया है, बल्कि सन् १९६३ की इसी अवधि की तुलना में, उत्पादन में ७ प्रतिशत वृद्धि भी हुई है। इसी प्रकार, विदेश व्यापार में १० प्रतिशत वृद्धि हुई। –लोगों का सामान्य जीवन स्तर काफी बढ़ गया, और कृषि उत्पादन की वृद्धि भी बहुत उत्साह वर्द्धक रही। इस सवर्तोमुखी वृद्धि तथा विकास ने जर्मन जनवादी गणतंत्र को इस योग्य बना दिया है कि वह दुनिया के सभी देशों के साथ व्यापार बढ़ा सकता है। एसा करना स्वयं जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिक विकास और अन्य देशों के विकास के लिये काफी श्रेयस्कर है।

उत्तम उत्पादन : सफलता के साधन विश्व व्यापार और आर्थिक सहयोग के लिये

इस वर्ष के, उक्त शरद्कालीन व्यापार मेले का मुख्य नारा था : उत्तम उत्पादन सफलता के साधन विश्व व्यापार और आर्थिक सहयोग के लिये। मेले में भाग लेने वाले प्रदर्शकों तथा व्यापार संस्थाओं ने, उच्च कोटि की उपभोक्ता तथा तकनीकी वस्तुएं प्रदर्शित करके, इस नारे को कार्यान्वित किया था। मेले में भाग लेने वाले देशों ने, अपने आरक्षित प्रदर्शन-क्षेत्र को काफी बढ़ा दिया था इस बार। उदाहरण क लिय यूगोस्लाविया ने अपने प्रदर्शन–क्षेत्र को दुगना कर दिया था। भारत ने, जो समुद्र-पार देशों में सब से बड़ा भाग लेने वाला देश है, पिछले वर्ष से ४० प्रतिशत अधिक क्षेत्रफल घेर लिया था अपने मण्डपों के लिये। पश्चिमी जर्मनी की फर्मों ने १० प्रतिशत, और प... बर्लिन के व्यापारियों ने ३० प्रतिशत अधिक प्रदर्शन ... बुक किया था इस साल। ये उदाहरण इस तथ्य का प्रमाण है ... लाइपजिक मेला, पूर्व और पश्चिम के बढ़ते व्यापार का अत्यन्त म... पूर्ण संगमस्थल बन चुका है।

नवोदित राज्यों के साथ, सन् १९५५ से १९६२ तक, समाज... देशों के आयात और निर्यात व्यापार में ३०६.९ प्रतिशत की ... हुई। इस अवधि में, पूंजीवादी राज्यों के साथ उनका वस्तु-वि... २१६.८ प्रतिशत बढ़ा। समाजवादी देशों की इस महत्वपूर्ण व्या... वृद्धि में, ज. ज. ग. के लाइपजिक व्यापार मेलों का काफी बड़ा हाथ ...

लाइपजिक के उक्त शरद्कालीन मेले में, जर्मन जनवादी ग... द्वारा प्रदर्शित चीजों ने यह बात सिद्ध कर दी कि जर्मन जनवादी ... तंत्र का उपभोक्ता- वस्तु उद्योग, उच्चतम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ... चुका है। इस साल, ज. ज. ग. ने कई नयी वस्तुएं और अधिक वि... उत्पादन मेले में प्रदर्शित किये थे। इन चीजों ने मेले में भाग लेने ... विशेषज्ञों, प्रदर्शकों और सामान्य दर्शकों का समान रूप से ध्यान आ... किया।

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी, ज. ज. ग. के तकनीकी चै... ने, मेले में कई गोष्ठियों का आयोजन किया। अनुमान लगाया ... है कि इस वर्ष के शरदकालीन व्यापार मेले में समाजवादी दे... १५,००० विशेषज्ञ और पूंजीवादी देशों के २३,००० विशेषज्ञ ... थे, और इनमें से अनेक विशेषज्ञों ने तकनीकी चैम्बर द्वारा आयो... गौष्ठियों में भाग लिया।

लाइपजिक मेला दफ्तर विभिन्न देशों की सर्वश्रेष्ठ वस्तुओं ... स्वर्ण पदकों से सम्मानित करता है मेले की समाप्ति पर। इन व... के निर्माता, दुनिया के प्राचीनतम व्यापार मेले द्वारा प्रदान किये ... इस सम्मान पर गर्व करते हैं। इस संदर्भ में इस तथ्य का उ... करना अनुचित न होगा कि पहले साल, भारत की एक व्यापार ... मेसर्स जयश्री एण्ड गार्डन्स को, लाइपजिक व्यापार मेले में एक ... पदक से सम्मानित किया गया था।

गत वर्ष के शरद् कालीनव्यापार मेले में (सन् १९६३ में) ... के विभिन्न व्यापारी प्रदर्शकों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की ... व्यापार संगठनों के साथ ३ करोड़ ८० लाख रूपये की रक... व्यापारिक करार किये। इसी प्रकार मेले में भाग लेने वाली ... ८० देशों की व्यापार-फर्मों के साथ लाखों रूपयों का व्यापार ...

(शेष पृष्ठ २५ पर)
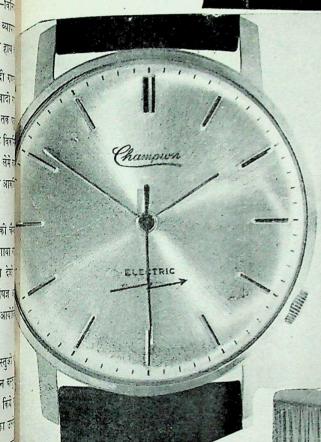
लाइपज़िक के

शरद्कालीन

व्यापार मेले में

प्रदर्शित कुछ वस्तुएँ

चिट्ठी पत्री

प्रिय महोदय,

निवेदन यह है कि आपके द्वारा परि-चालित जर्मन जनवादी गणतंत्र की **सूचना पत्रिका** नमूने के लिए एक प्रति मेरे पते पर भेज कर आभारी करें। आशा करता हूं कि सूचना पत्रिका की एक प्रति भेजने का कष्ट करेंगे। कष्ट के लिए क्षमा।

प्रदीप शर्मा
बारामपुर (आसाम)

महोदय,

मैं सूचना पत्रिका हिन्दी का, स्थाई पाठक होना चाहता हूं। कृपया पूर्व जानकारी के साथ पत्रिका की एक प्रति नमूने के तौर पर भेजने की व्यवस्था करें।

भवदीय
रामानन्द सिह
सेलेंगहाट (आसाम)

आदरणीय सम्पादक जी,

आपकी **सूचना पत्रिका** यहां पुस्तकालय में नियमित रूप से मिल रही है, इसके लिए आपको धन्यवाद। हमारे पाठकों को यह बहुत पसन्द आई है। आशा है आप पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।

जब के अगस्त अंक में श्री पंपोश का कोई अनुवाद नहीं छपा जिस की बहुत इन्तजारी थी। आप अगर हर अंक में किसी एक कविता का अनुवाद दे दिया करें तो इसकी रोचक्ता में चार चान्द लग जाएंगे।

मशकूर आलम
बुलन्दशहर (उ.प्र.)

महोदय,

मुझे जर्मन-जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास से प्रकाशित **सूचना पत्रिका** प्राप्त हुई जो २० जून १९६४ की है। इसमें मेरी रुचि के अनुकूल कई विषय मिले। मुझे जर्मनी के सांस्कृतिक जीवन के सम्बन्ध में कुछ जानने की उत्सुकता है। मैं इस पत्रिका की सदस्या बनना चाहती हूँ। इसका वार्षिक चन्दा क्या होगा लिखने की कृपा करियेगा।

'सूचना पत्रिका' का अगला हिन्दी संस्करण भेज दीजिए। यह भी सूचित करिये कि यह पत्रिका क्या जर्मन एंव इंगलिश भाषाओं में प्रकाशित होती है?

भवदीय
विजयलक्ष्मी सिंह
(वाराणसी)

महोदय।

आपकी **सूचना पत्रिका** हमें गत एक वर्ष से नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। इधर अपने प्रचारक, सदस्य, एवं जनसाधारण व्यक्ति आपकी पत्रिका बड़े उत्साह से देखते, पढ़ते हैं।

हमारी शुभ कामनायें आप बन्धु स्वीकार कीजिएगा। भविष्य में कृपा बनाए रखिएगा।

आंध्र प्रदेश में स्थित हमारी संस्था हिन्थी प्रचार समिति के लिए जर्मन-जनवादी गणतंत्र के संबंध में कुछ अपना साहित्य (पुस्तकें) समय २ पर भेजने की व्यवस्था करेंगे तो हम आप के बहुत ही आभारी रहेंगे। आशा है अब की बार अवश्य जर्मन के संबंध में कुछ पुस्तकें हमें इधर भेजेंगे। शेष कुशल।

भवदीय
प्रकाशकुमार
जहीराबाद
(आंध्र प्रदेश)

सादर प्रणाम

मैं आप का जर्मन जनवादी ग
नामक **सूचना पत्रिका** पढ़ना चाहती हूँ
इसलिए आप कृपया मेरे नाम पर
पत्रिका भेज दें।

आप
(कु.) मैरी ए.
शेरतल्ली (के

बहुमान्य संपादक,

मेहरबानी करके 'जर्मन गणतंत्र
हिन्दी में प्रकाशित होने वा
सूचना पत्रिका की एक प्रति मेरे लि
भेज दीजिये। कोई खास निबंध
हो तो लिख भेजिये।

के. वि. मा
कोट्टयम (केर

आदरणीय महोदय,

आपकी **सूचना पत्रिका** मुझे नि
प्राप्त हो रही है। पं. नेहरू के निधन
ज. ज. ग. में जो शोक मनाया गया वह स
नीय है। श्री उल्ब्रिख्त ने इस सम्बन्ध
जो कुछ कहा उसकी मैं प्रशंसा क
हूं। आपने पत्रिका के स्थायी
रसधारा में महान कवि **गेटे** की जो
प्रकाशित की वह बहुत ही सुन्दर ल
इस पत्रिका से मुझको बहुत जान
मिलती है। ज. ज. ग. पश्चिमी ज
से समझौता करने के लिए कितना उत्सु
यह श्री उल्ब्रिख्त के व्याख्यानों से स्पष्ट
ज. ज. ग. ७ अक्तूबर को १५ वर्ष पूरे करे
इतने अल्प समय में इसने जितनी उन्नति
है वह भारतवासियों के लिए एक
उदाहरण है। भारत और ज. ज.
सम्बन्ध और बढ़ते जा रहे हैं। भारत
औद्योगीकरण में ज. ज. ग. का भी मह
हाथ है। यह पत्रिका वहां के रहन-सहन
वातावरण को प्रकट करने में पूर्ण दक्ष है।

मुझे आशा है कि यह 'पत्रिका' मुझे
में भी मिलती रहेगी और मैं आपके

(शेष ३० पृष्ठ पर)

तथ्य और आंकड़े

१३ अगस्त, सन १९६१ का दिन जर्मन जनवादी गणतंत्र के इतिहास में एक ऐतिहासिक दिन है। उस दिन ज. ज. ग. की सरकार ने पश्चिम बर्लिन के साथ, अपनी खुली राज्य सीमा को बन्द करके अपनी इस सीमा को ठोस रूप दिया—अर्थात उस दिन सरकार ने विश्वप्रसिद्ध बर्लिन की दीवार खड़ी कर दी। इस कंक्रीट दीवार के निर्माण से पहले, पश्चिम बर्लिन के तस्कर और तोड़-फोड़ करने वाले तत्व जब और जहां चाहते जर्मन जनवादी गणतंत्र की अर्थव्यवस्था और सुरक्षा को क्षति पहुंचाया करते थे। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि १३ अगस्त, १९६१ से पहल—अर्थात् दीवार खड़ी होने से पहले—जर्मन जनवादी गणतंत्र को ३० अरब मार्क (१ मार्क=१.१२ पैसे) की क्षति उठानी पड़ी थी। लेकिन दीवार खड़ी करके अपनी खुली राज्य-सीमा को बन्द करने के बाद, ज. ज. ग. को कितना लाभ हुआ, निम्न तथ्य तथा आंकड़े इसका उज्जवल प्रमाण है:

★१३ अगस्त, १९६१ के बाद, ज. ज. ग. की राजधानी, बर्लिन का भव्य निर्माण हुआ है। 'कास्मास' और 'इण्टरनेशनल' नामक दो शानदार सिनेमा बने हैं जिनमें क्रमशः १०००, और ६१० व्यक्तियों के लिये बैठने की जगहें हैं। कार्ल-मार्क्स आले में 'मास्को रेस्त्रां', उनतर-देन-लिन्दन में 'आपेरा काफे' और ३८३ कमरों वाले विराट होटल 'बर्लिनो' तामीर हुये हैं। उनतर-देन-लिन्दन में स्थित दो ऐतिहासिक भवनों, 'कोमानदानतेन हाउस' और 'आर्त्त पालाइ' को अपना पूर्वाकार तथा गरिमा प्रदान की गई है। इसके अलावा शिक्षा मंत्रालय भवन, विदेश व्यापार संस्था का नया भवन, राज्य परिषद भवन, अध्यापक भवन और कांग्रेस हाल की तामीर लगभग समाप्त हो चुकी है।

*　*　*

★१९६१ से १९६३ तक यहां के (बर्लिन के) पांच क्षेत्रों में २६ कमरों वाले ५ नये स्कूल तामीर किये गये हैं,

*　*　*

★४७८० बच्चों के लिये ४८ किंडरगार्टेन स्कूल, २२२६ शिशुओं के लिये ३७ शिशु-गृह और ६ शफाखाने खोले गये हैं,

*　*　*

★बर्लिन नगर रेल को २७ किलोमीटर बढ़ा दिया गया है।

*　*　*

★सन् १९६१ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र का कुल सामाजिक उत्पादन १४१ अरब मार्क था। सन् १९६४ के अन्त तक यह उत्पादन १६४ अरब मार्ग तक पहुंच जायेगा।

*　*　*

★सन् १९६१ में, इंजीनियरी उद्योग में १००० मार्क मूल्य के उत्पादन के लिये ४९ घण्टे लगते थे, लेकिन सन् १९६३ में इसी मूल्य का उत्पादन केवल ४३ घण्टे में होता था।

*　*　*

★सन् १९६१ में, ज. ज. ग. की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में १५.५ अरब मार्क का निवेश था। सन् १९६४ के अन्त तक यह निवेश १७.३ अरब मार्क तक पहुंच जायेगा।

*　*　*

★२१ जुलाई, सन् १९६४ के दिन ज. ज. ग. के लुएबेनाड बिजलीघर का, जो १० करोड़ वाट्ट बिजली पैदा करता है, १६वां जनरेटर चालू हुआ। यह यूरोप का सब से बड़ा बिजलीघर है, और इस वर्ष के अक्तूबर मास तक इस बिजलीघर की क्षमता १३ करोड़ वाट्ट तक पहुंच जायेगी।

*　*　*

★सन् १९६१ में १०० में से ९.५ परिवारों के पास यहां टेलिविजन थे। इस वर्ष १०० में से ५० परिवारों ने टेलिविजन खरीदे हैं।

*　*　*

★इसी प्रकार सन् १९६१ में, १०० में से ९.५ घरों में कपड़े धोने की मशीनें थीं। लेकिन सन् १९६४ में १०० में से २० घरों के पास यह मशीनें हैं।

*　*　*

★सन् १९६१ में प्रति १०० परिवारों पर केवल ९ घरों के पास रिफ्रिजिरेटर था, लेकिन सन् १९६४ में १०० में से ९९.६ परिवारों ने रिफ्रिजिरेटर खरीदे हैं।

व्यापार मेला . . . .

(पृष्ठ २२ का शेष)

भारत के व्यापारियों का अन्य देशों की व्यापार-फर्मों के साथ यह लेन-देन, भारत और ज. ज. ग. के निरन्तर बढ़ते और दृढ़ होते हुये व्यापार संबंधों में एक महत्वपूर्ण तथा रचनात्मक देन है।

इस वर्ष के शरद्कालीन लाइपजिक व्यापार मेले के उपयुक्त मूल्यांकन को समाप्त करने से पहले यह बताना अनुचित न होगा कि अगले वर्ष अगस्त, सन् १९६५ का वसन्त कालीन व्यापार मेला, लाइपजिक व्यापार मेलों का ८०० वां व्यापार मेला होगा। इस मेले को धूमधाम से मनाने के लिये, आज ही से जबरदस्त तैयारियां शुरू हो चुकी हैं।

स मा चा र

शरद्कालीन लाइपजिक व्यापार मेला: कुछ तथ्य

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपजिक नगर में, हर साल आयोजित होने वाला शरद्कालीन लाइपजिक व्यापार मेला समाप्त हो चुका है। इस वर्ष के शरद्कालीन मेले में, जो ६ सितम्बर से १३ सितम्बर तक चालू रहा, दुनिया के ५७ देशों के ६,५०० प्रदर्शकों, व्यापार संस्थाओं तथा फर्मों ने भाग लिया। इसके अलावा, इस बात का अनुमान लगाया गया है कि ८० देशों के दर्शक तथा मेहमान भी उक्त व्यापार मेला देखने आये थे। लाइपजिक व्यापार मेला के महानिदेशक श्री कूर्त शमाइस्सर ने एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस सम्मेलन में इन बातों का उद्घाटन किया।

इस मेले में, समुद्र पार देशों में से सबसे बड़े प्रदर्शक थे भारत, तूनिस, ब्राजिल, ईरान और इन्दोनेशिया।...मेले में पहले की तरस ही उपभोक्ता वस्तुएं प्रदर्शित हुई थीं। सब से अच्छी वस्तुएं प्रदर्शित करने वाले देश अथवा फर्म को स्वर्ण पदकों एवं प्रशंसा-पत्रों से सम्मानित किया गया।

ज. ज. ग. में इस वर्ष का टेलीविजन उत्पादन

इस वर्ष, जर्मन जनवादी गणतंत्र में कुल ६ लाख और २० हज़ार टेलिविजनों का उत्पादन होगा। ज. ज. ग. में विकसित किये गये टेलिविजन के दो नवीनतम नमूने, इस वर्ष के शरद्कालीन लाइपजिक व्यापार मेले में प्रदर्शित किये गये।

हाल के वर्षों में, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अपने कुल टेलिविजन उत्पादन का लगभग ८ प्रतिशत भाग अन्य देशों को निर्यात करने लगा है। इन देशों में से विशेष उल्लेखनीय हैं संयुक्त अरब गणराज्य, स्वीडन, फिनलैण्ड और समाजवादी देश।

पश्चिमी जर्मनी का डाक विभाग चिट्ठियां तबाह करता है

पश्चिमी जर्मनी के एक सुप्रसिद्ध पत्र "दर स्पाइगेल" ने इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि पश्चिमी जर्मनी के डाक-विभाग के अधिकारी, हर महीने, जर्मन जनवादी गणतंत्र से आने वाली चिट्ठियों, पार्सलों आदि को खोलते हैं। इस अखबार ने सबूत के तौर पर जर्मन जनवादी गणतंत्र के कई नागरिकों के पत्रों को उद्धृत किया जो उन्होंने पश्चिमी जर्मनी में रहने वाले अपने संबंधियों को लिखे थे और जो उनको मिले ही नहीं। ऐसी निजी चिट्ठियों, पार्सलों आदि को खतरनाक घोषित करके प. जर्मनी के डाक-अधिकारी, हैनोवर के एक तहखाने में मशीनों के द्वारा तबाह कर देते हैं। इन निजी चिट्ठियों के अलावा, ज. ज. ग. के पत्र पत्रिकाओं, पुस्तिकाओं आदि को भी बरबाद किया जाता है।

पश्चिमी जर्मनी और दक्षिणी अफ्रीका का बढ़ता व्यापार

पश्चिमी जर्मनी की व्यापार-फर्मों ने १९६३ के वर्ष में, दक्षिणी अफ्रीका को ७३ करोड़, ८० लाख मार्क (६ करोड़, ३० लाख पौंड स्टर्लिंग की रकम) का माल सप्लाई किया है। सन् १९५९ की तुलना में यह २५.४ प्रतिशत अधिक है।

पश्चिमी जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्त सरकार के साथ व्यापार बढ़ा रहा है। इसके विपरीत, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, दक्षिण अफ्रीका के ... व्यापार करने पर पूरी पाबन्दी लगा दी है।

ज. ज. ग. में नागरिकों की औसत आयु

जर्मन जनवादी गणतंत्र में, पुरुषों की औसत आयु, ६७.१ वर्ष और स्त्रियों की औसत आयु ७२ वर्ष है। यह बात, जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख ट्रेड फेडरेशन ने अपने आंकड़ों द्वारा सामने लाई है।...अपने विवरण ... फेडरेशन ने निम्न आंकड़े भी प्रस्तुत किये हैं।

सन् १९२४-२६ में, सम्पूर्ण जर्मनी ... पुरुषों और स्त्रियों की औसत आयु, क्रमशः केवल ५५.९७ तथा ६२.८१ वर्ष थी। ... १९५२-५३ में यह औसत-आयु बढ़कर क्रमशः ६५.०६ और ६९.०७ वर्ष हो गई।

जर्मन जनवादी गणतंत्र में औसत आयु की इस वृद्धि का कारण है यहां के लोगों का निरन्तर बढ़ता जीवन-स्तर, आदर्श ... व्यवस्था, श्रम तथा स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी कानून, और मातृ तथा शिशु कल्याण ... अच्छे कानून।

एक अखबार की ३०० वीं वर्षगांठ

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र ... माग्देबुर्ग प्रान्त के एक अखबार ने अपनी ३०० वीं वर्षगांठ मनाई। तब माग्देबुर्ग में केवल ५००० व्यक्ति रहते थे, ... आज इस नगर की जनसंख्या २६५,००० तक पहुंच गई है। इस संख्या की समाचार संबंधी आवश्यकतायें यहां से प्रकाशित ... दैनिक और १ साप्ताहिक अखबार ... करते हैं।...ज. ज. ग. में कुल ४२ दैनिक ... और ६२५ मासिक, साप्ताहिक आदि ... हैं।

नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों, अन्य यूरोपीय देशों के निवासियों में, अखबार पढ़ने के लिये सब से अधिक इच्छुक हैं। ... १०० व्यक्तियों में से यहां (ज. ज. ग. में) ...

१७वें स्वाधीनता दिवस पर ज. ज. ग. की बधाई

भारत की स्वाधीनता की १७वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद, वहां की सरकार और लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) ने, भारत के गण्यमान्य प्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई के सन्देश भेजे हैं। ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को जो शुभ सन्देश भेजा है, उसमें लिखा गया है :

"परमश्रेष्ठ, भारतीय गणराज्य की स्वाधीनता की १७वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर, आप और समस्त भातीय जनता, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद, यहां की जनता और मेरी अपनी शुभकामनायें स्वीकार कीजिये।

'मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि भारतीय गणराज्य भविष्य में भी अपने सुदृढ़ राष्ट्रीय अर्थतंत्र के निर्माण में महान सफलता प्राप्त करेगा और अपनी शांतिप्रिय सहजीवन की नीति के द्वारा आपका देश सदा की तरह विश्व शांति बनाये रखने में अपना निणार्यक योगदान देगा।

"परमश्रेष्ठ, कृपया अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य की और आपके देश के उत्तरोत्तर विकास के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार कीजिये।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र के मंत्रीपरिषद के अध्यक्ष, श्री ओत्तो ग्रोतवोल (इसी मास में जिनका देहान्त हुआ--स०) ने भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को निम्न सन्देश भेजा है:

"भारतीय गणराज्य की स्वाधीनता की १७ वीं वर्ष गांठ के शुभ अवसर पर, मैं अपनी ओर से, और जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा जनता की ओर से, परमश्रेष्ठ, आपको और भारतीय जनता को हार्दिक शुभकामनायें भेजता हूं।

"मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि भारतीय गणराज्य अपना शांतिपूर्ण निर्माण सफलतापूर्वक जारी रखेगा, और समस्त प्रगतिशील जनता द्वारा सम्मानित अपनी शांति प्रिय सह-जीवन की नीति द्वारा शांति के पावन उद्देश्य में अपना महान योगदान देगा।

"हमारे दो राज्यों के मैत्रिपूर्ण संबंध और सहयोग पारस्परिक लाभ के लिये अधिक सुदृढ़ और गहरे हों।

"परमश्रेष्ठ, कृपया अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य और आपके देश के उत्तरोत्तर विकास के लिये मेरी शुभकामनायें स्वीकार कीजिये।..."

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विदेश मंत्री, डा. लोतार बोल्स ने भी, भारत के विदेश मंत्री, सरदार स्वर्णसिंह को एक शुभकामना सन्देश भेजा है। इस सन्देश में ज. ज. ग. के विदेश मंत्री ने यह दृढ़ आशा प्रकट की है कि भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के मैत्रिपूर्ण संबंध तथा सहयोग अधिक सुदृढ़ और गहरे हो जायेंगे।

इसी प्रकार, ज. ज. ग. की लोकसभा के अध्यक्ष, प्रोफेसर योहान्नेस दीकमान ने भारत की लोकसभा के अध्यक्ष, सरदार हुकुम सिंह को भी एक शुभकामना सन्देश भेजा है।

३६ व्यक्ति दैनिक अखबार पढ़ते हैं, जबकि पश्चिम जर्मनी, बेलजियम और इटली में इस संख्या की दर क्रमश: केवल ३३,२७ और १२ है।

साइप्रेस को डाक्टरी सहायता

जर्मन जनवादी गणतंत्र के सर्वप्रमुख श्रमिक-संघ ने साइप्रेस के आहतों के लिये ५०,००० मार्क रकम की दवाइयां भेजीं। साइप्रेस की अखिल साइप्रेस ट्रेड यूनियन फेडरेशन को ज. ज. ग. के उक्त श्रमिक-संघ ने अपने तार में लिखा : हमारी गहरी सहानुभूति आपके साथ है। हम साइप्रेस के मजदूर वर्ग तथा वहां के समस्त देशभक्तों को इस अपनी एकजूटता और सहायता का विश्वास दिलाते हैं।...

ज. ज. ग. की ट्रेड यूनियन फेडरेशन ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद को भी एक तार भेजा है जिस में उसने परिषद से ऐसे कदम उठाने की प्रार्थना की है जिनसे साइप्रेस की जनता पर तुर्की हवाई हमलों का फौरन अन्त हो, और जिन से तुर्की सरकार की आक्रामक योजनायें असफल हो जायें।

लाइपजि़क में अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

इस वर्ष के शरद्कालीन लाइपजिक व्यापार मेले में भी, पिछले वर्ष की तरह ही, एक अन्त राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। इस प्रदर्शनी में १७ देशों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रमुख प्रकाशन संस्था ने भी भाग लिया। पिछले साल की तरह इस वर्ष भी, उक्त पुस्तक प्रदर्शनी में सोवियत संघ सब से बड़ा प्रदर्शक रहा। उसने प्रदर्शनी में पुस्तकों के ३००० नये संस्करण प्रदर्शित किये।...क्यूबा ने इस प्रदर्शनी में पहली बार भाग लिया। इसके अलावा इंगलैण्ड, इटली, और फ्रांस से भी कई प्रकाशक यहां अपनी पुस्तकें प्रदर्शित करने आये थे। पश्चिमी जर्मनी और पश्चिमी बर्लिन से कई प्रकाशकों ने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लेने की अग्रिम सूचना दी थी।

४००० वां डीज़ल इंजन

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन के निकट, बाबेल्सबर्ग के 'कार्लमार्क्स' नामक डीज़ल इंजन बनाने वाले कारखाने ने, ज. ज. ग. का ४००० वां डीज़ल इंजन तैयार करके यहां के रेल विभाग को प्रदान किया। यह रेल इंजन, १८०० अश्व शक्ति

का है।...सन् १९६० तक 'कार्ल मार्क्स इंजन कारखाना' भाप-इंजन ही बनाया करता था। लेकिन सन ६० के बाद से यह कारखाना केवल डीजल तथा बिजली इंजनों का ही उत्पादन करता है। आगामी चन्द महीनों में यह कारखाना छः पहियों और २,४०० अश्व शक्ति वाला इंजन तैयार करेगा।

ज. ज. ग. के नौजवान अरब गणराज्य और एलजीरिया में

जर्मन जनवादी गणतंत्र के तीन नवयुवक, संयुक्त अरब गणराज्य में अक्षत भूमि का उद्धरण करने में सहायता कर रहे हैं। ये नौजवान यहां के, वादी-अल-नातरुन नामक स्थान पर लगे हुये चौथे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम शिविर में भाग लेने आये हैं।

हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख नवयुवक संस्था "फ्री जर्मन यूथ" का एक नवयुवक दल अलजियर आया। इस दल के सदस्य एक वर्ष तक यहीं रहेंगे और अलजीरिया के अन्य नौजवानों के साथ मिलकर स्वाधीनता समर में तबाह हुये कबीलिया नामक प्रान्त के गांवों के पुनर्निर्माण में हिस्सा लेंगे।... सोवियत संघ और बलगेरिया के नौजवान दल भी इस निर्माण में भाग लेने आये हैं।

पश्चिमी जर्मनी के ६० हज़ार शरणागत ज. ज. ग. में

पिछले चार हफ्तों में, पश्चिमी जर्मनी सेना के २२ सैनिक तथा नान कमिशण्ड अफसर भाग निकले, और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली।...आजकल, हर रोज मर्द औरतें, बच्चे और पूरे के पूरे परिवार पश्चिमी जर्मनी से भाग कर ज. ज. ग. में शरण ले रहे हैं। केवल पिछले तीन दिनों में ही ५३ पं. जर्मनवासी, यहां के दो स्वागत-शिविरों में आ गये। पश्चिमी जर्मनी में बढ़ती हुई मंहगाई इस पलायन का एक प्रमुख कारण है।

१३ अगस्त, सन् १९६१ से लेकर आज तक, पश्चिमी जर्मनी के कुल ५६,७५६ निवासियों ने भाग कर जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली है। ज. ज. ग. में बस कर, यहां के शांति पूर्ण नवीनर्माण में आज वे अपना योग दान दे रहे हैं आदर्श नागरिकों के रूप में।

क्यूबा को ऋण सहायता

जर्मन जनवादी गणतंत्र जल्द ही, औद्योगिक विकास के लिये क्यूबा को ८ करोड़, ४० लाख मार्क का कर्जा देगा। ऋण की अवधि ५ वर्ष – अर्थात १९६५ से १९७० तक होगी, और इस धनराशि से क्यूबा जर्मन जनवादी गणतंत्र से पूरे तथा तैयार कारखाने, संयंत्र और अन्य औद्योगिक सामग्री खरीद लेगा। हाल ही में इस ऋण से संबंधित समझौते पर बर्लिन में हस्ताक्षर भी हुए।

विद्यार्थी का मत

ब्रिटिश गियाना का एक विद्यार्थी, श्री त्रिवेदी प्रसाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र में डाक्टरी पढ़ता है। ब्रिटेन, अमरीका, स्पेन तथा पश्चिमी जर्मनी में और जर्मन जनवादी गणतंत्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की स्थिति की तुलना करते हुये श्री त्रिवेदी ने एक प्रेस-इण्टरव्यू में बताया : जर्मन जनवादी गणतंत्र में विद्यार्थी बौद्धिक विकास की और अधिक ध्यान देते हैं। इसलिये वे किसी खास उद्देश्य को लेकर पठन-पाठन करते हैं, जबकि पश्चिमी देशों में धनोपार्जन को मुख्य स्थान दिया जाता है और ज्ञान-प्राप्ति को गौण स्थान।

श्री त्रिवेदी ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की परराष्ट्र नीति की बहुत प्रशंसा की। जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार, यहां पढ़ने वाले विदेशी छात्रों को जो सहायता और प्रोत्साहन देती है, श्री त्रिवेदी प्रसाद ने उसके लिये अपना आभार प्रकट किया।

सीरिया के प्रधान मंत्री से संसद-सदस्य मंडल मिला

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के पीपुल्स चैम्बर (लोकसभा) के सदस्यों का एक प्रतिनिधि-मण्डल सीरिया के ... पर रवाना हुआ। वहां उनका भव्य ... हुआ। सीरिया के प्रधान मंत्री, श्री ... वितार से भी प्रतिनिधि-मण्डल ने मुला... की। बात-चीत के दौरान प्रधानमंत्री... ज. ज. ग. और सीरिया के निरन्तर ... हुये आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंधों पर ... प्रकट किया।

सीरिया के प्रमुख अखबारों में ज. ज. ... के उक्त प्रतिनिधि मण्डल की काफी ... रही। इन अखबारों ने इस तथ्य को बार... दोहराया कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सर... हर संभव तरीके से अरब राज्यों की सहा... देती और उनका समर्थन करती है। – ज. ज. ... के इस संसदीय प्रतिनिधि-मण्डल का ने... लाइपजिक के लार्ड मेयर कर रहे हैं। सी... जाने से पहले यह प्रतिनिधि मण्डल ... अरब गणराज्य, लेबेनान और इराक ... दौरा कर चुका है।

अन्तर्राष्टीय व्यापार मेलों में ज. ज. ग.

सन् १९६४ के अन्त तक जर्मन जन... गणतंत्र, यूरोप तथा अन्य देशों में आयो... २० अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में भाग ले... ज. ज. ग. के विदेश-व्यापार चैम्बर के ... प्रवक्ता ने कहा कि इस तरह ज. ज. ग. ... वर्ष के अन्त तक, कुल २०० अन्तर... मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग ले चुका है।

इसी वर्ष के मई मास में, मोराक्को... जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा आयो... प्रदर्शनी ने काफी सफलता पाई। सी... की राजधानी दमिश्क में आयोजित अ... ष्ट्रीय व्यापार मेले में, ज. ज. ग. ... मण्डल काफी लोकप्रिय रहा। अल्जी... की राजधानी अलजियर में, जल्दी ही ज. ज. ... प्रथम बार एक प्रदर्शनी आयोजित करे... इसमें निर्यात योग्य वस्तुएं प्रदर्शित ... जायेंगी। श्रीलंका में, इस वर्ष के अन्त... ज. ज. ग. अपने उत्पादनों की दूसरी ... करेगा।
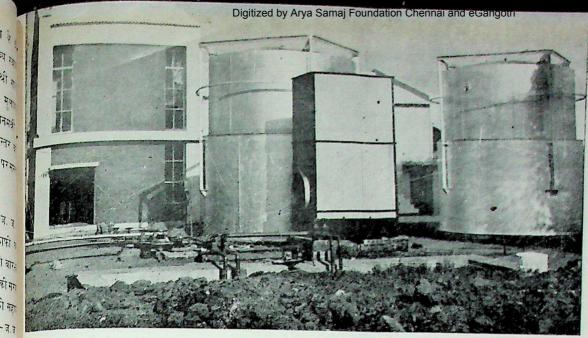
उत्तरी भारत के सबसे बड़े आकसिजन कारखाने के लिये ज. ज. ग. ने मशीनें तथा यंत्र आदि सप्लाई किये हैं। यह चित्र • उसी कारखाने का है जो फरीदाबाद में 'मेसर्स नेशनल एयर प्रोडक्ट्स' के नाम से इस वर्ष के अप्रैल मास में चालू हुआ

५०० कारखाने ....

(पृष्ठ १८ का शेष)

विशिष्ट इस्पात तार और शुद्ध इस्पात पैदा करने वाली ज. ज. ग. की बेलन मिलें विश्व विख्यात हैं। इन मिलों की लोटन गति ४० मीटर प्रति सेकन्ड तक भी जा सकती है।... ज. ज. ग. के तार-उत्पादन करने वाले संयन्त्र विश्व के अनेक देशों को निर्यात किये गये हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र तैयार और पूरे कारखानों के निर्यात के साथ-साथ, उत्पादक लाइसेन्सें भी उपलब्ध करता है। विशेषकर नवोदित राज्य इन लाइसेन्सों का फायदा उठाते हैं। इस संदर्भ में हैदराबाद स्थित "हैदराबाद वर्क्स आफ इलेक्ट्रिक कान्सट्रक्शन एण्ड इक्विपमेंट लिमिटेड" नामक एक भारतीय कारखाने और जर्मन जनवादी गणतंत्र में हुआ एक अनुबन्ध विशेष उल्लेखनीय है। यह अनुबन्ध पहले सन् १९६१ में हुआ था जो अब फिर बढ़ा दिया गया है। इसके अनुसार उक्त भारतीय कारखाने को ज. ज. ग. ने उत्पादन-लाइसेन्स दी है, और फर्म के कुछ विशेषज्ञों को जर्मन जनवादी गणतंत्र में ट्रेनिंग दी जायेगी। इसके अलावा, ज. ज. ग. के कुछ विद्युत-विशेषज्ञ हैदराबाद आयेंगे और कारखाने को और विस्तार देने में मदद करेंगे।

ज. ज. ग., कारखानों के निर्यात के साथ ही साथ इन कारखानों से संबंधित विशिष्ट जानकारी उपलब्ध करने की जिम्मेदारी भी लेता है। इसके लिये खरीदार देशों या फर्मों को ज. ज. ग. अपने विशेषज्ञ भेजता है, और उन देशों अथवा फर्मों को ज. ज. ग. में ट्रेनिंग दे कर स्थानीय विशेषज्ञ तैयार करता है। इन सभी चीज़ों का ही यह सुपरिणाम निकला है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र का कुल निर्यात (अन्य देशों को) बहुत बढ़ गया है, और दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस निर्यात में, अन्य वस्तुओं के अलावा, पूरे तथा तैयार कारखाने और संयन्त्र (प्लांट्स) भी शामिल हैं।

भारतीय मित्रों के नाम......

(पृष्ठ ३ का शेष)

जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता, भारत के विकास को गहरी दिलचस्पी से देख रही है। भारतीय जनता ने, उपनिवेशवादी विरासत को खत्म करने और एक स्वतंत्र भारत का निर्माण करने की दिशा में जो महत्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त की हैं, उसके लिये भारतीय जनता के प्रति हमारे देश में अथाह आदर और गहरी सहानुभूति है। जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता को इस बात से सन्तोष मिलता है कि विश्व शांति को सुरक्षित रखने के महान संघर्ष में भारत-वर्ष एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। भारत की तटस्थ नीति इसी भूमिका की अभिव्यक्ति है।

भारतीय गणराज्य और जनवादी जर्मन गणतंत्र के बीच सरकारी स्तर पर संबंध स्थापित हुये आज १० वर्ष हुये हैं। इस एक दशक में, हमारे दो देशों में आर्थिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान के क्षेत्रों में, पारस्परिक लाभकारी संबंधों का बड़ी तेज़ी से विकास हुआ है। इन १० वर्षों में हमारे दोनों राज्य, अन्तर्राष्ट्रीय तनावों को कम करने और मानवता को महानशक युद्ध से बचाने के संघर्ष में, एक दूसरे के साथी रहे हैं। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति ही, भविष्य में भी, भारत और ज. ज. ग. के निकटस्थ संबंधों का दृढ़ आधार रहेगी।

भारतीय गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता की आपसी मैत्री और सद्भावना निरन्तर बढ़ती और सुदृढ़ होती रहे---- यही मेरी कामना है।...मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में, हर क्षेत्र में हमारे दो राज्यों के संबंध अधिक करीब हो जायेंगे, और इस दिशा में अपना सक्रिय योगदान देना मेरे लिये बहुत खुशी की बात है।

मैं अन्त में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के मित्र भारत की, सुख और समृद्धि की कामना करता हूं।

बारे में अधिक से अधिक बात जान सकूंगा । भारत, ज. ज. ग. के बीच मैत्री दिन रात बढ़ती रहे यही मेरी कामना है ।

भारतभूषण अग्रवाल
वाराणसी (उ. प्र.)

आदरणीय महोदय,

आपके दूतावास से प्रकाशित अगस्त माह की **सूचना पत्रिका** मिली, 'हमें युद्ध नहीं शांति चाहिए" नामक लेख पढ़ कर दो विश्व युद्धों के दौरान हुऐ महा विनाश के बारे में कुछ पता चला ।

आशा है कि पत्रिका भविष्य में क्रम से मिलती रहेगी ताकि पाठक भारत और ज. ज. ग. के बीच बढ़ रहे मित्रता के सबन्धों के बारे में और अधिक जान सकें ।

पुस्तकालय के लिये साहित्य पाकर हमें प्रसन्नता होगी ।

सहयोग की प्रतीक्षा में,

मंत्री
नौजवान सभा
सादुलशहर (राजस्थान)

चिट्ठी-पत्री

(शेष २४ पृष्ठ का)

महोदय,

मैं आप की पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता हूं । कृपा करके नीचे लिखे पते पर एक वर्ष के लिये उक्त पत्रिका के मूल्य से सूचित कीजिए । सूचना मिलने पर मैं पत्रिका का वार्षिक मूल्य भेज दूंगा ।

आप का
लहूज़ो अंगामी
हिन्दी नागरिक, वर्धा

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारी प्रबल उत्सुकता एवं हार्दिक उत्कंठा जर्मन जनवादी गणतंत्र के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की है । किन्तु यह तभी संभव हो सकता है जब कि आप हमें सहयोग देकर कृतार्थ करें ।

अतएव हम आप से निम्नलिखित सहयोग की याचना करते हैं । आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर, स्वीकृति भेज की कृपा करेंगे :

(१) जर्मन जनवादी गणतंत्र के दूतावास द्वारा प्रकाशित **सूचना पत्रिका** निरन्तर भेज देने की कृपा कीजियेगा ।

(२) ज. ज. ग. से सम्बन्धित जितना साहित्य हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुआ अथवा उपलब्ध हो, उसकी एक एक हमारे पुस्तकालय हेतु प्रदान कर, कीजियेगा ।

(३) बच्चों की ज्ञानवृद्धि हेतु दूता में कोई पोस्टर अथवा चित्र उपलब्ध हो उनकी एक एक प्रति प्रदान करने की की जाय ।

जिला संगठक
अखिल भारतीय बाल
कसाना-गढ़वाल
(उ. प्र.)

पतझड़....

(पृष्ठ १४ क शेष)

(रे हृदय अनभिज्ञ, मेरे मीत)
न जाने गम दिये कितने,
कितनों को छटपटाया !
नहीं रहा कुछ अब शेष
आव चल पड़ें हम तुम साथ,
(प्रतीक्षा व्यर्थ है अब) !

अजाने पंथ पर, अपने सफर में
हम तुम चल पड़ें
एक दूसरे के बहुत निकट होकर
एक होकर चलें हमसफर—
छुपाकर वक्ष में अपने
रक्षा करूंगा तुम्हारी
तूफानों से,

पतझड़ की उदास सांसों से,
शिशिर की
मौत जैसी ठंडी हवाओं से—

और इस तरह, अपनी यात्रा की
इस अन्तिम मंजिल में, तुम और मैं
भटकते रहेंगे एकाकी, मौन, अकिंचन ।
किसी अनजाने उतार पर, किसी दिन,
किसी कब्र में लेंगे हम अनन्त विश्राम !
हमारे एकाकी सफर का होगा यह अन्त—
कोई बहायेगा नहीं अश्रु
(क्यों कोई बहाये)
शायद कभी वर्षा विचरती
भिगो दे क़ब्र की
हरी दूब का दामन अचेते ही ।

छायेंगे उदास उदास बादल फिर
पतझड़ की वीरानी लौट आयेगीं—

सचित्र समाचार

जर्मन जनवादी गणतंत्र से आये हुये, व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डल के नेता, श्री कुर्त एप्पलीइन ने राजघाट और शांतिवन में महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू की समाधियों पर श्रद्धा के फूल चढ़ाये...

इस प्रतिनिधि-मण्डल के बाद ही ज. ज. ग. ने डा. (श्रीमती) ग्रेटे वितकोव्स्की को अपना विशेष-दूत बना कर भारत सरकार से बातचीत करने के लिये भेजा। नीचे के दो चित्रों में, डा. वितकोवस्की, भारत के शिक्षा मंत्री, श्री छागला और उप विदेश मंत्री, श्री दिनेश सिंह के साथ बातचीत कर रही हैं ↓

रजि० नं० डी-१३३०

विशेषांक
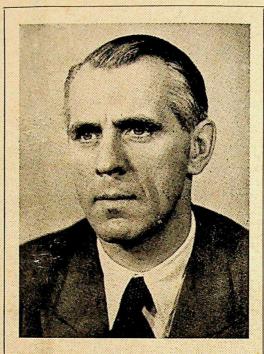
जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये प्रधान मंत्री (मंत्रि-परिषद् के अध्यक्ष) श्री विल्ली स्तोफ जिन्होंने, स्व. ओटो ग्रोतवोल के देहांत पर कार्यभार संभाला

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

सूचना पत्रिका

१० वर्ष ९ अक्तूबर १९६४

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक १० | २० अक्तूबर, १९६४

संकेत

पृष्ठ

मुख पृष्ठ : प. बर्लिन के साथ लगी ज. ज. ग. की सीमा सुरक्षा दल के सैनिकों के साथ, फ्रांस के एक युवा प्रतिनिधि-मण्डल का मैत्रीपूर्ण मिलन

अंतिम पृष्ठ : मछली-शिकार के दो चौकस "शिकारी"

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ज. ज. ग. का विदेश-व्यापार

जर्मन जनवादी गणतंत्र दुनिया के दस सबसे औद्योगीकृत राज्यों में से एक राज्य है। ज़ाहिर है कि विदेश व्यापार इसके आर्थिक विकास का एक मज़बूत आधार स्तम्भ है।

आजकल, दुनिया के ११७ देशों के साथ ज. ज. ग. व्यापार कर रहा है। इस के कुल व्यापार का ७९ प्रतिशत भाग समाजवादी देशों के साथ है।

बहुत बढ़ा हुआ औद्योगिक राज्य होते हुये भी, ज. ज. ग. में कच्चे माल का अभाव है। इस लिये अपने उद्योग धन्धों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये इसको अनिवार्यतः कच्चे माल की बहुत बड़ी मात्रा का आयात करना पड़ता है। आयात होने वाले इस कच्चे माल की कुल मात्रा में ७०० प्रतिशत भाग है कच्चे लोहे, कच्चे तेल वेल्लित इस्पात तथा अन्य इस्पात उत्पादन, नान-फेरस धातु, कृषि संबधी कच्चे माल तथा खाद्यान्न इत्यादि जैसी वस्तुओं का। – ज. ज. ग. के निर्यातों में विशेष उल्लेखनीय वस्तुएं हैं मशीन-निर्माण उद्योग के उत्पादन और रासायनिक, टेक्सटाइल तथा उपभोक्ता वस्तुएं।

सन् १९६३ में, पहली बार, जर्मन जनवादी गणतंत्र का कुल विदेश व्यापार, बीस अरब (२०,०००,०००,०००) मार्क की रकम की सीमा पार कर गया। (१ मार्क = १.१२ रूपये)। उसी वर्ष में ज. ज. ग. के निर्यात में १४ प्रतिशत की वृद्धि हुई सन् १९६२ की तुलना में। कुछ समाजवादी तथा गैर-समाजवादी देशों के साथ सन् १९६३ में ज. ज. ग. के विदेश-व्यापार के निम्न आंकड़े उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं :

समाजवादी देश	कुल निर्यात	कुल आयात
सोवियत संघ	११४८.१	१०५४.८
चैकोस्लोवाकिया	२०६.५	१९४.२
पोलैण्ड	२२४.९	९७.६
हंगरी	१०९.६	८५.७
बलगेरिया	८८.०	६५.४
रूमानिया	५६.९	३३.२
यूगोस्लाविया	४४.२	३३.६
चीन	९.४	२२.२
योग	१८८७.६	१५८६.७

बड़ी बड़ी मशीनें देखी जाती हैं और तुरन्त वहीं लेन देन की बात-चीत शुरू हो जाती है

१९६६ तक हमारे व्यापार में १० गुणा वृद्धि होगी

भारत की सुप्रसिद्ध तथा प्रमुख समाचार-एजन्सी 'प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया' के एक प्रतिनिधि से बात चीत करते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार प्रतिनिधि एवं वाणिज्य-सलाहकार, श्री हांस योआखिम लेमनित्सर ने भारत और ज.ज.ग. के व्यापार से संबंधित कुछ दिलचस्प बातों का उद्घाटन किया। यह प्रेस-इण्टरव्यू १५ अक्टूबर को नई दिल्ली में दिया गया।

प्रेस-इण्टरव्यू में, श्री लेमनित्सर ने इस रहस्य का उद्घाटन किया कि भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार सन् १९६६ तक दस गुना बढ़ जाने की संभावना है, सन् १९६३ की तुलना में। इस संदर्भ में उन्होंने भारत तथा ज. ज. ग. के व्यापारिक संबंधों के प्रथम दशक पूर्ति की चर्चा भी की (भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्रथम व्यापार-करार हुई है १६ अक्तूबर, १९५४ के दिन--सं.)। इस एक दशक में भारत और ज. ज. ग. के व्यापार में १० गुणा वृद्धि हुई है। केवल सन् १९६३ में ही हमारे दो देशों का व्यापार २४ करोड़, ७० लाख रूपये तक पहुंच चुका था, श्री लेमनित्सर ने कहा। पिछले दशक में इस बढ़ते हुये व्यापार का ब्योरा देते हुये, ज. ज. ग. के व्यापार-प्रतिनिधि ने कहा कि ज. ज. ग. ने भारत को, इस अर्से में (१० वर्षों में), ३० करोड़ रूपये के मशीनी औज़ार तथा इंजीनियरी-उद्योग के अन्य उत्पा... बेच दिये। इसके अलावा, रूपया भुगतान के आसान नि... में ज. ज. ग. ने भारत को छापखाने, रासायनिक कारखा... तेल संयन्त्र और उर्वरक, कच्ची फिल्म तथा अन्य रासायन... निर्यात किये।

इसी अवधि में, ज. ज. ग. ने भारत से ११ करोड़ ... की रक़म की चाय, काफी तथा गर्म मसाले, ८ करोड़ ... के खदान-उत्पादन, और ४० लाख रूपये की हस्तकला की ... आयात कीं। इसके अलावा सूती कपड़ों, पटसन की चीज़ों ... तम्बाकू की भारी मात्रा भी ज. ज. ग. ने भारत से आयात की...

सांस्कृतिक आदान प्रदान का उल्लेख करते हुये, ... लेमनित्सर ने कहा कि ज. ज. ग. के विभिन्न विश्वविद्यालयों ... शिक्षा संस्थानों में आजकल १२० भारतीय विद्यार्थी अध्य... करते हैं। ५० से अधिक भारतीय आज तक, ड्रेस्डेन ... तकनीकी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि लेकर स्व... लौटे हैं। चालू साल में, १५ स्नातकोत्तर विद्यार्थी और ... शिक्षार्थी जर्मन जनवादी गणतंत्र में क्रमशः शोध और ... कर रहे हैं।

अन्य देश	कुल आयात	कुल निर्यात
ग्रेट ब्रिटेन	१९.२	३८.२
फ्रांस	९.८	१५.०
नेदरलैण्ड	२०.२	१६.७
आस्ट्रिया	१६.९	२०.३
स्वीडन	१५.०	१९.७
फिनलैण्ड	११.७	१०.६
इटली	१२.७	१४.६
भारत	२२.७	२१.९
जापान	६.१	१.८
संयुक्त अरब गणराज्य	१७.२	१३.८
ब्राजिल	५.३	१०.४
अमरीका	३.४	१.२
पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन	२१८.०	१७२.८
योगः	३७८.२	२५७.०

चालू वर्ष (१९६४) के प्रथम छः महीनों में ज.ज.ग. के निर्यात में १०.३ प्रतिशत बढ़ौती हुई सन् १९६३ की इसी अवधि की तुलना में। इसी प्रकार, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अन्य देशों से चालू साल के प्रथम छः महीनों में ३९ करोड़, १० लाख मार्क की रक़म के मूल्य की अधिक वस्तुएं आयात कीं, सन् १९६३ की इसी अवधि की तुलना में।

विल्ली स्टोप

(पृष्ठ ५ का शेष)

१९५० में वे समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय ... और १९५३ में उसके पोलिटिकल ब्यूरो के सदस्य ... सन् १९५२ से ५५ तक, श्री विल्ली स्टोप, जर्मन ... गणतंत्र के अन्तरंग मंत्री, और सन् १९५६ से ... राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्री तथा सेना-जनलर के पदों पर आ... सेना जनरल, ज. ज. ग. की राष्ट्रीय जन सेना का ... है। सन् १९५४ में श्री स्टोप, ज. ज. ग. की मं... के डेपुटी और सन् १९६२ में इस परिषद के प्रथम ... बन गये। वे सन् १९५० से ज. ज. ग. की ... (पीपुल्स चैम्बर) के, और सन् १९६३ से राज्य ... भी सदस्य हैं।

कठिनतम कठिनाइयों तथा जबरदस्त खतरों में ... श्री विल्ली स्टोप की राजनैतिक मान्यतायें कभी भी ... गयीं और वे हमेशा जनता के हितों के लिए संघर्षरत ... उनकी जन-सेवाओं को देखते हुए ज. ज. ग. की ... स्टोप को, देशभक्ति का स्वर्णपदक और फासिस्टवाद वि... १९३३-४५ और राष्ट्रीय जन सेना स्वर्ण पदक से सम्मानि...

विल्ली स्टोप : ज. ज. ग. के नये प्रधानमंत्री

२४ सितम्बर के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र के भूतपूर्व उप प्रधान-मंत्री, श्री विल्ली स्टोप, लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) द्वारा सर्व-सम्मति से, ज. ज. ग. के नये प्रधान मंत्री निर्वाचित हुये। जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रथम प्रधान मंत्री, श्री ओटो ग्रोटवोल का, २१ सितम्बर १९६४ के दिन देहान्त हुआ था. ग्रोटवोल, ज. ज. ग. की स्थापना (१९४९) से लेकर निधन तक अपने देश के प्रधान मंत्री रहे थे।

श्री विल्ली स्टोप का जन्म एक श्रमिक परिवार में हुआ आज से ५० वर्ष पहले ९ जुलाई, सन् १९१४ के दिन। उन्होंने राजगीरी का पेशा अपना लिया, और बाद में पत्र-व्यवहार विधि द्वारा वास्तु टेकनालोजी का अध्ययन किया।

सन् १९२८ में, १४ वर्ष की आयु में श्री स्टोप जर्मन कम्युनिस्ट युवक लीग में शामिल हुये, और तीन साल बाद, सन् १९३१ में वे जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने। सन् १९३३ से १९४५ तक जर्मनी को फासिस्टवाद की काल-रात्रि ने ढक लिया। इस क्रूर और अन्धकारपूर्ण युग में वहां न केवल कम्युनिस्ट पार्टी को ही गैर-कानूनी करार दिया गया, बल्कि हिटलर तथा उसकी विकाल नाज़ी पार्टी का विरोध करने वाले प्रत्येक दल, पार्टी तथा व्यक्ति को क्रूरतम दमन से दबा दिया गया। देशभक्तों के लिये मृत्यु-दण्ड तथा सैनिक शिविरों की यातनापूर्ण कैद निश्चित थी। लेकिन इस दमन और बर्बरता के खिलाफ जहाद करने के लिये, जो गुप्त आन्दोलन संगठित हुआ, उसमें जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी पेश-पेश थी। कहने की आवश्यकता नहीं कि श्री विल्ली स्टोप ने, इस गुप्त फासिस्टवाद-विरोधी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

दूसरे महायुद्ध और हिटलर के विनाश के बाद, श्री स्टोप, कम्युनिस्ट पार्टी और

बाद में, जर्मन जनवादी गणतंत्र में, कम्युनिस्ट तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों के विलयन से उद्भूत जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी के जिम्मेदार पदों पर काम करते रहे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बर्लिन की नई प्रवेश-पत्र संधि

जर्मन जनवादी गणतंत्र के राज्य सचिव वेनदृत और पश्चिम-बर्लिन सेनेट के कौंसिलर, श्री होर्ज कोरबर ने, २४ सितम्बर १९६४ के दिन, ज. ज. ग. की राजधानी में एक नई प्रवेशपत्र संधि पर दस्खत किये। यह संधि जर्मन जनवादी गणतंत्र और पश्चिम-बर्लिन सेनेट के बीच हुई है। संधि पर दस्खत होने से पहले, दोनों ओर के प्रतिनिधियों के बीच ३० बैठकें हुई थीं इस वर्ष के शुरु होने से अब तक।

यह प्रवेश-पत्र संधि, उस प्रथम बर्लिन प्रवेश-पत्रसंधि की पूरक है जिस पर, पिछले वर्ष (१९६३) के दिसम्बर मास में ज. ज. ग. की पहल करने पर हस्ताक्षर हुये थे। उस समय, १२ लाख से भी अधिक पश्चिम-बर्लिन वासी, ज. ज. ग. की राजधानी में आसके थे अपने-संबंधियों से मिलने।

उपर्युक्त नई बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि के अनुसार, जिसकी वैध अवधि एक वर्ष है, पश्चिम-बर्लिन के नागरिक वर्ष में चार बार --- अर्थात् हेमन्त (१९६४), क्रिसमस तथा नव-वर्ष, ईस्टर त्यौहार (१९६५) और विटजूनटाइड त्यौहार (१९६५) के अवसरों पर ज. ज. ग. की राजधानी, जनवादी बर्लिन में आ जा सकेंगें अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलने। इसके अलावा, किसी संबंधी के बहुत बीमार होने या मरने पर, जन्म और विवाह आदि के अवसरों पर भी पश्चिम-बर्लिन के निवासियों को ज. ज. ग. की राजधानी में आने के लिये प्रवेश-पत्र दिये जायेंगे। अलग-अलग रहने वाले विवाहित दम्पतियों को, पुर्नमिलन का मामला तय करने के लिये पास दिये जायेंगे। यहां इस तथ्य पर बल देना अनुचित न होगा कि पिछली बार की तरह इस बार भी, इस नई प्रवेश-पत्र संधि के लिये जर्मन जनवादी गणतंत्र ने ही पहल की।

उक्त प्रवेश-पत्र संधि पर दस्तखत के बाद, जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप-प्रधान-मंत्री, श्री अलेक्जाण्डर आबुश ने एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस कानफ्रेन्स में कहा "नई बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि ज. ज. ग. और पश्चिम बर्लिन सेनेट (नगर प्रशासन) के बीच एक सरकारी संधि है।··· नई संधि, यथार्थ-परक नीति और सद्भावना की दिशा में एक महत्व-पूर्ण कदम है।···यदि पश्चिम बर्लिन सेनेट चाहे तो अन्य सवालों को भी, समानता और बातचीत के आधार पर हल किया किया जा सकता है···"

'...वे अविस्मरणीय दिन...'

प्रो. सी. सी. मेहता

प्रोफेसर सी. सी. मेहता, बरौदा विश्वविद्यालय के ललित-कला संकाय में प्रोफेसर हैं। हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा करके लौटे हैं। प्रो. मेहता द्वारा लिखा गया इस यात्रा का एक संस्मरण 'सूचना पत्रिका' के पाठकों के लिये प्रस्तुत है--संपादक

सन् १९६३ में वारसा में आयोजित **अंतर्राष्ट्रीय थिएटर संस्थान** सम्मेलन (इण्टरनेशनल थियेटर इन्सटिच्यूट--आई. टी. आई.) में भाग लेने के लिये मैं पूर्वी बर्लिन के हवाई अड्डे से गुजरा था। जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा करने की उस समय मेरी उत्कट इच्छा हुई थी। लेकिन मैं सपने में भी न सोच सकता था कि मेरी यह इच्छा केवल बारह महीनों के अन्दर-अन्दर ही पूरी होगी। अन्तर्राष्ट्रीय थियेटर संस्थान के उस सम्मेलन में भारत को इसकी कार्यकारिणी कमेटी का सदस्य चुन लिया गया। जर्मन जनवादी गणतंत्र से आये हुये प्रतिनिधि यह जानते थे कि भारतीय प्रतिनिधियों का अब पेरिस जाना आना रहेगा। इसलिये उन्होंने मुझे एक स्थाई निमन्त्रण दिया ज. ज. ग. आने का, जब भी मुझे यूरोप के किसी स्थान में किसी काम से कभी जाना हो।

आई. टी. आई. की, जर्मन जनवादी गणतंत्र की शाखा के अध्यक्ष, श्री वोल्फगांग लांगोफ़्फ बहुत मेहरबान रहे मुझ पर -- वारसा में भी और अपने देश में भी। ज.ज.ग. के एक सुप्रसिद्ध वास्तुकार, प्रोफेसर कूर्ट हेम्मरलिंग से भी मिलने के लिये बहुत उत्सुक था, जिनसे मेरी पहली मुलाकात दिल्ली में हुई थी **थिएटर वास्तुकार गोष्ठी** में। तीन दिनों की इस गोष्ठी में प्रो. हेम्मरलिग केवल दो बार ही बोले थे, लेकिन अपनी विद्वत्ता से उन्होंने श्रोताओं को इतना प्रभावित किया था कि उनको भूल जाना असंभव था। उनकी भाषा जितनी सौम्य तथा मधुर थी, उनका तर्क उतना ही स्पष्ट और कायल कर देने वाला था। बर्लिन जाने पर, इस महान कलाकार के प्रति अपना आदर व्यक्त करने जाना मेरा कर्त्तव्य था।

बर्लिन के शोएनेफेल्द हवाई अड्डे पर पहुंच कर अन्तर्राष्ट्रीय थियेटर संस्थान संस्था के मंत्री, श्री लिंक ने मेरा स्वागत किया। मिलते ही हमारी बहस शुरू हुई। वे

प्रोफेसर मेहता (बायें) प्रोफेसर वोल्फगांग लांगोफ्फ के साथ

अच्छे पठित हैं और उनकी स्मृति शक्ति भी खासी है। श्री लिंक के साथ एक स्वस्थ सुन्दर युवती, हमारी दुभाषिया कुमारी फिक्लर थीं। होटल में दाखिल होने के कुछ देर बाद ही, प्रो. हेम्मरलिंग मुझ से मिलने के लिये खुद ही चले आये। यह उनकी उदारता है और मेरे प्रति सहृदयता भी। मेरे लिये यह एक अत्यन्त सुखद अवसर था कि एक बार फिर, बहुत नि... से, मैं ज. ज.ग. के एसे सुप्रसिद्ध वि... वास्तुकार से, आधुनिक वास्तु-शिल्प... खुलकर विचारों का आदान-प्रदान क... वस्तु-शिल्प की सादगी तथा उसकी उपयो... पर प्रोफेसर महोदय ने बहुत जोर ड...

उसी रात को हमने एक ग्रीक ना... देखा। इसमें हमारे मित्र, प्रो. लांगो... अभिनय भी कर रहे थे और निर्देशन ... नाटक के मध्यान्तर में, मैं श्री लांगोफ़... नेपथ्य-शाला में मिला जहां हमने वा... सम्मेलन की स्मृतियों को ताज़ा कि... मोटर में घूमते हुये, बर्लिन से बाहर, ... का आंचल खूब सरसब्ज़ था और ... कभी फुहारें इस सौन्दर्य को द्विगुणित क... थीं।

वाइमर, एरफूर्ट और ड्रेस्डेन की ... भी की मैंने। इन स्थानों में विभिन्न ... के तीन नाटक देखे, जिसमें से एक था ... पियर का 'ऐज़ यू लाइक इट' जर्मन ... में। रंगमंच पर, चरवाहे का ७ व... (कृत्रिम) के साथ निकल आना, एक ... चीज़ थी। साथ ही यह दृश्य विनोद... और आश्चर्यजनक भी था।

वाइमर में, गेटे और शिल्लर के ... दो ऐतिहासिक भवन इस लिये दर्शनीय ... इन दो मकानों में (जहां वे रहते थे) ... दो महान जर्मन बौद्धिकों (कवियों) ... सभी चीजे--किताबें, चित्र, गलीचे, ... सामान, कलम, फोटो, और यहां त... उनकी मृत्यु शैयायें भी सुरक्षित रखी ... हैं। इस दृष्टि से ये दोनों महान संस्...

की हैसियत रखते हैं। **गेटे-भवन** में उन, अद्भुत प्रतिभा वाले व्यक्ति के भव्य व्यक्तित्व का एहसास होता है। गेटे एक विश्वविख्यात कवि तो थे ही। लेकिन हम में से अधिकांश लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वे एक अच्छे चित्रकार भी थे। वहां रखे हुये उनके कई अच्छे चित्र इस बात का प्रमाण है। गेटे-भवन तथा इस से संलग्न भूमि, बाग आदि राष्ट्रीय संग्रहालय बन चुका है।

संभवतः लाइपजिक, सब से दिलचस्प और सुन्दर शहर है जर्मन जनवादी गणतंत्र का। मेरा यह अभिमत विवादास्पद हो सकता है, लेकिन जहां तक यहां के **आपेरा भवन** का संबध है, उसकी भव्यता, सौन्दर्य और उपयोगिता के बारे में दो मत नहीं हो सकते। सन् १९६० में बनाया गया यह आपेरा, सभी आधुनिक सुविधाओं से आरास्ता है। यह आपेरा-भवन यूरोप के कतिपय सब से अच्छे गीति-नाट्य भवनों में गिना जा सकता है। इस से कुछ दूर पर आपेरा-भवन का वर्कशाप स्थित है। इसको वर्कशाप न कहकर अलादीन का चिराग नाम देना अधिक अच्छा रहेगा, क्योंकि इस वर्कशाप से, किसी भी समय में, रंगमंच पर अथवा रंगमंच के लिये कोई भी वस्तु तैयार की जा सकती है।

एल्बे नदी शायद इतनी प्रसिद्धि नहीं पा सकी है जितनी डेन्यूब नदी। लेकिन चेकोस्लोवाकिया में जन्म लेने के पश्चात एल्बे, जर्मनी में आकर एक अत्यन्त मनोहर दृश्य उपस्थित करती है, विशेष कर ड्रेस्डन में। इस नगर के पड़ोस में कुछ पर्वत खड़े हैं, और इनके पास में है एक बहुत ही रमणीय स्थान पिकनिक करने के लिये। पर्वतों के नुकीले शिखर और खड़ी चट्टानें, इस सुन्दर वातावरण में एक अजीब मादकता घोल देती हैं। पर्वत के दामन में बलखाती एल्ब और सरकती रेलें एक मनोहर दृश्य उपस्थित करती हैं। इस पिकनिक स्थल पर, सैकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों दर्शक, हर प्रकार की सवारी में आ जा रहे थे। प्रत्येक चेहरे पर संतोष और शांति की गरिमा विराज रही थी।

पिकनिक से हम शाम को वापस बर्लिन पहुंचे, और यहां नये कार्यक्रमों का तांता शुरू हुआ। एक पुराने एतिहासिक बजरे (हाउस बोट) में स्थित हम एक **अभिनेता स्कूल** देखने गये। यहां हमने नाटकों में अभिनय सीखने वाले कई शिक्षार्थियों को देखा। दूसरे दिन हम एक **बाल रंगमंच** में थे। हमारे साथ थीं श्रीमती नटाशा, जो बाल-रंगमंच की जान हैं। लगभग एक हज़ार बच्चों के साथ कुछ समय बिताना मेरे लिये एक दिलचस्प और नया अनुभव था।

मैंने, सुप्रसिद्ध **ब्रेख्त रंगमंच** के बारे में काफी कुछ सुना था, लेकिन इस रंगमंच का साक्षात्कार करना (अब इसका नाम है 'बर्लिनेर एनसामब्ल') और इसके द्वारा अभिनीत "थ्री पेन्नी आपेरा" अपनी आंखों से देखना, मेरे लिये एक एतिहासिक महत्व से कम नहीं।... मैं बुनियादी तौर से एक नाटककार और एक पुराना अभिनेता हूं। इसलिये नाटक तथा इसके रंगमंचीय शिल्प में मेरी विशेष रूचि होना स्वाभाविक बात है। मैं गीति-नाट्य अभिनय (आपेरा एक्टिंग) और इसके गायन-टेकनीकों के बारे में अधिक जानकारी न रखता। लेकिन **हास्य आपेरा** (कामिक ओपेरा) द्वारा अभिनीत 'हाफ्फमान की कथायें' का अभिनय देखना मेरे लिये एक अपूर्व अवसर था जिसमें मुझे आपेरा-अभिनय और इसका निर्देशन-निर्माण को निकट से देखने का मौका मिला। 'हाफ्फमान की कथायें' का निर्देशन तथा अभिनय बहुत ही उच्च कोटि का था। प्रोफेसर फल्सेनटाइन ने रंगों और संगीत का अत्यन्त सुन्दर चयन किया था इस आपेरा के लिये। इसके अभिनय से मैं इतना प्रभावित हुआ कि उस सारी रात, गीति-नाट्य नायक की तरह मैं भी दुस्साहसिक कृत्यों के दुःस्वप्नों में भटकता रहा।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

'हाफ्फमान की कथायें' का एक दृश्य, जिसको देखकर प्रो. मेहता बहुत प्रभावित हुये। इस हास्य-आपेरा का निर्देशन किया था प्रो. वाल्टर फेल्जेन्स्टाइन ने

ज. ज. ग. की स्वास्थ्य सेवा

जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने नागरिकों के स्वस्थ्य का कितना ध्यान रखती है इसका ज्वलंत प्रमाण यह तथ्य है कि जर्मन इतिहास में ज. ज. ग. सर्वप्रथम राज्य है, सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए जिसका एक स्वतंत्र मंत्रालय ---अर्थात् स्वास्थ्य-मंत्रालय है । जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्थापना (७ अक्तुबर, १९४९) के दिन से ही यहां की सरकार ने अपने नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण की ओर बहुत ध्यान देना शुरू किया । सार्वजनिक तथा समाज कल्याण कार्यों के लिये राज्य के बजट में, नियत की गई धन-राशि में, हर साल वृद्धि हुई है । इस संबंध में निम्न तालिका दृष्टव्य है :

वर्ष	नियत धन राशि	
	करोड़	लाख मार्क
१९५१	५३७	५०
१९५८	११०२	३०
१९५९	१२९८	२०
१९६०	१३६६	९०
१९६१	१४२७	३०
१९६२	१४७६	५०
१९६३	१४९७	१०

(१ मार्क = १.१२ रुपये)

इस निरन्तर बढ़ती हुई धनराशि को नये अस्पतालों के निर्माण तथा पुराने अस्पतालों के अधिक विकास के लिये, पोलि-क्लिनिकों, शफाखानों और दूसरे स्वास्थ्य संस्थानों आदि के लिये इस्तेमाल किया गया । इस धनराशि के अलावा, ज. ज. ग. की सरकार डाक्टरों, नर्सों आदि की ट्रेनिंग पर अलग से पैसा खर्च करती है । डाक्टरों की संख्या, वर्ष प्रति वर्ष, बढ़ती जा रही है । इस संबंध में निम्न आंकड़े दृष्टव्य हैं :

वर्ष	कुल डाक्टर	प्रति डाक्टर जनसंख्या
१९३९	१०,९८५	१,५५३
१९४९	१३,३१५	१,३८०
१९५२	१३,७४०	१,३३२
१९५८	१३,८४८	१,२५०
१९६३	१६,५८३	१,०३६

क्षयरोग और पोलियो का नाश : ज. ज. ग. की सरकार, अपने नागरिकों को पोलियों, क्षयरोग और कैंसर जैसे खतरनाक रोगों से सुरक्षित करने के लिये जबरदस्त अभियान चला रही है । इस अभियान के फलस्वरूप जर्मन जनवादी गणतंत्र में सभी बच्चों को और ४० वर्ष तक की आयु वाले सभी प्रौढ़ों को १९६०-६१ में पोलियो से सुरक्षित किया गया । इस साल के बाद से, ज. ज. ग. का कोई नागरिक इस खतरनाक रोग का शिकार नहीं हुआ ।

क्षयरोग का बहुत जल्दी पता लगाने और उसका नाश करने के लिये ज. ज. ग. में सभी नागरिकों के लिये एक्स-रे जांच अनिवार्य है । टी. बी. विरोधी टीका लगाना भी यहां अनिवार्य है । एक्स-रे, छः महीनों में एक बार होता है । इसी तरह कैंसर का भी पहले ही पता लगाने और ठीक से इलाज करने के लिये नियमित एक्स-रे तथा अन्य जांच की जाती है । स्वास्थ्य सेवा के लिये उत्तरदायी अधिकारियों ने मधुमेह (डयाबेटीज़) का पता लगाने के लिये भी, हाल ही में, ऐसा ही अभियान चलाया है । कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सुदृढ़ कदम उठाने से उल्लिखित भयंकर रोग लगभग समूल नष्ट हुये हैं ज. ज. ग. में ।

इन रोगों के नाश में, ज. ज. ग. के अनेक आरोग्य-आश्रमों, क्षयरोग अस्पतालों और ऐसे ही अन्य संस्थानों का बहुत बड़ा हाथ है। टी. बी. से संबंधित निम्न तालिका इस प्रकार रोग के निरन्तर घटने का प्रमाण है :

वर्ष	कुल क्षय-रोगी	प्रति १०,०.. व्यक्तियों में म..
१९५०	९२,७६०	५०.४
१९५५	४७,०१५	२६.२
१९६०	२३,४१८	१३.६
१९६२	२०,५३६	१२.०

मातृ, शिशु देखभाल : जर्मन जनवादी गणतंत्र की स्वास्थ्य व्यवस्था का उल्ले... तब तक अधूरा रहेगा जब तक इसके ... अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग --- अर्थात् मा... और शिशु की देखभाल से संबंधित उठा... गये कदमों का उल्लेख न किया जाये... प्रत्येक समाजवादी देश की तरह, ज. ज. ... में भी, स्वास्थ्य-सेवा का मूलाधार है मा... और शिशु का स्वास्थ्य कल्याण... इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जर्मन जनवा... गणतंत्र में गर्भवती नारियों को सलाह ... के लिये, सैकड़ों परामर्श केन्द्र खोल गये हैं... उदाहरण के लिये सन् १९६३ में, इन परा... केन्द्रों में, अनुभवी डाक्टरों तथा प्रशि... नर्सों से, ज. ज. ग. की ३०५,१९२ गर्भ... नारियों ने डाक्टरी सलाह प्राप्त की । इ... प्रकार, सन् १९६३ में ही, ज. ज. ग. ... १९ विशिष्ट-अस्पताल ऐसे थे जिनमें कम... गर्भवती स्त्रियों को विशेष डाक्टरी देख... के आधीन रखा गया (सन् १९५१ में ... यहां ऐसे केवल ५ विशिष्ट अस्पताल थे।)

गर्भवती स्त्रियों के स्वास्थ्य आदि की ... करने और विटामिन आदि जैसी दवा... देने के अतिरिक्त उक्त परामर्श-केन्द्रों ... उनको पीढ़ा रहित प्रसव की प्रक्रिया, ... नवजात शिशु की देखभाल के संबंध में ... जानकारी करायी जाती है । इसके अ... राज्य की ओर से प्रत्येक माता को ... बच्चे के लिये ५०० मार्क, दूसरे बच्चे के ... ६०० मार्क, तीसरे के लिये ७०० ... चौथे के लिये ८५० मार्क, और इसके ...

हर बच्चे पर १००० मार्क की रकम विशेष भत्ते के रूप में दी जाती है । इन रकमों के अलावा, जो एक बच्चे पर एक ही बार दी जाती हैं, सरकार प्रत्येक मां को प्रति बच्चे पर (तीन बच्चों तक) हर महीने २० मार्क, और चौथे तथा बाद के बच्चों पर ४५ मार्क प्रति बच्चे पर प्रति मास, अतिरिक्त अनुदान के रूप में देती । इन विशेष-भत्तों और अनुदानों पर निरन्तर बढ़ती हुई धनराशि से संबंधित निम्न तालिका देखिये :

वर्ष	कुल रक़म मार्कों में
१९५२	२१,२०२,०००
१९५५	२५,६१७,८००
१९५८	६६,८८८,०००
१९६३	१६३,६०४,६००

(१ मार्क = १.१९ रुपये)

ज. ज़. ग. में, कुल बच्चों की सख्या का ९५ प्रतिशत भाग अस्पतालों में जन्म लेता है। माता और शिशु की निरन्तर देखभाल के परिणामस्वरूप, ज. ज. ग. में शिशु-मृत्यु दर, सन् १९५७ में ४.६ प्रतिशत से घटकर सन् १९६३ में ३.१ प्रतिशत हो गई । इसी प्रकार, इसी अवधि में, मातृ-मृत्यु दर भी १२ प्रति १०,००० से घटकर ८.२ प्रति १०,००० हो गयी । इस प्रकार, ज. ज. ग. कम से कम मातृ-शिशु-मृत्यु दर वाले देशों में एक है ।

प्रसवोत्तर परामर्श केन्द्र : गर्भवती स्त्रियों में प्रसवोत्तर-परामर्श केन्द्र भी हैं । इन परामर्श-केन्द्रों में प्रसव के बाद माताओं को शिशु के लालन-पालन संबंधी वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध की जाती है। इसके अलावा इन केन्द्रों में बच्चों के सामान्य स्वास्थ्य की जांच होती रहती है, और उनको टीके, इंजकशन आदि किये जाते हैं । प्रसवोत्तर परामर्श-केन्द्रों की संख्या सन् १९५५ में ७,७९७ थी, जो सन् १९६३ में बढ़कर ९,८८१ तक पहुंच गयी । ज. ज. ग. के सभी प्रान्तों और कस्बों में फैले हुए इन परामर्श केन्द्रों में ज. ज. ग. के लगभग सभी शिशुओं का स्वास्थ्य निरन्तर डाक्टरी परामर्श के आधीन रहता है ।

उपर्युक्त सभी डाक्टरी तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के लिए ज. ज. ग. के लोगों को सिर्फ समाज-बीमा कोश में अपने वेतन या मजदूरी का १० प्रतिशत भाग —— लेकिन ६० मार्ग की रकम से अधिक नहीं —— जमा करना पड़ता है । इस छोटी-रकम से फिर बीमा किये गये व्यक्ति तथा उसके परिवार को डाक्टरी देख भाल तथा दवाइयां इत्यादि मुफ्त मिलती हैं । यदि कोई व्यक्ति किसी रोग के कारण काम करने के लायक नहीं रह जाता है तो उसको, उसकी कुल आय का ५० प्रतिशत भाग रोग -वेतन के रूप में २६ हफ्तों तक दिया जाता है । डाक्टर की राय पर इस वेतन को ३९ और ५२ हफ्तों तक भी बढ़ाया जा सकता है । लेकिन यदि रोगी, काम करने के योग्य न रहे तो उसको २७ वें सप्ताह से पेनशन दी जाती है । ऐसे व्यक्तियों को, अपनी ट्रेड यूनियन की ओर से भी आर्थिक सहायता मिलती है ।

काम करने वाली नारियों को १४ सप्ताह का सवेतन प्रसूति अवकाश मिलता है । शिशु जन्म के बाद यदि कोई माता चाहे तो वह बिना वेतन के एक साल की छुट्टी ले सकती है अपने काम से । ऐसा करने से उसकी नौकरी नहीं छूटती । – छात्र-छात्राओं और वृद्धजनों को, समाज-बीमा कोश में रकम जमा किये बिना ही ये सुविधायें मुफ्त मिलती हैं ।

यह एक संक्षिप्त परिचय है जर्मन जनवादी गणतंत्र में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा का । १५ वर्षों के अपने अस्तित्व में ज. ज. ग. की स्वास्थ्य सेवा में भी इतना ही आश्चर्यजनक विकास हुआ जितना इसके अन्य क्षेत्रों में । कहने की आवश्यकता नहीं कि एक समाजवादी राज्य में ऐसा होना अवश्यम्भावी है, क्योंकि समाजवाद का एक बड़ा आधार है स्वस्थ जनता ।

नवजात के जन्म लेने से पूर्व या पश्चात ये चीजें गर्भवती स्त्री को अनुदान के रूप में निःशुल्क दी जाती हैं

(१ मार्क = १.१२ रुपये)
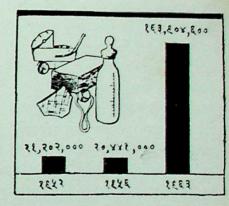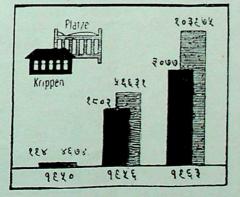
शिशु-गृहों की संख्या

▤ शिशु-गृहों में स्थानों की संख्या

समुद्रों में तैरते अस्पताल

| पोतर नोके

जर्मन जनवादी गणतंत्र के माल-वाहक जहाज, नियमित रूप से यूरोप, मध्य तथा दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी तथा पूर्वी अफ्रीका, लेवां और दूर पूर्वी देशों की, हर साल जितनी यात्रा करते हैं, उतनी यात्रा यदि संसार के गिर्द की जाये तो पचास बार सारे संसार की परिक्रमा की जा सकती है । 'दुइत्शे सीरीडेराइ' नामक जहाज-कम्पनी के १०० मालवाहक पोतों में से अधिकांश जहाज लगातार दूसरे देशों को माल लेने तथा लाने में व्यस्त रहते हैं । जहाजों के नाविकों का जीवन काफी दिलचस्प होता है । ज. ज. ग. के मालवाहक जहाज़ी बेड़े में काम करने वाले ४५०० नाविकों से दक्षता तथा योग्यता की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है ।

ज. ज. ग. के नाविकों का जीवन उन नाविकों के जीवन से सर्वथा भिन्न है जिनका वर्णन लोकप्रिय गीतों, अपराधी - कहानियों या संदिग्ध फिल्मों में किया जाता है । नाविक यातायात के इतिहास में पहली बार ज. ज. ग. में नाविकों को कुशल-श्रमिक का दर्जा दिया गया है । जहाजों में काम करने वाले कर्मचारियों की औसत आयु २२ वर्ष है, तथा उच्च अधिकारियों की आयु प्रायः इससे १० वर्ष अधिक होती है । जहाज़ों में काम करने वालों के लिए रहने सहने की जो व्यवस्था की जाती है उसमें कोई भेद-भाव नहीं बरता जाता और उनको रहने की बेहतरीन सुविधायें दी जाती हैं । कर्मचारी अपने अवकाश का सदुपयोग बहुत अच्छी-तरह करते हैं जहाज़ों पर । इसमें २०,००० पुस्तकों वाले जहाज़ के पुस्तकालय, फिल्में और टेलिविजन - प्रोग्राम भी उनकी सहायता करते हैं । परन्तु इस सबसे उस समय कौन रूचि रख सकता है जब जहाज़ का कोई नाविक रोग से तड़पता हो और उसकी दशा बहुत ही गम्भीर हो । यह एक ऐसी समस्या है जो सदैव ही अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री मालवाहक जहाज़ों के कर्मचारियों के सामने रही है । परन्तु ज. ज. ग. के स्वास्थ्य अधिकारियों ने इस समस्या का समाधान, योग्यतम चिकित्सकों तथा आधुनिक टेकनालाजी द्वारा किया है ।

ज. ज. ग. यातायात के मेडिकल विभाग ने रोस्टोक की बन्दरगाह पर एक ऐसा केन्द्र खोला है जो केवल इन ४५०० जाहज़ियों तथा गहरे सागर में मछली पकड़ने वाले ३००० मछेरों के स्वास्थ्य की देख-रेख करता है, यह केन्द्र सीधे, श्रम सुरक्षा तथा स्वास्थ्य मंत्रालय के आधीन है जो जहाज़ों पर और बन्दरगाहों में श्रम सुरक्षा, रोग निरोधन तथा संक्रामक रोगों की रोकथाम के लि[illegible] ज़िम्मेदार है । जब हम यह केन्द्र देखने [illegible] हमें यह देखने का अवसर भी मिला कि [illegible] प्रकार यहां के 'डिस्पैच सेंटर' से एक [illegible] पर एक रोगी के लिये रेडियो द्वारा आव[illegible] आदेश भेजे गये । इस केन्द्र में दिन-[illegible] काम होता रहता है ।

रूइगेन रेडियो, ज. ज. ग. का समुद्र त[illegible] केन्द्रीय रेडियो स्टेशन है । जिस समय हम [illegible] केन्द्र देख रहे थे उसी समय रूइगेन रे[illegible] से, भूमध्य-सागर में यात्रा करने वाले [illegible] जहाज़ ने डाक्टरी परामर्श मांगा रे[illegible] द्वारा । हम ने लाउडस्पीकर से यह सन्देश [illegible] "एम. एल. बर्लिन भीतरी रोग के लिए [illegible] परामर्श की प्रार्थना करता है" – इसके तु[illegible] बाद, केन्द्र के डाक्टर ने सूचना को देख [illegible]

एक मालवाहक जहाज़ का अफसर, एक नाविक को फस्ट-एड दे रहा है

कर, रोस्तोक विश्वविद्यालय के भीतरी-रोगों के विशेषज्ञ का फोन नम्बर घुमाकर मालवाहक जहाज के अधिकारी तथा विशेषज्ञ को रेडियो द्वारा एक दूसरे से मिलाया। दोनों एक दूसरे से हज़ारों किलोमीटर दूर हो कर भी रोग के बारे में बातें करके रोग का निदान करते हैं।

हमें इस बात से अधिक दिलचस्पी है कि समुद्री-यात्रा पर जाने वालों के स्वास्थ्य की देख-रेख कैसे और किस प्रकार की जाती है और यह बातें हमें उप-मेडिकल अधीक्षक, डाक्टर मोइल्लर बताते हैं, जो स्वास्थ्य-अधिकारी भी हैं।

परिवहन चिकित्सा नियम के अनुसार, ज. ज. ग. के प्रत्येक ऐसे जहाज के साथ एक डाक्टर का होना आवश्यक है जिस में कर्मचारियों की संख्या पचास से अधिक हो। इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी तथा दूसरे पूंजीवादी देशों में केवल उन जहाज़ों के साथ एक डाक्टर रहता है जिन में कर्मचारियों की संख्या ७५ हो और वे यात्री-पोत हों। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ा अन्तर यह है कि ज. ज. ग. के जहाज़ों के डाक्टर जहाज़ कम्पनी के अधीन नहीं होते, इसलिए उन्हें जहाज के कप्तान या कम्पनी के आदेशनुसार नहीं चलना पड़ता। उन्हें यह अधिकार है कि ज़रूरी समझने पर वे किसी भी रोगी-कर्मचारी को वापिस देश भेज सकते हैं, चाहे ऐसा करने में कितना ही पैसा क्यों न खर्च हो, और जहाज बन्दरगाह से कितनी ही दूर क्यों न हो।

ये डाक्टर जहां १०,००० टन वज़न वाले मालवाहक-जहाज़ों, शिक्षा देने वाले तथा विनोद पोतों और मछली पकड़ने वाले जहाज़ों के कर्मचारियों की देख-भाल करते हैं, वहां छोटे-छोटे जहाज़ों के नाविकों को भी यथा सम्भव ये डाक्टर मेडिकल सहायता देते हैं। किसी भी नौ-परिवहन स्कूल से लाइसेंस प्राप्त करने से पूर्व नाविक अफसरों को परिवहन मेडिकल संस्था के एक सौ (१००) डाक्टर रोगों से सम्बंधित मुख्य बातें तथा समस्यायें समझाते हैं। ऐसा करना उनके लिये अनिवार्य है। उन्हें रोग निदान तथा चिकित्सा के मुख्य सिद्धान्त और औषधियों तथा औज़ारों का उपयोग भी सिखाया जाता है। इन्हें स्वास्थ्य रक्षा तथा विशेष ट्रापिकल रोगों के बारे में भी जानकारी कराई जाती है। प्रत्येक नाविक के लिये कुशल श्रमिक का प्रमाण पत्र प्राप्त करने से पूर्व, जर्मन रेड-क्रास फर्स्ट एड कोर्स में सफल होना आवश्यक है।

'परिवहन मेडिकल सेवा' के प्रबन्ध-निदेशक डा. वेक्कर (दायें) अपने काम में व्यस्त हैं

स्वास्थ्य अधिकारी, डा. मोइल्लर ने, जो नाविक स्कूल के अधिकारी भी हैं, इस बात की तसदीक की कि भविष्य के ये नाविक अफसर, शिक्षा के अन्त में अपनी कड़ी मेहनत के द्वारा चिकित्सा संबंधी जानकारी में योग्यता दिखाते है। इन भावी जहाज़ियों में से प्रत्येक ने समुद्री यात्रा में चार वर्ष बिता दिये होते हैं जिस से उन्हें यह देखने का अवसर मिलता है कि जहाज़ के उच्च-अधिकारी (कप्तान) तथा स्वास्थ्य से सम्बंधित दूसरे कर्मचारियों को जहाज़ों में काम करने वाले श्रमिकों की देख-रेख के लिए कौन-कौन सी जिम्मेदारियां रहती हैं। इस बात पर कड़ी दृष्टि रखी जाती है कि किसी ऐसे व्यक्ति को जहाज में काम करने का लाइसेंस न दिया जाये जो इस बुनियादी मेडिकल कोर्स में न बैठा हो।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के परिवहन मेडिकल सेवा का उत्तरदायित्व यहीं पर समाप्त नहीं होता। प्रत्येक जहाज़ में अस्पताल रखना और उसको औषधियों तथा मेडिकल यंत्रों से लैस करना जहाज-कम्पनी का कर्तव्य है, और इस बारे में बनाये गये नियमों का पालन अति आवश्यक होता है। ज. ज. ग. की हर बन्दरगाह में विशेष औषधालय हैं, जिनका केवल यही काम है कि औषधियां आदि सप्लाई होती रहें। प्रति वर्ष एक बार हर जहाज़ के चिकित्सालय के औषधि-भण्डार का निरीक्षण किया जाता है, और इस सम्बंध में प्रमाण-पत्र बन्दरगाह के चिकित्सक ही देते हैं। जहाज के इन भण्डारों को, कर्मचारियों की संख्या के अनुसार विभिन्न भागों में विभाजित किया जाता है और इसकी सूची विभिन्न नाविक-अफसरों के पास रहती है। ऐसी ही सूचियां उन विशेषज्ञों के पास भी रहती है जो रेडियो
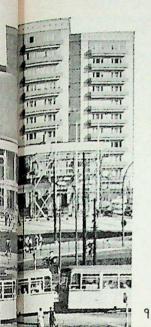
(शेष पृष्ठ २२ पर)

...की

...य झाँकी

५

१

४

वर्लि...मित भाग

शिशु...

सुनह...

नई ...

ज. ... देशों के विद्यार्थी

३

भारत और ज. ज. ग.
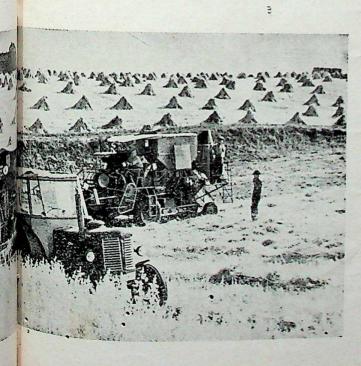
ज. ज. ग. के १५ वर्ष : चित्र प्रदर्शनी

६ अक्तूबर के दिन, भारत की राजधानी दिल्ली में जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रगति संबंधी एक छाया-चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इस फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया भारतीय सांस्कृतिक मामलों के राज्य मंत्री, **श्री आर. एस. हाजरनवीस** ने आल इण्डिया फाइन आर्टस एण्ड क्राफ्टस सोसाइटी के हाल में। प्रदर्शनी का आयोजन जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हुआ था। इसीलिये इसका नामकरण किया गया था **ज.ज.ग. के १५ वर्ष**।

राजधानी से प्रकाशित होने वाले सभी बड़े-बड़े अंग्रेजी तथा हिन्दी दैनिकों, जैसे स्टेट्समैन, इण्डियन-एक्सप्रेस, नवभारत-टाइम्स, हिन्दुस्तान-टाइम्स आदि ने उक्त प्रदर्शनी की बहुत प्रशंसा की। उद्घाटन भाषण में श्री हाजरनवीस ने भारत और ज. ज. ग. के निरन्तर बढ़ते हुये सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंधों का प्रशंसापूर्ण उल्लेख किया, और इन संबंधों को राजनीतिक संबंधों से भी अधिक महत्वपूर्ण और चिरस्थायी बतलाया।

भारत के सांस्कृतिक मामलों के राज्य मंत्री, श्री हाजरनवीस, प्रदर्शनी का उद्घाटन-भाषण दे रहे हैं
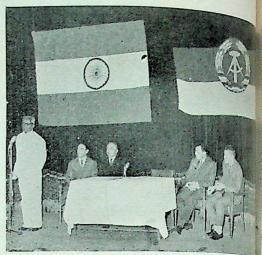
इस प्रदर्शनी को राजधानी के अनेकानेक दर्शकों ने देखा। प्रदर्शनी की लोकप्रियता को देखते हुये, प्रदर्शनी की अन्तिम तिथि को १२ अक्तूबर से बढ़ाकर १५ अक्तूबर तक बढ़ाना पड़ा।

ज.ज.ग. के १५ वर्ष की इस प्रदर्शनी में जर्मन जनवादी गणतंत्र के अस्तित्व के पन्द्रह वर्षों में, सवर्तोमुखी आश्चर्यजनक विकास की एक झांकी प्रस्तुत की गयी थी। यह प्रदर्शनी भारत स्थित, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के तत्वावधान में आयोजित हुई।

लाइपज़िक मेलों में भारत का एक दर्शक
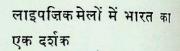
भारत के व्यापारियों तथा अन्य ... व्यक्तियों ने इस वर्ष के शरद्... लाइपज़िक व्यापार मेले में (सितम्बर में) ... बार शिरकत की। भारत ने इस लाइ... व्यापार मेलों में भाग लेने का एक ... पूरा किया। इस वर्ष के शरद्कालीन ... में भारत की १७ व्यापारिक फर्मों ने ... मण्डपों में अपनी वस्तुएं प्रदर्शित कीं। ... इन फर्मों के अतिरिक्त भारत की एक ... प्रदर्शनी ने इतनी भूमि घेरी थी जो ... वर्ष की अपेक्षा ४० प्रतिशत अधिक थी।

भारतीय प्रदर्शकों ने उक्त प्रदर्शनी ... ६५ वस्तुएं प्रदर्शित की थीं। इन ... में न केवल भारत की पारंपरिक ... वस्तुएं जैसे मसाले, चाय, काफी आदि ... सम्मिलित थीं बल्कि उच्च स्तर के टेक... चमड़े का सामान और विद्युति की ... की कई चीजें भी शामिल थीं। यह ... की आवश्यकता नहीं कि भारत द्वारा लाइ... व्यापार मेलों में भाग लेने से, जर्मन ज... गणतंत्र और भारत के व्यापार में ... वृद्धि हुई है।
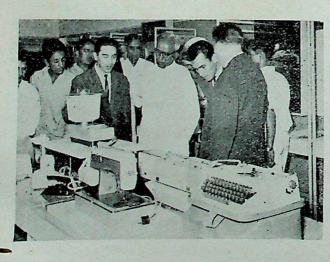
श्री हाजरनवीस, प्रदर्शनी में रखी हुई वस्तुओं में काफी दिलचस्पी दिखा रहे हैं

व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री बोत्तकर भाषण करते हुये। बायें कोने पर बैठी हैं श्रीमती अरुणा आसफ़अली

'भारत-ज.ज.ग. मैत्रि संघ' ने ज.ज.ग की १५ वीं वर्षगांठ मनाई

सोमवार (१२ अक्तूबर) के दिन, राजधानी के कांसटिच्यूशन क्लब में 'भारत-ज. ज. ग. मैत्रि संघ' के तत्वावधान में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ मनाई गयी। इस समारोह का सभापतित्व, भारत सरकार के भूतपूर्व रेल-मंत्री, श्री जगजीवन राम कर रहे थे। समारोह की कार्रवाई आरंभ होने से पहले उपस्थित लोग स्व. जवाहरलाल नेहरू और ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री, स्व. ओटो ग्रोटवोल (जो हाल ही में मरे थे) की पुण्य स्मृति में दो मिनट तक मौन खड़े रहे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने भारत और ज. ज. ग. के समान आदर्शों पर काफी बल दिया। उन्होंने १५ वर्षों में ज. ज. ग. के अभूत-पूर्व विकास और प्रगति की भूरिभूरि प्रशंसा की।

इस समारोह में उपस्थित, श्री हर्बर्ट फिशर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। श्री फिशर पहले, भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के उप-प्रमुख थे। अब वे, ज. ज. ग. के विशेष-मंत्रालय में दक्षिण-पूर्वी एशिया विभाग के प्रमुख हैं, और किसी काम से भारत आये हैं। अपने भाषण का कुछ हिस्सा उन्होंने हिन्दी में दिया।

डाइस पर, श्री जगजीवनराम के साथ श्रीमती अरुणा आसफ़अली, श्री कूर्त बोत्तकर (ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख) श्री हर्बर्ट फिशर, श्री शशिभूषण (भारत-ज. ज. ग. मैत्रि संघ के महासचिव) और श्री सिन्हा भी बैठे थे। समारोह का विशेष आकर्षण था जर्मन बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये कुछ गीत तथा नृत्य, और कुछ दस्तावेज़ी फिल्में। मैत्रि संघ के अध्यक्ष श्री राजनारायण ने आगत अतिथियों का शुक्रिया अदा किया। जलपान से समारोह का समापन हुआ।

षष्टि-पूर्ति पर प्रधान मंत्री शास्त्री को हार्दिक बधाई

जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये प्रधान मंत्री, श्री विली स्टोफ ने, भारतीय गणराज्य के प्रधान मंत्री, श्री लालबहादुर शास्त्री को उनके ६०वें जन्मदिवस पर हार्दिक बधाई भेजी है। बधाई के तार में, ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री ने लिखा है: "आप भारतीय जनता के कल्याण और विश्व शान्ति को बनाये रखने के लिये सतत कार्य करते रहें, इसके लिये आपके स्वस्थ जीवन की शुभकामना करता हूं।

श्री जगजीवन राम भाषण दे रहे हैं

गीत गाते हुए जर्मन बच्चे
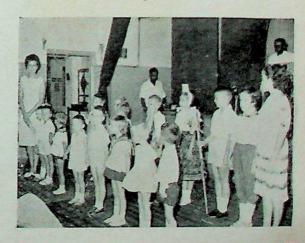
ज. ज. ग. की
विकासशील कृषि

जर्मनी का पूर्वी भाग, जो अब जर्मन जनवादी गणतंत्र है, जर्मन सामन्तों और बड़े-बड़े निरंकुश जागीरदारों का अड्डा था। ये जुंकर्स के नाम से कुख्यात थे, और जर्मनी में सैनिकवाद, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और फासिस्तवाद के स्तम्भ थे। पिछली शताब्दी के अन्त पर इस निरंकुश प्रतिगामी वर्ग ने, जर्मनी के नवजात पूंजीपति वर्ग से समझौता किया, और इस तरह अपने स्वार्थों के लिये आम जर्मन जानता का शोषण करते रहे। दुनिया को हड़प लेने की हिटलर की कुत्सित योजनाओं के पीछे भी जर्मनी के सैनिकवादी सामन्त और बड़े-बड़े इजारेदार पूंजीपति थे। यही कारण है कि दूसरे महायुद्ध की समाप्ति तक भी जर्मनी में — विशेष कर इसके पूर्वी भाग में, सामन्तों के कब्ज़े में बड़ी-बड़ी जागीरें थीं।

हिटलर की पराजय के बाद ही, अर्थात सन १९४५ में, जर्मनी के सोवियत अधिकृत भाग में, किसानों को स्वतंत्रता मिली और उनको ज़िन्दगी में पहली बार शोषण मुक्त जीवन का स्वाद मिला। एक ब्रहत भूमि सुधार कानून पास किया गया और इसके अधीन सामन्तों और जागीरदारों की जागीरें ज़ब्त करके तोड़ ली गयीं। सारी ज़मीन भूमिहीन तथा गरीब किसानों में बांट दी गयी। इस प्रकार, जर्मनी के सम्पूर्ण इतिहास में पहली बार, ज़मीन किसान की हो गयी—लेकिन सिर्फ पूर्वी भाग में, अर्थात जर्मन जनवादी गतंत्र में। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस जनवादी भूमि सुधार कानून ने, पूर्वी जर्मनी (ज. ज. ग.) के कृषि विकास के इतिहास में एक नये अध्याय का प्रारंभ किया।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की कृषि के विकास और समृद्धि में दूसरा कदम उठाया गया सन् १९६० में। उस वर्ष में ज. ज. ग. के किसानों ने स्वेच्छा से, सहकारी खेती को अपना लिया और उन्होंने अनेकानेक कृषि सहकारी फार्मों तथा संघों को जन्म दिया। इस प्रकार बहुत बड़े पैमाने पर समाजवादी कृषि-उत्पादन के लिये नींव डाली गयी।

आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र में तीन प्रकार के कृषि सहकारी खेत काम करते हैं :

१. पहले प्रकार के सहकारी खेतों में किसी विशेष सहकारी खेत के सदस्य केवल अपनी भूमि को एक करके, इसको एक साथ जोत लेते हैं।

२. दूसरे प्रकार के सहकारी खेतों में किसान सदस्य अपनी जमीन ही एक नहीं करते, बल्कि वे अपने हल, ट्रैक्टर तथा अन्य कृषि मशीनें आदि इकट्ठी करके अपने सहकारी खेत को जोतते, बोते, काटते हैं।

३. तीसरे प्रकार के कृषि सहकारी खेतों में किसान अपनी तमाम भूमि (चरागाहें तथा वनभूमि भी), पशुओं का एक भाग और कृषि यन्त्र एक करके सहकारी खेत के काम में लगा देते हैं।

सहकारी खेतों में एकत्रित की हुई भूमि किसानों की सम्पत्ति रहती है। इसके अलावा सहकारी खेत का प्रत्येक सदस्य, १.२५ एकड़ भूमि अपने निजी इस्तेमाल जैसे शाक-सब्जी उगाने, बाग लगाने आदि के लिये, अलग अपने पास रख सकता है।

ज. ज. ग. में कुल १६,३१४ कृषि सहकारी खेत हैं, जिनके ९८६,४६४ सदस्य है। इन खेतों के पास ५,४५६,१४३ हेक्टर कृष्य भूमि है। इस संबंध में निम्न तालिकायें दृष्टव्य हैं :

सहकारी खेतों की संख्या	**सदस्य संख्या**	**कृष्य भूमि (हेक्टरों में)**
(१ तथा २ प्रकार के)		
९९७२	३६०,३४३	१,८१२,८३४
(३ प्रकार के) ६३२	६२६,१२१	३,६४३,३१९

पशु धन का विकास

	१९५०	१९६३	% वृद्धि
	(संख्या हज़ारों में)		
सींग वाले पशु	३,६१५	४,६१४	२८.०%
सुअर	५,७०५	९,२८८,५	४०.४%

प्रति हेक्टर कृष्य भूमि पर, पशु-उत्पादनों की वार्षिक औसत वृद्धि इस प्रकार हुयी :

उत्पादन	१९५०-५४ किलो ग्राम	१९६० किलो ग्राम
सुअर	७९	१०८
अन्य पशु	३६	६०
दूध	४१३	७७३
अण्डे	११८	३४७

प्रति गाय पर औसत दुग्ध उत्पादन:

१९५१	२,१८२ कि. ग्रा.
१९६२	२,६०० कि. ग्रा.

कृषि यन्त्रों का बढ़ता इस्तेमाल : ज. जनवादी गणतंत्र के अभूतपूर्व कृषि वि[illegible] का सबसे बड़ा कारण है सहकारी खेतों [illegible] कृषि यन्त्रों का उत्तरोतर बढ़ता हुआ प्रयो[illegible] इस संबंध में निम्न तालिका दृष्टव्य है :

वर्ष	ट्रैक्टर	फसल-कम्बाइनों की संख्या	[illegible] कम्बाइ[illegible] की सं[illegible]
१९५०	३५,४३५	३८९	..
१९६३	१११,२२६	१२,८४९	१७,[illegible]

निम्न आंकड़े, ज. ज. ग. की कृषि-क्षम[illegible] और इसके निरन्तर बढ़ते हुये कृषि-उत्पा[illegible] के सूचक हैं :

कृषि उत्पादन	१९५१-५४ कि. ग्राम.	१९६३ कि. ग्रा[illegible]
आनज	२,३१०	२,४७०
गेहूं	२,८२०	३,०००
जौ	२,५१०	२,८२०
तिलहन	१,०५०	१,१२०
आलू	१६,५४०	७,२६०

इस वर्ष (१९६४) के प्रथम छः महीनों [illegible] जर्मन जनवादी गणतंत्र की समाज[illegible] कृषि में और भी प्रगति हुई। सन् १९[illegible] के प्रथम छः महीनों के साथ निम्न तुलना[illegible] तालिक इस बात का स्पष्ट प्रमाण है

उत्पादित वस्तु	प्रतिशत [illegible] (सन् ६३ के प्रथम [illegible] महीनों की तुलना[illegible])
गोश्त	२८.० प्रतिशत
कुक्कुट पालन	४७.२ "
अण्डे	२७.७ "
दूध	४.६ "

जर्मन जनवादी गणतंत्र और भारत कृषक समाज

आर. बी. देशपाण्डे
भारत कृषक समाज के सचिव

भारत कृषक समाज और जर्मन जनवादी गणतंत्र की मित्रता तथा आपसी सहयोग की नींव १९५६ के उस अन्तर्राष्ट्रीय कृषि मेले से और भी दृढ़ हुई, जिसमें जर्मन जनवादी गणतंत्र ने भी भाग लिया था। यह कृषि मेला सारे संसार में अपने प्रकार का पहला मेला था। इस में २२ देशों ने भाग लिया, जिनमें ज. ज. ग. भी एक देश था। इस मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र के सुसज्जित मण्डप को सबसे श्रेष्ठ मण्डपों में से एक माना गया। ३४,००० वर्ग फुट पर फैले हुए इस पवेलियन में दर्शकों के लिए बहुत सी नई वस्तुएं रखी गयी थीं, और आकर्षण का केन्द्र था वह बड़ा सा चलता-फिरता कृषि सहयोग, जो ७५०० एकड़ खेतों का प्रतिनिधित्व कर रहा था और जिसमें हर प्रकार की सुविधायें, अर्थात सिविक सेंटर रोगियों को देखने का विभाग, स्कूल इत्यादि शामिल थे। इसके अतिरिक्त इस प्रदर्शनी का आकर्षण बिन्दु कांच की वह गाय थी, जिसे ज. ज. ग. के स्वास्थ्य विज्ञान विभाग ने ड्रेस्डेन में बनाया था।

ज. ज. ग. के पवेलियन का निर्माण तथा प्रदर्शन सीधे प्रो. डा. बाउमगार्टेन की देख रेख में हुआ। डा. बाउमगार्टेन संसार के प्रसिद्ध लाइपजिक-मार्कलीबर्ग कृषि प्रदर्शनी के निर्देशक भी हैं। श्रीमती बाउमगार्टेन भी अपने पति के साथ भारत आई थी। मेले के दौरान दोनों पति पत्नी भारत कृषक समाज के मेले के अधिकारियों में बहुत प्रिय रहे। उनका शील स्वभाव तथा लुभावना आचार आज भी उन लोगों के मन में ताजा है जिनका उनसे सम्पर्क रहा। भारत कृषक समाज, जर्मन जनवादी गणतंत्र का इस मेले में सम्मिलित होना सदा कृतज्ञता से याद करता रहेगा।

भारत कृषक समाज तथा ज. ज. ग. की यह मित्रता और भी दृढ़ हुई, जब 'जर्मन कृषक परस्पर सहयोग संस्था' तथा भारत कृषक समाज के फार्म अध्यक्षों में अदला-बदली का कार्यक्रम बनाया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 'कृषक परस्पर सहयोग संस्था' के प्रथम सचिव श्री गाटफ्राइड सिपलिंग और सचिवालय के सदस्य श्री इ. विटर भारत कृषक समाज के निमन्त्रण पर १५ अप्रैल को भारत आये और ६ मई १९६२ तक भारत में रहे। उन्होंने दिल्ली के निकट कई गांव देखे और बहुत से किसानों से मिले और उनसे बातें कीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने आगरा तथा भारत की कृषि अनुसन्धान संस्था भी देखी।

इसी प्रकार भारत कृषक समाज के प्रधान डा., पी. एस. देशमुख तथा सचिव श्री आर. बी. देशपाण्डे ने 'जर्मन कृषक परस्पर सहयोग संस्था' के न्योते पर २६ जून से ७ जुलाई १९६३ तक जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा किया। उन्होंने लाइपजिक

ज.ज.ग. के एक कृषि-संस्थान में 'भारत कृषक समाज' का प्रतिनिधि-मण्डल

मार्कलेबर्ग में हुई ग्यारहवीं अन्तर्राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी भी देखी । उन्हें प्रदर्शनी के निर्देशक, प्रो. बाउमागार्टेन ने स्वयं सारी प्रदर्शनी दिखाई । अध्यक्ष तथा सचिव ने, बर्लिन, रोस्तोक, पोतस्दाम, माइसेन आदि स्थानों का भी दौरा किया । उन्होंने कुछ सहयोग केन्द्र, पशु तथा मुर्गी फार्म भी देखे। इसके अतिरिक्त उन्हें कुछ स्कूल तथा बर्नबर्ग और ग्रास लुइसविज की पौदों की उपज तथा देख-भाल करने की संस्थाए और बोरनिम-कृषि तकनीकी संस्थान भी दिखाये गये ।

भारत कृषक समाज के निमंत्रण पर ज. ज. ग. की 'कृषक परस्पर सहयोग संस्था' के तीन सदस्य, संस्था के पहले सचिव श्री जी. स्पर्लिग, कृषि मंत्रालय के सचिव, श्री स्कोदोव्स्की तथा श्री कार्ल फिशर १६ मार्च १९६४ को भारत में होने वाले नववें और दसवें सम्मेलन में भाग लेने के लिए आये । सम्मेलन में श्री स्पर्लिग तथा श्री स्कोदोव्स्की ने भाषण दिये । उन्होंने कृषि अनुसन्धान केन्द्र तथा दिल्ली के आस-पास के कुछ गांव भी देखे । भारत कृषक समाज के सरकारी सदस्य के न्योते पर वह मेरठ भी गये, जहां उन्होंने कुछ फार्म, एक विकास खण्ड तथा सुप्रसिद्ध नौचन्दी का मेला भी देखा । दिल्ली में वे श्री स्वर्ण सिंह से भी मिले, जो उस समय केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मंत्री थे । वे समाज तथा कृषि अनुसन्धान संस्था का कार्य देख कर बहुत प्रभावित हुए ।

ऊपर कहे गये इस दौरे के बदले में ज. ज. ग. की 'कृषक परस्पर सहयोग संस्था' ने भारत कृषक समाज के सदस्यों को आमंत्रित किया जिसके फलस्वरूप समाज के आठ सदस्यों ने २९ से ३१ जुलाई तक ज. ज. ग. का दौरा किया । उन्होंने लाइपज़िक मार्कलीबर्ग प्रदर्शनी के अतिरिक्त और भी बहुत से स्थान देखे । उन्होंने सहयोगी अनुसंधान तथा शिक्षा केन्द्रों को भी देखा । वे कृषि उद्योग की उस प्रगति से बहुत प्रभावित हुए जो ज. ज. ग. ने १५ वर्ष के कम समय में की है ।

भारत के ये दोनों प्रतिनिधि दल जर्मन जनवादी गणतंत्र में जहां भी गये उनकी देखभाल बहुत ही अच्छे प्रकार से की गई, हर स्थान पर उनका हार्दिक स्वागत तथा यथोचित अतिथि सत्कार किया गया ।

अन्तर्राष्ट्रीय कृषि मेले, तथा दोनों देशों के प्रतिनिधियों के आने जाने से भारत कृषक समाज और ज. ज. ग. का व्यापार दूतावास आपसी सहायता, मित्रता तथा सहयोग में बहुत निकट आ गये हैं ।

अमरीका तथा ज. ज. ग. के साथ कृषि संस्थाओं के स्तर पर प्रतिनिधियों के आने-जाने के इस प्रोग्राम के आधार पर भारत कृषक समाज यह अनुभव करता है कि ऐसे कार्य-क्रम देशों को एक दूसरे के निकट लाने, लोगों को समझने, आपसी सहायता तथा सहयोग में बहुत सहायता दे सकते हैं और इन कार्य-क्रमों पर और अधिक [illegible] देना चाहिए । ऐसे कार्यक्रम देशों की [illegible] गलतफहमियों को दूर करने में [illegible] सहायता कर सकते है । इसके अति[illegible] जो सहायता कृषि सम्बन्धी नई-नई [illegible] को सीखने, उपज बढ़ाने, फारम संस्था[illegible] के सहयोग तथा चलाने के तरीकों आदि [illegible] मिलती है, उसको व्यक्त करना कठिन है।

भारत तथा ज. ज. ग. के सहयोग [illegible] दसवें वर्ष और ज. ज. ग. की पन्द्रहवीं [illegible] गांठ पर मैं **भारत कृषक समाज** [illegible] भारत के किसानों की ओर से जर्मन जन[illegible] गणतंत्र की सरकार तथा 'कृषि परस्पर सह[illegible] संस्था' को बधाई देता हूं और प्रा[illegible] करता हूं कि आगामी वर्षों में ज. ज. ग. [illegible] कृषि परस्पर सहयोग संस्था देश की प्र[illegible] और निर्माण कार्यों में और भी सफ[illegible] प्राप्त करे

...अविस्मरणीय दिन

(पृष्ठ ६ का शेष)

मैं एक तरुण साहसी निर्माता, श्री होर्स्ट से भी मिला । इस कम उमर में ही, वे संस्कृत के प्रसिद्ध नाटक **मृच्छकटिक** का निर्माण-निर्देशन कर चुके हैं । इस नाटक के मुख्य विषय-वस्तु पर उनकी खासी पकड़ थी । यह बात मैं उनके पूछ गये प्रश्नों से समझ सका । उनके पास 'मृच्छकटिक' के एक पुराने जर्मन अनुवाद की एक प्रति है, जो मूलतः पद्य में है । इस नाटक पर हमारी काफी बात-चीत हुयी, विशेषकर इसकी वेषभूषा के संबंध में ।

यहां मैंने सभी थियेटर हमेशा भरे-पूरे देखे लोगों से । बैले से लेकर नाटकों तक, हर प्रकार के अभिनय होते हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र के रंगमंचों पर । मैं यहां इतने कलाकारों तथा सांस्कृतिक संगठनों आदि से मिला, कि अलग-अलग उनका उल्लेख करना लगभग असम्भव सा है । फिर भी मैं अपनी इस यात्रा के उस सुखद समय को कभी नहीं भूल सकता जो मैंने प्रोफसर लांगोफ्फ, श्री रूडी पेनका, और उस महान नाटक-कार तथा निर्माता स्व. बर्तोल्त ब्रख्त की विधवा, श्रीमती हेलेन वाइग्ल के साथ बिताया । मैत्रिपूर्ण स्वागत का यह स्नेहासिक्त वातावरण अविस्मरणीय है ।

प्रोफेसर हेम्मरलिंग के वर्कशाप को दे[illegible] एक रोचक और नया अनुभव था मेरे [illegible] प्रोफसर महोदय के सहकर्मी, श्री कु[illegible] वेबर ने मुझे उक्त वर्कशाप में, अमल [illegible] यह दिखाया कि एक साधारण रं[illegible] को भी कैसे, छोटी-मोटी तथा आव[illegible] तबदीलियां करके एक सुन्दर और [illegible] रंगमंच में परिवर्तित किया जा सकता है। यहां की कई रंगशालाओं ने, प्रो[illegible] हेम्मलिंग के इन नये प्रयोगों तथा अनु[illegible] का बहुत अच्छा फायदा उठाया है, और [illegible] तरह ज. ज. ग. के रंगमंच को बहुत उप[illegible] और समृद्ध बना दिया है । रंगमंच में [illegible] तबदीलियां करने में अधिक खर्च नहीं होता।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप सांस्कृ[illegible] मंत्री द्वारा सरकारी अतिथि-भवन में [illegible] गयी एक दावत में, पूर्वी बर्लिन के [illegible] जगत से संबंधित लगभग सभी ख्यातिप्र[illegible] हस्तियों से मेरी मुलाक़ात हुयी । [illegible] वार्तालाप के दौरान मुझे यह पता चला [illegible] भारतीय संस्कृत नाटकों और उनकी निर्दे[illegible] पद्धति में उनकी बहुत रूचि है ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा [illegible] मैं काफी प्रसन्न भी हूं और प्रभावित [illegible] जब भी मुझे अवसर मिलेगा मैं जर्मन [illegible] से मिलने और जर्मन रंगमंच के नये [illegible] को देखने वहां फिर जाऊंगा ।

चिट्ठी-पत्री

प्रिय महोदय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधानमंत्री श्री ओटो ग्रोटवोल के स्वर्गवास का समाचार पढ़ कर दुख हुआ। भारत-जर्मन मैत्री के लिये उनके प्रयास को कौन भूल सकता है। १९५१ की उनकी भारत यात्रा के बाद दोनों देशों के संबंध बढ़ते रहे हैं। आज जर्मन जनता को उनके नेतृत्व की सब से अधिक आवश्यकता थी। ऐसे समय उनका उठ जाना एक अपूर्णीय क्षति है। जर्मन जनता के इस दुःख में हम भी उसके सहभागी हैं। भगवान स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

शोक संतप्त
वे. आ. ओझा
हैदराबाद (आं. प्र.)

प्रिय महोदय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र सितम्बर ६४ का अंक १५ वीं वर्षगांठ ७ अक्तूबर का **विशेषांक** हमारे सामने है। सोसाइटी के सभी सदस्यों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री ओटो ग्रोटवाल के निधन पर अपने अफसोस का इज़हार किया और उनके सम्बंधियों तथा परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की।

दूसरी ओर नये प्रधान मंत्री श्री विल्ली स्टोप को शुभ कामनायें भजीं और आशा प्रकट की कि वे स्वर्गीय श्री ओटो ग्रोटवोल के कदमों पर चल कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

इस वर्ष भारत तथा ज. ज. ग. दो महान विद्वानों से खाली हो गया इस क्षतिका पूरा होना अभी बहुत कठिन है।

भारत और ज. ज. ग. के मैत्रि सहयोग अंक पर आपको **सोसाइटी** के सदस्य मुबारकबाद देते हैं, और आशा करते हैं कि इसको आप अपनी **सूचना पत्रिका** द्वारा दूसरों तक पहुंचायेंगे।

धन्यवाद,

सलीम उमर
लखनऊ (उ. प्र.)

प्रिय सम्पादक जी,

नमस्कार। आप के सुन्दर **विशेषांक** के लिए हार्दिक बधाई। जहां पर ज. ज. ग. के भूतपूर्व प्रधान मंत्री के निधन का दुख हुआ वहीं पर इस बात की खुशी हुई कि नये प्रधान मंत्री के रुप में ज. ज. ग. प्रगति और विकास के पथ पर बढ़ता ही जा रहा है।

स्वर्गीय श्री ओटो ग्रोटवोल का **भारतीय मित्रों के नाम सन्देश**, बहुत ही महत्वपूर्ण है और साथ ही भारत – ज. ज. ग. सम्बन्धों के १० वर्ष भी बहुत ही उपयोगी लेख हैं। परस्पर सहयोग एवं सद्भाव दिन-प्रति-दिन बढ़ रहा है। यह लक्षण दोनों देशों के लिए शुभ सूचक हैं। हम लोगों के जहां व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ होते जा रहे हैं वहीं पर सांस्कृतिक सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं। साथ ही भारतीयविद्या का जो प्रसार हुम्बोलू विश्वविद्यालय, बर्लिन में हो रहा है ---- कम गौरव की बात नहीं।

श्री ग्रोम पण्डित पम्पोश के द्वारा रुपान्तरित **रस-धारा** अच्छी लगी लेकिन एक प्रश्न मन में उठा कि आपकी इस पत्रिका में भारतीय लेखकों को क्यों स्थान नहीं मिलता है? प्रायः सारी सामग्री जर्मन लेखकों द्वारा ही लिखी होती है। क्या इस दिशा में आप हमारा समाधान करेंगे? अगर भारतीयों के विचार भी जर्मन गणतंत्र के विकास में व्यस्त किए जायेंगे तो इससे यह पत्रिका हम भारतीयों के लिए निजी सी लगेगी तथा हम जर्मन जनवादी गणतंत्र को सहज रुप में आत्मसात कर सकेंगे। भारत और जर्मन गणतंत्र का तो अतीत का भी सम्बन्ध है!

रोचक पंडित
बम्बई (महाराष्ट्र)

महोदय,

ज्ञात हुआ है कि आपकी **सूचना पत्रिका** का **विशेषांक** (७ अक्टूबर, १९६४) बहुत अच्छा प्रकाशित हुआ है। क्या आप इसकी एक प्रति भेज सकेंगे।

मैं यहां—वनस्थली विद्यापीठ महाविद्यालय-में, जर्मन भाषा शिक्षक का कार्य करता हूं और आपकी पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता हूं। पत्रिका की प्रति पाने पर मैं वार्षिक शुल्क भेज दूंगा। कृपया, इस विषय में आवश्यक सूचना निम्नलिखित पते पर भेजें–

भवदीय,
मुनीश कुमार पाण्डेय,
जयपुर (राजस्थान)

संपादक जी, सप्रेमनमस्कार,

जर्मन जनवादी गणतन्त्र की **१५ वीं वर्ष-गांठ** के स्वर्णिम अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकार कीजियेगा। स्व. प्रधानमन्त्री श्री ओटो ग्रोतवोल के निधन पर गहरा शोक हुआ है। यह वर्ष भारत और जर्मन जनवादी गणतन्द के लिये अत्यन्त ग्रहितकर सिद्ध हुआ है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। आपके देशवासियों से मेरी गहरी सहानुभूति है। निस्सन्देह वहां का नागरिक जीवन काफी आदर्श है, आपकी पत्रिका इसकी साक्षी है। संपादक जी, भारत और ज. ज. ग. के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध अधिक मजबूत हों, यही मेरी तथा साथी वर्ग की कामना है। हमें आशा है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र के नये प्रधान मन्त्री भी इस ओर अधिक ठोस कदम उठायेंगे।

सितम्बर का **विशेषांक** प्राप्त हुआ। सभी स्तम्भ सराहनीय हैं। **नयी धरती के गीत** तो इतना पंसद आया कि अनायास ही मुंह से उसकी कड़ियां निकल पड़ती हैं।

शुभकामनाओं सहित–

विद्यार्थी, सच्चिदानन्द डोभाल
गढ़वाल (उ. प्र.)

समाचार

ज. ज. ग. में अफ्रो-एशियाई देशों के विद्यार्थी

गत महीने (सितम्बर) मास से एशिया और अफ्रीका के २० विद्यार्थियों ने जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपजिक कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय के "उष्ण कटिबंधीय एवं उपोष्ण-कटिबंधीय कृषि संस्थान" (ट्रोपिकल एण्ड सब-ट्रोपिकल एग्रिकलचर इन्स्टीच्यूट) में अपना चार वर्षीय अध्ययन शुरू किया। इन विद्यार्थियों को मिलाकर इस 'संस्थान' में २३ अफ्रो-एशियाई देशों के विद्यार्थियों की कुल संख्या अब ६० तक पहुंच गयी है।

लाइपजिक के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय के उक्त कृषि संस्थान की स्थापना हुई नवम्बर, सन् १९६० में। केवल तीन वर्षों की अवधि में ही इस संस्थान ने विश्व ख्याति प्राप्त की है। कई देशों के वरिष्ठ अतिथियों ने इस संस्थान को देखा है। हाल ही में, श्रीलंका के सेनेट के अध्यक्ष, डा. अमरसूर्य कृषि संस्थान देखने गये थे।

लाइपजिक के कृषि-विशेषज्ञों ने, दुनिया के ३८ देशों के कृषि-विषेषज्ञों के साथ संपर्क स्थापित किये हैं। उक्त संस्थान के विशेषज्ञों ने उष्ण-कटि बंधीय क्षेत्रों में, पादप सुरक्षा से संबंधित प्रथम पाठ्यपुस्तक भी तैयार की है।

इन्डोनेशिया के तारा-गृह के जर्मन उपकरण

हाल ही में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विश्वप्रसिद्ध येना स्थित जाइस्स कारखाने ने, इन्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में, एक बहुत बड़े तारा-गृह के लिये यन्त्र तथा उपकरण सप्लाई करने के लिये एक करार की है। बहुत जल्द, इस तारा-घर की नींव डाली जायेगी।

एक प्रेस कानफ्रेंस में इन्डोनेशिया के गृह-मंत्री और जर्काता के राज्यपाल, डा. सुमारनो ने कहा कि इन्डोनेशिया का उक्त तारा-गृह, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता और इन्डोनेशिया की जनता की अटूट मैत्री का एक जीता-जागता प्रतीक होगा।

• पश्चिमी जर्मनी को अणु शस्त्र न दो : ब्रिटिश पत्र की चेतावनी

हाल ही में यहां की एक मासिक पत्रिका **सैनिटी** ने, अपने पहले पृष्ठ पर 'जर्मनी अणु-बम हस्तगत कर रहा है' के शीर्षक से अपने अग्रलेख में लिखा: "पश्चिमी जर्मनी ने अमरीका में एक सबल लाबी तैयार की है जो पश्चिमी जर्मनी को, नाटो गुट की प्रस्तावित अणु-सेना में, अणु-शस्त्रों का सबसे बड़ा भाग देनेके लिये, अमरीकी सरकार पर ज़बरदस्त दबाव डालेगी।" इस खबर को देने के बाद, उक्त लेखमें स्पष्ट चेतावनी दी गयी है कि "यदि पश्चिमी जर्मनी अपने इस उद्देश्य में सफल हुआ तो संहारकारी अणुयुद्ध का खतरा बहुत बढ़ जायेगा।. . . ." लेख में यह भी बताया गया है कि पश्चिमी जर्मनी का हालही में नियुक्त हुआ सेनापति जनरल हाइनरिख ट्रेट्नर अणु-अस्त्र प्राप्त करने के लिये सबसे ज्यादा बेताब है। 'सैनिटी' के लेख के शब्दों में "जनरल ट्रेट्नर को हिटलर ने अपनी सेना में दो बार 'आइरन क्रास' का पदक दिया था. . . ।" बताया जाता है कि जनरल ट्रेट्नर और पश्चिमी जर्मनी की सेना के अन्य पदाधिकारियों ने, अपनी बोन सरकार को एक गुप्त स्मृति-पत्र पेश किया है जिसमें यह मांग की गयी है कि पश्चिमी जर्मनी को अणु शस्त्रास्त्र रखने का, और स्वेच्छा से इस्तेमाल करने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त होना चाहिये। इस संदर्भ में **सैनिटी** ने यह सवाल पूछा है "क्या इस बात पर विश्वास किया जा सकता है कि (पश्चिमी) जर्मन फेडरल रिपब्लिक, अमरीका द्वारा दिये गये अणु-शस्त्रों पर संयुक्त नियन्त्रण पर सन्तोष करेगी? कदापि नहीं। इन शस्त्रों को "हस्तगत करने के बाद, युद्ध लोलुप जनरलों की भूख बढ़ती ही जायेगी।. . . ."

इराकी पत्रकार-संघ के अध्यक्ष प्रभावित हुये

इराकी पत्रकार संघ के अध्यक्ष, श्री फजल हुसेन ने जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रमुख प्रेस एजेनसी ए. डी. एन. के विशेष प्रतिनिधि को एक प्रेस इण्टरव्यू में बताया कि वह ज. ज. ग. के निर्माण की सफलता से अत्यधिक प्रभावित हुये हैं। श्री हुसेन हाल ही में जर्मन जनवादी गणतंत्र का दौरा करके स्वदेश लौटे हैं। उन्होंने कहा: 'इतने कम समय में ज. ज. ग. ने सभी क्षेत्रों में जो आश्चर्यजनक प्रगति की है मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ हूं।'

इराकी पत्रकार संघ के अध्यक्ष ड्रेस्डेन, कार्ल मार्क्स स्तादत और लाइपजिक [illegible] नगरों के नवनिर्माण कार्य से खासतौर से प्रभावित हुये हैं। इस सिलसिले में उन्होंने कहा: 'केवल बर्लिन को देखने से ही, ज. ज. ग. के सक्रिय निर्माण का पता नहीं लग सकता, क्योंकि बर्लिन से अधिक ज. ज. ग. के अन्य नगरों में निर्माण की जबरदस्त हलचल है। दूसरी चीज जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया है वह है ज. ज. ग. की सरकार द्वारा श्रमिकों के लिये उपलब्ध की गयीं छुट्टियां मनाने की सुविधायें।'

जर्मनी के एकीकरण से संबंधित ज. ज. ग. के सुझावों का उल्लेख करते हुये श्री हुसेन ने जर्मनी के सवाल को बिना बाहरी हस्तक्षेप के, शांतिपूर्ण समझौते का समर्थन किया और कहा: 'मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि भविष्य में, शांतिपूर्ण बातचीत से अवश्य ही वांछित परिणाम निकेलेगें।

बर्लिन सीमा पर घृणित उत्तेजना

५ अक्तूबर, सन् १९६४ के दिन, पश्चिम बर्लिन के जासूसों ने गोली चलाकर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सीमा-सुरक्षा-सेना के एक नान-कमिशन अफसर की हत्या की। इन जासूसों ने, संभवतः पश्चिम बर्लिन की पुलिस के गुप्त सहयोग से, पं. बर्लिन से एक भूमिगत सुरंग खोदी थी ज. ज. ग. के नुइस्ट्रेलित्सर-स्ट्रासे क्षेत्र तक। इस सुरंग के द्वारा, प. बर्लिन की कुछ जासूस संस्थाओं की शह पर वे ज. ज. ग. के नागरिकों को गैर-कानूनी तरीकों से प. बर्लिन उड़ा कर ले जाना चाहते थे। लेकिन जब ज. ज. ग. के चौकन्ने सीमा-सुरक्षा-दल ने इस सुरंग का पता लगा लिया, हत्यारे जासूसों ने अचानक गोलियां चलायीं जिनसे नान-कमिशन अफसर शूल्ज की तत्काल मृत्यु हुई। हत्यारे का ७.६५ एम. एम. वाला पिस्तौल भी मिल गया है।

पश्चिम बर्लिन के आधिकारिक सूत्रों ने इस बात की ताईद की कि ज. ज. ग. की राज्य-सीमा के खिलाफ उक्त घृणित उत्तेजना और षड़यन्त्र को, पश्चिम बर्लिन सेनेट का समर्थन और सहयोग प्राप्त था। पश्चिम बर्लिन के एक उच्चाधिकारी श्री आलबर्त्स ने, हत्यारों और उनके इस कुकृत्य की खुले आम प्रशंसा की। ऐसा व्यवहार, केवल ऐसे तत्व ही कर सकते हैं जो शान्ति को खत्म करके विश्व को अणु-युद्ध की आग में धकेलना चाहते हों।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के विद्यार्थियों से मुलाकात

जर्मन जनवादी गणतंत्र, दक्षिण पूर्वी एशिया के नवोदित राज्यों के विकास में बहुत दिलचस्पी रखता है, क्योंकि ये राज्य अपनी तटस्थ विदेश नीति के द्वारा विश्व शांति को बनाये रखने में काफी मदद देते हैं। ज. ज. ग. के जर्मन-दक्षिण पूर्वी एशिया संघ के अध्यक्ष, श्री माक्स सेफरिन ने, योएस्टादृत में एकत्रित हुये १०० से अधिक दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के शोधार्थियों, विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के सामने उक्त विचार प्रकट किये। श्री सेफरिन, ज. ज. ग. के स्वास्थ्य मंत्री हैं।

जर्मन-दक्षिण पूर्वी एशिया संघ के निमन्त्रण पर बर्मा, इन्डोनेशिया, भारत, श्रीलंका, और लाउस के उपर्युक्त मेहमान, आजकल जर्मन जनवादी गणतंत्र के औद्योगिक प्रान्त कार्ल मार्क्स स्टाद्त की यात्रा कर रहे हैं। इन्डोनेशिया के प्रतिनिधियों की ओर से, प्रोफेसर एफ़फ़मन्दी ने --- जो बर्लिन हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में एक अतिथि प्राचार्य हैं --- जर्मन-दक्षिण पूर्वी एशिया संघ और अध्यक्ष माक्स सेफरिन को धन्यावाद देते हुये कहा: "हमने अपनी आंखों से देख लिया कि कार्ल मार्क्स स्ताद्त ने, जो जर्मनी का एक बहुत पिछड़ा प्रान्त था, आश्चर्य-जनक आर्थिक उन्नति की है। इस से यह सिद्ध होता है कि समाजवाद एक ऐसी व्यवस्था है जो जनता को खुशहाल बना सकती है।"

स्कूली बच्चों की सर्वाधिक संख्या

सितम्बर मास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र के २५ लाख से अधिक स्कूली बच्चों ने इस वर्ष (१९६४-६५) का शिक्षा-सत्र आरंभ किया। जर्मन जनवादी गणतंत्र में प्राथमिक स्कूलों में दाखिला लेने वाले बच्चों की यह संख्या सब से अधिक है (इस साल) विगत वर्षों की तुलना में। सन् १९५२ में प्राथमिक स्कूलों में दाखिल होने वाले बच्चों की संख्या केवल ५०,००० थी।

रासायनिक कारखानों से दैनिक निर्यात

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हाल्ले प्रान्त में स्थित ब्यूना रासायनिक कारखाने से, हर रोज़, ३५ प्रेषण (कानसाइनमेंट) निर्यात के लिये निकलते हैं। दुनिया के ५० देशों को ये रासायनिक उत्पादन जाते हैं जिनमें अरब गणराज्य, इन्डोनेशिया, भारत, क्यूबा और ब्राजिल जैसे देश भी शामिल हैं। ब्यूना का उक्त कारखाना, सारे जर्मनी में संश्लिष्ट कूचुक पैदा करने का सब से बड़ा कारखाना है। इस संश्लिष्ट पदार्थ के अलावा यह कारखाना कारबाइड और महत्वपूर्ण प्लास्टिकों का भी उत्पादन करता है। कारखाने में १८,००० मज़दूर काम करते हैं।

भारतीय बच्चों के चित्रों की प्रशंसा

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, दुनिया भर के देशों के बच्चों के ४०० पुरस्कृत चित्रों (पेनटिंगस) की प्रदर्शनी हो रही है। इन चित्रों को २०,००० चित्रों में से छांटा गया है। ये हजारों चित्र, 'जर्मन जनवादी गणतंत्र की मैत्रीलीग' और 'यूनेस्को कार्य का जर्मन जनवादी गणतंत्र आयोग' के संयुक्त तत्वावधान में बर्लिन में आयोजित "अन्तर्राष्ट्रीय बाल-चित्र प्रदर्शनी" में भेजे गये थे ४१ देशों बाल-चित्रकारों ने।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की एक मुख्य राजनीतिक पार्टी 'क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी' का मुखपत्र 'नूइ साइत' हर रोज़ अपने तीन कालमों में एक विशेष लेख छापता है बाल-चित्र प्रदर्शनी के चित्रों के संबंध में। हाल ही के अपने एक विशेष लेख में, भारतीय बच्चों द्वारा भेजे गये चित्रों की प्रशंसा हुई है। "मेरी गुड़िया" "मेरा प्रिय पशु" और "मेरे बाग के रंग-बिरंगे पक्षी" नामक चित्रों की खासतौर से प्रशंसा की गई है। अखबार के कला-समीक्षक ने भारतीय बच्चों के इन चित्रों में रंगों और अनुपात के सम्यक ज्ञान को काफी सराहा है।

कच्चा लोहा उत्पादन में १९ गुणा वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र में कच्चे लोहे का उत्पादन १९ गुणा बढ़ गया है सन् १९४६ में मुकाबले में। केवल आइजेनहुइट्टेन-स्तादृत के धातु कारखाने आजकल लगभग इतना कच्चा-लोहा पैदा करते हैं जितना सन् १९४९ में पूरे भूतपूर्व सोवियत-अधिकृत क्षेत्र में पैदा किया जाता था। सन् १९४६ में १२३,६०० टन कच्चा लोहा हर साल पैदा किया जाता था। इस संदर्भ में इस महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखा जाना चाहिये कि युद्ध समाप्तिके बाद जब पश्चिमी जर्मनी ने आर्थिक नव-निर्माण शुरू किया, उस समय उसके पास १२० अच्छी और आधुनिक दमन-भट्ठियां थीं, जबकि जर्मनी के पूर्वी भाग, अर्थात, जर्मन गणतंत्र में केवल एक इस्पात कारखाना था जिसमें गयीगुजरी चार दमन भटठियां मुश्किल से काम कर पाती थीं।

७ हज़ार रेल-डिब्बों और इंजनों का निर्यात :

पिछले तीन वर्षों में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अन्य देशों को ७००० से अधिक रेल-डिब्बे, इंजन आदि निर्यात किये हैं। जर्मन एक्सपोर्ट नामक पत्र के नवीनतम अंक में इस तथ्य का उद्घाटन किया गया है। इनमें ३,३०० यात्री-डिब्बे, ५०० डीज़ल इंजन, और ३.६०० वातानुकूलित रेल-डिब्बे शामिल है। आयात करने वाले देशों में अफ्रो-एशिया और लातीनी अमरीका के १८ देश विशेष उल्लेखनीय है। इस सिलसिले में जर्मन एक्सपोर्ट ने इस रहस्य का भी उद्घाटन किया है कि रेल डिब्बों के निर्यात में जर्मन जनवादी गणतंत्र ने अमरीका, ग्रेट-ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी जैसे देशों को भी पीछे छोड़ दिया है।

बधाई और सहानुभूति के लिये धन्यवाद

हमारे पास, *सूचना पत्रिका* के सहृदय पाठकों के सैकड़ों पत्र आ रहे हैं जिनमें, एक ओर जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ के लिये बधाइयाँ भेजी गयी हैं, और दूसरी ओर वहाँ के प्रधान मंत्री, स्व. ओटो ग्रोतवोल के अचानक निधन पर शोक प्रकट किया गया है। अनेकानेक पाठकों के इन पत्रों का अलग अलग उत्तर देना लगभग असंभव है। इसलिये अपनी पत्रिका के द्वारा हम उनका आभार प्रदर्शन करते हुये उनकी सहानुभूति के लिये धन्यवाद देते हैं।

संपादक : सूचना पत्रिका

समुद्रों में तैरते अस्पताल

(पृष्ठ ११ का शेष)

द्वारा रोग से सम्बन्धित आवश्यक परामर्श देते हैं।

हर जहाज़ का उच्चाधिकारी इस बात की योग्यता रखता है कि यात्रा के दौरान वह रोग का निदान और उसका इलाज भी कर सके। इसके अतिरिक्त वह ऐसे छोटे-मोटे आपरेशन भी कर सकता है जो साधारण रुप से आम आदमी के लिए निषिद्ध हैं। यदि रोग गम्भीर हों अथवा ऐसी दशा उत्पन्न हो कि अधिकारी कोई निर्णय न कर सके तो रेडियो द्वारा विशेषज्ञों से सलाह ली जाती है।

यों तो अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार इस प्रकार की सलाह हर देश की बन्दरगाहों पर स्थित रेडियो स्टेशनों से मिल जाती है। परन्तु यह सरसरी और आम सलाह ही होती है। ज. ज. ग. के स्वास्थ्य-अधिकारी इससे सन्तुष्ट न थे। अतः उन्होंने रोस्तोक विश्वविद्यालय के क्लिनिक के विशेषज्ञों का सम्पर्क रूइगोन रेडियो से जोड़ दिया।—सभी समुद्रों की यात्रा करने वाले जहाज इन सुविधाओं से लाभ उठाते हैं। ज[illegible] भाषा की यह रेडियो सर्विस बहुत ही उप[illegible] सिद्ध हुई है। विशेष कर इस से यह [illegible] हुआ है कि विशेषज्ञ हर जहाज़ के मेडि[illegible] यंत्रों तथा अधिकारियों की क्षमता से अ[illegible] प्रकार परिचित रहते हैं, और इस बात [illegible] दृष्टि में रख कर ही रोगी के संबंध में [illegible] देते रहते हैं। इस प्रकार, हज़ारों किलोमी[illegible] दूर होने पर भी रोगी की बराबर [illegible] पड़ताल होती रहती है।

दूसरे देशों के नाविकों को भी यह सुवि[illegible] बिना किसी दाम के प्राप्त करने का अधि[illegible] दिया जाता है और ऐसा करते समय [illegible] बात का ध्यान नहीं रखा जाता कि इ[illegible] रेडियो द्वारा किया जाता है या कि[illegible] बन्दरगाह में या किसी अस्पताल में। मा[illegible] जाति की सुरक्षा का यह महान[illegible] ज. ज. ग. के नागरिकों तक ही सीमित [illegible] बल्कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की धरती [illegible] पैर रखने वाले समस्त देशों के नावि[illegible] दिन रात इस से लाभ उठाते हैं।
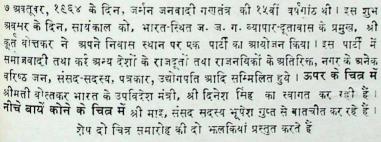
'भारत-ज. ज. ग. मैत्री संघ' द्वारा मनाई गई १५वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत के भूतपूर्व मन्त्री, श्री जगजीवन राम का स्वागत करते हुये व्यापार-दूतावास के उप प्रमुख, श्री केम्पर

(पूरा विवरण पृष्ठ १५ पर देखिये)

सचित्र समाचार

७ अक्तूबर, १९६४ के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ थी। इस शुभ अवसर के दिन, सायंकाल को, भारत-स्थित ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कुर्त बोत्तकर ने अपने निवास स्थान पर एक पार्टी का आयोजन किया। इस पार्टी में समाजवादी तथा कई अन्य देशों के राजदूतों तथा राजनयिकों के अतिरिक्त, नगर के अनेक वरिष्ठ जन, संसद-सदस्य, पत्रकार, उद्योगपति आदि सम्मिलित हुये। **ऊपर के चित्र में** श्रीमती बोत्तकर भारत के उपविदेश मंत्री, श्री दिनेश सिंह का स्वागत कर रही हैं। **नीचे बायें कोने के चित्र में** श्री माइ, संसद सदस्य भूपेश गुप्त से बातचीत कर रहे हैं। शेष दो चित्र समारोह की दो झलकियां प्रस्तुत करते हैं

सूचना पत्रिका

११ वर्ष ६
नवम्बर
१९६४

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक ११ | २० नवम्बर, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : 'आल इंडिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी' के हाल में 'ज. ज. ग. के १५ वर्ष' नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद भारत के सांस्कृतिक मामलों ... श्री आर. एम. हाजिरनवीस अतिथि-रजिस्टर में दस्तखत कर रहे हैं। उनके पीछे खड़े हैं भारत स्थित, ज. ज. ग. व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री कूर्त बोत्तकर।

अंतिम पृष्ठ : १५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ज. ज. ग. के श्रमिक, समारोह में आये विदेशी मेहमानों और अपने नेताओं का स्वागत कर रहे हैं।

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिए अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास, १२/३६, कौटिल्य मार्ग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और युनाइटेड इण्डिया प्रेस, निकट ... मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

७ अक्तूबर का राष्ट्रीय पर्व और [illegible]ार दृढ़ संकल्प

जर्मन जनवादी गणतंत्र के लघु इतिहास में ७ अक्तूबर की तिथि, अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक महत्व रखती है। सन् १९४९ में ७ अक्तूबर के दिन, जर्मन भूमि पर पहली बार एक ऐसे नये तथा दूसरे जर्मन राज्य की स्थापना हुई जिसका मूलाधार था समाजवाद और विश्वशांति की स्थापना। सन् १९४९ में जन्म लेकर, इस नये जर्मन राज्य, अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, ७ अक्तूबर, १९६४ के दिन अपने जीवन के १५ वर्ष पूरे किये।
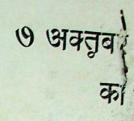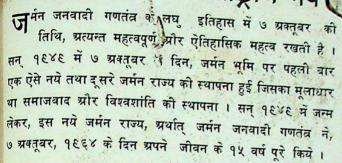
१५ वीं वर्षगांठ के इस पावन अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक छोर से दूसरे छोर तक, यह राष्ट्रीय पर्व, बड़ी धूमधाम और उत्साह से मनाया गया। ज. ज. ग. के हर नगर, गांव और कस्बे में उस दिन एक महोत्सव का उल्लासपूर्ण वातावरण छाया हुआ था। बागों तथा पार्कों में, नृत्य भवनों और अन्य ऐसे ही सार्वजनिक स्थानों में, बच्चे और बुड्ढे, युवक और युवतियां, प्रेमी और नवविवाहित दम्पत्ति, और परिवारों के परिवार अपने १५ वें राष्ट्रीय दिवस की खुशी में नाच रहे थे, गाना-बजाना कर रहे थे और खूब खा पी रहे थे।

ज. ज. ग. के लोग अपने राष्ट्रीय पर्व पर, इतने उन्मुक्त हासोल्लास के प्रदर्शन के हकदार थे, क्योंकि इस उल्लास, आत्म-विश्वास और उन्मुक्त प्रदर्शन के पीछे इन परिश्रमी लोगों का असाधारण श्रम और उनकी सतत साधना तथा लगन का एक अकूत इतिहास छुपा हुआ है। जर्मन राष्ट्र के विश्व विख्यात कवि गेटे ने संभवतः ऐसे ही लोगों की कल्पना की थी, आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले अपनी अमर रचना फाउस्ट नामक महाकाव्य में। उन्होंने लिखा है:

देखने का इच्छुक हूँ ऐसे (उल्लास भरे) जनगण को
(जो) स्वतंत्र भूमि पर, स्वतंत्रजनों में सिर उठाकर खड़ा हो!

भविष्यवेत्ता महाकवि की सूक्ष्म दृष्टि ने भविष्य में स्वतंत्र भूमि पर मुक्त जन गण के उदय को देखा था और उसकी इच्छा भी की थी
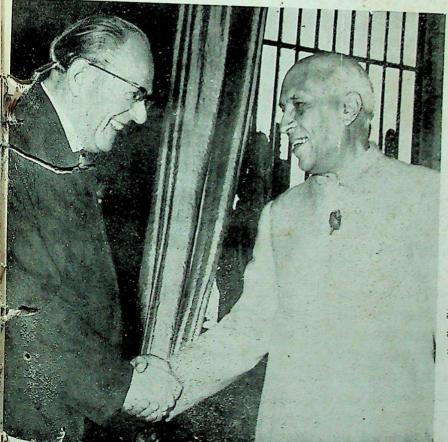
भारतीय गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र के दो स्व. (प्रथम) प्रधान मंत्री—जवाहरलाल नेहरू और ओटो ग्रोटवोल। इन दोनों महापुरुषों ने विश्वशांति, मानवीय एकता और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के ऊँचे तथा महान् आदर्शों के लिये अन्तिम दिन तक संघर्ष किया।

१४ नवम्बर के दिन, स्व. जवाहरलाल नेहरू की ७५वीं वर्षगांठ मनाई गयी। इस अवसर पर उनकी पुण्य स्मृति में उन आदर्शों को पूरा करने का हम एक बार फिर व्रत लेते हैं।

यह चित्र सन् १९५९ का है, जब ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री, स्व. ओटो ग्रोटवोल भारत की यात्रा पर आये थे और स्व. नेहरू ने उनका हार्दिक स्वागत किया था।

[illegible] की जो दासता [illegible] और दुख तथा दा[illegible] न-[illegible], जो अपनी भूमि का, सम्पत्ति का स्वयं स्वामी हो ... महाकवि गेटे ने नये ज[illegible]गण का स्वप्न देखा [illegible] डेढ़ सौ वर्ष पहले, वही आज [illegible] जनवादी गणतंत्र में साकार हो रहा है। जर्मन [illegible] पर मौज[illegible] में से एक राज्य, अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र में [illegible] माज-वादी निर्माण के हाथों वहां के जन-गण को शोषण तथा उत्पीड़न और दुख तथा दारिद्य से मुक्ति मिली है, और वहां की जनता के लाखों, करोड़ों हाथ स्वयं इस नये, शोषणहीन और खुशहाल समाज की संरचना में लगे हुये हैं। इसलिये, यह मुक्त जनगण यदि ७ अक्तूबर का दिन, अपने १५ वें राष्ट्रीय-पर्व को इतनी धूमधाम और हासोल्लास से मनाये तो वह इसका पूर्ण अधिकारी है। . . .

ज. ज. ग. की १५ वीं वर्षगांठ के उल्लिखित विशद वर्णन के लिये हमारे सहृदय पाठक लेखक को क्षमा करेंगे (क्योंकि) ज. ज. ग. में ७ अक्तूबर के पुण्य पर्व के समारोह का सही चित्रण, कलम को खुली छूट दिये बिना लगभग असंभव ही था। बड़े परिश्रम के बाद ही हमारी जनता ने ये खुशहाल और उल्लास के दिन देखे हैं। पिछले पन्द्रह वर्षों में ज. ज. ग. ने आश्चर्यजनक प्रगति की है प्रत्येक क्षेत्र में। कोई भी निष्पक्ष प्रेक्षक इस तथ्य की गवाही दे सकता है। हज़ारों नहीं, बल्कि लाखों विदेशी पर्यटक, व्यापारी, राजनीतिज्ञ, कलाकार, विद्यार्थी आदि जर्मन जनवादी गणतंत्र का पिछले १५ वर्षों में अव-लोकन कर चुके हैं। इनमें अनेक देशों के पत्रकार भी शामिल हैं, जिन्होंने समय समय पर अपने देशों की पत्रपत्रिकाओं में, ज. ज. ग. का आंखों देखा हाल लिखा है। लगभग इन सभी पत्रकारों ने विभिन्न लेखों में इस मुखर सत्य का वर्णन किया है कि वास्तविक आर्थिक चमत्कार पश्चिमी जर्मनी में नहीं, बल्कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में हुआ है। इस सत्य को सामने लाने के लिये प्रमाणों के ढेर के ढेर मौजूद हैं।

कई तथाकथित विशेषज्ञ समय समय पर यह भविष्यवाणी करते रहे हैं कि ज. ज. ग. टिकाऊ नहीं है (वह खत्म हो जायेगा), और उसका भविष्य कठिनाइयों और कांटों से भरा है। लेकिन ज. ज. ग. का विनाश चाहने वाले ये कुत्सित विशेषज्ञ आज गुस्से से पागल हो रहे होंगे, क्योंकि ज. ज. ग. आज न केवल अपने जीवन के १५ वर्ष ही पूरे कर चुका है, बल्कि औद्योगिक तथा आर्थिक विकास की दृष्टि से आज वह, यूरोप का पांचवा और दुनिया का दसवां सब से विकसित राज्य है। जहां तक कठिनाइयों और कंटकाकीर्ण मार्ग का प्रश्न है, उसमें सचाई अवश्य है। जन्म लेने के बाद कई वर्षों तक हमारे नये जर्मन राज्य –– ज. ज. ग. को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किसी भी नवजात राज्य का विकास-पथ फूलों से सजा हुआ नहीं होता है। ज. ज. ग. इसका अपवाद नहीं। कठिनाइयों के वर्षों में हमारे अधिकांश लोगों को रिफ्रिजिरेटरों, कपड़ा धोने की मशीनों, मोटर कारों आदि जैसी औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुओं से वंचित रहना पड़ा। लेकिन आज ये वस्तुएं –– विशेषकर फ्रिज और कपड़े धोने की मशीनें –– लगभग यहां के प्रत्येक परिवार के पास है[illegible] भी अब दूर नहीं जबकि ज. ज. ग. का श्रमिक [illegible]टर-वि[illegible] जा कर पैसा दे और मोटर खरीद कर घर चल दे। वै[illegible] यहां के अनेक श्रमिक मोटर खरीद लेते हैं, लेकिन अ[illegible] जमा करके, कुछ देर बाद मोटर मिल जाती है, तत्का[illegible] इस संबंध में सब से ज़रूरी बात यह है कि ज. ज. ग. की श्रमिक ज[illegible] [illegible]न कठिनाइयों और तत्संबंधी कारणों को जानती है, और इस[illegible] वह उनसे परेशान नहीं, बल्कि उनको हल करने के लिये प्रयत्नशील है[illegible] यहां का श्रमिक जानता है कि सरकार उसकी है और वह उसके हि[illegible] और सुख समृद्धि के लिये हर तरह से काम करती है।

एक ऐसा राज्य, जिसने दूसरे महायुद्ध की तबाही और आ[illegible] पिछड़ेपन की कोख से जन्म लिया है, लेकिन जो केवल १५ वर्षों [illegible] अल्पकाल में ही दुनिया का १० वां औद्योगिक राज्य बन चुका है [illegible] रासायनिक क्षेत्र में जो प्रति व्यक्ति उत्पादन में दुनिया में [illegible] नम्बर पर है (अमरीका के बाद) ––ऐसा राज्य कठिनाइयों [illegible] विचलित नहीं हो सकता। आज पूर्ण आत्मविश्वास के साथ ज[illegible] जनवादी गणतंत्र, सुखमय भविष्य को निहारता है, और समाज[illegible] निर्माण के मार्ग पर सुदृढ़ कदम रखता हुआ आगे बढ़ रहा है[illegible] ज. ज. ग. ने एक शक्तिशाली औद्योगिक नींव तैयार की है। यही दृढ़[illegible] सामाजिक प्रगति और समृद्धि का आधार है। अब उपभो[illegible] उद्योग धन्धों में अधिकाधिक धनराशि लगाई जा सकती है। फलस्व[illegible] लोगों को सस्ती और अच्छी उपभोक्ता वस्तुएं उपलब्ध की जायें[illegible]

१५ वीं वर्षगांठके शुभ अवसर पर जर्मन जनवादी गणतंत्र [illegible] राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख़्त ने एक सार्वज[illegible] भाषण में ज. ज. ग. की आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, [illegible] उपलब्धियों का उल्लेख किया। हर जगह इस भाषण का बड़ा [illegible] स्वागत हुआ। उपलब्धियों के उल्लेख के साथ ही साथ उन्होंने ज[illegible] का सन् १९७० में कैसा रूप होगा, इस पर भी प्रकाश डाला। ज. [illegible] के जिस उज्जवल भविष्य का उन्होंने बखान कि[illegible] पर, [illegible] को तनिक भी सन्देह नहीं।

ज. ज. ग. के भावी विकास से संबंधित कुछ झलकियां यहां प्रस्तु[illegible]

(क) ज. ज. ग. के नागरिकों की आय में २०-२५ प्र[illegible] की वृद्धि होगी,

(ख) हफ्ते में केवल पांच दिन काम करना पड़ेगा,

(ग) कम से कम छुट्टी को १२ से १५ दिनों तक बढ़ा[illegible]

(घ) वृद्ध जनों का पेनशन और बच्चों तथा प्रसव से स[illegible] सभी भत्तों को बढ़ा दिया जायेगा।

अपनी १५ वर्षों की सफलताओं पर हर्ष और गर्व प्रकट कर[illegible] भी, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता इस बात को भूल नहीं [illegible] कि दुनिया में ऐसे तत्व और शक्तियां मौजूद हैं जो विश्व शा[illegible]

(शेष २२ पृष्ठ [illegible]

ज. ज. ग. की विश्वव्यापी मान्यता

पिछले वर्ष, ११३ देशों के लगभग चार लाख (४००,०००) यात्री, जर्मन जनवादी गणतंत्र का पर्यटन करके गये। इनमें अनेक पत्रकार, कलाकार, राजनीतिज्ञ, सैलानी, वैज्ञानिक, खिलाड़ी आदि भी सम्मिलित थे। स्कूली बच्चों के कई दल भी यहां आये अपनी छुट्टियां बिताने के लिये। पूंजीवादी देशों से आये हुये यात्रियों की संख्या पिछले वर्ष (१९६२) से ५० प्रतिशत अधिक थी। इन हज़ारों लाखों विदेशी लोगों में से क्या एक भी व्यक्ति ऐसा होगा जो इस कपोल कल्पित विचार का समर्थन करेगा कि जर्मन जनवादी गणतंत्र नामक राज्य का अस्तित्व ही नहीं है – उस राज्य का जिसने उनका हार्दिक स्वागत किया और स्नेहपूर्ण आतिथ्य दिया ?

अमरीका के कई स्कूलों में कुछ समय से भूगोल के पाठों में, ऐसे मानचित्रों का उपयोग किया जा रहा है, जिन में एल्बे और ओडर नदियों के बीच स्थित भूभाग को इसके असली नाम से –– अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र के नाम से चित्रित किया जाता है। यदि कोई सिरफिरा व्यक्ति आकर उन अमरीकी बच्चों से कहेगा कि "ज.ज.ग. कहीं है ही नहीं", तो वे बच्चे उसको अज्ञानी और मूर्ख ही समझेंगे।

इसी प्रकार, वे हज़ारों लाखों लोग जो विश्व के सात समुद्रों में, ज. ज. ग. के जहाज़ों को आते जाते देखते हैं हर रोज, क्या वे इन जहाज़ों को एक "अस्तित्वहीन" राज्य के जहाज़ मानने को तैयार होंगे ? – और ११७ देशों के वे व्यापारी तथा व्यापारिक-संस्थाओं के प्रतिनिधि जिन्होंने ज. ज. ग. के लाइपज़िक व्यापार मेले में कई लाभप्रद समझौते किये, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें तथा संगठन जिन्होंने आज तक जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ १०० से अधिक व्यापारिक समझौते किये हैं, वे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी एवं अनेकानेक अन्य संस्थायें ज. ज. ग. जिनका सदस्य है ––क्या ये सभी इस दन्तकथा को मानने के लिये तैयार होंगे कि ज. ज. ग. एक पूर्ण प्रभुसत्ता प्राप्त राज्य नहीं है ? क्या ये सभी लोग और संस्थायें, समानता के आधार पर, पिछले १५ वर्षों से जर्मन जनवादी गणतंत्र के साझीदार और सहयोगी नहीं रहे हैं ?

स्पष्ट है कि जो लोग यह कहते नहीं थकते कि जर्मन जनवादी गणतंत्र नामक राज्य का अस्तित्व ही नहीं है, वे हठ धर्मी पर तुले हुये हैं। उनकी इस हठधर्मी और दबाव के बावजूद दिन गुज़रने के साथ साथ, अधिकाधिक सरकारें और राज्य ज. ज. ग. के साथ सामान्य संबंध जोड़ते जा रहे हैं।

इस समय, १४ देशों के साथ ज. ज. ग. के राजनयिक संबंध हैं। इन चौदह देशों की जनसंख्या, विश्व की कुल जनसंख्या का एक तिहाई भाग है। इसके अलावा बर्मा, श्रीलंका, इन्डोनेशिया, इराक, यमन, और संयुक्त अरब गणराज्य में ज. ज. ग. के कोंसलेट, जनरल और सीरिया में कोंसलेट है। घाना, भारत, लेबनान, मोरोक्को, सूडान में इसके राज्यकीय व्यापार-दूतावास, और अलजीरिया, फिनलैण्ड, गिनी और माली में इसके ऐसे व्यापार-दूतावास हैं जिनको कोंसली अधिकार मिले हैं। इसके अतिरिक्त बेलजियम, डेनमार्क, फ्रांस, ग्रीस, ब्रिटेन, आइसलैण्ड, इटली, नेदरलैण्ड्स, नार्वे, आस्ट्रिया, स्वीडन, और लातीनी-अमरीका के कई देशों में ज. ज. ग. के विदेश-व्यापार चैम्बर के व्यापार-प्रतिनिधित्व हैं। तूनिस में, इसके विदेश-व्यापार मंत्रालय का एक प्रतिनिधित्व है।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस विश्व-व्यापी रूप के सामने, जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी––सं.) का तथाकथित "हाल्स्टाइन सिद्धान्त" एक बचकानापन से ज्यादा कुछ नहीं लगता। इस "सिद्धान्त" की आड़ में पश्चिमी जर्मन फेडरल सरकार ने एक धमकी दे रखी है कि जो देश ज. ज. ग. के साथ सरकारी रिश्ते कायम करेगा वह (प. जर्मनी – सं.) उस देश के साथ अपने राजनयिक संबंध तोड़ देगा। लेकिन बोन सरकार (अर्थात् प. जर्मनी की सरकार) स्वयं अपने अमल से इस "सिद्धान्त" का बचकानापन सिद्ध करती है। उदाहरण के लिये दक्षिण-पूर्वी एशिया और अफ्रीका के कई राज्यों में, दोनों जर्मन राज्यों अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र तथा फेडरल (जर्मन) गणराज्य के सरकारी प्रतिनिधित्व हैं। इसी प्रकार पूर्वी यूरोप में भी, पश्चिमी जर्मनी ने अपने राज्यकीय व्यापार - दूतावास क़ायम किये हैं जिनको राजनयिक सुविधायें तथा अधिकार भी प्राप्त हैं। इस प्रकार, सन् १९५५ में पश्चिमी जर्मनी द्वारा शुरु किया गया आचरण – (अर्थात् मास्को में दूतावास की स्थापना, जहां ज. ज. ग. का दूतावास भी है), आज तक व्यवहार में लाया जा रहा है। इस सब के अलावा, दोनों जर्मन राज्य, कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा संस्थाओं के सदस्य हैं, और प्रायः ये दोनों राज्य कई बातों पर एक दूसरे के साथ समझौते भी कर चुके हैं (जैसे व्यापार और यातायात के विषयों पर)

इन उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि दो, स्वतंत्र जर्मन राज्यों का अस्तित्व एक ठोस वास्तविकता है, जिससे इनकार करना व्यर्थ भी है और अनावश्यक भी। इसलिये, संयुक्त राष्ट्र संघ के परिपत्र की धारा १ के आधार पर दोनों जर्मन राज्यों को, समान और प्रभुसत्तात्मक राज्यों की मान्यता देना तर्क संगत एवं उचित है। यह मान्यता जर्मन जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार के भी अनुरूप होगी।

वैज्ञा[illegible] अनुसन्धा[illegible]न में सहयोग

[illegible]पोफेसर [illegible]. [illegible]नाकर

ज[illegible]. विज्ञा[illegible] अकादमी के महासचिव

२५० वर्ष से अधिक समय बीता जब बर्लिन में **जर्मन विज्ञान अकादमी** की नींव, प्रसिद्ध दार्शनिक गेटफ्राइड विलहेल्म लिब्नीज ने डाली। इस दार्शनिक की गणना १७ वीं तथा १८ वीं शताब्दी के विशिष्ट वैज्ञानिकों में होती है। अपने अस्तित्व के लम्बे इतिहास में यह 'अकादमी' मानुषिक ज्ञान के समस्त क्षेत्रों में विज्ञान के प्रोत्साहन के लिए सचेष्ट रही है। इसके अतिरिक्त विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों के पारस्परिक सम्बन्धों की सुदृढ़ता तथा वृद्धि के लिए भी कार्यरत रही है। 'अकादमी' के इन लक्ष्यों का वर्णन इसके अधिनियमों में भी है। 'जर्मन विज्ञान अकादमी' हमेशा की भांति आज भी भारतीय लोगों की संस्कृति तथा उनके इतिहास में तीव्र रूचि रखती है। उदाहरणार्थ, मैक्स फ्रीडरीख मुल्लर (मृत्यु १९०१) जो यूरप के महानतम प्राच्य-शास्त्रियों में से एक थे, अकादमी के संवादी सदस्य थे। सुविख्यात प्राच्य-शास्त्री हाइनरिख ल्यूडर्स (मृत्यु: १९४४) १९०९ से अकादमी के सदस्य थे तथा अकादमी की दर्शन-इतिहास शाखा के सचिव के रूप में भी कार्य करते रहे।

हिटलर-काल में, १९३८ में, एल्बर्ट आइन्सटाइन के साथ ही इन्हें भी, फासिस्ट विरोधी दृष्टिकोण के कारण इन के पद से हटा दिया गया था।

पिछले कुछ वर्षों में **जर्मन विज्ञान अकादमी बर्लिन** को, भारत सरकार तथा 'भारत विज्ञान कांग्रेस' के निमन्त्रण पर, भारतीय विज्ञान 'महासभाओं' में भाग लेने के लिए अपने औपचारिक प्रतिनिधि भेजने के जो अवसर मिलते रहे हैं, 'अकादमी' के लिए महान प्रसन्नता तथा गौरव की बात है।

इन प्रतिनिधियों में अकादमी के ये सदस्य विशेष उल्लेखनीय हैं: नोबल पुरस्कार विजेता, प्रो. डा. हार्ट्स, [illegible] [illegible] जियोरलिख, प्रो. डा. मे[illegible]स, प्रो. डा. स्टूब्बे तथा प्रो. डा. टिलो।

१९५९ में स्वयं मुझे 'भारतीय विज्ञान महासभा' में भाग लेने का अवसर मिला। इसके परिणाम स्वरूप मुझे पता चला कि रसायन के क्षेत्र में किस स्तर का अनुसन्धान कार्य हो रहा है। रसायन मेरा विशेष विषय है।

भारत से लौटने पर 'अकादमी' के सभी सदस्यों ने अपने भारतीय सहयोगियों की ओर से मिले प्रेमपूर्ण स्वागत तथा आतिथ्य की उत्साहपूर्ण प्रशंसा की। उन्होंने भारतीय विज्ञान की महान चेष्टाओं तथा सफलताओं की भी बहुत सराहना की।

महाविद्यालयों, संस्थानों तथा 'भारतीय विज्ञान-उद्योग-अनुसंधान परिषद' की राष्ट्रीय अनुसन्धान प्रयोगशालाओं में हो रहे कार्य के प्रथम प्रभाव मैंने १९५९ में प्राप्त किये थे। भारत की दूसरी यात्रा मैंने जनवरी-फरवरी १९६४में की। उदयपुर में हुई ६२वीं 'पगवाश कान्फ्रेंस' के पश्चात में 'भारतीय विज्ञान-उद्योग अनुसंधान [illegible]रिषद' के संस्थानों में गया। इन पांच व[illegible] में भारतीय विज्ञान में [illegible] परिवर्तनों को देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। 'विज्ञान एवं उद्योग अनुसंधान परिषद' के महा-निदेशक डा. एस. हुसैन ज़हीर की अध्यक्षता में हैदराबाद में हुए एक सम्मेलन में भी मुझे भाग लेने का अवसर मिला। इस सम्मेलन में भारत में विज्ञान के विकास तथा भारतीय जीवन में विज्ञान का स्थान आदि विषयों पर विचार हुआ। यहां मैंने अनुभव किया कि भारतीय वैज्ञानिक कितनी सुदृढ़ता तथा संलग्नता से विज्ञान तथा वैज्ञानिक विचारधाराओं को भारत में उचित स्थान दिलाने की चेष्टा में लगे हैं।

भारत सरकार वैज्ञानिक विकास के लिए विशाल धन-राशियां व्यय करती है, ताकि भारतीय उद्योग विज्ञान पर आधारित हो, आयात में कमी हो सके तथा जनता के [illegible] स्तर में उद्धार हो सके।

(शेष ११ पृष्ठ पर)

१३ मार्च, १९६४ के दिन **भारतीय विज्ञान एवं उद्योग अनुसंधान परिषद** और ज. ज. [illegible] **जर्मन विज्ञान अकादमी** के बीच वैज्ञानिक सहयोग की पंचवर्षीय संधि हुई। [illegible] भा. वि. एवं उ. अनु. प. के महानिदेशक, डा. हुसैन जहीर और भारत स्थित ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोत्तकर, संधि पर हस्ताक्षरकरने के बाद 'जामे सेहत' पी रहे हैं

दक्षिण अफ्रीका की जनता के साथ समएकता

आज एक बार फिर संसार के लोक मत का ध्यान दक्षिण अफ्रीका पर केन्द्रित है । यह देश लिम्पोपो नदी से लेकर गुडहोप अन्तरीप तक फैला हुआ है और हीरे, जवाहरात, यूरेनियम, तांबे, लोहे और कोयले के खजानों से भरा पड़ा है। यह देश अपने सभी लोगों को काम, खुशहाली और समृद्धि दे सकता है, परन्तु मुट्ठी भर पूंजीपतियों और उनकी वर्वूड सरकार ने दक्षिण अफ्रीका को १ करोड़ ३० लाख लोगों के लिए एक जेल बना डाला है । ये वे लोग हैं जिनकी चमड़ी सफेद नहीं, काली है । ये लाखों लोग दासता और भूखग्रस्त जीवन बिताना नहीं चाहते ।

वर्वूड सरकार ने घोर नस्लवादी नीति अपना कर इन १३० लाख लोगों के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर रखी है । पिछले चार वर्षों में इस सरकार ने ३५७ अफ्रीकी और ३६ योरूपीय उद्गम वाले लोगों को फांसी पर चढ़ाया है । और अब यह सरकार अफ्रीकी स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित [illegible] नेताओं के प्राणों से खेलने को तत्पर है । इन लोगों में वाल्टर सिसूलू और नेल्सन मैन्डेला तथा उन के अन्य साथी शामिल हैं ।

निस्सन्देह पूरे संसार का ध्यान दक्षिणी अफ्रीका की घटनाओं पर केन्द्रित है । संसार में हर ओर इन घटनाओं पर निराशा, चिन्ता, रोष तथा विरोध प्रगट किया जा रहा है । हम जर्मन लोग समाजवाद और जातीय मतांधता के प्रभावों और अत्याचार के अनुभवों से परिचित हैं । इसलिए हमारी पूरी सहानुभूति उन लोगों के साथ है जो सिसूलू, मैन्डेला और अन्य साथियों के प्राण बचाने के लिए आवाज़ उठा रहे हैं । उनकी आवाज़ हमारी आवाज़ है । अभी पिछले दिनों ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने ब्रिटिश नस्लवाद विरोधी संस्था के नाम एक पत्र में दृढ़ता पूर्वक यह घोषित किया कि दक्षिण अफ्रीका में जातीय भेदभाव के विरोध में होने वाले न्याययुक्त संघर्ष का जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार तथा जनता समर्थन करती है । जर्मन जनवादी गणतंत्र ने दक्षिण अफ्रीका से अपने सभी व्यापार सम्बन्ध तोड़ लिये हैं । हमारे मज़दूर संघ तथा अन्य लोक संस्थायें दक्षिण अफ्रीका की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वालों को सक्रिय सहायता देने के लिए तत्पर रहती हैं । जर्मन श्रमिक इस स्वतंत्रता संघर्ष का समर्थन करते हैं, क्योंकि वे हिटलर के फासिस्टवाद के विरुद्ध अपना कठोर संघर्ष नहीं भूले हैं, जिसने जातिवाद को राज्य सिद्धांत बना लिया था । जर्मन श्रमिक भली भांति जानते हैं कि एक साम्राज्यवादी और जातिवादी सरकार को हराने के लिये कितने साहस, ज्ञान और बलिदान की आवश्यकता होती है । हम जर्मन जनवादी गणतंत्र के निवासियों ने इतिहास से अनुभव प्राप्त किये हैं और जातिवाद, उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद को जड़ से उखाड़ा है ।

दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मन्त्री हेनरिक वर्वूड, एडोल्फ हिटलर के एक प्रबल समर्थक रहे हैं। यह केवल संयोग नहीं है । इस मनुष्य ने २० वर्ष पूर्व अपने एक समाचार पत्र 'डर ट्रांजवालेर' द्वारा दक्षिण अफ्रीकी जनता से जर्मन साम्राज्यवादियों के साथ मिल जाने को कहा था और दूसरे महायुद्ध में हिटलर का साथ देने की अपील की थी ।

हिटलरवादी जनरल, राजनीतिज्ञ, न्यायाधीश तथा शस्त्र उद्योगों के मालिक जो पश्चिम जर्मनी में फिर से राज्य की बागडोर सम्भाले बैठे हैं, निस्संदेह वर्वूड सरकार की प्रशंसा करते हैं, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका से व्यापार उनके लिए अत्यन्त लाभदायक है । १९६३ के प्रथम छः महीनों में ही पश्चिम जर्मन इजारेदार पूंजीपतियों ने दक्षिण अफ्रीका में ७ करोड़ मार्क लगाये जो [illegible]० लाख पौंड के बराबर हैं । जब अदिस आबबा में अफ्रीकी एकता संघ की नींव पड़ी तो उसके कुछ सप्ताह बाद ही पश्चिम जर्मन सरकार ने दक्षिण अफ्रीका को १० करोड़ मार्क के ऋण की स्वीकृति दी । यह धन राशि एक करोड़ पौंड के बराबर है । दक्षिण अफ्रीका के साथ पश्चिम जर्मनी व्यापार व्यवस्थित रुप से बढ़ाया है । एरहार्ड सरकार ने इस देश में राकेट निर्माण और परीक्षण का कार्य भी आरम्भ कर दिया है । एक पश्चिम जर्मन समाचार पत्र के शब्दों में पश्चिम जर्मनी के सरकारी क्षेत्रों तथा उच्च एकाधिकार के लिए, दक्षिण अफ्रीका एक व्यापार-स्वर्ग है। पश्चिमी जर्मनी की राजधानी बोन में स्वतन्त्रता तथा आत्म-निर्णय का अधिकार जैसे शब्द साधारणतया सुनने में आते है परन्तु जब दक्षिण अफ्रीका में स्वतन्त्रता और आत्म-निर्णय के अधिकार की बात आती है तो पश्चिम जर्मन सरकार चुप्पी साध लेती है और उन लाभ राशियों को गिनने लग जाती है जो दक्षिण अफ्रीकी मजदूरों के पसीने से कमाई होती है ।

हम यहां यह दोहरा दें कि ज. ज. ग. के लोग सक्रिय समएकता का अत्यन्त आदर करते हैं । हमारे एक अफ्रीकन साथी, बन्गूरा एडूलाय, जो गिनी गणराज्य में एक विद्यालय निर्देशक के पद पर नियुक्त हैं, हमारे नाम एक पत्र में लिखते हैं : "संसार में कहीं भी जनसाधारण पर अत्याचार हो, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार पीड़ित हो उठती है । इस ने उन सभी राष्ट्रों के मुक्ति संघर्षों का समर्थन किया है जो अब तक साम्राज्यवाद के शिकंजे से निकल नहीं सके हैं।"

समाजवाद के निर्माण में व्यवस्त क्यूबा, पानामा के लोग जो आत्म निर्णय

(शेष २२ पृष्ठ पर)

जर्मन शान्ति सिद्धान्त

डा. वोलफगांग कीज़ेवेट्टर
ज. ज. ग. के उप-विदेश मंत्री
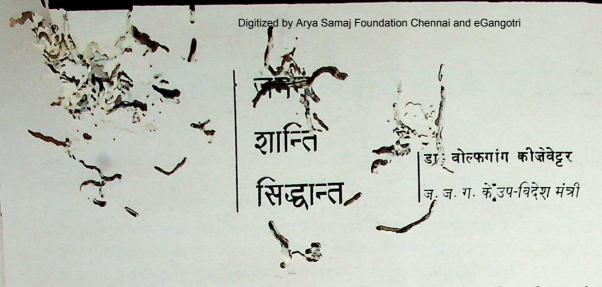
१२ जून, सन् १९६४ के दिन, मास्को में सोवियत संघ और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच **मैत्री, पारस्परिक सहायता एवं सहयोग संधि** पर हस्ताक्षर होने के बाद, ज.ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने क्रेमलिन में एक भाषण दिया। इस भाषण ने दुनिया भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। जर्मन समस्या की पृष्ठभूमि और इसकी विस्तृत व्याख्या करते हुये श्री उल्ब्रिख्त ने, अपने भाषण में **जर्मन शांति सिद्धान्त** का निम्न शब्दों में प्रतिपादन किया :

"जर्मनी की वर्तमान सीमाओं को मान्यता देना, यूरोप की सुरक्षा की गारण्टी है। दोनों जर्मन राज्यों को समान रूप से मान्यता देना और उनके आत्मनिर्णय के अधिकार के प्रति सम्मान प्रकट करने का अर्थ होगा जर्मनी और सारे यूरोप में शांति तथा सुरक्षा को दृढ़ करना, और एक शांति प्रिय जर्मनी के एकत्रीकरण के लिये रास्ता तैयार करना। . . इसी प्रकार से दो जर्मन राज्यों के साथ यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमरीका के देशों द्वारा सामान्य संबंध स्थापित करने से यूरोप की शांति मज़बूत हो जायगी और विभाजित जर्मनवासी स्वयं सद्भावना तथा मैत्री के सूत्रों में बंध जायेंगे। . ."

उक्त जर्मन शांति सिद्धांत का यही मुख्य रूप है, जिसका जन्म हुआ है जर्मन राष्ट्र के भविष्य की चिन्ता और विश्व को बचाने के गहरे चिन्तन के कारण। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह नीति उस जर्मन राज्य के चरित्र के नितान्त अनुरूप है जिसकी विदेश नीति का आधार-स्तम्भ है शांति, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और (साम्राज्यवादियों तथा उपनिवेशवादियों द्वारा) दमित तथा शोषित समस्त जनता के साथ एकजूटता।

जर्मनी का पिछली एक शताब्दी का इतिहास ऐसे सिद्धान्तों, सैनिक योजनाओं, राजनयिकों राजनीतिज्ञों और सैनिकवादियों से भरा हुआ है जिन्होंने जर्मन साम्राज्यवाद और सैनिकवाद का ही प्रतिपादन और पुष्टि की है। इसमें बिस्समार्क के **खून और लोहा** नामक सिद्धांत से लेकर हिटलर तथा उसके फासिस्ट दरिन्दों के **बिना रिहायशी जगह के (जर्मन) जनता** के सिद्धान्त तक सभी कुछ सम्मिलित है। ये सिद्धान्त वास्तव में युद्ध द्वारा दूसरे देशों पर अधिकार करना, अन्य जातियों को निकृष्ट कह कर उनका विनाश करना (जैसे यहूदियों का --- सं.) और जर्मन साम्राज्यवाद को फैलाने के उपाय और बहाने ही थे। अब यह बात इतिहास का एक निर्विवाद तथ्य बन चुका है कि जर्मन साम्राज्यवाद और सैनिकवाद के इन तथाकथित सिद्धांतों ने, दुनिया के लोगों को कई बार भंयकर मुसीबतों में डाल दिया, जर्मनी को यूरोप की अशांति के लिये अड्डा बना दिया, और जर्मनी को सारी दुनिया में बदनाम कर दिया . . यही कारण है कि आज, जर्मन समस्या को मुख्यतः यूरोप में सुरक्षा लाने और विश्वशांति कायम करने के परिवेश में देखा जाना अत्यन्त आवश्यक है।

पिछली अर्ध शताब्दी में, जर्मन साम्राज्यवादियों तथा सैनिकवादियों ने दुनिया को दो महायुद्धों में झोंक दिया। सन् १९४५ में, हिटलर की क्रूर, आक्रामक फासिस्ट सेनाओं की करारी हार के बाद, दुनिया की आंखें दोनों जर्मन राज्यों (अर्थात पश्चिम जर्मन फेडरल गणराज्य और जर्मन जनवादी गणतंत्र -- सं.) पर इसलिये लगी हुई हैं कि देखें दोनों जर्मन राज्य अपनी उक्त अस्वस्थ परम्परा और विरासत को खत्म करने के लिये कौन से कदम उठाते हैं और, वे जर्मन समस्या को हल करने के लिये क्या कुछ करते हैं।

दोनों जर्मन राज्य, दो विश्व-शिविरों के संधिस्थल पर और नाटो तथा वारसा संधि राज्यों के बीच स्थित हैं। इसलिये इन दो राज्यों के राजनीतिक सिद्धान्त यूरोपीय और विश्व की शांति के लिये निर्णायक महत्व रखते हैं। देखना यह है कि दो जर्मन राज्यों के ये सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को घ[illegible] और शांति को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होते है, अथवा ये शीत युद्ध और तत्[illegible] तनावों को बल पहुंचाते हैं। इस कसौटी पर परखने से कोई भी निष्पक्ष [illegible] देखे बिना नहीं रह सकता कि पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य ने दूसरे महायुद्ध के परिणामों अर्थात् पोटस्डाम संधि की सभी शर्तों का उल्लंघन किया है। दूसरे शब्दों में उसने प्रतिशोधवाद को अपना लिया है जिसके परिणामस्वरुप पश्चिमी जर्मनी तनाव को घटाने का विरोध करता है। सारे [illegible] में पश्चिमी जर्मन फेडरल गणराज्य ही एक मात्र ऐसा राज्य है जो सीमा संबंधी झगड़े खड़ा करता है (दूसरे राज्यों के क्षेत्रों को अपनी सीमाओं में मिलाना चाहता है)।

इस गलत नीति को अमल में लाने के लिये, पश्चिमी जर्मनी हर संभव तरीके से अ[illegible]

...को हासिल करने, और नाटो शक्ति गुट के माध्यम से, संयुक्त आणविक सेना (मल्टिलेटरल नूकलियर फोर्स) का नेतृत्व पा के लिये सरधड़ की बाज़ी लगा रहा। यह नीति कितनी खतरनाक है, इसका साक्षी स्वयं इतिहास है। जर्मन साम्राज्यवाद ने जब भी नवीनतम शस्त्रास्त्रों को हस्तगत किया, इसने विश्व के शक्ति-सन्तुलन पर सोचे विचारे बिना दुनिया को युद्धों की भयानक ज्वालाओं में धकेल दिया।...

डा. वोल्फगांग कीसे-वेट्टर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप विदेश मन्त्री, जो इसी वर्ष भारत आये थे

पश्चिमी जर्मनी की उक्त प्रतिशोधवादी नीति का मूर्तिमान प्रमाण है इसका तथाकथित **हाल्ज़टाइन सिद्धान्त**। विश्व के देशों की राजधानियों--विशेषकर एशिया, अफ्रीका तथा लातीनी अमरीका के नवस्वतंत्र राज्यों में--पश्चिमी जर्मनी के कूटनीतिज्ञ, कई वर्षों से इस सिद्धान्त का हौवा विठाये हुये हैं। इस सिद्धांत और इस निराधार कल्पना की, कि केवल जर्मन फेडरल गणराज्य (पश्चिमी जर्मनी) ही पूरी जर्मनी का प्रतिनिधि है, आड़ लेकर वे इन स्वाधीन राज्यों पर दबाव डालते रहते हैं ताकि वे जर्मन जनवादी गणतंत्र के साथ सामान्य राजनयिक संबंध स्थापित न करें।...**हाल्ज़टाइन सिद्धान्त**, इन नव स्वतंत्र राज्यों के आन्तरिक मामलों में घोर हस्तक्षेप है। इसके द्वारा पश्चिमी जर्मनी, इन राज्यों को एक अन्य राज्य (अर्थात् ज. ज. ग.) के साथ कैसे संबंध हों, परोक्ष रूप से, आदेश सा देता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह रवैया नवोदित राज्यों की प्रभुसत्ता, उनकी तटस्थ नीति और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के नियमों के सर्वथा प्रतिकूल है।

यह बात निस्संकोच कही जा सकती है कि इस प्रकार की जर्मन-नीति आजकल के हालात के बिलकुल विरुद्ध, है, और इसीलिये इस नीति का कोई भविष्य नहीं। आज प्रत्येक राज्य को, मुख्यतः शांति में उसकी देन की कसौटी पर परखा जाता है। जर्मन जनवादी गणतंत्र इस कसौटी पर खरा उतरा है। कुछ ही समय पहले, ज. ज. ग. की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, पश्चिमी जर्मनी के चांसल्लर, प्रोफेसर एरहार्ड के नाम एक पत्र लिखा। इसमें हमारे अध्यक्ष महोदय ने यह सुझाव दिया था कि दोनों जर्मन राज्य आणविक शस्त्रों का परित्याग करें, और वे तथा पश्चिम बर्लिन आपस में मिलजुलकर जर्मनी के विभाजन को समाप्त करने और एक संयुक्त शांतिप्रिय जर्मनी को आकार देने की दिशा में अपने प्रयत्न शुरू करें। ये सुझाव **जर्मन शांति सिद्धान्त** के सर्वथा अनुकूल हैं। इस सिद्धान्त की यह स्पष्ट घोषणा है कि यूरोप, एशिया, अफ्रीका, तथा लातीनी अमरीका के देशों और दोनों जर्मन राज्यों के दरमियान सामान्य संबंधों की स्थापना से यूरोप की सुरक्षा सुदृढ़ हो जायेगी और स्वयं जर्मन-वासियों की आपसी सद्भावना तथा मैत्री भी बढ़ेगी।....
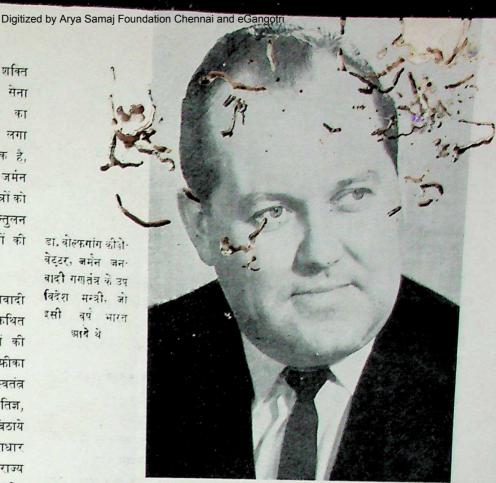
जर्मन शांति सिद्धान्त संसार में शांति के वातावरण को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होगा। इसमें सभी राज्यों की प्रभुसत्ता के प्रति आदर व्यक्त है, और इस सिद्धान्त पर अमल करने से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम होने तथा राष्ट्रों का पारस्परिक सहयोग बढ़ने में सहायता मिलेगी। यह अन्य राज्यों के साथ दो जर्मन राज्यों के सामान्य संबंध स्थापित करने के उद्देश्य के द्वारा विभिन्न राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का समर्थन करता है।.... इसलिये, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष द्वारा घोषित यह **जर्मन शांति सिद्धान्त** केवल जर्मन लोगों का ही मामला नहीं है। इस सिद्धान्त को विश्व के प्रत्येक ऐसे तत्व, शक्ति और व्यक्ति का समर्थन प्राप्त होना चाहिए (और होगा) जो ईमानदारी से विश्व शांति एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के समर्थक हैं। यही प्रबल नीति पश्चिमी जर्मनी की प्रतिशोधवादी नीति का सही मानों में प्रत्युत्तर है।

योजना कैसे जन्म लेती है

बर्टोल्ट [illegible]क

मेरे सामने, द्वार पर **योजना विभाग** लिखा हुआ है। परन्तु आगामी वर्ष के योजना कार्य का आरंभ पूर्णतया इस द्वार के पीछे कमरे में नहीं होता, बल्कि यहां तो प्राथमिक कार्रवाई भी नहीं होती। इसका प्रारंभ यहां तथा नीचे के हाल में होता है जहां उत्पादन कार्य जारी रहता है। ज. ज. ग में योजना के जन्म और विकास का सम्बन्ध सभी श्रमिक जनता से है, क्योंकि सभी उद्यमों की वास्तविक स्वामी वही है। इसलिए किसी भी योजना के बनाने में विभिन्न कामगार लोग भाग लेते हैं।

आइए देखें ज. ज. ग. के बर्लिन स्थित राष्ट्रीय उद्यम प्रशीतक (रेफ्रीजरेटर) निर्माण-कारखाने में योजना कार्य कैसे होता है। यह संयंत्र प्राथमिक रूप से समुद्री जहाजों के लिए प्रशीतन प्लांट तैयार करता है। यह इन्हें पोत-निर्माण कारखाने में पहुंचा देता है जहां ये प्लांट समुद्री ज़हाजों में लगा दिए जाते हैं। ये अधिकतर समुद्री ज़हाजों के साथ ही निर्यात भी कर दिये जाते हैं। इस निर्यात में ज. ज. ग. की गहरी रुचि है, इसलिए विभिन्न राज्यांग इस उद्यम पर विशेष आशाएं रखते हैं।

आगामी वर्ष का योजना कार्य चालू वर्ष के मध्य में ही आरम्भ हो जाता है। इस विषय में पहला कार्य अभिस्थापन आंकडे उद्यमों के हवाले करना होता है। ये आंकड़े या तो राष्ट्रीय उद्यम संस्था की ओर से आते हैं, जिस के आधीन यह उद्यम है। दूसरी सूरत में यह आंकड़े ज़िला आर्थिक परिषद से भी आ सकते हैं। ऐसा तभी होता है जब उद्यम स्थानीय हो और जिला उद्यम के आधीन कार्य करता हो। प्रशीतक निर्माण कारखाने को ड्रेस्डन स्थित राष्ट्रीय वायु तथा प्रशीतन औद्योगिकी संस्था की ओर से अभिस्थापन आंकड़े १० जून को प्राप्त हुए। निःसन्देह इस संस्था के ये आंकड़े हवाई नहीं होते बल्कि उद्यम के साथ आगामी वर्ष के उत्पादन सम्बन्धी मूल लक्षणों पर बातचीत करने के बाद तैयार किए जाते हैं। ये आंकड़े निर्माण के विस्तृत योजना कार्य में सहायक सिद्ध होते हैं। उत्पादन, लागत में कमी, श्रमिक उत्पादन शक्ति में वृद्धि तथा अन्य महत्व-पूर्ण विशेषताओं के प्रति ये आंकड़े संस्था से न्यूनतम मांगें प्रस्तुत करते हैं। ज. ज. ग. में किसी भी उद्यम के समस्त योजना कार्यों में लाभ सब से अधिक महत्व रखता है क्योंकि लाभ के आंकड़े ही वास्तव में किसी भी उद्योग की उन्नति के ज़ामिन होते हैं। वस्तुओं का अधिक उत्पादन, तुरन्त विक्रय, उच्च श्रेणी, कम लागत — किसी भी उद्योग के ये गुण, लाभ पर अपना प्रभाव अवश्य डालते हैं। प्रशीतक निर्माण-गृह द्वारा ६० लाख मार्क के लाभ की योजना प्रस्तुत की गई।

अभिस्थापन आंकड़ों पर आधारित योजना विवेचन सम्बन्धी आदेश निर्माणगृह नियोजन द्वारा १५ जून को तैयार कर लिया गया। योजना नियोजन कार्य के लिए सभी श्रमिक

ज.ज ग. का प्रथम गैस कंक्रीट संयन्त्र, जिसकी तामीर में पोलैण्ड ने सहयोग दिया
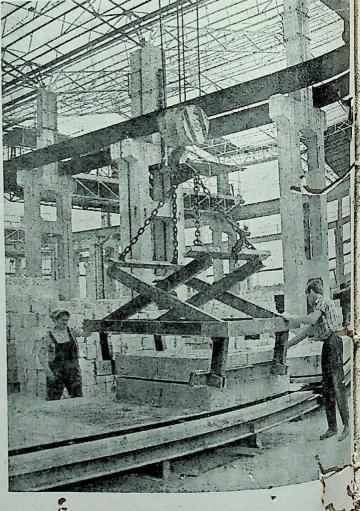
... आमंत्रित करने वाला एक संघर्ष ... बनाया गया था । एक सप्ताह पश्चात सभी प्रबंधकों, तथा ट्रेड ... अधिकारियों की एक सभा हुई । इस सभा ... उद्यम शक्तियों, विभागीय निर... या कर्मचारियों के प्रतिनिधियों के सम्पूर्ण सहयोग के वातावरण में यह निश्चय किया गया कि श्रमिकों, टैक्नीशियनों, इंजीनियरों तथा डिज़ाइनरों की सहायता से संस्था द्वारा प्रस्तुत किए ग... लाभ आंकड़ों की पूर्ति ही नहीं अपितु इससे भी अधिक लाभ उत्पन्न किया जाये । इस सभा ने ९० लाख नहीं अपितु ९५ लाख मार्क के लाभ पर जोर दिया । क्योंकि कारखाने के प्रबन्धकों की नियुक्ति राज्य सरकार द्वारा इसी विचार से की जाती है कि राष्ट्रीय संयंत्रों से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो । इस के साथ ही, अतिरिक्त लाभ, उद्यम तथा इसके प्रत्येक कर्मचारी के लिए अधिक लाभांश के रूप में हितकर सिद्ध होता है ।

लगभग एक महीने तक इस विषय पर विभिन्न ट्रेड यूनियन समूहों, विभागों तथा अभिकल्प कार्यालयों में विचार विमर्श होता रहा कि अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने में कैसे सफल हों । जगह जगह होने वाली ... में विभिन्न ... प्रस्तुत किए ... के इंजीनियरों पर १७ में ... प्रशीतन संयंत्रों की रचना का कार्यभार आन पड़ा । उन्होंने शीघ्र, कार्यपूर्ति के विचार से प्रतिरूप-प्रक्षेप की सहायता ली । यान्त्रिक विभाग के श्रमिकों ने मांग की कि उत्पादन बढ़ाया जाये ताकि अत्यंत उत्पादक मशीनों की क्षमता के अनुसार कार्य लिया जा सके । उन्होंने निवारक पोषण द्वारा ५०,००० मार्क बचाने का निर्णय किया और उत्तम स्तर चिन्ह क्यू जीतने के लिए भी सुझाव दिए ।

सभी उद्यमों की भांति प्रशीतक निर्माण संयन्त्र ने भी इस प्रकार तैयार की गई योजना राष्ट्रीय उद्यमों की संस्था को जुलाई में दे दी । संस्था के प्रधान को यह जान कर प्रसन्नता हुई कि ९० लाख मार्क के स्थान पर १ करोड़ ५ लाख मार्क के लाभ की आशा है और इस योजना को उद्यम के सभी कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त है । इस वर्ष इस प्रकार की योजना विशेष-रूप से हितकर थी क्योंकि अब अतिरिक्त लाभ का ७० प्रतिशत भाग ... कर्मचारियों में बांटा जायेगा ।यदि कर्मचारी ... लाभ तक ही अपनी योजना ... रख तो अतिरिक्त लाभ में से केवल ३... भाग के वे अधिकारी होंगे ।

योजना प्रस्तुत करने के दो ... पश्चात ट्रेड यूनियन तथा प्रबंधक अधिकारियों ने परिणाम विश्लेषण किया और योजना की दूसरी स्थिति पर विचार विमर्श किया । एक मास के लिये अर्थात अगस्त की समाप्ति तक के लिये यह तय पाया कि अपने लक्ष्यों की पूर्ति में प्रत्येक सावधानी बरती जाये और अन्य सफलता की संभावनाओं की खोज भी जारी रहे । अभी सितम्बर के मध्य तक योजना संशोधन हो सकता है । इसके पश्चात संस्थायें अथवा जिला आर्थिक परिषद सभी प्रायोजनायें केन्द्रीय कार्यालयों के हवाले कर देती हैं ताकि अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं का समन्वय हो सके । इसके पश्चात सम्पूर्ण प्रायोजना, मंत्री-परिषद के पास पहुंचती है जो इसे लोक सभा तक पहुंचाती है। और यहां वर्ष के अन्त में अन्य विवेचन के पश्चात राष्ट्रीय अर्थ योजना को वैधानिक रूप प्राप्त हो जाता है ।

वैज्ञानिक सहयोग...

(पृष्ठ ६ का शेष)

हैदराबाद कान्फ्रेंस में उपस्थित वैज्ञानिकों ... इस कार्य को भारतीय विज्ञान का कार्य-विशेष घोषित किया ।

भारतीय विज्ञान की उन्नति में 'विज्ञान-उद्योग अनुसंधान परिषद' का विशेष हाथ है । विज्ञान उद्योग अनुसंधान परिषद के अनेक विशाल अनुसंधान संस्थानों से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ । उस समय तो मुझे विशेष प्रसन्नता हुई जब मेरी उपस्थिति में ही 'विज्ञान उद्योग अनुसंधान परिषद' तथा जर्मन विज्ञान अकादमी के पारस्परिक सहयोग के प्रति इस वर्ष के आरम्भ में एक योजना पर हस्ताक्षर हुए । इस योजना के अन्तर्गत वैज्ञानिकों का आदान-प्रदान, सामग्री जुटाने में पारस्परिक सहायता व सूचना के प्रबंध निश्चित हुये । मेरे विचार में यह योजना दोनों देशों के लिए उपयोगी तथा लाभदायक है । सर्वविदित है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र एक परिमित जलवायु वाला देश है तथा उष्ण कटिबंधीय देशों के साथ वैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित करने में रुचि रखता है । क्योंकि जलवायु तथा भौगोलिक स्थितियां प्रयोग-कार्य के आधार होते हैं और हमें इस विषय में कुछ पूर्वाविश्यक-ताएं उपलब्ध नहीं हैं । प्रयोग सम्बन्धी उपरोक्त नियम उदाहरणार्थ इन विषयों पर लागू होता है : वनस्पति विज्ञान, पशु-चिकित्सा अनुसंधान, जीव रसायनी अनुसन्धान औषधीय जड़ी-बूटियां, समुद्र-विज्ञान भू-विज्ञान तथा भूगोल । परन्तु भौतिकी तथा रसायन विषयों पर भी यह इसी प्रकार लागू होता है ।

दूसरी ओर भारत भी इस बात में रुचि रखता है कि शिक्षा तथा अनुसंधान के उन क्षेत्रों में हम उनसे सहयोग करें जिनमें जर्मन विज्ञान की एक दीर्घकालीन परम्परा है । हमें इस बात में पूर्ण विश्वास है कि अनुसंधान क्षेत्र की अनेक क्रियाओं से सम्बन्धित हमारी 'अकादमी' के संस्थानों तथा 'विज्ञान उद्योग अनुसंधान परिषद' की राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक सहयोग की बहुत संभावनायें मौजूद हैं । इसी वर्ष अक्तूबर में हमारे पादप-जीव-रसायन संस्थान के दो सदस्य औषधीय जड़ी-बूटियों के अनुसंधान क्षेत्र में निकटतर सहयोग की संभावनाओं की खोज में भारत आए थे ।

पिछले कुछ वर्षों में हमारी अकादमी ने विभिन्न भारतीय संस्थानों जैसे लखनऊ का केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद की अनुसंधान प्रयोगशाला, पूना की केन्द्रीय प्रयोगशाला तथा जमशेदपुर की धातुकर्म प्रयोगशाला के प्रतिनिधि वैज्ञानिकों का जर्मनी में स्वागत किया। वे सभी भारतीय वैज्ञानिक जो हमारे देश में आये विशेष ज्ञान के स्वामी थे तथा उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों में अपनी योग्यता को सिद्ध भी किया । भारतीय सहयोगियों की दीर्घ अथवा अल्पकालीन शिक्षा यात्राओं के समय उन्हें 'अकादमी' के संस्थानों में चल रहे कार्य से परिचित कराने तथा नयी पीढ़ी के वैज्ञानिकों के विशेष प्रशिक्षण में सहायता देने के लिए 'जर्मन विज्ञान अकादमी' पहले की भांति भविष्य के लिए भी तत्पर है ।
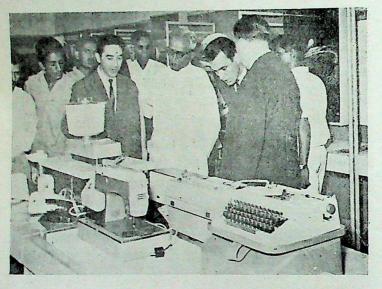
ज. ज. ग. की १५वीं वर्षगाँठ के

श्रीमती बोत्तकर, भारत के उप विदेश मंत्री, श्री दिनेश सिंह का स्वागत कर रही हैं

बर्लिन के मार्क्स-एंगेल्स चौक में, हर्षोल्लास वर्षग

भारत के सांस्कृतिक मामलों के राज्य मंत्री, श्री हजरनवीस, 'आल इंडिया फाइन आर्टस् एण्ड क्राफ्टस् सोसाइटी' के हाल में आयोजित 'ज.ज.ग. के १५ वर्ष' नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद कतिपय प्रदर्शित वस्तुओं को देख रहे हैं

भारत-स्थित ज.ज.ग. के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्त बोत्तकर, कांस्टिट्यूशन क्लब में 'भारत–ज. ज. ग. मैत्रि संघ' द्वारा आयोजित समारोह में भाषण पढ़ रहे हैं। मंच पर, श्रीमती अरुणा आसफअली (बायें कोने में) और श्री जगजीवन राम (बायें से तीसरे) भी बैठे हैं

भारत-स्थित तंत्र दूतावास के प्रमु ने, की १५ वीं वर्ष ने नि पर ७ अक्तूबर ार इसमें अनेकान ीय संसद-सदस्य, क लोग सम्मिलि

इस पुण्य ि में, दिल्ली, ब स्थित ज. ज. शा कई प्रदर्शि ादि जन किया।

इन पृष्ठों प लि समारोहों के हैं।

...में आयोजित समारोहों के कुछ दृश्य

...वर्षगांठ के पुण्य अवसर पर एक विराट प्रदर्शन

जं.ज.ग. के व्यापार-दूतावास की बम्बई शाखा के प्रमुख श्री साखसे, वहां के भूतपूर्व महापौर, श्री बन्दूकवाला का स्वागत कर रहे हैं

बम्बई की प्रसिद्ध 'जहांगीर आर्ट गैलरी' में, १५ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित ज.ज.ग. की पुस्तक-प्रदर्शनी का एक दृश्य

...तंत्र के व्यापार ...के प्रमुख ने, ज. ज. ग. ...वीं वर्षगांठ ...ने निवासस्थान ...अक्तूबर ...र पार्टी दी। ...अनेक ...राष्ट्रीय राजनयिक, ...सदस्य, ...क तथा अन्य ...सम्मिलि... ...पुण्य ...त में, विशेषकर ...बम्बई ...में, वहां ...ज. ज. ग. ...की शाखाओं ने, ...प्रदर्शनियों आदि का आयो... ...या। ...पृष्ठों पर ...के लिये, इन्हीं ...के दृश्य हैं।

व्यापार-दूतावास की बम्बई शाखा के उस-प्रमुख श्री एच. कावरेट्स्की, १५ वीं वर्षगांठ के सम्मान में अहमदाबाद में आयोजित एक समारोह में अतिथियों का स्वागत कर रहे हैं। चित्र में (बायें से दायें) हैं महापौर एन. जावेरी, गुजरात के राजपाल, श्री मेंहदी नवाज़ जंग और डा. सोमा भाई देसाई

ज. ज. ग.

संयुक्त राष्ट्र संघ के आदर्शों की पूर्ति के लिये कार्य

प्रोफेसर पीटर ए. स्टाइनगेर

जर्मन संयुक्त राष्ट्र लीग के प्रधान

१९६५ के आरम्भ में संयुक्त राष्ट्र संस्था के विश्व संघ का पूर्ण अधिवेशन नई दिल्ली में होगा। इस अवसर पर 'जर्मन संयुक्त राष्ट्र लीग' को भारतीय जनता तथा अन्य नवस्वतन्त्र राष्ट्रों को अपना परिचय देने की अनुमति मिलेगी।

जर्मन संयुक्त राष्ट्र लीग की सदस्यता संयुक्त अथवा वैयक्तिक होती है। संयुक्त सदस्यों में सम्मिलित हैं — ज. ज. ग. की पांच राजनीतिक संस्थाएं, ट्रेड यूनियन संघ, सांस्कृतिक संघ, नारी व युवक संगठन, कुछ व्यावसायिक संस्थाएं जैसे पत्रकार संघ अथवा लोकतन्त्रीय विधिज्ञ संघ तथा वैज्ञानिक ज्ञान प्रासार समिति। वैयक्तिक सदस्यों की संख्या कई हजार है। ये सारे देश में फैले हुये हैं और प्रत्येक जन स्तर से सम्बन्धित हैं। इन में विश्वविद्याय के प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों की बहुत बड़ी संख्या सम्मिलित है।

इस **लीग** के अंगों का निर्वाचन दो वर्ष की अवधि के लिए होता है जो प्रतिनिधियों की नियमित संस्थाओं द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत लेख के लेखक जो हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्रोफेसर हैं, इसी प्रक्रिया के आधार पर निर्वाचित हो कर पिछले दस वर्ष से **लीग** के प्रधान चले आ रहे हैं।

यह लीग न केवल प्रेस, रेडियो और टेलीविजन का व्यापक प्रयोग करती है बल्कि संयुक्त राष्ट्र के प्रश्नों से सम्बंधित पुस्तक-पुस्तिकाएं भी प्रकाशित करती रहती है। इसके वार्षिक प्रकाशन U N O Bilanzen में संयुक्त राष्ट्र की वर्तमान सभाओं में जारी किए गये दस्तावेजों का विश्लेषण तथा मूलपाठ सम्मिलित है। संयुक्त राष्ट्र लेख माला, **लीग** के मुख्य प्रकाशनों में से एक है और अब तक इस के कई खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें अब संयुक्त राष्ट्र के इतिहास, संयुक्त राष्ट्र की शाखाओं की कार्यशैली तथा इसकी विशेष संस्थाओं की क्रियाओं इत्यादि पर व्याख्यात्मक टिप्पणियां तथा संक्षिप्त विवरण भी सम्मिलित है।

संयुक्त राष्ट्र की प्रत्येक संस्था का सब से बड़ा काम विदेशों में, मुख्यत: संयुक्त संस्थाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है। ज. ज.ग. **लीग** भी इस काम की ओर विशेष ध्यान दे रही है। इसके प्रतिनिधियों ने पिछले दस वर्षों में होने वाली **संयुक्त राष्ट्र संस्था विश्व संघ** की सभी पूर्ण सभाओं में भाग लिया और अपनी योग्यता अनुसार सहयोग दिया।

विश्व संघ की अठारहवीं सभा न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रधान कार्यालय में होने वाली पहली सभा थी, और यह पहला अवसर था जब ज. ज. ग. के प्रतिनिधियों को भाग लेने से रोका गया था। अमरीकन संयुक्त राष्ट्र संस्था की चेष्टाओं के बावजूद पश्चिम बर्लिन में, पश्चिमी शक्तियों द्वारा स्थापित यात्रा-कार्यालय ने अन्तर्राष्ट्रीय वैधानिक नियमों का तनिक ध्यान न रखते हुये **जर्मन लीग** के अध्यक्ष तथा एक अन्य सदस्य को अमरीकी प्रवेश-पत्र देने से साफ इनकार कर दिया।

नई दिल्ली में होने वाले विश्व संघ के पूर्ण अधिवेशन की जर्मन लीग के प्रति[illegible] बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहे हैं [illegible] अपना समुचित स्थान फिर से ग्रहण [illegible] और यह बात उनके लिए विशेष [illegible] प्रशंसनीय है कि भारतीय संयुक्त राष्ट्र [illegible] तथा संसार के अन्य भागों में स्थित [illegible] राष्ट्र संस्थायें जर्मन लीग के मित्र[illegible] सम्मिलित हैं।

इस समय तो जर्मन लीग की रुचि [illegible] रूप से इस बात में है कि न्यूयार्क [illegible] लिया गया वह निर्णय शीघ्र से शीघ्र [illegible] रूप ग्रहण करे जिसके अनुसार संयुक्त [illegible] घोषणा पत्र के मूल नियमों पर आधा[illegible] शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत [illegible] करने की योजना है। इसका ध्येय सं[illegible] घोषणा पत्र को उन परिवर्तनों के अनु[illegible] बनाना है जो संसार में १९४५ के बाद [illegible] समय पर होते रहे हैं। अन्य परिवर्तनों [illegible] अतिरिक्त स्वयं संयुक्त राष्ट्र संघ में [illegible] नये राष्ट्रों ने प्रवेश किया है। इस [illegible] काल में साम्राज्यवाद और उपनिवेश[illegible] का जो स्पष्ट विघटन हुआ है वह ह[illegible] समय की एक महान घटना है। हमारे वि[illegible] में संयुक्त राष्ट्र का एक मुख्य कार्य [illegible] प्रथा तथा इस प्रथा के किसी भी रू[illegible] विरूद्ध लगातार संघर्ष होना चाहिए।

लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि यह [illegible] पूर्ण निशस्त्रीकरण की समस्या को हल [illegible] बिना नहीं किया जा सकता। इस [illegible] कोण से संयुक्त राष्ट्र का प्रबल कार्य[illegible] अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को दूर करना [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध की भावना [illegible]

(शेष पृष्ठ २२ पर)

काहिरा सम्मेलन और ज. ज. ग.

विगत मास (अक्तूबर) में, संयुक्त अरब गणराज्य की राजधानी काहिरा में, तटस्थ (गुट-मुक्त) राष्ट्रों का द्वितीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में एशिया, अफ्रीका, यूरोप तथा लातीनी अमरीका के उन अनेक राज्यों ने अपने प्रतिनिधि-मण्डल भेजे थे जिनकी विदेश-नीति का आधार-स्तम्भ है तटस्थता।

जर्मन जनवादी गणतंत्र ने हमेशा इस नीति की सराहना की है, क्योंकि वह इस नीति को विश्वशांति और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रबल सहायक समझता है। इसलिये यह स्वाभाविक है कि ज. ज. ग. उक्त **सम्मेलन** का हार्दिक स्वागत करे। सम्मेलन के अन्तिम दिन पर, ज. ज. ग. के विदेशमंत्रालय ने इसी आशय की एक विज्ञप्ति जारी की, जिसमें **सम्मेलन** का स्वागत करते हुये लिखा गया है :

"तटस्थ राज्यों के प्रमुखों और सरकारों के काहिरा सम्मेलन ने, विश्वशांति और सद्भावना को निश्चित रुप से सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जर्मन जनवादी गणतंत्र के परराष्ट्र मन्त्रालय को इस बात से पर्याप्त सन्तोष हुआ कि सम्मेलन ने पूर्ण और आम निःशस्त्रीकरण का, अणु-मुक्त क्षेत्रों को कायम करने का, और नाभिकीय शस्त्रास्त्रों को अन्य देशों में फैलने से रोकने का एक मत हो कर, दृढ़ समर्थन किया है"..।

आगे चलकर विज्ञप्ति में कहा गया है कि सम्मेलन की सफलता, पश्चिमी जर्मन साम्राज्यवाद के अणु-शस्त्रों को हस्तगत करने की आकांक्षाओं पर एक ज़बरदस्त चोट है। साथ ही यह सफलता जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति के बिलकुल अनुकुल है, क्योंकि इससे ज. ज. ग. के उन प्रयत्नों को ज़बरदस्त बल मिलता है जो प्रयत्न वह, दोनों जर्मन राज्यों को अणु-शस्त्रीकरण से अलग रखने, और मध्य यूरोप में एक अणु-मुक्त क्षेत्र में उनको सम्मिलित करने के लिये, निरन्तर कर रहा है।

विज्ञप्ति में सम्मेलन के, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और उपनिवेशवाद के विनाश के सिद्धान्तों से संबन्धित लिये गये फैसलों का विशेष रुप से इन शब्दों में स्वागत किया गया है

"ज. ज. ग., सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के, साम्राज्यवादी-उपनिवेशवादी आधिपत्य और नव-उपनिवेशवादी शोषण के प्रत्येक रुप को खत्म करने के दृढ़ निश्चय का, स्वागत तथा समर्थन करता है।... सम्मेलन ने, जनता के साम्राज्यवादी आधिपत्य से मुक्त होने और आत्म-निर्णय के अधिकार का स्पष्ट और प्रबल समर्थन किया है। इस तरह तटस्थ राष्ट्रों के सम्मेलन ने एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका की मुक्ति-कामी जनता को, साम्राज्यवाद तथा नव-उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष को तेज़ करने के लिये नया उत्साह और नयी प्रेरणा प्रदान की है।

"जर्मन जनवादी गणतंत्र का, साम्राज्यवाद विरोधी संघर्षशील जनता के साथ एकता, भाईचारा और हमदर्दी होना स्वाभाविक है, क्योंकि अपने सीमा-क्षेत्र में (पश्चिमी जर्मन राज्य में नहीं—सं.) इसने जर्मन साम्राज्यवाद तथा सैनिकवाद को जड़मूल से उखाड़ दिया है। ऐसा करके, ज. ज. ग. ने जर्मन जनता के आत्म-निर्णय के अधिकार को अमली रुप दे दिया है।

"ज. ज. ग. **काहिरा सम्मेलन** के उस फैसले से बिल्कुल सहमत है जिसमें पश्चिमी जर्मन साम्राज्यवाद की, अंगोला और मोजामबीक में पुर्तगाली साम्राज्यवादी दमन के साथ उसकी आर्थिक, सैनिक तथा राजनीतिक सहयोग की नीति को नंगा करके उसकी ज़बरदस्त निन्दा की गयी है...।

काहिरा सम्मेलन में, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति ने एक बयान में कहा कि जर्मन समस्या का हल, बुनियादी तौर से दो जर्मन राज्यों की आपसी बातचीत में ही ढूंढा जाना चाहिये। इसी प्रकार, घाना के राष्ट्रपति एनक्रूमा ने अपने वक्तव्य में कहा कि दोनों जर्मन राज्यों को आपस में किसी एक समझौते पर पहुंच जाना चाहिये। इन दोनों वक्तव्यों का न केवल सम्मेलन में ही, बल्कि विश्व भर में बहुत अच्छा स्वागत हुआ। कम्बोदिया के प्रधानमंत्री, राजकुमार नोरोदोम सिहानोक ने अपने भाषण में विभाजित देशों को, समान रुप से, संयुक्त राष्ट्रसंघ में प्रविष्ट करने का एक सुझाव दिया। यह सुझाव, तटस्थ राष्ट्रों में आजकल की वास्तविक स्थिति को स्वीकार करने की भावना को दर्शाता है"।

आगे चलकर ज. ज. ग. के विदेश मंत्रालय के उक्त वक्तव्य में कहा गया है: "यह एक सर्वविदित बात है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र ने बार बार, पश्चिमी-जर्मन सरकार के साथ बातचीत करने के लिये समय समय पर सुझाव पेश किये हैं। इसलिये **काहिरा सम्मेलन** में राजनीतज्ञों द्वारा दिये गये उक्त वक्तव्य, बुनियादी तौर पर पश्चिमी जर्मन फेडरल रिपब्लिक के नाम एक अपील है तनाव-विरोधी उसकी नीति को तिलान्जलि देने के लिये, और दूसरे महायुद्ध के बाद वजूद में आई हुयी वास्तविकताओं को स्वीकार करने के लिये। काहिरा सम्मेलन, दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व के तथ्य को मानकर चला है। इस सम्मेलन में इस निर्णायक बात पर बल दिया गया कि जर्मन जनता को परस्पर सहयोग करके स्वयं अपनी समस्याओं को हल करना चाहिये। ज. ज. ग. की सरकार इसके लिये हमेशा से तैयार रही है।

वक्तव्य का अन्त इन शब्दों से हुआ है: "जर्मन जनवादी गणतंत्र का विदेश मंत्रालय इस बात पर हर्ष और सन्तोष प्रगट करता है कि साम्राज्यवादी तिगड़मों के बावजूद **काहिरा सम्मेलन** सफल हुआ। सम्मेलन में लिये गये फैसलों का वह हार्दिक स्वागत करता है। ज.ज. ग. का यह निश्चित विश्वास है कि ये फैसले, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने और विश्व शांति की सुरक्षा के लिये सहायक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगे।"

डा. प[illegible]ण्डेल [illegible]ारत यात्रा

जर्मन [illegible]गणतंत्र की "विश्व जन-मैत्री लीग" के अध्यक्ष, डा. पाल वाण्डल, २० अक्तूबर के दिन राजधानी दिल्ली में आये। दक्षिण पूर्वी एशिया के कई देशों की यात्रा करते हुये श्री वाण्डल, "भारत–ज. ज. ग. मैत्रि संघ" के निमन्त्रण पर यहां आये थे। उनकी इस यात्रा में ज. ज. ग. के "जर्मन दक्षिण एशिया पूर्वी संघ" के सचिव, श्री बी. कोएखर भी उनके हमराह थे।

नई दिल्ली में, डा. वाण्डल चार दिन रहे, और चारों दिन वे बहुत व्यस्त रहे। 'इन्स्टीच्यूट आफ अफ्रो-एशियन एण्ड वर्ल्ड अफियर्स' द्वारा आयोजित एक सभा में उन्होंने भाषण दिया, और 'सर्वेन्ट्स आफ पीपुल्स सोसाइटी' के तत्वावधान में संगठित एक सभा में, उन्होंने 'लाला लाजपतराय भवन' के पुस्तकालय को कई पुस्तकें भेंट कीं। डा. पाल वाण्डेल, भारत के सांस्कृतिक मामलों के राज्य मंत्री, श्री आर. एम. हजरनवीस, सामुदायिक विकास एवं सहकार के मंत्री, श्री एस. के. दे, और कई अन्य महानुभावों से भी मिले। 'भारत-ज. ज. ग. मैत्री संघ' द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में, भारत के भूतपूर्व तेल एवं रासायनिक मंत्री, श्री केशवदेव मालवीय और डा. पाल वाण्डल प्रमुख वक्ता थे। कार्यक्रम के अन्त पर कुछ हिन्दी गीत गायेग ये, और ज. ज. ग. के 'जर्मन दक्षिण पूर्वी एशिया संघ' के उद्देश्यों तथा कार्य से संबंधित एक दिलचस्प फिल्म दिखायी गयी।

ज. ज. ग. की 'विश्व [illegible] मैत्री लीग' ने, ज. ज. ग. की जनता [illegible] दुनिया के अन्य देशों की जनता के निकट लाने और मित्रता जोड़ने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस जन-मैत्री [illegible] में कई सभायें तथा संघ सम्मिलित हैं, जो विभिन्न देशों की जनता और जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता के बीच सहयोग तथा सद्भावना बढ़ाने के लिये सक्रिय हैं। इन में से विशेष उलेखनीय हैं: जर्मन-दक्षिण पूर्वी एशिया संघ, जर्मन–अरब संघ, जर्मन–अफ्रीकी संघ, जर्मन लातीनी अमरीका संघ आदि।

दिल्ली से विदा होकर, डा. वाण्डल तथा अन्य प्रतिनिधि कलकत्ता और पटना भी गये। भारत यात्रा के पहले यह प्रतिनिधिमण्डल इंडोनेशिया, श्रीलंका तथा नेपाल की यात्रा कर चुका है।.... 'इन्स्टीच्यूट आफ अफ्रोएशियन एण्ड वर्ल्ड अफेयर्स' के तत्वावधान में आयोजित सभा के सामने दिया गया, डा. वाण्डल का भाषण, काफी दिलचस्प और विचारोत्तजक था जो काफी टीका-टिप्पणी का विषय रहा। इस भाषण का संक्षिप्त रूप यहां प्रस्तुत है:

आजकल, दुनिया के सामने कुछ ऐसी समस्यायें हैं जिनका संबध केवल किसी

डा. पाल वाण्डल, नई दिल्ली के 'लाला लाजपत राय पुस्तकालय' के प्रतिनिधि को पुस्तकें भेंट कर रहे हैं

निर्माण

एक देश या किसी जनसमूह विशेष से नहीं बल्कि पूरे संसार के साथ है। ऐसी एक बड़ी समस्या है विश्वशांति की। हमारे इस अणु-युग में, लाखों करोड़ों मनुष्यों का अस्तित्व, शांति के साथ जुड़ा हुआ है, और शांति के लिये एक बहुत बड़ा खतरा है जर्मन समस्या। ...इसी वर्ष, प्रथम महायुद्ध की ५० वीं और दूसरे महायुद्ध की २५ वीं बरसी मनायी गयीं। यह तथ्य हमको जर्मन समस्या की गंभीरता की याद ताजा कराता है। इन दो महायुद्धों से हमको शिक्षा लेनी चाहिये, और हमें जर्मनी को तीसरा संहारकारी युद्ध शुरू करने से हर हालत में रोक देना चाहिये। जर्मनी को शांति का एक दृढ़ दुर्ग बनाने की आज अत्यन्त आवश्यकता है।

दुनिया में शांति कायम रखना और एक संयुक्त, जनवादी तथा शांति प्रिय जर्मनी की स्थापना करना अन्योन्याश्रित है। शांति कायम रखे बिना और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा निःशस्त्रीकरण की नीति पर अमल किये बिना एक संयुक्त जर्मनी को जन्म देना असंभव है। ..जर्मनी के विभाजन का मुख्य कारण है शीत-युद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव और शस्त्रास्त्रों की दौड़। पश्चिमी जर्मनी की प्रतिशोधवादी शक्तियां और तत्व, नाभिकीय शस्त्र पाने के लिये सरतोड़ कोशिश कर रहे हैं। उनकी यह कोशिश शांति के लिये एक जबरदस्त अभिशाप है और जर्मनी के एकीकरण के लिये एक बहुत बड़ी रुकावट। शस्त्रास्त्रों के बल पर जर्मनी को एक करना समस्त मानवता के प्रति एक महा अपराध और स्वयं जर्मन जनता के लिये घातक होगा। इस लिये विभाजित जर्मनी को एक करने का एक ही रास्ता है और वह है शांतिपूर्ण ढंग से अन्तर्राष्ट्रीय तनावों को कम करना और निःशस्त्रीकरण का रास्ता। जर्मन जनता [illegible]

ज. ज. ग.

...हयोगी

दुनियां के लाखों करोड़ों शांतिप्रिय लोगों के कन्धों से कन्धा भिड़ा कर विश्वशान्ति, निःशस्त्रीकरण, तनाव कम करने आदि जैसे आदर्शों के लिये लगातार संघर्ष करना चाहिये।

द्वितीय महायुद्धोत्तर काल समाप्त हो रहा है। जर्मन जनता को, निकट भविष्य में अब इस बात का फैसला करना है कि जर्मनी में वह शस्त्रीकरण, तनाव बढ़ाने और बदला लेने की शीतयुद्ध की नीति को बल प्रदान करेगी, अथवा निःशस्त्रीकरण, एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति को दृढ़ तथा सफल बनायेगी। जर्मन जनवादी गणतंत्र की नीति का आधार है शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व। इसीलिये सम्पूर्ण जर्मनी में, शांति का एक ठोस तथा दृढ़ आधार तैयार करने के लिये जर्मन जनवादी गणतन्त्र ने एक जर्मन शांति सिद्धान्त पेश किया है।

(जर्मन शांति सिद्धांत के लिये पृष्ठ ८ देखिये)

भारत सरकार के भूतपूर्व तेल मंत्री, श्री केशवदेव मालवीय, भारत-ज.ज.ग. मैत्रि संघ के तत्त्वावधान में कांस्टिट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित एक सभा में भाषण दे रहे हैं

ज. ज. ग. के विख्यात अखबार द्वारा भारत की प्रशंसा

जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक अत्यन्त लोकप्रिय और प्रमुख अखबार, दैनिक 'नुइस दुइत्शलैण्ड' ने भारत और ज.ज.ग. के प्रथम व्यापारिक-करार की दशक-पूर्ति के अवसर पर एक अग्रलेख में, दो देशों के मैत्रिपूर्ण संबंधों की सराहना की है। भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच प्रथम व्यापार-करार पर, १६ अक्तूबर, सन् १९५४ के दिन दस्तखत हुये थे।... लेख में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र, भारतीय गणराज्य के आर्थिक विकास में योगदान देकर उपनिवेशवाद के अवशेषों को समाप्त करने में सहायता दे रहा है।

'नुइस दुइत्शलैण्ड' ने भारत की तटस्थ और शांतिप्रिय सह-अस्तित्व की नीति की बहुत प्रशंसा की है। अखबार ने लिखा है : "१९५० में स्वतंत्र गणराज्य बनने के बाद भारत ने एक नयी और स्वतंत्र विदेश नीति अपना ली। यह नीति थी सक्रिय तटस्थता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की। इस नीति ने भारत को विश्व सम्मान प्रदान किया। भारत की इस नीति ने निश्चित रूप से विश्व में शांति कायम रखने में मदद दी।"

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओलम्पिक हाकी टीम टोकियो ओलम्पिक समारोह में भाग लेने के बाद ४ नवम्बर को भारत आई। यहां दिल्ली और बम्बई में क्रमशः ५ और ७ नवम्बर को इस टीम ने, विश्व-विजयी भारतीय हाकी टीम के साथ दो टेस्ट मैच खेले। दोनों मैचों में भारतीय टीम ने, जर्मन ओलम्पिक हाकी टीम को, दो के मुकाबले में शून्य (दिल्ली में), और ४ के मुकाबले में १ गोल से (बम्बई में) हरा दिया। टोकियो ओलम्पिक हाकी प्रतियोगिता में दोनों टीमें एक एक गोल करके बराबर रही थीं।

चिट्ठी-पत्री
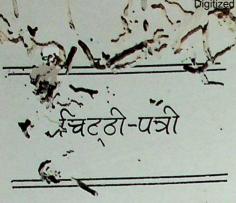
महाशय,

जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास का प्रकाशन **सूचना पत्रिका** की अमूल्य प्रतियां विगत कई महीनों से मुझे प्राप्त हो रही हैं । आप के स्नेह और सौहार्द के लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूंगा । **पत्रिका** के लेख, समाचार तथा चित्र आदि जर्मन जनता की प्रगति का परिचय हर महीने देते हैं । सितंबर के **विशेषांक** से स्व. श्री ओटो ग्रोटवाल की एक महत्वपूर्ण झांकी मिली । श्री ग्रोटवाल का निधन ज. ज. ग. के लिए एक भारी क्षति है । हम भारतीय भी अपने प्रिय नेता श्री नेहरू के देहान्त से दुखित हैं । नये प्रधान मंत्री श्री विल्ली स्तोप को शुभकामनाएं भेजने में खूब सन्तोष है ।

पत्रिका की रूप सज्जा आकर्षक है और लेख तथा समाचार ज्ञानप्रद भी । लेकिन आपसे मेरा यह सानुरोध निवेदन है कि **पत्रिका** में एक और नये स्तंभ की स्थापना करने की कृपा कीजिए उस नये स्तम्भ का नामकरण तो 'मैत्री संघ' या 'मैत्री लीग' रखना काफी हितकर है । ज. ज. ग. के युवक लोगों से भारतीय युवक तथा विद्यार्थियों को इस स्तंभ द्वारा मैत्री पाने की सुविधा भी बढ़ सकती है । **सूचना पत्रिका** के पाठकगण ऐसे एक स्तम्भ को खूब पसन्द करेगें, इसमें सन्देह नहीं ।

शुभकामनाओं सहित

के. गंगाधरन नायर,
तुरवूर (केरल)

सम्पादक जी,

सप्रेम नमस्कार । सितम्बर ६४ की **सूचना पत्रिका** **विशेषांक** बहुत पसन्द आया । जर्मन जनव. गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ पर हार्दिक शुभ[illegible] बधाई ।

ज. ज. ग. के प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री ओटो ग्रोटवाल के निधन के समाचार को पढ़ कर [illegible] लगा । ईश्वर दिवंगत आत्मा की शांति तथा दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे ।

१५वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर स्वर्गीय श्री ओटो ग्रोटवोल का भारतीय मित्रों के नाम संदेश अत्यधिक उपयोगी है और परिशिष्ट में उनकी सचित्र जीवनी निःसन्देह पाठकों को कुछ दे पाई । प्रेरणादायक लगी ।

भारत स्थित, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री कूर्त बोत्तकर द्वारा प्रस्तुत लेख 'भारत-ज. ज. ग. सम्बंध के १० वर्ष' पर्याप्त जनकारी दे पाया पाठकों को । और भी सभी लेख वहुत कुछ दे पाये।

भारत और ज. ज. ग. के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और अधिक ठोस, सुदृढ़ एवं स्थायी बनते रहें, यही कामना है ।

विशेषांक पर बधाई !

केशव ध्यानी पत्रकार
गढ़वाल (उ० प्र०)

प्रिय सम्पादक जी,

ज्ञात हुआ है कि आपकी **सूचना पत्रिका** का **विशेषांक** (७ अक्तूबर १९६४) बहुत अच्छा प्रकाशित हुआ है । क्या आप इसकी एक प्रति भेज सकेंगे ।

मैं विद्यार्थी हूं और आपकी **पत्रिका** का ग्राहक बनना चाहता हूं । पत्रिका की प्रति पाने पर मैं वार्षिक शुल्क भेज दूंगा । कृपया इस विषय में आवश्यक सूचना लिखें ।

शैलेन्द्र कुमार वर्मा
सारन (बिहार)

श्री सम्पादक जी,
सप्रेम नमस्कार,

आपका भेजा हुआ **सूचना पत्रिका** अक्तूबर ६४, का अंक मिला । धन्यवाद । मैंने चिट्ठी-पत्री शीर्षक पूरा पड़ा । उसमें आपके सितम्बर के **विशेषांक** की काफी प्रशंसा है, जिसमें **नयी धरती का गीत** रचना है । अतः आप उसकी भी एक प्रति अवश्य भेजदें । मैं कविताओं का अधिक शौकीन हूं । अतः 'नयी धरती का गीत' अवश्य पढ़ना चाहता हूं । आशा है आप सितम्बर, १९६४ का विशेषांक शीघ्र भेजेंगे ।

आप अपने इस अनुपम पत्र को मेरे पास निरंतर भेजते रहें । मैं आपका काफी आभारी रहूगा । आपका पत्र मुझे बहुत ही पसंद है । मैं आप लोगों की सराहना करता हूं जिनकी देख-रेख में यह निकलता है ।

राधारमण 'पंकज'
आगरा (उ० प्र०)

सम्पादक महोदय,

मुझे आप की **सूचना पत्रिका** का सितम्बर अंक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने का अवसर मिला, जिससे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ । आपकी **पत्रिका** में आप के यहां की सांस्कृतिक व्यापारिका एवं सामाजिक जीवन की झांकी दृष्टिगोचर होती है ।

मैं 'साउथ इंडियन सोसाइटी' की लाइब्रेरी की ओर से आग्रह करूंगा कि आप सूचना-पत्रिक की अंग्रेजी एवं हिन्दी की एक-एक प्रति नियमित रूप से भेजते रहें तथा जर्मन भाषा सीखने से संबंधित सामग्री भेजने की कृपा करें ताकि पुस्तकालय से लाभ उठाने वाले सज्जन आपकी **पत्रिका** से लाभान्वित हों । धन्यवाद ।

अगले अंक की प्रतीक्षा में
मंत्री
दि साउथ इण्डियन सोसायटी
वाराणसी (उ० प्र०)

समाचार

राष्ट्रपति नासिर का श्री उल्ब्रिख्त को धन्यवाद

संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति नासिर ने, जो काहिरा में हाल ही में हुये तटस्थ राज्यों के दूसरे सम्मेलन के अध्यक्ष थे, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त को एक तार भेजा है, जिसमें काहिरा सम्मेलन के लिये भेजी गई उनके शुभकामना सन्देश के लिये हार्दिक धन्यवाद दिया गया है। तार में लिखा गया है :

"तटस्थ देशों के राज्यों और सरकारों के प्रमुखों के दूसरे सम्मेलन की सफलता के लिये भेजे गये आपके सन्देश का काफी सराहनीय तथा संतोषपूर्ण स्वागत [illegible]आ। इस शुभकामना पर, [illegible]प पर[illegible] और आपकी जनता को, [illegible]न अन्य [illegible]योगियों और अपनी ओ[illegible] में [illegible]वाद देते हुये आप[illegible] [illegible]द्धि एव प्रगति की [illegible]मना करता हूं——एक ऐसे विश्व में जो शांति, सुरक्षा और मित्रता से [illegible]रो"।

लाइपज़िक फिलम समारोह में भारत भी भाग लेगा

१४ नवम्बर से लेकर २१ नवम्बर, १९६४ तक, जर्मन जनवादी गणतंत्र के लाइपजिक नगर में, अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेजी एवं लघु फिल्म सप्ताह मनाया जायेगा। इस अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में, दुनिया के ३० से अधिक देश भाग लेंगे, जिनमें भारत भी एक है। भारतवर्ष के अतिरिक्त फिल्म समारोह में भाग लेने वाले देशों में निम्न देश उल्लेखनीय है : अलजीरिया, आस्ट्रेलिया, बलगेरिया, बोलिविया, कनाडा, चाइल, श्रीलंका, कोलम्बिया, साइप्रेस, चेकोस्लो[illegible] डे[illegible]ड, [illegible], ब्रिटेन, [illegible]ा, इन्डोनेशिया, ईरान, इट[illegible] जापान, मोराक्को, नेदरलैण्ड्स, [illegible] [illegible]मानिया, अमरीका, वेनेजुएला, वीयतनाम, पश्चिमी जर्मनी और यूगोस्लाविया।

समारोह में भाग लेने [illegible] फिल्मों को [illegible]चने और पुरस्कृत करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय जूरी की नियुक्ति हुई है जिसके अध्यक्ष हैं श्री एन्ड्रिव टार्नडाइक (ज.ज.ग.), और इस जूरी-दल के अन्य सदस्य हैं : विश्व शांति परिषद के उपाध्यक्ष, श्री आइवर मानटेगू (ब्रिटेन), अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार फेडेरेशन के अध्यक्ष, प्रोफेसर येर्ज टोपलित्स (पोलैण्ड) और भारत, जापान तथा अन्य देशों के फिल्म कलाकार।

सर्वोत्तम वृत-चित्र, लघु फिल्म, टेलिविजन, वैज्ञानिक और कार्टून फिल्मों पर 'स्वर्ण कपोत' और 'रजत कपोत' के दो सर्वोच्च पुरस्कार दिये जायेंगे। इन पुरस्कारों के अलावा, विकासशील देशों की एक सब से अच्छी फिल्म

दक्षिण-अफ्रीका के साथ पश्चिमी जर्मनी व्यापार बढ़ा रहा है

पश्चिमी जर्मनी की 'सीमेन्स' तथा 'क्रुप' नामक बड़ी बड़ी इजारेदार फर्मों ने, दक्षिण-अफ्रीका की फासिस्त सरकार को अधिक सहयोग देने का निश्चय किया है। इस बात का उद्घाटन इन दो विराट फर्मों के प्रवक्ताओं ने किया है। 'सीमैन्स' नामक फर्म प्रिटोरिया के करीब अपनी कम्पनी को १ करोड़, ४० लाख मार्क की लागत लगाकर और फैलायगी। 'क्रुप्प' का एक प्रतिनिधि अक्तूबर के अन्त पर दक्षिण अफ्रीका गया और वहां की सरकार के साथ उसने 'क्रुप्प-दक्षिण अफ्रीका लिमिटेड' को "एक विशेष दिशा में विस्तार" देने के संबंध में बातचीत की।

इस संदर्भ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की अफ्रो-एशियाई एकता कमेटी के उस स्मृति-पत्र की याद दिलाना आवश्यक है जिसमें पश्चिमी जर्मनी और दक्षिण अफ्रीका में सैनिक तथा नाभिकीय (परमाणु शस्त्रास्त्र) सहयोग के षड़यन्त्र को प्रकाश में लाया गया है। इस षडयन्त्र में सीमैन्स फर्म का प्रमुख हाथ है। इस फर्म ने, प्रिटोरिया के निकट स्थित 'दक्षिणी-अफ्रीका राकेट अनुसंधान संस्थान' के सहायतार्थ अपने विशेषज्ञ तथा तकनीशियन भेजे हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस गुप्त सहयोग को दक्षिण अफ्रीका और पश्चिमी जर्मनी की सरकारों का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त है।

प्रिटोरियो में बातचीत करने के बाद क्रुप्प फर्म का प्रतिनिधि, श्री बाइत्स अंगोला रवाना हुआ। अंगोला के कास्सिंगा नामक प्रदेश में कच्चे लोहे के भारी ज़खीरे हैं, जिनको इस्तेमाल करना उक्त षडयन्त्र का एक अभिन्न अंग है। इन ज़खीरों का सबसे बड़ा हिस्सा क्रुप्प कम्पनी ने खरीद लिया है। ये तथ्य इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि दक्षिण-अफ्रीका की फासिस्त सरकार, अंगोला की सालाज़ारी सरकार और पश्चिमी जर्मनी की सरकार तथा फर्मों के बीच आपस में गुप्त साजबाज चल रहा है, जो विश्व शांति के लिये बहुत खतरनाक है।

को 'अमरिती... विशेष पुर... दिया जा... ।

बर्लिन में ८० हजार नये फ्लैट

पिछले पन्द्रह वर्षों में, केवल जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी अर्थात जनवादी बर्लिन में ही अस्सी हजार (८०,०००) नये फ्लैट तामीर किये गये हैं। कुछ ही वर्ष पहले बर्लिन के कई स्थानों पर मलबे के अंबार नज़र आते थे। लेकिन आज उनके स्थान पर नये, हवादार और सुन्दर मकानों की कतारें नज़र आ रही है।

उक्त नये फ्लैटों के अतिरिक्त राजधानी में १५,००० कमरे (स्कूलों के), ७७ व्यायाम-हाल, ६० किंडरगार्टेन, १२० शिशु-गृह, ७ पोलिक्लिनिक, ४४ शफाखाने, २८ बड़े बड़े स्टोर और वृद्धजनों के लिये ५ भवन निर्मित किये गये।

रोस्टोक बन्दरगाह से १३० लाखवां टन माल निकला

सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की अत्यन्त व्यस्त रोस्टोक बन्दरगाह से, माल का १३० लाखवां टन बाहर भेजा गया। १ मई, सन १९६० के दिन से लेकर—जिस दिन १० हज़ार टन वज़नी एक जहाज़ ने यहां माल उतारा — आज तक इस बन्दरगाह पर ४० विभिन्न देशों के लगभग २,७०० मालवाहक जहाजों ने यहां माल उतारा।

इस बन्दरगाह के साथ, मालगाड़ियों का एक बहुत बड़ा जंकशन जुड़ा हुआ है। सन १९६० के बाद, इस जंकशन से, २० सितम्बर के दिन तक १० लाख माल-डिब्बों ने यहां माल उतारा।... ४० क्रेन, हज़ार वर्ग मीटर वाले तीन बहुत बड़े बड़े गोदाम, १ लाख गण-मीटर की भारिता वाला एक तेल टेंक आदि बन्दरगाह के साथ संलग्न हैं।

८ यात्रों के विद्यार्थी ज.ज.ग. में

आजकल दुनिया के १८ देशों के ...र्थी, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विभिन्न ... एवं शिक्षा संस्थानों में अध्ययन कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों की अच्छी खासी संख्या एशिया, अफ्रीका के नवोदित राज्यों जैसे ..., घाना, गिनी, भारत, इन्डोनेशिया, ईराक, नाइजीरिया, सूडान, सीरिया, संयुक्त अरब गणराज्य और यमन आदि देशों की है। इन विकासशील देशों के अधिकांश विद्यार्थी खास तौर से तकनीकी विषयों में अध्ययन कर रहे हैं। कृषि और वन-विज्ञान में भी काफी दिलचस्पी है इन शिक्षार्थियों की। इस रूचि के फलस्वरूप लाइपजिक के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय में एक उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय (सब ट्रापिकल) संस्थान, और ड्रेस्डेन तकनीकी विश्वविद्यालय में उष्ण-कटिबंधीय तथा उपोष्ण-कटिबंधीय वन-संस्थान की स्थापना कर दी गयी है।

ज. ज. ग. में विकासशील देशों से आये हुये २० प्रतिशत विद्यार्थी, ...क्टरी, और १० प्रतिशत विद्यार्थी अर्थशास्त्र का अध्ययन कर रहे हैं।

प. जर्मनी के १६ सैनिक-शरणार्थी

पश्चिमी जर्मनी की सेना के १६ सैनिक तथा नान-कमिशन अफसर, पिछले दो हफ़्तों में वहां से भाग कर, जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ले चुके हैं। इन सैनिकों में, नागोल्ड की वायुसेना बटालियन नं. २५२ के लांस कारपोरल फ्रित्स बाएर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। नागोल्ड में, नये भरती हुये सैनिकों के साथ अमानुषिक व्यवहार होता है जिसके लिये यह कैम्प कुख्यात है। जुलाई, १९६३ में यहां एक सैनिक की मृत्यु हुई थी जबरदस्ती मार्च के कारण।

ज.ज.ग. का सबसे बड़ा यात्री-पोत

जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे बड़ा १६,००० टन वज़न वाला, 'इवान

हाल ही में तामीर की गयी विराट रोस्टोक बन्दरगाह जो दुनिया भर के जहाज़ों का सँगम-स्थल है
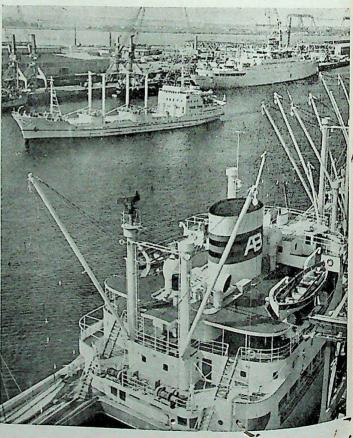
पश्चिमी जर्मनी के १४७ शरणागत

नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में, पश्चिमी जर्मनी और पश्चिम बर्लिन के १४७ नागरिकों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र के तीन प्रमुख शरणार्थी स्वागत केन्द्रों में शरण मांगी । इनमें से ७८ व्यक्ति एसे हैं जो बहुत पहले ज. ज. ग. छोड़कर पश्चिमी जर्मनी में रहने गये थे और जो अब भ्रम-मुक्त हो कर वहां से वापस लौट आये हैं । शरणार्थियों में ४६ युवक और १० परिवार (जिनके साथ ३० बच्चे हैं) भी शामिल हैं । कई वर्षों के बाद स्वदेश लौटने पर, ५८ वर्षीय नर्स, श्रीमती गैरटूड फ्यूकरटेन ने पश्चिमी जर्मनी से भाग आने का कारण बताते हुये कहा: "मैं वहां हवा में उड़ते एक विवश पत्ते के समान महसूस करती थी । अपने घर लौट आना मेरे लिये अनिवार्य था, क्योंकि यहां (ज.ज.ग. में) हरएक मनुष्य को यथोचित सम्मान मिलता है ।"

पं. जर्मनी के स्टूटगार्ट कस्बे से [illegible] हुये २३ वर्षीय युवक, वोल्फगां [illegible] ने कहा: [illegible] ऐसी [illegible] दुनिया में (अर्थात प. जर्मनी में) घुट रहे थे जहां हर मनुष्य की कीमत और इज्जत उसकी मोटर के आकार [illegible] कीमत से आंकी जाती है । सन् [illegible] में जब मैंने ज. ज. ग. छोड़ा था, मेरी खोपड़ी में तरह-तरह के सब्ज़बाग नाच रहे थे । लेकिन पश्चिमी जर्मनी में तीन साल से अधिक गुज़ारने के बाद मेरे वे सपने रेत की दीवार की तरह ढह गये हैं । . . ."

हैम्बर्ग के एक नये शरणार्थी ने पश्चिमी जर्मनी की दुर्दशा का उल्लेख करते हूये कहा: "पिछवाड़े के जिस कमरे में हम रहते थे, वह हमें इसलिए छोड़ना पड़ा क्योंकि हमारा बच्चा, मकान मालिकन के आराम में खलल डालता था । इस एक कमरे के लिये हम १३८ मार्क किराया देते थे हर महीने" (अर्थात् लगभग १५५ रुपये–सं.)

[illegible] की मांग भी बहुत बढ़ रही है, [illegible] में इस्तेमाल किये जाते [illegible] भारत, तुर्की आदि देश कई छोटे तारा-गृह आयात कर चुके हैं । सन् १९४५ से आज तक कार्ल ज़ाइस्स कारखाने से १०० ऐसे तारा-गृह निर्यात हो चुके हैं ।

१५ वर्ष पूर्व, जर्मन जनवादी गणतंत्र [illegible] स्थापना से लेकर अब तक, कार्ल ज़ाइस्स के सरकारी कारखाने के उत्पादन में छः गुणा वृद्धि हुई । अब यह कारखाना मेकनीकी प्रकाशीय यंत्र और इलेक्ट्रानिक उपकरण पैदा करने का दुनिया का सब से बड़ा कारखाना बन चुका है ।

नेपाल के शाह के साथ, ज. ज. ग. के विशेष प्रतिनिधि की मुलाकात

२७ अक्तूबर के दिन, नैपाल के शाह महेन्द्र से, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेष प्रतिनिधि श्री हर्बर्ट फिशर ने मुलाकात की । इस मुलाकात में श्री फिशर ने, ज. ज. ग. के राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त का पत्र शाह महेन्द्र को दिया । मुलाकात और बातचीत के दौरान, भारत स्थित ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के उप प्रमुख, श्री हांइज फेस्पर भी उपस्थित थे ।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विशेष प्रतिनिधि, श्री हर्बर्ट फिशर कई दिन तक नैपाल की राजधानी काठमाण्डू में रहे । इन दिनों में उन्होंने नैपाल के प्रधान मंत्री, श्री तुलसी गिरि; उप प्रधान मंत्री, श्री सूर्य बहादुर थापा; व्यापार एवं उद्योग मंत्री, श्री वेदानन्द झा और राज्य के कई अन्य सचिवों से भी मुलाकात की । इन मुलाकातों में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में दोनों राज्यों के समान दृष्टिकोण की चर्चा हुई, और दोनों देशों में पारस्परिक सहयोग की सहमति प्रकट की गयी ।

फ्रांको' नामक यात्री-पोत, ६ अक्तूबर के दिन विज़मर के मातियास-ट्जन पोत-निर्माण कारखाने से तैयार होकर निकला । यह जहाज़ सोवियत संघ के लिये बनाया गया है और इसमें ७५० यात्री सफर कर सकते हैं ।

उसी दिन रोस्टोक के वारनो जहाज बनाने के कारखाने में 'अनटोन साइफ़्को' नामक १०,३०० टन वाले पोत का निर्माण आरंभ हुआ । यह जहाज़, ज. ज. ग. के मालवाहक जहाजी बेड़े के १६ निर्माणनधीन पोतों में से सातवां पोत है । . . . माग्देबुर्ग के एक अन्य जहाज साज कारखाने में 'एडगर आन्द्र' नामक पोत बनकर तैयार हुआ । यह भी सोवियत संघ के लिये तैयार किया गया है । माग्देबुर्ग के जहाज साज कारखाने में एडगरआन्द्र ३००वां पोत है जो बन कर तैयार हुआ ।

ज़ाइस के विश्वप्रसिद्ध तारा-गृह

लैटविया जनतांत्रिक संघ की राजधानी रीगा में, जर्मन जनवादी गणतंत्र का विश्व प्रसिद्ध कार्ल ज़ाइस्स कारखाना एक बहुत बड़ा तारा-गृह (प्लेनेटेरियम) लगा रहा है । येना में स्थित यह कारखाना बड़े और छोटे तारा-गृह बनाने के लिये विश्व विख्यात है ।

इस वर्ष मास्को का तारा-गृह — जो वहां सन् १९२६ से खुला है — कार्ल ज़ाइस्स कारखाने से नये उपकरण प्राप्त करेगा । इसी तरह का उपकरण, श्रीलंका को भी निर्यात किया जा रहा है, जहां अगले वर्ष वहां की औद्योगिक–प्रदर्शनी में इसका (तारा-गृह का) उद्घाटन किया जायेगा ।

कार्ल ज़ाइस्स कारखाने के इन तारा-गृहों की मांग विश्वव्यापी है । आज तक ३५ बड़े तारा-गृह विभिन्न देशों को

को 'य[illegible] अफ्री[illegible]....

(पृष्ठ [illegible] का शेष)

के [illegible]कार के लिए संघर्ष में जुटे हैं, दक्षिण वीयतनाम के वीरजन जो धीरे धीरे अपने देश को स्वतंत्रता के निकट ला रहे हैं और समाजवाद के पथ पर अग्रसर अल्जीरिया --- ये सभी राष्ट्र [illegible] जर्मन राज्य को अपना मित्र समझते [illegible] और वह है जर्मन जनवादी गणतंत्र । हम उन सब लोगों के साथ हैं जो स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं और इसी लिये हम समस्त अफ्रीकियों के साथ हैं जिन्होंने --- वाल्टर सिसूलू, नेलसन मैंडेला तथा अन्य साथियों के प्राण बचाने के लिए संघर्ष जारी किया हुआ है ।

संयुक्त राष्ट्र संघ···

(पृष्ठ १४ का शेष)

करने की हर सम्भव चेष्टा करना । यही कारण है कि **जर्मन लीग** जर्मन जनवादी गणतंत्र द्वारा दिए गए उस सुझाव का दृढ़ता से समर्थन कर रही है जिसके अधीन दोनों जर्मन राज्यों को पूर्ण निशस्त्रीकरण करना चाहिए । (दुर्भाग्यवश इस सुझाव को बोन सरकार की ओर से नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है) । इस प्रस्ताव के अन्तर्गत जो अन्य सुझाव दिए गये हैं वे हैं :

तनाव शैथिल्य के प्रति नाटो तथा वारसा [illegible] सम्बद्ध राज्यों के बीच अनाक्रमण समझौता, [illegible] मध्य योरुप तथा संसार के अन्य भागों में [illegible] जर्मन राज्य समेत) परमाणु मुक्त क्षेत्रों की [illegible] पूर्ण [illegible]ी-करण । जर्मन लीग इन सब लक्ष्यों के प्रति अपने [illegible] में अनुकूल वातावरण देखती है [illegible] म जिसने अपने अस्तित्व के पिछले पन्द्रह वर्षों से अपनी विदेश नीति का आधार संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र के नियम तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बनाया हुआ है ।

वे संव राष्ट्र जो मानव जीवन और मानवता का मूल्य समझते हैं उन्हें चाहिए कि महायुद्ध के पश्चात शीत-युद्ध के इस काल को शांति काल में परिवर्तित करने की अपनी चेष्टाओं में कमी न आने दें और इस अवधि को तीसरे युद्ध का पूर्वकाल बनने से बचायें ।

शांति प्रिय देशों तथा जन साधारण की शक्ति में विश्वास रखते हुये **जर्मन लीग** अनुभव करती है कि संसार के महान शांतिप्रिय देश भारत की राजधानी में होने वाला **संयुक्त राष्ट्र विश्व संघ** का १६वां पूर्ण अधिवेशन, मास्को अणु परीक्षण निषेध द्वारा प्रस्तुत की गई प्रवृत्तियों से प्रेरणा लेगा । मानव जाति को एक सुदृढ़ तथा स्थायी शांति की ओर ले जाने के लिये हमें सब को इस संधि को [illegible] सहयोग देना चाहिये ।

निर्माण के सहयोगी

(पृष्ठ १७ का शेष)

भारतीय सहकारी समितियों के प्रतिनिधि ज. ज. ग. में

जर्मन जनवादी गणतंत्र के उप विदेश-मंत्री, श्री जार्ज स्टिबी ने भारतीय उप-भोक्ता सहकारी समितियों के एक प्रतिनिधि-मण्डल का स्वागत किया । इस प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व असम राज्य के सहकारी मंत्री, श्री डी. के बरूआ कर रहे हैं । मण्डल के अन्य सदस्यों में मैसूर राज्य के सहकारी मंत्री तथा लोकसभा के कई सदस्य भी शामिल हैं ।

इस मुलाकात में, यूरोप में शांति बनाये रखने की ज. ज. ग. की नीति, और भारत तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र की मित्रता से संबंधित प्रश्नों पर सविस्तार बातचीत हुयी । भारत का यह प्रतिनिधि-मण्डल, बर्लिन की राज्य सीमा देखने के लिये ब्रान्डेन-बुर्ग द्वार पर गया । यहां ड्यूटी पर तायनात सैनिक अफसर ने भारतीय मेहमानों को सीमा संबंधी प्रश्नों से अवगत किया । इसके बाद भारतीय प्रतिनिधियों ने वहां की अतिथि-रजिस्टर में अपने नाम लिखे ।

पावन पर्व ७ अक्तूबर···

(पृष्ठ ४ का शेष)

युद्ध की ज्वालाओं में स्वाहा करना चाहते हैं । वह यह भी जानती है कि अपने श्रम का सुफल वह जभी भोग सकती है जब दुनिया में अखंड और चिरस्थाई शांति बनी रहे । इसके लिये विभिन्न देशों की आपसी मैत्री, सहयोग और सद्भावना को सुदृढ़ करने तथ बढ़ाने की अत्यावश्कता है । इसी आवश्यकता को देखते हुये, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, शांति-पूर्ण सह-अस्तित्व को अपनी विदेश-नीति का आधार बनाया है । ज. ज. ग. की जनता, विश्व की समस्त शांतिप्रिय और साम्राज्यवाद विरोधी तथा उपनिवेशवाद-विरोधी जनता के साथ, कन्धे से कन्धा मिलाकर स्थाई विश्व शांति के राजमार्ग पर आगे बढ़ाना चाहती है, और अपने कड़े श्रम को सार्थक बनाना चाहती है ।

अपने जीवन के १६ वें वर्ष में पदार्पण करने के इस हर्ष भरे अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता एक बार फिर अपने इस पावन व्रत को दोहराती है कि वह यथावत विश्व के सभी जनगण के साथ --- विशेषकर अफ्रो-एशिया तथा लातीनी अमरीका के नवोदित, विकासशील राज्यों के साथ, हर प्रकार की सहायता, सहयोग और मित्रता के अपने दृढ़ संकल्प पर अडिग रहकर निरन्तर आगे बढ़ेगी । हमारी जनता का यह विश्वास है कि सभी शांतिप्रिय देश और विश्व की समस्त शांतिकामी जनता, जर्मन जनवादी गणतंत्र के इस पावन संकल्प में उसका साथ देगी ।

सचित्र समाचार

डॉ. मार्टिन लूथर किंग (दायें से दूसरे) जिनको इस साल नोबुल पुरस्कार मिला, हाल ही में ज. ज. ग. की यात्रा पर आये। अपने व्यस्त कार्यक्रम में यहां के एक बड़े गिरजा-घर में उन्होंने 'प्रार्थना' (मास) पढ़ी। डा. किंग अमरीकी नीग्रो जनता के विश्वविख्यात नेता हैं जिनके निर्भीक नेतृत्व में वहां की नीग्रो जनता नागरिक अधिकारों के लिये जबरदस्त संघर्ष कर रही है

१

२

१. ज. ज. ग. की राज्य-परिषद् का नया भव्य भवन जिसका उद्घाटन हुआ ज. ज. ग. की १५वीं वर्षगांठ के पुण्य-अवसर पर

२. अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में, नई दिल्ली स्थित, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के नये सूचना अधिकारी, श्री ब्रूनो मे के सम्मान में एक पार्टी दी गयी। चित्र में (दायें से बायें) हैं सर्वश्री के. सुब्रह्मण्यम् (मैनेजर पी. टी. आइ.) बी. मे, एल. आर. नायर (पी. आइ. बी. के मुख्य सूचना अधिकारी), आर. क्राउस (सहायक सूचना अधिकारी, ज.ज ग. व्यापार-दूतावास) और टी. एस. नीलकण्ठन (पी. टी. आइ. के विशेष संवाद-दाता)

३. इस वर्ष के सितम्बर मास में, ज. ज. ग. के स्कूलों का नया अध्ययन-सत्र शुरू हुआ। चित्र में एक स्कूल का दृश्य

३

सूचना पत्रिका

१२ वर्ष ६
दिसम्बर
१९६८

जर्मन
जनवादी
गणतंत्र

के व्यापार दूतावास का प्रकाशन

वर्ष ९
अंक १२ | २० दिसम्बर, १९६४

संकेत

मुख पृष्ठ : ज. ज. ग. में पर्यटन वर्ष प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ौती के साथ साथ वहाँ की पर्यटन-सुविधायें भी बढ़ती जा रही हैं। ज. ज. ग. नगरों और कस्बों में, सैलानियों को हर प्रकार की सुख सुविधा देने के लिये आधुनिक ढंग के नये होटल तथा रेस्त्राँ बनाये जा चुके हैं। ड्रेस्डेन में एक ऐसे ही भव्य होटल की तस्वीर आपके सामने है

अंतिम पृष्ठ : सौन्दर्य की एक जीवित प्रतिमा जन्म दे रही है सौन्दर्य की एक अन्य मूर्ति को

सूचना पत्रिका के किसी भी लेख या समाचार के प्रकाशन के लिये अनुमति अपेक्षित नहीं। प्रेस कटिंग पाकर हम आभारी होंगे। जर्मन जनवादी गणतन्त्र के व्यापार दूतावास, १२/३९, कौटिल्य मार्ग नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित और यूनाइटेड इण्डिया प्रेस, लिंक हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।

नवोदित, विकासशील राज्यों का दृढ़ समर्थक

माक्स सेरफिन | *ज. ज. ग. की मंत्रि-परिषद के उपाध्यक्ष, स्वास्थ्य मंत्री एवं जर्मन-दक्षिण पूर्वी एशिया संघ के प्रधान*

१५ वर्ष पूर्व, स्थापित होने के बाद से ही, जर्मन जनवादी गणतंत्र अन्य देशों के साथ मैत्रिपूर्ण संबंध जोड़ने का अनथक समर्थक रहा है। ज. ज. ग. के इस समर्थन का आधार रहा है समान अधिकार, एक दूसरे की प्रभुसत्ता के प्रति आदर, और अन्य राज्यों के आन्तरिक मामलों में दखल न देना। जर्मन इतिहास में, जर्मन जनवादी गणतंत्र पहला ऐसा राज्य है जिसने साम्राज्यवादी युद्धों की विगत परंपरा से सदा के लिये अपना नाता तोड़ा है, और सभी ऐसे देशों से मैत्री तथा सहयोग का रिश्ता जोड़ा है जो इसके लिये तैयार हैं।

इसी दृढ़ संकल्प के साथ, ज. ज. ग., एशिया तथा अफ्रीका के पराधीन देशों की जनता के मुक्ति-संग्राम का समर्थन करता है, और इसने नवोदित, विकासशील राज्यों के साथ निस्स्वार्थ संबंध जोड़ दिये हैं। ज. ज. ग. का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान निरन्तर बढ़ रहा है। इस बात का प्रमाण यह है कि दुनिया भर के अनेक देशों के साथ इसके राजनयिक, व्यापारिक और कोंसली संबंध हैं। उदाहरण के लिये अलजीरिया, घाना, गिनी, माली, संयुक्त अरब गणराज्य, इन्डोनेशिया, श्रीलंका, कम्बोदिया, फिनलैण्ड और बर्मा के साथ हमारे राज्य के कोंसली संबंध हैं। यूरोप के सबसे अधिक औद्योगिक देशों में ज. ज. ग. का पांचवां स्थान है, और दुनिया के लगभग सभी देशों के साथ इसके व्यापारिक संबंध हैं। अनेक देशों में हमारे देश के आधिकारिक व्यापार-दूतावास हैं। इस समय तक, ज. ज. ग. ने दुनिया के ४४ राज्यों में अपने व्यापार-दूतावास अथवा अपने "विदेश-व्यापार चैम्बर" के व्यापार-प्रतिनिधित्व स्थापित करने के लिये समझौते किये हैं। उदाहरण के लिये हमारे राज्य ने बेलजियम, डेनमार्क, फ़्रांस, यूनान, ग्रेटब्रिटेन, इटली, नेदरलैण्ड्स, नार्वे और तुर्की, ब्राज़िल, कोलम्बिया, लेबेनान, मराकश, सूडान, तूनिस और उरुगुए के साथ अपने संबंध स्थापित किये हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की सफल विदेश नीति और अच्छी अन्तर्राष्ट्रीय साख का प्रमुख कारण है नव-उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवादी दमन के खिलाफ इसका निरन्तर संघर्ष, और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा विश्व जनों में मैत्री का इसका दृढ़ समर्थन।

एशिया और अफ्रीका के नवोदित, विकासशील राज्यों के प्रति अपने संबंधों में, ज. ज. ग., सन् १९५५ में आयोजित, बाण्डुंग सम्मेलन में घोषित शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त से प्रेरणा पाता है और उस पर अमल करता है। . . . हमारा समाजवादी जर्मन राज्य, एशिया और अफ्रीका के इन नवोदित राज्यों के साथ समेकता तथा सहानुभूति व्यक्त करने में हमेशा पेश पेश रहा है और उसने इन राज्यों को तत्काल राजनयिक मान्यता प्रदान की है। इनकी नवार्जित स्वतन्त्रता को मज़बूत बनाने के लिये ज. ज. ग. ने, व्यापारिक और सांस्कृतिक क़रारों के माध्यम से, इनको हर प्रकार का सहयोग तथा सहायता दी है। राजनीतिक दृष्टि से भी, बहुत निर्णायक क्षणों में (अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में) हमारा राज्य इन नवोदित राज्यों का प्रबल समर्थक रहा है। इस सिलसिले में सुवेज़ नहर का झगड़ा, क्यूबा पर साम्राज्यवादी हमला और पश्चिम ईरियन की समस्या उदाहरण के लिये पेश किये जा सकते हैं। इन सब में सुदृढ़ समर्थन देने के लिये इन राज्यों ने ज.ज.ग. का आभार प्रदर्शन भी किया है।

ऐशिया और अफ़्रीका के लोग, अपने मित्रों और शत्रुओं को जानने पहचानने की पूरी क्षमता रखते हैं। आज भी हमारी दुनिया में कुछ ऐसे राज्य तथा देश हैं जो बदनाम तथा शोषक उपनिवेशवादी हकूमतों को, लुके छिपे और खुलेआम मदद देकर जिन्दा रखे हुये है। इतना ही नहीं, वे इन नवोदित, विकासशील राज्यों को आर्थिक रूप में स्वाधीन देखना नहीं बल्कि अपने आधीन रखना चाहते हैं। इसके बावजूद वे, इन राज्यों के शुभचिन्तक तथा मित्र होने का दम भरते हैं। इस संदर्भ में यह एक सर्वविदित बात है कि पश्चिमी जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्त वेरवोर्ड सरकार और पुर्तगाल के तानाशाह सालाज़ार के साथ, घनिष्ठतम संबंध बनाये हुये है। इसके विरुद्ध, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने, बहुत समय पहले, इन फासिस्त सरकारों से, अपने सभी संबंध तोड़ दिये

(शेष पृष्ठ २० पर)

विश्वप्रसिद्ध उपभोज्य वस्तुएँ

| गेरहार्ड केग्ल

जर्मन जनवादी गणतंत्र का उद्योग तथा विदेशी व्यापार, संसार के ७२ देशों के साथ किये गये व्यापार समझौतों की जिम्मेदारियों को पूरा करने में व्यस्त है। यह १९६४ के शरदकालीन लाइपजिक व्यापार मेले का परिणाम है, जिसमें यह बात पूर्णतः सिद्ध हो गई कि ज. ज. ग. की आर्थिक क्षमता में, विशेषकर उपभोगीय-वस्तु-उत्पादन के क्षेत्र में पिछले १५ वर्षों में जबरदस्त वृद्धि हुई है।

हाल ही में हुये उक्त मेले में, ५८ देशों के २३७,००० व्यक्ति सम्मिलित हुये। इस अवसर पर ये दर्शक, ५८ देशों के ६४१९ प्रदर्शकों द्वारा प्रदर्शित वस्तुओं में विश्वस्तर पर तुलना कर सकते थे। मेले में, १३ देशों को दिये गये स्वर्ण पदक यह सिद्ध करते हैं कि इस प्रदर्शन में उच्च कोटि की वस्तुएं सम्मिलित थीं।

अपने अस्तित्व के पिछले पंद्रह वर्षों में ज. ज. ग. और इस के उपभोज्य-वस्तु तथा हल्के उद्योग विश्व-मंडी की हर यथार्थ मांग को पूरा करने की भरपूर कोशिश करते आ रहे हैं। ज. ज. ग. को दिये गये स्वर्ण-पदक इन चेष्टाओं की सफलता के प्रमाण हैं।

विशेषरूप से वस्त्र उद्योग ने ––जो लाइपजिक मेले में प्रदर्शित एक शक्तिशाली शाखा थी––ग्राहकों को बहुत आकर्षित किया जिनमें पेरिस, लन्दन और ब्रुसेल्स के बड़े बड़े भण्डारों के प्रतिनिधि और पश्चिमी जर्मनी की बहुत बड़ी -बड़ी फर्मों के प्रबन्धक भी सम्मिलित थे।

संश्लिष्ट रेशों के उचित प्रयोग के द्वारा तैयार किए गये संश्लिष्ट कपड़ों को उपयोगी बना दिया गया है। तीव्र उत्पादक **मैलिमो तकनीक** बनाये जाने वाले वस्त्रों की मांग अब बहुत अर्थात १४ गुना बढ़ गयी है। इस नई तकनीक द्वारा बनाया गया कपड़ा जो लाइपजिक मेले में प्रदर्शित हुआ–– इसलिये उत्कृष्ट है क्योंकि यह, वायु तथा प्रकाश पारगम्यता को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त, मैलिमो के बनाये हुये सुन्दर अभिकल्पित ऐसे कपड़े भी प्रदर्शन में सम्मिलित थे जिनसे पहनावे के अलावा मेजपोश, बिस्तरों की चादरें तथा पाजामें आदि भी बनाये जाते हैं। इनके खिलते हुये रंगों, उपयुक्त सज्जा तथा शानदार बनावट ने इन्हें दर्शकों की भीड़ का आकर्षण केन्द्र बना दिया था।

वस्त्र-उद्योग में प्रगति के साथ साथ, ज. ज. ग. में बनी, कपड़े की मशीनों की मांग भी बढ़ती जा रही है। **मैलीपोल १६००** नामक नई मशीन को चला कर धागों के अंबार से, एक साथ ही कपड़े सीने, बुनने का प्रदर्शन, एक प्रभावपूर्ण विज्ञापन सिद्ध हुआ। ज. ज. ग. के इस आश्चर्यजनक वस्त्र यंत्र के लिये इस मशीन पर एक घंटे में मर्दाना कोटों के लिए ८४ मीटर मालिमो-वस्त्र तैयार किया जा सकता है।

घरेलू कच्चे-माल का शोधन कर के उससे अच्छा कपड़ा तैयार करने के भी दिलचस्प परिणाम निकले हैं। इनमें कमीजों और ब्लाउजों के लिए अत्यन्त परिष्कृत सूत तथा पी. ई. एफ. सूत से बनाये गये घरेलू कपड़े भी सम्मिलित हैं। "सिटाउ टेक्सटाइल काम्पलेक्स" द्वारा तैयार किये गये ये वस्त्र अत्यंत हल्के तथा क्रीज़-फ़्री होते हैं इन्हें लोहा करने की भी आवश्यकता नहीं होती। रंगीन, मोटे धागे से सुन्दर तथा प्रभावपूर्ण कपड़े तैयार कर लिये जाते हैं।

ज. ज. ग. में कच्चे माल से बनाये गये **बोडक्ले गलीचे** नये नमूनों और आकर्षक रंगों में प्रदर्शित किये गये थे। ज. ज. ग. के गलीचों की अधिक से अधिक बिक्री इनकी अपनी विशेषताओं की सूचक है। सीरिया, लेबनान, इराक, जोर्डन, कुवैत और संयुक्त अरब गणराज्य पिछले वर्षों से **होल्वमाण्ड** नामक गलीचों के स्थाई ग्राहक चले आ रहे हैं। केवल जोर्डन में ही वहां की चार प्रमुख मस्जिदों के फर्श, ज. ज. ग. के **केशान** तथा **ताइब्रिस-सूपर** गालीचों से सजे हुए हैं। **केशान-सूपर** शुद्ध ऊन के धागे से तैयार किया जाता है। ३४,०००० नेप प्रति मीटर, तथा ८ मिलीमीटर मोटाई वाला यह गालीचा अन्तर्राष्ट्रीय गालीचा मण्डी में उच्चकोटि का उत्पादन है। ये ५० विभिन्न डिजाइनों तथा विविध रंगों में उपलब्ध हैं।

नीले परिधान के ऊपर बिना बटन वाला ... बहुत सुन्दर लगता है

ज. ज. ग. संसार का सबसे बड़ा [illegible]रहायशी सामान (फर्नीचर) निर्यातक देश है। इसका कारण निस्संदेह नये नमूने और [illegible]त्पादन विधियां [illegible] जिनके आधार पर ज. [illegible] चौदह देशों को फर्नीचर निर्यात कर रहा है। [illegible] रहने के कमरों के फर्नीचर [illegible] अ[illegible] कमरों की सज्जा-विधि और [illegible]प। कमरे की दीवारों की सतह को विभिन्न डिज़इनों और नाना प्रकार के रंगों के प्लास्टिक का व्यापक प्रयोग करके कमरों की शोभा तथा रूप-सज्जा को द्विगुणित किया जाता है।

लैम्पों के नमूनों में नये और न टूटने वाले क्रिस्टल प्लास्टिक का इस्तेमाल एक नवीनतम प्रयोग है। इस पदार्थ को चीरना तथा छेदना संभव है, और दूसरे पदार्थों के साथ इसे गोंद से चिपकाया जा सकता है। इस तरह इस क्षेत्र में अधिक से अधिक नमूने तैयार करने की अनेक संभावनायें हैं।

४६ देशों को निर्यात किये जाने वाले ज. ज. ग. के विद्युत उपकरणों का आधार है इनका उच्च स्तर तथा इनकी रूप विविधता। बिजली से चलने वाले कुकर, शेव का सामान, लोहे इत्यादि अब बहुत आकार प्रकार में यहां उपलब्ध हैं। इन श्रेष्ठ सफलताओं का मूल कारण भी नवीन उत्पादन विधियां हैं।

एक दुकान में बौकले किस्म के वस्त्रों को प्रदर्शित किया गया है

तकनीकी क्षेत्र में एक अन्य सफलता प्रकाशीय तथा चलचित्रों के राष्ट्रीय उद्यम "वैब पैन्टेकान" द्वारा प्राप्त की गई है। इसकी नवीनतम उपलब्धि "मल्टीफोरु यू वी". है। यह अपनी प्रकार की एक मात्र विधि है जिस से, बिना अन्धेरे कमरे के, धुंधले अथवा कृतिम प्रकाश में फोटो की छाया (प्रिंट) तैयार की जा सकती है। इस विधि से फोटो-उत्पादन दुगुना हो सकता हैं।

पिछले लाइपज़िक शरद मेले में भी ज. ज. ग., कार्यालय मशीनों (टाइप रायटरों आदि) के निर्यात मे पांचवे नम्बर पर रहा। आफिस मशीनों की बिक्री वैसे हमारी प्रमुख व्यापार सफलता रही है। विद्युत-विधि युक्त उन आफिस मशीनों की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है जिनकी सहायता से गणना कार्य में अधिक से अधिक गति प्राप्त होना निश्चित है। एक कार्ड छेद संगणक **रोबोटरोन १००** के नाम से प्रस्तुत किया गया। इसकी सहायता से एक तकनीकी समस्या, जिस पर पहले चार महीने तक ५० विशेषज्ञ कार्य करते रहते थे, अब केवल ७० घंटों में हल हो जायेगी। ज. ज. ग. में कार्यालय मशीनों के निर्माण की चेष्टाएं मुख्यतः इस ओर है कि सम्पूर्ण गणना कार्य, मशीनों द्वारा होने लगे।

कमरे की सुन्दरता को चार चाँद लगाने वाला दीवार से सटा किताबों का शेल्फ
ज. ज. ग. की लाइसेन्सों की मांग उचित व्यापार का एक रुचिकर पहलू है। इस बार अन्य देशों के अतिरिक्त प्रमुख देशों ने भी, उन ज़ंग-रोधक रंगों को बनाने की अनुमति मांगी है जिन्हें प्रथमतः ज. ज. ग. में तैयार किया गया है। यह रंग जल में १२ महीने रहने पर भी खराब नहीं होते जो विश्व स्तर पर एक अनुपम चीज है।

ज. ज. ग. के उद्योग की प्रत्येक शाखा की स्पष्ट सफलताओं ने १९६४ के लाइपज़िक शरद मेले में आये कई यात्रियों को ज. ज. ग. के विदेशी व्यापार अधिकारियों के साथ दीर्घ अवधि करार करने के लिये प्रेरित किया।

राज्य और धर्म के सम्बन्ध

हेराल्ड बुइखनेर

जर्मन जनवादी गणतंत्र में आठ राष्ट्रीय प्रोटेस्टेन्ट चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च तथा २७ छोटे-छोटे धार्मिक समुदाय हैं। ज.ज.ग. के संविधान की धारा ४१ के अनुसार "प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्वाधीनता तथा अन्तःकरण की स्वतंत्रता के पूर्ण अधिकार" प्राप्त हैं। नागरिकों के इस मूल, लोकतंत्रीय अधिकार की रक्षा, राज्य अधिकारियों द्वारा की जाती है। ज. ज. ग. सरकार की नीति अपने समस्त नागरिकों के हितों तथा आवशयकताओं पर आधारित होती है। यह नीति राज्य तथा चर्च के पृथक्करण सिद्धान्त को ध्यान में रख कर बनाई जाती है।

व्यवहारिक रुप में राज्य तथा धार्मिक समुदायों के पारस्परिक सम्बन्ध क्या हैं, तथा इन का नई समाजवादी पद्धति से क्या सम्बन्ध है ?

ज. ज. ग. के अस्तित्व के पिछले पन्द्रह वर्षों में चर्च अधिकारियों को इस तथ्य का अनुभव तथा सन्तोष हो चुका है कि सरकार की नीति, शांति तथा मानवता के प्रति सद्भावना और प्रेम के आधार पर निश्चित की जाती है। इस अवबोध को उस "संयुक्त विज्ञप्ति" में, स्पष्टतः अभिव्यक्त किया गया है जिसे १९५८ में राष्ट्रीय प्रोटैस्टेन्ट चर्चों तथा सरकारी प्रतिनिधियों ने मिलकर जारी किया था। इसके अनुसारः "चर्च अपने विशेष उपायों तथा साधनों द्वारा जनता में शांति का प्रचार करता हैं और वह इस प्रकार ज. ज. ग. की सरकार के शांति प्रयत्नों से पूर्णतः सहमत है।"

अन्त में इस विज्ञप्ति में कहा गया है: "अपने विश्वास के अनुसार ईसाई लोग विधान के आधार पर अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। वे समाजवाद के विकास का आदर करते हैं तथा सामाजिक जीवन के शांति पूर्ण निर्माण में सहयोग देते हैं।"

एक नवीन सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में ईसाई नागरिकों के सृजनात्मक सहयोग की दृष्टि से, ज. ज. ग. में समाजवादी सरकार तथा ईसाई चर्चों के पारस्परिक सम्बन्धों में विकास के प्रति श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त की ४ अक्तूबर १९६० की "कार्यक्रम घोषणा" विशेष महत्व रखती है। इसके अनुसार :

"ईसाई मत तथा समाजवाद के मानववादी उद्देश्य एक दूसरे के प्रतिकूल नहीं हैं।" राज्य परिषद घोषणा के प्रति ३२,००० ईसाइयों ने लिखित रुप में सहमति प्रगट की। इन में ज. ज. ग. के कई हज़ार रोमन कैथोलिक नागरिक भी सम्मिलित थे।

एक प्रश्न जो विदेशों में बहुधा पूछा जाता है उसका सम्बन्ध ज. ज. ग. में युवा धर्मशास्त्रियों की प्रशिक्षण-सुविधाओं तथा चर्च की दान संस्थाओं के क्रिया-कलाप से है।

प्रोटेस्टेंट चर्च, ज. ज. ग. के विश्वविद्यालयों में छः धर्मशास्त्र विभाग चला रहा है। इनके अतिरिक्त प्रशिक्षण-केन्द्र भी हैं। युवा धर्मशास्त्रियों के प्रशिक्षण के लिये रोमन कैथोलिक चर्च १५ प्रशिक्षण केन्द्र चला रहा है। पादरियों की विचार गोष्ठियों, चर्च अध्यक्षों की सभाओं, चर्च संगीत समारोहों और युवा धर्म-शास्त्रियों के प्रशिक्षण आदि में अनुदान के लिये सरकार अपने बजट में ४० लाख मार्क प्रति वर्ष का प्रायोजन रखती है। इसके अतिरिक्त जर्मन जनवादी गणतंत्र में, चर्चों द्वारा चलाये जाने वाले सामाजिक संस्थाओं का एक जाल बिछा हुआ है। उदाहरण के लिये प्रोटैस्टेंट चर्च निम्नलिखित संस्थायें यहां चला रहा है : ५५ चिकित्सालय तथा आरोग्य-आश्रम जिनमें ९,०७१ स्थान हैं; अपाहजों के लिये ४,५८५ स्थान वाले ५९ आश्रम; वृद्धों तथा अशक्त लोगों के लिए ११,७२० बिस्तर वाले ३२८ गृह और १,०५२ सामुदायिक [illegible] केन्द्र, जिनमें १,५०३ नर्सें उनकी देखभाल करती हैं।

इसी प्रकार रोमन कैथोलिक चर्च नि[illegible]लिखित संस्थाओं को चलाता है :

३९ अस्पताल, जिनमें १२,३[illegible] स्थान हैं; वृद्धों के लिये ६,३७१ स्थान वाले ११३ गृह; और २,३२३ उपचारिकाओं की देख रेख में चलने वाले ३१० कल्याण केंद्र।

यह सूची किसी भी रुप में पूर्ण नहीं है। दोनों चर्चों द्वारा चलाई जाने वाली सामाजिक संस्थाओं तथा आश्रमों की संख्या लगभग २८५० है। इनमें [illegible] लाख से अधिक बिस्तरों का प्रबन्ध है। इन स्थानों पर ५६०० ईसाई भिक्षुनियाँ तथा २९०० उपचारिकायें कल्याण को समर्पित अपने कठिन परन्तु महान कर्तव्यों का पालन करती हैं। इन संस्थानों की क्रियाओं में सहायता के लिये सरकार ने ५० लाख ५० हजार मार्क (१ मार्क =१.१२ पै.) प्रतिवर्ष नियत कर रखे हैं।

यहां यह बता देना अनिवार्य है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार अपनी

लाइपज़िक में सन्त थामस का चर्च
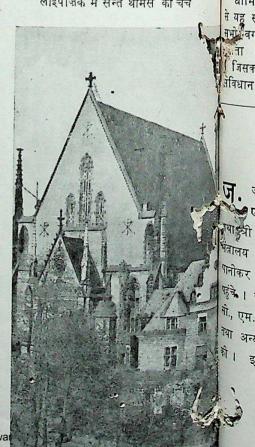
राज्य चर्च पृ... नीति के बावजूद कई लाख मार्क की स्वीकृति इस लिए देती ... चर्च अ... की वृत्तिकायें दी सक... ऐतिहासिक चर्चों तथा धार्मिक स्मारकों का संरक्षण ... सके ।

ज.ज.ग. में पांच ईसाई प्रकाशन गृह हैं । इन में लाइपजिक स्थित विख्यात रोमन कैथोलिक सैंट ब्युनो प्रकाशना गृह भी एक है । इनके द्वारा १९६१ में धार्मिक साहित्य पर ५०० पुस्तकें प्रकाशित की गयीं जिन की कुल छपाई संख्या ६० लाख ५० हजार प्रतियां थी । प्रोटैस्टेंट तथा रोमन कैथोलिक चर्चों द्वारा २६ समाचार पत्र तथा पत्रिकायें आदि प्रकाशित किये जाते हैं जिनकी संचार संख्या ३ लाख ५० हज़ार है । इस प्रकार के अनेक उदाहरण और दिये जा सकते हैं ।

ज.ज.ग. के प्रमुख चर्चों को धार्मिक सम्बन्ध स्थापित करने की विशिष्ट संभावनायें हैं । यहां के पादरी, चर्च अध्यक्ष तथा अन्य चर्च अधिकारी विदेशों में जा कर महासभाओं तथा विचार गोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं । बम्बई में हुई **यूकेरिस्ट महासभा** में ईसाई धर्म में विश्वास रखने वाले हमारे प्रतिनिधियों का भाग लेना इस तथ्य का प्रमाण है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र में चर्च को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता है तथा सरकार की हर संभव सहायता प्राप्त है ।

धार्मिक जीवन से सम्बन्धित इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ज. ज. ग. में सभी वर्गों तथा मतों के ईसाईयों को पूर्ण ...ता तथा बंधन-रहित स्वतंत्रता प्राप्त है जिसका संरक्षण ज. ज. ग. के समाजवादी संविधान द्वारा होता है ।
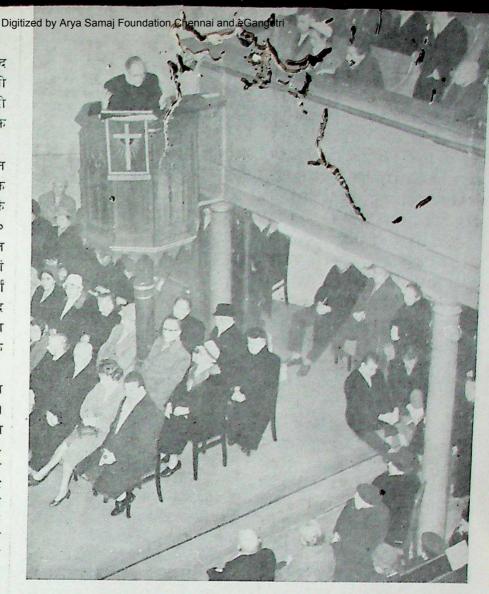
पश्चिमी जर्मनी के चर्चों के प्रधान, डा. नीमेल्लर, ज. ज. ग. के कार्ल-मार्क्स स्टाड्ट प्रान्त के एक गिरजे में धार्मिक भाषण कर रहे हैं

लाइपज़िक व्यापार मेले की अष्टशती

लाइपज़िक मेला एजेन्सी का प्रतिनिधि-मंडल नई-दिल्ली में

ज. ज. ग. की **लाइपजिक मेला एजेंसी** के निदेशकों, श्री एच. मेनर्ट तथा श्री ए. मार्कविट्स्क भारत के वाणिज्य मंत्रालय के प्रदर्शन-निदेशक, श्री पी. के. पानीकर के अतिथियों के रूप में नई दिल्ली पहुंचे । इन्होंने वाणिज्य मंत्रालय, एस. टी. सी., एम. टी. सी., एफ. आई. सी. सी. आई. तथा अन्य आर्थिक संस्थाओं से बात-चीत की । इस बात-चीत का विषय ज. ज. ग. का आगामी ८०० वर्षीय लाइपजिक जयन्ती मेला था जो २८ फरवरी १९६५ से ९ मार्च १९६५ तक लाइपजिक में होने वाला है । लाइपजिक जयन्ती मेला, ज. ज. ग. के समारोह प्रधान नगर लाइपजिक के इतिहास में महानतम प्रदर्शन होगा । आशा है कि भारतीय व्यापारियों का एक प्रतिनिधिमंडल इस जयन्ती मेले में भाग लेगा ।

लाइपजिक मेला एजन्सी के निदेशक वाणिज्य मन्त्री **श्री मनुभाई शाह** से मिले । नई दिल्ली में बात-चीत के बाद वे पहले बम्बई और फिर कलकत्ता और मद्रास गए ।

भारतीय पत्रकारों की एक प्रेस-कानफ्रेंस में बोलते हुए श्री मर्कविट्स्का ने कहा, "११६५ ई. की बात है । मीसेन के शासक, मार्ग्रेव ओत्तो ने लाइपजिक के लिए विशेष सुविधाओं की स्वीकृति दी और बाज़ार-मंडियां

लगाने का अधिकार भी प्रदान किया। मेले में भाग लेने वाले दूरवर्ती देशों में से लाइपजिक की स्थिति इतनी अनुकूल है कि यह नगर योरुप के उत्तर दक्षिण तथा पूर्व पश्चिम व्यापार मार्गों को मिलाता है और अपनी इस विशेषता के कारण लाइपजिक की मध्यकालीन मंडिया एक वास्तविक वस्तु प्रदर्शन का रूप धारण कर गई और १९वीं शताब्दी में एक विशिष्ट मेले के स्तर को पहुंचीं।

"पिछले एक सौ चालीस वर्षों से भारतीय वस्तुएं लाइपजिक मेलों के माध्यम से व्यापार क्षेत्र में उन्नति करती रही है। भारत के साथ हमारे व्यापारिक सम्बन्ध इससे भी पुराने हैं।

"२८ फरवरी, १९६५ को जयन्ती मेले का उद्घाटन होगा। इस बार मेले में भाग लेने वालों की संख्या अपूर्व होगी तथा महान सफलता की आशाएं हैं।

प्रदर्शन स्थान सम्बन्धी प्राप्त होने वाले प्रार्थना-पत्रों की संख्या को ध्यान में रखते हुए ७० देशों के प्रतिनिधित्व की सम्भावना है जब कि १९६४ के शरद मेले में ६४ देशों ने भाग लिया था।

९० देशों के व्यापारी, टैक्नीशियन, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री तथा सरकारी तथा गैर सरकारी प्रतिनिधिमंडल इस मेले में सम्मिलित होंगे। ३२५,००० वर्ग मीटर के क्षेत्र में प्रदर्शन होगा। यह एक नया रेकार्ड है। ११०,००० वर्ग मीटर से अधिक स्थान अर्थात् कुल प्रदर्शन स्थान का एक तिहाई भाग विदेशों, पश्चिम जर्मनी तथा पश्चिम बर्लिन ने बुक करवा लिया है। केवल सोवियत संघ, पोलैंड, चैकोस्लावाकिया, हंगरी, बल्गारिया, रूमानिया, युगोस्लाविया, चीन तथा क्यूबा इत्यादि समाजवादी देशों के प्रदर्शन स्थान का क्षेत्रफल ही ४०,००० वर्ग मीटर होगा। योरुप के सभी औद्योगिक देशों तथा अनेक दूरवर्ती देशों का प्रतिनिधित्व इस मेले में होगा। संक्षिप्त रूप से यूं कहा जा सकता है कि पांचों महाद्वीपों से सम्बंधित देश इस प्रदर्शन में भाग लेंगे।

"**भारत गणराज्य** का भी एक प्रभावपूर्ण प्रतिनिधित्व जयन्ती मेले में होगा। प्रदर्शन स्थान के १६०० वर्ग मीटर बुक करवाए गए हैं और इस प्रकार, लाइपजिक मेले में भाग लेने वाले दूरवर्ती देशों में से भारत सबसे बड़ा प्रदर्शक देश होगा। यहां हुई प्रारंभिक बात-चीत से यह स्पष्ट है कि भारतीय प्रदर्शक, मेले में ऐसी वस्तुओं का प्रदर्शन करेंगे जो औद्योगिक क्षेत्र में भारत के उच्च स्तर का प्रमाण होंगे।

"मैं समझता हूं कि यह प्रदर्शन भारत के हित में अत्यन्त उचित है। इसकी पुष्टि में यह भी कहा जा सकता है कि एक तो निर्यात के प्रति यह लाभदायक सिद्ध होगा। अपनी वर्तमान तथा भावी औद्योगिक सम्पन्नता का यथार्थ सर्वेक्षण इस दृष्टि से हितकर हो सकता है। अपने माल के लिए नई मंडिया पैदा करना और उनके समन्वेष का यही उचित आधार है।

दूसरी बात यह है कि आपके नवविकसित उद्योगों, जैसे इंजीनियरिंग तथा विद्युत-तकनीकी उद्योग के प्रतिनिधि प्रदर्शन द्वारा आप इस मेले में अपने प्रत्याशित खरीदार बना सकते हैं। लाइपजिक विश्व व्यापार के मिलन स्थान के रूप में कई युगों से विश्व विख्यात है। तीसरी बात यह है कि लाइपजिक मेले में पूर्व और पश्चिम के उद्योग प्रधान देशों तथा विश्व व्यापी वस्तुओं के प्रदर्शन से आपके टैक्नीशियनों तथा इंजीनियरों को अध्ययन का अवसर मिलेगा।

"प्रदर्शन क्षेत्र में सबसे अधिक क्षेत्र स्थान स्वयं ज. ज. ग. ने लिया है। इस प्रदर्शन में विशेषतः निर्यात उद्यम की असाधारण चेष्टाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया जायगा जो निस्संदेह विशिष्ट हैं।

"प्रदर्शन में भाग लेने वाले अत्यंत महत्वपूर्ण देशों में से मैं सोवियत संघ का उल्लेख आवश्यक समझता हूं। पश्चिमी जर्मनी और ब्रिटेन भी यहां अपनी विभिन्न औद्योगिक क्रियाओं का सामान्य सर्वेक्षण प्रस्तुत करेंगे।

"जयन्ती उत्सव के साथ साथ अनेक सभा सम्मेलनों तथा गोष्ठियों का आयोजन भी किया गया है। इनमें सम्मिलित हैं: "विश्व की दो आर्थिक प्रणालियों से सम्बंधित देशों के बीच आर्थिक सहयोग की मूल समस्याएं" के विषय पर दो दिनों का एक सम्मेलन, और एक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद,

"उपभोगीय तथा तकनीकी वस्तुओं के इस मेले में प्रदर्शित सर्वोत्तम वस्तुओं के निर्माताओं को स्वर्णपदकों तथा सनदों द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा।"

दिल्ली विश्व शांति सम्मेलन

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की जन्म वर्षगांठ पर—अर्थात १४ नवम्बर को, भारत की राजधानी दिल्ली में विश्व शांति **एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग सम्मेलन** का चार दिवसीय आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में दुनिया के लगभग सभी देशों ने अपने प्रतिनिधि भेजे थे।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधि-मण्डल का नेतृत्व कर रही थीं, जर्मन जनवादी गणतंत्र की शांति परिषद की उपाध्यक्ष **श्रीमती जी. कूकोफ**... और प्रतिनिधि-मण्डल के अन्य सदस्य थे: 'लिबरल डैमोक्रेटिक पार्टी' के संसद सदस्य तथा क्वेडलिनबुर्ग के अधीक्षक, डा. एच. स्पेनकर; जर्मन जनवादी गणतंत्र शांति परिषद के सदस्य एवं विधि तथा राजनीति की जर्मन अकादमी में अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध के प्राध्यापक, डा. जी. हान; और हाल्ले विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्राध्यापक तथा क्रिसिचयन डैमक्रेटिक यूनियन के सदस्य, प्रोफेसर जी. राइनटान्स।

विश्व शांति सम्मेलन में भाषण देते हुये श्रीमती जी. कूकोफ्फ ने कहा: "हम सब लोग शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त के सूत्र से बंधे हुये हैं। प्रिय भारतीय मित्रो, इस सिद्धान्त के मूल विचार के प्रतिपादक आपके महान और ज्ञानवान् राजनीतिज्ञ जवाहरलाल नेहरू थे। हाल ही में आपके राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन भी, इस सिद्धान्त के महत्व पर प्रकाश डाल चुके हैं। हमारा राज्य जर्मनी का प्रथम शांति प्रिय राज्य है, और इसकी घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय नीति के आधार स्तम्भ हैं: विश्वशांति को सुरक्षित रखना और सृजनात्मक अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में शामिल होना। हमारे राज्य के हर पीढ़ी और वर्ग के दिमाग में शान्ति की कामना कूट कूट कर भरी हुई है। इसी लिये यहां आये हुये हमारे देश के प्रतिनिधि-मण्डल में विभिन्न पार्टियों तथा वृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य शामिल हैं। इन सदस्यों में एक डाक्टर है, दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय

स...ज. ज. ग. का प्रतिनिधि मण्डल

...तन का विशेषज्ञ, तीसरा शिक्षाशास्त्री है, और चौथा अर्थशास्त्री । हमें इस बात का गौरव भी है और सन्तोष भी कि जर्मन जनवादी गणतंत्र की जनता तथा सरकार मन, वचन और कर्म से विश्वशांति के लिये हर संभव प्रयत्न करती है ।

"पिछले विनाशकारी और भंयकर युद्ध के कटु अनुभव ने हमें गंभीरता से सोचने के लिये चेतना दी, और हमें अपने आत्म-निर्णय के अधिकार का अच्छा उपयोग करने की शिक्षा दी । आखिरकार, बड़ी कठिनाइयों के बाद, हम जर्मन भूमि पर प्रथम शांतिप्रिय जर्मन राज्य (अर्थात् ज. ज. ग. — सं.) की बुनियाद डालने में सफल हुये । अब हम इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि अब जर्मन भूमि से तीसरे, सर्वनाशी युद्ध की शुरूआत न हो । यही कारण है कि भारतीय गणराज्य की तरह हमारा जर्मन जनवादी गणतन्त्र भी उन प्रथम राज्यों में से एक है जिसने मास्को की **आंशिक अणु-परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि** पर हस्ताक्षर किये । हमारे दोनों देशों ने इस सन्धि का, स्थाई शांति की दिशा में प्रथम कदम के रूप में स्वागत किया, और भविष्य में सभी तरह के अणु-परीक्षणों पर रोक लगा देने की मांग की । हमारी सरकार, ...द तथा सारी जनता, लगातार ऐसे सुझाव पेश कर रही है जिन पर अमल करने से, दोनों जर्मन राज्य, पूर्ण और आम निःशस्त्रीकरण के लक्ष्य तक पहुंचने में अपना योगदान दे सकेंगे ।

राष्ट्रपति राधाकृष्णन, ज.ज.ग. की 'जन मैत्री लीग' के अध्यक्ष, डा. पाल वाण्डल और ज.ज.ग. के शांति प्रतिनिधि-मण्डल के सचिव, डा. हान से हाथ मिला रहे हैं

"अपनी जनता, अपने पड़ोसी देशों और विश्व की समस्त जनता तथा राज्यों के प्रति हमारा यह कर्त्तव्य है कि हमें यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दें कि हमें हर संभव तरीके से, पश्चिम जर्मन राज्य के, बाधा डालने वाले उन प्रयत्नों को रोकना चाहिये जो वह तनाव घटाने, निःशस्त्रीकरण और सभी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शांति पूर्ण तरीकों से हल करने में डालता रहता है । इस तथ्य से आंखें बन्द नहीं की जा सकतीं कि पश्चिमी जर्मनी के प्रतिशोध चाहने वाले तत्व अब अणु शस्त्रास्त्रों

पर अधिकार प्राप्त करने के लिये अपने सर धड़ की बाजी लगाये हुये हैं ।"
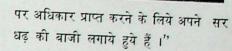
इसके विरुद्ध हमने (अर्थात् जर्मन जनवादी गणतंत्र ने —सं.) बार-बार ऐसे सुझाव पेश किये हैं, जिन पर अमल करने से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव घट जायेगा और दोनों जर्मन राज्यों के आपसी संबंध सामान्य हो जायेंगे । इन प्रयत्नों को हम बराबर जारी रखेंगे ।... हम किस सवाल या मसले पर बातचीत शुरू करें, यह इतना आवश्यक नहीं है जितना कि बातचीत शुरू करना । क्योंकि अणु शस्त्रों को हस्तगत करने के बाद पश्चिमी जर्मनी बातचीत के लिये तैयार नहीं होगा । ऐसी हालत में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बहुत बड़े संकट में घिर जायेगा ।... निस्सन्देह यह एक बहुत बड़ा खतरा है, लेकिन समस्त शांति शक्तियों और जनता की एकता से इस खतरे को खत्म किया जा सकता है ।...

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल और विश्वशांति की सुरक्षा के लिये समय-समय पर कई, ठोस सुझाव दिये हैं । इनमें से सबसे महत्व-पूर्ण सुझाव है जर्मनी की वर्तमान सीमाओं को स्वीकार करना । इस संबंध में श्री उल्ब्रिख्त का यह कथन उल्लेखनीय है कि शांति संधि पर दस्तखत करना शांति की सबसे अच्छी गारंटी है, और इससे यूरोप की सुरक्षा निश्चित तथा निर्णायक रूप धारण कर लेगी ।..."

शांतिवन में स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की समाधि पर, ज.ज.ग. के शांति-प्रतिनिधि-मण्डल की नेत्री श्रीमती जी. कूकोफ्फ (दायें से पांचवीं) फूल चढ़ा रही हैं

"हमारा शांति सिद्धान्त, जर्मन राज्यों की मान्यता और आत्म निर्णय के अधिकार को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान देता है। अपने गणतंत्र में हमने शांति को स्थाई स्थान दिया है, और हम इसका त्याग नही करेंगे।

"यदि यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमरीका के राज्य, दोनों जर्मन राज्यों के साथ सामान्य संबंध स्थापित करें, उस स्थिति में पश्चिमी जर्मनी, वर्तमान वास्तविकताओं को बहुत जल्दी समझने तथा स्वीकार करने पर विवश होगा।... इस समय जब कि हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारियां आन पड़ी हैं, मुझे वह भंयकर समय और घटना याद आई है जब हिटलर तथा उसकी जंगबाज नीति का विरोध करने के लिये नाजियों की अदालत ने, हमारे ६८ साथियों को—जिनमें मेरे पति और मैं भी सम्मिलित थे—मौत की सजा दी। उनमें से केवल हम ३ साथी यह दिन देखने के लिये जीवित रहे हैं। मौत के बहुत निकट होने पर भी हमने जीवन की अमरता के सपने संजोये थे,... और हमें इस बात में अटल विश्वास था कि अन्त में फासिस्टवाद की पराजय और स्थाई शांति की जीत अवश्य होगी।

"इस विचार से हमारे व्यक्तिगत दुख दर्द कुछ कम हो चुके हैं कि हमने जाति भेद, एक दूसरे के प्रति घृणा को खत्म करने और समस्त जनगण में सद्भावना तथा मित्रता पैदा करने में यथा शक्ति योगदान दिया है। मौत के पंजे में पड़े हुये भी हमने एक ऐसे जर्मन राज्य का स्वप्न देखा था जो शांति-प्रिय हो और जो अपनी सम्पूर्ण शक्ति से सामाज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़े जाने वाले राष्ट्र मुक्ति संग्राम का साथ दे। जर्मन जनवादी गणतंत्र उसी स्वप्न का साकार रूप है। जर्मन भूमि पर स्थित इस प्रथम शांतिप्रिय जर्मन राज्य ने हिटलर के फासिस्टवाद के खिलाफ डट कर लड़नेवाले शहीदों की भव्य परम्परा विरासत में पाई है।"

नेहरु के जन्म दिन पर बर्लिन में प्रदर्शनी

१३ नवम्बर के दिन, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में, ज. ज. ग. की मंत्रि परिषद् के उपाध्यक्ष, एवं जर्मन-दक्षिण-पूर्वी एशिया संघ के प्रधान श्री मैक्स सैफरित ने **भारत: कल और आज** नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह प्रदर्शनी, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की ७५वीं वर्षगांठ, और भारत तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच सरकारी व्यापार-संबंधों की प्रथम दशक पूर्ति के उपलक्ष्य में आयोजित की गयी थी। इस प्रदर्शनी के समायोजक थे। जर्मन जनवादी गणतंत्र का सांस्कृतिक मंत्रालय, मैत्री संघ, एवं ज. ज. ग. में रहने वाले भारतवासियों की **भारतीय नागरिक संस्था**। प्रदर्शनी को सफल बनाने के लिये, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने संयोजकों को लगभग १०० फोटो उपलब्ध किये थे।

ज.ज.ग. के अखबारों द्वारा स्वर्गीय नेहरू को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की पुण्य-स्मृति में, उनकी ७५वीं वर्षगांठ पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र के सभी सुप्रसिद्ध पत्रों-पत्रिकाओं ने विशेष लेख छापकर, फिर एक बार उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। विश्व विख्यात अखबार **नुइस डूइत्श-लैण्ड** ने अपने एक अग्रलेख में, भारत के इस महान कर्मयोगी और विश्व के अग्र-गण्य राजनीतिज्ञ के संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला। इस लेख का शीर्षक है "युद्ध और उपनिवेशवाद का विरोधी योद्धा"। लेख में लिखा गया है कि "अपने जीवन के लगभग बीस वर्ष उन्होंने जेलों में काटे। लेकिन न तो जेल की कठोर दीवारें और न अन्य प्रकार के दमन ही स्वतंत्रता प्राप्ति के उनके दृढ़ संकल्प को तोड़ सके। (भारत के स्वाधीन होने के बाद) स्व. नेहरू ने जिस तटस्थ नीति का प्रतिपादन और नेतृत्व किया, वह युद्ध और शांति, घृणित उपनिवेशवादी शासन को खत्म करने और विश्व जनों तथा राज्यों के बीच शांति पूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के सवालों पर निष्क्रियता अथवा अकर्मण्यता की नीति नहीं थी। स्व. नेहरू पूर्ण निःशस्त्रीकरण, अणुमुक्त क्षेत्रों की स्थापना, और सभी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को शांतिपूर्ण तरीकों से सुलझाने के लिये जबरदस्त संघर्ष करते रहे। . . ." आगे चलकर इस अग्रलेख में लिखा गया है कि "पश्चिमी जर्मनी के सैनिकवादी और प्रतिशोधवादी तत्व, श्री जवाहरलाल नेहरू की, जर्मन समस्या संबंधी वास्तविकता पर आधारित उस घोषणा से बौखला उठे थे जो उन्होंने सन् १९६१ में बेलग्राद में आयोजित तटस्थ देशों के सम्मेलन में की थी। इस घोषणा में स्व. नेहरू ने, दो जर्मन राज्यों के अस्तित्व की वास्तविकता पर विशेष बल दिया था। अपनी नीति में उन्होंने हमेशा इस बात का समर्थन किया कि जर्मनी का एकीकरण शांतिपूर्ण तरीकों से ही संभव है। . . . ."
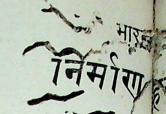
स्व. जवाहरलाल नेहरू की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनकी स्मृति में जर्मन जनवादी गणतंत्र के एक और अखबार, द्वैमासिक **जर्मन फारेन पालिसी** ने निम्न शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की: "वह, उपनिवेशवाद के खिलाफ और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के हक में संघर्ष करने वाले महान नेताओं में से एक थे। . . ."

इस पत्र ने, नेहरू के जीवन के तीन युगों को आठ पृष्ठों में चित्रों के साथ प्रकाशित किया है। उनके इस जीवन-चरित को अध्यायों में विभक्त किया गया है, और ये विभिन्न अध्याय साम्राज्यवाद तथा फासिस्तवाद के खिलाफ उनके संघर्ष, राष्ट्रमुक्ति आन्दोलन

...सहयोगी

...में उनके बहुमुखी नेतृत्व, भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के बाद औद्योगीकरण तथा भूमि-सुधार के प्रबल प्रचारक, शांति संघर्ष के अनथक योद्धा, और जातिवाद के जबरदस्त विरोधी के उनके विभिन्न रूपों को चित्रित करते हैं । . . . उक्त पत्र के शब्दों में "भारतीय गणराज्य के प्रथम प्रधानमंत्री (जो इस पद पर जीवन के अन्तिम दिन तक आसीन रहे) नये भारत का नेतृत्व करने वाले सब से योग्य और सबसे सम्मानित व्यक्ति थे । . . . ."

उन के भाषणों तथा रचनाओं ने भारतवासियों को विश्व इतिहास का सही और सच्चा स्वरूप देखने का ज्ञान दिया (जिसको साम्राज्यवादियों ने तोड़-मरोड़ कर पेश किया था) उनकी राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ तथा विकसित किया, और उनको औद्योगीकरण एवं सामाजिक परिवर्तनों के महत्वपूर्ण कार्यों से अवगत किया ।

विश्व रंगमंच पर भारतवर्ष की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुये **जर्मन फारेन पालिसी** ने अपने लेख में लिखा है: "स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने, विश्व में, भारत को एक प्रबल शांति-शक्ति के रूप में स्थापित किया । वे संयुक्त राष्ट्र संघ और इसके प्रपत्र (चार्टर) के आदर्शों तथा सिद्धान्तों के पूर्ण समर्थक थे ।"

श्री नेहरू, **पंचशील**—अर्थात् शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धान्तों के दो जनकों और प्रवर्तकों में से एक थे (दूसरे थे इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण—सं.) । इस तथ्य का उल्लेख करने के बाद द्वैमासिक ने लिखा है: "एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के लाखों, करोड़ों लोगों के लिये जवाहरलाल नेहरू उन कतिपय महान नेताओं में से एक थे जो उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्षरत और राष्ट्रमुक्ति आन्दोलन के प्रबल समर्थक थे । वे यह जानते थे, और इसलिए वे इस बात को बार-बार दोहराते थे कि जिस जनता के लिये वे जीवित रहे और काम किया, उसी जनता को स्वयं अपनी प्रगति में निर्णायक योगदान देना है ।"

अपने लेख का अन्त करते हुये, **जर्मन फारेन पालिसी** ने लिखा है: "प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री की सरकार के आधीन, भारतीय गणराज्य, पूर्ववत, दृढ़ता से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और विश्व की समस्त जनता के साथ मैत्री की नीति पर चल रहा है ।"

जर्मन जनवादी गणतंत्र की **लिबरल डैमोक्रेटिक पार्टी** के मुखपत्र **डेर मोरगन** ने, नई दिल्ली में आयोजित **विश्व शांति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग सम्मेलन** के उपलक्ष्य में लिखे गये अपने एक विशेष लेख में स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की शांति नीति के प्रति श्रद्धा मिश्रित सराहना व्यक्त की है । अखबार ने लिखा है :

महाराष्ट्र चैम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष, श्री हीराचन्द लालचन्द का स्वागत करते हुये ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास की बम्बई शाखा के प्रमुख, श्री एच. सोखेसे । बम्बई में "लाइपजिक मेला : चित्रों में" नामक प्रदर्शनी के उद्घाटन पर लिया गया चित्र

"...भूमि महाद्वीपों के ७५ से अधिक देशों के प्रतिनिधि, नई दिल्ली में आयोजित होने वाले 'शांति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विश्व सम्मेलन' में इस महान राजनीतिज्ञ को श्रद्धा सहित स्मरण करेंगे उस प्रशस्त पथ पर आगे बढ़कर जिस पथ पर उन्होंने मृत्युपर्यन्त अन्तर्राष्ट्रीय नीति को आगे बढ़ाने में सहायता की थी । यह मार्ग है शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सद्भावना का मार्ग...। भारत की आजादी को मजबूत बनाने में उन्होंने अपना सारा बल लगा दिया । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उन्होंने सक्रिय तटस्थ नीति को अपना लिया । बांडुंग सम्मेलन, बेलग्राद के तटस्थ राज्यों के सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र संघ में उनके राजनीतिक नेतृत्व का प्रभाव सारी दुनिया पर पड़ा...।

श्री बोट्टकर का दक्षिण-भारत का दौरा

भारत स्थित, जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार-दूतावास के प्रमुख श्री कुर्ट बोट्टकर, नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में, दक्षिण भारत का दौरा समाप्त करके नई दिल्ली वापस लौटे । अपनी इस यात्रा में श्री बोट्टकर ने विशेषकर उन औद्योगिक उद्यमों को देखा जिनमें जर्मन जनवादी गणतंत्र की मशीनें तथा यन्त्र लगे हुये हैं । इन मशीनों तथा यन्त्रों की उद्योगपतियों तथा विशेषज्ञों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी । श्री बोट्टकर ने, नेवेली बिजलीघर भी देखा जो सोवियत संघ की सहायता से निर्मित हुआ है । यह पूरे भारत का एक ही ऐसा बिजलीघर है जिस में लिग्नाइट (भूरा कोयला) इस्तेमाल होता है बिजली उत्पादन के लिये ।

मद्रास में अपने आवास के दिनों में, श्री कुर्ट बोट्टकर ने मद्रास सरकार के कई अधिकारियों और उद्योगपतियों से बातचीत की । इसके बाद, ज. ज. ग. के व्यापार-दूतावास के प्रमुख, पाण्डीचरी के दौरे पर रवाना हुये, जहां पाण्डीचरी के राजपाल तथा अन्य अधिकारियों ने उनका स्वागत किया । वहां, पाण्डीचरी वाणिज्य चैम्बर ने उनके सम्मान में एक स्वागत समारोह का आयोजन भी किया ।

दक्षिण भारत का दौरा समाप्त करने के बाद श्री बोट्टकर ने, मद्रास की एक प्रेस कानफ्रेन्स में अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया । प्रश्नों का उत्तर देते हुये उन्होंने, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के पारस्परिक मैत्रिपूर्ण संबंधों और आर्थिक सहयोग पर, विशेष बल दिया ।
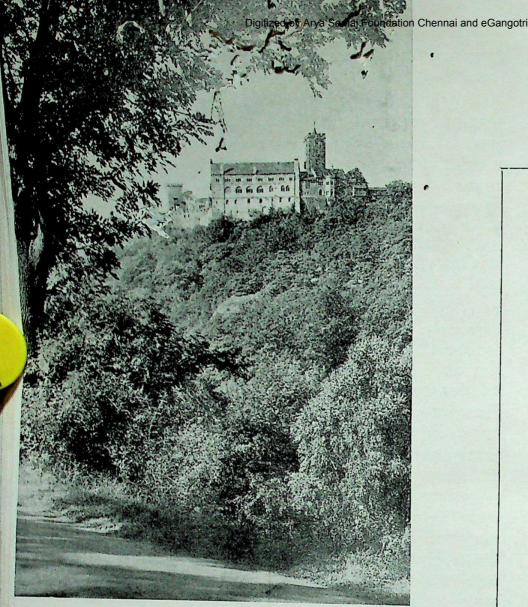
यह है वार्टबुर्ग का ऐतिहासिक महल, जहां कई शताब्दियों पहले, मार्टिन लूथर ने, ईसाइयों के सबसे बड़े धर्म ग्रन्थ "न्यू टेस्टेमेण्ट" का जर्मन भाषा में अनुवाद किया था

सैला

यात्रियों तथा घुमक्कड़ों, मनचले बटोहि[ों] तथा रंगीले चरवाहों और साहसि[क] यायावरों की यात्रा-कथायें अब केवल अतीत की एक याद बन कर रह गई है। पर हर काल की अपनी एक रोमानी-दुनिया होती है, अपना एक विशेष आकार लिये और हमारे युग की यह विशेष रोमानी दुनिया है पर्यटन जिसने आज एक उद्योग का रूप धारण कर लिया है। हर साल संसार के लाखों लोग प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिये देश, विदेश घूमते पर्वतों की चढ़ाई करते हैं, वनों में घूमते और लहलहाते खेत खलिहानों को देख रोमांचित हो उठते हैं। वे संसार की लेने के लिये अपने घरों से चल पड़ते हैं और पर्यटन करने के बाद स्वदेश लौट कर अपने अलबम में कुछ चित्र चिपका देते हैं—और मधुर यादों में रम जाते हैं।

"चक्की चालक के लिये प्रसन्नता है घूमना" इस पंक्ति से एक पुराना जर्मन लोकगीत आरम्भ होता है। परन्तु आज, ज. ज. ग. केवल चक्की चलाने वाले ही घूमने के रसिया नहीं हैं, बल्कि प्रति वर्ष लाखों लोग सैर सपाटे और पर्यटन से अपना मन बहलाते हैं। जर्मनी के एल्बे और ओदर नदियों के प्रदेश (अर्थात जर्मन जनवादी गणतंत्र–स[ं] सैलानियों का स्वर्ग कहलाने का अधिकार

बर्लिन में सुन्दर तथा स्वच्छ झील आपको ऐसे जगह जगह पर फैले हुए मिलेंगे जो सैलानियों और जल-क्रीड़ा प्रेमियों का मन हर लेते हैं

शीतकालीन-क्रीड़ायें ... है। पर्वतों पर लिफ्ट ... बीजनटाल' और 'फ...

...स्वर्ग

...। इस अंचल की धरती, यहां के लोगों ...अपनी धरती है और इसके पर्यटन में ...लानी को अपार आनन्द का अनुभव प्राप्त ...ता है। इस देश की यात्रा विशेष आनन्द- ...द इसलिये है क्योंकि सैलानी यहां आजाद ...म सकता है, वह खुशहाल तथा दिलदार ...गों से मिल सकता है, जिनका भविष्य ...रक्षित है।

पर्यटक यहां, चलकर आये अथवा ...न द्वारा, विमान से उड़कर आये या मोटर ...ड़ी से, वह हमेशा यही अनुभव करेगा कि ...सकी यात्रा सार्थक हुई। उसके मानसपट ...र सदा के लिए यहां की अनुभूतियां और ...हां के सुन्दर दृश्य अंकित होकर रह जायेंगे।

इस देश में, हर एक सैलानी की ...चि के अनुकूल सामग्री है। थूरिनजिया ...या हार्स के वन तथा पर्वत, पर्वतारोहण ...लिये एल्बज़ांड्स्टाइन के पहाड़, नौका ...हार के लिये एल्बे, ज़ाले, ओदर, तथा ...सी जैसी नदियां, और बर्लिन तथा मेक- ...लनबुर्ग के मनोहर सरोवर आदि सैलानी ...मन वहलाने के लिये तैयार हैं। सैलानी ...हे समतल मैदानों में घूमे अथवा सागर ...पर विचरण करे, या फिर छोटे-छोटे ...कस्बों की खाक छाने, वह कभी भी ...देश की अनुभूतियों और सुखद स्मृतियों ...भूल नहीं सकेगा।
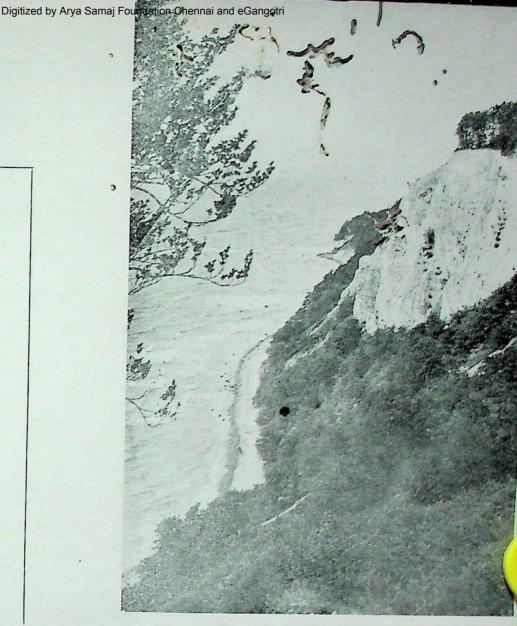
ये हैं रूएगेन द्वीप की सफेद चाक-पहाड़ियाँ जो छुट्टियाँ मनाने का एक लोकप्रिय स्थल है। इन पहाड़ियों के ये श्वेत शृंग, दूर बाल्टिक सागर से देखे जा सकते हैं

...हैं। हिमाच्छादित ...हुंचा देते हैं। 'औबर- ...क्रीड़ा तथा स्वास्थ्य
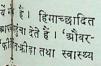
एल्बे नदी दर्शकों की आँखों और छायाकारों के कैमरों के लिये एक आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करती है, जो सैक्सन-स्विटज़रलैण्ड की इस चट्टान से देखी जा सकती है।
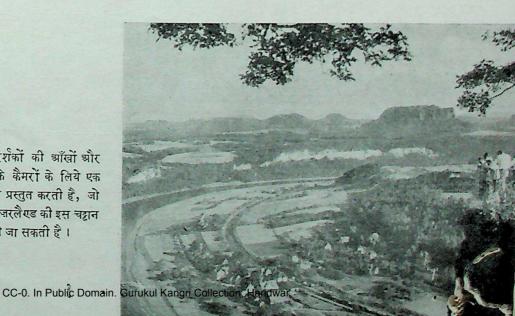
जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय

| एडविन स्टीवर

ड्रेस्डेन में एक विशेष प्रकार का संग्रहालय है। यह उस निधि को समर्पित है जिसके सामने प्राचीन फारूनों का खजाना भी तुच्छ है—अर्थात् मानव स्वास्थ्य।

इस संग्रहालय का इतिहास १६११ से आरम्भ होता है। इसकी नींव १६११ में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विज्ञान प्रदर्शनी के बाद पड़ी। इसके निर्माण का उद्देश्य मूल्यवान वस्तुओं का सुरक्षित संग्रहण था। इसके आर्थिक सहायक श्रृंगार वस्तुओं के निर्माता थे और वे इस संग्रहालय का प्रयोग वस्तु विज्ञापन के लिए करते थे। सामाजिक समस्याएं, जो अधिकतर रोगों का मूल कारण हैं, उनके समाधान से इन शिष्ट जनों को कोई सरोकार न था। फिर भी यही इस संग्रहालय का प्रारम्भ था। अपने आरम्भ के तुरंत पश्चात इस संग्रहालय ने शारीर-विज्ञान सम्बंधी साहित्य तथा सामग्री का उत्पादन शुरू कर दिया जो शीघ्र ही लोकप्रिय हुआ। १६३३ के बाद इसमें शीघ्र परिवर्तन आ गया जब फासिस्टों ने इस अनुसंधान केन्द्र को जाति तथा राष्ट्र विरोधी अभियान के लिए प्रयोग करना शुरू किया। दूसरा महायुद्ध समाप्त होने से ठीक पहले जब ड्रेस्डन नष्ट हुआ तो जर्मन स्वास्थ्य विज्ञान संग्रहालय का केवल कचरा और बदनामी ही बाकी बची थी, जिसका सम्बन्ध भूत काल से जान पड़ता था, और बस। परन्तु नहीं, इसे सत्य नहीं सिद्ध होना था।

१६५४ में ज. ज. ग. की मन्त्री परिषद की एक विज्ञप्ति द्वारा इसे 'स्वास्थ्य ज्ञानवर्धक केन्द्रीय संस्थान' का नाम दिया गया और इसे वह काम सौंपा गया जिसकी मांग देश के दूरदर्शी व्यक्ति, चिकित्सक तथा समाज-शास्त्री पिछली एक शताब्दी से कर रहे थे।

जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संस्थान

हम, जर्मन स्वास्थ्य विज्ञान संग्रहालय से सम्बंधित कर्मशालाओं का अनुमान भी नहीं लगा सकते। ३०० से अधिक वैज्ञानिक, चिकित्सक, शिक्षा कर्मचारी, शिल्पी, अभिकल्पी, रसायनज्ञ खरादी, रंगसाज तथा अन्य लोग इनमें काम करते हैं। उत्पादन केन्द्र तथा निर्यात सम्बन्ध रखने वाला यह संग्रहालय संसार में संभवतः एकमात्र है।
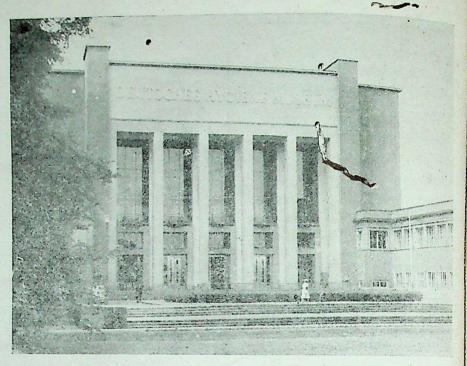
स्टूडियो तथा कर्मशालाओं की संख्या व आकार ने मुझे चकित कर दिया। काम करने के कमरे आधुनिक मशीनों से लैस हैं। "कांच की औरत" की पारदर्शी त्वचा वैकम डीप-ड्राइंग मशीन पर तैयार की जाने वाली थी। कई विशेषज्ञों ने १०,००० घंटे काम करने के बाद इस "युवा नारी" का निर्माण किया। कांच की "गायों" और कांच के "घोड़ों" से भी यहां आप जान पहचान कर सकते हैं।

कांच की नारी एक समझदार "जीव" है जो २५ भाषाएं जानती है। एक टेप रिकार्डर की सहायता से यह इन भाषाओं में अपने अंगों तथा अवयवों के कार्यों का परिचय दे सकती है। इस "नारी" तथा शीशे के "पुरुष", गाय तथा घोड़े के ढांचे अल्मोनियम के बने हैं। कई हजार मीटर रंग बिरंगी तार से इन ढांचों में नसें तथा धमनियां दिखाई गई हैं। हृदय, फेफड़े और गुर्दे तथा आंतें प्लास्टिक की बनी हुई हैं।

कर्मशालाओं के कई ग्राहक हैं। संसार के हर कोने से यूनिवर्सिटियों तथा संग्रहालयों की मांगें पूरी की जाती हैं। ५०० से अधिक प्रकार के शारीरक माडल इस संग्रहालय द्वारा वितरित किये जाते हैं। कई टन मोम और प्लास्टिक प्रति वर्ष इस काम पर लग जाता है।

"जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय ने संसार में सबसे पहले संश्लेषी मानवीय ढांचे तैयार किए," मुझे निदेशक ने बताया "आप शायद अनुमान लगा सकें कि शिक्षा कार्यों के लिए असली मानव कंकाल मिलना कितना कठिन और खर्चीला है। इसके विपरीत प्लास्टिक की हड्डियाँ इत्यादि यहां कम मूल्य पर तैयार कर ली जाती है।

[illegible] के कोने-कोने में भेजा जाता [illegible] वैज्ञानिक सूक्ष्मता के लिए प्रसिद्ध" हैं। ये ढांचे जगम होते हैं तथा उष्ण कटिबंधीय जलवायु प्रतिरोध गुण रखते हैं। ये टूटते नहीं और इन्हें साबुन और कूचों से साफ किया जा सकता है।

जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहायल में शिक्षा सहायक वस्तुओं के उत्पादन संबंधी नए कार्य हो रहे हैं। केवल प्लास्टिक के प्रयोग से ही मानवीय अंगों को इतनी प्राकृतिक संघनता सहित तैयार करना संभव हो सका है।

शारीरिक माडलों के कच्चे माल—पोलिनोक्लोराइड का चूर्ण आदि में एक प्रकार का लेप मिला लिया जाता है और फिर उसे धातु रूप में परिवर्तित कर लेते हैं, या अन्तर्घर्ष द्रव रूप में डाल कर कूची की सहायता से विभिन्न रूप दिए जाते हैं। यह प्लास्टिक द्रव्य १८० से. तापमान की विद्युत-भट्टी में जम जाता है। यह आश्चर्यजनक बात है कि इतना सूक्ष्मतापूर्ण संरचनात्मक ब्यौरा प्लास्टिक की सहायता से तैयार हो जाता है। एक विशेष रंग की सहायता से अंग-अंग की सूक्ष्मता उभर कर आ जाती है। जिन मेजों पर रंग चढ़ाने का काम किया जाता है वहां अनगिनत ब्रुश बिछे रहते हैं और रंगों के टीनों और बर्तनों की भी भरमार रहती है। संग्रहालय के इन वर्कशापों में पूर्णतः शांति का राज रहता है। मांसपेशियों को जोड़ने वाले तन्तुओं और नसों को रूप देने में केवल एकाग्रता और कुशलता ही पर्याप्त नहीं। इस के साथ शरीर रचना-विज्ञान की भी पूर्ण जानकारी आवश्यक है, क्योंकि इनका निर्माण ज.ज.ग. के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों तथा शिक्षा-शास्त्रियों के प्रशिक्षण के लिए होता है। जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय में तैयार किये गये इस शिक्षा सहायक सामान की पूर्ण सूक्ष्मता, स्पष्टता तथा प्रभावपूर्ण प्रणालीबद्ध तैयारी के कारण एक अध्यापक को शरीर-रचना विज्ञान, क्रियाविज्ञान तथा जीव विज्ञान के शिक्षा कार्य में बहुत सहायता मिलती है।

एक विशेष कर्मशाला के सांचा विभाग में शरीर के रोगग्रस्त अंगों के माडल मोम से तैयार किये जाते हैं। "हानि-रहित" रोगों के अतिरिक्त एटमी विकिरण के घाव, कैंसर तथा रति-रोग ग्रस्त अंगों के माडल भी तैयार किए जाते हैं। निस्संदेह इन्हें देखकर लोग प्रतिकर्षित अनुभव करते हैं परन्तु इन माडलों का ध्येय लोगों को डराना नहीं अपितु प्रबुद्ध करना है। खतरों से बचाव के लिए उनकी पहचान आवश्यक होती है।

जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय, शरीर रचना-विज्ञान शिक्षा सहायक सामान का संसार भर में प्रमुख उत्पादक है और इस में बनाया हुआ माल ५८ देशों को निर्यात किया जाता है जिनमें इंग्लैंड, स्पेन, इटली, फ्रांस, स्केन्डिनेवियन देश, क्यूबा, कम्बोडिया तथा भारत भी सम्मिलित हैं। ड्रेस्डेन संग्रहालय की कर्मशालाओं के सबसे अधिक ग्राहक समाजवादी

मानव शरीर के संश्लेषी माडल के आन्तरिक अवयवों पर रंग चढ़ाया जा रहा है

देश हैं। ज. ज. ग. इन दिनों बर्मा में एक स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय निर्मित कर रहा है।

संग्रहालय का कार्य जिस बात पर आधारित है वह है ज. ज. ग. की जनता को चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामलों में शिक्षित तथा सचेत करना।

स्वास्थ्य विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित जीवन सम्बंधी अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए। यही कारण है कि जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय जनता की सामान्य वैज्ञानिक जानकारी की ओर विशेष ध्यान देता है। लाखों पुस्तिकाएं, स्वास्थ्य कैलेंडर, विज्ञापन, पर्चे तथा अनुदेशित खेल-कूद और विनोदी चित्र-प्रकाशन, जनता में पहुंचाये जाते हैं ताकि लोग उस सुविख्यात ड्रेस्डन संस्था के लक्ष्य तथा ध्येय से परिचित हो सकें।

जर्मन जनवादी गणतंत्र एक समाजवादी देश है। यहां मानव, विशेष ध्यान का केन्द्र-बिन्दु है। उसके कल्याण तथा स्वास्थ्य को अधिकतम महत्व दिया जाता है। इसका उदाहरण राज्य की स्वास्थ्य संबंधी उदार सेवायें हैं जिनमें जर्मन स्वास्थ्य-विज्ञान संग्रहालय अग्रगण्य है।

विश्वप्रसिद्ध कांच की गाय
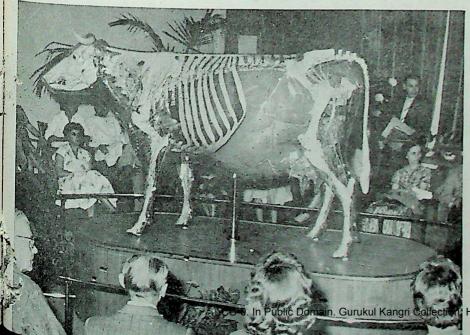
ज. ज. ग. का कथा-चित्र

जर्मन जनवादी गणतन्त्र का प्रत्येक कथा तथा टेलिविजन चित्र डेफा स्टूडियो में बनाया जाता है । ये स्टूडियो बर्लिन के नजदीक पोट्ज़डाम-बेबल्सबर्ग में स्थित है । 'डेफा' की नींव १७ मार्च १९४६ को उस स्थान पर डाली गयी थी जहां पहले 'यूफा' फिल्म स्टूडियो था । उस दिन विजयी सोवियत संघ ने, जनवादी जर्मन फिल्म उद्योग की बागडोर फासिस्ट-विरोधी कलाकारों के हाथों में सौंप दी । यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी का काम था । नाज़ीवादी क्रूरताओं से भरपूर भयंकर अतीत पर उन दिनों फिल्में बनाना कोई संयोग की बात नहीं थी । इस कोटि का पहला ही चित्र था **हमारे बीच में हत्यारे** जिसका प्रदर्शन, १५ अक्तूबर, सन् १९४६ के दिन हुआ । इस में बड़े माकिक ढंग से फासिस्ट सैनिक हत्यारों का चित्रण किया गया था जो हिटलर की हार के पश्चात दण्ड से बचने के लिये चूहों की तरह बिलों में छुप गये थे । इस फिल्म में, इन पापियों से धरती को मुक्त करने तथा दो महायुद्धों के इन अपराधियों को जनता के सामने लाने की जोरदार अपील की गयी थी ।

'डेफा' को आरम्भ में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । फिल्म निर्माण के लिये, अत्यन्त आवश्यक तथा अनिवार्य वस्तुओं का अभाव था । पुरानी तकनीक, सामग्री और साधनों का अभाव होने पर भी, उसी वर्ष दो चित्र और बनाये गये । इनमें **मुक्त धरती** विशेष उल्लेखनीय है । इस चित्र में, जर्मनी के पूर्वी भाग में बड़े ज़मीनदारों और जागीरदारों की जागीरें तोड़ने मुक्त और किसानों का उत्थान, दिखाया गया था ।

'डेफा' की प्रगति की कहानी तब तक अधूरी रहेगी, जब तक उन महान निर्माताओं की योग्यता का ज़िक्र न किया जाय, जिन्होंने इसके निर्माण में अपनी सारी प्रतिभा-शक्ति लगा दी । प्रोफेसर कूर्ट माएटसिग ने, जो आज भी डेफा फिल्म स्टूडियो से संबंधित हैं, फासिस्टवाद-विरोधी और जनवादी जर्मन फिल्म को उभारा और आकार प्रदान किया अपनी **छाया में विवाह, रंगीन चादर** और **देवताओं की परिषद** जैसे चित्रों के द्वारा । **हमारे बीच में हत्यारे** के लेखक तथा निर्माता, वोल्फगांग स्टाउड्टे ने, हाइनरिख मान्न के विश्व विख्यात उपन्यास **डेर उन्तरतान** को फिलमाया और **रोटेशन** नाम का एक सुप्रसिद्ध चित्र भी बनाया ।

सितम्बर, १९६४ तक 'डेफा' ने २७२ कथा-चित्र बनाये, जिनका यहां वर्णन करना सम्भव नहीं । फिल्म **प्राप्ति** की सफलता ने, निर्माता कोनार्ड वोल्फ तथा छायाकार वारनर बर्गमन्न के रूप में, नई पीढ़ी के कलाकारों की घोषणा की । तीन वर्ष बाद इन्हीं कलाकारों ने बलगेरिया के फिल्म निर्माताओं के सहयोग से, तहल्का मचा देने वाला चित्र **सितारे** बनाया । इस चित्र को केन्स के फिल्म समारोह में पुरस्कार भी मिला । नई पीढ़ी के एक और प्रतिभाशाली निर्माता हैं फ्रान्क बेयर, जिन्होंने स्पेन के बारे में **कारतूसों की पांच पेटियां** नाम का चित्र बना कर प्रसिद्धि प्राप्त की । डेफा का, १९६३ का सर्वोत्तम चित्र है **भेड़ियों के घेरे में** जिसके निर्माता फ्रान्क बेयर ही हैं । अब तक यह इनकी सर्वोत्तम कृति है ।

डेफा के इतिहास में पहली जनवरी सन् १९५३ का दिन बहुत महत्वपूर्ण दिन है । उस दिन डेफा को, अलग अलग पांच स्वतंत्र स्टूडियों में विभाजित किया गया । अब डेफा का कथा-चित्र स्टूडियो, जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे बड़ा स्टूडियो है । इतना ही नहीं, सोवियत-संघ के **मोसफिल्म** के बाद डेफा, यूरोप का दूसरा सबसे बड़ा स्टूडियो है । इसके अतिरिक्त समाचार, दस्तावेज़ी, वैज्ञानिक तथा बाल चित्र बनाने और ध्वनि, संगीत, कथोपकथन आदि जोड़ने के लिये अलग अलग स्टूडियो हैं ।

फासिस्तवाद-विरोधी फिल्म "हत्यारे हमारे बीच में हैं" का एक दृश्य

डेफा ने जहां फासिस्तवाद तथा युद्ध के खिलाफ कथा-चित्र बनाने में ख्याति प्राप्त की वहां, समसामयिक विषयों पर भी इसने, सन् १९५० से सफल चित्र बनाये । लेकिन ऐसा करने में डेफा को कई कठिनाइयों का सामना करना एक स्वाभाविक बात थी ; क्योंकि जहां अतीत एक तरह से सम्पूर्ण होता है, वहां वर्तमान अपने अन्दर सदैव कुछ नयापन छुपाये हुये होता है, पूर्ण होने की प्रक्रिया में (गतिशील) होता है । इस कारण किसी आधुनिक विषय पर चित्र बनाना नई धरती पर हल जोतने के समान है । आरम्भ के कुछ अच्छे चित्र बनाने के बाद

...म्यमों ... निरन्तर खोज और नये ... रहे। इस लिये सफलता ने ... ही साथ ... उस काल में।

पिछले पांच वर्षों में डेफा में एक बार फिर उत्साह उमड़ पड़ा है, और यह बात उल्लेखनीय है कि आधुनिक विषयों के चित्रों को अब बहुत महत्व दिया जाने लगा है। १९६३ में बनाये गये बीस कथा-चित्रों का तीन-चौथाई भाग ऐसा है जिनका कथानक समकालीन विषयों पर आधारित है। इनमें अधिकतर चित्र, जर्मन जनवादी गणतंत्र के विकासशील समाजवादी चरित्र से संबंधित हैं। इनमें उल्लेखनिय फिल्में हैं: फ्रांक बोगुल का **और तुम्हारा प्यार भी** (पटकथा लेखक पाल वीन्स), कार्ल हाइन्स के एक सुप्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित तथा राल्फ किरस्टन द्वारा निर्मित **एक ग्रीष्म का वर्णन** और क्रिस्टा वूल्फ के एक उपन्यास पर आधारित, कोनार्ड वूल्फ का **विभाजित आकाश**। इन चित्रों का निर्माण १९६३ और १९६४ में हुआ है।

हास्य-चित्रों को भी अब अधिक महत्व दिया जाने लगा है। रोल्फ किरस्टान का चित्र **प्रकाशवान रूप** इस कोटि का एक बहुत सफल चित्र था। इसी निर्माता ने **भूखों, चलो मेरे साथ** नाम का ऐतिहासिक हास्य-चित्र बना कर काफी सफलता तथा ख्याति प्राप्त की। इस बीच, फासिस्टवाद तथा युद्ध विरोधी फिल्मों का निर्माण बराबर जारी रहा। इसका प्रमाण है फ्रांक बेयर के दो सफल चित्र **भेड़ियों के घेरे में** और **राजकुमार और राजकुमारी**। योनोस वाइकसिज का इसी प्रकार का एक और चित्र **केवल आंखों के लिये** बहुत सफल रहा। इस चित्र में ज. ज. ग. के सुरक्षा विभाग के एक आदमी का, अमरीकी जासूस दल में काम करने का वर्णन है।

एक गीति-रूपक का फिल्माया हुआ दृश्य

बच्चों के लिये डेफा के बनाये चित्र विश्व ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। एक परी कथा पर आधारित **श्रीमती होल्ले** नामक रंगीन चित्र का प्रदर्शन, संसार के बहुत से देशों में हुआ है। इस सुविख्यात चित्र के निर्माता गोटफ्रीड कोलडिट्स है।

लाइपजिक ओपेरा के निर्देशक श्री योआखीम हेर्स आजकल, रिचार्ड वागनर के गीति-रूपक **फलांइंग डचमैने** का फिल्म बनाने में व्यस्त हैं। इसी प्रकार, योकिम कूनर्ट, डीटर नोल्ल के बहुत लोकप्रिय उपन्यास **वर्नर होल्ट के कारनामे** की पटकथा तैयार कर रहे हैं।

आगामी वर्षों में दिखाई जाने वाली फिल्मों में अग्रगण्य है, कार्ल लीब्क्नेख्त के जीवन से संबंधित दो भागों वाला निर्माणाधीन एक कथा-चित्र। यह चित्र जर्मन श्रमिकों के संघर्ष के इतिहास का एक महत्वपूर्ण चित्रण होगा। इस चित्र को पूरा करने में अभी कुछ और समय लगेगा। दूसरे बनाये जाने वाले चित्रों में पांच हास्यचित्र भी शामिल हैं।

डेफा का कथा-चित्र स्टूडियो संसार के फिल्म-उद्योग का एक अंग बन गया है। इसके कुल ११ स्टूडियो हैं जो आधा किलोमीटर क्षेत्र पर फैले हैं। इसमें २४०० कलाकार काम करते हैं, जिनमें इरविन गेस्खोनेक, एनेकातरीन बुयेर्गर, एंजलिका डाम रोज, गुएन्टर सीमान्, इंगे केल्लर, क्रिस्टेल बोडेंजटाडन, मानफ्रेड क्रुग और दूसरे बहुत सारे लोकप्रिय कलाकार भी शामिल हैं।

यहां प्रति वर्ष लगभग २० कथा-चित्र तथा ३५ टेलिविजन चित्र बनाये जाते हैं। चेकोस्लावाकिया, पोलेण्ड, बलगेरिया और फ्रांस के सहयोग से जो चित्र बने हैं या बनाये जा रहे हैं उनकी संख्या बीस है। पोलेण्ड की फिल्म-पोलस्की नामक फिल्म संस्था और डेफा के आपसी सहयोग से एक **भारतीय फिल्म** भी बनाई जा रही है। इस का नाम है **सिकंदर और चाणक्य**। आज तक डेफा के लगभग ३० चित्रों को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका हैं।

ज. ज. ग.-बलगेरिया सहयोग से बने चित्र "सितारे" का एक दृश्य

निश्चिन्त एवं सुखी वृद्ध-अवस्था

पीतर नोके

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी बर्लिन में [illegible]नव-निर्मित चहल-पहल भरे व्यस्त क्षेत्र से [illegible] ही दूर, एक खामोश सड़क पर, हमारे गणतंत्र के वृद्धों के, १,२[illegible] विश्राम गृहों तथा नर्सिंग होमों में से एक विश्राम-भवन खड़ा है। २०५ बर्लिन वासी वृद्ध, नवीनतम ढंग के इस भवन में अपने जीवन की सांझ बिता रहे हैं।

जर्मन जनवादी गणतंत्र के विधान तथा कानून के अनुसार यहां के बूढ़े लोग पूरी तौर से सुरक्षा तथा देख-रेख के अधिकारी हैं। यह एक बड़ी बात है कि ढलती आयु को निश्चिन्त होकर व्यतीत किया जा सके। यह सब उस बलिदान ही के कारण सम्भव हो सका है, समाज जो उन के लिये दे रहा है। दुर्भाग्य से हमारी जनसंख्या में विभिन्न आयु-समूहों का क्रम ही कुछ ऐसा है कि हमें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है"—नर्सिंग होम की ३८ वर्षीया मेट्रन श्रीमती उरज़ूला नीदस्जार्वट्ज्की ने हमें कहा। बात-चीत में उसने हमें उन सामाजिक सफलताओं के बारे में पहले कुछ नहीं बताया, जो यहां प्राप्त हैं, अपितु उसने उन कठिनाइयों का ज़िक्र किया जिनके अभाव में बहुत अधिक लाभ हुआ होता।

मेट्रन ने हमें समझाते हुये कहा, "इस समय ज. ज. ग. के पांच श्रमिकों को, पेन्शन पाने वाले दो वृद्धों के लिये कमाना पड़ता है, और १९७० तक केवल चार श्रमिकों को दो पेंशन पाने वालों की देखरेख के लिए कमाना पड़ेगा।" विभिन्न आयु-समूहों के बहुत से नवयुवक अब जीवन के उस क्षेत्र में कदम रख रहे हैं जो सर्वोत्तम माना जाता है। परन्तु दूसरे महायुद्ध में, अपाहिज होने के कारण वे काम नहीं कर सकते। १९७० के पश्चात ही तरुण-पीढ़ी की संख्या अधिक होने की सम्भावना है, और १९५० के बाद से बढ़ती हुयी शिशु-उत्पत्ति का लाभदायक प्रभाव भी उस समय तक अधिक स्पष्ट दीखेगा। तब हमारी जनसंख्या का सूखा हुआ पेड़ फिर से हरा-भरा होगा।"

इस बारे में एक और बात भी उल्लेखनीय है, वह यह कि पेंन्शन देने का यह भारी बोझ उठाने के साथ ही ज. ज. ग. की सरकार ने इस बात का भी फैसला किया है कि ज. ज. ग. के नवयुवकों को दस वर्षीय माध्यमिक स्कूलों में पोलितकनीकी ट्रेनिंग दी जाय।

नियमित रूप से हर स्त्री को उन्नसठवें (५९) वर्ष के बाद, और पुरुषों को पैंसठवें (६५) वर्ष के बाद पेन्शन दी जाती है। पेन्शन मूल रूप से ३६० मार्क दिया जाता है, और इसके अतिरिक्त कुल कमायी रकम का एक प्रतिशत भाग भी दिया जाता है। उदाहरण के लिये यदि किसी वृद्ध पेंशन पाने वाले ने जीवन भर १५,००० मार्क कमाये हों तो १५०० मार्क की रक़म उस के मूल पेंशन (३६० मार्कों) में जोड़ दी जाती है। इस प्रकार, उसकी प्रति वर्ष पेंशन १८६० या प्रतिमाह १९५.५५ मार्क बनती है। ज. ज. ग. ज. में सन् १९५० से सन् १९६० तक पेंशन की मूल रक़म में चार बार वृद्धि की गयी जो ६२ मार्क बनते हैं। इसके अतिरिक्त १९६४ से, काम के हर दस वर्ष पर ५ मार्क और बढ़ा दिये जाते हैं। इस प्रकार १५५.५५ मार्क प्रति माह पाने वाला व्यक्ति अब २३२.५५ मार्क पेन्शन पा रहा है।

हर वह व्यक्ति जिसने २५ वर्ष तक नियमाधीन या स्वेच्छा से सामाजिक बीमा के तहत पैसे दिये हों, पेन्शन पाने का अधिकारी होता है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई स्त्री घरेलू काम-काज या किसी और कारणवश नौकरी छोड़ दे, पर ६ मार्क के हिसाब से अर्द्धवार्षिक बीमा शुल्क नियमित रूप से देती रहे, वह भी पेन्शन पाने की अधिकारी है। इस प्रकार पति-पत्नी दोनों की देख-भाल बुढ़ापे में अच्छी प्रकार से होती है।

कोई स्त्री जो पेन्शन पाने की अधिकारी न हो, साठ वर्ष की आयु होने पर उसको उसके पति के पेंशन में ३७ मार्क की वृद्धि की जाती है। विधवा होने की दशा में पति के मूल पेंशन का ५० प्रतिशत भाग उस स्त्री को दिया जाता है और नियमित रूप से इस पेंशन में वृद्धि होती जाती है।

ट्रेड यूनियनों की समाज-बीमा योजना इससे भी अधिक रकमों के पेंशन दिया करती है। पेंशन पानेवालों के स्वास्थ्य की देखभाल अतिरिक्त बीमा शुल्क देने के बगैर की जाती है। हस्पताल में उनकी देखभाल तथा औषधियों आदि पर उन्हें कुछ भी खर्चना नहीं पड़ता। कम पेंशन पाने वालों को मकान

ज.ज.ग. की राजधानी, बर्लिन में वृद्ध लोगों का एक विश्राम-गृह

[illegible] की कुछ रकम तथा नर्सिंग भत्ता [illegible] जाता है। इसके अतिरिक्त उनसे [illegible]या टेलि[illegible]न की फीस भी नहीं ली जाती और थि[illegible]र तथा सिनेमा टिकटों पर उन्हें ५० प्रतिशत छूट दी जाती है।

परन्तु आईये हम वापस बर्लिन की अन्द्रीस सड़क की ओर मुड़ें जहां वृद्ध पुरुषों के रहने का विशाल भवन है। यह भवन १९५९ में करीब ४,०००,००० मार्क की लागत से निर्माण किया गया। इस में २२, एक बिस्तर वाले, और ९३ दो बिस्तर वाले कमरे हैं। इन कमरों में हर प्रकार के आराम की वस्तुओं के अतिरिक्त गर्म तथा ठण्डे पानी का भी प्रवन्ध है। हर मंजिल में दो कमरे क्लब के लिये रखे गये है जिन में और वस्तुओं के अतिरिक्त एक रसोई भी है। इस रसोई घर में वृद्ध पुरुष अपनी चार बजे की काफी या अपना मन पसन्द भोजन भी बना सकते हैं। वैसे भोजन का प्रवन्ध भवन की ओर से दिन में तीन बार भोजनालय में ही किया जाता है। इस भोजनालय की सामग्री किसी भी अच्छे होटल के मुकावले में कम नहीं। भवन में २००० पुस्तकों पर आधारित एक पुस्तकालय भी है। पुस्तकों की मांग बहुत अधिक रहती है। कई टेलीविजन कमरे तथा एक क्लब भी है। प्रति मास कम से कम चार बड़े, और कुछ मिले जुले प्रोग्राम दिये जाते हैं। नाटक तथा फिल्म शो

एक जागीरदार का महल जो अब वृद्ध जनों का आरोग्य-आश्रम है

होते हैं और इसके अलावा कभी-कभी जल-विहार तथा भ्रमण भी कराया जाता है।

इस भवन तथा ज. ज. ग. के दूसरे ऐसे ही भवनों में रहने खाने पीने और देख-भाल के लिए प्रतिदिन केवल ३.४० मार्क लिए जाते हैं, अर्थात १०५ मार्क प्रति मास। बाकी बची पेंशन, हर एक व्यक्ति को समय पर दी जाती है। कम से कम ४८ मार्क का जब खर्च हर वृद्ध को दिया जाता है। यदि पेंशन अधिक न हो तो बाकी रकम भवन की ओर से पूरी की जाती है। चूंकि रहने खाने के लिए पेंशन पाने वालों की दी गई कीमत, लागत से बहुत कम होती है अतः सरकार इस कमी को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष बर्लिन के इस भवन पर ५००,००० मार्क, और ज. ज. ग. के ऐसे ही दूसरे केन्द्रों पर २६,७००,००० मार्क खर्च करती है। बहुत अच्छा होता यदि हर एक श्रमिक के लिए वृद्ध अवस्था में रहने का ऐसा ही प्रबन्ध सम्भव होता। ऐसा अभी नहीं हो पाया है, इसलिए कुल मिला कर ८३,८०० ऐसे स्थानों का प्रबन्ध किया गया है जहां वृद्ध जन निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत कर सकें और जहां उनकी देखभाल की जा सके। कुछ ऐसे भी हैं जो रहते तो अलग, अपने ढंग से हैं, लेकिन जिन्हें देखभाल की आवश्यकता है; और कुछ ऐसे भी हैं जो उस वातावरण से बिछड़ना नहीं चाहते जो अतीत में उनका साथी रहा है — इन सभी की देख-भाल भी सरकार द्वारा की जाती है।

ज.ज.ग. के एरफूर्ट प्रान्त में, पेनशन पाने वाले वृद्ध जनों का एक और विश्राम-घर

★ ★ ★

स्व. जवाहरलाल नेहरू को : डा. वाण्डल की श्रद्धांजलि

स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू से मिलन का मुझे दो बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दोनों बार, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों ने, जिन में मैं भी सम्मिलित था, उन से विश्व [illegible] वपूर्ण तथा जटिल समस्याओं [illegible] बातचीत की--विशेष कर दो जर्मन राज्यों [illegible] सम्बन्धी खतरनाक झगड़े पर। मैं ने देखा कि स्वर्गीय नेहरू का ध्यान सभी झगड़ों को, शांतिपूर्ण ढंग से और बातचीत के द्वारा हल करने पर केन्द्रित था क्योंकि इससे तनाव घट जाने, नि:शस्त्रीकरण और विश्वशांति की सुरक्षा में बहुत बड़ी सहायता मिलती है।

पटना के "भारतीय नृत्य-कला मन्दिर" में (बायें से दायें) हैं : सर्वश्री के. एन. शाण्डिल्य तथा आर. सी. भारद्वाज (भारत-ज.ज.ग. मैत्री संघ, पटना के कार्यकारी अध्यक्ष तथा महासचिव), बी. कोप्खर, डा. पाल वाण्डल और श्रीमती सी. ट्रागालिन

दोनों बार की बातचीत में श्री नेहरू ने अपने इस दृढ़ मत को एक बार फिर व्यक्त किया कि जर्मन समस्या का हल एक ही सूरत में सम्भव है, और वह यह है कि ठोस वास्तविकता को देखकर, दोनों जर्मन राज्यों के अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार किया जाये। इस प्रसंग में उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र की सद्भावना, शांति एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर आधारित नीति की काफी प्रशंसा की जिसके आधार पर वह जर्मन समस्या को हल करना चाहती है।

हम सभी के लिये यह गहरे शोक की बात है कि आज भारत के इस महान नेता और शांति के अनथक योद्धा को जीते जागते रूप में नहीं, बल्कि उन महा मानव की पुण्य स्मृति को ही अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। एक महान नेता की महानता का प्रमाण यही है कि उसकी देह का अन्त होकर भी उसका कृतित्व, युग युग तक, मानव-स्मृति में जीवित रहे। स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू इसी कोटि के अन्तर्गत आते हैं। हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि समस्त शांतिकामी जनता एकजूट होकर तथा दृढ़ता प्राप्त करके इतनी शक्तिशाली बन जायेगी कि वह स्वर्गीय नेहरू के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने में सफल हो जायेगी। उनका लक्ष्य था मानवता को सर्वनाश से बचाकर, शांति के वातावरण में उसका अनवरत विकास करना। दूसरे शब्दों में इसी का नाम है शांतिपूर्ण सहअस्तित्व।

इन दिनों हमारे ज. ज. ग. में, जगह जगह पर, नेहरू स्मृति सभायें आयोजित हो रही हैं जिनमें हमारी जनता उनकी पुण्य स्मृति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रही है। इसी प्रकार हमारे देश के अखबार, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद तथा फासिस्टवाद के खिलाफ और शांति, स्वाधीनता तथा भारत के आर्थिक विकास के हक़ में उनके संघर्ष तथा ऐतिहासिक रोल को लेखांकित कर रहे हैं। जर्मन भूमि पर हमारे प्रथम समाजवादी एवं शांतिप्रिय राज्य के नागरिक, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति को सफल बनाने के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाये हुये हैं। इस प्रकार हम, अमल में, स्वर्गीय नेहरू की स्मृति के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान व्यक्त करते हैं। प्रत्येक जर्मन वासी का यही नारा होना चाहिये : युद्ध नहीं, हमें शांति चाहिये।

शांति की विजय और साम्राज्यवादी शोषण तथा युद्ध मुक्त संसार को जन्म देकर ही हम स्वर्गीय नेहरू तथा अन्य महान मानवतावादियों का स्वप्न और लक्ष्य पूरा करेंगे।

(पृष्ठ ३ का शेष)

हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की १८वीं महासभा को पेश किये गये अपने एक दस्तावेज में, हमारी सरकार ने, वेरवोर्ड के फासिस्त शासन और पुर्तगाली उपनिवेशवाद के खिलाफ अपनी स्पष्ट आवाज उठाई है। हमारे समाजवादी राज्य में अमानुषिक नस्लवाद का प्रत्येक रूप वर्जित और दण्डनीय है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ज.ज.ग. की सभी विदेश व्यापार संस्थाओं को यह आदेश दिया गया है कि वे दक्षिण अफ्रीका की किसी भी व्यापार फर्म अथवा संस्था के साथ लेन देन न करे। इसके अलावा, ज.ज.ग. ने अंगोला तथा मोजमबीक में पुर्तगाल के बर्बर दमन की खुले आम निन्दा की है, और वहां के देश भक्तों के साथ हमेशा अपनी समेकता तथा सहानुभूति प्रकट की है। इस तरह, उपनिवेशवाद द्वारा दमित और शोषित जनता, अपने मुक्ति संग्राम में हमेशा, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सहायता एवं एकजूटता पर विश्वास कर सकती है।

ज. ज. ग. में, नव-उपनिवेशवाद किसी भी रूप में मौजूद नहीं है। एक समाजवादी राज्य होने के नाते, इसकी आर्थिक शक्ति केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये इस्तेमाल होती है। इसलिये, नवोदित राज्यों के सफल व्यापारिक एवं आर्थिक संबंधों के विकास के लिये यह एक स्वस्थ और अच्छा आधार है। इसके अलावा ये संबंध नि:स्वार्थ और पारस्परिक हितानुकूल हैं। ज. ज. ग. अपनी पूरी शक्ति के साथ, नवोदित राज्यों के निर्माण में सहयोग प्रदान करता है ताकि उनका अपना राष्ट्रीय और स्वतंत्र अर्थतन्त्र विकसित हो। इस सिलसिले में हमारा गणतंत्र इन राज्यों को हर प्रकार की सहायता प्रदान करता है। हम इनको तकनीकी ज्ञान, आर्थिक सहायता, यन्त्र बनाने की लाइसेन्सें, और विशेषज्ञ इत्यादि उपलब्ध करते हैं, और इन राज्यों के नागरिकों को अपने यहां हम, विभिन्न क्षेत्रों में ट्रेनिंग भी देते हैं। इस प्रकार, जर्मन जनवादी गणतंत्र इन नवोदित राज्यों के आशु विकास में, यथाशक्ति अपना योगदान देता है।

समाचार

लाइपज़िक व्यापार मेले की अष्ट शती का निमन्त्रण

जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री, श्री विल्ली स्टोप ने, विश्व भर के व्यापारियों तथा व्यापार-संस्थाओं को, लाइपज़िक व्यापार मेले के, ८०० वें जुबली व्यापार मेले में भाग लेने का निमन्त्रण दिया है। लाइपजिक का यह जुबली मेला २८ फरवरी, सन् १९६५ को आरंभ होकर ९ मार्च को समाप्त होगा। अपने एक वक्तव्य में उन्होंने कहा है: "हम सभी देशों के व्यापारियों को लाइपजिक के महान जुबली मेले में सम्मिलित होने की दावत देते हैं, और हम उनके उस कार्य की पूर्ण सफलता की कामना करते हैं जो शांतिपूर्ण व्यवसाय को बढ़ावा देता है"। श्री स्टोप ने यह भी कहा है कि लाइपजिक व्यापार मेले की, ८०० वीं वर्षगांठ का समारोह, पूर्ववत विश्व-व्यापार का महान संगमस्थल होगा।

आगे चल कर ... उक्त वक्तव्य में जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रधान मंत्री ने कहा है: "जन कल्याणकारी व्यापार, केवल शांति के वातावरण में ही विकसित हो सकता है। इसलिये सभी शांतिप्रिय देशों का हित इसी में है कि विभिन्न राज्यों के बीच सामान्य राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध विद्यमान हों। हमारी सरकार प्रत्येक देश के साथ सरकारी संबंध स्थापित करने का समर्थन करती है।..."

लाइपजिक के इस अष्ट शताब्दी जुबली व्यापार मेले के सम्मान में, यहां एक अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की तैयारी हो रही है। इस स्मृति-ग्रन्थ को अपनी शुभकामनायें भेजते हुये जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद के अध्यक्ष, श्री वाल्टर-उल्ब्रिख्त ने अपने शुभ-कामना संदेश में कहा है: "लाइपज़िक के व्यापार मेलों ने दुनिया के सामने यह सिद्ध किया है कि विभिन्न देशों के लोग एक दूसरे के साथ शांति से रह सकते हैं, और विश्व कल्याण तथा पारस्परिक हित के लिये अपने ज्ञान, अनुभव, व्यापार आदि का आदान प्रदान कर सकते हैं।... लाइपजिक जुबली मेले की पूर्ण सफलता की कामना करते हुये, ... में ... होनेवाले व्यापारियों, अतिथियों, पत्रकारों एवं अन्य लोगों का मैं, अपनी तथा राज्य परिषद् की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं।"

प. जर्मनी के अणु-वैज्ञानिक की चेतावनी

पश्चिमी जर्मनी ... एक सुप्रसिद्ध साप्ताहिक "दी ... " के एक लेख में, यहां के एक विख्यात नाभिकीय वैज्ञानिक, श्री कार्ल फ्रीडरिख वाइसेकर ने इस बात की स्पष्ट घोषणा की है कि पश्चिमी जर्मनी, नाटो देशों की अणु सेना योजना (एम. एल. एफ.) को बढ़ावा देने के कारण, सारी दुनिया में बदनाम हो रहा है। प्रोफेसर वाइसेकर ने अपने लेख में लिखा है: "फेडरल गणराज्य (अर्थात् पश्चिमी जर्मनी ––सं.) ही यूरोप में एक मात्र ऐसा राज्य है जो यह आभास देता है कि यह योजना किसी तरह से, सफल हो जाये।..."

प्रोफेसर महोदय ने यह भी लिखा है कि मध्य-यूरोप में केवल पश्चिमी जर्मनी ही एक वह देश है जो "खुले आम सीमा संबंधी झगड़े" खड़ा करता है।...इस स्थिति में सारी

प. जर्मनी के तेल-अधिपतियों द्वारा दक्षिण अफ्रीका की सहायता

पश्चिमी जर्मनी के गेवर्कशाफ्ट एल्वेराट, गेलसैर्नकिखनेर बगवेर्क्स टाइज़ेन-समूह, और दूइत्शे एरडौज़ इत्यादि नामक बड़े-बड़े तेल-इजारेदार ट्रस्ट दक्षिणी अफ्रीका में तेल खोजने के अधिकारों को खरीद रहे हैं। हाल ही में, पश्चिमी जर्मनी के आर्थिक सहयोग मंत्रालय में अचाननक इस रहस्य का उद्घाटन हुआ।

वास्तव में पश्चिमी जर्मनी के उक्त तेल-ट्रस्ट, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्ट-वेरवोर्ड सरकार की सहायता करना चाहते हैं, उसके अपने तेल-उद्योग की बुनियाद डालने के लिये। इस संबंध में, दक्षिण अफ्रीका के खनिज सचिव, श्री नेल का एक वक्तव्य विशेष उल्लेखनीय है। जोहान्नसबर्ग में उसने हाल ही में कहा कि अत्यन्त आवश्यक आर्थिक तथा रण-नीति संबंधी कारणों से दक्षिण अफ्रीका अपने यहां तेल खोजने में बहुत अधिक दिलचस्पी रखता है।

पिछले वर्ष के सितम्बर मास में, पश्चिमी जर्मनी के "दुइत्शे बैंक" का एक प्रतिनिधि श्री हर्मान्न जोज़फ आब्स, जो पं. जर्मनी के तेल-ट्रस्टों का एक डायरेक्टर भी है, दक्षिण अफ्रीका की फासिस्त सरकार से बात चीत करने की के लिये वहां गया था। इसी बातचीत में, अन्य बातों के अलावा, दक्षिण अफ्रीका में तेल खोजने के अभियान में, पश्चिमी जर्मनी के तेल-ट्रस्टों की शमूलियत का मामला भी सामने लाया गया। इस सिलसिले में यह याद रखना बहुत जरूरी है कि, श्री हरमान्न आब्स, एक नाजी युद्ध अपराधी है और वह पश्चिमी जर्मनी के देगूस्सा नामक अणु-ट्रस्ट का एक प्रमुख अधिकारी है। स्पष्ट है कि इस भूतपूर्व नाजी ने, दक्षिण अफ्रीका की सरकार से, अणुबमों के लिये काफी मात्रा में नाभिकीय सामग्री पैदा करने की दिशा में कदम उठाने की भी बातचीत चलाई होगी।

पश्चिमी जर्मनी की बोन सरकार ने वहां के तेल इजारेदार ट्रस्टों को ८० करोड़ मार्क की धनराशि की सहायता देने का वादा किया है दक्षिण अफ्रीका में तेल खोजने के काम के लिये।

दुनिया की फेडरल गणराज्य [illegible] सेना तथा अणु-शस्त्रों पर अधिकार प्राप्त [illegible] योजनाओं से, बहुत चिन्तित और भयभीत होना स्वाभाविक ही है।...''

इन्डोनेशिया के लिये रात्रि-रेल गाड़ियों का निर्माण

जर्मन जनवादी गणतंत्र को इन्डोनेशिया [illegible] कई रात्रि [illegible] गाड़ियां बनाने का आर्डर मिला है। इन गाड़ियों में सोने, खाने और सामान रखने के अलग-अलग डिब्बे होंगे। जर्मन जनवादी गणतंत्र के गोएरलित्स स्थित गाड़ी निर्माण कारखाने को, अन्य देशों की कड़ी प्रतिद्वन्द्विता के बावजूद, यह आर्डर मिला, और सन् १९६६ तक यह पूरा किया जायेगा। इस विषय में जर्मन जनवादी गणतंत्र के उक्त रेल-निर्माण कारखाने में काम चालू हो चुका है।

ज. ज. ग. के हवाबाजों के तीन विश्व रिकार्ड

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हवाबाजों ने, रात में छलांग के दौरान, तीन नये विश्व रिकार्ड कायम किये। २००० मीटरों के फासले से, अपनी हवाई छतरी समेत कूद कर, हाइंज़ शाल, पूर्व निश्चित स्थान से १.८३ मीटर दूर आ गिरा। इसी प्रकार, कुमारी अनिटा स्टोर्क अपने निश्चित स्थान से रात्रि-कूद में, ४.३४ मीटर दूर जमीन पर आई। वह भी २०० मीटरों की दूरी से हवाई छतरी द्वारा कूदी थी। तीसरा विश्व-रिकार्ड कायम किया छतरी-हवाबाजों के एक दल ने जिसके सदस्य एक साथ कूदे थे। दल के सदस्यों के नाम हैं टाउब्रेख्त, श्मेलसर, ग्रेश्नर, मायर और रीडिंग।

ज. ज. ग. का शांति प्रस्ताव विकासशील देशों के हितानुकूल है

जर्मन जनवादी गणतंत्र की यात्रा समाप्त करने के बाद और स्वदेश लौटने से पहले माली गणराज्य के विदेश-मंत्रालय के महा सचिव, श्री मूसा लियो कीता ने, यहां की प्रमुख समाचार एजन्सी ए. डी. एन. को दिये गये एक इण्टरव्यू में, ज. ज. [illegible] द्वारा प्रस्तावित शांति सुझाव का हार्दिक स्वागत किया। ज. ज. ग. की मंत्रि परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने गणतंत्र की १५वीं वर्षगांठ के शुभअवसर पर, इस सुझाव को फिर एक बार दोहराया है। इस सुझाव की प्रशंसा करते हुये श्री मूसा कीता ने उक्त इण्टरव्यू में कहा है: "हम इस शांति सुझाव का इसलिये स्वागत करते हैं, क्योंकि यह हमारी जनता की आशाओं आंकांक्षाओं से मेल खाता है। हमारे लिये शांति अनिवार्य है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा राष्ट्रीय निर्माण केवल शांति में ही संभव है।..."

इसी संदर्भ में मूसा लियो कीता ने जर्मन समस्या के हल के लिये दो जर्मन राज्यों की आपसी बातचीत का भी समर्थन किया। उन्होंने कहा: "जर्मन समस्या वास्तव में दोनों राज्यों की जर्मन जनता की समस्या है। हमारा विश्वास है कि शांतिपूर्ण बातचीत से सफलता प्राप्त होगी। हम इस बात से क़ायल हैं कि ज. ज. ग. के हमारे दोस्त शांतिपूर्ण बातचीत और समझौते के लिये हर कदम उठाने के लिये तैयार हैं।..."

ज. ज. ग. की यात्रा के प्रभावों का उल्लेख करते हुये, माली गणराज्य के महा सचिव ने कहा: "ज. ज. ग. से संबंधित हमारे अनुभव और प्रभाव बहुत अच्छे हैं। हमने यहां ज. ज. ग. का साक्षात्कार किया, और हम इसी नतीजे पर पहुंचे कि हमारे दो देशों की नीतियों में कई समानतायें हैं। माली गणराज्य और ज. ज. ग. के आपसी संबंध बढ़ाने की अनेक संभावनायें हैं।

"महायुद्ध में जर्मनी को भयंकर विनाश और यातानाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन ज. ज. ग. ने साहस और सतत प्रयत्नों से राष्ट्रव्यापी नवनिर्माण के द्वारा उस अकथनीय क्षति को पूरा किया। ज. ज. ग. की जनता का यह साहस, धैर्य और काम की लगन अनुकरणीय है, और यह सब हमारे लिये प्रेरणादायक है समाजवाद के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये।..."

पश्चिमी जर्मनी पर चालीस इजारेदार ट्रस्टों की हकूमत

अपने एक अग्रलेख में, पश्चिमी जर्मनी के एक प्रमुख अखबार "बोन्नेर काररज़पोनडेन्स" ने लिखा है कि "वास्तव में फैडरल गणराज्य (अर्थात् पश्चिमी जर्मनी—सं.) के सामाजिक जीवन पर यहां के ४० इजारेदार ट्रस्टों का एकाधिकार है।..."इस अग्रेलेख का शीर्षक है "ट्रस्टों की मुट्ठी में फैडरल गणराज्य।" लेख में यह बात भी सामने लाई गयी है कि इन पूंजीपतियों तथा इजारेदारों के एक या एक से अधिक संपर्क हैं पश्चिमी जर्मनी की संसद में।

उक्त ट्रस्टों के अलावा, फैडरल गणराज्य में हकूमत करने वालों में बड़े-बड़े २६ बैंक भी शामिल हैं। कुल मिलाकर १०० पूंजीपति और उनके सगे संबंधी पश्चिमी जर्मनी के शासक हैं। लेख में यह भी अनुमान लगाया गया है कि इन इजारेदार ट्रस्टों और बैंकों में ३० लाख लोग काम करते हैं, और ये ३६० करोड़ मार्क की पूंजी के मालिक हैं। इन ट्रस्टों तथा इजारेदारों के हितों की वकालत करने के लिये बुण्डेस्टाग (संसद) में इनके ११६ संसद-सदस्य हैं।

इन चौंका देने वाले तथ्यों पर टिप्पणी करते हुये उपर्युक्त अखबार के अग्रलेख ने लिखा है: "इन इजारेदार ट्रस्टों के चंगुल में फंसे हुये लाखों पीड़ित लोगों को मुक्ति देने के लिये यह बहुत जरूरी है कि इन की जकड़ और प्रभाव को समाप्त किया जाये। इसी से भविष्य में यहां के जनतांत्रिक अधिकार सुरक्षित रह सकते हैं।"

"सूचना पत्रिका" का वार्षिक चन्दा दो रुपये मात्र है। आज ही भेज कर ग्राहक बनिये। —संपादक

भारत [illegible] व्यापार [illegible] चीत [illegible] समारोह
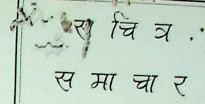
▲ भारत के शिक्षा मन्त्री, श्री मुहम्मद करीम छागला, ज. ज. ग. के भारत स्थित व्यापार-दूतावास में काम करने वाले जर्मन कर्मचारियों के बच्चों के साथ बातचीत कर रहे हैं। यह चित्र, नई दिल्ली के स्प्रिन्गडेल स्कूल के एक विशेष समारोह में लिया गया है, स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की ७५वीं वर्षगांठ पर जिसका आयोजन हुआ

▶ ज. ज. ग. की राजधानी बर्लिन में, १५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में मनाये गये त्योहारों में पश्चिमी जर्मनी के ८,००० से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। बर्लिन के मार्क्स-ऐंगल्स चौक में, उल्लास भरे एक ऐसे ही प्रदर्शन में हैम्बुर्ग (प. जर्मनी) निवासियों के एक दल का दृश्य

◀ यह है राजधानी बर्लिन के भावी रूप का नक्शा। अंकित स्थान निम्न के द्योतक हैं:
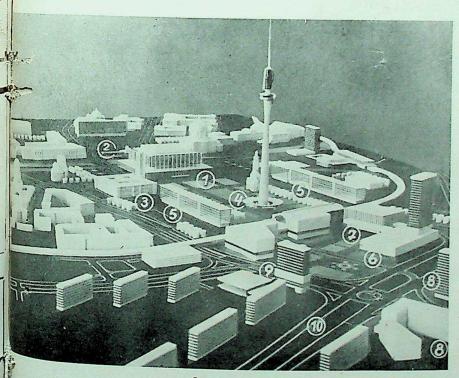
१. मन्त्रि परिषद् का अध्यक्ष-मण्डल भवन तथा लोक सभा (पीपुल्स चैम्बर)
२. मार्क्स-ऐंगेल्स चौक में मार्क्स-ऐंगेल्स स्मारक और उसका आधार-पीठ
३. टाउन हाल
४. टेलिविज़न टावर
५. मन्त्रालय
६. होटल तथा रेस्त्राँ
७. डिपार्टमेन्ट स्टोर
८. कार्यालयों के मकान
९. शिक्षक भवन तथा कांग्रेस हाल
१०. कार्ल-मार्क्स आल्ली

रजि० नं० डी०-१३३०

नव वर्ष का आशा तथा विश्वासपूर्ण अभिनन्दन

नई रूप सज्जा से अलंकृत 'सूचना-पत्रिका' का नव-वर्ष का यह प्रथम अंक, जब तक हमारे पाठकों के हाथों में पहुंचेगा, सन् १९६३, विराट इतिहास के उदर में समा गया होगा। परन्तु विदा हुये वर्ष की प्रतिध्वनि, और नव वर्ष के आगमन का उल्लास हमें प्रेरित करते हैं जर्मन जनवादी गणतंत्र की उपलब्धियों पर एक विहंगम दृष्टि डालने के लिये।

१९६३ के विकास-विवरण को देखकर, जर्मन जनवादी गणतंत्र अपने सर्वतोमुखी विकास तथा उपलब्धियों को देखकर गर्व किये बिना नहीं रह सकता। इन उपलब्धियों के जीवन्त प्रमाण, वे ढेरों तथ्य और आंकड़े हैं, स्थानाभाव के कारण जिनको उधृत करना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है। फिर भी नीचे दिये गये कतिपय आंकड़े, हमारे मन्तव्य को प्रकट तथा सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है :

जर्मन जनवादी गणतंत्र, दुनिया के दस सबसे अधिक औद्योगिक देशों में से एक है। औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से, यूरोप में इसका पांचवां स्थान है। भूरे कोयले (लिग्नाइट) के उत्पादन में इसका प्रथम स्थान है। इसी प्रकार, प्रति व्यक्ति रासायनिक उत्पादन में इसका दूसरा स्थान है। ज. ज. ग. के पोत-निर्माण उद्योग में आज ३६ गुना अधिक श्रमिक काम करते हैं सन् १९४५ के अविभाजित जर्मनी की तुलना में। इस संदर्भ में यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि आज से कुछ ही वर्ष पहले जब ज. ज. ग. ने उद्योग के इस क्षेत्र में कदम रखा तो इसका अस्तित्व नहीं के बराबर ही था। सन् १९६३ के अन्त होते-होते ज. ज. ग. के नौ-परिवहन बेड़े के मालपोतों की संख्या ९९ तक पहुंच चुकी थी। इस बेड़े के अन्तिम पोत अर्थात् ९९ वें पोत का नामकरण एक मजदूर नेता 'एर्नस्ट शमेल्लर' के नाम पर हुआ, हिटलरी दानवों ने अपने एक सैनिक शिविर में जिनकी हत्या की सन् १९४४ में।

शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति कम प्रभावोत्पादक नहीं। सन् ६३ में प्रति १०,००० व्यक्तियों में ५३ व्यक्ति, ज. ज. ग. के विभिन्न कालिजों, विश्वविद्यालयों तथा शोध-संस्थानों में उच्च-अध्ययन में संलग्न थे। इसी प्रकार, यहां के सभी स्कूलों में सामान्य माध्यमिक पोलि-तकनीकी शिक्षा दी जा रही थी। विद्यार्थियों की कुल संख्या का आधे से अधिक भाग किसान-मजदूरों के परिवारों से आया था।

भवन-निर्माण उद्योग की कहानी भी इससे भिन्न नहीं। सन् १९५८ से ६२ तक ज. ज. ग. में १२ लाख लोगों को नये रिहायशी फ्लैट उपलब्ध किये गये। सन् १९६३ में उद्योग के इस क्षेत्र को जबरदस्त गति मिली। हर छठे मिनट में यहां एक नया फ्लैट जन्म ले रहा था।

समाजवादी निर्माण की बहुमुखी प्रगति के कारण ज. ज. ग. की जनता की आय, निरन्तर वर्ष प्रति वर्ष बढ़ती रही। एक ओर जहां वस्तुओं की कीमतें विशेषकर उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें घटती रहीं, वहीं दूसरी ओर लोगों की मजदूरी, हर साल, बढ़ती गई। इस प्रकार सन् १९६३ में, ज. ज. ग. की जनता की औसत आय में २० प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई (सन् १९६२ की तुलना में)। ये कतिपय तथ्य और आंकड़े, जर्मन जनवादी गणतंत्र के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अन्य क्षेत्रों में व्यापक प्रगति के मुंह बोलते चित्र हैं। यह एक सर्वविदित बात है कि ज. ज. ग. की इस व्यापक तथा बहुमुखी विकास में सन् १९६३ की महत्वपूर्ण देन है।

लेकिन ये उद्धृत तथ्य और आंकड़े चित्र के एक ही पहलू को प्रकाश में लाते हैं। चित्र का दूसरा पहलू देखे बिना इसका सम्पूर्ण सौन्दर्य हमारे सामने नहीं आ सकता। यह दूसरा पहलू है, ज ज. ग.

भारत को नव-वर्ष पर जर्मन जनवादी गणतंत्र की शुभकामनाएं

जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति, डा. राधाकृष्णन को तार द्वारा, नव-वर्ष की शुभकामनाएं भेज दी हैं। तार में लिखा गया है :

"महामहिम, नव-वर्ष के शुभ अवसर पर राज्य-परिषद् तथा अपनी ओर से मैं, आपको और भारतीय जनता को, पावन शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

"मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि नये वर्ष (१९६४) में, हमारे दो राज्यों के वर्तमान मैत्री-पूर्ण सम्बंध अधिक विकसित तथा दृढ़तर होंगे, और हम अपने सामूहिक प्रयासों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को घटाने और विश्वशांति को कायम रखने का निरन्तर प्रयत्न करते रहेंगे।

महामहिम, आपके देश की निरन्तर प्रगति और आपके व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिये मेरी शुभ-कामनाएं स्वीकार कीजिये।"

जर्मन जनवादी गणतंत्र की मंत्रि परिषद् के अध्यक्ष ओट्टो ग्रोटवोल ने भारत के प्रधान मंत्री, श्री जवाहर लाल नेहरू को और यहां के 'पीपुल्स चम्बर' के अध्यक्ष प्रो. योहान्नेस दीकमन्न ने भारत के उप-राष्ट्रपति, डा. जाकिर हुसैन तथा लोक सभा के अध्यक्ष, सरदार हुकुम सिंह को भी नव-वर्ष की शुभकामनाओं के तार भेज दिये हैं।

की वह भूमिका, जो इसने अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अदा की सन् १९६३ में। ऐसे तथ्य तथा आंकड़ों का भण्डार मौजूद है जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में ज. ज. ग. की महत्वपूर्ण देन को स्पष्ट रूप से सिद्ध किया जा सकता है, किन्तु स्थानाभाव के कारण एक बार फिर हम कुछ ही तथ्य उद्धृत करके सन्तोष करने पर विवश हैं।

१४ वर्ष पहले, जिस दिन से जर्मन जनवादी गणतंत्र ने जन्म लिया, उस दिन से लेकर वह विश्व शांति, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, आम तथा पूर्ण निःशस्त्रीकरण और संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों आदि का समर्थन करता आया है। यूरोप के हृदय में स्थित, जर्मन भूमि पर, और जर्मन इतिहास में, प्रथम मजदूर (समाजवादी) राज्य होने के नाते, ज. ज. ग., अखिल मानवता के कल्याण और विशेषकर यूरोप की शान्ति के लिये, अपने उत्तरदायित्व तथा कर्त्तव्य के प्रति जागरूक है। इसीलिये ज. ज. ग. के सभी नेता, राजनीतिज्ञ बुद्धिजीवी आदि बार-बार, हर उस प्रस्ताव तथा सुझाव का एक मत से समर्थन करते आये हैं जो विश्व शांति को बल पहुंचाये और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करे। इस बात का ज्वलन्त प्रमाण यह है कि ज. ज. ग. उन प्रथम राज्यों में से एक है जिन्होंने विश्व महत्व की 'अणु परीक्षण मास्को संधि' पर हस्ताक्षर किये।

विगत वर्ष (१९६३) के आरंभ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्यपरिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने, सुप्रसिद्ध 'सप्त सूत्रीय प्रस्ताव' पेश किया, पश्चिमी जर्मनी को। इस प्रस्ताव का विश्व-व्यापी स्वागत हुआ। इस प्रस्ताव में, अध्यक्ष महोदय ने, दूसरे जर्मन राज्य अर्थात् पश्चिमी जर्मनी सरकार के अधिकारियों से मिलने और जायज तथा यथार्थ स्थिति के आधार पर जटिल जर्मन-समस्या को हल करने की पेशकश की थी। यह यथार्थ आधार था दोनों जर्मन राज्यों का निःशस्त्रीकरण तथा उनका शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व। लेकिन दुर्भाग्य से बोन सरकार ने, आज तक भी, इस उचित प्रस्ताव का कोई जवाब नहीं दिया है।

पश्चिमी जर्मनी के इस ग़लत रवैये से ज. ज. ग. निरुत्साहित न हुआ है और न आगे होगा। विश्व शांति तथा सह-अस्तित्व की अपनी नीति के प्रति वफादार रहते हुये, और इससे प्रेरणा पाकर ज. ज. ग. की सरकार ने, पश्चिम बर्लिन के निवासियों को (सन् १९६३ के) क्रिस्मस के पावन अवसर पर एक अनुपम उपहार दिया। ज. ज. ग. की सरकार ने पश्चिम बर्लिन के निवासियों को, क्रिस्मस तथा नव वर्ष की छुट्टियों में, ज. ज. ग. की राजधानी में आने और अपने संबंधियों से मिलने के लिये प्रवेश-पत्र देने की पेशकश की। यह पेशकश, प. बर्लिन सेनेट (नगर सरकार) को की गई। ज. ज. ग. और प. बर्लिन सेनेट के अधिकारियों में १२ दिसम्बर को बातचीत शुरू हुई जो १७ दिसम्बर के दिन सफलता पूर्वक समाप्त हुई। प्रवेश-पत्र संधि पर हस्ताक्षर हुये, और हजारों लाखों प. बर्लिन वासियों को प्रवेश-पत्र दिये गये। इस प्रकार क्रिस्मस का पुनीत पर्व, मिलन के हर्षोल्लास तथा आनन्द का साकार रूप बन गया।... पश्चिम बर्लिन सेनेट के साथ 'प्रवेश-पत्र संधि' का हार्दिक स्वागत करते हुये, अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्त ने कहा : "जर्मन समस्या के शांतिपूर्ण हल के लिये यह बात आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है कि दो जर्मन राज्यों में, और ज. ज. ग की सरकार तथा पश्चिम-बर्लिन सेनेट के दरमियान भी, सामान्य तथा शांतिपूर्ण संबंध कायम हों। इसी तरह, जर्मनी में खतरनाक तनाव पूर्ण स्थिति को धीरे-धीरे खतम किया जा सकता है।..." प्रवेश-पत्र संधि के परिणामस्वरूप, प. बर्लिन के लगभग १० लाख निवासी, ज. ज. ग. की राजधानी में दाखिल हुए और अपने सगे-संबंधियों के साथ उन्होंने वहां क्रिस्मस मनाया।

विभिन्न देशों के बीच व्यापार तथा सहयोग आजकल के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का एक आधार-स्तम्भ तथा प्रमुख सिद्धान्त बन चुका है। दूसरे शब्दों में, भिन्न समाज-व्यवस्थाओं वाले राज्यों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विश्व शांति को सुरक्षित रखने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को दृढ़ बनाने के लिये एक बहुत बड़ी देन है। ज. ज. ग. इस देन के महत्व को अच्छी तरह समझता है। इसी लिये उसने विश्व के लगभग सभी देशों के साथ अपने

नया वर्ष शुभ हो

भारत स्थित **जर्मन जनवादी गणतंत्र** के व्यापार दूतावास के सदस्य-गण तथा **सूचना-पत्रिका** के संपादक-मण्डल के सदस्य, अपने पाठक बन्धुओं और समस्त भारतीय जनता को नव-वर्ष की शुभ-कामनायें अर्पित करते हैं।

—संपादक

...माना के रिश्ते कायम किये हैं। अफ्रो-एशिया तथा लातीनी अमरीका के उदीयमान, नये राज्यों क साथ खासतौर पर उसने अपने निकटतम और मैत्रीपूर्ण रिश्ते स्थापित किये हैं। माल विनिमय तथा आयात-निर्यात और नवीनतम तकनीकी प्रशिक्षण के द्वारा ज. ज. ग., इन देशों के आर्थिक-नव निर्माण तथा विकास में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है। इस कथन की सचाई सिद्ध करने के लिये, भारत तथा जर्मन जनवादी गणतंत्र के बीच व्यापार का उदाहरण लिया जा सकता है।

भारत तथा ज. ज. ग. के बीच प्रथम व्यापार-संधि सन् १९५४ में हुई। तब से लेकर आज तक दोनों देशों के बीच कुल व्यापार-परिमाण, निरन्तर बढ़ता रहा है। दोनों देशों के बीच, सन् १९६४ के लिये माल-विनिमय की संधि पर, २८ दिसम्बर, १९६३ के दिन दस्तखत हुए। इस संधि के अनुसार, सन् ६४ में, ज. ज. ग. तथा भारत के बीच पैंतीस, पैंतीस (३५) करोड़ रुपयों की रकमों के मूल्य के माल का विनिमय होगा, अर्थात सन् १९६३ के कुल व्यापार से ३५ प्रतिशत अधिक। अन्य अफ्रो-एशियाई देशों क साथ भी ज. ज. ग. के व्यापार में लगभग इसी प्रकार की वृद्धि देखी जा सकती है। सन् १९६४ में ज. ज. ग. क कुल विदेश-व्यापार परिमाण का मूल्य लगभग २२,००० मिलियन मार्क, अर्थात् २२ अरब मार्क (२२०,०००,०००,००) होगा, (१ मार्क = १.१२ न. पै.)।

उल्लिखित तथ्यों तथा आंकड़ों के आधार पर सहज ही इस निर्णय पर पहुंचा जा सकता है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र राष्ट्रीय पैमाने पर समाजवादी निर्माण की नीति को प्रश्रय दे रहा है, और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वह विश्व शांति तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की शक्तियों को अपना सतत तथा सक्रिय समर्थन प्रदान करके उनको मजबूत बनाता है। १३ नवम्बर, १९६३ के दिन, ज. ज. ग. की नई लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) में उद्घोषित 'नीति वक्तव्य' के शब्दों द्वारा, इस अग्रलेख का अन्त करना समयोचित होगा। इस वक्तव्य में कहा गया है:

"जर्मन जनवादी गणतंत्र का यह निश्चित मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय तनावों को घटाने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति को सफल बनाने के लिये, विभिन्न राज्यों के बीच सामान्य संबंधों का होना एक अनिवार्य आवश्यकता है।...

"बहुत समय से, ज. ज. ग. को एक प्रभुसत्तात्मक राज्य के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। इस समय दुनिया के ३४ देशों के साथ इसके राजनयिक, कौंसली तथा अन्य सम्बन्ध कायम हैं। इन देशों की जन-संख्या, विश्व की कुल जन-संख्या के अर्ध-भाग से ज्यादा है।...

"जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार इस बात की भी घोषणा करती है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये लड़े जाने वाले मुक्ति आंदोलनों का वह यथावत समर्थन करती रहेगी। भविष्य में भी, ज. ज. ग., क्रूर उपनिवेशवादी व्यवस्था, और इसके रंग तथा जातिभेद आदि जैसे सभी रूपों को खत्म करने की निरन्तर मांग करता रहेगा।..."

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि ईमानदार तथा स्पष्ट समाजवादी नीति ही जर्मन जनवादी गणतंत्र का अक्षय प्रेरणा-स्रोत है। इसी से बल पा कर, जहां एक ओर ज. ज. ग. ने सन् १९६३ को संतोषपूर्ण विदाई दी, वहीं दूसरी ओर, उसने नव-वर्ष १९६४ का स्वागत किया दृढ़ विश्वास और नई आशा तथा उत्साह से। शीत-युद्ध की जमी बर्फ पिघलने लगी है। इसलिये महान कवि 'शैले' के आशापूर्ण स्वर से स्वर मिलाकर, आज हम भी गा सकते हैं:

'शिशिर यदि आया
वसन्त भी दूर कितना ?
(उसका आगमन निश्चत)!...'

निरन्तर उत्पादन वृद्धि के लिये कारखानों में स्वचालन-विधि लागू करना अनिवार्य है। नीचे है बर्लिन का पूर्ण स्वचालित-पद्धति से चलने वाला एक कारखाना
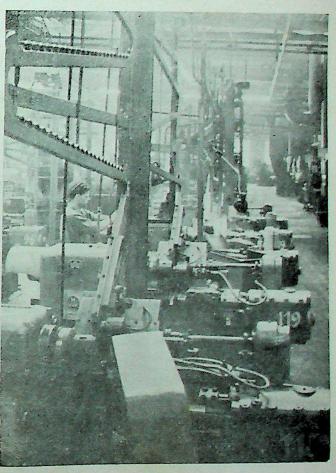
विल्ली स्टोप

मन्त्रि-परिषद् के प्रथम उपाध्यक्ष

श्री विल्ली स्टोप का जन्म एक श्रमिक परिवार में हुआ आज से ४६ वर्ष पहले। उन्होंने राजगीरी का पेशा अपना लिया, और बाद में पत्र-व्यवहार विधि द्वारा वास्तु टेकनालोजी का अध्ययन किया।

सन् १९२८ में, १७ वर्ष की आयु में श्री स्टोप 'जर्मन कम्यूनिस्ट युवक लीग' में शामिल हुये, और तीन साल बाद, सन् १९३१ में वे 'जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी' के सदस्य बने। सन् १९३३ से १९४५ तक जर्मनी को फासिस्टवाद की काल-रात्रि ने ढक लिया। इस क्रूर और अन्धकारपूर्ण युग में वहां न केवल कम्युनिस्ट पार्टी को ही गैर-कानूनी करार दिया गया, बल्कि हिटलर तथा उसकी विकाल नाजी पार्टी का विरोध करने वाले प्रत्येक दल, पार्टी तथा व्यक्ति को क्रूरतम दमन से दबा दिया गया। देशभक्तों के लिये मृत्यु-दण्ड तथा सैनिक शिविरों की यातना पूर्ण क़ैद निश्चित थी। लेकिन इस दमन और बर्बरता के खिलाफ जहाद करने के लिये, जो गुप्त आन्दोलन संगठित हुआ, उसमें जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी पेश-पेश थी। कहने की आवश्यकता नहीं कि श्री विल्ली स्टोप ने, फासिस्टवाद-विरोधी इस गुप्त आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

दूसरे महायुद्ध और हिटलर के विनाश के बाद, श्री स्टोप, कम्युनिस्ट पार्टी और बाद में, जर्मन जनवादी गणतन्त्र में, कम्युनिस्ट तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों के विलयन से उद्भूत 'जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी' के जिम्मेदार पदों पर काम करते रहे। १९५० में वे 'समाजवादी एकता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के, और १९५३ में उसके पोलिटिकल व्यूरो के सदस्य बन गये। सन् १९५२ में से '५५ तक, श्री विल्ली स्टोप, जर्मन जनवादी गणतन्त्र के अन्तरंग मंत्री, और सन् १९५६ से १९६० तक राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्री तथा सेना-जनरल के पदों पर आसीन रहे। सेना-जनरल, ज. ज. ग. की 'राष्ट्रीय जन सेना' का सर्वोच्च पद है। सन् १९५४ में श्री स्टोप, ज. ज. ग. की मंत्रि परिषद के डेपुटी और सन् १९६२ में इस परिषद के प्रथम उपाध्यक्ष बन गये। वे ज. ज. ग. की लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) तथा राज्य परिषद के भी सदस्य हैं।

कठिनतम कठिनाइयों तथा ज़बरदस्त खतरों में पड़कर भी, श्री विल्ली स्टोप की राजनैतिक मान्यतायें कभी भी डगमगा नहीं गयीं और वे हमेशा जनता के हितों के लिये संघर्षरत रहे हैं। उनकी जन-सेवाओं को देखते हुये ज.ज.ग. की सरकार ने श्री स्टोप को, देशभक्ति का 'स्वर्ण पदक' और 'फासिस्टवाद विरोधी योद्धा १९३३-४५' के पदक से सम्मानित किया है।

जर्मन श्रमिक वर्ग के प्रतिनिधि कवि | एरिख वाइनर्ट

'सूचना पत्रिका' के पाठक स्व. एरिख वाइनर्ट की रचना 'पाषाण खण्डों का गीत' भूले नहीं होंगे। हम इसको, अनुवाद के रूप में 'पत्रिका' के अक्तूबर, १९६३ के अंक में प्रस्तुत कर चुके हैं। इस रचना से सम्बन्धित प्रशंसा के सैकड़ों पत्र हमको प्राप्त हो चुके हैं अब तक, जिनमें से अनेक पाठकों ने स्व. वाइनर्ट का संक्षिप्त जीवन-परिचय उपलब्ध करने की मांग की है। अपने पाठकों की जिज्ञासा की पूर्ति के लिये श्रमिक वर्ग के इस समर्थ तथा शक्तिशाली कवि का परिचय हम नीचे दे रहे हैं।

—संपादक

स्वर्गीय एरिख वाइनर्ट का जन्म हुआ था ४ अगस्त, सन् १८९० के दिन, जर्मनी के माग्देबुर्ग स्थान में जो अब जर्मन जनवादी गणतंत्र का एक प्रान्त है। उनके पिता इंजीनियर थे जो राजनीतिक विचारों से प्रभावित एक सोशल-डेमोक्रेट थे। अपने ऐसे पिता से श्री वाइनर्ट को, श्रम को सम्मान तथा गौरव से देखने की दृष्टि मिली। १४ वर्ष की आयु में एक इंजीनियरी फैक्ट्री में वह पहले मैकेनिक और बाद में टर्नर के रूप में काम करते रहे। इस तरह चित्रकार बनने की उनकी साध मन में ही रह गई। सन् १९१२ में श्री वाइनर्ट एक व्यावसायिक कला स्कूल से ग्रेजुएट बनकर निकले। कला के इस अध्ययन ने उनको सूक्ष्म वस्तुओं तथा विशेषताओं को गहराई से देखने की क्षमता प्रदान की। श्री वाइनर्ट की रचनायें, दैनिकी तथा रेखाचित्र इस तथ्य के प्रमाण हैं।

ग्रेजुएशन करने के बाद, श्री एरिख वाइनर्ट भाषा और साहित्य के गहन तथा गंभीर अध्ययन में लग गये और यहीं से उन्होंने काव्य रचना के प्रथम प्रयास शुरू किये। यद्यपि प्रथम महा युद्ध ने उनके इन प्रयत्नों में बाधा डाली कुछ समय के लिये, लेकिन नवोदित कवि के जीवन में यह घटना भी एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। सेना में भरती होकर उन्होंने युद्ध की बीभत्सता देखी। सनिक जीवन का परित्याग करने के बाद, श्री वाइनर्ट, जर्मन श्रमिक वर्ग के हितों की रक्षा के लिये एक सक्रिय तथा कर्मठ योद्धा बने। ऐसा करने का प्रमुख कारण यह था कि उन्होंने, जर्मनी के सोशल-डेमोक्रेटों को देश की नवम्बर, १९१८ की क्रांति के साथ विश्वासघात करते अपनी आंखों से देख लिया था। इस गद्दारी से श्री वाइनर्ट के दिल को काफी ठेस तो लगी लेकिन फिर भी वह निराश नहीं हुये। सोशल-डेमोक्रेटों के इस विश्वासघात से बल्कि उनकी कर्मठता में अधिक निखार आया और दिल में नया उत्साह तथा नई आग लेकर वे राजनीतिक संघर्ष के मैदान में कूद पड़े। विराट जन-सभाओं के सामने, श्री वाइनर्ट, अंगारे बरसाने वाली अपनी कवितायें पढ़ने लगे।

सन् १९२१ में, श्री एरिख वाइनर्ट ने, लाइपज़िक में एक राजनीतिक साहित्यिक क्लब संगठित किया, जो जनसाधारण में बहुत लोकप्रिय हुआ लेकिन जो पूंजीपतियों तथा उनके दुमछल्लों की घृणा का पात्र बन गया। श्रमिक जनता के इन शत्रुओं को नंगा करने के लिये श्री वाइनर्ट ने काव्य का अमोघ अस्त्र चुना। अपने हास्य तथा व्यंग्य के तीखे बाणों से कवि ने टटपूंजियों के हृदय छलनी कर दिये और वे बौखला गये कवि के कटु प्रहारों से।...कवि की रचनाओं का प्रथम संकलन सन् १९२३ में प्रकाशित हुआ जिसका चित्रांकन उन्होंने स्वयं किया था।

लाइपज़िक के बाद, एरिख वाइनर्ट ने, बर्लिन को अपनी साहित्यिक सरगर्मी का केन्द्र बनाया। लेकिन कुछ समय के बाद, विशाल जनता के साथ अपने इस सीमित संपर्क से उनको सन्तोष न हुआ। इसलिये उन्होंने मजदूर-सघों और श्रमजीवियों की सभाओं में भाग लेना शुरू किया। परिणाम-स्वरूप सन् १९२४ में, श्री वाइनर्ट जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और क्रांतिकारी मजदूरों तथा उनके तूफानी संघर्ष के एक अभिन्न अंग बन गये। जर्मनी के किसी भी कोने में जहां मजदूरों की सभा होती थी, कवि वाईनर्ट की मांग की जाती कवितायें सुनाने के लिये। इस मांग का परिणाम यह निकला कि उन्होंने, हिटलर के उदय के लगभग एक दशक पहले तक, जर्मनी के कोने-कोने में, २००० जन-सभाओं के सम्मुख अपनी कवितायें सुनाई थीं। इस तूफानी युग का स्मरण करते हुये बाद में कवि ने अपनी दैनिकी में लिखा : "एक शाम को डार्नसिग की जन-सभा में कविता सुनाने के बाद, उसी रात को गाड़ी पकड़नी पड़ी क्योंकि दूसरे दिन की शाम को राइनलैण्ड की दूसरी जनसभा में मुझे कविता-पाठ करना था। वहां अपनी कवितायें सुनाकर, फौरन एक्स-प्रेस गाड़ी के द्वारा मैं अप्पर सिलेज़िया जा पहुंचा जहां मुझे एक भाषण देना था दूसरी शाम को।..."

इस महान कवि की काव्य प्रतिभा इतनी प्रखर थी कि कभी कभी, विराट जन-सभाओं की ओर जाते-जाते वे अपनी कविताओं की

रचना १५ या २० मिन्ट में करते थे। इन रचनाओं का वर्ण्य-विषय मुख्यतः कोई सामयिक घटना ही हुआ करती थी। फलस्वरूप, श्रोताओं पर इनका ज़बरदस्त प्रभाव पड़ता था। श्री वाइनंट की कविताओं की प्रत्येक पंक्ति, शब्द तथा पद फासिस्टादियों और उनके गुर्गों पर एक तीव्र तथा निर्मम प्रहार हुआ करता था। इन प्रहारों से जहां धन्ना सेठ तथा जनता के शोषक बौखला उठते और गुस्से से पागल हो जाते थे, वहां दूसरी ओर जर्मन की विशाल श्रमिक जनता को अथाह बल और प्रोत्साहन मिला करता था इनसे। कवि अपनी रचनाओं में नये, शोषणहीन, समाजवादी समाज के भव्य चित्र खींचता और जनता का ध्यान सोवियत संघ की ओर आकर्षित करता जहां का श्रमिक वर्ग इस समाज का निर्माण कर रहा था।

दिनों और मासों के बीतने के साथ-साथ श्री एरिख वाइनर्ट की वाणी प्रखर से प्रखरतर होती गई और उसमें एक नया ओज तथा कलात्मक निखार भी आ गया। इसलिये जन-विरोधी तथा जन-घाती तत्व उनकी इस वाणी को खामोश करने की तदबीरें करने लगे। हिटलर के 'ब्राउन शर्ट' नामक सैन्यदल के जत्थों ने उनको 'खत्म करने' की धमकी दी। लेकिन इन जघन्य धमकियों से कवि पर उल्टा असर हुआ। उन्होंने अपनी वाणी में अधिक आग भर दी। उनकी आवाज़ और ऊंची उठी, उन जन-विरोधी शक्तियों के खिलाफ। जब जनता के इस वरद कवि को प्रति-क्रियावादी किसी तरह से भी चुप न करा सके, तो जर्मनी में तद्कालीन गृह-मंत्री ने किसी भी जनसभा में श्री वाइनर्ट के कविता पाठ पर सख्त पाबन्दी लगा दी। इस तरह जर्मनी की प्रतिक्रियावादी तथा जन-विरोधी शक्तियों ने यह समझ लिया कि वे शेर की गरजना बन्द करने में सफल हो गये हैं। यह उनकी भूल थी। कवि की वाणी और रवि की किरणों को कोई भी नहीं बांध पाया है आज तक।... श्री एरिख वाइनर्ट ने एक नई तरकीब खोज निकाली कविता-पाठ करने की। वे एक विराट जनसभा में गये। मंच पर चढ़े। पोलिस तैयार थी कि कब कवि के होंठ हिलें और वे उनके हाथों में हथकड़ी डालें। लेकिन उनकी यह साध पूरी न हो सकी, क्योंकि कवि मंच पर चुपचाप खड़ा रहा, और उनकी कविता का रिकार्ड बजने लगा। विराट जनसमूह ने कवि की इस नई तरकीब का तालियों की गड़गड़ाहट से अपार स्वागत किया।... लेकिन जब जर्मनी की प्रति-क्रियावादी सरकार ने वाइनर्ट की कविताओं के रिकार्ड बजाने पर भी पाबन्दी लगाई तो कवि की पत्नी उनकी कवितायें जन सभाओं में पढ़कर सुनाया करती थीं।...

सन् १९३३ में, जर्मनी की राजसत्ता हथियाने के लिये जब फासिस्टों ने राइसटाग (जर्मन संसद भवन) जलाया, उस समय श्री एरिख वाइनर्ट स्विटज़रलेंड की यात्रा कर रहे थे। इसलिये वे नाज़ियों के जाल में फंसने से बच गये। लेकिन जर्मनी की श्रमिक जनता से कट जाने के कारण, निष्कासन काल में, कवि को गहरा सदमा पहुंचा। किन्तु जर्मन जनता के अथाह विश्वास ने उनको निराश होने नहीं दिया। जर्मन जनता तथा अखिल मानवता के शत्रु फासिस्टों पर, वे अपनी रचनाओं के अग्नि-बाण बरसाते रहे।... और जब स्पेन के नवजात लोकतंत्र की बोटियां उड़ाने के लिये फासिस्ट दरिन्दे उस पर झपट पड़े तो कवि वाइनर्ट ने, न केवल स्पेन में लड़ने वाले "इंटरनेशनल ब्रिगेड" के वीर योद्धाओं को अपनी रचनाओं से स्फुर्ति प्रदान की, बल्कि खुद बन्दूक संभाल कर उनके कन्धों से कन्धा भिड़ाकर वे फासिस्टों के खिलाफ लड़ते रहे।... अपने योद्धा साथियों के साथ आखिर उनको फ्रांस में शरण लेनी पड़ी, लेकिन वहां फ्रांस की प्रतिक्रियावादी सरकार ने उन सबों को, सेन्ट साइप्रा नामक शिविर में बन्द कर दिया।

आखिरकार एरिख वाइनर्ट को सोवियत संघ में शरण मिली। वहां कवि ने असा-धारण तेज़ी से रूसी भाषा सीखी। उन्होंने प्रसिद्ध रूसी लेखक लेरमोन्तोव की कृति "दानव" का रूसी भाषा से, और यूक्रेन के लोकप्रिय कवि तारस शेफचेनको की रचनाओं का यूक्रेनी भाषा से जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

सन् १९४१ में जब हिटलर ने सहसा सोवियत संघ पर आक्रमण किया तो श्री वाइनर्ट के अपेक्षाकृत शान्त जीवन में एक और तूफान उमड़ आया। बर्फीले तूफानों में, रात को अथवा दिन में कवि, वोल्गा तथा डोन के युद्ध क्षेत्र में जाता, और मोर्चे के इस ओर माइक हाथ में लेकर, वह मोर्चे के उस ओर खन्दकों में पड़े हुये जर्मन सैनिकों को, जंग तथा जर्मनी की तबाही को रोकने की अपीलें करता—अपनी कविताओं के माध्यम से।...एक बार इस तूफानी दौरे में जब वे ठण्ड खाकर बीमार हुये और डाक्टरों ने उनको जल्दी विश्राम करने की सलाह दी, तो कवि ने जर्मन सैनिकों की लाशों के ढेरों की ओर संकेत करते हुये कहा: 'ये सभी नवयुवक थे। मोर्चे के उस तरफ जो अभी जीवित हैं, उनको सचाई से आगाह करना मेरा कर्तव्य है। उनको यह जानना ही होगा कि वे जर्मनी के लिये नहीं बल्कि हिटलर और उसके फासिस्ट दरिन्दों के लिये अपनी बलि चढ़ा रहे हैं। वे जर्मन राष्ट्र के पुत्र हैं, और दूर घर में उन सब की मातायें उनके लिए चिंतित हैं।...'

श्री एरिख वाइनर्ट के ये अनथक प्रयत्न व्यर्थ नहीं गये। उनकी पुकार को सुनकर अनेक जर्मन सैनिक तथा अफसर अपनी सेना को छोड़कर इस ओर सोवियत संघ में आ गये। उन सब ने मिलकर 'स्वतंत्र जर्मनी' नामक एक संगठन स्थापित किया। इसका प्रमुख उद्देश्य था एक नये, स्वस्थ तथा मानवीय जर्मनी की स्थापना करना। इस संगठन के अध्यक्षपद के लिये, एरिख वाइनर्ट से अधिक उपयुक्त और कौन हो सकता था।

आखिर फासिस्टवाद की कालरात्रि का अन्त हुआ, और सोवियत सेनाओं ने हिटलर की 'अजेय' सेनाओं की कमर तोड़ दी। कविवर वाइनर्ट का निष्कासन भी समाप्त हुआ और वे १३ वर्षों के बाद स्वदेश लौटे। क्रांतिकारी जीवन के कठिन संघर्षों ने उनके स्वास्थ्य को विच्छिन्न कर दिया था। लेकिन बेचैन कवि को विश्राम कहां। अपने बर्लिन की अत्यन्त तबाही देखकर उनका कवि-हृदय तड़प उठा। भूखे, ठण्ड से ठिठुरते और हताश बर्लिन-निवासियों को

(शेष पृष्ठ १३ पर)

औद्योगीकरण का महत्व

डा. हाइनेर विकलेर

इस समय, जर्मन जनवादी गणतंत्र का औद्योगिक उत्पादन लगभग महायुद्ध-पूर्व अविभाजित जर्मनी के बराबर है। हमारे अर्थ-शास्त्रियों ने अनुमान लगाया है कि सन् १९६१ के अन्त होते होते, जर्मन जनवादी गणतंत्र का औद्योगिक उत्पादन सन् १९३६ के पूरे जर्मनी के उत्पादन के ९०% भाग के बराबर हो चुका था। इस संबंध में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि वर्तमान ज.ज.ग. का कुल क्षेत्र, पुरानी जर्मनी के कुल क्षेत्रफल के एक चौथाई भाग से भी कम है। सन् १९६४ के अन्त पर, उत्पादन संबंधी निर्धारित लक्ष्य यदि पूरा हो जायेगा तो हमारा औद्योगिक उत्पादन सन् १९३६ की भूतपूर्व जर्मनी के उत्पादन के बराबर हो जायेगा। इस संदर्भ में इस बात को यदि नजरअंदाज न किया जाये कि भूतपूर्व, संयुक्त जर्मनी आर्थिक दृष्टि से काफी शक्तिशाली थी तो "छोटे" जर्मन जनवादी गणतंत्र की उक्त उपलब्धियां एक चमत्कार से कम नहीं। नीचे हम, ज. ज. ग. के औद्योगीकरण के संबंध में एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करेंगे जो यह दिखाने में सहायक सिद्ध होगा कि अपने औद्योगिक विकास में ज. ज. ग. ने कितनी कठिनाइयों को झेला और कितनी बाधाओं को पार किया।

पिछले कई वर्षों में, ज. ज. ग. का वार्षिक औद्योगिक उत्पादन, काफी तेजी से बढ़ता रहा है। सन् १९६२ में, जर्मनी के इस भूभाग (ज. ज. ग.) का कुल औद्योगिक उत्पादन सन् १९३६ की जर्मनी के उत्पादन से ३-१/२ गुना था।

जर्मन जनवादी गणतंत्र की प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान ही हम, औद्योगिक उत्पादन को युद्ध-पूर्व उत्पादन से दुगुना करने में सफल हुये थे। इस निरन्तर औद्योगिक विकास के परिणाम-स्वरूप ज. ज. ग. आज दुनिया का दसवां और यूरोप का छठा औद्योगिक देश है। सम्पूर्ण अफ्रीकी महाद्वीप के कुल औद्योगिक उत्पादन, ज. ज. ग. के उत्पादन से कम है। उद्योगों में काम करने वाले व्यक्तियों की दृष्टि से हमारे देश का यूरोप में छठा स्थान है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ज. ज. ग. यूरोप के सबसे अधिक औद्योगिक देशों में से एक है। ज. ज. ग. जैसे अपेक्षा-कृत छोटे देश में (प्रकृति भी जिसके अनुकूल नहीं) ऐसी उपलब्धियां इस बात की साक्षी हैं कि यदि श्रमिक जनता, बुद्धिजीवी त ा अन्य वर्ग ईमानदारी से और जागरूक होकर समाजवादी समाज के निर्माण में योग दें तो आश्चर्य जनक परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

शक्ति-उत्पादन : किसी भी औद्योगिक देश के विकास-स्तर का एक सबसे निर्णायक मापदण्ड है उसका शक्ति-उत्पादन। सभी औद्योगिक देशों में, उद्योग की शक्ति-उत्पादन शाखा सबसे अधिक विकासशील शाखा है। पिछले ५० वर्षों में, विश्व की औसत विद्युत-शक्ति का उपभोग प्रति दशक में दुगुना बढ़ गया है। उत्पादन की सभी भावी समस्याओं का हल है सम्पूर्ण देश का विद्युतकरण। नये बुनियादी कच्चे मालों का विकास करना, उद्योग की सभी शाखाओं में रासायनिक प्रक्रियाओं का प्रयोग करना, और उत्पादन को स्वचालन पद्धति पर लाना—यह सब तभी संभव हो सकेगा जब विद्युत-शक्ति उपलब्ध हो। यही कारण है कि हमारा गणतंत्र निरन्तर बढ़ती हुई विद्युत-शक्ति की मांग को पूरा करने के लिये प्रयत्नशील है। महायुद्ध के पहले, ज.ज.ग. के भूभाग में, १९,००० मिलयन (१ मिलयन = १० लाख) किलोवाट-घण्टे बिजली पैदा होती थी। सन् १९६२ में यह उत्पादन ४५,७०० मिलियन किलोवाट-घण्टे तक पहुंच चुका था। इस वर्ष ज. ज. ग. सन् १९३६ की भूतपूर्व जर्मनी के कुल बिजली उत्पादन से (जिसका क्षेत्रफल ज. ज. ग. के क्षेत्रफल से चार गुना था), ५,८०० मिलियन किलोवाट-घण्टे अधिक बिजली पैदा करेगा। अनुमान लगाया गया है कि सन् १९७० तक ज. ज. ग. की विद्युत-शक्ति का उत्पादन ७६,००० मिलियन किलोवाट-घण्टे तक पहुंच जायेगा—अर्थात् १९६२ के उत्पादन में १६६% की वृद्धि होगी।

जर्मन जनवादी गणतंत्र का शक्ति-उत्पादन अब बेलजियम, फिनलैण्ड तथा हालैण्ड के संयुक्त उत्पादन के बराबर है। प्रति व्यक्ति विद्युत-उत्पादन में ज. ज. ग. पश्चिमी जर्मनी से आगे है। ज. ज. ग. का प्रति-व्यक्ति बिजली उत्पादन है २६३१ कि. वा. घण्टे, जबकि पश्चिमी जर्मनी का यह उत्पादन केवल २२६० कि. वा. घण्टे प्रति व्यक्ति है। . . . समाजवादी देशों में, शक्ति-उत्पादन की दृष्टि से ज. ज. ग. का दूसरा स्थान है सोवियत संघ के बाद।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

नई रोस्टाक बन्दरगाह का एक दृश्य

लाइपज़िक में बसन्तकालीन व्यापार मेले की तैयारियाँ

सन् १९६४ का आगामी लाइपजिक बसन्तकालीन व्यापार मेला १ मार्च को शुरू होगा और १० मार्च को समाप्त। इस वर्ष के उक्त मेले का मुख्य नारा होगा : "तकनीकी प्रगति, स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की सेवा के लिये।..."

सन् ६४ के लाइपजिक बसन्तकालीन मेले के आस-पास ही संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित "व्यापार तथा विकास सम्मेलन" भी होगा। दो आयोजनों का यह सानिध्य, भेदभाव तथा बाधा-हीन और स्वतन्त्र विश्व व्यापार के विकास के लिये एक वरदान सिद्ध होगा।

सन् १९६३ के लाइपजिक व्यापार मेलों को (ये मेले साल में दो बार होते हैं —सं.) आशातीत सफलता तो मिली ही, साथ ही यह बात भी स्पष्ट हुई कि अनेक देशों की व्यापार संस्थायें, फर्में तथा व्यापारी —जिनमें पश्चिमी जर्मनी तथा पश्चिमी बर्लिन के व्यापारी तथा फर्में भी शामिल हैं—व्यापार बढ़ाने के लिये बहुत उत्सुक हैं। इस संदर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि गत वर्ष (१९६३) के हेमन्तकालीन लाइपजिक मेले में भाग लेने वाली पश्चिमी जर्मनी तथा प. बर्लिन की व्यापार-फर्मों की संख्या बसन्तकालीन मेले में भाग लेने वाली फर्मों से कहीं अधिक थी।

लगता है कि इस वर्ष का बसन्तकालीन लाइपकजि मेला अत्यधिक सफलता प्राप्त करेगा। समुद्रपार देशों की और अधिक संख्या इस मेले में भाग लेगी इस बार। वैसे भी सन् १९६३ के बसन्तकालीन लाइपजिक मेले में, भाग लेने वाले आधे से अधिक समुद्र पार देश ही थे, जिनमें अधिकांश नवजातराज्य थे...। जहां तक पश्चिमी यूरोप के देशों का सवाल है, यह बात विश्वास के साथ कही जा सकती है कि आस्ट्रिया, स्वीडन, हालैण्ड, ब्रिटेन तथा फ्रांस की बड़ी-बड़ी तथा विश्व-प्रसिद्ध व्यापार फर्में तथा संस्थायें, इस बार भी, बसन्तकालीन मेले में भाग लेंगी।

सन् ६४ के बसन्तकालीन लाइपजिक मेले में सोवियत संघ, यथावत अपना सामूहिक विशाल प्रदर्शन लेकर आ रहा है। मेले में भाग लेने वाले समाजवादी देशों में सोवियत संघ सब से महत्वपूर्ण प्रदर्शक होगा। प्रदर्शनी में यह देश, अपने निर्माण की आश्चर्यजनक सफलताओं का प्रदर्शन करेगा।

नया तैयार हुआ यह विराटाकार क्रेन लाइपज़िक मेले के एक मण्डप में रखा हुआ है

मेले का क्षेत्रफल : ३ लाख वर्ग-मीटर

आगामी बसन्तकालीन मेले का कुल क्षेत्रफल होगा ३००,००० वर्ग-मीटर। इस क्षेत्र में विभिन्न उद्योगों की ५५ शाखाओं के मण्डप होंगे, जिनमें से विशेष उल्लेखनीय हैं रसायन, रासायनिक कारखाने, मशीनी औज़ार और इलेक्ट्रानिकी उपकरण प्रदर्शित करने वाले मण्डप। इनके अतिरिक्त मोटरगाड़ी उद्योग, कृषि यंत्र तथा ट्रैक्टर, टेक्साटाइल मशीनें और अन्य औद्योगिक शाखाओं के उत्पादन भी प्रदर्शित होंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियां

इस वर्ष के बसन्तकालीन मेले में भाग लेने वालों के लिये, मेले के संयोजक—अर्थात् 'टेकनोलोजी का चैम्बर' कई गोष्ठियां, परिसंवाद, गोल-मेज़ वार्तायें, फिल्म-प्रदर्शन आदि आयोजित करने की पूरी-पूरी तैयारी कर रहा है। इन आयोजनों तथा विशेष कार्यक्रमों में, मेले में भाग लेने वाले देशों तथा फर्मों के विशेषज्ञों को अपने ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान करने का सुअवसर मिलेगा।

पदक और सम्मान

गत वर्ष की तरह, बसन्तकालीन

(शेष पृष्ठ १४ पर)

उल्लास तथा आनन्द भरा क्रिसमस

जर्मन जनवादी गणतंत्र में क्रिसमस, विशेष उल्लास और आनन्द भरा था इस साल (१९६३)। आधी-आधी रात तक चलने वाले अनेक क्रिसमस मेलों का अन्त हुआ अगले वर्ष के बड़े दिनों तक। हर जगह एक ही दृश्य देखने को मिलता था: भरी पूरी दुकानों में, अपने प्रियजनों के लिये क्रिसमस-उपहारों का चयन करते हुये प्रसन्न तथा खुशहाल खरीदारों के हजूम, इस गहमागहमी को आश्चर्य चकित दृष्टि से देखने वाले नन्हे-नन्हे बालक, और सेबों, अखरोटों तथा अदरक सनी डबल रोटियों की लुभावनी मिश्रित गंध!.... संक्षेप में चारों ओर प्रसन्नता तथा खुशहाली का फैला वातावरण आंखों का स्वागत करता था।

ज. ज. ग. के सीमा-सुरक्षक विनम्रता तथा सहयोग की मूर्ति हैं। क्रिसमस मनाने के लिये ज. ज. ग. में आने वाले लाखों पश्चिम बर्लिन वासियों का इन गार्डों ने हार्दिक स्वागत किया

क्रिसमस के इस प्रसन्न तथा पावन वातावरण में, इस वर्ष (१९६३), द्विगुणित अभिवृद्धि हुई। इसका एक विशेष कारण यह था कि दो वर्षों से अधिक अवधि के बाद, पश्चिम बर्लिन के निवासियों को, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राजधानी—अर्थात् जनवादी बर्लिन में आने और अपने निकट संबंधियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ था।...जर्मन जनवादी गणतंत्र के सद्-प्रयत्नों के कारण और एक लम्बी बातचीत के बाद आखिरकार, ज. ज. ग. की सरकार तथा पश्चिम-बर्लिन सेनेट (नगर-प्रशासन) के प्रतिनिधियों ने एक संधि पर हस्ताक्षर किये जिसके फलस्वरूप हजारों, लाखों पश्चिम बर्लिन वासियों को, ज. ज ग. की राजधानी में आने के लिये अनुमति-पत्र (एण्ट्री-पर्मिट्स) दिये गये, ताकि वे अपने सगे-संबंधियों के साथ, क्रिसमस का पुनीत पर्व मनायें। पश्चिम बर्लिन के इन लाखों नगर-वासियों ने, इस संधि का स्वागत किया और इसको शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति की दिशा में एक महत्वपूर्ण तथा सफल प्रयत्न बताया। राज्यों के बीच सामान्य रिश्तों की स्थापना और तनाव का घट जाना लोकहित के लिये उपकारी है, यह बात बर्लिन वासियों ने अपने उक्त अनुभव से जान ली।..

कुमकुमों से सजा हुआ बर्लिन का एक वार्षिक क्रिसमस मेला। स्थान है कार्ल मार्क्स स्तादत

यह संधि, एक लघु किन्तु महत्वपूर्ण प्रारम्भ है। उदार तथा उदात्त भावनाओं के ऐसे ही वातावरण में यदि अन्य बड़ी-बड़ी तथा महत्वपूर्ण समस्यायें भी हाथ में ली जातीं, तो कोई कारण नहीं कि वे भी शांतिपूर्ण ढंग से हल न हों!....
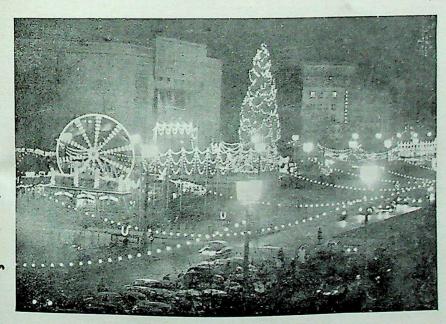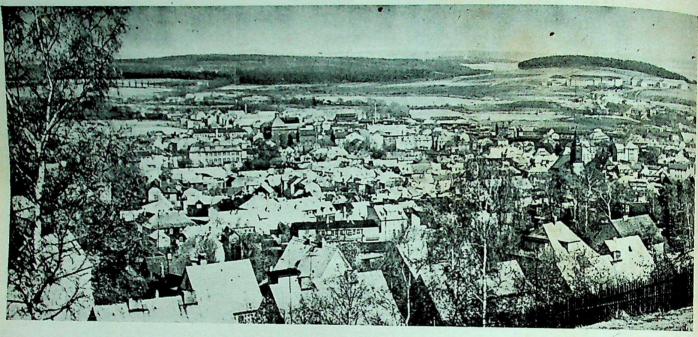
ज़ूल काँउटी

क्षेत्रफल तथा जनसंख्या की दृष्टि से ज़ूल काउंटी (प्रान्त) जर्मन जनवादी गणतंत्र का सबसे छोटा प्रान्त है। लेकिन इसका प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त आकर्षक है, और इसके औद्योगिक जीवन में विविधता हैं। थूरिनजिया के जंगल और वेर्रा नदी की सुन्दर घाटी ज़ूल में ही स्थित है। इस प्रान्त में अनेक गांवों तथा छोटे-छोटे कस्बे

इल्लेनाउ के इलेक्ट्रानिक कालेज के छात्र कालेज की प्रयोगशाला में
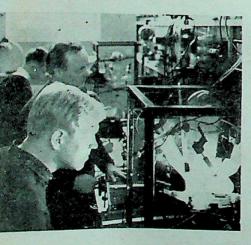
हैं, और यह पश्चिमी जर्मन राज्य के दक्षिण पश्चिमी सीमा पर बसा है और कई सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य-स्थलों और खेलकूद केन्द्रों का घर है।

ज़ूल में कई प्रकार की हस्तकलायें तथा उद्योग पनप रहे हैं, जिनमें से उल्लेखनीय हैं धातु कला तथा लकड़ी की वस्तुएं और खिलौने। कुछ ही समय से कांच तथा सेरामिक उद्योग की वस्तुएं भी यहां बनने लगी हैं। कांच के बड़े-बड़े कारखाने तथा पोरसिलेन फैक्ट्रियों के लिये आवश्यक कच्चा माल यहां पर्याप्त मात्रा में मिलता है। जहां तक हस्तकला कौशल का सवाल है, वह यहां के दस्तकारों को परम्परागत विरासत के रूप में अपने पूर्वजों से मिला है। ज़ूल प्रान्त के इन कुटीर उद्योगों और बड़े आधुनिक कारखानों से प्राचीन तथा नवीन कला की उत्कृष्ट वस्तुएं निकलती हैं।

अब हम आपको इस प्रान्त के अत्यन्त महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्रों की यात्रा पर ले जायेंगे। यह यात्रा हम शुरू करेंगे सोन्नेबर्ग नामक स्थान से जो थूरिनजिया जंगल के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। २९००० प्राणियों का यह कस्बा खिलौने बनाने तथा लकड़ी के काम के लिये सुप्रसिद्ध है। इसको जर्मनी का "खिलौना कस्बा" होने का गर्व है। लेकिन खिलौनों के अलावा यहां विद्युत तथा सेरामिक उद्योग की फैक्ट्रियां भी हैं। शीर्शनिट्स, दूसरा औद्योगिक केन्द्र है। यहां पोर्सिलेन की वस्तुएं पैदा करने की एक बड़ी फैक्ट्री है। सोन्नेबर्ग के उत्तर में, कांच कारखानों का केन्द्र लाउशा है। लाउशा के उत्तर में ग्रोवस्वाउस्सबाख नामक स्थान है जहां बिजली के छोटे बल्ब तैयार करने की फैक्ट्रियां हैं। ज. ज. ग. की भागदार कांच बनाने की पहली फैक्ट्री भी यहीं है।

दक्षिणी थूरिनजिया का क्षेत्र कांच के उद्योग के लिये काफी प्रसिद्ध है। १८ हजार की आबादी वाला इल्लेनाउ नामक स्थान इस क्षेत्र का कांच की वस्तुएं, पोर्सिलेन तथा सूक्ष्म यंत्र पैदा करने वाला प्रमुख केन्द्र है। यहां विद्युत उद्योग के कारखाने भी हैं। नजदीक ही विद्युत टेक्नालोजी का कालेज

मोन्नेबर्ग के विश्व प्रसिद्ध खिलौने

है जिसकी स्थापना सन् १९५५ में हुई। इस कालेज में, विद्युत-उद्योग संबंधी सैद्धान्तिक तथा अमली ट्रेनिंग दी जाती है। पुराने कस्बे, रेन्नास्टाइग के साथ साथ लगी हुई थूरिनजिया जंगल की मेंड को लांघ कर जूल काउंटी का सबसे बड़ा शृंग 'महान बीरबर्ग' आता है जिसकी ऊंचाई ९८२ मीटर है। इसके बाद हम दाखिल होते हैं इस प्रान्त की राजधानी 'जूल' में जहां २५ हज़ार लोग रहते हैं। जूल एक बड़ा औद्योगिक केन्द्र है, और यहां मोटर गाड़ियां, इंजीनियरी बाल-बियरिंग, औज़ार हथियार, सूक्ष्म यंत्र और बिजली का सामान बनाने के कई कारखाने हैं।

पश्चिमी जर्मन राज्य सीमा के निकट मेरक्र्स नामक कस्बा है जूल प्रान्त का। यहीं यूरोप का सबसे बड़ा पोटाश उत्पादक 'वेर्रा' नामक कारखाना स्थित है। ज. ज. ग. के कृषि-विकास और रासायनिक उद्योग के लिये पोटाश अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तु है। वेर्रा घाटी तथा ऊपरी रोएन घाटी में पोटाश की अनेक खानें हैं। इन घाटियों के आस-पास ही लोहे, फ्लुओर-स्पार तथा बैसाल्ट के निक्षेप भी पाये गये हैं।

वेर्रा घाटी के दक्षिण में कृषि का मुख्य स्थान है, क्यों कि उधर की भूमि तथा जलवायु खेती के बहुत उपयुक्त है। जूल प्रान्त के एक तिहाई भाग में कृषि होती है और इसके कुल क्षेत्रफल के लगभग आधे हिस्से पर जंगल फैले हुए हैं। इन जंगलों में कई चरागाहें तथा पशुपालन केन्द्र स्थित हैं। यातायात तथा संचार अपेक्षाकृत कठिन है यहां। माईनिनजेन और ओबरहाफ को मिलाने वाली रेल की पटरी, कहीं कहीं ६०० मीटर ऊंचाई पर बिछाई गई है। इस कठिनाई के बावजूद जूल प्रांत, आर्थिक विकास की दृष्टि से जर्मन जनवादी गणतंत्र के अन्य भागों से पीछे नहीं है।

जूल काउंटी

क्षेत्रफल : ३,८९६ वर्ग किलोमीटर। ज. ज. ग. के कुल क्षेत्रफल का ३.६% भाग

जान-संख्या : ५४४,००० । ज. ज. ग. की कुल आबादी का ३.२% भाग

औद्योगिक उत्पादन : सन् १९६१ में, ज. ज. ग. के औद्योगिक उत्पादन में, जूल प्रांत का ३.३% हिस्सा था।

अन्य आंकड़े : जूल प्रांत के प्रति १००० व्यक्तियों पर यहां ९.३ अस्पताल बेड, १.५ रंगशाला-स्थान, और ५०.५ सिनेमा-स्थान हैं।

जूल की 'साइमन' फैक्ट्री जहां प्रसिद्ध मोपेड मोटर-साइकलें बनती हैं

(पृष्ठ ८ का शेष)

एरिख वाइनर्ट

देखकर कवि रो पड़ा। विश्राम कैसा... आराम कहां उनके लिये ? ध्वंस के अवशेषों को हटाकर नवनिर्माण का महायज्ञ आरम्भ करना था।...श्री वाइनर्ट, नये मन्त्रिमण्डल में शिक्षा-मन्त्रालय के उपाध्यक्ष बने। सुबह से शाम तक उनका काम था गांव-गांव और कस्बों में घूमना, हताश जनता का धैर्य बंधाना, श्रमिकों को नवनिर्माण का नया सन्देश देना।...लेकिन निर्बल तथा अस्वस्थ शरीर कब तक साथ देता। आखिर एक असाध्य रोग ने उनको बिस्तर पकड़ने पर मजबूर किया।

रोगशैय्या पर पड़े-पड़े भी यह कवि-योद्धा पांच साल तक मृत्यु से निरन्तर भूझते रहे। इन पांच वर्षों में उस समाज की कोंपलें फूटने लगी थीं जिस शोषणहीन, समाजवादी समाज का सपना वे अपने मन में पाल रहे थे, जिसके लिये निरन्तर तीस साल तक वे संघर्ष करते रहे, दुख यातनायें भोगते रहे थे।... रोगी जीवन में भी, बिस्तर पर पड़े-पड़े ही श्री वाइनर्ट ने दस पुस्तकें लिखीं...और जब वे, फीत शूल्से नामक अपने साथी योद्धा (जिसको फासिस्टों ने कत्ल किया था) के जीवन पर एक नई पुस्तक लिखने में संलग्न थे, मृत्यु ने उनकी कलम छीन ली। २० अप्रैल, सन् १९५३ के दिन उनका देहान्त हो गया।

आज, जर्मन जनवादी गणतंत्र के रूप में स्वर्गीय एरिख वाइनर्ट का सपना साकार हो उठा है। ज. ज. ग. में सर्वतोमुखी समाजवादी निर्माण बड़ी तेज़ी से हो रहा है, और वहां की नई लेखक-पीढ़ी उनके संघर्षमय जीवन तथा जीवन्त रचनाओं से अथाह प्रेरणा प्राप्त कर रही है।

लइपज़िक में...

(शेष पृष्ठ १० का)

लाइपज़िक मेले के संयोजकों ने इस बात की घोषणा की है कि इस वर्ष भी तकनीकी दृष्टि से सर्वोच्च स्तर के उत्पादनों को स्वर्ण पदकों तथा प्रशंसा-पत्रों से सम्मानित किया जायेगा। पदक तथा डिप्लोमा देने की यह प्रथा सन् १९६३ के लाइपज़िक व्यापार मेलों से ही शुरू की गई है जो बहुत लोकप्रिय बनती जा रही है।

मेला और ज. ज. ग.

लाइपज़िक के प्रत्येक व्यापार मेले में जर्मन जनवादी गणतंत्र, सक्रिय भाग लेता आ रहा है। इस वर्ष के उक्त मेले में भी वह इंजीनियरी उद्योग तथा अन्य उच्च-स्तरीय उद्योगों का प्रदर्शन करेगा। "माली" नामक तकनीकी मशीनें ज. ज. ग. का विशेष आकर्षण होंगी मेले में। इन मशीनों के निर्माण की लाइसेन्सें कई देशों की सुप्रसिद्ध फर्मों ने पहले से ही प्राप्त कर ली हैं।... उपयोगी वस्तु उद्योग के टेक्सटाइल विभाग में भी कई नवीन उत्पादनों का प्रदर्शन होगा।

व्यापार का सुअवसर

जर्मन जनवादी गणतंत्र का विदेश व्यापार संगठन तथा संस्थायें, ग्राहकों को व्यापार करने की अनेक सम्भावनायें उपलब्ध करेंगी। सन् १९६४ की राष्ट्रीय आर्थिक परियोजना में ज. ज. ग. के कुल विदेश व्यापार में १६० करोड़ मार्क की वृद्धि की गुंजाईश रखी गई हैं। इसलिये यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आगामी वसन्त-कालीन लाइपज़िक मेले में, ज. ज. ग., विदेश व्यापार के समझौते करने के लिये काफी सक्रिय तथा उत्सुक होगा।

उक्त तथ्यों को देखते हुये यह बात तो स्पष्ट ही है कि सन् १९६३ का वसन्त कालीन लाइपज़िक व्यापार मेला भी पहले मेलों की तरह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक महत्वपूर्ण घटना से कम न होगा। इसके अतिरिक्त, हमेशा की तरह इस वर्ष भी, यह मेला, पूर्व और पश्चिम के व्यापार का संगम बनेगा।

गृह-व्यापार का ब्लानकेनबुर्ग कालेज

के. एल. जैन

जर्मन जनवादी गणतंत्र में अध्ययन-रत श्री के. एल. जैन से 'सूचना-पत्रिका' के पाठक अच्छी तरह परिचित हैं। आप, 'मध्य-प्रदेश राज्य सहकारी-संघ' जबलपुर, के शिक्षा अधिकारी हैं और आपको 'भारतीय सहकारी-संघ' ने सहकारिता के अध्ययन के लिये ज. ज. ग. भेज दिया है एक साल के लिये। 'गृह-व्यापार का ब्लानकेनबुर्ग कालेज' में श्री जैन पढ़ रहे हैं। उसी कालेज से सम्बंधित उनका लेख पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

——संपादक

जर्मन जनवादी गणतंत्र एक समाजवादी राज्य है, जिसकी अर्थव्यवस्था में सहकारी-समितियां एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं। यहां की 'जर्मन सहकारी संघ' नामक संस्था की सहकारी शिक्षा की अपनी योजनायें हैं, किन्तु यहां की सहकारी व्यवस्था, भारत की व्यवस्था से कुछ भिन्न है। यहां की सहकारी-समितियों के सभी वैतनिक या अवैतनिक कार्यकर्ता, सर्वसाधारण शिक्षा संस्थानों तथा केन्द्रों में जाते हैं। इसी प्रकार, सहकारी अधिकारियों के शिक्षण के लिये भी अलग संस्थान नहीं हैं। सहकारी समिति में दाखिल होने से पहले प्रत्येक सदस्य, सहकारिता के सिद्धांतों तथा तत्सम्बंधी नियम-कानूनों से अवगत होगा, ऐसी आशा की जाती है। समय-समय पर, समितियों के सदस्यों के लिये शैक्षिक भाषण आयोजित किये जाते हैं। किसी भी वैज्ञानिक व्यवस्था के लिये शिक्षा तथा अनुभव की आवश्यकता होती है। ज. ज. ग. की सहकारी व्यवस्था में इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये 'जर्मन सहकारी संघ' बहुत कुछ करता है। ... यहां का ४० प्रतिशत घरेलू व्यापार, 'जर्मन सहकारी संघ' के हाथों में है। इस लिये यह 'संघ', अपने व्यापार विभाग -- अर्थात उपभोगक्ता-सहकारी समितियों से अपना शिक्षा-कार्य आरम्भ करता है।

ब्लानकेनबुर्ग कालेज की स्थापना हुई सन् १९५७ में। उस समय तक इस नवजात गणतंत्र में उपभोगक्ता समितियों का नया आन्दोलन जन्म ले चुका था और इस आन्दोलन ने काफी प्रगति भी की थी।

इसलिये, एक ऐसे शिक्षा संस्थान की आवश्यकता महसूस हुई जहां इन उपभोक्ता सहकारी समितियों के सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। वैसे, उस समय भी ज. ज. ग. के विभिन्न प्रान्तों में १५ सहकारी स्कूल काम कर रहे थे, लेकिन उनका पाठ्यक्रम साधारण सा था। इसलिये उक्त आवश्यकता को पूरा करने के लिये ब्लानकेनबुर्ग कालेज की स्थापना हुई। सहकारी व्यापार को सुयोग्य तथा व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये, प्रशिक्षित और
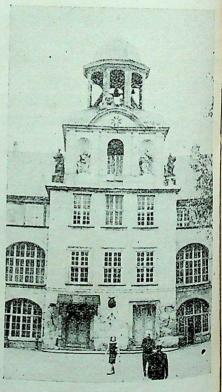
'बड़ा महल', जो अब ब्लानकेनबुर्ग का गृह-व्यापार कालेज है

अच्छे कार्यकर्त्ता निकालने की जिम्मेदारी इस कालेज को सौंपी गई।

पाठ्यक्रम : उक्त कालेज में केवल उपभोगक्ता समितियों के सदस्यों तथा कार्यकर्त्ताओं को ही प्रवेश मिलता है। प्रशिक्षण की अवधि तीन वर्ष है जिनमें से दो वर्ष तो कालेज में पढ़ना होता है, और शेष एक वर्ष में अपनी-अपनी उपभोक्ता समिति में, अमली ट्रेनिंग लेनी होती है। पाठ्यक्रम में, न केवल व्यवसायिक शिक्षा ही शामिल है, बल्कि शिक्षार्थियों को इतिहास, भूगोल, भौतिकी, रसायन, गणित, सांख्यकी, वाणिज्य-कनून बही खाता तथा हिसाब-किताब रखना और मनोविज्ञान के विषय भी पढ़ाये जाते हैं। खेल-कूद भी पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। विद्यार्थियों के लिये संगीत, चित्रकला तथा फोटोग्राफी जैसी कलायें सीखने की भी सुविधायें हैं कालेज में।

उपभोक्ता सहकारी समितियों, और विशेषकर इनमें काम करने वाले कर्मचारियों के लिये, उपर्युक्त विषयों का ज्ञान होना लाजिमी है। इसलिये उनको विशिष्ट अध्ययन कराया जाता है। उदाहरण के लिये, किसी उपभोक्ता समिति में कोइ आदमी टेक्सटाइल वस्तुओं के खरीदने और बेचने पर नियुक्त है। उसके लिये सूती, ऊनी, रेशमी, रेयान तथा नायलोन वस्त्रों का विशिष्ट ज्ञान होना अनिवार्य है। ऐसे लोगों को यह विशिष्ट ज्ञान प्रशिक्षण द्वारा दिया जाता है और उनका प्रशिक्षण शुरू होता है सूत की विभिन्न जातियों, पशुओं की नस्लों, रेशम-उत्पादन विधियों और बनावटी रेशों के शोधन आदि के अध्ययन से। अध्ययन काल में शिक्षार्थियों को इनसे सम्बंधित फैक्ट्रियां भी दिखाई जाती हैं।

विदेशी शिक्षार्थी

ब्लानकेनबुर्ग कालेज में विदेशी विद्यार्थियों को दाखिला देना, 'जर्मन सहकारी संघ' का एक नया कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य है उन देशों के शिक्षार्थियों को यहां सहकारिता में प्रशिक्षण देना जिन्होंने अपनी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में सहकारिता को स्थान दिया हो, अथवा निकट भविष्य में देना चहते हों। ऐसे कुछ देशों के विद्यार्थी भी हैं यहां जो साम्राज्यवादी दासता को उखाड़ फेंकने में अभी संघर्षरत हैं। अफ्रीका के ऐसे कुछ देशों के भी विद्यार्थी हैं हमारे कालेज में जिनके देश में सहकारी स्टोर तो हैं लेकिन उन्होंने उनको देखा तक नहीं है। इसका कारण केवल इतना ही है कि उनकी त्वचा का रंग काला है गोरा नहीं, और 'काले लोगों' को उन सहकारी स्टोरों में जाने की इजाजत नहीं है। लेकिन यहां ज.ज.ग. में, रंग-भेद का सवाल ही नहीं उठता। इस संदर्भ में 'जर्मन सहकारी संघ' का उक्त कदम बहुत ही सराहनीय और माननीय है।

हमारे कालेज में विदेशी छात्रों का यह दूसरा सेशन है जो जून, १९६३ में आरम्भ हुआ। इससे पहले (१९६२) के सेशन में केवल घाना के १९ शिक्षार्थी यहां प्रविष्ट हुये थे। लेकिन इस वर्ष इस कालेज में भारत, इन्डोनेशिया, चाइल, नाइजीरिया, केनिया, उत्तर - रोडेशिया, दक्षिण - रोडेशिया, बास्टोलैण्ड और दक्षिणी अफ्रीका के देशों के २३ शिक्षार्थियों ने दाखिला लिया है।

कालेज का पाठ्यक्रम दो भागों में विभाजित है: (१) उपभोक्ता सहकारी समितियां और (२) कृषि - सहकारी समितियां। शिक्षार्थी किसी एक में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषायें भी रखी गई हैं (जर्मन भाषा के अलावा)। फ्रेंच भाषा के माध्यम से उन देशों के छात्रों को शिक्षा दी जाती हैं जो हाल ही तक फ्रांसीसी साम्राज्यवाद के आधिपत्य में थे — जैसे लीबिया, तूनिस, मोराक्को तथा अलजीरिया।

हम विदेशी छात्रों की अपनी एक परिषद् है जिसका नाम है "मैत्रि परिषद्"। इसका काम है विदेशी शिक्षार्थियों की अध्ययन सम्बंधी रोजमर्रा की कठिनाइयों और समस्याओं को आसान बना देना। प्रत्येक देश के विद्यार्थी अपना एक-एक प्रतिनिधि भेजते हैं 'परिषद्' में। शिक्षार्थियों में से ही कोई एक मन्त्री चुना जाता है। चुनाव हर महीने क्रमानुसार होता है। कालेज का प्रिन्सिपल 'परिषद्' का पदेन अध्यक्ष है।

शिक्षार्थियों को सुविधाएं

कालेज के सभी विद्यार्थियों को मासिक वृत्ति मिलती है। जर्मन छात्रों को दिये जाने वाले वजीफों की दर भिन्न है। इनके लिये अधिक से अधिक २०० मार्क की रकम निश्चित है, लेकिन विदेशों के सभी छात्रों को ३०० मार्क (लगभग ३५० रुपये) मिलते हैं हर महीने। इस रकम में से उनको खाने-पीने के लिये केवल ६० मार्क देने पड़ते हैं — अर्थात् असली मूल्य का सिर्फ १।३ भाग (कालेज १५० मर्क प्रति मास प्रति शिक्षार्थी पर खर्च करता है खान-पान के लिये)। ... विभिन्न देशों के, विविध स्वाद वाले २३ छात्रों के लिये भोजन की व्यवस्था करना लोहे के चने फोड़ना से कम
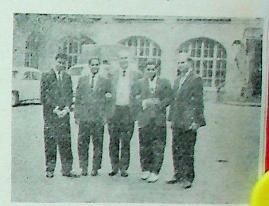
ब्लानकेनबुर्ग कालेज में पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थी सर्वश्री चौधरी, नरसिया तथा जैन 'जर्मन सहकारी संघ' के अध्यक्ष, श्री लूत्त और कालेज के प्रिन्सिपल, श्री रोल्फ ओटो के साथ

नहीं। उदाहरण के लिये मुझे और मेरे अन्य भारतीय मित्रों को ही लीजिये। मैं तो घोर शाकाहारी हूं और मेरे भारतीय मित्रों के आगे बीफ तथा पोर्क फटकना भी नहीं चाहिये। इस सब के बावजूद, कालेज के अधिकारी, हमारे नाज पालते हैं और बहुत सफल तथा सन्तोषप्रद प्रबन्ध करते हैं हम सबों के लिये।

शिक्षार्थियों के मनोरंजन का भी विशेष प्रबन्ध है। कालेज के क्लब-कक्ष में रेडियो तथा टेलीविजन लगे हैं। संगीत में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिये पियानो, गिटार, वयोलिन, डफ, ढोल आदि जैसे वाद्य यन्त्र भी रखे गये हैं। हमारे प्रशिक्षण से सम्बंधित यात्राओं के अतिरिक्त भूगोलिक

तथा ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का भ्रमण भी हमको कराया जाता है। .... इन सब सुविधाओं के अतिरिक्त हम विदेशी छात्रों को यहां अपने-अपने देशों के 'राष्ट्र दिवस' मनाने की बहुत बड़ी सुविधा भी दी जाती है। इन पावन पर्वों पर मेज़बान (ज.ज.ग.) और मेहमान देशों के राष्ट्रीय भण्डे साथ-साथ फहराये जाते हैं, राष्ट्र गीत गाया जाता है (जो देश अभी पराधीन हैं उनके राष्ट्रीय गाने गाये जाते हैं)। उस देश विशेष के विद्यार्थियों को अनेकानेक बधाईयां दी जाती हैं जो 'राष्ट्र दिवस' मना रहे हों। उस दिन कालेज में छुट्टी की जाती है और कालेज के अधिकारी सायं को एक नृत्य समारोह का आयोजन करते हैं। सभी देशों के 'राष्ट्र दिवस' के कार्यक्रम में कालेज के सभी छात्र सक्रिय भाग लेते हैं।

श्रम का गौरव

श्रम कितने गौरव तथा श्रद्धा की वस्तु है इस बात को देखना और सीखना हो तो जर्मन जनवादी गणतंत्र में आकर इसके सांस्कृतिक जीवन में झांकना चाहिये। फसल काटने के समय ज.ज.ग. के सभी छात्र-छात्रायें, खेतों में जाकर चार हफ्तों के लिये काम करते हैं। स्कूल, कालेज अथवा विश्वविद्यालय का कोई भी विद्यार्थी, इस अनिवार्य श्रम से छूट नहीं सकता। कोई रोगग्रस्त या बीमार हो तो बात दूसरी है। . . . . हमारा क्लानकेनबर्ग कालेज भी इस नियम का अपवाद नहीं। अनिवार्य श्रमदान तो यहां विद्यार्थी करते ही हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त, अपने कालेज की भलाई के लिये भी, वे कई तरह के काम करते हैं। उदाहरण के लिये, कालेज के छात्रों ने १ मील लम्बी एक पक्की सड़क बनाई है जो कालेज को ब्लानकेनबर्ग शहर से मिला देती है। पहले यहां एक कच्चा रास्ता था जिसमें कई खड्ड और घड्डे थे। कोई भी टैक्सी-मोटर वाला, किसी भी कीमत पर, तब, शहर से कालेज जाने के लिये राज़ी नहीं होता था।

मैंने यहां अपने प्रोफेसरों तथा प्राध्यापकों को चाय के प्याले प्लेटें उठाते तथा साफ करते देखा है। अपने प्रिन्सिपल को मैंने कुर्सियां उठाते देखा है। भोजनशाला में, भोजन करते के समय, हमारे प्रिन्सिपल तथा अन्य अध्यापक हमारे साथ कतार में खड़े रहते हैं और अपनी बारी पर अपना खाना खुद अपनी मेज पर ले जाते हैं। खाना खाने के बाद वे भी अपने भोजन की प्लेटें, चम्मच, और कांटे आदि खुद धो कर साफ करते हैं। कालेज का प्रत्येक आचार्य तथा विद्यार्थी यही करता है। इससे मान मर्यादा भंग नहीं होती यहां, बल्कि गौरव तथा आनन्द का अनुभव होता है।

इस सिलसिले में मुझे एक घटना याद आती है जो मैं कभी भूल नहीं पाऊंगा कुछ ही सप्ताह की बात है: दो विद्यार्थियों में झगड़ा हुआ। नौबत हाथापाई तक जा पहुंची। अन्त में, निपटारे के लिये यह मामला 'मित्र परिषद' के सामने लाया गया। बहस के दौरान एक सदस्य ने दोनों छात्रों को एक ६ गज़ फुट कुआं खोदने और फिर से इसको भरने का दण्ड देने का सुझाव दिया। शेष सदस्यों ने इस सुझाव में दिलचस्पी दिखाई। लेकिन 'परिषद' के अध्यक्ष, प्रिन्सिपल रोल्फ ओट्टो ने इस सुझाव पर आपत्ति की। उन्होंने कहा: 'क्षमा करियेगा। हमारे देश में श्रम, गौरव तथा श्रद्धा की वस्तु है। इसलिये श्रम के साथ दण्ड को सम्बद्ध करना बहुत बड़ा अन्याय होगा।'

(पृष्ठ ९ का शेष)

ज.ज.ग. में औद्योगीकरण...

सन् १९६२-६३ के ज़बरदस्त जाड़े में भी ज. ज. ग. ने अपना शक्ति-उत्पादन न केवल बहाल रखा बल्कि उसमें कुछ वृद्धि भी की।

युद्धपूर्व जर्मनी में भूरे कोयले (ग्लिनाइट) का उत्पादन १९३ मिलियन टन था। दूसरे शब्दों में, जर्मनी उस समय दुनिया का सबसे बड़ा लिग्नाइट-उत्पादक देश था। ... लेकिन सन् १९६२ में, जर्मन जनवादी गणतंत्र ने, २४७ मिलियन टन भूरा कोयला पैदा किया—अर्थात् विश्व के कुल लिग्नाइट उत्पादन का लगभग ३६ प्रतिशत भाग। ज. ज. ग. के लिग्नाइट-उत्पादन सम्बन्धी यन्त्र विश्व प्रसिद्ध हैं। पोलैण्ड, ब्राज़ील तथा सोवियत यूनियन आदि इन यन्त्रों का बहुत उपयोग करते हैं।

हमारे देश का रासायनिक उद्योग भी बहुत विकसित है। इस शाखा में, ज.ज.ग. का प्रति व्यक्ति उत्पादन, दुनिया में अमरीका के बाद दूसरे स्थान पर है रासायनिक उद्योग का महत्व दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। इसलिये इस उद्योग की सभी आवश्यक शाखाओं के विकास की ओर ज.ज.ग. में विशेष ध्यान दिया जा रहा है। देश के विभिन्न देशों में बड़े बड़े रासायनिक कारखाने खोले जा रहे हैं। ऐसे कारखानों में श्वेड्ट में स्थित, विशाल 'ल्यूना द्वितीय' नामक खनिज तेल शोधक कारखाना विशेष उल्लेखनीय है। कोसविग का सलफ्यूरिक अम्ल पैदा करने का कारखाना, दुनिया में अपनी तरह का सब से बड़ा कारखाना है। ल्यूना के सरकारी रासायनिक कारखानों में १०० से अधिक नई प्रायोजनायें पिछले चन्द वर्षों में शुरु की गई हैं। इन प्रायोजनाओं में से कुछ तो पूरी भी हो चुकी हैं जैसे नया कारबाइड उत्पादन कारखाना। यह कारखाना भी दुनिया का सब से बड़ा कारबाइड कारखाना है। ज.ज.ग. के इस वृहत रासायनिक विकास में सोवियत संघ ने बहुत धन राशि लगाई है, क्योंकि इस उद्योग के उत्पादन, उसके विकास में भी सहायक होते हैं। हमारे देश के आर्थिक विकास के लिये पेट्रोल-रासायनिक उद्योग का विकसित होना भी अत्यन्त आवश्यक है। इस संबंध में सोवियत संघ से तेल लाने वाली 'मैत्री' नामक नल-पंक्ति का निर्माण पूरा किया जा चुका है और हाल ही में वह चालू भी कर दी गई है।

सुव्यवस्थित धातु-उद्योग में भी जर्मन जनवादी गणतंत्र ने करोड़ों मार्क की रकम लगा दी है, और धातु-उत्पादन तथा धातु-शोधन के कई बड़े बड़े कारखाने यहां लगा दिये गये हैं। "८ मई, १९४५" नामक इस्पात कारखाना विशिष्ट प्रकार का इस्पात तैयार करता है, और इस कारखाने पर लाखों मार्क खर्च किये जा रहे हैं। सन् १९५० से १९६२ तक, विशिष्ट इस्पात का उत्पादन २९ गुना हो चुका है। सन् १९५६ में ज.ज.ग. ने पहली बार खास प्रकार के इस इस्पात का निर्यात भी शुरू किया। तब से लेकर आज तक विशिष्ट इस्पात के निर्यात में ९०० प्रतिशत वृद्धि हुई है।

(शेष अगले अंक में)

सांस्कृतिक पृष्ठ

रस-धारा

इस बार हम अपने पाठकों के रसास्वादन के लिये एक जर्मन लोकगीत का रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। सभी देशों के लोकगीतों की तरह यह जर्मन लोकगीत भी प्रेम की मधुर तथा कोमल भावना को व्यक्त करता है। यह लोकगीत १७वीं शताब्दी के किसी अज्ञात जर्मन कवि का है।

—सम्पादक

एक लोक गीत

काश, मैं एक पंछी होता, सुकुमार
और होते मेरे दो पंख नन्हे से
पसार अपने पंख, आता तुम्हारे पास !
किन्तु प्रिये, यह है मेरा मोहक भ्रम
(ऐसा होना सम्भव नहीं)—
चिर प्रतीक्षा– यही है मेरा भाग्य !

तुम से मैं दूर ··· बहुत दूर हूँ
किन्तु सुहाने सपने मेरे (बाहें थाम)
ले जाते मुझको, और
सुला देते तेरे पहलू में !
हम कितनी बातें करते हैं
(संजोते हैं अपना छोटा, मृदु संसार)
आह, सहसा खुल जाती है आंख
(काश, यह सपना और कुछ क्षण
देता मेरा साथ !)
प्रिये, मैं एकाकी हूं — बहुत एकाकी !

आई रात।
नींद नहीं आंखों में —
लो हुआ प्रात।
तुम्हारी मृदुल, सौम्य मूर्ति
विराजी रही पलकों में सारी रात
(धन्य हुआ मैं — तुम्हारा रूप निहार) !
और दाता तुम कितनी उदार
दान दिया अपना सर्वस्व मुझे:
अथाह, अमर, निष्काम प्यार !!

रूपान्तरकार :
ओम पंडित 'पम्पोश'

ग्राहकों तथा पाठकों से

१· 'सूचना पत्रिका' — मासिक पत्रिका है जो हर महीने की **२० तारीख** को छपती है।

२· पत्रिका का **वार्षिक चन्दा २ रुपया** है। इच्छुक पाठक चन्दा, मनी-आर्डर अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा, **सूचना अधिकारी, जर्मन जनवादी गणतंत्र का व्यापार दूतावास, १२ कौटिल्या मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज सकते हैं।

३· कालिजों, पुस्तकालयों, पंचायतों तथा ऐसी ही अन्य **सार्वजनिक संस्थाओं** को, मांगने पर, 'पत्रिका' निःशुल्क भेजी जा सकती है।

४· ग्राहक, हमारे साथ पत्र-व्यवाहार करते समय अपनी **ग्राहक संख्या** अवश्य लिखा करें जो 'पत्रिका' के रैपर पर, पते के साथ टाइप की हुइ होती है। **ग्राहक संख्या** न लिखने से ग्राहक की इच्छापूर्ति करने में हम असमर्थ होंगे।

५· ग्राहकों अथवा पाठकों को यदि 'सूचना पत्रिका' महीने की **२५ तारीख** तक न मिला करे तो उन्हें पहले स्थानीय डाकखाने से इस बारे में पूछ ताछ करनी चाहिये। ठीक उत्तर न मिलने पर वे हमें लिख सकते हैं।

६· पता, हमेशा **साफ और पूरा** लिखा करें। अस्पष्ट तथा अधूरे पते के कारण आप 'पत्रिका' से वंचित रहेंगे।

तथ्य और आंकड़े

हस्तकला सहकारी संघ

जर्मन जनवादी गणतंत्र में हस्तकला सरकारी संघों की संख्या हज़ारों तक पहुंच चुकी है। सन् १९५३ में यहां केवल ४७ हस्तकला सहकारी संघ थे। सन् १९६३ में इनकी संख्या बढ़कर ४,११४ तक पहुंची। सन् १९५८ की तुलना में, प्रति दस्तकार के उत्पादन में एक तिहाई की वृद्धि हुई सन् १९६३ में।

ईसाई धर्म-शिक्षा

सन् १९६३ में, ज. ज. ग. के ६ धर्म-शिक्षा संकायों में, ५५४ छात्र-छात्राओं ने दाखिला लिया ईसाई धर्म-शास्त्र का अध्ययन करने के लिये। इन संस्थानों में अध्येताओं को ५० आचार्यों, २५ प्राध्यापकों १० भाषाविदों और ५० सहायक-प्राध्यापकों ने पढ़ाया। . . . सन् ६३ में ज. ज. ग. की सरकार ने उक्त संकायों को ४२ लाख मार्क की रकम (१ मार्क = १.१२ न. पै.) अनुदान के रूप में दी।

विदेशी पोत

गत वर्ष (१९६३) में, २८ देशों के लगभग ३७०० मालवाहक जहाजों ने, जर्मन जनवादी गणतंत्र की रोस्टोक, विज़मेर तथा स्ट्राल्ज़ुण्ड नामक बन्दरगाहों में लंगर डाले। इनमें से २४०० से भी अधिक पोत ब्रिटेन, यूनान, भारत, नाइजीरिया, पानामा, अरब गणराज्य और नार्डिक देशों से आये थे।

बर्लिन चिड़ियाघर

सन् १९६३, बर्लिन के चिड़या घर के लघु जीवन में एक अविस्मरणीय वर्ष के रूप में याद रखा जायेगा। इस वर्ष में इस चिड़िया-घर को २१ लाख से अधिक व्यक्ति देखने आये, जिनमें २८ देशों के वरिष्ठ तथा सम्मानित अतिथि भी शामिल थे। ज. ज. ग. की राजधानी के इस चिड़िया-घर में देश देशान्तरों के ४,२६९ पशु-पक्षी हैं, ७५६ प्राणि-जातियों के। चिड़िया घर का, एल्फ्रेड-ब्रेहम नामक सदन विश्व का सब से बड़ा वन्य-पशु गृह है।

१ मिनट में २ हज़ार फुट कागज

ज. ज. ग. के शवेड्ट नामक स्थान में लगी हुई कागज़ बनाने की सबसे बड़ी मशीन एक दिन में २०० टन अर्थात् प्रति मिनट २००० फुट अखबारी-कागज का उत्पादन करती है। ३३० फुट लंबी, २० फुट चौड़ी और २६ फुट ऊंची इस विराटाकार मशीन को केवल ४ मजदूर चलाते हैं, १२ मोटरों की सहायता से।

समानाधिकार और सुविधायें

जर्मन जनवादी गणतंत्र में स्त्रियों को समानाधिकार मिले हैं। १९५० में ही जर्मन जनवादी गणतंत्र की संसद ने 'मातृ-शिशु तथा नारी अधिकार' का कानून पास कर दिया था।

१६ से ६० वर्ष के बीच की अवस्था वाली स्त्रियों में से ७०.१ प्रतिशत काम पर लगी हैं। १९६२ में २८,७६५ स्त्रियां विश्वविद्यालयों में शिक्षा पा रही थीं, और ५५,४९२ स्त्रियां तकनीकी स्कूलों में थीं। इसी प्रकार ३ से ६ वर्ष के बीच की अवस्था वाले बच्चों में से ५७.३ प्रतिशत किंडर-गार्टन स्कूलों में पढ़ते थे। सरकार की ओर से स्त्रियों और बच्चों को वज़ीफे दिए जाते हैं। गर्भवती स्त्रियों को १२ सप्ताह की सवेतन छुट्टी मिलती है, और पहले बच्चे के जन्म पर ५०० मार्क दिये जाते हैं। यह आर्थिक सहायता बढ़ते-बढ़ते पांचवें बच्चे पर १००० मार्क हो जाती है। इसके अलावा हर मास प्रति बच्चे पर २० मार्क दिए जाते हैं।

स्थानीय, ज़िला और प्रांतीय असेम्बलियों के चुने हुए प्रतिनिधियों में २३.५ प्रतिशत स्त्रियां हैं। केंद्रीय लोकसभा (पीपुल्स चैम्बर) में स्त्रियों की संख्या २४.५ प्रतिशत है।

प्रश्न भेजिये हम उत्तर देंगे

सूचना पत्रिका के पाठक तथा हमदर्द समय समय पर कई ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो काफी महत्वपूर्ण होते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर न केवल रोचक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक भी हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, इधर सम्पादक की मेज़ ऐसे अनेक पत्रों से भर गई है जिनमें केवल इस बात का आग्रह है कि *सांस्कृतिक पृष्ठ, चिट्ठी-पत्री* तथा *तथ्य और आंकड़े* जैसे **स्थाई स्तम्भों** की तरह ही, सूचना पत्रिका में एक प्रश्नोत्तर स्तम्भ भी खोला जाना चाहिये जिसमें पाठकों के प्रश्नों तथा शंकाओं का समाधान किया जा सके। यह मांग अब इतनी अधिक बढ़ गई है कि इसको टालना न सम्भव है और न अपेक्षित। इसलिये, काफी सोच विचार के बाद, हमने, *सूचना पत्रिका* के आगामी (फर्वरी) अंक से, **प्रश्न और उत्तर** नाम से एक स्थाई स्तम्भ खोलने का निश्चय किया है। अब आपका काम है प्रश्न भेजना, और हम यथा शक्ति उनका उत्तर देने की चेष्टा करेंगे।

लेकिन जिज्ञासु पाठकों से यह प्रार्थना है कि वे इस बात की ओर विशेष ध्यान दें कि प्रश्न अधिक लम्बे न हों। स्पष्ट और सीधे प्रश्नों का सही उत्तर देना हमारे लिये सम्भव है, किन्तु विवादास्पद तथा गोलमोल प्रश्नों का उत्तर देने में हम असमर्थ होंगे। पाठक, जर्मन जनवादी गणतंत्र के किसी भी पहलू से सम्बन्धित प्रश्न हम से पूछ सकते हैं। ..प्रश्न, सम्पादक के पास हर मास की ७ तिथि तक ही पहुँच जायें तो अच्छा हो।

सूचना पत्रिका में प्रश्नोत्तर स्तम्भ खोल कर पाठकों के प्रति हमने अपना कर्तव्य तो पूरा किया, अब प्रश्न भेजकर वे अपना कर्तव्य पूरा करें।

—संपादक

चिट्ठी पत्री

महोदय,

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सेवाश्रम का वार्षिक प्रतिवेदन आपकी सेवा में प्रेषित कर रही हूं। आशा है आप इसे सहानुभूति एवं सस्नेह स्वीकार करेंगे।

विशेष रूप से निवेदन करने का अभिप्राय यह है कि गत वर्ष से आप अपनी सूचना पत्रिका उक्त सेवाश्रम को निःशुल्क रूप से नियमित प्रेषित कर रहे हैं जिसके लिए आपको हमारा सेवाश्रम परिवार एवं आश्रमीजन हार्दिक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि आप भविष्य में भी अपनी सूचना पत्रिका नियमित प्रदान करने की महती कृपा प्रदर्शित करते रहेंगे। कोटिशः धन्यवाद।

भवदीया
बसन्तीदेवी शर्मा
संयोजिका,
श्री कस्तूरबा गांधी सेवाश्रम,
हमीरपुर (उ. प्र.)

सम्पादक महोदय,

सप्रेम वन्दे।

सूचना पत्रिका का अक्टूबर का अंक मिला। पत्रिका हमारे क्लब के सभी पाठकों को बहुत पसन्द आयी। इस पत्रिका में पाठ्य-सामग्री का सुन्दर चयन किया गया है। *सांस्कृतिक पृष्ठ, समाचार, व्यक्तित्व की झांकी, डेफा फिल्म जगत* आदि स्थायी स्तम्भ अति आकर्षक व पाठकों को ज. ज. गणतंत्र के बारे में काफी महत्वपूर्ण सूचनाएं देने में समर्थ हैं। जर्मन जनवादी गणतंत्र के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व व्यापारिक जीवन की झांकी *सूचना पत्रिका* के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने का प्रयत्न निस्संदेह सराहनीय है। इस क्लब के तमाम सदस्यों की ओर से इस उपयोगी प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाईयां देता हूं, इस पत्रिका के सम्पादक महोदय को विशेषकर, जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने के लिए कठिन प्रयास किया है। एक सुझाव हमारे सभी सदस्यों की ओर से यह है कि भविष्य में आप जर्मन जनवादी गणतंत्र के मित्रों का भी पता, पत्र-मित्रता के लिये, छापा करें तो विचारों का आदान-प्रदान करने के द्वार खुल जायेगा जिससे दोनों देशों के सांस्कृतिक सम्बन्ध अधिक सुदृढ़ होंगे।

भवदीय
आर. के मेहता
जोधपुर (राजस्थान)

महाशय,

भारत जर्मन मैत्री का प्रतीक आपकी लोकप्रिय *सूचना पत्रिका* हमें बहुत पसन्द है। यह हमारे राज्य के बहुतेरे पुस्तकालयों के पाठकों द्वारा बहुत ही पसन्द की जा रही है, यह शुभ-सूचक है।

परन्तु हमारे पुस्तकालय में अब तक यह उपलब्ध न होने के कारण हमारे पाठक इससे लाभान्वित नही हो पा रहे हैं।

बड़ी कृपा हो यदि आप *सूचना पत्रिका* के निःशुल्क ग्राहकों की सूची में इस पुस्तकालय का नामांकन कर नियमित रूप से इसे हमें भिजवाने की व्यवस्था कर दें।

आशा है समुचित व्यवस्था शीघ्र कर हमें सूचित करेंगे।

आपका
शिवचरण चौधरी
पटना (बिहार)

मान्यवर,

आपकी पत्रिका पढ़ने का आज पहला अवसर मिला। ऐसा लगा कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की शक्ति का स्रोत आपकी पत्रिका के विचारों में निहित है। मेरा तो ऐसा मानना है कि प्रत्येक पुस्तकालय व वाचनालय में आपकी पत्रिका पहुंचनी चाहिए जिससे लोकतंत्र की बुनियाद जो नैतिकता है उसमें और ज्यादा बल मिल सके।

धन्यवाद।

द्वारिका प्रसाद कौशिक
नृसिंह दड़ा (जोधपुर)

माननीय सम्पादक जी,

लगभग डेढ़ वर्ष से मैं आपकी सूचना पत्रिका प्राप्त कर रहा हूं, जिसे मैं, मेरे परिवार वाले, मेरे मित्र तथा अन्य पड़ोसी बड़े ही प्रसन्नचित्त से पढ़ते हैं। आपकी पत्रिका से हमें *जर्मन जनवादी गणतंत्र* के बारे में काफी जानकारी मिलती है। अक्तूबर और नवम्बर के अंकों में 'भारत और ज.ज.ग. का बढ़ता हुआ व्यापार' के शीर्षक से लिखे आंकड़ों से पता चला कि दोनों देशों में व्यापार काफी बढ़ा हुआ है। थोर्नडाइक दम्पत्ति का जीवन पढ़ा जो कि सराहनीय है। अब उनसे लिया गया इन्टरव्यू पढ़ने को उत्सुक हूं।

दर्शन कुमार भाटिया
अमृतसर (पंजाब)

सम्पादक महोदय,

आपको एवं आपके देशवासियों को मेरी ओर से नव वर्ष की हार्दिक शुभ-कामनाएं मालूम हों। आपने सूचना पत्रिका को नये वर्ष से कुछ आकर्षित ढंग से छापने की घोषणा की है उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। वास्तव में आपने सूचना पत्रिका को विदेश में आकर एक विदेशी की हैसियत से उनकी अपनी ही हिन्दी भाषा में छापकर अन्य दूतावासों के मुकाबले बहुत ही अग्रगणीय कदम उठाया है। अब आप मेरी निगाहों में एक हिन्दुस्तानी ही लगते हैं। लेकिन आपने सूचना पत्रिका को आकर्षक बनाने के लिए कुछ सुझाव लिख भेजने के लिए प्रार्थना की है। उसके लिए मैं अपने विचार लिख कर भेज रहा हूं। आशा है आप उन विचारों की ओर ध्यान देने की कोशिश करेंगे :

१. नये वर्ष से आपको सूचना पत्रिका में अलग से आपके देश के बारे में और अधिक जानकारी हेतु एक *प्रश्नोत्तर स्तम्भ* चालू कर देना चाहिए।

२. आप को अपने देश के सामाजिक कार्यकर्ताओं, नेताओं, वैज्ञानिकों लेखकों एवं अन्यों के बारे में जानकारी देने हेतु अलग से एक *जीवन परिचय* चालू करना चाहिए।

३. आप समय-समय पर इस बात की जानकारी लेने के लिये कि पाठक लोग सूचना पत्रिका में रुचि लेते हैं या नहीं, इस के लिये आप के देश से सम्बन्धित चीजों के बारे में पूछताछ की *प्रतियोगिता* का आयोजन कर सकते हैं।

४. आपके देश की महिलाओं की दशा के बारे में जानने हेतु *महिला स्तम्भ* भी खोला जाना चाहिए।

५. आपके देश से सम्बन्धित, कविता कहानियों को भी प्रोत्साहन देना चाहिए।

६. एवं सूचना पत्रिका के पेज बढ़ा कर २४ से ३२ कर देने चाहिए। आशा है आप मेरी उपर्युक्त रायों को कुछ हद तक स्थान देने की कोशिश करेंगे।

कैलाशचन्द्र मेठी
अलवर (राजस्थान)

समाचार

प्रवेश-पत्र संधि पर सुप्रसिद्ध अखबार की राय

सन् १९६३ के अन्तिम दिन तक पश्चिम बर्लिन के १७२,७४० निवासी, जर्मन जनवादी गणतन्त्र की राजधानी में दाखिल हो चुके थे अपने सगे सम्बन्धियों से मिलने के लिये। जिस दिन, ज. ज. ग. की सरकार तथा पश्चिम-बर्लिन सेनेट (सरकार) के बीच प्रवेश-पत्र संधि पर दस्तखत हुये (१८ दिसम्बर, ६३) उस दिन से लेकर वर्ष के अन्त तक पश्चिम बर्लिन के ग्यारह लाख से अधिक (१,१८८,०००) व्यक्तियों को प्रवेश-पत्र दिये जा चुके थे।

नये वर्ष के प्रथम दिन पर, ज. ज. ग. के कई सुप्रसिद्ध अखबारों ने उक्त संधि पर टीका-टिप्पणी की। 'बर्लिनेर ज़ाइटुंग' ने लिखा: 'ज. ज. ग. के खिलाफ घोर उत्तेजनाओं की जो लहर, क्रिसमस से लेकर नव-वर्ष के आरम्भ तक चरम-सीमा तक पहुँची, लाखों पश्चिम बर्लिन निवासियों के प्रबल जनमत की चट्टान से टकरा कर वह लौट गई।...'

पश्चिमी जर्मनी के चान्सलर, श्री एरहार्ड ने अपने एक बयान में कहा है कि 'बोन सरकार बर्लिन-दीवार की दरार को और चौड़ा करने' का (अर्थात् पत्र-प्रवेश संधि की अवधि को बढ़ाने का—संपादक) स्वागत करती यदि इस से संबंधित 'बातचीत ग़ैर सरकारी तौर पर' की जा सकती। अखबार ने इस वक्तव्य का उल्लेख करते हुये लिखा है:'—पश्चिमी जर्मनी की हकूमत का पश्चिम बर्लिन से कोई रिश्ता नहीं। इसलिये उसका यह अधिकार नहीं कि वह ज. ज. ग. की सरकार तथा पश्चिम बर्लिन के सेनेट के आपसी मामलों में टांग अड़ाये। ...पश्चिम बर्लिन के निवासी यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि खींचातानी और तनातनी से, अन्त में, केवल उनको ही क्षति तथा पीड़ा पहुँचती है और किसी को नहीं।...'

ज़ंजीबार के सुल्तान को श्री उल्ब्रिख्त की बधाई

ज़ंजीबार की स्वाधीनता के शुभ अवसर पर, जर्मन जनवादी गणतंत्र की राज्य-परिषद् के अध्यक्ष, श्री वाल्टर उल्ब्रिख्त ने वहां के सुल्तान को बधाई तथा शुभ-कामनायें भेजी हैं। बधाई के तार में कहा गया है कि 'जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार ने ज़ंजीबार को एक स्वतंत्र तथा प्रभुसत्तात्मक राज्य मानने का और उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने का फ़ैसला किया है।..

ब्रिटिश पत्रकार की राय

ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध पत्रकार, श्री सेबास्टियन हाफनेर ने, पश्चिमी जर्मनी के एक लोकप्रिय अखबार 'स्टर्न' में एक अग्रलेख के द्वारा, एक यथार्थ-वादी जर्मन नीति, श्री

बर्लिन प्रवेश-पत्र संधि

गत मंगलवार को (१७ दिसम्बर को) जर्मन जनवादी गणतंत्र के अधिकारियों ने, एक प्रेस-कान्फ्रेन्स बुलाई। इसमें बड़े दिनों (क्रिसमस) और नव-वर्ष के त्योहारों के सम्बन्ध में लिये गये कुछ महत्वपूर्ण फ़ैसलों पर प्रकाश डाला गया। ज. ज. ग. की सरकार और पश्चिम बर्लिन सेनेट (नगर प्रशासन) के प्रतिनिधियों ने कई दिनों की आपसी बातचीत के बाद ये फ़ैसले लिये। इस बातचीत और इन फ़ैसलों का मुख्य विषय तथा संबंध था पश्चिम बर्लिन वासियों को अनुज्ञा-पत्र देना, ताकि वे बड़े दिनों (क्रिसमस) और नव-वर्ष के पर्वों पर, ज. ज. ग. की राजधानी (बर्लिन) में रहने वाले अपने सगे-सम्बन्धियों से मिल सकें।

उक्त प्रतिनिधियों की सफल बातचीत के बाद, एक संधि पर दस्तखत किये गये। इस महत्वपूर्ण संधि की घोषणा की ज. ज. ग. के उप-प्रधान मंत्री, श्री एलेक्जांडर आबुश ने। संधि की शर्तों के अनुसार, पश्चिम बर्लिन में रहने वाले लोग ५ जनवरी, १९६४ तक ज. ज. ग. की राजधानी में रहने वाले अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलने आ सकते हैं। इसके लिये उन्हें विशेष अनुज्ञा-पत्र दिये जायेंगे।

प्रेस कानफ्रेन्स में इस संधि के महत्व का उल्लेख करते हुये, श्री एलेक्जांडर आबुश ने कहा कि ज. ज. ग. की सरकार, कई वर्षों से एक ऐसी संधि के लिये प्रयत्नशील थी। लेकिन पश्चिम बर्लिन का सेनेट तथा पश्चिमी जर्मनी की सरकार इसके लिये कभी तैयार न हुये। बहरहाल अनुज्ञा-पत्रों से संबंधित उक्त संधि, आजकल की ठोस वास्तविक स्थिति पर आधारित बातचीत का परिणाम है। ...प्रेस-कानफ्रेन्स का अन्त करते हुये, श्री आबुश बोले: 'बर्लिन में हुई इस छोटी किन्तु महत्वपूर्ण संधि ने, हमारे राष्ट्र के सबसे बड़े तथा अहम सवालोंको—शांति तथा समझौते को, एक बार फिर हमारे सामने लाया है स्पष्ट रूप में। हमारी यह कामना है कि इस लघु प्रयास के उज्ज्वल चरण-चिन्हों पर आगे बढ़ा जाये। जर्मन जनवादी गणतंत्र शांति के लिये हर तरह के क़दम उठाने के लिये हमेशा तैयार रहेगा।..'

अनुज्ञा-पत्र संधि संबंधी बातचीत के लिये, ज. ज. ग. का प्रतिनिधित्व, राज्य-सचिव, श्री एरिख वेनड्ट कर रहे थे। पत्रकारों से उन्होंने कहा कि पश्चिम बर्लिन के प्रत्येक क्षेत्र में, एक-एक दफ्तर खोला जायेगा। जहां ज. ज. ग. इच्छुक व्यक्तियों को अनुज्ञा-पत्र उपलब्ध करेगा बर्लिन जाने के लिये।

...न तथा ज. ज. ग. की सरकारों में बात-चीत का समर्थन किया है। श्री हाफनेर ने इस बात की स्पष्ट घोषणा की है कि जर्मन जनवादी गणतंत्र को अब ज्यादा देर तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनके शब्दों में : 'मैं आशा करता हूँ कि फेडरल चान्सेलर (पश्चिमी जर्मनी का चान्सेलर—...) श्री एरहार्ड की भी इस बारे में साफ ...ष्टि है।...' पत्रकार के मत में जर्मन समस्या के हल का एक मुख्य आधार है जर्मन वासियों की आपसी सद्भावना और समझौता।

श्री हाफनेर ने, बोन सरकार की सोवियत विरोधी शीत-युद्ध पर आधारित नीति का भी विरोध किया है। उनकी यह निश्चित राय है कि 'सोवियत संघ को अपना शत्रु मानने, और मौके-बेमौके उसको उत्तेजित करने की पुरानी नीति को एकदम त्याग देने की आवश्यकता है।...' सम्मानित पत्रकार की राय में सोवियत संघ के प्रति सद्भावना-पूर्ण, यथार्थ-परक तथा उदार नीति अपनायी जानी चाहिये।

ज. ज. ग. का पादरी भारत में

जर्मन जनवादी गणतंत्र के गोज़नेर मिशन के प्रमुख पादरी, डा. बूनो शोट्टडट्टाइट १६ दिसम्बर को भारत में पधारे। वे, छोटा नागपुर और आसाम के गोज़नेर इवांजलिक-लूथर्री के निमंत्रण पर यहां आये हैं, पांच हफ्तों के दौरे पर। पादरी शोट्टडट्टाइट की यह भारत यात्रा, भारत और जर्मन जनवादी गणतंत्र के गोज़नेर गिरजों के आपसी सम्बन्धों को दृढ़ तथा विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

फुटबाल टीम की विजय

१७ दिसम्बर को जर्मन जनवादी गणतंत्र की ओलम्पिक फुटबाल टीम ने बर्मा की राष्ट्रीय टीम को पांच गोलों से हरा दिया। मध्यान्तर तक ज. ज. ग. की टीम शून्य के मुकाबले में ३ गोल कर चुकी थी। खेले जाने वाले तीन मैचों में से यह प्रथम मैच था। ज. ज. ग. की यह ओलम्पिक टीम, बर्मा के बाद कम्बोदिया, इन्दोनेशिया तथा श्रीलंका की फुटबाल टीमों के साथ भी खेलेगी।

५४७ व्यक्ति घर लौट आये

जर्मन जनवादी गणतंत्र के ५४७ नागरिक, जो यहां से जाकर पश्चिम जर्मनी में रहने लगे थे, पिछले चार हफ्तों में अपने वतन वापस लौट आये। प. जर्मनी के 'स्वर्ग' होने के सम्बन्ध में जितने भी भ्रम झूठे प्रचारकों ने उसके मन में पैदा किये थे वे एक-एक करके टूट चुके हैं। इसीलिये वे ज. ज. ग में वापस आये।

इसी प्रकार, केवल एक हफ्ते में पश्चिमी जर्मनी के २२४ नागरिक भी उस 'स्वर्ग' को त्याग कर ज. ज. ग. में बसने के लिये आये। इनमें ६० कुशल मजदूर भी थे।

यमन के राजनीतिज्ञ का अभिमत

यमन की राष्ट्रपति-परिषद् के एक सदस्य, श्री मुहम्मद कायद सैफ ने, ज. ज. ग. की प्रमुख प्रेस-एजेंसी के प्रतिनिधि से बात चीत करते हुये कहा कि विश्व शांति के लिये संघर्ष, यमन गणतंत्र और जर्मन जनवादी गणतंत्र के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का दृढ़ तथा स्थाई आधार है। श्री मुहम्मद सैफ बोले,-'हमारे दो देशों के बीच, जनरल कोंसलेटों का विनिमय सम्बन्धी हाल ही में हुआ समझौता, हमारे अच्छे रिश्तों और आपसी हितों का प्रमाण है।...'

यमन के प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ ने ज. ज. ग. द्वारा, समय-समय पर पेश किये गये, तनाव को कम करने और निशस्त्रीकरण सम्बन्धी सुझावों की प्रशंसा की। उन्होंने ज. ज. ग. के इस प्रस्ताव की खास तौर से हिमायत की कि मध्य यूरोप को अणुशस्त्र-विहीन क्षेत्र बना देना चाहिये। श्री सैफ के शब्दों में : 'ज. ज. ग. की शांतिपूर्ण नीति, समस्त मानवता के लिये कल्याणकारी है।'

सबसे बड़ा तेल टैंक

जर्मन जनवादी गणतंत्र के हाल्ले नामक प्रांत में "ल्यूना २" के रासायनिक कारखाने में ज. ज. ग. का तेल स्टोर करने वाला सबसे बड़ा टैंक तामीर हो रहा है। इसकी धारिता ३०,००० गण मीटर है।...

'ल्यूना २' नामक कारखाना, ज. ज. ग. के पेट्रो-रासायन उद्योग की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रायोजना है। सन् १९६५ में यह कारखाना इथाइलीन नामक पदार्थ तैयार करना आरम्भ करेगा। यह प्लास्टिक उत्पादन के लिये एक अनिवार्य पदार्थ है।

निर्यात में निरन्तर वृद्धि

जर्मन जनवादी गणतंत्र के 'विदेश व्यापार चैम्बर' के अध्यक्ष, श्री हांस बार ने घोषणा की है कि सन् १९६४ में, ज. ज. ग. का कुल विदेश व्यापार, लगभग २२,००० मिलियन मार्क (१ मार्क = १.१२ न. पै.) की सीमा तक बढ़ जायेगा। श्री बार ने यह भी कहा कि हाल ही में ज. ज. ग. के 'विदेश व्यापार चैम्बर' ने लगभग सारी दुनिया के व्यापारियों तथा अर्थ-शास्त्रियों से अपने संपर्क स्थापित किये हैं। ये संपर्क 'विश्व जनों की शांतिकामना, अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में तनाव को घटाने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के संबंध में किये जाने वाले प्रयत्नों के अभिन्न अंग हैं।'

१९६४ में जर्मन जनवादी गणतंत्र, सरकारी तौर से, २० अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों में भाग लेगा। इसके अतिरिक्त, ज. ज. ग. की विदेश व्यापार फर्में, दुनिया के विभिन्न देशों में, अपनी २०० से अधिक प्रदर्शनियां आयोजित करेगी।

फैक्ट्री में एक मजदूर की एक्स-रे जांच हो रही है

भारतीय शिक्षार्थी प्रभावित

श्री चन्द्रभान सिंह, दो वर्ष पहले, जर्मन जनवादी गणतंत्र गये थे मुद्रण-टेकनालोजी में प्रशिक्षण लेने के लिये। ट्रेनिंग की समाप्ति पर, श्री सिंह ने 'जी. डी. आर. रिव्यू' नामक प्रसिद्ध अंग्रेजी मासिक में, अपने अनुभवों को लेखबद्ध किया है। उन्होंने लिखा है: 'सांस्कृतिक विनिमय योजना के अन्तर्गत, भारत सरकार ने मुझे, जर्मन जनवादी गणतंत्र के प्रिंटिंग टेकनालोजी की ऊँची ट्रेनिंग के लिये भेजा। अपने अध्ययन तथा प्रशिक्षण के दौरान यहां लोगों के जीवनस्तर, निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था, सभी के लिये मुफ्त डाक्टरी इलाज, वृद्धों के लिये पेनशन और शिक्षण-विधि से सबसे मैं ज्यादा प्रभावित हुआ। मुझे यह कहने में प्रसन्नता हो रही है कि यहां मुझे रंगभेद की एक भी घटना देखने को नहीं मिली।...

'मुझे इस बात का विश्वास है कि हमारे दो देशों की मित्रता बढ़ती और दृढ़ होती रहेगी, और इस प्रकार हम शांतिपूर्वक अपने-अपने देशों की प्रगति की तथा विश्व-कल्याण के लिये काम कर सकेंगे। मैं, जर्मन जनवादी गणतंत्र की सरकार और यहां के अपने मित्रों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ उस सबके लिये जो उन्होंने मेरे प्रशिक्षण तथा सुखसुविधा के लिये किया। स्वदेश लौटते हुये आज मैं अपने साथ यहाँ की सुखद स्मृतियां साथ लिये जा रहा हूँ।...'

प. जर्मनी के २५५ नागरिकों ने शरण ली

पिछले एक हफ्ते में, पश्चिमी जर्मनी के २५५ नागरिक वहां से भाग निकले, और उन्होंने जर्मन जनवादी गणतंत्र में शरण ली। इन शरणार्थियों में ८२ कुशल मज़दूर भी हैं। पश्चिमी जर्मनी के सिर्फ एक प्रान्त, नार्थराइनवेस्टपालिया से ही, इस वर्ष के आरंभ से अब तक ४,३६१ व्यक्ति ज. ज. ग. में आकर यहीं बस गये हैं।

पिछले छः हफ्तों में, ज. ज. ग. के ८३५ नागरिक, जो पश्चिमी जर्मनी में बस गये थे, अब स्वदेश लौट आये हैं।

ज. ज. ग. और ब्रिटेन में व्यापार करार

सन् १९६४ में, ब्रिटेन और जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार में, पिछले वर्षों की तुलना में, अधिक अनुकूल विकास होगा। सन् १९६३ के मुकाबले में नये वर्ष में, इन दोनों देशों के व्यापार में २० प्रतिशत की वृद्धि होगी। यह तथ्य, उस व्यापार-करार से सामने आया है जिस पर, ज. ज. ग. के 'विदेश व्यापार चैम्बर' और ब्रिटेन के 'ब्रिटिश उद्योग संघ' के प्रतिनिधियों ने १८ दिसम्बर को दस्तखत किये।

इस करार के अनुसार, जर्मन जनवादी गणतंत्र ब्रिटेन को मशीनी औज़ार, टेक्सटाइल मशीनें, प्रकाशकीय तथा विद्युत-तकनीकी सूक्ष्म यंत्र, दफ्तरों की मशीनें, और रासायन निर्यात करेगा। बदले में ब्रिटेन से वह धातु तथा रासायनिक उत्पादन, विशेष मशीनें तथा अन्य सामान का आयात करेगा।

पोलियो का उन्मूलन

पिछले साल की तरह इस वर्ष भी जर्मन जनवादी गणतंत्र में पोलियो के भीषण रोग का एक भी व्यक्ति शिकार नहीं हुआ। दूसरे शब्दों में इसका मतलब है कि इस भयंकर रोग को, ज. ज. ग. में, जड़मूल से उखाड़ दिया गया है। यह शुभ सूचना, ज. ज. ग. के उप स्वास्थ्य-मंत्री, प्रोफेसर वाल्टर फ्रीडबर्गर ने अपने एक वक्तव्य के द्वारा दी।

इस शताब्दी का चौथा सबसे ठण्डा जाड़ा

गत वर्ष के क्रिस्मस मास अर्थात् दिसम्बर का औसत तापमान—३ डिग्री सेंटिग्रेड रहा। इस तरह यह महीना, वर्तमान शताब्दी में, जर्मनी का चौथा सबसे ठण्डा मास रहा। नवम्बर का महीना तो जाड़े की दृष्टि से, इतना कठिन नहीं था, लेकिन दिसम्बर के आते ही सख्त ठण्ड पड़ने लगी और न्यूनतम...तापमान—२० डिग्री सेंटिग्रेड तक पहुँच गया।

भारतीय फर्म के लिये स्वर्णपदक

सन् १९६३ के शरद्कालीन लाइपज़िक व्यापार मेले में, कलकत्ता की 'जयश्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड' नामक व्यापार-फर्म को अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णपदक तथा प्रशंसा-पत्र प्रदान किया गया था।

७ दिसम्बर, सन् १९६३ के दिन एक विशेष समारोह का आयोजन हुआ जिसमें चाय-बोर्ड के अध्यक्ष, श्री ए. एस. बाम ने उक्त पुरस्कार, विजेता फर्म के प्रतिनिधि श्री बी. पी. केडिया को दे दिया। 'जयश्री टी एण्ड इण्डस्ट्रीज़' की ओर से यह सम्मान पदक प्राप्त करते हुये, श्री केडिया ने, 'लाइपज़िक मेला प्राधिकारियों को धन्यवाद दिया, और इस बात पर गर्व प्रकट किया कि उनकी कम्पनी को, भारत में सर्वप्रथम यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में भाषण देते हुये, टी बोर्ड के अध्यक्ष, श्री बाम ने कहा: 'मेसर्स जयश्री, पिछले १३ वर्षों से शरद्कालीन लाइपज़िक मेले में भाग लेते आये हैं। १३वां आंकड़ा वैसे अशुभ माना जाता है, लेकिन मेले में जयश्री द्वारा १३वीं शिरकत एक अनुपम सफलता तथा सम्मान का सन्देश लेकर आई। यह सफलता तथा सम्मान न केवल जयश्री के लिये ही है, बल्कि इससे भारत का व्यापार तथा चाय-उद्योग भी सम्मानित हुआ है।...'

पुरस्कार देने के उपर्युक्त विशेष समारोह में नगर के प्रतिष्ठित नागरिक, चाय-बोर्ड के सदस्य, सरकारी अधिकारी, सुप्रसिद्ध व्यापारी तथा उद्योगपति, कौंसली-कोर के सदस्य और भारत में जर्मन जनवादी गणतंत्र के व्यापार दूतावास के प्रमुख, श्री कूर्ट बोट्टकर उपस्थित थे।